राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश

प्रथम जिल्द

काळ खपै पण ओखाणा अखै

काल नश्वर, कहावतें अमर

राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश

प्रथम जिल्द

संपादक

विजयदान देथा

भागीरथ कानोड़िया

रूपम प्रकाशन, बोरुन्दा

...

राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश

पाच जिल्दो मे सपूर्ण

प्रकाशक

रूपम प्रकाशन, बोरुन्दा

१५ अगस्त, १९७७

मूल्य : पैंसठ रुपये

मुद्रक

रूपम प्रेस, बोरुन्दा ३४२६०४

राजस्थानी हिन्दी
कहावत कोश

प्रथम जिल्द

संपादक
विजयदान देथा
भागीरथ कानोड़िया

रूपम प्रकाशन, बोरुन्दा

राजस्थानी हिन्दी सहायक कोश
पांच जिल्दों में सम्पूर्ण

प्रकाशक
रूपम प्रकाशन, बोरुन्दा

१५ अगस्त, १९७७
मूल्य : पैंसठ रुपये

मुद्रक
रूपम प्रेस, बोरुन्दा ३४२६०४

सिक शोध व समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए निसदेह अहितकर होगा। प्रश्न आज का नही है। आने वाली भावी पीढी इस भ्रामक आशका के लिए हमे कभी माफ नहीं करेगी।

चुनी हुई कहावतों की पाँचिया लेकर मैं दुबारा फिर किशनगढ़ गया। अर्थो के बारे मे भागीरथ जी से विस्तार पूर्वक चर्चा हुई। उन्हें और अधिक निकटता से समझने का मौका मिला। दिसावर में वर्षों तक व्यवसाय करने पर भी यह व्यक्ति अपनी धरती से कट नही पाया। कहावता की भाषा, आशय, अभिधेय व लाक्षणिक व्यजना की उन मे पर्याप्त सूझ बूझ नजर आई। अपने शेखावाटी इलाके की खूब ही कहावतें उन्ह याद हैं। अच्छी तरह विचार विमर्श करने के बाद मैं फिर गाव आकर इस कार्य मे जुट गया। प्रत्येक कहावत का पहिले हिन्दी मे अक्षरश उसी लहजे म उल्था, फिर यदि कही आवश्यक हुआ तो विशेष आचलिक शब्द का अर्थ या टीका, फिर अभिधेय से थोडा हट कर खुलासा और अत मे उसकी लाक्षणिक व्यजना के मर्म को समझाने की चेष्टा। कहावत की व्यजना के अनुरूप उसी गरिमा व गहराई का यथाशक्ति पालन करते हुए। कुछ कहावतें अत्यन सरल होने पर भी हिन्दी के उल्थे को न टालने का ही निर्णय लिया। यह सोच कर कि इस से हिन्दी के वैविध्य मे काफी कुछ अभिवृद्धि होगी। यदि विभिन्न राष्ट्र भाषाओ के अजस्र लोक भडार से इस तरह की असख्य मणियाँ जुडती रही तो हिन्दी का खजाना अमूल्य व जीवत हो उठेगा। इस तरह के अगणित प्रयास ही हिन्दी को वास्तविक रूप प्रदान कर सकेंगे। देश के जन-मानस से जुडी हुई वह हिन्दी ही हमारे राष्ट्र का सही प्रतिनिधित्व कर सकेगी। तभी राष्ट्र की जमीन, वनस्पति व पानी मे उसका घनिष्ठ नाता कायम रह सकेगा। कॉफी हाऊस, शहरी गोष्ठियो व सम्मेलनो की निष्प्राण हिन्दी देश की आत्मा मे उतर पाना तो दूर झाकने के लिए भी असमर्थ है। हिन्दी की अपरिमेय शक्ति इन्ही राष्ट्र भाषाओ मे सन्निहित है। इस से कट कर वह स्वय विश्रृखलित हो जायेगी। उसी दिन की अविकल प्रतीक्षा है जब बीसियो जिल्दो मे समस्त राष्ट्र भाषाओ की लोकोक्तिया, कहावतें तथा मुहावरे एक साथ रत्नो की तरह जडे हुए देवनागरी लिपि व हिन्दी अनुवाद के साथ सास्कृतिक या भाषा मत्रालय स प्रकाशित हो। पर अग्रेजी की अवैध सतान इस बात को कभी सही माने मे समझ भी सकेगी या नही—इस मे सदेह है।

मुहावरो का सग्रह तो अपने स्वतत्र रूप मे अलग से ही प्रकाशित होना चाहिए। यह तो भाषा का एक निराला ही वैशिष्ट्य है। पर कुछ मुहावरे जो कहावत का अश बन कर आये उन्हे प्रस्तुत सग्रह मे प्रकाशित करना भी जरूरी हो गया। और यो कुछ छुट-पुट निखालिस मुहावरे आ भी गये तो उसे निरी भूल कहना ही काफी नही, पहिचान की समझ का अभाव भी हो सकता है। आशा करू कि विद्वत्जन इस का विशेष खयाल नही करेंगे।

प्रकाशन के दौरान भागीरथ जी से विचार विमर्श तथा छपाई की प्रगति को लेकर नियमित रूप से चिट्ठी पत्रियो का क्रम चालू रहा। अब तक उनके एक सौ इक्कीस पत्र व दस तार इस सबध मे आ चुके हैं। हर पत्र म पाच-पच्चीस कहावतें अवश्य होनी। इन पत्रो के माध्यम से उन्होने लगभग आठ सौ कहावतें भेजी। वर्ण की छपाई के बाद तत्सबधी वर्ण की जो कहावतें आई या गाव मे सग्रहीत हुई उन्हे प्रस्तुत जिल्द के साथ न देकर अतिम जिल्द मे देना उचित रहेगा। क्योकि सग्रह की रौ म इसी जिल्द के वर्णो की काफी कहावतें एकत्रित हो गई और होती रहेगी। अतिम कहावत की आशा तो सर्वथा बचकानापन है पर फिर भी प्रस्तुत जिल्द की कहावतो की सख्या तब तक काफी बढ जायेगी।

बिहारी बोलियो के 'कहावत कोश' से सपादक द्वय ने अश्लील तथा जातीय आक्षेप वाली कई हजार कहावतो के निष्कासन की खातिर परिताप प्रकट किया है। सपादकद्वय का आचार्य नलिनजी के द्वारा समर्थन होने पर भी बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् की सामान्य समिति के सदस्यो को यह प्रस्ताव स्वीकार्य नही हुआ। भारतीय जीवन की यह असामान्यता भी बडी अजीब है। मनुष्य के निष्कासन की अपेक्षा सास्कृतिक, साहित्यिक विधाओ का अश्लीलता के नाम पर निष्कासन ज्यादा गभीर है। सांस्कृतिक व कलात्मक विधाओ मे अश्लीलता का दोषारोपण करने वाले की नासमझी तो समझ मे आती है पर इस तरह के सदर्भ-ग्रन्थो की परपरागत विरासत के प्रति यह समझदारी समझ म नही आती। आज के तिनके की ओट मे भविष्य के समूचे विस्तार को अनदेखा करना कितना घातक है! भारतीय जीवन के घिनौने आडम्बर का यह दुहरा चरित्र कभी

राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश
पांच जिल्दों में सम्पूर्ण

प्रकाशक
रूपम प्रकाशन, बोरुंदा

१५ अगस्त, १९७३
मूल्य : पैंसठ रुपये

मुद्रक
रूपम प्रेस, बोरुंदा ३४२६०४

सिक शोध व समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए निसदेह अहितकर होगा। प्रश्न आज का नही है। आने वाली भावी पीढी इस भ्रामक आशंका के लिए हमे कभी माफ नही करेगी।

चुनी हुई कहावतो की पर्चिया लेकर मैं दुबारा फिर किशनगढ गया। अर्थों के बारे मे भागीरथ जी से विस्तार पूर्वक चर्चा हुई। उन्हे और अधिक निकटता से समझने का मौका मिला। दिसावर मे वर्षों तक व्यवसाय करने पर भी यह व्यक्ति अपनी धरती से कट नही पाया। कहावतो की भाषा, आशय, अभिधेय व लाक्षणिक व्यंजना की उन मे पर्याप्त सूझ बूझ नजर आई। अपने शेखावाटी इलाके की खूब ही कहावतें उन्हे याद है। अच्छी तरह विचार विमर्श करने के बाद मैं फिर गाव आकर इस कार्य मे जुट गया। प्रत्येक कहावत का पहिले हिन्दी में अक्षरश उसी लहजे म उल्था, फिर यदि कही आवश्यक हुआ तो विशेष आचलिक शब्द का अर्थ या टीका, फिर अभिधेय से थोडा हट कर खुलासा और अत मे उसकी लाक्षणिक व्यजना के मर्म को समझाने की चेष्टा। कहावत की व्यजना के अनुरूप उसी गरिमा व गहराई का यथाशक्ति पालन करते हुए। कुछ कहावतें अत्यन्त सरल होने पर भी हिन्दी के उल्थे को न टालने का ही निर्णय लिया। यह सोच कर कि इस से हिन्दी के वैविध्य मे काफी कुछ अभिवृद्धि होगी। यदि विभिन्न राष्ट्र भाषाओ के अजस्र लोक भडार से इस तरह की असख्य मणिया जुडती रही तो हिन्दी का खजाना अमूल्य व जीवत हो उठेगा। इस तरह के अगणित प्रयास ही हिन्दी को वास्तविक रूप प्रदान कर सकेंगे। देश के जन-मानस से जुडी हुई वह हिन्दी ही हमारे राष्ट्र का सही प्रतिनिधित्व कर सकेगी। तभी राष्ट्र की जमीन, वनस्पति व पानी से उसका घनिष्ठ नाता कायम रह सकेगा। कॉफी हाऊस, शहरी गोष्ठियो व सम्मेलनो की निष्प्राण हिन्दी देश की आत्मा मे उतर पाना तो दूर झाकने के लिए भी असमर्थ है। हिन्दी की अपरिमेय शक्ति इन्ही राष्ट्र भाषाओ मे सन्निहित है। इस से कट कर वह स्वय विश्रृखलित हो जायेगी। उसी दिन की अविकल प्रतीक्षा है जब बीसियो जिल्दो मे समस्त राष्ट्र भाषाओ की लोकोक्तिया, कहावतें तथा मुहावरे एक साथ रत्नो की तरह जड़े हुए देवनागरी लिपि व हिन्दी अनुवाद के साथ सास्कृतिक या भाषा मत्रालय से प्रकाशित हो। पर अग्रेजी की अवैध सतान इस बात को कभी सही माने मे समझ भी सकेगी या नही—इस मे सदेह है।

मुहावरो का सग्रह तो अपने स्वतत्र रूप मे अलग से ही प्रकाशित होना चाहिए। यह तो भाषा का एक निराला ही वैशिष्ट्य है। पर कुछ मुहावरे जो कहावत का अश बन कर आये उन्हे प्रस्तुत सग्रह मे प्रकाशित करना भी जरूरी हो गया। और यो कुछ छुट-पुट निखालिस मुहावरे आ भी गये तो उसे निरी भूल कहना ही काफी नही, पहिचान की समझ का अभाव भी हो सकता है। आशा करू कि विद्वत्जन इस का विशेष खयाल नही करेंगे।

प्रकाशन के दौरान भागीरथ जी से विचार विमर्श तथा छपाई की प्रगति को लेकर नियमित रूप से चिट्ठी-पत्रियो का क्रम चालू रहा। अब तक उनके एक सौ इक्कीस पत्र व दस तार इस सबध मे आ चुके हैं। हर पत्र मे पाच-पच्चीस कहावतें अवश्य होती। इन पत्रो के माध्यम से उन्होने लगभग आठ सौ कहावतें भेजी। वर्ण की छपाई के बाद तत्सबधी वर्ण की जो कहावतें आई या गाव मे सग्रहीत हुई उन्हे प्रस्तुत जिल्द के साथ न देकर अतिम जिल्द मे देना उचित रहेगा। क्योकि सग्रह की रौ मे इसी जिल्द के वर्णों की काफी कहावतें एकत्रित हो गई और होती रहेगी। अतिम कहावत की आशा तो सर्वथा बचकानापन है पर फिर भी प्रस्तुत जिल्द की कहावतो की सख्या तब तक काफी बढ जायेगी।

बिहारी बोलियो के 'कहावत कोश' से सपादक-द्वय ने अश्लील तथा जातीय आक्षेप वाली कई हजार कहावतो के निष्कासन की खातिर परिताप प्रकट किया है। सपादक-द्वय का आचार्य नलिनजी के द्वारा समर्थन होने पर भी बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् की सामान्य समिति के सदस्यो को यह प्रस्ताव स्वीकार्य नहीं हुआ। भारतीय जीवन की यह असामान्यता भी बडी अजीब है। मनुष्य के निष्कासन की अपेक्षा सास्कृतिक, साहित्यिक विधाओ का अश्लीलता के नाम पर निष्कासन ज्यादा गभीर है। सास्कृतिक व कलात्मक विधाओ मे अश्लीलता का दोषारोपण करने वाले की नासमझी तो समझ मे आती है पर इस तरह के सदर्भ-ग्रन्थो की परपरागत विरासत के प्रति यह समझदारी समझ मे नही आती। आज के तिनके की ओट मे भविष्य के समूचे विस्तार को अनदेखा करना कितना घातक है! भारतीय जीवन के घिनौने आडम्बर का यह दुहरा-चरित्र कभी

तिरोहित होगा भी या नही ? रगीन मुखौटो से ढके इस दुहरे चरित्र का न कही अत नजर आता है और न कोई समाधान । सभव है मेरी दृष्टि घुधला गई हो !

कुछ कहावतो का मूल स्रोत सबधित कथाओ मे है। अतएव आशय के स्पष्टीकरण की खातिर प्रासगिक कथा देना अनिवार्य ही था । पर मैंने इन 'सदर्भ-कथाओं' को कुछ विस्तार से देने की चेष्टा की है । सरस व कलात्मक ढग से । कहानी कहने के अभ्यास पर मैं नियत्रण नहीं रख सका । इस कहावत-कोश को सदर्भ-ग्रथ के साथ-साथ मैंने साहित्यिक थाती बनाने का सोद्देश्य प्रयास किया है । यह सदर्भ-ग्रथ हर दृष्टि से सुरुचिपूर्ण हो मेरी भरसक चेष्टा यही रही है । लोक जीवन की इन दार्शनिक सूक्तियो को उनकी गरिमा के अनुकूल वैसी ही भाषा व व्याख्या के साथ प्रेषित करने की मैंने यथा सभव कोशिश की है । इसकी यत्किंचित प्रेरणा मुझे स्व एस डब्ल्यू फैलन के 'हिन्दुस्तानी कहावत कोश' के लाक्षणिक अर्थ व अतर्कथाओ स मिली ।

कुछ विद्वानो का आक्षप है कि कहावतो मे परस्पर अतविरोधी आशय बहुधा प्रकट होते हैं । इसकी सफाई मे यहा केवल इतना भर इशारा काफी है कि व्यावहारिक जीवन के अतर्निहित अतविरोध ही इन लोक दार्शनिक सूत्रो म प्रतिबिंबित हुए हैं । इन सूत्रो ने सीधे जीवन के अत-विरोधो से ही अपनी प्राण प्रतिष्ठा पाई है । परस्पर विभिन्न कहावतो की बात तो दूर एक ही कहावत मे दो अतविरोधी आशय साफ परिलक्षित होते हैं । विभिन्न सदर्भ का औचित्य ही एक कहावत के विभिन्न अर्थों का मूल आधार है ।

कहावतो की प्रायोगिक वजन की प्राथमिकता को ध्यान मे रखते हुए ही मैंने एक दो शब्दो के मामूली हेर-फेर के बावजूद भी उसका पाठान्तर देना उचित समझा । कलेवर बढने की तथाकथित आशका के बदले उन्हे पाठा-तर मे न देने का खतरा ज्यादा बडा था ।

प्रारभिक शब्द के हेर-फेर से यदि वही कहावत अपने वर्णानुक्रम मे फिर आई है तो केवल अभिधार्थ देकर 'देखिये कहावत सख्या'—फला फला के बाद उसके लाक्षणिक अर्थ को नही दुहराया । यदि भिन्न शाब्दिक स्वरूप के बावजूद भी दो कहावतो का आशय या लक्षणा एक है तो 'देखिये' की जगह 'मिलाइये' शब्द का प्रयोग किया गया है।

मूल कोश के पृष्ठो पर फोलियो की लम्बाई के कारण केवल राजस्थानी कहावत-कोश ही सर्वत्र दुहराया गया है लेकिन मुख-पृष्ठ पर इसका पूरा नाम 'राजस्थानी-हिन्दी कहावत-कोश' ही दिया है ।

कहावतो के सग्रह तथा उनकी व्याख्या के सबध मे जिन व्यक्तियो का परोक्ष अपरोक्ष रूप से सहयोग रहा उन सबके प्रति आभारी हू । पर एक व्यक्ति के नाम का हवाला दिये बिना मन मे सतुष्टि नही होगी । वह व्यक्ति है : जगराम सिंह । जब से गाव मे आकर राजस्थानी मे लिखने का कार्य शुरू किया तभी से इनका मुझे निरतर सहयोग मिलता रहा । उपयुक्त जगह पर उपयुक्त शब्दो की मुझे इन से काफी जानकारी हासिल हुई । कहावतो के सग्रह व उनकी व्याख्या मे भी हरदम सहायता मिलती रही । इस 'गवार' व्यक्ति के भाषागत ज्ञान व उसकी सास्कृतिक अभिज्ञता को देख कर आधुनिक 'शिक्षित' वर्ग की डिग्रियो के 'प्रमाण-पत्रो' पर तरस आता है । यह शिक्षा प्रणाली हमे अपने ही देश म और कब-तक विदेशी बनाये रखेगी ? इस राष्ट्र-व्यापी घातक बाढ का कही कूल किनारा नजर नही आता । सभव है मेरी दृष्टि धुधला गई हो !

भागीरथजी ने अपनी सक्षिप्त प्रस्तावना मे मेरे परिश्रम को एक मात्र श्रेय दिया है— यह उनके बडप्पन की शालीनता है। इस श्रेय के सही लेखे-जोखे का हिसाब मुझे अपने सिवाय किसी को भी समझाने की आवश्यकता नही । मैं ही जानता हू कि यदि इस दौरान इनके सपर्क का सयोग नही जुडता तो फिलहाल इस कोश के निकलने की कोई सभावना नही थी । और यह सभावना जो आज फलीभूत होकर सामने आई उस से मुझे कितना कुछ सीखने-समझने को मिला ? मेरे साहित्यिक जीवन के लिए यह एक नया मोड है । तीस वर्ष पहिले की ताजगी व निष्ठा को मैंने आज फिर उसी रूप मे पाया । इन दार्शनिक सूक्तियो के नियमित 'सवाद' से मेरी भाषा व शैली में एक निश्चित निखार आयेगा । और यह अवसर मुझे इन्ही के सयोग से मिला । इसके लिए मैं इनका एहसानमन्द हू । एहसान किसी पर थोपा नही जाता, मन की अतल गहराई से स्वीकार किया जाता है । बस इतना ही ।

१५ अगस्त, १९७७ —विजयदान देथा

सिक शोध व समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए निसदेह अहित-कर होगा। प्रश्न आज का नही है। आने वाली भावी पीढी इस भ्रामक आशंका के लिए हमे कभी माफ नही करेगी।

चुनी हुई कहावतो की पर्चिया लेकर मैं दुबारा फिर किशनगढ गया। अर्थों के बारे मे भागीरथ जी से विस्तार-पूर्वक चर्चा हुई। उन्हें और अधिक निकटता से समझने का मौका मिला। दिसावर मे वर्षों तक व्यवसाय करने पर भी यह व्यक्ति अपनी धरती से कट नही पाया! कहावतो की भाषा, आशय, अभिधेय व लाक्षणिक व्यंजना की उन मे पर्याप्त सूझ बूझ नजर आई। अपने शेखावाटी इलाके की खूब ही कहावतें उन्हे याद हैं। अच्छी तरह विचार विमर्श करने के बाद मैं फिर गाव आकर इस कार्य मे जुट गया। प्रत्येक कहावत का पहिले हिन्दी मे अक्षरश: उसी लहजे मे उल्था, फिर यदि कही आवश्यक हुआ तो विशेष आचलिक शब्द का अर्थ या टीका, फिर अभिधेय से थोडा हट कर खुलासा और अत मे उसकी लाक्षणिक व्यजना के मर्म को समझाने की चेष्टा। कहावत की व्यजना के अनुरूप उसी गरिमा व गह-राई का यथाशक्ति पालन करते हुए। कुछ कहावतें अत्यन्त सरल होने पर भी हिन्दी के उल्थे को न टालने का ही निर्णय लिया। यह सोच कर कि इस से हिन्दी के वैविध्य मे काफी कुछ अभिवृद्धि होगी। यदि विभिन्न राष्ट्र भाषाओं के अजस्र लोक भडार से इस तरह की असख्य मणिया जुडती रही तो हिन्दी का खजाना अमूल्य व जीवत हो उठेगा। इस तरह के अगणित प्रयास ही हिन्दी को वास्तविक रूप प्रदान कर सकेंगे। देश के जन-मानस से जुडी हुई वह हिन्दी ही हमारे राष्ट्र का सही प्रतिनिधित्व कर सकेगी। तभी राष्ट्र की जमीन, वनस्पति व पानी से उसका घनिष्ठ नाता कायम रह सकेगा। कॉफी हाऊस, शहरी गोष्ठियो व सम्मेलनो की निष्प्राण हिन्दी देश की आत्मा मे उतर पाना तो दूर झाकने के लिए भी असमर्थ है। हिन्दी की अपरिमेय शक्ति इन्ही राष्ट्र भाषाओ म सन्निहित है। इस से कट कर वह स्वय विशृखलित हो जायेगी। उसी दिन की अविकल प्रतीक्षा है जब बीसियो जिल्दो में समस्त राष्ट्र भाषाओ की लोकोक्तिया, कहावतें तथा मुहावरे एक साथ रत्नो की तरह जडे हुए देवनागरी लिपि व हिन्दी अनुवाद के साथ सास्कृ-तिक या भाषा मत्रालय से प्रकाशित हो। पर अग्रेजी की अवैध सतान इस बात को कभी सही माने मे समझ भी सकेगी या नही—इस मे सदेह है।

मुहावरो का सग्रह तो अपने स्वतत्र रूप मे ही प्रकाशित होना चाहिए। यह तो भाषा का ए ही वैशिष्ट्य है। पर कुछ मुहावरे जो कहावत क कर आये उन्हें प्रस्तुत सग्रह मे प्रकाशित करना हो गया। और यो कुछ छुट-पुट निखालिस मुहा गये तो उसे निरी भूल कहना ही काफी नही की समझ का अभाव भी हो सकता है। आशा विद्वतजन इस का विशेष खयाल नही करेंगे।

प्रकाशन के दौरान भागीरथ जी से विचार-वि छपाई की प्रगति को लेकर नियमित रूप से चि का क्रम चालू रहा। अब तक उनके एक सौ इ व दस तार इस सबध मे आ चुके हैं। हर प पच्चीस कहावतें अवश्य होती। इन पत्रो के उन्होने लगभग आठ सौ कहावतें भेजी। वर्ण की बाद तत्सबधी वर्ण की जो कहावतें आई या गाव हुईं उन्हें प्रस्तुत जिल्द के साथ न देकर अतिम जि उचित रहेगा। क्योकि सग्रह की रौ मे इसी जिल की काफी कहावतें एकत्रित हो गई और होती रहेंग कहावत की आशा तो सर्वथा बचकानापन है पर प्रस्तुत जिल्द की कहावतो की सख्या तब तक जायेगी।

बिहारी बोलियो के 'कहावत कोश' से स ने अश्लील तथा जातीय आक्षेप वाली कई हजार के निष्कासन की खातिर परिताप प्रकट किया है। द्वय का आचार्य नलिनजी के द्वारा समर्थन हो बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् की सामान्य समिति को यह प्रस्ताव स्वीकार्य नही हुआ। भारतीय यह असामान्यता भी बडी अजीब है। मनुष्य के की अपेक्षा सास्कृतिक, साहित्यिक विधाओ का अश्ल नाम पर निष्कासन ज्यादा गभीर है। सांस्कृतिक त्मक विधाओ मे अश्लीलता का दोषारोपण करने नासमझी तो समझ मे आती है पर इस तरह के ग्रन्थो की परपरागत विरासत के प्रति यह समझदा मे नही आती। आज के तिनके की ओट मे समूचे विस्तार को अनदेखा करना कितना घातक। तीय जीवन के घिनौने आडम्बर का यह दुहरा-चा

तिरोहित होगा भी या नही ? रगीन मुखौटो से ढके इस दुहरे चरित्र का न कही अत नजर आता है और न कोई समाधान। सभव है मेरी दृष्टि धुधला गई हो !

कुछ कहावतो का मूल स्रोत सबधित कथाओ मे है। अतएव आशय के स्पष्टीकरण की खातिर प्रासगिक कथा देना अनिवार्य ही था। पर मैंने इन 'सदर्भ-कथाओं' को कुछ विस्तार से देने की चेष्टा की है। सरस व कलात्मक ढग से। कहानी कहने के अभ्यास पर मैं नियत्रण नही रख सका। इस कहावत-कोश को सदर्भ-ग्रथ के साथ-साथ मैंने साहित्यिक थाती बनाने का सोद्देश्य प्रयास किया है। यह सदर्भ-ग्रथ हर दृष्टि से सुरुचिपूर्ण हो मेरी भरसक चेष्टा यही रही है। लोक जीवन की इन दार्शनिक-सूक्तियो को उनकी गरिमा के अनुकूल वैसी ही भाषा व व्याख्या के साथ प्रेषित करने की मैंने यथा-सभव कोशिश की है। इसकी यत्किंचित प्रेरणा मुझे स्व एस. डब्लू फैलन के 'हिन्दुस्तानी कहावत कोश' के लाक्षणिक अर्थ व अतर्कथाओ से मिली।

कुछ विद्वानो का आक्षेप है कि कहावतो मे परस्पर अतर्विरोधी आशय बहुधा प्रकट होते हैं। इसकी सफाई मे यहा केवल इतना भर इशारा काफी है कि व्यावहारिक जीवन के अतर्निहित अतर्विरोध ही इन लोक दार्शनिक सूत्रो मे प्रतिविबित हुए हैं। इन सूत्रो ने सीधे जीवन के अतर्विरोधो से ही अपनी प्राण-प्रतिष्ठा पाई है। परस्पर विभिन्न कहावतो की बात तो दूर एक ही कहावत मे दो अतर्विरोधी आशय साफ परिलक्षित होते हैं। विभिन्न सदर्भ का औचित्य ही एक कहावत के विभिन्न अर्थो का मूल आधार है।

कहावतो के प्रायोगिक वजन की प्राथमिकता को ध्यान मे रखते हुए ही मैंने एक दो शब्दो के मामूली हेर-फेर के बावजूद भी उसका पाठान्तर देना उचित समझा। कलेवर बढने की तथाकथित आशका के बदले उन्हे पाठातर मे न देने का खतरा ज्यादा बडा था।

प्रारभिक शब्द के हेर-फेर से यदि वही कहावत अपने वर्णानुक्रम मे फिर आई है तो केवल अभिधार्थ देकर 'देखिये कहावत सख्या'—फला फला के बाद उसके लाक्षणिक अर्थ को नही दुहराया। यदि भिन्न शाब्दिक स्वरूप के बावजूद भी दो कहावतो का आशय या लक्षणा एक है तो 'देखिये' की जगह 'मिलाइये' शब्द का प्रयोग किया गया है।

मूल कोश के पृष्ठो पर फोलियो की लम्बाई के कारण केवल राजस्थानी कहावत-कोश ही सर्वत्र दुहराया गया है लेकिन मुख-पृष्ठ पर इसका पूरा नाम 'राजस्थानी-हिन्दी कहावत-कोश' ही दिया है।

कहावतो के सग्रह तथा उनकी व्याख्या के सबध मे जिन व्यक्तियो का परोक्ष अपरोक्ष रूप से सहयोग रहा उन सबके प्रति आभारी हू। पर एक व्यक्ति के नाम का हवाला दिये बिना मन मे सतुष्टि नही होगी। वह व्यक्ति है : जगराम सिंह। जब से गाव मे आकर राजस्थानी में लिखने का कार्य शुरू किया तभी से इनका मुझे निरतर सहयोग मिलता रहा। उपयुक्त जगह पर उपयुक्त शब्दो की मुझे इन से काफी जानकारी हासिल हुई। कहावतो के सग्रह व उनकी व्याख्या मे भी हरदम सहायता मिलती रही। इस 'गवार' व्यक्ति के मापागत ज्ञान व उसकी सास्कृतिक अभिज्ञता को देख कर आधुनिक 'शिक्षित' वर्ग की डिग्रियो के 'प्रमाण-पत्रो' पर तरस आता है। यह शिक्षा प्रणाली हमे अपने ही देश मे और कब-तक विदेशी बनाये रखेगी ? इस राष्ट्र-व्यापी घातक बाढ का कही कूल-किनारा नजर नही आता। सभव है मेरी दृष्टि धुधला गई हो !

भागीरथजी ने अपनी सक्षिप्त प्रस्तावना मे मेरे परिश्रम को एक मात्र श्रेय दिया है — यह उनके बडप्पन की शालीनता है। इस श्रेय के सही लेखे-जोखे का हिसाब मुझे अपने सिवाय किसी को भी समझाने की आवश्यकता नही। मैं ही जानता हू कि यदि इस दौरान इनके सपर्क का सयोग नही जुडता तो फिलहाल इस कोश के निकलने की कोई सभावना नही थी। और यह सभावना जो आज फलीभूत होकर सामने आई उस से मुझे कितना कुछ सीखने-समझने को मिला ? मेरे साहित्यिक जीवन के लिए यह एक नया मोड है। तीस वर्ष पहिले की ताजगी व निष्ठा को मैंने आज फिर उसी रूप मे पाया। इन दार्शनिक-सूक्तियो के नियमित 'सवाद' से मेरी भाषा व शैली म एक निश्चित निखार आयेगा। और यह अवसर मुझे इन्ही के सयोग से मिला। इसके लिए मैं इनका एहसानमन्द हू। एहसान किसी पर थोपा नही जाता, मन की अतल गहराई से स्वीकार किया जाता है। बस इतना ही।

१५ अगस्त, १९७७ —विजयदान देथा

पुनश्च : प्राक्कथन , भूमिका तथा प्रस्तावना के बदले 'मुख-बध' का प्रयोग मुझे नवीनता के साथ खूबसूरत भी लगा। यह विकल्प मैंने श्री सत्यरजन सेन द्वारा सपादित 'प्रवाद - रत्नाकर' से ग्रहण किया , इसके लिए इनका भी अकिंचन आभारी हू।

विज्जी

प्रस्तावना

राजस्थान प्रदेश को आमतौर पर एक शुष्क प्रदेश कहा जाता है। जहा तक पीने के पानी का सवाल है तथा खेती के लिए सिंचाई की व्यवस्था का प्रश्न है , उस माने म यह प्रदेश शुष्क जरूर है। किन्तु जहा तक भाषा, सगीत एव कला का सवाल है , यह प्रदेश अपने-आप मे बहुत समृद्ध है। यहा की भाषा बहुत सरस, सजीव व पानी वाली है। साहित्य सगीत और कला मे यह प्रदेश बिलकुल ही शुष्क नही है। साथ ही शूरवीरता के लिए तथा सतियो की तेजस्विता के लिए भी राजस्थान बहुत ही प्रसिद्ध प्रदेश रहा है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है :

> सौर्य सरित बहती जहा, जूझत सेत हमेम।
> मारवाड अस देस को, मूढ कहै मरुदेम।

राजस्थानी भाषा मे कहावतों, मुहावरो छोटे व बडे कहानी किस्सो का प्रचुर भण्डार है। जितनी प्रकार की बोलिया इस प्रदेश के विभिन्न भागो मे बोली जाती हैं , उन सभी में हजारो - हजारो की सख्या मे कहावतें प्रचलित हैं। कहावतें प्राय अनुभव पर आधारित हैं , जब कि कहानी-किस्से, घडे हुए होते हैं। शेखावाटी की तरफ कहावत को कैंवत कहते हैं। इस बारे मे एक प्रसिद्ध कहाव तभी है कि 'कैंवत बराबर साची नी अर कहाणी बराबर भूठी नी।'

कहावतों की कुछ पुस्तकें पहले से छपी हुई तो हैं, लेकिन यह कहावत कोश जो अब आपके हाथ मे है , वह दूसरे कोशों से भिन्न है तथा है वृहत् भी। पहले खण्ड म ३२७२ कहावतें हैं। अगले चार खण्ड पूरे होने पर कहावतो की कुल सख्या १५००० के लगभग हो जायेगी। ऐसी आशा है कि आगामी चारो खण्ड पाठको की सेवा म शीघ्र ही पहुच जायेंगे।

इस कहावत-कोश मे सम्पादको की जगह श्री विजयदानजी देथा ने अपना और मेरा दोनों का नाम दिया है , लेकिन दरअसल परिश्रम सारा उनका ही है। मेरा नाम देने का कारण तो इतना ही है कि एक बार मेरे मन मे कल्पना हुई कि शेखावाटी की तरफ जो कहावतें प्रचलित हैं तथा मुझे जो याद हैं , उन्हे पुस्तक रूप मे छपा दू। जिन दिनो मेरे मन मे यह कल्पना उठी और जब मैं कहावतें लिखने बैठा तो करीब ढाई हजार कहावतें लिख ली। सयोग से उन्ही दिनो श्री कोमल कोठारी व श्री विजयदानजी देथा का किशनगढ आना हुआ। मेरी लिखी हुई कहावतें उन्होने देखी और मेरी कल्पना उन्हे पसद आई। वे मेरी कहावतों को अपने साथ बोरून्दा ले गये। बाद म श्री विजयदानजी पश्चिमी राजस्थान मे प्रचलित कहावतें इकट्ठी करने मे जुट गये। मैं भी समय समय पर दस दस, बीस बीस नई कहावतें जो मुझे याद आती रही उन्हे भेजता रहा। उनके प्रयास और परिश्रम से राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश का पहला खड आपके हाथो मे है।

मेरा व श्री विजयदानजी का यह दावा नही है कि राजस्थान मे प्रचलित सारी कहावतें या कहावतो का एक बहुत बडा भाग इन पाच खण्डो मे आ जायेगा। क्योंकि राजस्थानी भाषा के अतर्गत मेवाडी , हाडौती तथा ढूढाडी आदि विभिन्न भागो मे बोली जाने वाली कहावतों की सख्या तो करीब एक लाख तक पहुच सकती है। फिर भी जितनी भी कहावतें इकट्ठी हो पाईं, उन्हे पाठको को सविनय भेंट करने मे प्रसन्नता का अनुभव करता हू। इस प्रयास को यदि राजस्थानी भाषा के कद्र - दान भाइयो ने पसद किया तो मुझे सतोष होगा।

—भागीरथ कानोडिया

राजस्थानी कहावत कोश

अ

अऊत गांव मे कुम्हार ई मेहतो । १

उज्जड गाव मे कुम्हार ही सर्वेसर्वा ।

–सयोगवश किसी कमी के कारण व्यर्थ की वस्तु का भी महत्त्व बढ जाता है ।

–अभाव के बीच नगण्य वस्तु भी उपयुक्त हो जाती है ।

अऊता का गाव किसा न्यारा बसे । २

कपूतो की कोई अलग बस्ती नही होती ।

–समाज मे अच्छे बुरे का समग्र रूप मे अस्तित्व है ।

–बुरे को भले से जुदा नही किया जा सकता ।

अऊतिया रौ धन फळै नीं । ३

निपूते का धन फलता नही ।

–निसतान व्यक्ति के मरने पर सपत्ति की ठीक तरह सभाल नही हो पाती । हर कोई उसे हथियाना चाहता है । इस कारण उसकी सपत्ति बढने के बजाय घटती रहती है ।

पाठा निपूतिये रौ धन फळै नी ।

अकल अर अक्खड अेक घर कोनी खटावै । ४

अक्ल व अक्खड एक घर मे नही रह सकती ।

–जिसमे बुद्धि होगी वह थोथी हेकडी नही रखेगा । जिसमे थोथी हेकडी होगी, उसमे बुद्धि का अभाव होगा । इस कारण दोनो का पारस्परिक मेल दुश्वार है ।

पाठा अक्ल अर अक्खड अक घर नी मोहै ।

अकल आप मे अर धन दूजा कनै घणो दीसै ५

मनुष्य को अपनी समझ व दूसरे का धन ज्यादा दिखता है ।

–अपनी बुद्धि व दूसरे के धन के आधिक्य की भ्रान्ति स्वाभाविक है ।

अक्ल उधारी ना मिळै । ६

अक्ल उधार नही मिलती ।

–शिक्षा दीक्षा से बुद्धि का परिमार्जन तथा विकास तो सभव है, किन्तु अतत अपनी बुद्धि के अलावा दूसरों की बुद्धि पर कभी भी निर्भर नही किया जा सकता ।

–समय पर अपनी बुद्धि ही काम आती है ।

अकल ऊमर आसरै नीं व्है । ७

अक्ल उम्र पर आश्रित नही होती ।

–या उम्र के साथ अनुभव और अनुभव के साथ बुद्धि अवश्य बढती है, पर यदि कोई व्यक्ति छोटी अवस्था मे अत्यधिक बुद्धिमानी की बात करे और इसके विपरीत कोई बुजुर्ग मूर्खता का प्रदर्शन करे तब यह कहावत प्रयोग मे आती है ।

अक्ल किणी नै बाटीजै कोनीं । ८

अक्ल किसी को बाटी नही जा सकती ।

–धन, सपत्ति व ढोर डागर का बटवारा तो सभव है, पर यदि कोई व्यक्ति मूरख हो तो उसकी पूर्ति किसी दूसरे की समझदारी से नही हो सकती ।

अकल किणी रै बाप री कोनीं । ९

अक्ल किसी के बाप की नही होती ।

–अक्ल किसी की भी पैतृक-सपत्ति नही है । अवसर, साधन, निष्ठा व अभ्यास से हर व्यक्ति बुद्धिमान बन सकता है ।

अकल को न दाणू, मन मे मोत स्याणू । १०

अक्ल का न दाना, मन मे बहुत सयाना ।

–यह मानव स्वभाव की प्रक्रिया है । प्रत्येक व्यक्ति का

अपनी बुद्धि का गुमान होता है। वह स्वभावत दूसरो को अपने से कम बुद्धिमान समझता है।
पाठा अक्ल रा वणूका ई कोनी अर मन मे माराजा वण्योडो।

अकल तो अडनै ई को निकळी नीं। ११
अक्ल तो पास होकर भी नही निकली।
—अक्ल से कोसो दूर। बुद्धि की नितात कमी।

अकल तो आई पण धणी मरया पाछै। १२
अक्ल तो आई पर पति की मत्यु के बाद।
—भारी नुकसान उठाने के बाद होशियार होना।
—बाद की अत्यधिक प्रवीणता से पहिले के नुक्सान की पूर्ति नही हो सकती।
—अवसर बीतने के बाद ज्ञान प्राप्त होना।
पाठा राड व्हिया पछै मत आवै।

अकल न बाडी नीपजै, हेत न हाट बिकाय। १३
अक्ल खेत मे पैदा नही होती और न प्रेम हाट बाजार मे बिकता है।
—क्रय-विक्रय द्वारा प्राप्त की जाने वाली अन्य वस्तुओ की तरह अक्ल व प्रेम सहज प्राप्य नही है।
—जैसी और जितनी भी अपनी समझ है, उसीका भरोसा करना चाहिए।
पाठा अकल उधारी ना मिळै, हेत न हाट बिकाय।

अकल परवाण कमाई। १४
अक्ल के अनुरूप कमाई।
—यो कमाई के लिए साधन, सुविधा, सयोग व अवसर आदि बहुत सारी बातें अनिवार्य हैं, पर अपनी समझ तो अपरिहार्य है ही। बुद्धि की श्रेष्ठता स्वय सिद्ध है।

अकल बड़ी के नकल। १५
अक्ल बडी या नकल।
—अपनी अक्ल चाहे उसकी उपज कितनी ही छोटी क्यो न हो, बड़े से बडे व्यक्ति की नकल से बहुत बेहतर है।
—किसी की देखा-देखी या नकल करना भी एकदम सरल काम नही है। उसमे भी अक्ल अनिवार्य है।

अकल बड़ी के माग। १६
अक्ल बडी या भाग्य।
—अक्ल की तुलना मे भाग्य तो नितात अदृश्य व अगोचर है। केवल एक कल्पना मात्र। जहा बुद्धि, क्षमता व साधन सब मिलकर भी असफल हो जाते है, वहा भाग्य की प्रबलता को स्वीकार करके ही मनुष्य आश्वस्त होता है। इस कहावत मे इसी ओर सकेत है।

अकल बड़ी के भेंस। १७
अक्ल बडी या भैस।
—स्वर्गीय एस डब्ल्यू फैलन के हिंदुस्तानी कहावत-कोश मे इस कहावत को **'अक्ल बडी कि बहस'** के रूप मे दिया है। इसका अर्थ उन्होने इस प्रकार किया—'तर्क की अपेक्षा बुद्धि से काम लेना अच्छा होता है।' इसके साथ उन्होने कोष्ठक मे ऐसी टिप्पणी भी की—यह कहावत अपने अशुद्ध रूप मे 'अक्ल बडी कि भैस' इस तरह प्रचलित है।'

फैलन का यह अर्थ उपयुक्त नही जचता। बहस या तर्क मे अक्ल की अपेक्षा तो रहती ही है। और अक्ल के साथ तर्क-शक्ति भी वाछनीय है। दोनो मे परस्पर विरोध नही सामजस्य है। फैलन के इस अर्थ से कहावत का मर्म स्पष्ट नही होता। अक्ल और भैस की तुलना मे यह सकेत निहित है कि प्रत्यक्ष आखो से बडी दिखने वाली चीज वास्तव मे बडी नही होती। इसके विपरीत अक्ल जैसी अदृश्य शक्ति का महत्त्व सर्वोपरि है। किसी वस्तु का भारी भरकम रूप उसके बडप्पन का द्योतक नही होता। लोक बुद्धि की परिचायक शक्ति के अनुरूप यही कहावत का शुद्ध रूप है।

अकल बिना ऊट उभाणा डोलै। १८
बुद्धि न होने से ऊट नगे पाव डोलते है।
—बुद्धि न होने के कारण नासमझ व्यक्ति साधनो से वचित रह जाते हैं।
—बुद्धि का माहात्म्य बखाना गया है। इस कहावत मे यह मर्म भी स्पष्ट है कि आकार की विशालता अपने-आप मे कोई बडी बात नही होती।
पाठा • अकल बिना ऊट उभाणा फिरै।

अकलमंद नै इसारो घणो। १९
अक्लमद को इशारा ही काफी।
—थोडे मे ही सारी बात को समझ लेना ही बुद्धिमानी की

निशानी है।

अकल माथै भाटौ पडग्यौ। २०
अक्ल पर पत्थर पड गया।
—बुद्धि का पटरा ही बैठ गया। अक्ल एकदम मारी गई। नितात जड हो गई।

अक्ल रा टका खरच व्है। २१
अक्ल के लिए रुपये खर्च होते है।
—अक्ल सहज प्राप्य वस्तु नही, उसे प्राप्त करने के लिए व्यय करना पडता है।
पाठा अक्ल रा टका लागै।
अक्ल सीत-मीत मे कोनी मिळै।

अकल री पूछ व्है आदमी री नीं। २२
अक्ल की पूछ होती है आदमी की नही।
—केवल मनुष्य योनि प्राप्त होना ही पर्याप्त नही, उसमे वाछित गुणो का समावेश तो होना ही चाहिए। सभी मानवीय गुणो मे अक्ल सर्व श्रेष्ठ है।

अकल रै लारै लट्ठ लियां फिरै। २३
अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरता है।
—अक्ल के साथ पूरी दुश्मनी बरतना ताकि वह पास तक न फटक सके। नितात जड-बुद्धि।

अकल रौ अपचौ। २४
अक्ल की बदहजमी।
—नितात नासमझी।
—जरूरत से ज्यादा बुद्धिमानी का मिथ्या प्रदर्शन।
पाठा अकल रौ अजीरण।

अकल रौ छांटौ ई कोनीं। २५
अक्ल की बूद भी नही।
—बुद्धि का नितात अभाव
पाठा अकल रौ लवलेस ई कोनी।

अकल रौ दुस्मण। २६
अक्ल का दुश्मन।
—दुश्मन के समान अक्ल से दूर रहना। नासमझी की हद।
—महामूर्ख।
पाठा अकल रौ बैरी।

अकल सरीरां ऊपजै, दीयां लागै डाम। २७
अक्ल शरीर से ही निसृत होती है, दी नही जा सकती। दिये तो केवल डाम [तप्त लोहे से दागने की विधि] ही जाते हैं।
—हर व्यक्ति के अपने मस्तिष्क से ही बुद्धि उत्पन्न होती है, प्रदान नही की जा सकती।
—उच्च शिक्षित व्यक्ति हर समय समझदारी का काम करेगा यह कोई जरूरी नही। ज्यादा पढा-लिखा व्यक्ति मूर्खता की बात करता है, तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।
पाठा अकल सरीरा ऊपजै, दीवी न आवै सीख।

अकल सिरै पदारथ। २८
अक्ल श्रेष्ठ पदार्थ है।
—समस्त भौतिक, लौकिक व सामाजिक वस्तुओं की तुलना मे बुद्धि सर्वोपरि है।

अकल सूं खुदा पिछाणीजै। २९
अक्ल से खुदा की पहिचान होती है।
—अक्ल के बूते पर हर कार्य सभव है। बडी स बडी सत्ता, तत्व व सिद्धात की खोज का श्रेय बुद्धि को ही है।

अकल सू बोझ्या मरै। ३०
अक्ल के बोझ से मर रहा है।
—अपने से अधिक अन्य किसी को बुद्धिमान नही समझना।
—अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता की गलतफहमी का बोझ।
—अपनी बुद्धि के प्रति अत्यधिक दभ।
पाठा अकल आगै भारया मरै।

अकल सूं सै काम सरै। ३१
अक्ल से सब कार्य सपन्न होते हैं।
—किसी काम की शुरुआत करने से पहिले उसके सभी पहलुओं पर सोच विचार कर लिया जाय तो उसकी सफलता असदिग्ध है।
—नासमझी से ही कोई कार्य असफल होता है।
—किसी भी कार्य की सम्पूर्णता के लिए बुद्धि का प्रयोग अनिवार्य है।

अकल हाट-बजारां बिकै तौ कुण मूरख रैवै। ३२
अक्ल हाट बाजार मे बिकने लगे तो फिर कौन मूर्ख रहे।
—अक्ल क्रय-विक्रय से प्राप्त की जाने वाली चीज नही है।

–स्वय की बुद्धि ही समय पर काम आती है। उसका किसी से भी लेन देन नही होता।
–मूर्ख सदा मूर्ख ही रहेगा।

अक्ल हीया मे ऊपजै। ३३

अक्ल हृदय की अनुभूति मे ही उत्पन्न होती है।
–अपने ही हार्दिक अनुभवो के अलावा बुद्धि की उत्पत्ति का कोई अन्य स्रोत नही।
–दूसरो की समझ से काम नही चल सकता।
–यदि स्वय मे बुद्धि न हो तो वह कहा से लाये।
–मूर्ख व्यक्ति मूर्खता की बात के अलावा और कर ही क्या सकता है!

अकास बाधै, पयाळ बाधै, घर री छान चवै। ३४

आकाश बाधे, पाताल बाधे, अपनी झोपडी चू रही है।
–आकाश-पाताल की डीग मारे और अपने घर का अता-पता ही नही।
–दुनिया भर की व्यवस्था मे व्यस्त, पर घर का छोटा-सा कार्य भी सम्पन्न न होना।
–डीग मारना आसान किन्तु काम करना मुश्किल।
–कार्य-क्षमता का झूठा प्रदर्शन।
–व्यवहार कुशलता का नितान्त अभाव।

अकास मे बीजळी चिमकै, गधेडो लात बावै। ३५

आकाश मे बिजली चमकती है, गधा दुलत्ती झाडता है।
–अपनी क्षमता के परे असफल प्रयत्न करना।
–अपनी शक्ति को व्यर्थ क्षीण करना।
–असबद्ध निराधार जोश प्रकट करना।
–दूसरे की सत्ता समृद्धि मे खामखा अतिरेक उत्साह प्रकट करना।
–अपने सामर्थ्य से सर्वथा अनभिज्ञ।

अकास भूमटिया ज्यू दीसै। ३६

आकाश नितात छोटा नजर आता है।
–ऐश्वर्य मे मदहोश व्यक्ति को सभी कुछ तुच्छ नजर आता है।
–अपने ही अहकार मे खोये रहना।
–सुख व ऐश्वर्य मे मदहोश।
–अपने अतिरिक्त दूसरो का रच-मात्र भी खयाल नही रखना।

पाठा· आभो टोपाळी ज्यू दीखै।

अकास सू पड़ी तो खिजूर मे अटकी। ३७

आकाश से पडी तो खजूर मे अटकी।
–एक सकट से बचकर दूसरे मे फसना।
–आपत्तियो का ताता कभी समाप्त ही न होना।
–दुर्भाग्य की विडम्बना।

पाठा· आभै पटकी तो खिजूर मे अटकी।
कैर सू छूटी अर कूमटिया मे अडियो।

अकास सू परकीजी, धरती झाली कोनीं। ३८

आकाश से गिरी और धरती ने आश्रय नही दिया।
–नितात निराश्रिता की अतर्वेदना।
–दुख व सकट के दिनो मे जिससे कुछ भी आशा हो और वह एकदम हाथ झटक दे।
–दुर्भाग्य की सीमा।
–आपत्ति के समय आत्मीय-जनो की अप्रत्याशित उपेक्षा या प्रताडना।

अकास सोधतो धरती लाधो। ३९

आकाश मे खोज रहा था, धरती पर मिला।
–जिसके प्रति आदर्श की ऊचाइयो का भ्रम हो और उसके विपरीत अत्यत पतित अवस्था मे साक्षात्कार।

अगन अर काळ आगै कोई नीं बचै। ४०

अग्नि और काल से कोई नही बच सकता।
–सब कुछ नश्वर है।
–धनी, शूरवीर व राजा का भी काल के सामने जोर नही चलता।
– दुष्ट की दुष्टता से भला कौन बच सकता है!

अगन दाझ्या रो अगन ई उपाव। ४१

अग्नि से जले का अग्नि ही उपचार।
–आग से जलने पर आग का सिकताव ही उपादेय है और ठडे जल का प्रयोग हानिप्रद।
–बुराई से ही बुराई का शमन होता है।
–बुरे के साथ भलाई का बरताव सगत नही।
–सस्कृत मे इसके समानान्तर एक उक्ति है — उष्णमुष्णेन

शीतल सम सम शमयति।

अग्रे अग्रे ब्राह्मणा, नदी नाळा बरजन्ते। ४२

आगे आगे ब्राह्मण पर नदी नाला को छोडकर।

–हित लाभ व मगलकारी प्रत्येक काम म सबम आगे और हानि व जोखम के कामो स बचने की चालाकी बरतना।

–अपने अपने हित के प्रति सभी सतक रहते है।

–ब्राह्मण जाति की विशिष्टता अकित होने पर भी यह कहावत व्यापक रूप म हर स्वार्थी मनुष्य के लिए काम म ली जाती है।

अडवौ खावै नीं खावण दे। ४३

आदमी का भ्रम पैदा करने वाला अडवा [काग भगोडा] खेत मे खडी फसल को न खुद खाता है और न पशुओ को खाने देता है।

–ऐसा मक्खीचूस व्यक्ति जो अपनी अतुल संपत्ति का न स्वय भोग करता है और न दूसरा को करने देता है।

–एक ऐसा अयोग्य व्यक्ति जो सयोग से किसी बड पद पर आसीन तो हो जाता है पर अपनी अक्षमता के कारण न स्वय कोई काम कर पाता है और न दूसरा को करने देता है।

–अपने झूठे सामर्थ्य के भ्रम से भयभीत करने वाले अयोग्य व्यक्ति के प्रति व्यग।

अडियै वडियै आडौ आवै सौ आपरौ। ४४

वक्त जरूरत जो काम आये वही अपना।

–केवल रिश्ते के कारण ही कोई व्यक्ति घनिष्ठ नहीं हो जाता। अपना आत्मीय तो वही है जो आफत-कठिनाई मे साथ दे।

–खून के रिश्ते की अपेक्षा सहयोग का सबध श्रेष्ठ है।

–आत्मीयता के लिए केवल रिश्ते की दुहाई पर्याप्त नहीं होती।

पाठा अवखी म आडौ आवै सौ ई सगौ।

अडियौ दडियौ बूडली के सिर पडियौ। ४५

बुरा भला सभी बुढिया के सिर।

–हर काम की भलाई बुराई मुख्य व्यक्ति के मत्थे ही पडती है।

–किसी और की गल्ती दूसरे के सिर मढना।

–निबल व्यक्ति को सभी कोई दोषी ठहराते है।

–बड व्यक्ति की गलतियो की ओर सामान्यतया किसी का ध्यान नहीं जाता।

पाठा अडी दडी बऊडी के सिर पडी।

अचळैजी नै कुण गिदिया, गिदिया घर री नार। ४६

अमुक व्यक्ति को किसन बदन म किया—उसी की पत्नी ने।

–किसी आदमी की प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा उसके परिवार वालो पर ही निभर करती है।

–घरवाले ही अपने प्रमुख व्यक्ति को लाछित करना चाहे तो भला उसकी प्रतिष्ठा कैसे रह सकती है!

–घरवालो से बढकर कोई आत्मीय नहीं और घरवालो से बढकर कोई दुश्मन नहीं।

–घर की समस्त आबरू अच्छी औरत के हाथो म सुरक्षित है।

अछवाई खावड पडै ४७

अतिरेक स्वच्छता बरतने वाली [गाय] गड्ढ म गिरती है।

–जरूरत स ज्यादा दिखाव का ढोग करना अच्छा नहीं।

–हर काम अपनी सीमा मे ही शोभित होता है।

–अधिक छूआछूत पालना उचित नहीं।

पाठा अछूगाळ कादै मे कळीजै। अछूगाळ कीच म पडै।

अजगर पडियौ उजाड मे दाता देवण हार। ४८

अजगर पडा उजाड मे दाता देवन हार।

–सभी के भरण पोषण का एक मात्र जिम्मा ईश्वर का है।

–अकमण्यता के औचित्य की आत्म-तुष्टि।

–भाग्यवादिता के दशन की पुष्टि।

–कर्म के प्रति उपेक्षा।

अजमेरा मेरा नीं कोई तेरा। ४९

अजमेरा न कोई मेरा न तेरा।

–अजमेर इलाके के निवासी किसी के नहीं होते। स्वार्थ ही उनका सबसे बडा रिश्ता है।

–हर स्वार्थी मनुष्य के लिए प्रयुक्त।

अजमेरी घालै जिकै नै चेरासाई त्यार। ५०

अजमेरी डाले उसके लिए चेरासाई तैयार है।

–विवाहादि किसी सामाजिक अनुष्ठान म अजमेरी रुपय की न्योत देने वाले को वापिस मौका आने पर चेरासाई रुपया मिलेगा [नोट उस समय अजमेरी रुपये की कीमत

दस आने के बराबर व चेरासाई रुपये का मूल्य सोलह आने के बराबर होता था]
–अच्छे और बुरे दोनों के प्रतिकार स्वरूप इस कहावत का प्रयोग होता है ।
–हाथाहाथ सवाया बदला चुकता करना ।
–जैसे के साथ तैसा व्यवहार ही सगत है ।
–प्रतिकार की सहज प्रक्रिया मनुष्य का स्वभाव है ।

अजाण किणरै आगणै कूकै । ५१
अनजान किसके आगन चिल्लाये ।
–अनजान व्यक्ति किसके घर जाकर अपना दुख प्रकट करे ।
–अपरिचित व अनजाने के प्रति मनुष्य की कोई सहानुभूति नहीं होती ।
–आपसी सपर्क ही मानवीय समाज के सचालन का प्रमुख आधार है ।

अजांण पाणी मे नीं उतरणौ । ५२
अज्ञात पानी मे नही उतरना चाहिए ।
–जिस पानी की गहराई का पता न हो, उसमे गहराई से सोचने के बाद ही उतरना चाहिए ।
–जिस काम के बारे मे पूर्णतया जानकारी न हो उसमे हाथ डालने मे हानि का खतरा है ।

अजाण'र आधौ बिरोबर । ५३
अनजान और अधा एक समान ।
–अधे की तरह अनजान व्यक्ति भी विवश होता है ।
–अनजाने मे की हुई गलती, गलती नही होती ।
–आदमी की अदरूनी नीयत ही गलती के निर्णय की मुख्य कसौटी है ।

अजांणियै नै दोस नीं । ५४
अनजाने को दोष नहीं ।
–अनजाने किया हुआ अपराध, निरपराध के ही समान है ।
–व्यक्ति की मशा ही अपराध का प्रमुख आधार है ।

अजे तौ बावळियौ दोय रौ दोय पानं है । ५५
अभी तो बबूल दो ही दो पत्तों से है ।
–अभी तो बबूल का समस्त विकास होना शेष है ।
–विकास व परिवर्धन की गति का सर्वथा अवरुद्ध होना ।
–पूर्ण विकास के पूर्व हर क्षेत्र मे योजना-बद्ध परिवर्तन व परिमार्जन की सभावना शेष रहती है ।
–विकार का पूरा फैलाव न हो तब तक सुधार की गुजाइश बनी रहती है ।

अजे तौ माणा मे मूठी ई नीं पीसीजी । ५६
अभी तो माणों मे [बाट बटखरो के पहिले अनाज को तोलने का एक बासन] एक मुट्ठी अनाज नही पीसा गया ।
–ढेर सारे अनाज मे से ही मुट्ठी भर पीसने का काम ही पूरा नहीं हुआ ।
–सौपी हुई जिम्मेवारी की शुरुआत ही न होना ।
–काम तो आखिर करने से ही पूरा होता है ।

अजे पाळिया पछै भुस्यौ ई नीं । ५७
अब तक पालने के बाद भौंका ही नही ।
–पाले हुए कुत्ते ने भौंकने जैसे मामूली कर्त्तव्य का भी पालन नही किया ।
–किसी काम के निमित्त किये हुए सारे खर्च व परिश्रम का व्यर्थ हो जाना ।
–खर्च के बदले यत्किंचित लाभ न होना ।

अटक्यौ बोहरौ उधार दे । ५८
फसा हुआ बोहरा उधार देता है ।
–उधार दी हुई रकम की वसूली के लिए आगे और उधार देनी पडती है ।
–कभी कभी जिस चीज के कारण फसना होता है, उसी चीज से मनुष्य का छुटकारा सभव है ।
–भलाई मे भी कोई न कोई स्वार्थ निहित रहता है ।

अटकै सौ भटकै । ५९
अटकेगा सो भटकेगा ।
–जिसके गर्ज होगी वह बार-बार चक्कर काटेगा ।
–कठिनाई पडने पर ही आदमी विशेष सक्रिय होता है ।
–असमजस मे पडे और काम बिगडा ।
–सशय दुविधा से ही भटकाव पैदा होता है ।

अट्टा-सट्टा करणियै की भूख कोनीं मरै । ६०
अट्टा सट्टा करने वाले की भूख नही मरती ।
–अदला-बदली करने वाले का कभी मन नही भरता ।

–कुछ समय बाद आदत स्वभाव बन जाती है। आदत से लाचार।

अठी जावै तौ कूवौ, उठी जावै तौ खाड। ६१

इधर जाय तो कूआ, उधर जाय तो खड्ड।

–जिधर जाय उधर ही आफत।

–संकट से बचने का कहीं कोई उपाय नहीं।

–असमंजस के द्वन्द्व की विकट मन स्थिति का चित्रण।

–किंकर्तव्यविमूढ़ता।

पाठा अठीनै पड़ै तौ कूवौ, उठीनै पड़ै तौ खाड।

अठी दौड़ै, उठी धावै करम लिख्या सो पावै। ६२

इधर दौड़े, उधर धाये, कर्म लिखा सो पाये।

–इधर-उधर भटकने से कोई लाभ नहीं, केवल भाग्य के अनुसार ही कमाई होती है।

–भाग्य के सामने सभी विवश हैं।

–चाहे जितनी ही चेष्टाएं की जाय, भाग्य में लिखा मिट नहीं सकता।

अठी री छींया उठी आयां सरै। ६३

इधर की छाया उधर आकर रहेगी।

–दिनमान बदलते रहते हैं।

–आज जो दुखी है, वह कल सुखी हो सकता है।

–समय के साथ परिवर्तन अपरिहार्य है।

अठी रौ दिन उठी उग आयौ। ६४

इधर का दिन उधर उग आया।

–प्रत्याशा के अनुरूप किसी आकांक्षा का पूरा न होना।

–आशा के बिलकुल विपरीत ही घटित होना।

अठै ई रेवड़ को रवाड़ौ, अठै ई नाहर को घुरौ ६५

यहीं भेड़ों के रहने का स्थान और यहीं भेड़िये की माद।

–[यहां नाहर का आशय—'छाळी नाहर' से है, जो राजस्थानी में भेड़िये के लिए प्रयुक्त होता है]

–निपट अव्यवस्था, जिसके दुष्परिणामों को कभी टाला नहीं जा सकता।

–विपरीत संयोग का दुष्परिणाम अवश्यंभावी है।

–जिन चीजों का परस्पर मेल नहीं, उनको साथ रखने की चेष्टा संगत नहीं।

–प्रकृति-दत्त स्वभाव को कभी मिटाया नहीं जा सकता।

पाठा अठै ई रेवड़ को रेवाड़ौ, अठै ई भेड़िया की घुरी।

अठै अंयां, वठै वंयां, आ गिणगोर पुजै कंयां। ६६

इधर ऐसी, उधर वैसी इस गनगौर की पूजा कैसी।

–यहां एक बात, वहां दूसरी बात फिर कैसे पार पड़ेगी!

–कभी एक बात तो कभी दूसरी बात करने से आदमी का विश्वास उठ जाता है।

अठै काई मक्किया खावण नै पधारिया। ६७

यहां क्या भुट्टे खाने के लिए आये।

–जिस लोभ की टोह में आये, उसकी यहां पूर्ति नहीं हो सकती।

अठै काई मेल नै भूलग्या। ६८

यहां क्या रख कर भूल गये।

–कौन-सा स्वार्थ तुम्हें यहां खींच लाया।

अठै काई लोबौ लेवण नै पधारिया। ६९

यहां किस लाभ के लिए आये। यहां क्या हथियाने के लिए आगमन हुआ।

–जिस लोभ की मंशा से यहां आये, वह पार नहीं पड़ेगा।

अठै काई सुन्याड़ देखी। ७०

यहां क्या पोल पट्टी देखी।

–हर कहीं किसी की जबरदस्ती नहीं चल सकती।

–हर किसी को अपने से कमजोर समझने की नादानी।

अठै किसा काचर खा है। ७१

यहां कौन से काचरे खाने को है।

–यहां चालाकी से काम बनने वाला नहीं।

–यहां आसानी से दाल नहीं गलेगी।

पाठा इणमें कै काकड़िया काढ़ै। इणमें के काकड़िया खावै।

अठै किसा नागा नाचै। ७२

यहां कौन-से नंगे नाच रहे हैं।

–यहां तमाशे योग्य कुछ भी नहीं।

–बेकार भीड़-भड़क्का क्यों लगा रखी है?

अठै किसा सोनय्या नीपजै। ७३

यहां कौनसा सोना पैदा होता है।

–फालतू किसी को देने के लिए यहां कुछ भी नहीं।

–धन बहुत परिश्रम करने के बाद जुड़ता है, उसे आसानी

से छुटाया नही जा सकता ।
–जो किसी को कुछ दे नही सकता, उसे लेने का भी अधिकार नही ।

अठै किसी चाक घूमै है । ७४
यहा कौनसी चाक घूम रही है ।
–यहा कौनसी अजीब बात घटित हो रही है ।
–यहा कौनसा तमाशा हो रहा है ।

अठै किसी बाप री हेमाणी गड्योडी । ७५
यहा कौनसी बाप की सपत्ति गडी हुई है ?
–दूसरे के धन को हथियाने की अनधिकार चेष्टा करने पर ।
–कोई किसी का पीछा ही न छोडे तब यह कहावत प्रयुक्त होती है ।
–किसी से झूठी आशा लगाने पर ।
पाठा अठै काई हेमाणी गड्योडी ।

अठै किसी बादरी ब्याई ! ७६
यहा कौन सी बदरी ब्याई है !
–ऐसी क्या अजीब बात हुई सो यहा तमाशा देखने आये ।
–ऐसा क्या अप्रत्याशित घटित हो गया !
–रोजमर्रा की सामान्य बात पर असाधारण उत्सुकता क्यो ?

अठै किसी नाथी रौ बाडौ है । ७७
यहा कौन-सा नत्थी का बाडा है ।
–यहा किसी की धीगा-मस्ती नही चलेगी ।
–कोई अपनी मनमानी करना चाहे तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।

अठै किसी नानाणौ है ! ७८
यहा कौन-सा ननिहाल है !
–कोई ननिहाल-की तरह हर कही मौज मस्ती या गुल्छर्रे उडाना चाहे तब यह कहावत प्रयुक्त होती है ।
–ननिहाल की भाति यहा किसी तरह का लिहाज नही रखा जायेगा ।

अठै किसी रळी रौ जोड देखियौ । ७९
यहा कौनसी मौज मस्ती की ठौड समझ रखी है ।
–यहा किसी का अन्याय या मनमानी नही चलेगी ।
–अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप ही दूसरो की प्रतिष्ठा का ध्यान रखना चाहिए, ऐसा नही कि अपनी शैतानियत की पूर्ति के लिए ही दूसरो का अस्तित्व है ।
पाठा अठै किसी रळियार राखी है । अठै किसी रळियार खातौ है ।

अठै जोईजै जका उठै ई जोईजै । ८०
यहा जरूरत है उनकी वहा भी जरूरत है ।
–भले व नेक व्यक्ति मानव समाज मे प्रिय है और ईश्वर के घर मे भी ।
–समाज मे प्रतिष्ठित व्यक्ति की अकाल मृत्यु पर उसे इस कहावत के रूप मे याद करते है ।
पाठा अठै चाय जैकी वठै बी चाय ।

अठै टर बठै टर, तेरै खातर छोडद्यू घर । ८१
यहा टर वहा टर, तेरी खातिर छोड दू घर ।
–किसी की सनक या तुनक मिजाजी से अपना नुक्सान नही किया जा सकता ।
–नगण्य बात के प्रति उपेक्षा ही बरतनी चाहिए ।
–किसी की छेडखानी मात्र से अपना घर तो नही छोडा जा सकता ।

अठै तळाई अर उठीनै बाघ । ८२
इधर तलैया और उधर बाघ ।
–कठिनाई से बचने का कोई रास्ता ही नही ।
–दो दुष्टो के बीच किसी भले आदमी की गुजर मुश्किल है ।
–निपट दुविधा जनक स्थिति ।
पाठा अठी जावै तौ कूओ, उठी जावै तौ खाड ।

अठै तौ तीना बळदा हळ यू इज वहसी । ८३
यहा तो तीन बैलो से यो ही हल चलेगा ।
–यहा तो सदा ऐसी ही मौज मस्ती मनाई जायेगी ।
–फिजूल खर्ची पर व्यग ।
–बेढगी अव्यवस्था का मखौल ।

अठै तौ रामलै ढेढ की बू नै भाभी कहसी सौ रहसी । ८४
यहा तो रामले चमार की बहू को भाभी कहेगा सो ही रहेगा ।
–बडो की मनमानी के आगे निर्बल का जोर नही चलता ।
–जो शक्तिशाली है वह किसी न किसी रूप मे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता ही है ।

–शक्ति व सत्ता तानाशाही की जन्मदात्री है।

अठै दाळ को गळै नीं। ८५

यहा दाल नही गलेगी।

–मनमानी नहीं चलेगी।

–किसी पर झूठा हावी होने मे कामयाबी नही मिले तो यह कहावत प्रयुक्त होती है।

–बेकार की धौस नही चलेगी।

अणकमावणू बीरौ, नित उठ मागै सीरौ। ८६

निठल्ला भाई, नित्य उठ मागे हलुवा।

–बिना कमाये, सुख ऐश्वर्य की चाह करना।

–निठल्लेपन के साथ बेहयापन भी जुड जाता है।

–कमाई छदाम भर की नही और ठाट सब करना चाहे।

अणचींती बीजळी पडी। ८७

अनचीती बिजली गिरी।

–अप्रत्याशित सकट।

–आकस्मिक दुर्योग।

अणचींती वाळो सदेसौ। ८८

अनचीती वाला सदेश।

–अनजाने व्यक्ति का अप्रत्याशित सदेश।

अणदोखी नै दोख, जिणरी गति न मोख। ८९

अनदोषी को दोष, जिसकी गति न मोक्ष।

–किसी निरपराध व्यक्ति पर अपराध मढने वाले की न सद्गति होगी और न मोक्ष।

–निरपराधी को दडित करना बहुत बडा पाप है।

अणधीज को टाबर, नादीदी को खसम बतळायोडौ ई बुरौ। ९०

ममता-से वचित बालक व नखरे वाली औरत के पति से बात करना ही बुरा है।

–बात करते ही गले पडने वाले व्यक्ति के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

अणभणिया घोडै चढ़ै अर भणिया मागै भीख। ९१

अनपढ घोडे पर चढते हैं और पढे लिखे व्यक्ति भीख मागते हैं।

–केवल पढना मात्र ही सम्पन्नता के लिए पर्याप्त नही है।

–पढे बगैर भी कोई व्यक्ति सम्पन्न हो सकता है।

–भाग्य की विडम्बना कि अनपढ मौज करते है और पढे-लिखे भीख मागते है।

–अपढ व्यक्तियों की पढे लिखो के प्रति तिरस्कार-भावना।

अणभणिया ढेढ, मन जाणिया पिलाणे। ९२

अपढ चमार, मन करे तभी सवार।

–अनभिज्ञ गवार और फिर मनमानी।

–अदक्ष व अकुशल व्यक्ति के द्वारा हानि की सभावना।

–नीम हकीम खतरे जान।

अणभणियौ भणिया रा कान कतरै। ९३

अपढ व्यक्ति पढ के कान काट लेता है।

–अपढ व्यक्ति भी अपने अनुभवो के बूते पर दक्ष हो सकता है।

–पढ लिखा के तिरस्कार मे अपढो की आत्म तुष्टि।

अणभै ऊपजै। ९४

बेइन्तहा सूझती है।

–चमत्कारिक व अपूर्व मानसिक उपज के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

–जिसकी बुद्धि अत्यधिक उर्वर हो।

अणभै रा नगारा घुरै। ९५

निर्भय नगारे बज रहे है।

–सर्वत्र मौज और अलमस्ती का आलम।

–जिसने भय को जीत लिया, उसे कोई हरा नही सकता।

–निर्भय व्यक्ति की विजय-दुदुभि सर्वत्र गूजती है।

अणमाग्या मोती मिळै, मागी मिळै न भीख। ९६

बिन मागे मोती मिले, मागी मिले न भीख।

–किसी के सामने हाथ पसारने से निकृष्ट काम कोई नही।

–मागने की प्रताडना के साथ इस कहावत मे सतोष के महत्त्व की ओर भी सकेत है।

–सतोष का मूल्य भी मोतियो से कम नही।

अणमिळचा रा त्यागी, राड मिळचा वैरागी। ९७

औरत मिल गई तो वैरागी और न मिली तो त्यागी।

–[त्यागी अर्थात् विरक्त साधुओं मे स्त्री रखना निषिद्ध है, जब कि वैरागियों मे स्त्री रखने का नियम है।]

–अवसर के अनुकूल आदर्श।

–व्यवहार मे आदर्श को घटित करना अत्यत कठिन है।

–अवसरवादिता के सिद्धात से सरल और कोई सिद्धात नही।
–एयाशी का मौका मिलने पर कोई सयम नही रख सकता।

अणमिळं का सं जती है। ९८
न मिले तो सब यति हैं।
–विवशता का दूसरा पहलू ही आदर्श है।
–मिले तो आकाक्षित वस्तु को भोगने मे कोई दुविधा नही और न मिले तो अपनी मजबूरी मे सिद्धातो का औचित्य खोजना।
–कुछ भी हाथ न आय तो सभी यति, सयमी और ब्रह्मचारी।

अणसमभ के आग रोवं, अपणा दीदा खोवं। ९९
नासमझ के आगे रोना, अपने दीद खोना।
–नासमझ के सामने विपदा प्रकट करने से अपनी ही शक्ति क्षीण होती है व समय नष्ट होता है।
–नासमझ व्यक्ति से प्रत्याशा रखने की विडबना।
–अपात्र से आकाक्षा रखने के पूर्व दस बार सोच लेना चाहिए।

अणहूत माटै मू काठी। १००
अनहोनी पत्थर से भी कठोर।
–अनहोनी पर मनुष्य का वश नही चलता।
–विवशता के आगे मनुष्य को हार माननी ही पडती है।
–जो अपने वश का नही, उसकी चिता व्यर्थ है।

अणहूत रै वायोडो को ऊगै नीं। १०१
अन्यायी की बोई हुई फसल नही उगती।
–अन्याय के अनुरूप उसका वैसा ही प्रतिफल होता है।
–अन्याय का प्रतिकार बुरे रूप मे होकर ही रहता है।
–स्वय प्रकृति भी अन्यायी से बदला लेती है।

अणहूतवाडै इरडियौ ई रूंख। १०२
उज्जड गाव मे एरड ही गाछ।
–अभाव के बीच ही कोई वस्तु अधिक समादृत होती है।
–नासमझी के कारण महत्त्वहीन वस्तु का भी महत्व बढ जाता है।
पाठा : अऊत वासै इरडियौ ई रूंख।
गाछ नी व्है जठै इरड ई रूंख।

अणहूतौ घास उकरडचा ऊगं। १०३
व्यर्थ घास घूरे पर उगता है।
–बेकार चीज स्वतः पनप जाती है।
–बुराई अपने उद्भव का स्थल स्वय खोज लेती है।
–लडकियो के जन्म को लेकर भी यह कहावत प्रयुक्त होती है।

अणहोणी होणी नहीं, होणी हो सौ होय। १०४
अनहोनी होनी नही, होनी हो सो होय।
–जो होना है वह होकर ही रहेगा।
–होनहार अटल है।
–भवितव्यता को मिटाने की कोई भी चेष्टा व्यर्थ है।
–होनहार के लिए चिंतित होना नितात नादानी है।
पाठा अणहाणी होवै नहीं, होणी हो सी होय।
होणी तौ होकर रहै, अणहोणी ना होय।

अणी चूकीं'र धार मारी। १०५
नोक सी भूल, मौत की भूल।
–मामूली-सी असावधानी से भयकर विनाश हो सकता है।
–सतर्कता का महत्त्व सर्वोपरि है।
–नगण्य भूल से प्राणो की जोखिम।
पाठा अणी चूकी र वीसा सौ।

अत री पत राखै भगवान। १०६
अति का मान, रखे भगवान।
–अति करने वाले की प्रतिष्ठा भगवान ही बचा सकता है।
–अति की सदैव दुर्गति।

अति राम वैर। १०७
अति व राम का वैर है।
–स्वय राम के यहा भी अति का निषेध है।
–स्वय परमेश्वर भी अति का पक्षधर नही।
–अति मे असुर-वृत्ति निहित है इसलिए ईश्वर उसका वैरी।

अतं सौ खपं। १०८
अति करने वाला अवश्य मरता है।
–अति का परिणाम अत।

अतोताई बेटो जायौ, माळा पैली नाक वढायौ। १०९
उतावली ने पुत्र जाया, नली से पूर्व नाक कटाया।

–[बच्चे की नाभि और कोख से जुड़ी नली प्रसव के समय काट दी जाती है ! बेसऊर उतावली औरत पुत्र देखने की अतिरेक जिज्ञासा में नीचे झुकी तो भूल से नली के बदले दाई के हाथों उसका नाक ही कट गया। इस संदर्भ को समझने से कहावत का अर्थ स्पष्ट हो जाता है।]
–अतिरेक जिज्ञासा व जल्दबाजी घातक है।
–नासमझ आतुर व्यक्ति पहिले अपना ही अनर्थ करता है।
–बेसुध उतावली बर्बादी की बुनियाद।
पाठा. नितोताई रै बेटी जायो, नाळा पैली नाक कटायो।
नादीदी रै गोगो जायो, नाळा पैली नाक बढायो।

अतोताई रो माटी आवै, भर दोपारां दियो जगावै। १९०
उतावली का खाविंद आये, भरी दुपहरी दीप जलाये।
–उतावला व्यक्ति अपनी सुध-बुध खो देता है।
–बेसुध खुशी में व्यय-अपव्यय का ध्यान नहीं रहता।
–नादान का उत्साह नितांत असंगत।
पाठा: नितोताई रो माटी आवै, दोपारा दियो जगावै।
अनोनी रो माटी आयो, दोपारा दियो जगायो।
नादीदी रो खसम आयो, भर दोपारा दियो जगायो।

अधकुचळियो सरप। १११
अधकुचला साप।
–साप की तरह कुटिल व्यक्ति को भी अधमरा छोड़ना नहीं चाहिए, अन्यथा वह फिर घात करेगा।
–ऐसा कुटिल व्यक्ति जिसे पूरा दंडित किये बिना ही छोड़ दिया हो।
पाठा: अधवढियो साप।

अधपढ़ विद्या घर धुवै, चिन्ता धुवै सरीर। ११२
अधूरी विद्या घर को और चिंता शरीर को धो डालती है।
–जिस प्रकार शरीर के लिए चिंता घातक है, इसी प्रकार घर के लिए अधूरी विद्या।
पाठा आधी विद्या घर धुवै, चिंता धुवै सरीर।

अधबिचलो कूलर। ११३
अधकचरी खली।
–तिलहन से न तेल निकला, न खली हुई और उसका अपना स्वरूप भी बिगड़ गया।
–किसी भी क्षेत्र में आधी जानकारी व्यर्थ है।

अधभणियो घरकां नै खाय, पूरो भणियो परलां नै खाय।
अधपढ़ा अपनों को खाये, पूरा पढ़ा परायों को। ११४
–अर्ध शिक्षित व्यक्ति पुश्तैनी हुनर से वंचित होकर नया कुछ भी सीख नहीं पाता, इसलिए घरवालों के लिए भार-स्वरूप बन जाता है और पूर्ण शिक्षा प्राप्त व्यक्ति इतना दक्ष हो जाता है कि वह आसानी से दूसरों को ठग लेता है।

अधर छैल खाक में छाणो। ११५
अनोखा छैला और बगल में कंडा।
–ऊपरी टीमटाम। बाहरी दिखावा।
–झूठी शान बघारना।

अधरम सूं धन होय, बरस पांच के सात। ११६
अधर्म से धन जुड़े, वर्ष पांच या सात।
–अधर्म की कमाई स्थायी नहीं रहती।

अधेली में पावळी, हाळण फिरै उतावळी। ११७
दो पैसे में चौथाई, हालिन फूली न समाई।
–स्वामित्व का थोथा प्रदर्शन।
–खामखा की मिल्कियत बघारना।

अन्न छूटा ज्यारा घर छूटा। ११८
अन्न छूटा जिसका घर छूटा।
–जिसका खाना-पीना छूट गया, उसका तो घर ही छूट गया। खाने के अभाव में अधिक जीवित रहना संभव नहीं।

अनजो तारै अनजो मारै। ११९
अन्न ही रक्षा करता है और अन्न ही मारता है।
–धान हो तो आदमी बच जाता है। धान न हो तो आदमी मर जाता है।
–आवश्यकता के अनुरूप अन्न तो अनिवार्य है, पर उससे ज्यादा हो तो आदमी का अहंकार बढ़ जाता है। और अहंकार में विनाश निहित है।
–अन्न के अभाव में शैतानियत सूझती है। आदमी मरने-मारने को तैयार हो जाता है।

अन्न खावै जिसो डकार आवै। १२०
अन्न खाये वैसी डकार आये।

–कार्य के अनुरूप कारण।
–संसार में बहुत सारी बातें अनुरूपता के आधार पर घटित होती हैं।

अन्न खावै जिसी निवत हुवै। १२१
जैसा अन्न वैसी नीयत।
–कमाई का तरीका उज्ज्वल है तो नीयत उज्ज्वल होगी और कमाई का तरीका भ्रष्ट है तो नीयत भी भ्रष्ट होगी।

अन्न जिसौ मन। १२२
जैसा अन्न वैसा मन।
–तामसिक भोजन, तामसिक स्वभाव। सात्विक भोजन सात्विक स्वभाव।
–खान पान के अनुसार मन ढलता है।
–जो व्यक्ति जिस वातावरण में पलता है उसीके अनुरूप उसका आचरण निर्धारित होता है।

अन्न मुक्ता घी जुक्ता। १२३
अन्न विमुक्ति से और घी युक्ति से खाना चाहिए।
–अन्न भर पेट तथा घी जितना पच सके उतना ही खाना उचित है।
–सभी बातों के लिए एक-सा मापदण्ड नहीं होता।

अन्न खावै माटी रौ नै गीत गावै वीरै रा। १२४
अन्न खाये सैंया का और गीत गाय भैय्या का।
–सहयोग किसी और का, यश किसी और का।
–किसी के प्रति मिथ्या कृतज्ञता प्रकट करना।

अन्न सू मरै, पण काम सू नीं मरै। १२५
अधिक खाने से भले ही कोई मर जाय पर अधिक काम से कोई नहीं मरता।
–कर्म की प्रशस्ति व निठल्लेपन की प्रताड़ना।
–कर्मरत मनुष्य सदा स्तुत्य है।
–हरदम काम में रत रहने का नाम ही जीवन है।

अन्नू नाचै, अन्नू कूदै, अन्नू तोडै तान। १२६
अन्न ही नाचता है अन्न ही कूद फांद करता है और अन्न ही राग रंग के लिए उकसाता है।
–पेट भरा होने पर ही सब तरह की अलमस्ती सूझती है।
–सम्पन्नता ही खुशहाली का आधार है।
–सम्पन्नता ही सभी प्रकार के उत्पात की जड़ है।

अनायास रौ नीं पचै। १२७
अन्याय की कमाई पचती नहीं।
–अन्याय व अत्याचार का बुरा फल अवश्यम्भावी है।
–आखिर अन्याय का भण्डाफोड़ होता ही है।

अनाड़िया रा गरू अनाड़ी व्है। १२८
अनाड़ियों के गुरु अनाड़ी ही होते हैं।
–मूरख को मूरख ही समझा सकता है।
–अनाड़ी के सामने विद्वान की नहीं चलती।
–बदमाश को बदमाश ही सीधा कर सकता है।
–दुष्ट व्यक्ति सज्जनता से नहीं मानता।

अनोखै हाथ कटोरौ आयौ, पाणी पी पी आफरियौ। १२९
अनोखे हाथ कटोरा आया पानी पी पी पेट फुलाया।
–छोटी-सी बात पर बेशुमार इतराना।
–मामूली-सी चीज का अत्यधिक भाडा प्रदर्शन।
–अनभिज्ञता का छिछोरापन।
–अनभिज्ञता का घातक प्रभाव।
पाठा हावली नै लाधौ वाटकौ पाणी पी पी पेट फाटगौ।

अपणी करणी पार उतरणी। १३०
अपनी करनी पार उतरनी।
–अपनी करनी से ही भवसागर के पार उतरा जा सकता है।
–कर्म के अनुरूप ही अच्छे बुरे फल मिलते हैं।

अपूठै बैठा ई निजर लागै। १३१
पीठ देखने से ही नजर लगे।
–अत्यधिक खूबसूरत व्यक्ति की सुन्दरता का बखान करने के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

अबखी वेळा कोई आडो नीं आवै। १३२
विपत्ति के समय कोई काम नहीं आता।
–दुख में कोई हाथ नहीं बटाता।
–दुख को अकेले ही झेलना पड़ता है।

अब पिछताया काई हुवै जद चिड़ियां चुग गई खेत। १३३
अब पछताये होत क्या जब चिड़िया न चुग खेत लिया।
–काम बिगड़ने के बाद पश्चाताप करना व्यर्थ है।
–समय पर सतर्कता न रखने से नुकसान अवश्यम्भावी है।

—बाद म पश्चाताप करन से हानि को पूरा नही जा सकता।

अबळा नै सतावै ज्याने राम सतावै। १३४
अबला को सताय उह राम सताय।
—निसहाय को सताने वाले का न्याय भगवान करता है।

अब्बू रौ भाई डब्बू। १३५
अब्बू का भाई डब्बू।
—एक ही थैली के चट्टे बट्टे।
—एक से ही गये गुजरे।

अबारू ई गुडाळिया व्हैवा तो दिल्ली कीकर पूगीजैला १३६
अभी स रेंगन लगे तो दिल्ली कैस पहुचना होगा।
—बड काय के लिए बडी ही तैयारी करनी होती है।
—छोटे मन स बडा काय सपन्न नही हो सकता।
—काय के आरभ ही म शिथिलता बरती जाय तो उसकी सफलता सदिग्ध हा है।

अबै किसा मिया मरग्या के रोजा घटग्या। १३७
अब कौनस मिया मर गये या रोज घट गये।
—किसी भी काम को हाथ म लने के लिए कभी कोई अबर नही होती।
—जब तभी काम को शुरू कर दना चाहिए। कोई भी काम आखिर शुरू करने म ही सपन्न होता है।
—अब भी वक्त हाथ से नही गुजरा।

अब तो बीरा थनै कहग्यौ सौ मनै ई कहग्यौ। १३८
अब तो भैया तुझे कह गया सो मुझे भी कह गया।
—सदभ कथा एक बुढिया सिर पर गठडी उठाय अपने बेटी के पास जा रही थी। एक घुडसवार पास स होकर गुजरा। बुढिया ने उसे रोक कर कहा कि वह अपनी बेटी के पास जा रही है। गाव काफी दूर है। सिर पर वस्त्र व गहना का भार है। यदि वह गठडी गाव तक ले जाये तो भार हलका हो जाय। फिर वह धीरे धीरे पहुच जायेगी। घुडसवार दूसरे गाव जा रहा था। उसने सहज भाव से मना कर दिया। कुछ देर बाद मन म कुटिलता का सचार हुआ। यदि वह गठडी लेकर चपत हो जाय तो क्या पता लगे। बुढिया ठीक तरह पहिचान तक नही सकेगी। वह गठरी लाने के लिए वापिस मुडा। उधर बुढिया को भी होश आया कि वह किस अनजान व्यक्ति पर भरोसा कर बैठी। कही और भाग निकला तो। बिचारे का मन साफ था — सीधा मना कर दिया। भला हो उसका। वह तो गल्ती कर ही बैठी थी। तब तक वह घुडसवार उसके पास पुन लौट आया। बोला—अम्मा ला तेरी यह गठडी मुझे दे दे। तू नाहक ही दब रही है। मैं तेरी बिटिया के गाव से होकर निकल जाऊगा। बुढिया मुस्करा कर बोली — ना भैय्या अब तू तेरी राह लग। मैं यह गठडी नही दूगी। तुझे कह गया सो मुझे भी कह गया।
—तेरा दिल साफ तो मेरा दिल भी साफ।
—कुटिलता की भनक स्वत अनजान ही हो जाती है।
—ठगने का वक्त गुजर गया।

अबै नींद जागी है। १३९
अब नीद खुली है।
—काफी देर के बाद सचेत होना।
—जगन के वक्त पर आख न खुलना। बखबर रहना।

अभ्यास बत्तो है। १४०
अभ्यास बडी बात है।
—अभ्यास से अनुभव और अनुभव से ज्ञान बढता है।
—अभ्यास का अपना श्रेय है।

अभागिया सारू जैडा बार वैडा तिंवार। १४१
हथभागे के लिए जैसे वार वैसे त्योहार।
—त्योहार के दिन भी हतभागे का भाग्य नही खुलता।
—अभागा तो हर क्षण अभागा ही है।

अभागिये चोर नै मिनकी ई भुसै। १४२
हथभागे चोर को देख कर बिल्ली भी घुराती है।
—हथभागे का दुर्भाग्य छाया की तरह साथ लगा रहता है।
—दुर्दिन म हर किसी की घुडकी या रोब सहन करना पडता है।
—भाग्य विमुख हो तो सभी चीजें विमुख हो जाती है।

अभागिये री खोपडी। १४३
अभागे की खोपडी।
—अभागे की खोपडी मे दुर्भाग्य ही दुर्भाग्य अकित रहता है।

अभागिये रौ आटौ उजाड मे गीलौ होवै। १४४
हथभाग का आटा जगल म गीला होता है।

–बस्ती मे मीला हो तो सूखा आटा माग कर काम चलाया जा सकता है। पर दुर्भाग्य तो दुर्भाग्य ही है।
–दुर्भाग्य का कोई अत ही नही होता।
–भाग्य विमुख हो तो अनहोनी बातें सहज ही घटित होती रहती है।

अभागियौ टाबर तिंवार नै रूसै। १४५
अभागा बालक त्योहार पर रूठता है।
–दुर्भाग्य अपनी गति से ही सचालित होता है, वह किसी की प्रतीक्षा नही करता। त्योहार के दिन अच्छे पक्वान बनते है, पर जो बालक अभागा है–वह उस दिन अवश्य रूठेगा। फलस्वरूप सारे दिन भूखा मरेगा। दुर्भाग्य की छाया का प्रभाव जो ठहरा।

अमकोजी कोडी री खाल पाडै। १४६
अमुक महाशय चीटी की खाल निकालता है।
–जरूरत से ज्यादा होशियारी का प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–डेढ होशियारी।
–प्रवीणता की पराकाष्ठा।
–बाल की खाल निकालना।

अमर नाव परमेसर रौ। १४७
अमर नाम परमेश्वर का।
–ससार मे केवल परमेश्वर के सिवाय कोई अमर नही।
–ससार क्षणभगुर है।
पाठा अमर हेक परमेसरौ।

अमराई रा बीज खा'र कोई को आयौ नीं। १४८
अमरता के बीज खाकर कोई नही आया।
–हर प्राणधारी नश्वर है।
–हर मनुष्य को एक दिन मरना है, इसलिए अन्याय, अकर्म से बचना चाहिए।

अमली चार अर होका तीन। १४९
चार अफीमची और हुक्के तीन।
–झगडे की जड।
–झगडा अवश्यम्भावी है।
–शान्ति रखने के लिए झगडे की जड को ही विनष्ट करना चाहिए।

अमावस री रात भैंसा रात गिणीजै। १५०
अमावस्या की रात भैंसा रात कहलाती है।
–भैंसे की तरह काली स्याह रात।
–भयावह रात।

अमीर डील नै छाटौ ई मारौ। १५१
अमीर देह पर बूद का भी वजन।
–ऐश्वर्य के बीच पला व्यक्ति न्यूनतम दुख भी झेल नही सकता।
–अमीरो की नजाकत पर व्यग।
पाठा अमीर डील रै मुखमल लागै।

अमीर रौ ओगाळौ गरीब रौ चारौ। १५२
अमीर की झूठन गरीब का भोजन।
–अमीरो की बासी झूठन गरीबो के लिए पक्वान सदृश है।
–अमीरो के नगण्यतम त्याग से गरीबो का जीवन-यापन हो सकता है।
पाठा दूझती रौ ओगाळौ, बाखडी रौ चारौ।

अरडावता ऊट लदै। १५३
अरडाते ऊट पर भी बोझ लाद दिया जाता है।
–गरीब की दाद फरियाद के बाद भी उसका शोषण होता रहता है।
–गरीब के दुख की कही सुनवाई नही होती। वह तो कष्ट उठाने के लिए पैदा हुआ और कष्ट उठाते उठाते ही मर जायेगा।

अरडावै ऊंट, डामीजै गधौ। १५४
ऊट अरडाये और गधे के डाम लगे।
–अपराध कोई करे, सजा किसी को मिले।

अरजन जिसा ई फरजन। १५५
अर्जुन जैसा ही फरजद [पुत्र]
–जैसा पिता, वैसा ही पुत्र।
–इस कहावत का दुतरफा प्रयोग होता है। शूरवीर बाप का शूरवीर बेटा और कायर बाप का कायर। भले बाप का भला और बुरे बाप का बुरा बेटा।

अरट खडवकै बारै मास, इदर थारी अेक घडी। १५६
रहट चले बारह मास, इद्र की बस एक घडी।

–समर्थ के सहयोग का एक पल, असमर्थ के वर्ष भर के सहयोग से कई गुना ज्यादा व हितकारी है।
–बड़े आदमी की यत्किंचित मेहरबानी भी पर्याप्त होती है और छोटे आदमी का सर्वस्व भी नगण्य होता है।
–सहयोग की आकांक्षा भी रखनी है तो बड़े व्यक्ति से ही रखनी चाहिए।

अरट री घडली भरी आवै नै रीती जावै। १५७
रहट की घडली भरी आये और खाली जाये।
–लाभ और हानि का जोड़ा है। जिस काम मे लाभ है उसमे हानि भी निहित है।
–केवल लाभ ही लाभ हो, ऐसा कोई काम नही होता।

अरथ आवै सो आपरो। १५८
वक्त पर काम आये सो अपना।
–सगा भाई भी वक्त पर काम न आये तो कैसा रिश्ता!
–कोई अनजान व्यक्ति भी समय पर काम आये तो वह आत्मीय है।
–आत्मीयता के लिए केवल खून का रिश्ता ही काफी नही होता।

अरोगी बटियो! १५९
खाइये चकाचक पुडी।
–प्रत्याशित लाभ के बदले अकस्मात् हानि हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–करिये और पचायती!

अलख पुरख री माया, कठै धूप कठै छाया। १६०
अलख पुरुष की माया, कही धूप कही छाया।
–कही सुख, कही दुख, कही शान्ति, कही क्लेश, कही हसी, कही क्रदन—इस ससार म यह सब भगवान की माया है।
–दुनिया म जो कुछ भी वैविध्य है — वह सब ईश्वर की लीला है।

अलख भरोसै ऊकळै, आधण ईसरदास। १६१
अलख भरोसे उबले पानी ईश्वरदास।
–भक्त ईश्वरदास का अटल विश्वास है कि बिना ईधन पर मात्मा के विश्वास से पानी स्वत गरम होकर खौल उठता है।
–परमात्मा मे अटूट विश्वास हो तो हर बात सभव है।

अलख राजी तो खलक ई राजी। १६२
ईश्वर राजी तो दुनिया राजी।
–भाग्य अनुकूल है तो सब कुछ ठीक है।
–स्वामी खुश है सभी खुश। फिर किसी की चिंता नही।
–बड़े आदमी का सिर पर हाथ है तो सभी साथ है।
–राजा प्रसन्न है तो दरबारी भी प्रसन्न हैं।
–परिस्थिति अनुकूल है तो सब कुछ मगलकारी है। फिर किसी की परवाह नही।

अळगै रा ढोल सुहावणा लागै। १६३
दूर के ढोल सुहाने लगते है।
–दूरी का आकर्षण स्वाभाविक होता है।
–सामीप्य से अरुचि बढती है
–स्पष्टता आकर्षण रहित होती है। अस्पष्टता आकर्षित करती है।
पाठा दूर रा ढोल सुहावणा।

अलडी रोवै, बलडी रोवै, सत मनसूडी झालर झणकावै।
किसी की अला रोये, बला रोये बदा तो मौज मना रहा है।
–दीन दुनिया की कोई खबर ही नही।
–दुनिया सारी रोये तो रोये पर बदे की मस्ती मे कसर नही रहनी चाहिए।

अलडो जोबन भींता रै चौपडण सारू नीं व्है। १६५
अल्हड यौवन दीवारो पर चुपडने के लिए नही होता।
–किसी चीज का आधिक्य व्यर्थ नष्ट करने के लिए नही होता।
–दूसरो को लुटाने के लिए कोई सचय नही करता।

अल्ला अल्ला खैर सल्ला। १६६
अल्लाह अल्लाह खैर सल्लाह।
–ईश्वर की दया से सब सकुशल है।
–व्यर्थ की औपचारिकता के सिवाय कुछ लेना न देना।
–ऊपरी टीम-टाम।

अल्ला देवै खावण नै तौ कुतको जाय कमावण नै। १६७
अल्लाह दे खाने को तो जूती जाय कमाने को।
–अकर्मण्य के प्रति व्यग्योक्ति।
–केवल खाने भर को मिल जाय तो अधिक की चिंता नही।

अल्ला रो मां रो चाळीसो है। १६८

अल्लाह् की मा का चालीसवा दिन है।
–मुसलमानो मे मृत्यु के बाद चालीसवें दिन भोज का अनुष्ठान होता है पर अल्लाह् की मा का मृत्यु भोज कब हो ?
–निपट अव्यवस्था तथा कहतजामी को लक्षित करके यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–वैयक्तिक, सामूहिक तथा राजनैतिक अवरगर्दी की व्यजना इस लोकोक्ति म व्यजित है।

अल्ला सू माडी राम ई कोनी । १६९
अल्लाह् से कमजोर राम भी नही।
–बराबरी जतलाते समय यह कहावत प्रयुक्त होती है।

अळियौ साप खावै नीं तो फू फाडा ई करै । १७०
कुटिल साप खाये नही तो भी फुफकारता है।
–कुटिल व्यक्ति का स्वभ व स्वत प्रकट हो ज ता है।
– कम से कम इतना विरोध तो सगत है ही।

अलूणी पोवै । १७१
अलोनी बल रहा है।
–ब सिर पैर की हाकना।
–सफेद झूठ बोलना।

अलूणी सिला कुण चाटै ! १७२
अलोनी शिला कौन चाटे !
–मामूली सी भी स्वार्थ सिद्धि न हो तो कोई किसी काम म हाथ क्यो डाले ?
–स्वार्थ हो तो आदमी हल्का काम भी कर सकता है।
–बिना स्वार्थ के कोई भी काम नहीं करता।
पाठा अलूणी सिला चटावै।

अवगुण तो कागलो देखै । १७३
अवगुन तो कौवा देखता है।
–जहा गदगी व घाव होता है कौवा वहीं चोच मारता है।
–हीन व्यक्ति सदा छिद्रान्वेषण करता है।
–अधम व्यक्ति को हर किसी म केवल बुराइया ही नजर आती हैं।

अस आधा असवार, ज्यारी राम रुखाळी राजिया । १७४
ऐसे अन्धे घुडसवारो का केवल राम ही रक्षक है।
–अधे घोडे और मदमत्त घुडसवार, विनाश निश्चित है।
–समाज के मुखिया मदाध हो तो सुरक्षा का मार्ग ही कहा !

–जिम्मेवार व्यक्ति नासमझ हो तो बचाव मुश्किल है।

असमान नैं छुलडै जित्तो गिणै । १७५
आकाश को छूने जितना समझता है।
–अहकार की चरम सीमा।
–*ऐयाशी के मारे कुछ सूझता ही नही।*
–गुमान के नशे म कुछ होश हवास ही नही।

असली तो अवगुण तजै, गुण नै तजै गुलाम । १७६
असली तो अवगुण और गुलाम गुण का छोडता है।
–सज्जन बुराइया का परित्याग करता है और अधम अच्छाइया का।
–सज्जन व्यक्ति दूसरो के अवगुण नही देखता और अधम व्यक्ति दूसरो के गुण नही देखता।
–सज्जन व्यक्ति दूसरो के द्वारा की गई हानि को भी नजर अदाज कर जाता है और अधम व्यक्ति दूसरो के द्वारा की गई भलाई को भूल जाता है।

असलो रा असली । १७७
असली के असली।
–*कुलीन के कुलीन ही पैदा होते है।*
–सज्जन व्यक्ति की सतान भी सज्जन होती है।

असलो लाजै छिनाळ गाजै । १७८
असली लज्जित होती है छिनाल गरजती है।
–कुलीन औरत हल्का क म करने पर शरमाती है और कुल्टा बुरा काम करने पर गुमान करती है।
–सज्जन विनम्र होते हैं अधम दभी और वाचाल।

असवार तो नीं हो, पण टणका माडै करदी । १७९
सवार तो नही थी, पर डकैतो न जबरदस्ती सवारी *सिखा दी।*
सदर्भ कथा कुछ डकैत एक औरत को भगा ले जा रहे थे। ऊट पर कुशलता पूर्वक बैठी वह भागी जा रही थी जैसे ऊट की सवारी म खूब प्रवीण हो। एक सहेली रास्ते म मिली। उसने आश्चर्य से पूछा—अरी तू ऐसी कुशल सवार कब से हुई ? तब उसने जवाब दिया—मैं तो कभी सवारी जानती ही नही थी पर इन लठैतो के मारे स्वत ही सवारी आ गई।
–अपने से शक्तिशाली के सामने दबना ही पडता है।

–परिस्थितियों के अनुरूप ढलना लाजिमी है।
–अपना जोर न चले तो कोई क्या करे।
–परिस्थिति से बडा कोई शिक्षक नहीं।
पाठा असवार तौ को थी ना पण ठाडा कर दी।

अस्सी री आमद, चौरासी री खरच । १८०
अस्सी की आमदनी, चौरासी का खर्च।
–आमदनी से अधिक खर्च।
–अपव्ययी के प्रति व्यंग।
–अपने ही भले-बुरे का बोध न होना।
–ऐसी फिजूल खर्ची कब-तक टिकेगी।

अस्सी बरस नेडा लिया तौ ई मन फेरा मे। १८१
अस्सी बरस बीते तो भी मन भावरो मे।
–जर्जरित बुढापे मे भी वासना मिटी नही।
–बढती उम्र व अनुभवो के बावजूद तृष्णा न बुझे तब यह कहावत प्रयुक्त होती है
–आदमी की वासना अत तक बनी रहती है।

असा ई म्हें असा ई म्हारा सगा, ना वारै टोपी ना म्हारै भगा। १८२
ऐसे ही हम, ऐसे ही हमारे समधी, उनके टोपी नही और हमारे कुरते नही।
–दोनों ही एक समान, कोई किसी से कम नहीं।
–एक ही थैली के चट्टे बट्टे।
–एक सी मजबूरी।

असाढ चूक्यौ करसौ अर डाळ चूक्यौ बादरौ। १८३
आषाढ म चूका किसान और डाली से चूका बदर आसानी से समभलता नही।
–समय और स्थिति हाथ से निकल गई तो निकल ही गई।
–समय और स्थिति का घाटा किसी तरह पूरा नही जा सकता।
–समय रहते जो सावधान नही रहते उसे हानि उठानी ही पडती है।

असाढा तौ अभागिये रै ई बरसै। १८४
आषाढ मे तो अभागे के लिए भी बरसात होती है।
–ईश्वर एक बार तो भाग्योदय का मौका सभी को देता है।
–आभागा सदा अभागा नहीं रहता।

असंधौ मिनख भाटा बिरोबर। १८५
अनजान व्यक्ति पत्थर समान।
–सग, सपर्क व पहिचान बगैर आदमी की जानकारी नही हो सकती।

असौ भगवान्यौ भोळौ कोनीं जकौ भूखौ गाय चरावा जाय। १८६
भगवानिया ऐसा भोला नही, जो भूखा ही गाय चराने जाय।
–मूर्ख से मूर्ख आदमी भी अपने स्वार्थ को खूब समझता है।
–अपनी स्वार्थ सिद्धि के बिना कोई किसी का काम नही करता।

अजळ बडौ बळवान, काळ बडौ सिकारी। १८७
सयोग बडा बलवान, काल बडा शिकारी।
–सयोग से बडी कोई शक्ति नहीं, काल से बडा कोई शिकारी नही।
–सयोग के चमत्कार से ही आदमी छोटा बडा बनता है।
–काल के निशाने से कोई नही बच पाता।
पाठा अजळ री बात। अजळ जिता ई सासा बासा।

अत खुदा बैर है। १८८
अति और खुदा मे बैर।
–अति का परिणाम सदैव विनाशकारी।
–सत्कार्य भी हद से ज्यादा अच्छा नहीं।
पाठा अति राम बैर है।

अत भलौ सौ भलौ। १८९
अत भला सो भला।
–जीवन का अत सुधर जाय तो सब कुछ सुधर गया।
–सब तरफ से विचार करके जो अतिम निर्णय लिया जाय वही सही निष्कर्ष है।
पाठा अत चोखौ तौ सै चोखौ। अत बुरौ सौ बुरौ।

अत मता सौ गता। १९०
अत मति सो गति।
–अत समय म जैसी मति होती है वैसी ही गति होती है।
–मरते समय जो अतिम भावना होती है, उसीके अनुसार सद्गति या दुर्गति होती है।
पाठा अत मति सौ गती।

अत मता सौ मता। १९१

अंतिम मति सर्वोपरि।
—आखिरी मति ही अंतिम मति है।
—अंतिम भावना ही सर्वस्व है। मरते समय अंतिम आकांक्षा के नीचे विगत जीवन की सारी भावनाएं दब जाती हैं।

अंधाधुंध री सायबी, घटाटोप री राज। १९२
अंधाधुंध की साहिबी, घटाटोप का राज्य।
—विकट अराजकता।
—शासन की अव्यवस्था का दुष्परिणाम अवश्यम्भावी है।
—अव्यस्थित प्रशासन से अंधेरगर्दी ही व्याप्त होती है।

अंधारा घर री चानणौ। १९३
अंधियारे घर का उजियारा।
—दुखी घर के छोटे बालक को उस घर के भविष्य का प्रकाश समझा जाता है।
—बड़े परिवार में कोई अकेला बच्चा संयोग से जीवित रह जाय तो उसको भी अंधियारे परिवार का सूरज माना जाता है।

अंधारी रात मे मूग काळा। १९४
अंधियारी रात में मूंग काले।
—अंधेरे में भेद विभेद की दृष्टि लुप्त हो जाती है।
—अंधेरे में स्याह सफेद का बोध नहीं रहता। नैतिक मान्यताएं धुंधली पड़ जाती हैं।

अंधारै मे कवौ किसी कान मे जावै। १९५
—अंधेरे में निवाला कौनसा कान में जाता है।
—मनुष्य के सभी काम केवल दृष्टि से संपन्न नहीं होते।
—आदत व अभ्यास से प्राकृतिक अवरोध स्वतः ही सुलझ जाते हैं।
—स्वार्थ सिद्धि के लिए कोई भी व्यवधान बाधक नहीं होता।

अंधारै री वेई है। १९६
अंधियारे का औजार है। [वेई=एक औजार विशेष]
—निहायत भले, नेक व सीधे आदमी के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
—जो व्यक्ति किसी भी काम के लिए इन्कार नहीं होता उसकी सराहना में इस कहावत का प्रयोग होता है।

अंधेर नगरी चौपट राजा, टकै सेर भाजी टकै सेर खाजा।
अंधेर नगरी का चौपट राव, सभी चीजें एक भाव। १९७
—जहां विकट अन्याय हो, अराजकता व अव्यवस्था हो, घोर अंधेर-गर्दी हो, जहां गुण अवगुण की रंच मात्र भी परख न हो, जहां भले-बुरे की किंचित् भी पहिचान न हो—उस दुर्व्यवस्था को व्यंजित करने के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
पाठा अंधेर नगरी अणबूझ राजा, टकै सेर भाजी टकै सेर खाजा।

अंबर के कारी कोनीं लागै। १९८
अम्बर के पैबन्द नहीं लग सकता।
—नितांत अक्षम व असंभव कार्य।
—दुर्दैव वश किसी बड़े तहा धनी व्यक्ति का मामला एक दम चौपट हो जाय तो साधारण व्यक्तियों के द्वारा उसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती— तब यह कहावत प्रयोग में आती है।
—बड़े आदमियों की सहायता छोटा व्यक्ति नहीं कर सकता।
पाठा आभा रै कारी नी लागै। अकास रै थेगली नी लागै।

अंबर रौ तारौ हाथ सूं नी टूटै। १९९
आकाश का तारा हाथ से नहीं तोड़ा जा सकता।
—असम्भव कार्य।
—आदर्श व्यक्तियों के प्रकाश को धूमिल नहीं किया जा सकता। उनका व्यक्तित्व सितारों की तरह ऊंचा व प्रकाशवान है।

अंबर दूझै, भूत कमावै, आकासी धन आपै आवै। २००
अंबर दूध बरसाये, भूत कमाये आकाशी धन दौड़ा आये।
—बिना प्रयास के जहां अपने आप ही ढेरों अर्थप्राप्ति हो जाती है।
—सौभाग्य का चमत्कार ऐसा ही होता है।

अबळचण्डी राड, खावै लूण बतावै खाड। २०१
अजब चंडगी राड खाये नमक बताये खांड।
—झूठा दिखावा करना।
—भ्रम को ढांप रखने की चेष्टा।

अबळा फेरा— आज सास नै तौ काल बहू नै। २०२
समय की फेरा फेरी सास बहू की चेरी।
—बारी बारी पर शक्ति व सत्ता का आधिपत्य बदलता रहता है।

–समय के साथ उत्कर्ष व पराभव का चक्कर घूमता रहता है ।

अंवळो आडो वेंठणो । २०३

टेढा तिरछा बैठना ।

–खुद संकट झेल कर भी दूसरे की मदद करना ।

–दूसरों के दुख में तकलीफ उठाकर भी हाथ बटाना ।

अवळो गांठ घुळै पण खुलै नीं । २०४

उलझी गांठ कसती रहती है खुलती नहीं ।

–कोई बात एक बार बिगड़ जाय तो फिर आसानी से सुधरती नहीं ।

अवळै गेलै चालै, खता खाय । २०५

उल्टी राह चलने वाला धक्के खाता है ।

–सच्चाई की राह पर चलना श्रेयस्कर है ।

–कुपथ पर चलने वाला आखिर भटकेगा ही ।

–संस्कृत : अपन्थान तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुचति ।

आ

आई अलाय, दी बलाय । २०६

आफत आई, उधर भगाई ।

–अपने पर आई आफत, दूसरे पर टाल देना ।

–अपनी होशियारी से सिर पर आई आफत को अविलम्ब दूर कर देना ।

आई गी व्ही । २०७

आई गई हुई ।

–जो होना था सो हो गया, अब बेकार झगड़ने से कोई फायदा नहीं ।

–मामला रफा-दफा हो गया ।

–किसी तरह झगड़ा शांत हुआ ।

आई घांणी मूतणो । २०८

तैयार कोल्हू में मूतना ।

–बने-बनाये काम का सत्यानाश करना ।

–हर बार सुधरे हुए काम को बिगाड़ना ।

आई चूकै, जगत थूकै । २०९

अवसर चूके, जगत थूके ।

–हाथ में आया अवसर गवाने पर दुनिया निंदा करती है ।

–मौका चूकने वाले को दुत्कार मिलती है ।

आई ज्यूं ई गी । २१०

आई जैसे ही गई ।

–हराम की कमाई जैसे आती हैं, वैसे ही चली जाती है ।

–आसानी से प्राप्त की हुई प्रतिष्ठा आसानी से ही लुप्त हो जाती है ।

आई जीव सागै, जासी प्रांणा सागै । २११

आई जन्म के साथ, जायेगी मौत के साथ ।

–बचपन में जो कुटेव पड़ जाती है, वह आसानी से छूटती नहीं ।

–बुरी लत मृत्यु पर्यन्त पीछा नहीं छोड़ती ।

–श्रीमंतों में जन्म के साथ जो आदत पड़ जाती है वह उम्र भर छाया की तरह साथ रहती है ।

–लम्बे अरसे तक किसी आफत का ताता लगे रहना ।

आई टळै नीं । २१२

आई टल नहीं सकती ।

–आई हुई मौत टल नहीं सकती ।

–जो विपदा आनी है, वह आयेगी ही ।

–जो भी होना है, वह होकर रहेगा ।

आई तो छाछ नै अर ढूंगा लारै तोलड़ी । २१३

आई तो छाछ मांगने और हंडिया छिपाये ।

–छाछ मांगने जैसे हल्के काम को दूसरों से छिपाने की चेष्टा करना ।

–अशोभनीय कार्य को करने की लाचारी और उसे छिपाने की भी मजबूरी—अजीब विडम्बना है ।

आई तो रोजी, नींतर रोजा । २१४

काम मिल गया तो रोजी, नहीं तो रोजे ।

–हाथ लग गया तो गले उतार लिया, अन्यथा ज्यादा चिंतित या परेशान होने की जरूरत नहीं ।

–सर्वहारा मजदूर को ऐयाशी की ललक नही होती।
–फाकामस्ती का गरूर।

आई बहू आयौ काम, गई बहू गियौ कांम। २१५
आई बहू आया काम, गई बहू गया काम।
–बहू के आगमन से घर मे काम-काज काफी बढ जाता है तथा उसके वापिस मायके लौटने पर काम-काज घट जाता है।
–पारिवारिक सदस्यो की तादाद के अनुरूप काम की मार भी घटती-बढती रहती है।
–ससुराल मे बहू की स्थिति ऐसी होती है कि हर कोई उसे काम बताता रहता है। घर का प्रत्येक काम अधिकाश तथा उसे ही करना पडता है। उसके जाने पर उस कर्त्तव्य परायणता से कोई काम करने वाला नही रहता तो काम भी घट जाते है।
–कोई काम करने वाला हो तो काम बतलाने वाले भी सजग हो जाते है और इसके विपरीत काम करने वाला न हो तो वे चुपचाप बैठ जाते हैं।

आई मौज फकीर री, दीवी झूपडी फूंक। २१६
आई मौज फकीर की, दिया झोपडा फूंक।
–मनमौजी अपनी मौज मे जो चाहता है वही करता है बुरा भला नही सोचता।
–जिस फकीर की मौज पर सासारिक अकुश नही, वह क्या नही कर सकता।
–सारे ऐश्वर्य को जब इच्छा हुई तिलाजली दे देना।

आई राड आंचा मे, पडी जेठ रा माचा मे। २१७
आई ललना उतावली सग पडी जेठ के बावली।
–जल्दबाजी मे सब गडबड घोटाला हो जाता है।
–प्रत्येक काम धैर्य व शान्ति से करना चाहिए, जल्दबाजी से दुष्परिणाम होने की सभावना है।

आई लिछमी रै आडो दै। २१८
आई लक्ष्मी को रोके।
–सुयोग का जब भी मौका आये उससे कतराना।
–सौभाग्य को ठुकराना।

आई ही छाछ लेणनै, घर री धिराणी बणगी। २१९
आई थी छाछ लेने और घर की मालकिन बन बैठी।
–थोडी-सी माग पूरी करने पर बहुत अधिक के लिए कुचेष्टा करना।
–किसी की भलमनसाहत का बेजा फायदा उठाने वाले के लिए यह कहावत लागू होती है।
–अनधिकार दावा जतलाने वाले के लिए।
पाठा. आई तौ छाछ नै बिलोवणा री धणियाणी बणै।

आई ही मिळवा, ले बैसाणी दळवा। २२०
आई थी मिलने, बिठा दी दलने।
–व्यर्थ की बेगार मत्थे पटना।
–नाहक कोई काम गले पडना।

आऊ न जाऊ, घरा बैठी मगळ गाऊ। २२१
आऊ न जाऊ, घर बैठी मगल गाऊ।
–किसी से सपर्क का वास्ता नही, अपनी ही मस्ती मे निमग्न।
–अकर्मण्य व्यक्ति का आत्म सतोष।
–निष्क्रिय व्यक्ति की सफाई।

आ अे बाई अबां, आप आपरै ढबा। २२२
आ ए बाई 'अब, अपना अपना ढब।
–जिसकी जो बान होती है, वह छूटती नही।
–प्रत्येक व्यक्ति की अपनी ढब या अपनी प्रकृति होती है।
–स्वभाव की मजबूरी।

आ अे बाई मीरकी, दोनूं बैना सीरखी। २२३
आ ए बाई अमान, दोनो बहिनें एक समान।
–आलस्य, अकर्मण्यता व अहदीपन मे कोई किसी से कम न हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–एक ही ढर्रा व एक ही ढब।

आ अे म्हारी नानगी, थारी भात-भात री बानगी। २२४
आ ए मेरी नानगी तेरी तरह तरह की बानगी।
–किसी के घर मे एक एक से आला व्यक्ति हो तब परिहास मे इस कहावत का प्रयोग होता है।
–भानुमती का कुनबा।

आ अे बाडी आरौ घालां के पूछ ई आरै मे वडाई। २२५
आ ए बडी घेरा बनायें कि पूछ ही घेरे मे कटाई।
–बडे साप के पूछ नही होती जैसे पूछ का घेरा बनाने मे ही उसकी पूछ घिसी हो।
–अनुभवशील व्यक्ति को कोई क्या सिखाये, वह तो अपने

हुनर मे एकदम पारगत है।

आ अे लूकी लोडरियौ, थारो खीर ठरै है ठोडरियौ। २२६
आ ए लोमडी लरचाती, खीर पडी है सरसाती।
—अनधिकार मौज करने वाले को एक दिन सबक सिखा दिया जाता है।
—बराबरी का सामना करने वाला मिल जाय तो फिर मनमानी नही चलती।

आवौ मिया खाना खावौ, बिसमिल्लाह् झट हाथ धुपावौ।
आओ मिया खाना खाओ, बिसमिल्लाह् चट हाथ धुलाओ।
—लाभ के काम के लिए निर्विलम्ब तैयार हो जाना।
—जिस बात से मतलब सरता हो उसके लिए खूब उत्सुकता प्रकट करना।

आवौ मिया छान छवावौ, म्हैं बूढौ-डेण मोय्यार बुलावौ।
आओ मिया झोपडी बनाओ, हम बुड्ढे जवान बुलाओ।
—जिस काम मे मेहनत पडे उससे कतराना। असमर्थता का बहाना करना।
—स्वार्थ के काम मे अगवानी और जिस काम से मतलब न सधे उसके लिए बहानेबाजी।
पाठा आवौ मियाजी छान छवावौ के औ काफर रो काम।

आकडा रा फळ अक्डोडिया इज होसी। २२९
आक के फल तो अक्डोडिये ही होगे।
—जैसा वृक्ष होगा वैसे ही उसके फल लगेगे।
—लफगे बाप की सतान भी लफगी होगी।

आक को कीडो आक मे राजी अर ढाक को कीडो ढाक मे।
आक का कीडा आक मे राजी व ढाक का कीडा ढाक मे।
—हर आदमी अपनी परिस्थिति-विशेष मे ही सतुष्ट रहता है।
—प्रत्येक व्यक्ति की रुचि, सस्कार, तुष्टि, मानसिक स्तर व सौंदर्यानुभूति का अपना ही एक सीमित दायरा होता है, जिसमे वह आत्मरत रहता है।
—जिसके जैसे पारिवारिक सस्कार होते हैं, उन्ही के अनुरूप वह आचरण करता है।
पाठा आक रौ आक मे अर आब रौ आब म राजी।

आकडै हाथी कद बंधै! २३१
आक के तने से भला कैसे हाथी बध सकता है!
—गरीब आदमी अमीरो को क्या आश्रय दे!
—जिसकी जैसे शक्ति होती है, उसी के अनुरूप उसकी क्षमता होती है।

आक मे आबौ नीपज्यौ। २३२
आक मे आम पैदा हुआ।
—हीन कुल मे सज्जन व्यक्ति जन्मा।
—दुष्ट व अन्यायी के घर भली सतान पैदा हुई।
—नितात असभव बात सभव हुई।
पाठा आक मे ईख अर फोग म जीरौ।

आक मे ईख अर ईख मे आक। २३३
आक म ईख और ईख मे आक उत्पन्न हुआ।
—नीच परिवार मे सज्जन व कुलीन परिवार म दुर्जन व्यक्ति पैदा हुआ।
—एकदम अप्रत्याशित उलटा परिणाम होना।

आकरै देव नै सै कोई निवै। २३४
क्रूर देवता को सभी हाथ जोडते है।
—बदमाश से सभी डरते है।
—बड व्यक्ति की सभी चापलूसी करते है।
—अत्याचारी के सामने सभी सिर झुकाते है।

आकरौ बळद कवाडिये सू नाथौ। २३५
बदमाश बैल को कुल्हाडी से नाथो।
—बदमाश बैल के नाक मे नाथ डालने के लिए कुल्हाडी से छेद करो।
—बदमाश जिस तरह माने उसी तरह मनाओ।
—दुष्ट व्यक्ति सजा देने से ही सीधा होता है।

आक सींचै पण पींपळ कोनीं सींचै। २३६
आक सीचता है पर पीपल नही सीचता।
—कुपात्र को सहयोग देना, सुपात्र को सहयोग से वचित रखना।
—दुष्ट व्यक्तियो का पोषण करना और सज्जन व्यक्तियो के प्रति उपेक्षा बरतना।

आकास बिना थाभै ऊभौ। २३७
आकाश बिना खभो के खडा है।
—विश्वास का सबल बडा होता है।
—बडे व्यक्तियो को सहारे की आवश्यकता नही होती।

आकास मे थूकै जणा आपरौ मू डो ई भरीजै २३८
आकाश मे थूकने पर अपना मुह ही भरता है।
—ऊचे आदर्श व्यक्ति की निंदा करने पर खुद ही निंदित होता है।
—श्रेष्ठ व्यक्ति को कलकित करने से स्वय ही कलकित होता है।
—प्रतिष्ठित व्यक्ति की निंदा नही करनी चाहिए।
पाठा आभै थूकै जणा खुद रो ई मूडो भरीजै।
सूरज कानी रेत उछाळै तौ खुद रो म थौ ई भरीजै।
आकास म थूकै जिका रै ई मूडा माथै पडै।

आकास रै हाथ नीं लागै। २३९
आकाश के हाथ नही लग सकता।
—असभव कार्य कैसे बने!
—असभव कार्य म हाथ ही नही डालना चाहिए।

आका दूद सुखाणी तद ढोवा दूद कठै? २४०
जब आक का दूध सूख गया तब भैंसो के दूध कहा!
—अकाल की विभीषिका मे जब आक का दूध सूख जाय तो गाय-भेसा स दूध की आशा रखना बेकार है।
—अकाल की मार म भला कौन बच सकता है।

आखड्या जिसा पड्या कोनीं। २४१
जैसे लडखडाये वैसे गिरे नही।
—जैसी ठोकर लगी वैसी चोट नही आई।
—आशका के अनुरूप नुकसान कम होना। सभाव्य खतरे की अपेक्षा कम हानि हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

आखड्या चेतौ हुवै। २४२
ठोकर लगने पर होश आता है।
—गल्ती करने से ही आदमी सावधान होता है।
—भूल-चूक से ही सतर्कता उत्पन्न होती है।

आखतौ माटी भरकीजै। २४३
उतावले पति की हड्डी चटक जाती है।
—जल्दबाजी घातक है।
—उतावली म कुछ न कुछ नुकसान होकर ही रहता है।

आखतौ हालै सौ आखडै। २४४
तेज चलने वाला ठोकर खाता है।
—उतावली उचित नही।
—किसी भी काम मे जल्दबाजी बुरी है।

आख - थू, अगूर खाटा। २४५
अक्ख - थू, अगूर खट्टे है।
—कोशिश करने पर भी जो चीज हाथ न लगे तब मन को समझाने के लिए उसे बुरा बताना।
—निष्फलता के लिए औचित्य खोजना।

आखर जात अहीर। २४६
आखिर तो जाति का अहीर है।
—श्री कृष्ण ने कोई भी अभद्र काम किया है तो उनका कोई दोष नही, आखिर वे नीच जाति अहीरो के यहा ही पले थे। जाति का असर कहा जायेगा!
—नीच कुल मे पैदा हुआ व्यक्ति नीच काम ही करेगा।
—अकुलीन व्यक्ति समाज म चाहे जितना बडा हो जाय उसका जाति असर मिट नही सकता।

आखर रामजी रै घरै न्याव है। २४७
आखिर राम के घर न्याय है।
—अन्यायी का एक दिन भगवान के घर न्याय होगा ही। उसे अपने अन्याय की सजा अवश्य मिलेगी।
—असहाय व्यक्ति अन्याय का प्रतिकार नही कर सकता, तब वह भगवान के न्याय से अपने को आश्वस्त करता है।

आखा थोडा अर देव घणा। २४८
प्रसाद कम और देव बहुतेरे।
—देने को कम और लेने वाले ज्यादा।
—साधन नगण्य और खाने वाले बहुत अधिक।
—पैसे कम और रिश्वतखोर ज्यादा, किस किस को राजी करे।

आखा रै भरोसै आधौ ई गमायौ। २४९
पूरे के भरोसे आधा ही गवाया।
—अधिक लालच से हानि ही होती है।
—पूरे की आशा मे आधा ही खो बैठे।
—जो हाथ मे है उसकी पूर्णतया हिफाजत करके आगे की लालसा करनी चाहिए।
—जो कुछ भी पास मे है उसी से सतोष करना उचित है।
पाठा आखी रै भरोसै आधी गमावै।
आखा रै भरोसै आधा सू सामो।

आखी रात रामाण बाची, पण काई ठा राम कुण हो ? २५०
सारी रात रामायण बाची, पर क्या पता राम कौन था ?
–किसी काम मे रटना पर सर्वथा उदासीन रहकर कुछ भी उससे हासिल नहीं करना ।
–निष्ठा रहित काम मे रत रहने से कुछ भी सीखा नहीं जा सकता ।
–बपरवाह व्यक्ति के प्रति व्यग्योक्ति ।

आखी रात रोया पण मरचौ अेक ई नीं । २५१
सारी रात रोये पर मरा एक भी नहीं ।
–नाहक हो-हल्ला मचाना ।
–पूरी मशक्कत करने के बावजूद कुछ भी फल हाथ नहीं लगे तब ।
–अकिंचन बात का विकट बतगड बनाना ।

आगत सो आगत, पाछत सो पाछत । २५२
पहिले सो पहिले, पीछे सो पीछे ।
–समय पर की हुई खेती ही बढिया खेती है और बाद मे की हुई खेती का कोई फायदा नही ।
–वक्त पर किया हुआ काम ही फल देता है ।
–अवसर पर सपन्न किया हुआ काम ही श्रेष्ठ है ।

आग पाणी नै कम समझ्यां हाण । २५३
आग पानी को कम समझने मे हानि होती है ।
–किसी भी खतरे की तैयारी पूरी ही करनी चाहिए ।
–आशकित खतरे को कम नही समझना चाहिए।
–दुश्मन को कमजोर नही मानना चाहिए ।

आग बळतै झूंपडै, नीसरै सो ई लाभ । २५४
जलते झोपडे से जो निकल जाय वही नफे मे ।
–नुकसान होते होते जो बच जाय वही लाभदायक है ।
–आग की लपटो मे जो शेष रह जाय उसकी खुशी मनानी चाहिए ।

आग मे सै क्रीं बळै । २५५
आग मे सब कुछ भस्म हो जाता है ।
–आग से कोई चीज बच नही पाती ।
–शक्तिशाली के सामने निर्बल की भी प्राय यही नियति होती है ।

आगरिया री पट्टी नै आगरियो म्हारी पीर । २५६
जिस गाव की चाकी है, वही मेरा मायका है ।
–पीहर के रिश्ते से चाकी उसकी बहिन हो गई, अतएव उसको घुमाना उचित नही ।
–काम न करने के लिए बहानेबाजी करना ।

आगला ज्यूं ईं पाछला । २५७
पहिले वाला जैसे ही पीछे वाले ।
–बुजुर्गों ने जो रीति रिवाज व परम्परा बरती उसीके अनुसार आने वाली पिछली पीढियो को उसका पालन करना है ।
–पुरखो ने जैसा किया हम भी वही करना है ।

आगली दाळ नै ई रोटी कोनीं । २५८
पहिले की दाल के लिए भी रोटी नही है ।
–निहायत अभाव के बीच गुजारा करना ।
–व्यर्थ लालसा बढाने मे कोई सार नही, जबकि वर्तमान स्थिति बेहद नाजुक हो ।
–वर्तमान सकट को ध्यान मे रखते हुए कोई भी नई जोखम लेने के लिए तैयार न होना ।
पाठा आगली दाळ ई फाफडा मागै ।
आगली दाळ नै ई पाणी कोनी ।

आगलै घर सू खोटी क्यू व्है ? २५९
अगले घर के लिए क्यो देरी कर रहे हो ।
–इस घर से तो कुछ भी मिलने का नही, फिर अगले मकान पर मागने मे क्यो बेकार देरी करना ।
–इस घर के भरोसे अगले घर से भी क्यो वचित रहना ।

आगलै पग री ठायो देर लारलो पग उचावणो । २६०
अगले पाव को जमा कर पिछला पाव उठाना चाहिए ।
–हर कदम सोच-समझ कर रखना चाहिए ।
–हर काम मे सतर्कता अनिवार्य है ।
–हाथ मे जो काम है, उसे सपन्न करने के बाद दूसरा काम हाथ मे लेना चाहिए ।

आगलै भौ रा आटा । २६१
पिछले जन्म का चक्कर ।
–पिछले जन्म के दुष्कर्म, पाप व अन्याय का इस जन्म मे प्रतिकार होना है ।
–पिछले जन्म के दुष्कर्मो का फल ।

पाठा आगलै भी ग बदळा।

आगलै भौ री मागत चुकगी। २६२
पिछले जन्म का देना चुक गया।
–इस जन्म म कोई नुकसान करे या उधार लेकर न चुकाय तब नुकसान उठाने वाला मन को यह समझाकर आश्वस्त होता है कि पिछले जन्म का बकाया चुका दिया।
–क्षति पूर्ति के लिए आत्म-तुष्टि।

आगलै सू पाछलो भलो। २६३
अगले से पिछला भला।
–भविष्य को घातक तथा अतीत को सुनहरा समझने की सामान्य धारणा।
–भविष्य अनिश्चित है इसलिए अनिर्णयात्मक है। अतीत भोगा हुआ है इसलिए उसकी अनुभूति महत्त्वपूर्ण है।

आगलो घर देखस्या। २६४
अगला घर देखेंगे।
–यहा दाल नही गली तो अगला घर सभालेंगे। कोई न कोई तो फसेगा।

आगलो थारो नै लारलो म्हारो। २६५
अगला हिस्सा तेरा और पिछला हिस्सा मेरा।
–दूध देने वाले मवेशी का अगला हिस्सा तेरा और पिछला हिस्सा मेरा।
–खिलाने चराने को तुम और दूध दुहने का अधिकारी मैं।
–अत्यधिक स्वार्थ का समझौता टिक नही सकता।

आगलो पीस्यो खूटग्यो काईं ? २६६
पिछला पिसा हुआ आटा समाप्त हो गया क्या ?
–अकर्मण्य आदमी साधन खूटने पर काम की चिंता करे तब उसकी लापरवाही को संबोधित करके यह कहावत कही जाती है।
–हर बार अपने ही मतलब की बात कैसे पूरी हो।
–स्वार्थ हो तभी सपर्क रखना सगत नही।

आगलो मारग बुहारै। २६७
अगला मारग बुहारना।
–परलोक सुधारने के लिए दान पुण्य करना।
–सत्कर्म करना।
पाठा आगै रो मारग करै।

आगै आग न गैल्या पाणी। २६८
आगे आग न पीछे पानी।
–न आगे आग देने वाला और न पीछे पानी देने वाला।
–सर्वथा अनाथ।
–दूर का भी जिसके कोई रिश्तेदार न हो।
पाठा आगै आग न लारै भीटको।

आगै आगै गोरख जागै। २६९
आगे आगे गुरु गोरख जागे।
–आगे जो होगा सो देखा जायेगा।
–भविष्य की रचमात्र भी चिंता न करके वर्तमान का ही अधिक खयाल करना।

आगै आडो खोल्यो व्हैला तो खुलैला। २७०
पहिले किवाड़ खोला है तो खुलेगा।
–रीति रिवाज के विरुद्ध काम नही होगा।
–पहिले जो परम्परा रही उसीका पालन किया जायेगा।

आगै ई सोर अपार, फेर अगीरा झरिया। २७१
पहिल ही बेशुमार बारूद उस पर अगारे डाले।
–क्रोधित व्यक्ति को अधिक उकसाना।
–अपनी गफलत से खतरे को और ज्यादा बढाना।

आगै अेक घडी री ई नीं दीसै। २७२
आगे एक घडी की भी नही दिखती।
–भविष्य म छिपे अगले एक क्षण का भी पता नही रहता।
–भविष्य मे न मालूम क्या घटित होना है।

आगै कूवो, लारै खाड। २७३
आगे कुआ, पीछे खड्ड।
–दोना तरफ आफत बचाव का कोई रास्ता नही।
–*असमजस की स्थिति।*

आगै खाड लारै खाई, आ दोना सू नीं बच्यो थारी अक्ल कठै गई! २७४
आगे गड्ढा पीछे खाई, इन दोना से नही बचा तेरी समझ कहा गई।
–ससार म मनुष्य के लिए हर तरफ सकट ही सकट है, जो इन सकटो स बच कर अपनी सुरक्षा नही कर पाता वह मूर्ख है।
–प्रतिकूल परिस्थितियो म भी बुद्धिमान व्यक्ति अपना रास्ता

निकाल लेता है।

आगै गधा आवै तौ लारै घोडां री कंडी आस। २७५
आगे गधे आये तो पीछे घोडों की आशा कैसी ?
—किसी हुजूम या जुलूस में सबसे अगाडी गधे निकले तो फिर पीछे घोडों की आशा रखना बेकार है।
—काम की शुरुआत ई बिगड गई तो अंत क्योंकर सुधरेगा।
पाठा: साभेळै गधा आवा तौ धकै घोडा री आस क्यूं करणी।

आगै धंधौ, लारै धंधौ, इणमे सिवरै वौ सायब रौ बन्दौ।
आगे धंधा पीछे धंधा, इसमें सुमिरे वह साहब का बन्दा।
—सांसारिक कर्मों मे विरक्त होकर भगवान का सुमिरन करना व्यर्थ है।
—हरदम काम में फंसे रह कर जो सुमिरन करता है, वही साहब का सच्चा बंदा है।
—सन्यासी होकर भक्ति करने की अपेक्षा गृहस्थ की उलझनों के बीच भगवान का नाम जपना ही वास्तविक भक्ति है।

आगै बावौजी गोरा घणा, फेर भभूत लगाई। २७७
यों ही स्वामीजी ज्यादा गोरे, ऊपर राख लगाई।
—बिगड़े काम को अपनी नादानी से और अधिक बिगाडना।
—दुहरी गलती या दुहरी अभद्रता।

आगै मांडै पाछै दे, घटै बधै कागद सूं ले। २७८
पहिले लिखे पीछे दे, घटे बढे तो कागज से ले।
—हिसाब सही रखने का पहिला सिद्धांत कि किसी को भी पहिले लिखकर फिर देना चाहिए ताकि कभी कोई भूल ही न हो।
—प्रत्येक काम को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपने नियम होने हैं।

आगै री आगै देखी जासी। २७९
आगे की आगे देखी जायेगी।
—आगे की चिंता आज क्यों ?
—भविष्य की चिंता भविष्य में और आज की चिंता आज।

आगै हाथ, लारै पात। २८०
आगे हाथ, पीछे पात।
—निर्धनता की पराकाष्ठा।
—इस सीमा तक गरीब कि हाथ व पत्तों से लाज ढापना।

—कहीं किसी का कोई सहारा न हो।

आगै हुता जैडा लारै हुयग्या। २८१
जैसे आगे थे वैसे ही पीछे पैदा हुए।
—जैसे बुजुर्ग वैसी ही औलाद।
—पुरखे अच्छे न हों तो वंशज कहां से अच्छे हों।

आघौ दियां पाछौ धकै। २८२
दूर धकेलने पर भी पुन लौट आता है।
—अत्यंत संपत्तिशाली का सौभाग्य ही ऐसा होता है कि वह जितना ही ऐश्वर्य को दूर हटाता है वह उतना ही वापिस उसके पास लौट कर आता है।
पाठा आघौ दियां पाछौ आवै।

आघा पधारौ कूकूं रै पगल्यां। २८३
कुंकुम के चरण आगे बढ़िये।
इस कहावत का दुहरा प्रयोग होता है
—चुनौती पूर्ण स्वर में सामने वाले को ललकारना कि वह थोडा आगे बढकर तो देखे। आगे बढा नहीं कि मुकाबिला किया।
—श्रद्धेय व्यक्ति का सम्मान-पूर्वक सत्कार करना।

आघा रह्या सूं हेत बधै। २८४
दूर रहने से प्रेम बढ़ता है।
—मित्रता के लिए संपर्क जितना आवश्यक है, उसी तरह परस्पर दूर रहना भी उतना ही अनिवार्य है।
—निरंतर पास रहने से न चाहने पर भी कुछ खटपट, गलत-फहमी या मनमुटाव हो ही जाता है।

आडू के तौ खाय मरै के उंचाय मरै। २८५
उज्जड व्यक्ति या तो खाकर मरता है या उठाकर।
—उज्जड व्यक्ति अपनी जिद्द में अधिक खाने से तकलीफ पाता है या शक्ति से अधिक बोझा उठाकर अपने शरीर को नुकसान पहुंचाता है।

आडू चाल्या हाट, नीं ताकडी नीं बाट। २८६
मूरख चला हाट, न तराजू न बाट।
—मूर्ख व्यक्ति का काम योजना-बद्ध नहीं होता।
—मूर्ख व्यक्ति कोई काम करने का तरीका ही नहीं जानता।

आडू नै टकौ दे देणौ, अक्कल नीं देणी। २८७
मूर्ख को टका दे देना, अक्ल नहीं देनी।

–मूर्ख व्यक्ति समझाने से बुरा मानता है।
–मूर्ख व्यक्ति किसी की नहीं मानता, इसलिए उसे राय देना व्यर्थ है।

आडू वैद मौत री साई। २८८
मूर्ख वैद्य मौत का बयाना।
–अपर्याप्त शिक्षा या अनुभव स्वयं के साथ साथ दूसरों के लिए अधिक घातक है।
–अनभिज्ञता के साथ प्रवीणता का भ्रम दूसरों के लिए प्राण-घाती होता है।

आडू वैद सूं मौत भलो। २८९
मूर्ख वैद्य से मौत भली।
–मूर्ख वैद्य के हाथों तकलीफ पाकर लम्बे अर्से के बाद मरने की अपेक्षा जल्दी मरना बेहतर है।
–मूर्ख वैद्य के इलाज से मौत के साथ धन भी खर्च होता है।

आ चाल सिखावती तो इतरा दिन बचती कीकर। २९०
यह दाव सिखा देती तो इतने दिन कैसे बच पाती।
सदर्भ-कथा: बिल्ली मौसी ने शेर को बाकी सारे दाव सिखा दिये पर लपक कर पेड़ पर चढ़ने का आखिरी दाव नहीं सिखाया। शेर अपने मतलब के सारे दाव सीख कर जब बिल्ली को ही मारने के लिए झपटा तो वह लपक कर पेड़ पर चढ़ गई। शेर मुंह लटका कर खड़ा हो गया। धीरे से पूछा— मौसी यह दाव तो तूने सिखाया ही नहीं। तब बिल्ली ने मुस्करा कर जवाब दिया— यह दाव सिखा देती तो तेरे हाथों अभी मर नहीं जाती।
–सिखाने वाले के साथ ही यदि धोखा किया जाय तो वह धोखा खाता नहीं। अपने बचाव का रास्ता वह पहिले से ही जानता है।

आछाई किसी मापीजै! २९१
अच्छाई नापी नहीं जा सकती।
–किसी के साथ भलाई नाप-जोख कर नहीं की जाती।
–भलाई बटखरों से तोल कर नहीं होती।
– सज्जनता या भलाई का सीमित दायरा नहीं होता।

आ छाछ तो ढोळवा जोगी ई ही। २९२
यह छाछ तो ढोलने काबिल ही थी।
संदर्भ-कथा: एक घोड़ा सख्त जमीन पर पेशाब करके आगे बढ़ा तो एक अफीमची उधर से गुजरा। उसे गड्ढे में पेशाब के बदले छाछ का वहम हुआ। नीचे बैठ कर पीनक में बोला— कोई फूहड़ औरत ऐसी गाढ़ी छाछ यहां गिरा कर चल दी। फिर उसने अंगुली भर कर चखा। चखते ही थूक कर मुंह बनाता हुआ बोला— यह छाछ तो गिराने काबिल ही थी।
–जिसका जैसा माजना होता है, उसके साथ वैसा ही बर-ताव किया जाना चाहिए।
–जिसका जो दायरा है, उसे वही स्थान मिलना मुनासिब है।

आछा जाया अे मामी, केई साध केई सामी। २९३
खूब पैदा किये री मामी, कई साधु कई स्वामी [सन्यासी]।
–निठल्ले अकर्मण्य व्यक्तियों के प्रति व्यंग कि उनकी मां ने उन्हें खूब ही पैदा किया।

आछा फूल महेस चढै। २९४
अच्छे फूल महेश चढ़ते हैं।
–श्रेष्ठ वस्तुएं सज्जन व्यक्ति का ही प्राप्य है।
–भले व्यक्ति सर्वत्र समादृत होते हैं।
–केवल बड़े व्यक्तियों को ही अच्छी चीज प्राप्त करने का अधिकार है।

आछा हिरणा लारै दौड़िया! २९५
बेकार हिरनों के पीछे दौड़े।
–निरर्थक दौड़-धूप की।
–कोई बड़ा व्यक्ति खूब चक्कर कटवाने के बाद कोई काम न करे तब निराशा में यह कहावत प्रयुक्त होती है।

आछा मे तो कागलो ज्यिको सगळा नै अेक निजर सूं जोवै।
भला तो एक कौवा जो सबको एक दृष्टि से देखता है।
–कोई भी व्यक्ति भेदभाव की दृष्टि से बच नहीं सकता।
–कौए के लिए एक नजर से देखने के सिवाय कोई विकल्प ही नहीं। इसके अलावा जो भी समदृष्टि की बात करे वह बेमानी है।

आछी जीण सूं कोई घोडो आछो नीं गिणीजै। २९७
अच्छी जीन से कोई घोड़ा अच्छा नहीं माना जाता।
–ऊपरी दिखावा वास्तविक गुण की पहिचान नहीं होती।
–शान-शौकत बघारने से ही कोई गुणी नहीं हो जाता।

—बाह्याडंबर के प्रति उपेक्षा।
—बशकीमती मज्जा से मनुष्य का महत्त्व नहीं बढ़ जाता।

आछी पधराई। २९८

खूब डींग मारी।
—बसिर पैर की गप्प हांकने वाले के लिए।

आछी बात लोकीक री। २९९

अच्छी बात लोक मर्यादा की।
—समाज में जो मान्यताएं प्रचलित हैं वे सम्मान-योग्य हैं।
—लोक मर्यादा के प्रति निष्ठा।

आछी म्हारी टाटी, मिळै घी अर बाटी। ३००

अच्छी मेरी टाटी, मिले घी और बाटी।
—जैसी भी अपनी स्थिति हो उसी में संतुष्ट रहना।
—अपने हाल में मस्त।
—अधिक प्रपंचों की उलझन के बाद बेशुमार कमाई हो तो भी वह व्यर्थ है। इसके विपरीत सुख शांति से जो रूखा सूखा मिल जाए वह श्रेष्ठ है।
—दूसरों का ठाट देखकर ललचाने की जरूरत नहीं।

आज ई मोडियौ मूंड मुंडायौ अर आज ई गिडा पड्या।

आज ही साधु ने सिर मुंडाया और आज ही ओले बरसे, जैसे वे सिर मुंडाने ही का मौका ताक रहे थे। ३०१
—आज ही काम की शुरुआत हुई और आज ही कोई आकस्मिक आफत आ पड़ी।
—दुहरे दुर्योग का संयोग घटित होना।
—दुहरी मार।

आज कठी नै ऊ चांद उगौ। ३०२

आज किधर-से चांद उगा।
—काफी अर्से के बाद किसी आत्मीय का अप्रत्याशित आगमन।
—किसी बड़े आदमी से अकस्मात् मिलन होने पर।

आज ज्यूं ई काल। ३०३

आज जैसे ही कल।
—जो भी ढर्रा आज चल रहा है, वह कल भी चलेगा।
—जैसी आज गुजर रही है वैसी कल भी गुजरेगी।
—जो दुर्व्यवस्था आज है वैसी ही कल रहेगी।
—भविष्य में सुधार होने की कोई आशा नहीं।

आज तौ माथा री भेडी राम टाळी। ३०४

आज तो सिर की लाठी राम ने बचाई।
—किसी आकस्मिक आफत से बाल बाल बचना।
—आये हुए संकट से स्वतः ही छुटकारा मिलना।
—दुर्घटना होते होते बच गई।

आज तौ राम रुखाळौ। ३०५

आज तो भगवान ही रखवाला है।
—आज के विकट संकट से भगवान ही बचाय तो बचना संभव है।
—सहसा कोई आफत पड़ जाय और निस्तार का कोई रास्ता ही नजर न आय तब।

आज दूधां मेह बूठौ। ३०६

आज दूध की बारिश हुई।
—सौभाग्य का आकस्मिक सुयोग घटित हुआ।
—किसी बड़े या घनिष्ठ व्यक्ति का अप्रत्याशित शुभागमन हुआ।

आज मरयौ काल पितरा में। ३०७

आज मरा कल पितरों में।
—आज मरा और कल गृह देवता में शुमार।
—मरने के साथ ही सब कुछ समाप्त हो जाता है।
—मरने के बाद सब कुछ भुला दिया जाता है।
—मृत्यु के पश्चात कोई किसी की चिंता नहीं करता।
—जो मरा सो गया।
पाठा० आज मूवा काल पितरां में।

आज मरयौ कालै दूजौ दिन। ३०८

आज मरा कल दूसरा दिन।
—किसी के मरने से संसार चक्र रुकता नहीं।
—किसी के मरने से समय थमता नहीं, वह तो अपनी गति से चलता ही रहता है।
—समय सब कुछ विस्मृत कर देता है।
—मृत्यु इतिहास की एक घटना मात्र बनकर रह जाती है।
—मरते ही सब ठाट-बाट समाप्त हो जाता है।
पाठा० आज मूवौ कालै दूजौ दिन।

आज मरै जिणनै काल कद आवै। ३०९

आज मरे उसे कल कब आये।
—जो आज मर रहा है वह कल की आशा पर क्योंकर

धैर्य रखें।
–आज की आफत कल के लिए नही टरकाई जा सकती।
–आज की विकट समस्या आज ही सुलझनी चाहिए।
–जो समस्या एक क्षण भर के लिए भी नही टाली जा सकती तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

आज री घड़ी नैं काल री बेपार। ३१०
आज की घडी और कल की दुपहरिया।
–समय पर काम करने का कोई वादा पूरा न करे तब यह कहावत प्रयुक्त होती है कि किये हुए वादे के ता कोई आसार ही नजर नही आते।
–कोई व्यक्ति बुत्ते-बाजी या झासा-पट्टी करे तब।
–झूठी आशा में लटकाये रखना।
पाठा आज री घड़ी अर काल री दिन।
 आज री घड़ी नैं काल री दोपार।

आज री थेप्योड़ी आज नीं बळै। ३११
आज के उपले आज नहीं जलते।
–जो उपले आज थाप गये हैं वे आज जलने के काम नही आ सकते, उन्हें सूखने मे समय लगता है।
–प्रत्येक काम की सपूर्ति के लिए अपना समय वाछित है।
–केवल जल्दबाजी करने से ही कोई काम नही होता।
–किसी काम की योग्यता या कुशलता अभ्यास से ही हासिल होती है। कोई भी व्यक्ति एक दिन मे पारगत नही हो जाता।

आज रोकड़ काल उधार। ३१२
आज नकद कल उधार।
–उधार किये जाने वाला कल कभी आता ही नहीं।
–इस हाथ लेना, उस हाथ देना। साफ-सुथरा सौदा।
–लिहाज मुरौवत की कोई गुंजाइश नहीं।

आज वार तौ काल कुवार। ३१३
आज वार तो कल कुवार।
–आज अच्छे दिन तो कल दुर्दिन।
–सभी दिन एक से नहीं रहते।
–सुख-दुख का जोड़ा है।
–किसी भी व्यक्ति को अपने अच्छे दिनो पर गुमान नही करना चाहिए, न जाने किस क्षण दिनमान बदल जाय।

आज सोना री सूरज ऊगौ। ३१४
आज सोने का सूरज उगा।
–सौभाग्य का दिन उदय हुआ।
–किसी घनिष्ठ या बड़े व्यक्ति के आगमन पर अतिरेक प्रेम या सम्मान की व्यजना।

आज हमा तौ काल तमां। ३१५
आज हम पर तो कल तुम पर।
–आज जो मुझ पर बीती वह कल तुम पर भी बीतेगी।
–आज जो अन्याय या अत्याचार मुझ पर हुआ वह कल तुम पर भी होगा इसलिए तटस्थ द्रष्टा न रह कर मेरा साथ दो। एक पर दुख आये तो उसका सामूहिक रूप से निवारण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

आटा खूटा नें चेला न्हाटा। ३१६
आटा खतम हुआ और चेले नदारद।
–खिलाने पिलाने की स्थिति समाप्त हुई और मित्रो का साथ छूटा।
–मतलब हरते ही त्याग देना।
–दुनिया केवल मतलब की सगाती है।

आटा री दीयौ माय राखें तौ ऊंदरा खाय, बारै धरै तौ हाडा ले जाय। ३१७
आटे का दीपक भीतर रखने पर चूहे खा जाय, बाहर रखने पर कौए ले जाय।
–देवी देवता की मनौती के लिए आटे का दीपक बनाया जाता है पर उसकी सभाल बहुत मुश्किल है।
–जिस वस्तु की रक्षा करना निहायत दुश्वार हो।
–बचाव का कोई रास्ता ही नहीं।
–गरीब का कहीं भी निस्तार नहीं।
–विकट दुविधा जनक स्थिति जिसका कोई निवारण नही।

आटा सारू रोटी। ३१८
आटे जैसी रोटी।
–जैसा आटा वैसी ही रोटी।
–परिस्थिति के अनुकूल आचरण।
–कारण के अनुरूप परिणाम।
पाठा आटा जैड़ी रोटी।

आटै मे लूण खटावै जित्तौ कूड़ खटावै। ३१९

आटे में नमक जितना ही बात में भूठ क्षम्य है।
—थोड़ा बहुत भूठ तो चल सकता है अधिक नहीं।
—भूठ बोलने का भी अनुपात हो तो बात बिगड़ती नही।

आटं में लूण खटं पण लूण में आटो कद खटं। ३२०
आटे में नमक चल सकता है पर नमक में आटा नही चल सकता।
—हर चीज अपने वांछित अनुपात मे ही शोभित होती है।
—हलाहल भूठ का कारोबार नही चल सकता।

आटं री कसर खाटं में निकळ जासी। ३२१
आटे की कमर खाटे मे निकल जायेगी।
—इधर की बिगड़ी बात उधर बन जायेगी।
—एक चीज की हानि दूसरी चीज से पूरी करली जायेगी।
—अनुचित लाभ अगली हानि से बराबर हो जायेगा।

आठ पूरबिया नौ चूल्हा। ३२२
आठ पूरबिये नौ चूल्हे।
—आपसी फूट। विभिन्न मत-भेद।
—एकता न होने से नुक्सान ही होता है।
पाठा. नौ कन्नोजिया तेरह चूल्हा।

आठ वार, नौ त्यूंहार। ३२३
आठ वार, नौ त्योहार।
—हिन्दुओं मे त्योहारों की बहुतायत है। जब देखो तभी कोई न कोई त्योहार।
—हमेशा मौज-मस्ती या गुलछर्रे उड़ाने वाले के लिए।
—बारहों मास आनद से बिताना। ठाट से रहना।

आठ हाथ काकड़ी, नौ हाथ बीज। ३२४
आठ हाथ ककड़ी, नौ हाथ बीज।
—निराधार व असगत बात। जबरदस्त विसगति।
—अनहोनी बात।
—सरासर भूठ।

आठूं गांठ कमेत। ३२५
आठो गाठ कुम्मेत।
—वह घोड़ा जो सम्पूर्ण कुम्मेत नस्ल का हो।
—घोडो का एक रंग-विशेष जो सब रगों मे श्रेष्ठ माना जाता है। घोड़े के चारों घुटनों पर, ललाट पर, पुट्ठों पर, सामने सीने पर सफेद घेरे हों व बाकी दाखों या उन्नावी रंग हो, वह कुम्मेती-नस्ल का घोड़ा होता है। इस नस्ल का घोड़ा बहुत श्रेष्ठ, कीमती व तेज दौड़ने वाला समझा जाता है।
—अत्यंत चतुर व चालाक व्यक्ति के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
—वह व्यक्ति जो हरफन मौला हो।

आड रा बिचियां नं कुण तिरणो सिखावं। ३२६
आड के बच्चों को कौन पानी मे तैरना सिखाता है।
—जन्मजात गुण स्वयमेव आ जाते है उन्हे सिखाना नही पड़ता।
—प्रकृति-दत्त लक्षण समय के साथ स्वतः प्रकाश मे आ जाते है।

आड रं मोळं काग क्यूं डूबं! ३२७
आड की देखादेखी कौवा क्यों डूबे।
—आड=हरदम पानी मे तैरने वाला एक पक्षी-विशेष। कौवा पक्षी होते हुए भी तैर नही सकता।
—हर व्यक्ति हर काम मे प्रवीण नही होता। इसलिए देखा-देखी करने से नुक्सान ही की सभावना है।
—जो जिस काम मे दक्ष है, उसे वही काम करना शोभा देता है।

आडा आया मां रा जाया। ३२८
साथ दिया मा के जायों ने।
—दुख के समय सगे-सबंधी ही काम आते हैं।
—कितना ही मनमुटाव क्यों न हो भाइयों के दिल मे वक्त पर प्रेम उमड ही पड़ता है।

आडी गेडी करं। ३२९
सामने लाठी कर रहा है। तिरछी लाठी कर रहा है।
—बाधा या अवरोध उपस्थित करना।
—वार करने के लिए तैयार होना।

आडी पायली सूं मूंग भरं। ३३०
टेढ़ी पायली से मूंग भरना।
—लोहे व लकड़ी से बना हुआ अनाज मापने का एक साधन जिसे सीधा रख कर भरने से भीतर अनाज समाता है और टेढा करने से उसकी गोलाई पर एक दाना भी नही ठहरता।

–बिना कायदे के काम करना।
–अत्यधिक चालाकी बरतना।
–दूसरो का निहायत बवकूफ समझना।

आडो बाता घालै। ३३१
उल्टी सीधी बातें करे।
–बकार की वहान वाजी करे।
–बाता से दूसरो को भरमाने की चेष्टा।

आडै दिन खाती लापसी, जापा मे खाती घाट। ३३२
आम दिना पर हलुवा खाती, प्रसव म खाती दलिया।
–बेशऊर औंधे माथे का उलटा काम।
–नितान्त अव्यवहारिक काम।

आडै दिन रगी-चगी, वार त्यूहार फिरै नगी। ३३३
हमेशा साज शृगार करे और त्योहार पर फिरे अधनगी।
–मूरख व्यक्ति के सभी काम उलट होते है।
–शिष्टाचार का नितात अभाव।
–व्यवहार कुशलता का नामोनिशान तक नही।

आडै दिन सू बारयोडो ई चोखो। ३३४
रोजमर्रा के खान स बासी खाना ही अच्छा।
–रोजमर्रा के निश्चित खान से त्योहार का बासी ही ठीक है।
–किसी भी कीमत पर नियमित ढर्रा अवश्य टूटना चाहिए।
–परिवर्तन के प्रति चाह।

आडो आवै जको ई सोरो। ३३५
सहयोग दे वही साथी।
–वक्त पर काम आय वही अपना हितैषी।
–*रिश्तेदार जो समय पर काम न आये वह क्या काम का।*
पाठा आडो आवै सो आपरो।
अबखी मे आडो आवै सो आपरो।

अणसमझ अलमस्त, समझदार री मौत। ३३६
अनसमझ अलमस्त समझदार की मौत।
–नासमझ व्यक्ति अपनी नासमझी के कारण मस्त रहता है और जो समझदार है उन्ह सौ बाता की फिक्र सताती रहती है।
–समझदार व्यक्ति को लिहाज भुगतना पडता है।

आतमा सो परमातमा। ३३७
आत्मा सो परमात्मा।
–आत्मा म ही परमात्मा का निवास है। आत्मा के अतिरिक्त परमात्मा का कोई अस्तित्व नही।

आ तो उधारी हातो है। ३३८
यह तो उधार भेट है।
–जिसस भेट ली है उस वापिस देनी भी पडेगी।
–दोना तरफ सद्‌भावना हा तब परस्पर मेल रहता है।
–इकतरफा व्यवहार ज्यादा दिन नहा चलता।

आतो दीसै, जातो नीं दीखै। ३३९
आता दिखता है, जाता नही दिखता।
–धन की आमद का तो लोगा को पूरा ध्यान रहता है पर वापिस उसके खच का पता नही रहता।
–दूसरे का धन हर किसी को ज्यादा दिखता है पर उसके खच का कोई खयाल ही नही रखता।

आ तो रोटी खावण री घडियाल है। ३४०
यह तो रोटी खाने की घडी है।
–ज्यो ज्यो घडी चलती रहती है खाने का वक्त करीब आता रहता है। जो कर्मचारी केवल खाने की खातिर घडी की ओर तकते रहते है उनके लिए यह कहावत प्रयुक्त होता है।

आ तो लुगाई कूकू पगल्या आई। ३४१
यह घरवाली तो कुकुम पावा म आई।
–यह खेल नही है जो यो ही घर म आ जमी। यह पत्नी तो धूमधाम से माहुवर रच कर आई। इसका घर पर पूरा अधिकार है।
–मान्यताओ के अनुसार किया हुआ काम ही सत्कर्म है।

आ तो सबळै साड सू धीणै व्ही। ३४२
यह तो तगड साड स प्रजनित हुई।
–यह कोई साधारण या सामान्य औरत नही है।
–असाधारण व्यक्ति के लिए।
–जो आसानी से कब्जे म न आये।

आ तो सासू आगली बहू। ३४३
यह बहू तो सास के नियत्रण म है।
–जब तक सास जीवित रहती है, बहू के अधिकार सीमित

रहते हैं।
—जो व्यक्ति किसी के नियत्रण की वजह से अपने अधिकारो का उपयोग करने म स्वतत्र न हो।

आ तौ हिंजडा वाळी ताळी। ३४४
यह तो हिजडे वाली ताली है।
—जो बात अप्रासगिक व निरर्थक हो।

आथण रा मरथा नै कठा लग रोवं। ३४५
शाम के मरे हुए को कहा तक रोयें।
—शाम के बाद मरने वाले की दाहक्रिया नही हो सकती। फिर उस शव को लेकर सारी रात विलाप नही किया जा सकता।
—जो नुकसान हो चुका उसके लिए वाछित समय तक तो दुख प्रकट किया जा सकता है, पर लम्बे अर्से तक रोने-धोने मे कोई सार नही।
—बिगडा हुआ कार्य विलाप करने से सुधर नही सकता।

आथमिया पछै काई अवेळौ, खोस्या पछै काई डर। ३४६
साझ होने के बाद क्या अबेर, लुट जाने के बाद क्या डर।
—जिस किसी काम मे देरी हो गई सो तो हो गई, फिर देरी की चिंता मे क्या फायदा। इसी तरह लुटने के बाद दूसरी बार लुटने का भय भी समाप्त हो जाता है।
—जिम्मेवारी छोड कर और जोखिम बेच कर पूर्णतया निश्चित हो जाना।
—प्रतिष्ठित व्यक्ति को सामाजिक मर्यादा का और सपत्तिशाली को हमेशा अपनी जोखम का भय बना रहता है, पर जो व्यक्ति समाज मे बदनाम हो चुका हो और जिसके पास किचित भी धन न हो उसे फिर किस बात का भय।
पाठा आथमिया पछै अवेळो नी, खोस्या पछै डर नी।

आदमी कोनीं कमावै, आदमी रा गुण कमावै। ३४७
आदमी नही कमाता, आदमी के गुण कमाते हैं।
—आदमी की देह से आदमी के गुणो का ज्यादा महत्त्व है।
—कमाई करने के लिए केवल आदमी होना ही पर्याप्त नही, उसमे वांछित गुण, समझ और कुशलता अनिवार्य है।

आदमी जावै परौ, लारै बाता रै जावै। ३४८
आदमी चला जाता है, पीछे बातें रह जाती है।
—मरने के बाद भले आदमी की भली बातें और बुरे आदमी की बुरी बातें जबान पर रह जाती हैं।
—सज्जन व्यक्ति को मरने के बाद भी लोग याद करते है।

आदमी ठोकर खाय सीखै। ३४९
आदमी ठोकर खाकर सीखता है।
—आदमी गलती करके ही प्रवीण होता है।
—मनुष्य के जीवन मे गलतिया का भी अपना महत्त्व है।

आदमी धान रौ कीडौ। ३५०
आदमी अनाज का कीडा है।
—आदमी अन्न खाकर ही जिन्दा रहता है।
—मनुष्य की देह का नही उसके चरित्र का महत्त्व है।

आदमी बसिया, सोनौ कसिया। ३५१
आदमी बसने पर और सोना कसने पर।
—आदमी की परख पास बसने से और सोने की परख कसौटी पर कसन से होती है।
—सपक बिना न आदमी की परख होती है और न सोने की।
—बरतने से ही मनुष्य की पहिचान हो पाती है।

आदमी बाड मे मूतता ई आया। ३५२
आदमी बाड मे पेशाब करते ही आये है।
—औरत की तुलना म पुरुष कुछ भी करने को स्वच्छद है।
—पुरुष की निरकुशता पर किसी प्रकार का नियत्रण नही।
—पुरुष की चरित्रहीनता या उसका व्यभिचार समाज म मान्य है।
—पुरुष की लम्पटता समाज मे एक सामान्य बात है।

आदमी रा सौ कायदा, लुगाई रौ अेक। ३५३
पुरुष के सौ कायदे, स्त्री का एक।
—पुरुष की प्रतिष्ठा के सौ मानदण्ड हैं पर स्त्री का केवल एक ही।
—पुरुष सौ गलतिया करके भी अपनी प्रतिष्ठा कायम रख सकता है, पर स्त्री केवल एक बार भूल करने स ही भ्रष्ट हो जाती है।
—केवल शील के एक गुण मे ही स्त्री की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा निहित है।

आदमी रै दुख रौ अर ढाव री भूख रौ कीं सैनाण नीं। ३५४
पुरुष के दुख का और पशु की भूख का पता नही चल पाता।
—पुरुष अपना दुख और पशु अपनी भूख प्रकट करने मे

असमर्थ है।

–मनुष्य पर न जाने कब आफत आ जाय और पशु को न जाने कब भूख लग जाय कुछ पता नही।

आदमी रौ ओखद आदमी! ३५५

आदमी की दवा आदमी!

–आदमी ही आदमी को सुधार सकता है।

–आदमी ही आदमी को सीधा कर सकता है।

–मनुष्य को केवल मनुष्य का ही सबसे ज्यादा डर है।

–मनुष्य ही मनुष्य के लिए सबसे अधिक घातक है।

आदमी रौ भाग पान हेटै। ३५६

पुरुष का भाग्य पत्ते के नीचे है।

–पत्ता किस क्षण कहा से कहा उड जाय, कुछ पता नही, उसी प्रकार पुरुष का भाग्य भी क्षण-क्षण मे बदलता रहता है।

–पत्त की तरह पुरुष का भाग्य भी चचल है।

आदमी है के घनचक्कर। ३५७

आदमी है या घनचक्कर।

–नितात बेहूदी हरकत करने पर।

–नितात मूर्खता प्रदर्शित करने पर।

आध में लूकी अर आध मे पूछ। ३५८

आधे मे लोमडी और आधे म पूछ।

–आधे मे काम की चीज, आधे म व्यथ का बोझ।

–साधारण आदमी का दिखावटी सभार।

–सारे परिवार का मिला कर जितना खर्च, उतना एक सदस्य का खर्च।

–कोई व्यक्ति किसी बात मे बहुतो से अधिक हिस्सा बटाये तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

–सारा गाव एक तरफ और एक महाशय दूसरी तरफ।

आधा उठी नै आधा अठी, भेळा हुयनै गिया कठी? ३५९

आधे उधर व आधे इधर, शामिल होकर गये किधर?

–दोनों ही परस्पर मत्रणा करके कहा खिसक गये।

–किसी बात के लिए निश्चित कुछ पता न हो तब यह कहा-वत प्रयोग मे ली जाती हैं।

आधाक सोवै, आधाक जागै तद बाता रा रंग दोरा ई लागै। ३६०

आधे जागें, आधे सो जायें, तब बातो का रग क्योंकर आये।

–उदासीनता से कोई भी काम सपन्न नही हो सकता।

–रुचि व निष्ठा से ही किसी काम मे सफलता मिलती है।

आधा देई देवता, आधा खेतरपाळ। ३६१

आधे मे देवी-देवता, आधे मे क्षेत्रपाल।

–वस्तु, सपत्ति या अधिकारो का अधिकाश हिस्सा एक व्यक्ति को मिले और शेष बहुत सारे व्यक्तियो को, तब यह लोकोक्ति प्रयोग मे आती है।

–विषम बटवारा।

–अत्यन्त वैषम्य की स्थिति।

आधा काका आधा बाबा, कुण किणनै काम भुळावै। ३६२

आधे चाचा आधे बाबा, कौन किसे काम बताये।

–कई निठल्ले अकर्मण्य व्यक्ति शामिल होकर बेकार गपशप करे तब यह उक्ति प्रयोग में आती है।

–सभी एक से अकर्मण्य और निठल्ले।

आधी छोड आखी नै धावै, अंड़ो डूबै थाह न पावै। ३६३

आधी छोड पूरी को धाये, ऐसा डूबे थाह न पाये।

–असतोषी लालची व्यक्ति की ऐसी ही विडम्बना होती है।

–जो सहज रूप से प्राप्त है, उसीस सतोष करना चाहिए।

पाठा आधी छोड पूरी नै धावै, बैंकी आडी अक न आवै।
आधी छोड आखी नै धावै, बाकी आधी मुह सू जावै।

आधी मिळै तौ आखी नै न दौडीजै। ३६४

आधी मिले तो पूरी के लिए नही भागना चाहिए।

–जो है उसी मे संतुष्ट रहना चाहिए।
सतोष का महात्म्य अपूर्व है।

आधी रोटी घर री भली। ३६५

आधी रोटी घर की भली।

–दूसरो के अधीन पेट भर कर ठाट करने की अपेक्षा अपना स्वतत्र जीवन जीकर आधे पेट गुजर बसर करना श्रयस्कर है।

–अपने गाव या हलके मे आधी जीविका मिले तब तक परदेश जाकर धनी होन के झझट मे कुछ नही धरा।

–दूसरो के आश्रय मे पल कर अपमानित होने की अपेक्षा स्वतत्र रह कर दुख पाना भी श्रेष्ठ है।

आधै असाढ तौ बैरी रै खेतां ई वूठै। ३६६

आधे आषाढ ता वैरी के खेतो पर भी बरसता है।
—आधे आषाढ तो सभी पर भगवान प्रसन्न होकर बारिश करता है।
—भगवान की दृष्टि मे सभी समान रूप से प्रिय हैं, वह किसी के साथ पक्षपात नही करता।
पाठा असाढा तौ अभागिये रै ई बरसै।

आधै गाव होळी अर आधै गाव दियाळी। ३६७
आधे गाव होली और आधे गाव दिवाली।
—पारस्परिक एकता और सहयोग का अभाव।
—अपनी अपनी मनमानी करना।
पाठा आधै गाव दिवाळी अर आधै गाव फाग।

आधै पाणी न्याव होय। ३६८
आधे पानी न्याय होकर रहता है।
सदर्भ - कथा : एक बुढिया गूजरी दूध म आधा पानी मिला कर बेचती थी। एक दफा दूध बच कर वह तालाब के पास विश्राम कर रही थी कि एक बदर पैसो स भरी उसकी थैली छीन कर पेड पर जा चढा। बुढिया बहुत गिडगिडाई तो बदर का दिल पिघल गया। पर उसन पूरी थैली बुढिया को नही सौंपी। बारी बारी से एक पैसा पानी म डाल देता और एक पैसा बुढिया के पास फेंक देता। बुढिया ने आखिर बीन-बीन कर आधे पैसे इकट्ठे कर लिए। वह भौचक्की सी दखती रही और आधे पैस पानी मे डूब गये। उसने मन ही मन यह कह कर सतोष किया कि बेचारे बदर न अपने हाथ से न्याय ही किया है, अन्याय नही। पानी के पैसे पानी मे डाल दिये और बाकी दूध के पैसे उसे सौप दिये।
—आखिर अदृष्ट के हाथों एक दिन सच्चा न्याय होकर ही रहता है।
पाठा दूध रौ दूध अर पाणी रौ पाणी।

आधै रा गुळ, आधै रा चोचला। ३६९
आधे का गुड और आधे के चोचले।
—आधी चीज ऊपर ही ऊपर हड़प जाना।
—बीच म ही हाथ साफ कर देना।

आधौडी रै मूंज रौ इज बखियौ लागै। ३७०
कच्चे चमडे की मूज से ही सिलाई होती है।
—जैसे लच्छन वैसा ही बरताव।
—अकिंचन व्यक्ति का अकिंचन ही सत्कार।
—अपनी गरीबी के अनुरूप ही रहने का रग ढग।
—छोटा आदमी छोटो के बीच ही उपयुक्त जचता है।

आधौ धरती मे अर आधौ बारै। ३७१
आधा धरती मे और आधा बाहर।
—जैसा ऊपर से दिखता है, वास्तव मे वैसा है नही।
—दिखने म सीधा पर असल म पूरा कुटिल।
—अत्यत धूर्त व चालाक व्यक्ति।

आधौ माट झबझबै। ३७२
अधभरी गगरी छलकत जाय।
—अधपढा व्यक्ति अधिक वाचाल होता है।
—अधूरा ज्ञान छलकता है।

आ नवी काया सोनै री, घडी घडी नीं होणै री। ३७३
यह नई काया सोने की, बार बार नही होने की।
—मनुष्य की देह अपूर्व तथा दुर्लभ है। इसे भोग व इच्छाओ की तृप्ति मे ही विनष्ट नही करना चाहिए। सत्कार्य, सदाचार व परोपकार के निमित्त ही इसका उपयोग होना श्रेयस्कर है। मनुष्य योनि का यह स्वर्ण अवसर बार बार नही मिलता।

आप अरोगै अर दूजा नै इग्यारस करावै। ३७४
आप खायें और दूसरो को एकादशी कराये।
—आप मजे से खाये और दूसरो को व्रत उपवास करने का उपदेश दें।
—कथनी और करनी मे भेद।

आप-आपरा सीर सस्कार है। ३७५
अपना-अपना पूर्व सस्कार व साझा है।
—अपना अपना मेल-मिलाप है।
—जो भाग्य मे लिखा है, वही घटित होकर रहता है।
—जो पहिले से निश्चित है, वही मनुष्य को प्राप्त होना है।

आप-आपरी करणी रै काठै। ३७६
अपनी अपनी करनी के किनारे।
—मनुष्य जैसा कर्म करेगा, उसी के अनुरूप वह फल प्राप्त करेगा।
—मनुष्य को सदैव सत्कर्म ही करने चाहिए।
—दुष्कर्मों का फल एक दिन मिलकर ही रहता है।

आप-आपरी खींचो अर ओढो । ३७७

अपनी अपनी खीचो और ओढो ।

–अपनी-अपनी चादर अपने हाथो खीचो और अपनी देह को ढापने का खुद ही प्रयत्न करो ।

–हर व्यक्ति अपनी-अपनी चिता करे ।

–प्रत्येक काम के परिणाम की जिम्मेवारी स्वय अपनी ही है ।

–अपने कामो का दूसरे से कोई वास्ता नही ।

–अपने कामो के भले-बुरे का निपटारा स्वय करो ।

आप-आपरी तान मे खोत्या ई मस्तान । ३७८

अपनी-अपनी तान मे गधे भी मस्तान ।

–हर व्यक्ति अपनी तान मे मस्त रहता है ।

–आत्म-मोह मनुष्य की प्रकृति है ।

–अपनी समझ के अनुसार हर व्यक्ति अपना सुख व अपनी सतुष्टि खोज लेता है ।

–हर व्यक्ति के जीवन का अपना ही मानदण्ड होता है ।

–एक-दूसरे की श्रेष्ठता का दावा व्यर्थ है ।

आप-आपरी मू छ्या रै सं ताव दे । ३७९

अपनी-अपनी मूछो पर सभी ताव देते है ।

–हर व्यक्ति अपनी-अपनी हेकडी का अधिकार जतलाना चाहता है ।

–प्रत्येक व्यक्ति को अपने अहकार की भ्राति होती है ।

–हर व्यक्ति स्वय को एक दूसरे से बढकर सिद्ध करने की चेष्टा करता है ।

आप-आपरी रोटी तळं सं खीरा देवं । ३८०

अपनी-अपनी रोटी के नीचे सभी आग जलाते है ।

–प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति करना चाहता है ।

–दूसरो की भलाई करने का बहाना भी केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि के निमित्त ही होता है ।

आप-आपरी वडी-बेर है । ३८१

अपना-अपना मौका है ।

–अपना दाव आने पर मनुष्य चूकता नही ।

–हर व्यक्ति अपने मौके का फायदा उठाना चाहता है ।

–प्रत्येक व्यक्ति मौका लगने पर अपना बदला लेता ही है ।

आप-आपरी समझ । ३८२

अपनी-अपनी समझ है ।

–व्यक्ति की जो अपनी समझ है वही काम आती है ।

–समझ की परस्पर सौदे-बाजी नही होती ।

–दूसरो की समझ से अपना काम नही सरता ।

आप-आपरी सं गावं । ३८३

अपना-अपना राग सभी अलापते हैं ।

–सभी व्यक्ति अपना-अपना अधिकार जतलाते हैं ।

–हर व्यक्ति अपनी ही पैरोकारी करना चाहता है ।

–अपना रोना सभी रोते हैं ।

आप-आपरी सं ताणं । ३८४

अपनी-अपनी सभी खीच-तान करते हैं ।

–अपने शरीर की हिफाजत के लिए सभी अपनी-अपनी चदरिया खीचते हैं ।

–हर व्यक्ति पहिले अपना हक थोपना चाहता है ।

–हर व्यक्ति अपनी स्वार्थ-सिद्धि मे रत है ।

–प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वतत्र अस्तित्व का बोध है ।

पाठा आपरी ई ताणं ।

आप-आपरं करमां री भोगं । ३८५

अपने अपने कर्मों का फल भोगना ।

–कर्म-फल के अनुसार ही हर व्यक्ति अपना सुख-दुख भोगता है ।

–हर व्यक्ति का दुख पिछले कर्मों से नियत्रित है ।

–व्यक्ति के सुख-दुख मे किसी की भी दखल नही चल सकती ।

आप-आपरं खोळ्या मे सं मस्त । ३८६

अपनी अपनी योनि मे सभी मस्त हैं ।

सदर्भ-कथा : एक धनवान सेठ था । ऐश्वर्य व सुख की कही कोई कमी नही थी । मरने के कुछ समय पूर्व उसने ज्योतिषी से पूछा कि उसे अगली योनि क्या मिलेगी ? तब ज्योतिषी ने बताया कि वह अपने ही घर की मोरी का कीडा बनेगा । ऐश्वर्य मे पली मनुष्य की आत्मा को यह बात सुन कर बडा कष्ट हुआ । सेठ की मरणासन्न देह उस घिनौनी कल्पना से काप उठी । कुछ देर पश्चात् उसने एक निराकरण सोचा और पास खडे पुत्रो को आदेश दिया कि मरते ही वे नाले मे देखे । उस समय जो कीडा नजर आये उसे कुचल कर मार डालें । उस

नारकीय जीवन से तत्क्षण मुक्ति तो मिलेगी । पिता के आदेश पालन की स्वीकृति के अलावा उस समय और चारा ही क्या था। सेठ के मरते ही पुत्रों ने गदी नाली मे तलाश की। सचमुच एक कीडा किलबिला रहा था। पत्थर लेकर उन्होंने कुचलने की चेष्टा की तो कीडा बोला— ना, मुझे मारो मत ! मैं बहुत सुखी और मस्त हू। इससे शानदार जीवन और क्या हो सकता है ? तब आज्ञाकारी पुत्रों ने उसे साफ सुथरे पानी मे डालने की बात कही तो फिर उसने मना कर दिया और कहा कि इससे बढकर और क्या निर्मलता होगी। तुम चिंता ना करो, मैं बहुत सुखी हू।

–सुख की अनुभूति के लिए अपनी समझ ही सर्वोपरि है।
–हर व्यक्ति के सुख दुख का अपना ही दायरा होता है।

पाठा . आप-आपरी खाल मे सगळा ई मस्त।
आप-आपरी जूण मे सैं मस्त।

आप-आपरै घरै सैं ठाकर। ३८७

अपने-अपने घर मे सभी ठाकुर।

–कोई व्यक्ति बडा है तो अपने घर मे है, वह अपने बडप्पन का ठौर दूसरो पर नही जतला सकता।
–किसी भी व्यक्ति की स्वतत्रता मे दखल देने का किसे भी अधिकार नही।
–कोई भी बडा आदमी दूसरे के दायरे मे आकर छोटा हो जाता है।

पाठा : आप-आपरै घरै सैं मोटा।
आप-आपरै घरै सैं उमराव।

आप-आपरै थानै-मुकानै ई भला। ३८८

अपने-अपने थान मुकाम पर ही भले।

–जो भी देवता अपनी-अपनी ठौर स्थापित है, वे वही भले, उन्हे इधर उधर हटाने से अनिष्ट ही होगा।
–दुष्ट व्यक्ति अपनी जगह न छोडे तब तक ही ठीक है, अन्यथा वह लोगो पर कहर ही ढायगा।
–बडे व्यक्ति अपने घर पर ही ठीक हैं, अन्यथा उनके लच्छन कौन नही जानता।
–झूठी प्रतिष्ठा के प्रति व्यग।

आप-आपरै दाणै-पाणी मे सैं मस्त। ३८९

अपने-अपने दाने-पानी मे सभी मस्त है।

–प्रत्येक मनुष्य अपने हाल मे मस्त है।
–हर व्यक्ति अपने ही दायरे मे खोया है।
–हर व्यक्ति प्राप्त दायरे को अनजाने ही स्वीकार कर लेता है।

आप-आपरै भाग रौ सैं भोगै। ३९०

अपने अपने भाग्य के अनुसार ही भोग।

–जो भाग्य मे लिखा है वही मिलता है।
–प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अपने ही भाग्य से निर्धारित है।

पाठा आप-आपरै भाग रौ सैं खावै।

आप-आपरौ जी सगळा नै वाल्हौ। ३९१

अपनी जान सभी को प्यारी।

–नरसहार करने वाले हत्यारे को भी अपने प्राणो का मोह होता है।
–दूसरो को क्लेश पहुचाना सगत नही।
–अपने प्राणो के समान ही दूसरो के प्राण का महत्त्व समझना चाहिए।

पाठा : आप-आपरौ जी सैं नै प्यारौ।

आप-आपरौ ढब। ३९२

अपना-अपना ढर्रा।

–प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अपना ही रग ढग होता है।
–हर व्यक्ति की आदत एक मजबूरी होती है।

आप-आपरौ लेहणियौ। ३९३

अपना-अपना प्राप्य।

–जो भाग्य मे लिखा है वह तो मिलेगा ही।
–जो मिल जाय उससे सतोष करना चाहिए।

आप-आपरौ स्वारथ सगळा सारै। ३९४

अपना अपना स्वार्थ सभी सिद्ध करते है।

–स्वार्थ ही हर व्यक्ति के कर्मों की मूल प्रेरणा है।
–अपने स्वार्थ की पूर्ति मनुष्य का सहज स्वभाव है।

पाठा · आप-आपरौ स्वारथ सगळा कूतै।

आप-आपरौ सुळियौ दळै। ३९५

अपनी ही बकवास किये जा रहा है।

–अपनी अपनी ही हाके जा रहा है।
–अपने ही प्रलाप मे खोये हुए व्यक्ति के लिए।

आप ई आडै अर आप ई अरथावै । ३६६
खुद ही पहेली बूझना और खुद ही उसका अर्थ करना ।
—खुद ही समस्या प्रस्तुत करना और खुद ही उसका हल निकालना ।
—स्वय के हाथों ही उलझाकर फिर सुलझाना ।
पाठा आप ई आडै अर आप ई पळ दे ।

आप ई आप दळै, आपरी माथै अर दूजां री तळै । ३६७
अपनी ही अपनी दले, अपनी ऊपर व दूसरो की तले ।
-जो व्यक्ति केवल अपनी ही अपनी बकवास करे और दूसरो की सगत बात पर भी कान न दे ।

आप ई गावै, आप ई बजावै । ३६८
खुद ही गाये, खुद ही बजाये ।
—सारे काम खुद अपने हाथो करे ।
—जिस पर सम्पूर्ण जिम्मेवारी का भार हो वह एक साथ कई कामो मे रत रहता है ।

आप ई माखै, आप ई समझै । ३६९
खुद ही बोले, खुद ही समझे ।
—जो अपनी बात दूसरो को समझा नही सकता ।
—अपने पागलपन मे ही बेखबर रहने वाले व्यक्ति के लिए ।
—गूढ समस्या उत्पन्न करने वाले मनुष्य के लिए ।

आप कमाया कांमडा, किणनै दीजै दोस ? ४००
अपने हाथो काम बिगाडा, फिर किसे देना दोष ?
सदर्भ कथा : एक सोजी जाति का मुसलमान पालडी गाव का ठाकुर था । उसके गाव मे बेइन्तहा बडे प्याज पैदा होते थे । अपने गाव की इस खासियत को राजा के सामने प्रकट करने के लिए एक बार वह बहुत बडे-बडे प्याज भेंट-स्वरूप दरबार मे ले गया । राजा को इतने बडे प्याज देख कर बडा आश्चर्य हुआ । पर आश्चर्य के साथ एक बात और उसके दिमाग मे कौंधी कि ऐसा गाव तो खालसे का होना चाहिए । सो यह विचार कौंधते ही राजा ने गाव जब्त करने का आदेश दे दिया । बेचारा सोजी क्यो तो अपने पावो चलकर राजा को बडे प्याज दिखाता और क्यो उसका गाव जब्त होता । पर अपने हाथो की गई गलती के लिए किसे दोष दिया जाय । पूरा दोहा निम्न प्रकार है .

आप कमाया कामडा, किणनै दीजै दोस ।
सोजीजी री पालडी, कादा लीनी खोस ।

—अपने हाथो की गई नादानी का फल भी स्वय ही को भोगना पडता है ।
—अपने द्वारा की गई गलती के परिणाम को प्रारब्ध का फल कहकर नही टाला जा सकता ।
पाठा : हाथा कमाया कामडा, दई न दीजै दोस ।

आप गरुजी कातरा मारै, दूजां नै परमोद सिखावै । ४०१
—खुद गुरुजी कीडे मारें, दूसरो को प्रबोध सिखायें ।
—स्वय हत्या करने वाले के मुह से अहिंसा का उपदेश शोभा नही देता ।
—उपदेश और आचरण मे अन्तर ।
—कहना एक बात है, करना दूसरी बात है ।
—उपदेश देना आसान पर उसका पालन करना मुश्किल ।
—पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।
पाठा आप गरुजी बैंगण खावै, दूजा नै परमोद बतावै ।
आप व्यासजी बेंगण खावै, दूजा नै परमोद बतावै ।
सस्कृत परोपदेशे पडित्य सर्वेषा सुकर नृणाम् ।
धर्मे स्वीयमनुष्ठान कस्यचित्तु महात्मन ।

आप घाती, महा पापी । ४०२
आत्म घाती, महा पापी ।
—आत्म हत्या करना महा पाप है ।
—खुद की देह को विनष्ट करने का भी स्वय को अधिकार नही है ।

आप जेडी पराय । ४०३
अपने जैसी ही पराई ।
—अपनी आत्मा का ही स्वरूप दूसरो मे देखना चाहिए ।
—दूसरो को सताना नही चाहिए ।

आप ठग्यां सुख ऊपजै, औरं ठग्यां दुख होय । ४०४
आप ठगाये सुख उपजे और ठगे दुख होय ।
—कोई दूसरा अपने को ठगे तो यह सोच कर सुख व सतोष मिलता है कि अपने द्वारा किसी का भला तो हुआ । बेचारे को अवश्य कोई अभाव होगा, अन्यथा ठगने जैसा हीन कर्म वह क्यो करता । इसके विपरीत खुद किसी को ठगे तो मन मे क्लेश उत्पन्न होता है कि किसी को ठग लिया । बेचारे की क्या हैसियत होगी । ठगे जाने से उसके मन मे कितना दुख हो रहा होगा ।

—ठगना दुष्कर्म है ठगाना नहीं और दुष्कर्म के लिए ही मनुष्य पश्चाताप करता है।

आप डूबता पाडियौ ले डूबौ जजमान। ४०५
स्वय डूबता हुआ पडा यजमान को भी ले डूबा।
—अपने साथ अपने परिचितों को भी ले डूबना।
—अपने साथ दूसरो का भी बटाढार कर देना।
—कोई व्यक्ति किसी दूसरे की हानि का अनजाने ही कारण बन जाय।

आप डूबौ तो जुग डूबौ। ४०६
आप डूबा तो जग डूबा।
—व्यक्ति को अपने डूबने के साथ ऐसा लगता है कि सभी कुछ डूब गया।
—व्यक्ति का अपना सुख दुख ही एकमात्र सचाई है।
—खुद सुखी तो दुनिया सुखी। खुद दुखी तो सारी दुनिया ही दुखी।
—व्यक्ति के अपने मन मे ही सारी दुनिया समाहित रहती है।
पाठा आप मरै जिणरै जुग डूबै।

आप न जावै सासरै दूजा नै दे सीख। ४०७
खुद तो कभी ससुराल न जाये और दूसरो को सीख दे।
—जो व्यक्ति अपनी गलतियो को अनदेखा करे व दूसरो को शिक्षा दे।
—मनुष्य अपना आत्मालोचन नही कर पाता।
—दूसरो को शिक्षा देने के पहिले अपनी कमजोरिया जान लेनी चाहिए।
—मनुष्य स्वय की सही पहिचान नही कर पाता।

आपनै सूझै कोनीं, दूजा नै बूझै कोनी। ४०८
स्वय को सूझे नही, दूसरे को बूझे नही।
—समझदार व्यक्ति की राय मानने से किसी मूर्ख व्यक्ति का काम सुधर सकता है, पर वह माने तब न। मान जाय तो फिर वह मूर्ख ही कहा!
—वह व्यक्ति महामूर्ख है जो अपनी मूर्खता के बावजूद न अपने को मूर्ख समझता है और न दूसरो की बात मानने के लिए तैयार होता है।
पाठा आपनै उरजै कोनी, दूजा री मानै कोनी।

आप पसंद के जुग पसंद। ४०९
आप पसद या जग पसद।
—कोई भी व्यक्ति या तो अपनी पसद से काम करता है या दूसरो की पसद से।

आप पसद तौ जुग पसद। ४१०
आप पसद तो जग पसद।
—व्यक्ति की अपनी पसद दुनिया की पसद से बडी है।
—मनुष्य को अपनी रुचि से वाधित होकर ही काम करना चाहिए।
—दुनिया की पसद के अनुसार कोई व्यक्ति कब तक अपनी पसद बदलता रहे।

आप भलौ तौ जुग भलौ नींतर भलौ न कोय। ४११
आप भला तो जग भला, नही तो भला न कोय।
—सारा ससार व्यक्ति के मानस ही का प्रतिरूप है। वह खुद बुरा है तो सारी दुनिया ही बुरी है। खुद भला है तो सारी दुनिया भली है।
—यह ससार कैसा कि अपने मन जैसा।

आप मरता बाप किणनै याद आवै। ४१२
आप मरते समय बाप किसे याद आता है।
—अपनी विपदा के समय दूसरो का ध्यान नही रहता।
—अपने प्राणो के साथ मोह ही दुनिया का सबसे बडा रिश्ता है।
—मनुष्य का अपना स्वार्थ ही सर्वोपरि दर्शन है।

आप मरया बिना सुरग कठै? ४१३
स्वय के मरे बिना स्वर्ग कहा?
—स्वर्ग के सुख का आनद प्राप्त करना है तो स्वय को मरना होगा।
—अपने ही हाथो किये बगैर कोई भी काम दूसरो के भरोसे सपन्न नही हो सकता।
—बडा उत्सर्ग किये बिना कोई भी बडी चीज हासिल नही की जा सकती।
—अपनी जिम्मेवारी स्वय अपने ही को निभानी है।

आप मालजादी व्है जद सगा साळा री ई वेम करै। ४१४
स्वय दुराचारी हो तो वह सगे साले का वहम करता है।
—बुरे आदमी को सभी बुरे नजर आते है।

पाठा आप कठिसार न्है जद सगा साळा री पतियारौ नी करैं। आप जार न्है तौ साळै रौ ई विस्वास नी करै।

आप मिया मगता बार खड्या दरवेस। ४१८
आप मिया भिख री द्वार खडा दरवेश।
–भिखारी के घर फकीर मागन आया—अजीब विडम्बना है।
–अपने ठाट बाट का मिथ्या प्रदशन करने वाले व्यक्ति के लिए।
–अपनी हैसियत से अधिक जो दिखावा करे।

आप मिळै सो दूध बिरोबर माग्या मिळै सो पाणी ४१६
–अपना श्रम तो दूध समान मागे मिले सो पानी।
–अपनी मेहनत से पैदा की हुई धूल भी सोने के बराबर है और दूसरा स मागा हुआ सोना भी धूल समान है।
–श्रम की प्रशंसा व याचना का तिरस्कार।

आप मुवा जुग परळै। ४१७
अपनी मत्यु विश्व प्रलय।
–मत्यु के साथ उस व्यक्ति के लिए तो सारा ससार ही नष्ट हो जाता है।
–चिता दुख सताप इत्यादि ये सब परेशानिया जीवित व्यक्ति के लिए है। मरने के बाद कुछ भी शेष नही रहता जो बच है व अपनी अपनी परेशानिया से सघष करें।
–मत्यु के साथ मनुष्य सभी चिताओ स मुक्त हो जाता है।
पाठा आप मरया जुग परळै।

आप मे कणूका कोनी तो घराणो काईं करै। ४१८
अपना सामथ्य नही तो घराना क्या करे।
–अपनी करामात अपन साथ खानदान की प्रतिष्ठा से काम नही सरता।
–कुलीन घराने म भी अधम पैदा हो सकता है।
–उच्च कुल की दुहाई स कोई व्यक्ति ऊचा नही हो जाता।

आपरा काला रुवाणै खलका रा हसावै। ४१६
अपनी पागल औलाद रुलाती है दूसरा की हसाती है।
–मनुष्य अपने दुख पर आसू बहाता है और दूसरा के दुख पर खिलखिलाता है।
–दूसरा का क्लेश मनुष्य को छू नही पाता।
–अपन पर बीतती है तभी मनुष्य को मार्मिक अनुभूति होती है।

आपरा काटा आपरै इज मागं। ४२०
अपने बिछाये काटे अपने पावा म ही गडते है।
–अपने किये का फल अपने ही को मिलता है।
–अपनी बुरी हरकतो की परेशानी खुद को ही उठानी पडती है।

आपरा कीना आप इज भोगसी। ४२१
अपना किया अपने ही को भोगना पडगा।
–अपन किये दुष्कर्मों का फल कोई दूसरा थोड ही भोगेगा।
–कोई व्यक्ति बुरे कम करके उसके परिणाम स बचना चाहे तो यह सभव नही।

आपरा गुण आप बखाणं। ४२२
अपन गुण स्वय बखान।
–अपन मुह से अपनी ही प्रशसा करना।
–अपन मुह मिया मिट्ठू बनना।

आपरा जीव री सगळा नै पडो। ४२३
अपन प्राणो की सभी को चिंता है।
–अपने गुजर बसर की परेशानी सभी को है।
–अपने निर्वाह के प्रति कोई उदासीन नही रहता।
–अपन अस्तित्व के प्रति सभी अनुरक्त है।

आपरा दोसण सै ढाबै। ४२४
अपने दोष सभी छिपाते है।
–अपनी बुराइया को ढकना तथा दूसरा की बुराइया को अनावृत करना मनुष्य का सहज स्वभाव है।
–अपनी कमजोरियो को मनुष्य अपनी आखो स भी छिपाना चाहता है।

आपरा पादा घणा सवादा। ४२५
अपना पाद बडा खुशबूदार।
–अपनी निहायत गदी चीज भी मनुष्य को घिनौनी नही लगती और इसके विपरीत दूसरे की स्वच्छ चीज से भी वह घिन करने लगता है।
–मनुष्य हमेशा दुहरे मानदण्ड म जीता है।

आपरा पेट नै माटा कुण वावै। ४२६
अपने पेट पर कौन पत्थर मारे।

–अपने पेट के प्रति कोई उपेक्षा नहीं बरतता।
–स्वेच्छा से कोई भी व्यक्ति भूखा रहना नहीं चाहता।
–खुशहाल जीवन की ललक सभी को होती है।
–अपने निर्वाह की चिंता किसे नहीं होती।

आपरै पेट री दाभ सैं बुझावै। ४२७
अपने पेट की ज्वाला सभी बुझाते हैं।
–अपनी गुजर-बसर के लिए सभी सतर्क हैं।
–अपना पेट पालने के लिए सभी चिंतित हैं।

आपरा हाथ अर आपरी ई आरती। ४२८
अपने हाथ और अपनी ही आरती।
–अपने हाथों से ही अपना सम्मान करना।
–अपनी प्रतिष्ठा के लिए अपने हाथों ही प्रचार करना।
–अपने ही हाथ से अपने ही अभिनंदन का मौका मिले तो कोई क्यों कसर रखे।

आपरी अकल नैं घोडा ई नीं पूगै। ४२९
अपनी अक्ल को घोडे भी नहीं पहुच सकते।
–अपनी बुद्धि की गति मनुष्य घोडों से भी तेज मानता है।
–अपनी बुद्धि का कोई मुकाबला नहीं कर सकता।
–केवल अपनी बुद्धि ही अपने लिए उपयोगी सिद्ध होती है।
–हर व्यक्ति को अपनी बुद्धि सबसे तेज दिखती है।
पाठा : आपरी अकल नैं घोडा ई नी न्हावडै।

आपरी अक्ल रै पाण मारयो मरै। ४३०
अपनी अक्ल के गुमान से दबा जा रहा है।
मिलाइये क. सं ३०
–अक्ल इतनी बेशुमार कि जैसे उसका भी बोझ महसूस हो रहा हो।
–अपनी अक्ल से बढ़कर किसी की भी अक्ल नहीं मानना।
–अपनी बुद्धि का अतुल्य अहंकार।

आपरी असलियत माथै आयग्यो। ४३१
अपनी असलियत पर आ गया।
–आखिर अपना ओछा रूप प्रकट कर ही दिया।
–कृत्रिमता के आवरण में वास्तविकता को अधिक समय तक छिपाया नहीं जा सकता।

आपरी आंख्यां चानणो है। ४३२
आपकी आंखों का उजियारा है।
–केवल आप ही का भरोसा है।
–बुरा भला जो भी होगा वह आप ही के हाथों से होगा।
–जिस व्यक्ति के प्रति अपने हित का अमिट विश्वास हो।

आपरी ई राग अलापै। ४३३
अपनी ही राग अलाप रहा है।
–केवल अपनी ही अपनी हांके जा रहा है।
–दूसरे की बात सुनने के लिए कान ही न देना।
–कानों की अपेक्षा मुह ज्यादा काम में लेना।
–केवल अपने मतलब ही की बात करना।

आपरी अेक फूटो री दुख कोनीं, पाडोसिया री दोनूं फूटी चावै। ४३४
अपनी एक फूटी का दुख नहीं, पड़ौसी की दोनों फूटें।
सदर्भ-कथा : देवी का एक पुजारी निहायत गरीब होते हुए भी मन का बहुत मैला, कुटिल व बेहद ईर्ष्यालु था। अपनी गरीबी व दुख-दैन्य का उसे उतना दुख नहीं होता था जितना दूसरों की सुख सुविधा देख कर उसके मन में सताप पैदा होता था। घरवाली ने बार-बार तग किया तो वह देवी के सामने आमरण अनशन करने के लिए बैठ गया। देवी अपने भक्त की ईर्ष्या व कुटिलता अच्छी तरह जानती थी। काफी अर्से तक प्रकट नहीं हुई। आखिर भक्त आत्म-बलिदान के लिए तैयार हो गया। इस बार देवी ने सोचा कि अब यदि भक्त की टेक नहीं रखी तो भक्ति का प्रसार कम हो जायेगा। देवी-देवताओं की पूछ कम हो जायेगी। इस मजबूरी से बाधित होकर देवी को प्रकट होना पडा। भक्त के सिर पर हाथ फेर कर दुलार से बोली—तेरी भक्ति के सामने मुझे झुकना पडा। इच्छा हो सो माग।

पुजारी आखें खोल कर बोला—बलिदान के निर्णय के पहिले ही मान जाती तो तुम्हारी कितनी प्रतिष्ठा बढ़ती। ससार में तुम्हारे नाम का डका बज जाता। मेरा तो कुछ नहीं। गरीबी में जन्मा और गरीबी में ही मर जाऊंगा। पर तुम्हारी मर्यादा को कितना धक्का लगेगा! वर मागने के लिए ही तो यह अनशन किया था, सो मागना तो पड़ेगा ही। लेकिन मेरी जो इच्छा होगी वही वरदान आपको देना होगा।

देवी ने दुलार भरे स्वर में तथास्तु कहा तो पुजारी बोला—इस दुनिया का सारा धन वैभव समाप्त हो जाय, लोग दाने-दाने को मोहताज हों, सिवाय मेरे दुनिया में

और कोई सुखी न हो । केवल तभी मेरे मन की आग बुझेगी । मैं बहुत बरसो से जल रहा हू ।

देवी बोली—बेटा, मैं सभी की मा हू । अपने एक पुत्र की खातिर दूसरो का अहित नही कर सकती । वरदान कल्याण के लिए होते हैं किसी का विनाश करने के लिए नही । तू अपने साथ दूसरो का भी भला सोच । ईर्ष्या की जलन अपने मन से निकाल दे ।

पुजारी गिडगिडा कर देवी के पाव पकडते हुए बोला—नही मा, यह नही हो सकता, तुमने मेरी इच्छा पूरी करने का वचन दिया है । अब इन्कार करने से तुम्हारी मर्यादा को ठेस लगेगी ।

देवी मुस्करा कर बोली—अपनी मर्यादा की जानकारी व उसका ध्यान मुझे तुमसे ज्यादा है उसकी बात रहने दो । मैं अपने वचन से बधी हू । जो भी वरदान मागोगे वह पूरा करूगी ।

पुजारी आसू बहाता हुआ बोला—तब तो मैं कोई वरदान माग ही नही सकता । दूसरो का सुख ही तो मेरा परम दुख है । उन्हे दुख से तडफते देखे बिना मेरे मन को कभी शाति नही मिल सकती । मेरे सिवाय दुनिया मे कोई सुखी न रहे—मेरी इच्छा तो केवल यही है जो तुम्हारे सामने प्रकट कर दी । अब तुम्हारी समझ म आये सो करो ।

देवी बडी पशोपेश मे पडी । कुछ देर सोचने के बाद बोली—ईर्ष्या के कारण तुम्हारा विवेक नष्ट हो गया है । तुम्हारे भले की बात भी आखिर मुझे ही सोचनी होगी । तुम अपने हाथो दूसरो का भला नही कर सकते तो मत करो । मै तुम्हे वरदान ही ऐसा दूगी, जिससे तुम्हे करना तो कुछ भी नही पडेगा और स्वत पडौसिया का कल्याण हो जायेगा । मेरे इस वरदान के बाद तुम्हे कभी कोई अभाव नही रहेगा । सो मेरी ओर से तुम्हे यही वरदान है कि तुम जो भी इच्छा करोगे वह तत्क्षण तुम्हे मिलेगा । पर साथ ही साथ उसस दुगुना तुम्हारे सभी पडौसिया को भी मिलेगा । इस वरदान से तुम अनजाने ही सभी का मगल कर सकोगे । अब तक की सारी ईर्ष्या अपने मन से रफा-दफा कर डालो ।

पुजारी जोर से मर्मान्तिक चीत्कार करते हुए बोला—ना देवी मा । इस वरदान से तो मेरा अभाव ही भला, मेरा दुख-दैन्य ही भला ।

पर देवी यह वरदान देकर अन्तर्धान हो गई ! आखिर पुजारी आसू पोछ कर निराश मन अपने घर पहुचा । घरवाली को वरदान की सारी बात सुनाई । घरवाली की बाछें खिल गईं । पुलकित स्वर मे बोली—आखिर तुम्हारी भक्ति सफल हुई । इसमे दुखी होने की बात ही क्या । सारी उम्र गुजर गई अभाव व दारिद्र्य से जूझते जूझते । दूसरो के सुख ऐश्वर्य से अपना क्या वास्ता । मेरे बच्चे सुखी हो । तुम सुखी हो । मैं सुखी होऊ । इसके अलावा अपन क्यों किसी की परवाह करें ! तुम्हारी भक्ति के चमत्कार से अब सुख की झलक तो मिलेगी ! देखें तो सही यह सुख कैसा होता है !

बार बार उकसाने पर आखिर पुजारी को घरवाली की बात माननी पडी । लेकिन वह मागे भी तो क्या ? सुख-ऐश्वर्य की बातें कल्पना से बाहर थी । अभाव की अनुभूति से उनकी चेतना मर्यादित थी । बहुत सोच समझने के बाद पुजारी ने इच्छा प्रकट की कि उसके घर म एक हडिया आटा, एक हडिया मिर्च मसाला तथा एक हडिया नमक हो जाय तो अच्छा ! सचमुच देवी के वरदान का करिश्मा कि इच्छा करते ही सारी चीजें आखो के सामने प्रकट हो गईं । घरवाली की आखें फटी की फटी रह गई । जिदगी म पहली बार भर पेट भोजन मिला । सचमुच भरे पेट का तो आनद ही अजीब होता है ।

पुजारी वरदान की बात भूला नही था । घरवाली से बोला—तू एक बार सभी के यहा चक्कर तो काट आ । क्या सचमुच उन्हे भी दुगुना सामान मिला । इच्छा न होते हुए भी पति के कहने से पुजारिन सभी के यहा चक्कर काट आई । वरदान की बात सही निकली । पडौसी सभी आश्चर्य चकित थे कि अचानक यह क्या चमत्कार हुआ ! पडौसियो के आश्चय की बात सुन कर पुजारी के मन म कुछ दुख हुआ । पर फिर भी घरवाली के कहने से उसने एक गाय, एक पक्का मकान कुछ बर्तन-बासनो की इच्छा प्रकट की और देखते देखते उसकी इच्छा पूरी हो गई । पर सभी पडौसिया को दुगुना वरदान फला, यह अवश्य उसके लिए चिंता व परेशानी की बात थी ! अब क्या मागे ! ठेट बचपन म नानी और मा के मुह से सोने के मकान की बात भी परि कथाओ म सुनी थी । भला देवी का यह वरदान थोडे ही फल सकेगा ! इस अनहोनी जिज्ञासा से प्रेरित होकर पुजारी न सोने के महल की इच्छा प्रकट की । बडे अचरज की बात कि आखो के

की क्षति कम भी हो तो बरदाश्त नही हो सकती और इसके विपरीत सामूहिक रूप से भारी क्षति भी बरदाश्त हो जाती है।

पाठा आपरी गई रौ धोखो कोनी, जेठ री रही रौ धोखो है।

आपरी गऊ हू। ४४१

आपकी गाय हू।

—आपकी शरण मे पडा हू।

—आपके चरणो मे अर्पित हू, चाहे मारे, चाहे तारें।

—सर्वथा असहाय व्यक्ति के लिए।

आपरी गरज गधा चरावै। ४४२

अपनी गर्ज से गधे चराता है।

—गधा शीतला देवी का वाहन है। चेचक का प्रकोप होने पर गधा को उवले चने खिलाने की प्रथा है। चेचक का डर न हो तो बेचारे गधे को कौन चने खिलाय।

—गर्ज बावली होती है।

—अपने स्वार्थ के लिए कोई भी व्यक्ति कैसा भी हीन कार्य करने को तैयार हो जाता है।

—स्वार्थ ही सर्वोपरि मर्यादा है।

आपरी गरज गधै नै बाप कहावै। ४४३

अपनी गर्ज गधे को बाप कहलवाती है।

—गर्जमन्द व्यक्ति सब कुछ करने को तैयार हो जाता है।

—स्वार्थ के वशीभूत आदमी को अदने से अदने व्यक्ति की भी खुशामद करनी पडती है।

—स्वार्थ के आगे कोई नैतिक मान्यता नही टिकती।

पाठा आपरी चाय गधै नै बाप बणावै।

आपरी गाय रौ घी सौ कोसा खाईजै। ४४४

अपनी गाय का घी सौ कोस पर भी खाने को मिल जाता है।

—अपना आत्मीय कही भी हो, वक्त पर काम आता है।

—आत्मीयता दूरी का व्यवधान नही मानती।

आपरी घुराळी मे गिडक ई नाहर। ४४५

अपनी माद मे कुत्ता भी शेर।

—अपने स्थान पर कायर भी बहादुर बन जाता है।

—अपने परिचितो के बीच जोश चढ आना स्वाभाविक है।

—अनजान व्यक्ति की अपरिचित जगह पर कैसे कद्र हो!

पाठा आपरी गळी म गिडक ई नाहर।

पाठा: आपरी घुरी मे गादडो ई सेर।

आपरी चाढ़ै नै पराई फोड़ै ४४६

अपनी चढाये और पराई फोडे।

—अपनी हडिया को चूल्हे पर चढाना और दूसरे की चढी हुई हडिया को फोडना।

—जो व्यक्ति अपने स्वार्थ म नितात अंधा हो।

—जिस मनुष्य का स्वार्थ के कारण विवेक ही सर्वथा नष्ट हो गया हो।

आपरी छाछ नै कुण खाटी बतावै ? ४४७

अपनी छाछ को कौन खट्टी बताय?

—अपनी चीज को कौन बुरी बताये?

—अपनी चीज को सभी अच्छा बताने की कोशिश करते हैं।

—मनुष्य अपनी बुरी चीज को भी अच्छी सिद्ध करने का निष्फल प्रयास करता है।

पाठा आपरी छाछ नै कोई पतळी नी बतावै।
आपरा दही नै कुण खाटौ बतावै।

आपरी डाढ़ी रै लसरकौ पैली दै। ४४८

अपनी दाढी सभी पहिले सहलाते हैं।

—हर व्यक्ति पहिले अपना स्वार्थ पूरा करता है।

—अपने स्वार्थ के आगे कोई सिद्धान्त नहीं।

—अपना स्वार्थ कोई नही छोडता।

आपरी तौ आ काया ई कोनीं! ४४९

अपनी तो यह काया भी नही है।

—एक दिन अपनी देह भी साथ छोड देती है।

—किसी भी चीज से ममता रखना एक भ्रम मात्र है।

—अपना कहने के लिए इस दुनिया म कुछ भी नही।

आपरी नाक वढाय खलका रा अपसूण करै। ४५०

अपना नाक कटवा कर दूसरा के अपशकुन करता है।

—कटी नाक अपशकुन का द्योतक है। कोई नासमझ व्यक्ति इसलिए जान कर अपनी नाक कटवाये कि जिससे दूसरो के लिए अपशकुन हो।

—किसी का मामूली नुकसान करने की मशा से अपने ज्यादा नुकसान की भी परवाह न करना।

आपरी नींद सूवै अर आपरी नींद जागै। ४५१

अपनी नीद सोये और अपनी नीद जागे।
—जिस व्यक्ति का जीवन किसी के भी आधीन न हो।
—पूर्ण रूप से स्वतंत्र, जिसे किसी भी बात की कोई चिंता न हो।
—जो व्यक्ति किसी के मामले मे खामखा पचायती न करे।
—जिस व्यक्ति को कोई छेडने वाला न हो।
—जो व्यक्ति किसी का भी कर्जदार न हो।

आपरी पराई अर पराई आपरी। ४५२
अपनी पराई और पराई अपनी।
—जिस व्यक्ति की दृष्टि मे अपने और पराये का भेद भाव न हो।
—वीतराग।

आपरी पाग आपरै माथै। ४५३
अपनी पगडी अपने सिर।
—अपनी पगडी उतरे वैसा अप्रतिष्ठित कोई काम कभी करना ही नही।
—अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखनी अपने ही हाथ म है।
—अपनी वस्तु की सुरक्षा अपने जिम्मे।
पाठा आपरी पाग आपरै हाथै।

आपरी पूठ आपनै कद दीखै? ४५४
अपनी पीठ स्वय को कब दिखती है।
—अपनी कमजोरी अपनी आखा नही मे दिखती।
—कोई भी मनुष्य अपने दोषों के प्रति सर्वथा अधा होता है।

आपरी बाजरी बोस्योड़ी ई मीठी। ४५५
अपनी बाजरी सडी हुई भी मीठी।
—अपनी खराब चीज भी मनुष्य को अच्छी लगती है।
—अपनी वस्तु के प्रति मनुष्य का ममत्व बहुत ज्यादा होता है।
—अपनी वस्तु के अवगुण देखने म मनुष्य सर्वथा अक्षम है।

आपरी मारी हलाल। ४५६
अपनी मारी हुई हलाल।
—जो व्यक्ति हमेशा अपने ही काम को सर्वश्रेष्ठ समझता हो।
—अपने हाथो किये हुए बुरे काम को भी अच्छा समझना।

आपरी मां नै डाकण कुण कैवै? ४५७
अपनी मा को डायन कौन कहे?
—अपने घर की कमजोरी को कौन प्रकट करना चाहता है।
—अपने मुह से अपनी चीज की कोई भर्त्सना नही करता।
—हर व्यक्ति अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाये रखना चाहता है।
पाठा घर री मा नै डावण कुण कैवै।

आपरी लाज आपरै हाथ। ४५८
अपनी मर्यादा अपने हाथ।
—अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने का दायित्व अपना है।
—सत्कार्य करने से ही समाज म प्रतिष्ठा रहती है।
—बुरे काम करने से प्रतिष्ठा घटती है।

आपरी लुळताई दूजै नै खाय। ४५९
अपनी विनम्रता सामने वाले को खाये।
—विनम्र व्यवहार मे हर किसी का मन द्रवित हो जाता है।
—विनम्र व्यक्ति के सामने हर व्यक्ति का झुकना पडता है।
—विनम्र मनुष्य हमेशा सफल होता है।
पाठा आपरी नरमाई दूजै नै खावै।

आपरी साथळ उघाड्या आप ई लाजै। ४६०
अपनी जघा उघाडने से स्वय ही को लज्जित होना पडता है।
—कोई अपने घरवालो के दोष दूसरो के सामने कैसे प्रकट करे।
—अपने घरवालो की बदनामी को छिपाना पडता है।
—अपने घरवालो के कारनामे प्रकट करने से अपने मुह को ही शर्म आती है।

आपरी सो आपरी अर पराई सो ई आपरी। ४६१
अपनी सो अपनी और परायी सो भी अपनी।
—अपनी चीज पर दूसरो का क्या अधिकार, पर दूसरा की चीज तो अपनी है ही।
—जो व्यक्ति किसी को भी मागने पर अपनी चीज न दे, पर हमेशा दूसरो से कुछ न कुछ माग कर अपना काम बनाय।
—निहायत खुदगर्ज व्यक्ति।

आपरी सो काम री नींतर सपनो। ४६२
अपनी सो काम की नही तो सपना।
—जो अपने पास है वही वस्तु काम आती है, अन्यथा वह सपने की तरह दुर्लभ है।
—दूसरो के पास की चीज अपने काम नहीं आती।

आपरी सी लापसी, पराई सी कुसकी। ४६३
अपनी सो लपसी, पराई सो घटिया।
–अपनी बुरी चीज भी बढ़िया और परायी अच्छी चीज भी घटिया।
–अपनी चीजों के प्रति अतिरेक ममत्व मनुष्य का सहज स्वभाव है।

आपरै केरड़ा रा दात कुण नीं जाणै। ४६४
अपने बछड़े के दात कौन नही जानता।
–अपने घर की बात किसी से छिपी नही रहती।
–मन मे तो सभी अपने मन की बात जानते है।

आपरै घर मे औ इज धोळी जवारो नीसरघो। ४६५
आपके घर मे यही सफेद जवारा निकला।
–होनहार व्यक्ति के लिए।
–सामान्य घर मे कोई प्रतापी या भाग्यशाली व्यक्ति पैदा हो तब।

आपरै नाक माथै कुण ई माखी नीं बैठण दे। ४६६
अपने नाक पर कोई भी मक्खी नही बैठने देता।
–हर व्यक्ति अपने मतलब में पूरा सतर्क है।
–कोई भी व्यक्ति अपनी आबरू पर ठेस नही लगने देता।
–किसी भी व्यक्ति को अपनी आलोचना पसद नही होती।

आपरै भाग वसै भगवान्यो। ४६७
अपने भाग बसे भगवाना।
–भगवाना = व्यक्ति विशेष। हर व्यक्ति अपने भाग्य पर ही जीता है।
–अपने अपने भाग्य के जोर पर ही हर मनुष्य अपना निर्वाह करता है। कोई किसी का भाग्य-विधाता नही।

आपरै रूप अर पराये धन रौ छेह कोनीं। ४६८
अपने रूप और पराये धन का पार नही।
–हर व्यक्ति को अपनी सुन्दरता और दूसरो की सपन्नता अधिक दिखलाई पडती है।
पाठा आपरौ रूप अर परायौ धन घणो दीसै।

आपरै लागै हीक मे अर दूजां रै लागै भींत में। ४६९
अपने लगे दिल पर और दूसरो के लगे दीवाल पर।
–मनुष्य दूसरो की पीडा का अनुभव नही कर पाता।
–मनुष्य को केवल अपने ही दर्द का अनुभव होता है।
–मनुष्य अपने प्रति तो जरूरत से ज्यादा सवेदनशील और दूसरो के प्रति एकदम निर्मम होता है।

आपरै हाथा आपरा कान नीं बींधीजै। ४७०
अपने हाथो अपने कान नही बेधे जा सकते।
–अपने हाथो से स्वय को पीडा नही पहुचाई जा सकती।
–एक दूसरे पर निर्भर रह कर ही मनुष्य का काम चलता है।
–पारस्परिक निर्भरता मनुष्य समाज का मूलभूत सिद्धान्त है।

आपरै हाथा पग में कवाड़ियौ वावै। ४७१
अपने हाथो पावो मे कुल्हाडी मारता है।
–जो व्यक्ति स्वय अपना अहित करे उसकी सुरक्षा कैसे हो!
–जिस व्यक्ति को अपने हिताहित का कतई ध्यान न हो।

आपरौ आदर आपरै हाथै। ४७२
अपना आदर अपने हाथ।
–हर व्यक्ति की आदर-प्रतिष्ठा सर्वथा उसके ही हाथ मे है।
–जो अपने हाथो स्वय को बदनाम करे भला उसकी प्रतिष्ठा क्योकर कायम रह सकती है।
पाठा आपरौ कुरब आपरै हाथ।

आपरौ ईमान आपरै सागै। ४७३
अपना ईमान अपने साथ।
–हर व्यक्ति की सचाई उसके साथ है।
–मनुष्य को किसी भी काम मे बेईमानी नही करनी चाहिए।

आपरौ कोढ़ राजी-बेराजी ओढ़। ४७४
अपना कोढ राजी-बेराजी ओढ।
–अपने कोढ को चाहे रो कर झेलो चाहे हसकर मृत्यु पर्यन्त झेलना तो होगा ही।
–अपने दुख को खुद ही सहन करना पडता है।
–हर व्यक्ति को अपने जीवन का भार स्वय उठाना है।

–आपरौ घर सूझै सौ कोसां। ४७५
–अपना घर सौ कोस से दिखता है।
–कही भी जाओ अपने घर की हैसियत स्वय की आखो से कभी ओझल नही हो पाती।
–घर से दूर रह कर भी मनुष्य अपने घर की हालत भूल नही पाता।

–अपने घर की हर कही चिंता वनी रहती है।

आपरौ घर हग भर, दूजा रौ घर थूकण रौ ई डर। ४७६
अपना घर हग हग भर, दूसरे का घर थूकने का ही डर।
–अपनी चीज का कोई कुछ भी करे, पर दूसरो की चीज को तो छूने का भी उसे अधिकार नही।
–अपनो के बीच आदमी पूरा खुल जाता है दूसरो के बीच सकोच के मारे सहम जाता है।

आपरौ छोडणौ नीं अर दूजा रौ देणौ नीं। ४७७
अपना छोडना नही और दूसरो का देना नही।
–अपनी दी हुई चीज छोडनी नहीं और दूसरा से ली हुई चीज देनी नही।
–नितात नाजायज अविचार।
–स्वार्थपरता की हद।

आपरौ टकौ टाड सौ, दूजै रौ टकौ टकूलड़ी। ४७८
अपना टका टाड-सा, दूसरे का टका टिकली।
–अपनी छोटी चीज भी वडी करके मानना और दूसरे की वडी चीज को नितात नगण्य समझना।
–अपनी चीज के प्रति वेइन्तहा लोभ और दूसरो की चीजो के प्रति तिरस्कार।
पाठा. आपरौ टकौ टकौ, दूजा रौ टकौ टकूलडी।

आपरौ पूत सपूत अर परायौ टींगर। ४७९
अपना पूत सपूत और पराया आवारा।
–हर मनुष्य की दृष्टि मे अपनी चीजो के प्रति काफी मोह और दूसरो की चीजों के प्रति उपेक्षा का भाव होता है।

आपरौ पूत सबसू वाल्हौ। ४८०
अपना पुत्र सबसे प्यारा।
–अपना पुत्र सबसे अधिक प्रिय होता है।

आपरौ पेट तौ कुत्ता ई भरै। ४८१
अपना पेट तो कुत्ते भी भरते हैं।
–केवल अपना जीवन निर्वाह ही मनुष्य के लिए श्रेयस्कर नही है।
–अपना पेट पालने के सिवाय मनुष्य का और ऊचा आदर्श होना चाहिए!
–केवल अपने पेट की चिंता करने वाला मनुष्य पशु के समान ही है।

आपरौ वळद हळवांणी सू नाथौ। ४८२
अपना बैल भाले से नाथो।
–अपनी चीज के साथ मनुष्य मनचाहा बरताव कर सकता है।
–अपनी चीज को कोई वर्बाद भी करे तो किसी दूसरे को उसे कुछ कहने का अधिकार नही।

आपरौ वाळियौ नैं पैलं रौ सुधारियौ। ४८३
अपना विगडा व दूसरे का सुधरा बराबर होता है।
–अपने हाथ का विगडा हुआ काम और दूसरे के हाथ का सुधरा हुआ काम दोनो बराबर होते है।
–किसी भी काम को अपने हाथ से चाहे वह विगड ही क्यो न जाय खुद सपन्न करना चाहिए।
–काम विगाड-विगाडकर ही आदमी दक्ष होता है।
–अपने हाथ से काम न करके दूसरो के द्वारा पूरा करवाने से कोई भी मनुष्य सदा ठोट ही रहेगा।
–किसी भी काम मे प्रवीण होने के लिए शुरुआत मे गलतिया करना जरूरी है।
पाठा. आपरौ विगाडियौ नैं परायौ सुधारियौ।

आपरौ ब्रह्म कंवै जिण मे फी नीं पड़ै। ४८४
अतरात्मा की आवाज मे कभी चूक नही होती।
–आत्मा की पुकार कभी गलत नही होती।
मनुष्य का वही काम सत्कर्म है जो उसकी आत्मा की आवाज से अनुप्रेरित हो।

आपरौ बिगाडया बिना दूजा रौ कोनीं सुधरै। ४८५
अपना विगाडे बिना दूसरो का सुधार नही हो सकता।
–दूसरो की भलाई करने के लिए त्याग करना पडता है।
–स्वय दुख उठा कर ही दूसरो को सुख पहुचाया जा सकता है।

आपरौ भलौ सै पिछाणै। ४८६
अपना भला सभी पहिचानते हैं।
–अपनी भलाई-बुराई का सबको बोध होता है।
–अपने भले बुरे की बात किसी को भी सिखाने की आवश्यकता नही।
पाठा: आपरौ भलौ सगळा चीतै।

आपरौ मन आपरा वस मे। ४८७
–अपना मन अपने वश मे।

–कोई कितना ही क्यो न उकसाये अपने मन पर नियन्त्रण रखना चाहिए।
–कोई-सा भी अकर्म सिखलाने के लिए दूसरे को दोषी नही ठहराया जा सकता।

आपरौ मन जागै। ४८८
अपना मन सजग है।
–किसी भली-बुरी बात का स्वय ही निर्णय करना चाहिए।
–प्रत्येक व्यक्ति का मन सजग प्रहरी है।

आपरौ मन है तौ म्हारौ काई धन है। ४८९
आपका मन है तो मेरा क्या धन है।
–किसी चीज पर आपका मन हो गया तो वह सहर्ष अर्पित है। आपकी स्वाहिश से बड़ी उस वस्तु की बिसात थोड़े ही है।
–किसी की इच्छा हो जाय तो वह चीज उसे अवश्य सौप देनी चाहिए।

आपरौ मरण, जुग हासौ। ४९०
अपनी मौत, दुनिया की मखौल।
–यह तमाशबीन दुनिया दूसरा के सकट पर हसती है।
–अपने दुख पर दुनिया म कोई सवेदना प्रकट नही करता।
–किसी भी कीमत पर अपना अहित मत होने दो, दुनिया सहानुभूति प्रकट करने की अपेक्षा मखौल उड़ाती है।
–जल पर नमक छिड़कना–ससार की यही वृत्ति है।

आपरौ माजनौ आपरै हाथ। ४९१
अपनी शोभा अपने हाथ।
–अपने भले बुरे की सम्पूर्ण जिम्मेवारी अपनी है।
–कोई चलती राह अपनी इज्जत गवाये तो भला दूसरा कौन उसकी हिफाजत कर सकता है।

आपरौ माथौ—सौ चोटी राखं तौ कुण बरजं। ४९२
अपना सिर—सौ चुटिया रख तो कौन मना करे।
–अपने व्यक्तिगत जीवन म मनुष्य पूर्ण रूप से स्वतन्त्र है।
–किसी दूसर की रुचि अरुचि से कोई भी व्यक्ति अनुबधित नही है।
–व्यक्ति के स्वच्छद आचरण पर किसी भी व्यक्ति की कोई धौस नही है।
पाठा म्हारौ माथौ—सौ चोटी राखू तो थू पालणियौ कुण?

आपरौ मारै छाँया राळै। ४९३
अपना मारे, छाया म डाले।
–घात करने के बाद भी अपने आत्मीय के मन मे कभी न कभी तो प्रेम उमडता ही है।
–आत्मीय द्वारा मिली हुई हानि से भी सतोष होता है।
–आत्मीय की जघन्य क्रूरता म भी कही न कही ममता का भाव होता है।
–प्राणघाती आत्मीयता के प्रति अपनत्व की मिथ्या आत्म-तुष्टि।

आपरौ मीठौ, खलका रौ खारौ। ४९४
अपना मीठा, दूसरा का कड़ुवा।
–अपनी वस्तु के प्रति ममत्व की सहज प्रवृत्ति।
–दूसरो के प्रति निर्णय करने म मनुष्य का विवेक खो जाता है।
–अपनी चीज की सभी प्रशसा करते हैं।

आपरौ राखं, पर परायौ चाखं। ४९५
अपना रखे और पराया चखे।
–अपनी वस्तु की सुरक्षा तथा परायी चीज को काम म लेने की दुष्प्रवृत्ति।
–जो व्यक्ति अपनी चीज को बचाये और दूसरो की चीज का उपयोग करे।
पाठा आपरौ राख अर परायौ चाख।

आपरौ सैण सौ कोसा ई नैडौ व्है। ४९६
अपना आत्मीय सौ कोस दूर रह कर भी पास होता है।
–अपरिचित व्यक्ति अत्यत पास रह कर भी काम नही आता और आत्मीय स्वजन दूर रहे तो भी वक्त पडने पर तुरत काम म आता है।
–घनिष्ठ व्यक्ति दूर भी रह तो पारस्परिक सद्भाव का विश्वास बना रहता है।

आपरौ सौ आपरौ, परायौ सौ परायौ। ४९७
अपना सो अपना, पराया सो पराया।
–अपना जाया कपूत भी अच्छा और गोद आया सपूत भी बुरा।
–अपना आखिर अपना ही है और पराया आखिर पराया ही है।

–पराये व्यक्ति केवल सुख के साथी हैं और अपना व्यक्ति दुख मे हाथ बटाता है

पाठ आपरो सो आपरो अवर विराणा लोग ।

आपरो हाथ जगन्नाथ । ४९८

अपना हाथ, जगन्नाथ ।

–अपने हाथ का बनाया हुआ भोजन अत्यत स्वादिष्ट लगता है ।

–सदैव अपने हाथ से काम करना ही श्रेयस्कर है ।

–जो व्यक्ति स्वय अपना काम सपन्न करता है वह मानो दुनिया का स्वामी है ।

–अपने हाथ से काम करने का सुख अपूर्व होता है ।

आप समान बळ नीं, मेघ समान जळ नीं । ४९९

अपने समान बल नही, मेघ समान जल नही ।

–अपना सामर्थ्य ही सर्वोपरि है क्योकि वही समय पर काम आता है ।

–अपनी शक्ति ही बादलो के जल की तरह निर्मल व प्रचुर है ।

–बरसात के पानी के सदृश आत्मबल भी असीम है ।

आप सू उबरै तो बाप नै देवै । ५००

अपने से बचे तो अब्बा को दे ।

–अपनी स्वार्थ-पूर्ति के बाद दूसरो का ध्यान ।

–अपने स्वार्थ के इर्द-गिर्द ही मनुष्य की सारी क्रियाए संचालित होती हैं ।

–व्यक्ति के अपने स्वार्थ ही मे उसका सर्वस्व समाहित है ।

–*मनुष्य नितात आत्मकेद्रित होता है ।*

आप सू करै जिकै रै बाप सू नीं टळणो । ५०१

अपने से करे उसके बाप से भी नही टलना ।

–अपने साथ बदमाशी करने वाले को किसी भी कीमत पर नही छोड़ना ।

–मौका लगते ही अपने साथ दुष्टता करने वाले के घर-वालो तक से बदला लेना चाहिए ।

सस्कृत : शठे शाठ्य समाचरेत् । शठ प्रति शठ कुर्यात् ।

आप सूं मीठी बाजरी, जिण सू खाया भूख भागै । ५०२

अपने से मीठी बाजरी, जिसे खाने पर भूख मिटती है ।

–जिस चीज से आदमी जीवित रहे वह श्रेष्ठ है ।

–जो समय पर काम आये वह अपने से बढ़कर है ।

–मनुष्य का अस्तित्व दूसरी चीजो पर ही पूर्णतया निर्भर करता है अन्यथा उसका जीवन असभव बन जाय ।

–पारस्परिक आदान प्रदान ही मानवीय समाज के अस्तित्व का मूलभूत आधार है ।

आपाधापी तडातड बीतै, जो मारै सो जीतै । ५०३

आपाधापी तडातड बीते, जो मारे सो जीते ।

–जीने के सघर्ष की आपाधापी मे जो पहल करता है, डट-कर मुकाबला करता है वही जीतता है ।

–*झगडे मे जो जायज नाजायज का ध्यान नही रखता उसकी* जीत होती है ।

–मारपीट मे जो सबसे पहिले कस कर वार करता है वह लाभ मे रहता है ।

आपो आपरी माखी संग उडावै । ५०४

अपनी-अपनी मक्खिया सभी उडाते हैं ।

–अपने शरीर पर बैठी मक्खियो को उडाने के लिए स्वत अनजाने ही हर व्यक्ति का हाथ उठ जाता है ।

–अपना भला-बुरा सोचने का हर व्यक्ति को अधिकार है ।

–अपने स्वार्थ का अनजाने ही हर व्यक्ति को ध्यान रहता है ।

पाठा आपरी माखी आपनै इज उडावणी पडै ।

आपरै मूडै री माखी आपरै हाथा ई उडावणी पडै ।

आब-आब करतो मर खूटो, सिराणै पड्यो पांणी ५०५

आब-आब करते मर गया, सिरहाने पडा पानी ।

सदर्भ-कथा : एक मुसलमान अपना देश छोड कर काबुल *फारसी सीखने के लिए गया । काफी अर्से के पश्चात्* वह फर्राटे से फारसी बोलना सीख गया । अपने देश वासियो की तुलना मे वह स्वय को श्रेष्ठ मानने लगा । उसका अहकार जागृत हुआ । अपनी विद्वता का दभ प्रदर्शित करने के लिए वह पुन स्वदेश मे लौटा । कोई समझे या न समझे वह बडे रौब से हरदम फारसी ही बोलता रहा । लोग न समझने पर भी उसकी विद्वता पर आश्चर्य प्रकट करते । एक दिन फारसी का वह धुरधर विद्वान बीमार पडा । घरवाले तीमारदारी मे लग गये । बीमारी निरतर बढती ही गई । उसे प्यास लगने पर वह 'आब-आब' चिल्लाता । पानी का घडा सिरहाने ही रखा था । घरवाले फारसी बोली की 'आब' का अर्थ समझ नहीं पाये । उधर विद्वान के लिए भी देशी भाषा मे समझाना शान के खिलाफ

था। गला सूखता रहा और वह पानी के लिए 'आव आव' पुकारता रहा। घरवाले विदेशी भाषा की अनभिज्ञता के कारण सिरहाने रखी मटकी से पानी तक नहीं पिला सके। आखिर विद्वान महाशय 'आव आव' करते ही मर गये।

–हर व्यक्ति के लिए अपनी मातृ भाषा ही पूर्णतया श्रेष्ठ व उपयोगी भाषा है।

–विदेशी भाषा का प्रयोग करने वाले दभी विद्वानो का अत मे यही दुष्परिणाम होता है।

–अपने समाज व अपनी धरती से कटी थोथी विद्या घातक होती है।

आबरू उज्योडी मोती वाळी आब है। ५०६

आबरू उडी हुई मोती वाली आभा है।

–*किसी व्यक्ति की आबरू और मोती का पानी उतर गया तो उतर ही गया।*

–प्रतिष्ठा को सदैव कायम रखना काफी दुश्वार है।

–एक बार खोई हुई प्रतिष्ठा वापिस नही लौटती।

आबरू लार उधार है। ५०७

आबरू के पीछे उधार है।

–समाज मे जिसकी साख प्रतिष्ठा होती है उसको उधार मिलता है।

–मानवीय समाज मे व्यक्ति का आचरण व प्रतिष्ठा ही सब कुछ है।

आबरू वाळा रै सौ धया। ५०८

आबरू वाले को हजार आफत।

–प्रतिष्ठा बनाये रखना सहज काम नहीं।

–प्रतिष्ठित व्यक्ति को सौ पहलुओ का ध्यान रखना पडता है। हर बात पर गभीरता से सोचना पडता है।

आबरू वाळा री जठी-तठी मौत। ५०९

आबरू वाले की हर तरफ मौत।

–बदनाम व्यक्ति का क्या कोई भी हलका काम करे तो एक बदनामी और सही। पर इज्जतदार आदमी को हर कदम पर सतर्क रहना पडता है। कोई जाने अनजाने ही भूल हुई और सब बटाढार।

आ बळद म्हनै मार। ५१०

आ बैल मुझे मार।

–जान बूझ कर आफत को निमन्त्रित करना।

–अपनी इच्छा से विपत्ति को गले लगाना।

–*अपने से शक्तिशाली को उत्तेजित कर अपना नुक्सान करने के लिए उकसाना।*

पाठा आ बळद म्हनै मार, सींग सू नी तो पूछ सू ई मार।

आभा री वीजळी, होळी री झळ। ५११

आकाश की बिजली, होली की ज्वाला।

–*नायिका के सौदर्य की उपमाए कि वह बिजली के समान चचल व दीप्तिवान है। होली की ज्वाला के समान उसका यौवन प्रज्वलित हो रहा है।*

आभा रै कारी कुण सू लागै। ५१२

आकाश के पैबद कौन लगाये।

–*असभव कार्य को करने की किसी भी व्यक्ति मे क्षमता नही।*

–आकाश के समान ऊचे व्यक्ति का भला करने मे कोई समर्थ नही।

–बडे व्यक्ति पर अकस्मात् कोई विपदा आ पडे तो हजार छोटे व्यक्ति मिल कर भी उसकी मदद नही कर सकते।

आभै चढ्यौ चाद सगळा नै दीसै। ५१३

गगन पर चमकता चाद सभी को दिखता है।

–किसी व्यक्ति के वैभव, ऐश्वर्य तथा प्रसिद्धि पर सबकी दृष्टि अपने आप पड जाती है।

–आदर्श व्यक्तित्व चाद की तरह शोभायमान होता है।

आभै थूक्यां मू डा माथै आवै। ५१४

आकाश पर थूका मुह पर ही गिरता है।

देखिये क स २३-

आभै पटकी अर जमीं झाली। ५१५

आकाश ने गिराई और धरती ने आश्रय दिया।

–कोई बडा व्यक्ति ठुकराये और कोई गरीब आदमी सहारा दे तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

आभै सू पड्यौ अर धरती झाली कोनीं। ५१६

आकाश से गिरा और धरती ने भी आश्रय नही दिया।

देखिये क स ३८

आयगी सेर्ळै नै घाटी। ५१७

आ गई सियार की मौत।

–दुर्योग स्वत प्राणघाती राह पर खीच लाता है।

–अप्रत्याशित सकट ।

आव सारै उपाव । ५१८

आयु के पीछे उपाय ।

–उम्र बाकी है तो सारे उपाय ठीक हैं, अन्यथा मौत का किसी भी वैद्य के पास उपचार नही ।

–आयु शेष है तो कोई औषधि सार्थक है तथा मृत्यु का योग है तो कोई भी औषधि कारगर नही हो सकती ।

–जहा मनुष्य विवश है, वहा उसका कुछ भी जोर नही चलता ।

आया री समाई पण गिया री सनाई कोनीं । ५१९

मिले की बरदाश्त हो गई पर खोये की बरदाश्त नही हुई ।

–मनुष्य लाभ को तो खुशी स्वीकार कर लेता है पर हानि को आसानी से सहन नही कर सकता ।

–मनुष्य को चाहिए कि हानि और लाभ दोनों को सहज भाव से अगीकार करे ।

आयां गियां ई सरै । ५२०

आने जाने से ही सरता है ।

–समाज में रह कर हर किसी से सपर्क या सबध रखना पड़ता है ।

–किसी भी मनुष्य का अकेले काम पूरा नही पड़ता । आपसी मेल-जोल अनिवार्य है ।

आया था हर भजण कू , ओटण लग्या कपास । ५२१

आये थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास ।

–जिस काम को करना चाहिए उसे छोड़ कर दूसरे काम मे उलझ जाना ।

–जीवन की मजबूरी जो काम न कराये वह थोड़ा है ।

आया सो तो जांणा, राजा रंक फकीर । ५२२

आये सो तो जाने, राजा रक फकीर ।

–हर मनुष्य का जीवन नश्वर है चाहे वह सत्ताधारी हो, चाहे भिखारी हो और चाहे सन्यासी हो ।

–जीवन मे अगणित असमानताए हैं पर मृत्यु के लिए सभी समान हैं ।

आयोड़ो अोसर नीं चूकणो । ५२३

आया हुआ अवसर नही चूकना चाहिए ।

–हर किसी व्यक्ति को अवसर का लाभ उठाना चाहिए ।

–आया हुआ मौका चूक जाने से वह दुबारा प्राप्त नही होता ।

आयो चेत निवायो, फूड़ां मैल गंवायो ५२४

आया चैत्र निवाया, फूहड ने मैल गवाया ।

–सर्दियों की ठड के कारण फूहड़ स्त्रियों की देह पर जमा मैल चैत्र की सुहानी मौसम आते ही स्वतः साफ होने लगता है । मौसम की अनुकूलता के कारण फूहड़ स्त्री भी स्नान करने के लिए तैयार हो जाती है ।

–जो व्यक्ति अधिकाशतया गंदा रहता हो ।

–वक्त का लाभ हर व्यक्ति को अनजाने ही मिल जाता है ।

आयो रात, गियो प्रभात । ५२५

आया रात, गया प्रभात ।

–जो व्यक्ति देरी से आये और वापिस जल्दी चला जाये ।

–अपना स्वार्थ पूरा करके जो व्यक्ति तुरत लौट जाय ।

आयो सो जासी । ५२६

आया सो जायेगा ।

–जो जन्मा वह मरेगा ।

–यह ससार नश्वर है ।

–अस्तित्व के साथ विनाश अवश्यभावी है ।

आरांम घड़ी रौ ई चोखौ । ५२७

आराम घड़ी भर का ही अच्छा ।

–आराम का जब भी मौका आये उसके सुख का अनुभव कर लेना चाहिए ।

–आखिर यह जिंदगी आराम पाने के लिए तो है ही ।

पाठा : सुख रौ साव तौ पलक रौ ई सावळ ।

आवौ भाई जीया, अबै घोट्या अर पीया । ५२८

आो रे भाई जीयो, अब घोटो और पीयो ।

संदर्भ-कथा : जीया नाम का एक भगेड़ी था । भांग के नशे मे तो पूरी अलमस्ती थी, पर उसे प्रति-दिन बारीक घोंटना काफी परेशानी का काम था । कुछ चेले-चाटी बनाये जाय तो शायद यह परेशानी मिट सकती है । यह सोच कर उसने दो तीन मित्रों को भग का चस्का लगाया । शुरू शुरू मे वह स्वय अपने हाथों मे घोंटने की मेहनत करता और उन्हें भग पिलाता । मित्रगण वक्त पर आ जाते । वे जीया को आवाज लगाते । और जीया आवाज सुनते ही उनके लिए भग का इतजाम कर देता । जब जीया को

अच्छी तरह मालूम हो गया कि अब वे भग के बिलकुल आदी हो चुके हैं तो वह थोडा टालम-टोल भी करने लगा। नशे की दरी से मित्रा का शरीर टूटने-सा लगता। एक दिन अल्ल सवेरे वक्त से काफी पहिले ही मित्रा ने जीया के घर आकर आवाज दी—जीयो, आ भाई जीयो। तब जीया ने बारी स मुह निकाल कर कहा—अब घोटो और पीयो।

मित्रो ने एक स्वर म कहा—घोटने के लिए हमारी मनाई थोडे ही है। हम भी पीयेंगे, तुम्ह भी छक कर पिलायगे।

जीया ने दरवाजा खोलते हुए कहा—आपकी मेहरबानी है। दोस्त ही तो दोस्त के काम आते है। मैंने भी तो इतने दिन तुम्हारी सेवा की है।

मित्रो ने मुस्कराकर कहा—अब हमे गुरु की जीवन भर सेवा करनी पडेगी।

इस तरह जीया नामक भगेडी की योजना पूरी हुई।

—अपने मतलब से ही कोई व्यक्ति शुरुआत म मित्रा को ऐश कराता है।
—नशे का चस्का लग जाय तो फिर वह आसानी से छूटता नही। शुरुआत म तो नशेबाज नशे को पकडता है, फिर नशा उस जकड लेता है।

आ रे म्हारा घर रा धणी, जटा थोडी अर जूवा घणी।
आ रे मेरे आला भरतार जटा थोडी और जूए अपार।
—बेढंगे गलीज व्यक्ति के लिए जिसका रहन सहन निहायत गदा व अस्त व्यस्त हो।
—जो मनुष्य अकमण्य, निठल्ला और अव्वल दर्जे का अहदी हो।

आ रे म्हारा घर रा धणी, मारी थोडी अर घींसी घणी।
आ रे मेरे आला भरतार मारी कम व घसीटी अपार।
—विचित्र प्रकार के असामान्य क्रूर व्यक्ति के लिए जो अपनी स्त्री की पिटाई करते समय उसे मारे कम व घसीटे ज्यादा। ५३१
—जो मनुष्य बेहूदा हरकतें करे।

आ रे म्हारा सपट पाट, म्हैं थनै चाटू थू म्हनै चाट।
आ रे मेरे सम्पट पाट, मैं तुझे चाट तू मुझे चाट। ५३२
—निहायत गरीबी व असहायता की मजबूरी।
—अकर्मण्यता व निठल्लेपन से दैन्यता के सिवाय कुछ भी हासिल नही हो सकता।
—दो निकम्मे मनुष्यो का समागम एकदम व्यर्थ होता है।

आ रे राड्या राड करा, ठाली बैठा काई करा। ५३३
आ रे फसादी फसाद करें, निठल्ले बैठे क्या करें।
—झगडा फसाद करने वाले व्यक्ति को बिना झगडा किये चैन कहा।
—निठल्ले व्यक्ति को काम के अभाव म झगडा करने की ही सूझती है।
—झगडालू व्यक्ति बिना बात बेकार झगडा मोल ले लेता है।

आ रे सीरी सीर करा, सीर की रसोई करा। ५३४
आटा घी चीणी तेरा, फूक बसदर पानी मेरा।
आ रे साथी साझा करें साझे म रसोई करें।
आटा घी शक्कर तेरा, फूक आग और पानी मेरा।
—साझे के काम म निहायत बेईमानी बरतने वाले व्यक्ति के लिए जिसे अपने स्वार्थ के अधेपन म दूसरे के हित का जाने-अनजाने कोई ध्यान नही रहता।
—निपट स्वार्थी मनुष्य का चारित्रिक लक्षण।

आल रै भाव रो काई बेरो? ५३५
लौकी के भाव का क्या पता?
—जिस काम से वास्ता ही न पड उसकी जानकारी कैसे हो!
—जिस व्यक्ति का जो काम होता है उसम ही उसकी दखल होती है।

आल पडै तो खेलू-खाऊ काळ पडया टळ जाऊ। ५३६
वर्षा हो तो खेलू खाऊ, अकाल पड भग जाऊ।
—जो व्यक्ति सुख के दिनो मे साथ ऐश करे और दुख के दिनो मे साथ छोडकर भग जाय।

आळ करै कपाळ टीचियो पड साम्हो लिलाड। ५३७
जो झगडा टटा करेगा वह ललाट पर चोट सहेगा।
—लडाई मे तो सिर ही फूटता है।
—बुरे काम का परिणाम भी बुरा होता है।

आळस दाळद रो मूळ। ५३८
आलस्य दारिद्र्य की जड है।
—आलसी व्यक्ति कभी सपन्न नही हो सकता।
—अकमण्य मनुष्य सदा गरीब ही रहता है।

आळ्या-टोळ्या करचा काम नीं चाले ।   ५३९

टालम-टोल करने से काम नही चलता ।

–टरकाने से काम का निपटारा नही होता ।

–कोई भी काम आखिर करने से पूरा होता है हमेशा आ टरकाते रहने से नही ।

–जीवन के प्रति टालम-टोल का रुख रखने से जीवन बिगडता है ।

आळा-आळा, दे निवाळा ।   ५४०

ए भैय्या आले, तू मुझे दे निवाले ।

सदर्भ-कथा . एक राजा को विभिन्न औरतो के साथ सहवास करने का अजीब ही शौक था । चाहे वह औरत किसी भी निम्न वर्ग की क्यो न हो । एक बार एक भिखारिन राज दरबार के सामने से गुजरी तो राजा की नजर उस पर पड गई । राजा की आखो को सहसा विश्वास नही हुआ कि एक भिखारिन भी क्या इतनी खूबसूरत हो सकती है ! यौवन व सौदर्य उसके फटे कपडो से चादनी की तरह छिटक रहा था । कीचड मे कमल होना सभव है तो भिखारिन की देह से रूप का ऐसा निखार भी सभव है ! अल्ल सवेरे भिखारिन की मुराद इस रूप मे पूरी होगी उस सपने मे भी इस बात की कल्पना नही थी ।

राजा के महल मे पाव रखते ही कई दासिया नई रानी की तिमारदारी मे हाथ जोड कर खडी हो गईं । बचपन से अब तक सभी के सामने हाथ पसार कर याचना करने वाली भिखारिन क्योकर दासियो को आज्ञा प्रदान कर पाती । सहमी-सहमी भयभीत-सी वे दासिया ज्यो कहती गईं वह चुपचाप उसके लिए तैयार हो गई । कुछ ही देर मे इत्र फुलेल्ल से स्नान करके उसने नया साज-सिंगार किया तो उसे सहसा बडी शर्म महसूस हुई । अब तक के जीवन से कहीं दूर का भी इस जीवन का कोई सबध नही था । वह यही समझी कि एक भिखारिन को बिना मागे राजा की इच्छा से अपने आप मिल गया है । पर इतने ऐश्वर्य को भला वह क्योकर झेल सकेगी ! पुराने जीवन के निरतर अभ्यास की अपनी शक्ति भी कम नही थी । बिना मागे भी क्या किसी को इतना मिल सकता है, भिखारिन को सहसा इस बात पर विश्वास ही नही हुआ । इस जीवन मे क्या वह सचमुच रानी बन सकेगी ?

भिखारिन का परम सौभाग्य कि अपने पावो चल कर राजा उसके रग-महल मे आया । नये वेश मे वह इस तरह लग रही थी जैसे चाद को ढके हुए बादल एक दम हट गये हो । राजा इस कमल की सुवास और उसके सौदर्य से उन्मत्त हो उठा । ऐसा आनन्द तो उसे किसी औरत से नही मिला । जैसे प्रकृति ही औरत का रूप धर कर सहमी सहमी उसके सहवास मे खो गई हो ! राजा की बाहो मे कसी भिखारिन जैसे जागृत आखो कोई विचित्र सपना देख रही हो !

राजा ने खुश होकर उससे मागने के लिए पूछा तो उसे फिर चेत हुआ कि, हा— है तो वह भिखारिन ही । इसीलिए राजा ने मागने की बात पूछी । उसके होठो से अनजाने ही निकल पडा — कल दोपहार तक इस रग-महल मे चारो तरफ ताक ही ताक बनवा दीजिये ।

राजा ने रानी के इस भोलेपन पर खुश होकर अपने गले का नवलखा हार भेट कर दिया । शायद यह हार भी उस विचित्र सपने ही की कोई विश्रृखलित कडी हो ।

राजा की आज्ञा के बाद काम सपन्न होने मे क्या देरी ! देखते-देखते मेमारो ने रग महल मे ताक ही ताक बना डाले । अब वह अपने वास्तविक जीवन मे सास ले सकेगी । बिना मागा हुआ भोजन उसके पेट मे पचना तक सभव नही था । दरवाजा बद करके वह सोने के थाल मे सजे हुए भोजन को सभी ताको मे थोडा-थोडा रख देती । फिर भिखारिन की तरह याचना भरे स्वर मे हाथ पसार कर कहती—आळा-आळा, दे निवाळा !

इस तरह भीख मागती हुई वह एक एक टुकडा निकाल कर ताक से खाती और अपना पेट भरती । रग-महल के सपनो से हट कर यही तो उसका यथार्थ जीवन था । बरसो से मागने की बान भला आसानी से क्योकर छूटती !

और राजा उसके भोलेपन पर खुश होकर कुछ न कुछ उपहार दे ही देता ।

–पिछले जीवन का ढर्रा आसानी से छूटता नहीं ।

–अप्रत्याशित सुयोग से कोई हीन व्यक्ति सहसा बडा बन जाय तो वह अपने सस्कार छोड नही पाता ।

–आदत की मजबूरी भी प्रकृति की ताकत से कम नही

होती।

आळी चामडी आक पावै। ५४१
कच्ची चमडी म आक पिलाना।
—आक का दूध जहर की नाईं चढता है। रिसती चमडी पर आक का दूध लग जाय तो देह म आग-आग-सी फूट जाती है। जो व्यक्ति बहुत ज्याद कष्ट देता हो उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

आला बचै नीं आप सू, सूखा बचै नीं किणी रै बाप सू।
गीले न बचे आपसे, सूखे न बचे किसी के बाप से। ५४२
—हाथ की लिखावट ऐसी कि जब तक अक्षर गीले रह तो स्वय स नही पढी जा सकती और जब अक्षर सूख जाय तो फिर किसी का बाप भी उस नही पढ सकता।
—जिस व्यक्ति का काम अत्यत बेतरतीब या अस्त-व्यस्त हो।
—अपने द्वारा किया हुआ काम स्वय अपनी ही समझ मे न आये।

आला सूखा भेळा ई बळै। ५४३
गीले सूखे साथ ही जलते है।
—आग की ज्वाला म सब-कुछ जलता है।
—अच्छी बुरी सब चीज काम मे आती है।
—भले बुरे की कोई पहिचान नही, सबके साथ एक-सा व्यवहार।
—दोषी के साथ निर्दोषियो को भी वही एक-सा दड।
—काल के आगे किसी की नही चलती—छोटे बड सभी को वह अपनी लपेट म ले लेता है।
पाठा आला सूखा सै बळै।

आली लकडी वाळै ज्यू वळीजै। ५४४
गीली लकडी जैसी चाहे वैसी मुड सकती है।
—बच्चे को जिस रास्ते पर मोडना चाहे मुड सकता है।
—बचपन मे हर बात सीखी जा सकती है।
—सीधे आदमी से जो चाहे वह करवा लीजिये।
—जिसके अपने कोई दृढ विचार नही वह हर किसी की बात मान लेता है।

आवता रा भाई, आवता रा जवाई। ५४५
आते हुआ के भाई, जाते हुओं के जमाई।
—जो व्यक्ति स्नेह से खिंचा अपने घर आता है, उसके साथ तो हम भी भाई के समान व्यवहार करते हैं और जो व्यक्ति अपने अभिमान म घर से चलने की हेकडी दिखाता है, उसके तो हम भी दामाद है, दुगुनी अक्खड दिखलायेंगे।
—सज्जन के साथ सज्जनता का व्यवहार और दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार अपेक्षित है।
—जो व्यक्ति किसी के रौब स न दबे।

आवता नीं लाज्या तौ जावता क्यू लाजौ। ५४६
आते हुए शर्म नही आई तो जाते हुए क्या शर्मिदा होना।
—वेश्या के घर आने म लज्जित नही हुए तो फिर जाते हुए क्या सिर झुकाते हो।
—बुरा भला जो भी काम करता हो खुलकर करो।
—अशोभनीय काम को करने मे झिझक नही की तो फिर उसके प्रकट होने पर कैसा सकोच।
—बुरे काम को करने से पहिले खूब सोच विचार कर लेना चाहिए।

आवती बहू अर जलमतौ पूत। ५४७
बहू का आगमन और पुत्र का ज म सबको अच्छा लगता है।
—शुरुआत म ही किसी भी व्यक्ति के स्वभ व का पता नही चलता, वक्त गुजरने के बाद उसकी सही पहिचान होती है।
—नई बात सभी को अच्छी लगती है।
—किसी मनुष्य की परख तो बरतने के बाद ही होती है।

आवती रौ नाव सेजा अर जावती रौ नाव मुगता। ५४८
आती का नाम सहेजा और जाती का नाम मुक्ति।
—जवानी आती है तो उसे सहेजा-सवारा जाता है वह सेज की रगरेलियो के लिए आमन्त्रित है पर उसके समाप्त होने पर सब रग रेलियो व क्रीडाओ से मुक्ति मिल जाती है।
—मनुष्य इस दुनिया मे जन्म लेकर आता है तो उसे जीवन को समग्र रूप से सहन करना पडता है जब वह इस ससार से चला जाता है तो वह समस्त समस्याओ से मुक्त हो जाता है।
—कोई भी वस्तु अपने प्रारभिक काल और समाप्ति के समय एक सी नही रहती।

आव बाई हरखा, अपां बिन्हे सरिखा। ५४९
आ ए बाई हरखी, अपन दोनो सरीखी।
मिलाइये क स २२० व २२३

आवै न जावै हू लाडै री भूवा । ५५०
आये न जाये मैं दूल्हे की बूआ ।
–किसी काम म मनचाही पचायती करना ।
–जबरदस्ती की दखलदाजी करना ।
–हर बात म अपनी टाग अडाना ।
–मान न मान मैं तेरा मेहमान ।

आवौ तौ आपरौ घर है, जावौ तौ मारग है । ५५१
आये तो आपका घर है, जाये तो यह रास्ता है ।
–कोई प्रम-पूर्वक रहना चाहे तो स्वागत है । सब कुछ हाजिर है । दिल म जगह है । यथाशक्ति पूरा सत्कार हागा । और कोई उपेक्षा स जाना चाहे तो उसकी रच मात्र भी परवाह नही । सीधा रास्ता है, जब चाहे लौट जाय ।
–प्रेमी को अभिनदन और दभी को दुत्कार ।
–जो व्यक्ति जैसा है उसका उसी के अनुरूप आदर सत्कार होना चाहिए ।

आवौ भाई भूरा, लेखा पूरा । ५५२
आ रे भाई भूरा, लेखा पूरा ।
–भूरा=व्यक्ति विशेष । जब किसी का कोई लना-देना न रहे और हिसाब किताब एक दम साफ हो ।
–लाभ की आशा म कोई काम उत्साह से शुरू किया जाय और अत म कोई लाभ या हानि न हो, बिलकुल बराबर मामला रहे तब यह कहावत प्रयोग म ली जाती है ।
–अब तक के सपक म दोनो परस्पर एक दूसरे के काम आते रहे, किसी का किसी पर भी कोई अहसान नही ।

आवौ वरण अठारह ५५३
आइय वर्ण अठारह ।
–जहा छूआछूत व ऊच नीच का कोई ध्यान नही रखा जाय ।
–जहा पूरी मनमानी व पूरी अव्यवस्था हो ।
–जहा सभी को सभी प्रकार की छूट हो ।

आस-आस मे प्राण सिधाया । ५५४
आस-आस मे प्राण सिधाय ।
–सुख की आशा आशा म ही प्राण निकल गय, मन की कोई भी आकाक्षा पूरी नही हुई ।
–नित्य नई आशाआ म उलझ कर ही जीवन बीत जाता है ।

आसडिया ई जीवणो गाया ग्याभणिया । ५५५
गाभिन गाय की तरह यह आशा भरा जीवन ।
–न मालूम गाभिन गाय बछडा लायेगी या बछडी उसी प्रकार जीवन के गर्भ मे भी न जान क्या छिपा है—कुछ पता नही ! नित्य प्रति अदृष्ट की आशा करते करत ही जीवन बिताना होगा ।

आसण मोटो के भगती । ५५६
आसन बडा या भक्ति ।
–आसन की प्रतिष्ठा बडी है या भक्ति का महात्म्य बडा है ।
–नाम बडा है या आचरण बडा है ।
–पद बडा है या कत्तव्य बडा है ।

आस पराई जो करै, हुता ई मर जाय । ५५७
आस परायी जो करे, होते ही मर जाय ।
–दूसरो की आशा पर जीवित रहने वाल व्यक्ति के जीवन को धिक्कार है । उसे जन्म के साथ ही मर जाना चाहिए ।
–अपने बूते पर जीवन निर्वाह करना ही सार्थक व श्रेयस्कर है ।
–समाज म स्वावलम्बी मनुष्य ही समादृत होता है ।

आस रै थाभै असमान टिक्योडौ । ५५८
आशा के खभो पर आकाश खडा ।
–मनुष्य के लिए आशा से बडा कोई सबल नही ।
–असहाय के लिए आशा ही सबसे बडी सपत्ति है ।
–किसी भी दुख म मनुष्य को आशा नही छोडनी चाहिए ।

आस रै बळ बेल ऊची चढै । ५५९
सहारा पाकर बेल ऊची चढती है ।
–कमजोर को सहारा मिले तो वह ऊपर उठ सकता है ।
–वक्त पर किसी का सहारा मिल जाय तो कोई भी व्यक्ति पावा पर खडा हो सकता है ।
–निर्बल व्यक्ति को हमशा बलशाली के सहारे की आवश्यकता होती है ।
पाठा आसरै बेल ऊची चढै ।

आसगाय ढेढ गाव बाळै । ५६०
समर्थ चमार गाव जलाय ।
–तुच्छ व्यक्ति का सामर्थ्य बढ जाय तो वह घातक सिद्ध होता है ।
–ओछा व्यक्ति किसी समर्थ का सहारा पाकर ज्यादा दुष्ट

हो जाता है।
—हीन व्यक्ति सयोग से बडा हो जाय तो उसके द्वारा विनाश अवश्यभावी है।

आसा अमर धन। ५६१
आशा अमर धन।
—आशा की सपत्ति कभी विनष्ट नही होती।
—आशा से बडा अमूल्य धन और कुछ भी नही।
—आशा के लिए कुछ भी कार्य असमव नही।

आसा अमर है। ५६२
आशा अमर है।
—मनुष्य के मन से आशा कभी नष्ट नही होती।
—सिवाय आशा के ससार मे सब कुछ नश्वर है।

आसा ई आसा में मिनख जीवै। ५६३
आशा ही आशा मे मनुष्य जीता है।
—आशा न हो तो मानवीय जीवन का आधार ही समाप्त हो जाय।
—आशा मनुष्य के समस्त जीवन की सचालन-शक्ति है।
—हर मनुष्य के लिए आशा का सहारा सबसे बडा सहारा है।
पाठा आसा रै पाण मिनख जीवै।

आसा ज्या ई वासा। ५६४
आशा वही निवास।
—आशा है तब तक निवास है।
—आसा न हो तो सर्वस्व उजड जाय।
—आशा मानवीय विकास की सर्वोच्च प्रेरणा है।
पाठा आसा जठै ई वासा।

आसा भगवान रा वासा। ५६५
आशा मे भगवान का निवास।
—आशा मे ही परमेश्वर का अस्तित्व है।
—आशा के पवित्र मदिर म भगवान प्रतिष्ठित है।

आसा रौ मरै, निरासा रौ जीवै। ५६६
आशा का मरे, निराशा का जीये।
—कोई व्यक्ति किसी से आशा रखे और वह विफल हो जाय तो आशा रखने वाला हताश हो जाता है। इसके विपरीत जो किसी से आशा ही न रखे तो उसका मन कभी बुझता नही।
—प्रत्याशा रखने वाला दुख पाता है और प्रत्याशा नही रखने वाला सुखी रहता है।
—मनुष्य मनुष्य से आशा रखे तो वह मरे समान है।

आ सेवा इण इज हेवा। ५६७
यह सेवा इसी योग्य है।
—यह व्यक्ति इसी माजने का है।
—यह व्यक्ति इसी बरताव के काबिल है।
—किसी व्यक्ति के आचरण के अनुरूप ही उसके साथ वैसा व्यवहार होना चाहिए।

आसोजा रा तड़का तावड़ा, जोगी हुयग्या जाट। ५६८
आश्विन की विकट धूप के मारे जाट जोगी हो गये।
—कडी मेहनत से हर कोई व्यक्ति बचना चाहता है।
—पसीना बहा कर कमाई करने की अपेक्षा सन्यासी का बाना आरामप्रद है।
—अथक मेहनत की करारी मार के सामने हर व्यक्ति टिक नही सकता।

आहार मारै के भार मारै। ५६९
आहार मारे या भार मारे।
मिलाइये क. स. २९५
—मनुष्य के लिए या तो ज्यादा खाना नुक्सान करता है या ज्यादा भार उठाना।
पाठा 'अकल हीण के तौ खाय मरै के उचाय मरै।

आहारे विवहारे लज्जा न कारै। ५७०
आहार तथा व्यवहार मे लज्जा नही करनी चाहिए।
—किसी के भी यहा भोजन करते समय या किसी से कोई लेन-देन करते समय किसी प्रकार का सकोच नही रखना चहिए।
—आपसी लेन-देन के व्यवहार मे सारी बातें पहिले से ही स्पष्ट हो जानी चाहिए।
चाणक्य नीति : आहारे व्यवहारे च त्यक्त लज्जा सुखी भवेत्।

आख अदीठ परबत ओलै। ५७१
आख से ओझल, पर्वत ओट।
—कोई भी व्यक्ति जब तक आखो के सामने रहता है, तब तक ही उसका ध्यान रहता है। आखो से ओझल होते ही जैसे वह पहाड की ओट हो गया, जिसके आर-पार

देख सकना सभव नही ।
—दिखावटी प्रेम दृष्टि की सीमा के परे नष्ट हो जाता है ।
—आपसी सपर्क से ही आत्मीयता कायम रहती है ।

आ इज आख्या चौमासौ कीकर कटसी ? ५७२
इन्ही आखो से वर्षा-ऋतु क्योकर कटेगी ?
—किसी व्यक्ति को जब सामने रखी हुई वस्तु भी दिखलाई न दे तब यह कहावत प्रयुक्त होती है कि इन आखो के भरोसे वर्षा की घनघोर भयावह रात क्योकर कटेगी !
—अकिंचन शक्ति से विकट परिस्थितियो का सामना नही किया जा सकता ।

आख कान मे च्यार आगळ रौ आतरौ । ५७३
आख कान मे चार अगुल का अतर ।
—आख से देखी हुई बात म और कान से सुनी हुई बात मे बडा फर्क है । कान से सुनी हुई बात झूठी हो सकती है पर आख से देखी बात झूठी नही हो सकती ।
—बिना देखे सुनी-सुनाई बात पर विश्वास नही करना चाहिए
—कान की अपेक्षा आख ज्यादा विश्वसनीय है ।
पाठा आख कान मे चार आगळ री छेती ।

आख की सरम अर बात को भरम खुस्या पछै के है ? ५७४
आख की शर्म और बात का भ्रम मिटने के बाद फिर क्या है ?
—आख की शर्म मिट जाने के बाद कोई भी व्यक्ति किसी काम का नही रहता । इसी प्रकार किसी बात का भ्रम मिट जाय तो उस बात म कोई मजा नही रहता ।
—बडो के प्रति श्रद्धा मिटने से अनुशासन समाप्त हो जाता है । और किसी बात का रहस्य प्रकट हो जाय तो जिज्ञासा का समूचा आनद ही मिट जाता है ।

आख गई तौ जहांन गई । ५७५
आख गई तो जहान गया ।
—आखो की रोशनी नष्ट होने पर प्रकृति व ससार की समस्त श्री, शोभा, छवि तथा नानाविध सौन्दर्य की छटा लुप्त हो जाती है ।
—मनुष्य की देह मे आखो का सर्वोपरि महत्त्व है ।
पाठा . आख गई तौ ससार गयौ , कान गया हुकार गयौ ।

आख भपी अर तड़कौ । ५७६
आख लगी और सवेरा ।
—रात को नीद लेने के पश्चात् सवेरे आख खुलने पर नया सूर्योदय । सोते हुए नीद म यह तक भी पता नही चलता कि कितना समय गुजरा । ऐसा लगता है कि पलक झपते ही रात ढल गई और जीवन का एक नया सूर्योदय उदय हुआ ।
—समय बीतते देर नही लगती ।
—रात की तरह एक दिन पलक झपते ही यह जीवन भी समाप्त हो जायगा ।
—दुखी व्यक्ति को सान्त्वना देने के लिए कि विपत्ति का अधियारा बीतते भी कोई ज्यादा समय नही लगता ।
—परिवर्तन किसी की प्रतीक्षा नही करता ।

आख न दीदा काढ़ै कसीदा । ५७७
आख न दीदा काढे कशीदा ।
—जब कोई अक्षम व्यक्ति काम करने की अत्यधिक उत्सुकता प्रकट करे ।
—क्षमता से अधिक हौसला बधारना ।
—पर्याप्त साधन के बिना कार्य पूरा नही हो सकता ।

आख फूटणी व्है तौ घर रा वळींडा सू ई फूट जावै । ५७८
आख फूटनी हो तो अपनी झोपडी के डडे से ही फूट जाय ।
—दुर्योग घटित होना है तो अपने आत्मीय भी विमुख हो जाते है ।
—बुरे दिनो मे अपने ही हाथो अपना नुक्सान हो जाता है । दुर्योग का तो केवल बहाना भर चाहिए ।
—बुरे वक्त शरीर के कपडे भी साथ छोड देते हैं ।
पाठा : आख फूटणी व्है तौ घर रा डाडा सू ई फूट जावै ।

आख फूटी पीड मिटी । ५७९
आख फूटी और दर्द मिटा ।
—कल्याणकारी चीज से भी कष्ट पैदा होने लगे तो उस चीज का नष्ट होना ही श्रेयस्कर है ।
—नुकसान तो हुआ पर आफत टली ।
—नित्य प्रति का झमट या बखेडा करने वाली वस्तु से छुटकारा मिलने पर आत्म-तुष्टि के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

आख मे घालियोड़ौ ई नीं खटकै । ५८०
आख मे डाला हुआ भी न खटके ।
—निहायत नेक व सज्जन व्यक्ति के लिए यह कहावत प्रयुक्त

होती है कि जिसके हाथों स्वप्न मे भी हानि सभव नही।
–जिसके द्वारा जाने अनजाने कोई अडचन पैदा न हो।
पाठा ' आख्या मार्थं वधियोडो ई खटकै कोनी।

आख मे पड्यौ तुस, औ ई लाधौ मिस। ५८१
आख म तिनका पडा अनजाना, अच्छा मिला बहाना।
–अकर्मण्य व्यक्ति को तो काम न करने का केवल बहाना भर मिलना चाहिए।
–निठल्ला व्यक्ति काम न करने का कोई न कोई बहाना निकाल ही लेता है।
पाठा आख मे पड्यौ तुस, काणती नै लाधौ मिस।

आख रा आधा नै गांठ रा पूरा। ५८२
आख के अधे और गाठ के पूरे।
–गाठ म पैसा तो खूब पर समझ का पूरा घाटा।
–ऐसा धनी व्यक्ति जिसके पास सपत्ति काफी हो, किन्तु जिसे मूर्ख बना कर आसानी से रुपया पैसा हथियाया जा सके।
–पैसा होने मात्र से ही किसी व्यक्ति का बुद्धिमान होना अनिवार्य नही।

आंख रै परवाण तौ फूलौ पडै ई कोनीं। ५८३
आख के अनुपात स फूली नही पडती।
–आख छोटी है तो उसके अनुपात म फूली, फोडा या घाव छोटा ही पडे यह जरूरी नही। पूरी की पूरी आख मे फोडा हो सकता है।
–विपत्ति या दुख को नियन्त्रित करना मनुष्य के वश की बात नही।
–मनुष्य की इच्छा मात्र से परिस्थितिया वश म नही आती।
–इसके विपरीत सदर्भ म भी यह कहावत प्रयुक्त होती है कि अक्सर देखने म यही आता है कि फोडा, फूली हमेशा आख के अनुपात म छोटे ही होते है। विपत्ति या दुख की भी एक सीमा होती है।
–किसी व्यक्ति की सहन शक्ति के परे दुख का कहर थोडे ही ढहेगा।

आख्या किसी गुद्दी लागै! ५८४
आखें कौन-सी गर्दन के पीछे हैं!
–जिस व्यक्ति मे मामूली-सी सामान्य समझ भी न हो उसके लिए।
–जो व्यक्ति आखो के सामने की विपत्ति को न भांप सके।
–जिस व्यक्ति म अपना भला-बुरा सोचने की रच मात्र भी समझ न हो।

आख्यां दीठी परसराम कदैं न कूड़ी होय। ५८५
आखा देखी परशुराम कभी न झूठी होय।
–परशुराम का कहना है कि आखा स देखी हुई बात कभी झूठी नही होती।
–प्रत्यक्ष अनुभव ही सर्वाधिक प्रामाणिक होता है।
–प्रत्यक्ष अनुभव को क्याकर चुनौती दी जा सकती है।
पाठा आख्या देखी परसराम कदै ई झूठी होय।
सस्कृत प्रत्यक्ष कि प्रमाणम्।

आख्यां दीठो सांची नै काना सुणी काची। ५८६
आखो देखी सच्ची व कानो सुनी कच्ची।
–आखा देखी बात सवथा प्रामाणिक होती है किन्तु कानो से सुनी हुई बात प्रामाणिक नही होती। अधिकाशतया वह मिथ्या ही होती है।
–अफवाहा पर विश्वास नही करना चाहिए।
पाठा आख्या दीठी साची के काना सुणी।

आंख्यां दीठो मोह, मु देख्या विवहार। ५८७
आखो दखी प्रीत और मुह देखा व्यवहार।
–जो व्यक्ति दिखावटी आत्मीयता प्रदर्शित करे।
–परस्पर हार्दिक आत्मीयता दुलभ है।
–मानवी समाज मे ढोग-आडम्बर की बहुलता है।
पाठा आख्या देखी प्रीत।

आख्या देखै न कुत्तौ भुसै। ५८८
न आखा दखे न कुत्ता भौके।
–न गलत काम करे और न बकबक हो।
–जोखिम का कोई काम ही न करना।
–न गलत काम हो और न उसका दुष्परिणाम भुगतने की न नौबत आये।
–किसी को कुछ भी पता नही चलने देना।

आख्या देख्या ई आधौ धीजै। ५८९
आखो से देखने पर ही अधा पतियाये।
–अधा किसी बात पर तभी विश्वास करता है जब तक वह अपनी आखो से उस देख न ले।

–अधा न माने तो यह उसकी आखो का कसूर है ।
–नासमझ व्यक्ति हर बात का पुख्ता प्रमाण चाहता है ।
–प्रत्यक्ष अनुभूति ही विश्वसनीय होती है ।

आख्यां नै पलकां रो काई भार । ५९०
आखो को पलको का क्या बोझ ।
–पारिवारिक व्यक्ति का भरण पोषण भारी नही होता ।
–गुरुजनो पर ही छोटो को निबाहने का भार होता है ।
–बडे व्यक्ति को सहज ही दूसरा की मदद करनी चाहिए ।

आख्यां बेरो नै बहू उतावळी । ५९१
कुआ पास और बहू जल्दबाज ।
–साधनो के साथ साथ दक्षता का सयोग होने पर ।
–दुतरफा लाभ ।
–ऐसा सयोग जुडने पर कार्य सपन्नता मे क्या कसर ।
पाठा आख्या वरो नै बहू उचावळी ।

आख्यां बाधनै ढगा चटावै । ५९२
आखें बाध कर नितब चटाता है ।
–कोई जान बूझ कर बेवकूफ बनाये तब ।
–कोई व्यक्ति जरूरत से ज्यादा होशियारी करे और दूसरो को निहायत बेवकूफ समझे ।

आख्यां मींच'र अधारो करै, जिणरो कोई काई करै ५९३
आखें मूद कर जो अधियारा करे उसका कोई क्या करे ।
–सूर्य के रहते जो आखें बद करके अपने लिए अधेरा प्राप्त करले तो उसका कोई भला नही कर सकता ।
–उजाले के समान सत्य को भी कोई अनदेखा करना चाहे तब ।
–वस्तुस्थिति से खामखा कतराने की कोई व्यक्ति चेष्टा करे तब ।

आख्यां मींचो अर अधियारो । ५९४
आखें मुदते ही अधियारा हो जाता है ।
–सूर्य जैसी शक्ति को नकारने के लिए केवल पलकें ही तो बन्द करनी पडती हैं ।
–नजरअदाज करने से कोई भी व्यक्ति नगण्य हो सकता है ।
–सूर्य को देखना चाहे उसके लिए जाज्वल्यमान उजियारा और अनदेखा करना चाहे तो उसके लिए उसका कोई महत्त्व नहीं ।
–मरने के साथ ही सब नि शेष हो जाता है ।
–किसी विशेष व्यक्ति के मरते ही जब सारा काम चौपट हो जाय ।
–इधर देख रेख की चौकसी हटी नही और उधर काम बिगडा ।
–हरदम सतर्क रहने से ही काम सपन्न होता है ।

आख्यां मे गीड मावै ई नीं अर नाव मिरगानैणी । ५९५
आखा मे मैल ही मैल और नाम मृगनयनी ।
–वास्तविकता से सर्वथा प्रतिकूल आचरण ।
–प्रसिद्धि के अनुरूप आचरण न होना ।
–व्यक्तिगत दुर्गुणो के बावजूद भी समाज मे खूब ख्याति या शोहरत होना ।
–मिथ्या आडबर के प्रति व्यग ।

आख्यां मे तुस ई नीं खटै । ५९६
आखो मे तिनका तक बर्दाश्त नही होता ।
–जो व्यक्ति विरोध को कतई सहन नही कर सके ।
–जो व्यक्ति अपने शत्रुओ से निर्विलम्ब बदला ले ।
–असहनीय बात चाहे वह कितनी ही नगण्य हो, सहन नही की जा सकती ।

आख्यां री ठौड भूहारा रूंधो । ५९७
आखो की जगह भौंहो ने दबा ली ।
–आखो की कमी को भौह पूरा नही कर सकती ।
–जो व्यक्ति गैर लोगो से ज्यादा मुरौवत रखे ।
–व्यर्थ का औपचारिक लिहाज रखने वाले व्यक्ति के लिए जो प्रिय व्यक्तियो के बदले अपरिचितो से सहयोग करे ।
–घर मे व्यर्थ के लोगो की भरमार ।
–विशेष व्यक्ति के आकस्मिक निधन पर जिसके अभाव की किसी से भी पूर्ति नही हो सकती ।
पाठा : आख्या री ठौड भुहारा छाई, निकळ भूवा भतीजी आई ।

आख्यां री जोत । ५९८
आखो की ज्योति ।
–पुत्र के लिए सबोधन ।
–दुर्दिन का सहारा ।
–जो व्यक्ति एक मात्र आशा का केन्द्र हो ।

आख्या री काजळ । ५९९

आखो का काजल ।

—अत्यधिक प्रिय व्यक्ति के लिए सबोधन जिसकी आखो के काजल की तरह शोभा हो ।

—जिस व्यक्ति पर अत्यधिक स्नेह हो ।

आख्या री आधौ, नाव नैणसुख । ६००

आखो का अधा और नाम नयनसुख ।

—नाम के प्रतिकूल आचरण या व्यवहार ।

—समाज मे जिस व्यक्ति की खूब प्रतिष्ठा हो, पर वास्तव मे वह उसके योग्य न हो ।

—प्रतिष्ठा के विपरीत आचरण ।

—व्यक्तिगत खामियो व बुराइयो के बावजूद जो व्यक्ति समाज मे बडा बन जाय ।

—मिथ्या आडबर के प्रति व्यग ।

आख्या री काजळ चोरलै । ६०१

आखो का काजल चुराले ।

—ऐसा प्रवीण, चालाक या धूर्त्त व्यक्ति जो आखो का काजल तक चुराले और पता न लगने दे ।

—धूर्त्तता या चालाकी की चरम सीमा ।

आख्यां रौ काजळ पूना नै भारी । ६०२

आखो का काजल योनि को भारी ।

—काजल, टीकी इत्यादि बनाव श्रृगार के आकर्षण से कोई व्यक्ति किसी पर मोहित तो हो जाता है, पर उसका फल सहवास के समय योनि को सहन करना पडता है ।

—नासमझी से किया हुआ कोई भी लुभावना काम बाद मे अक्सर क्षति पहुचाता है ।

—आज की नादानी का भविष्य म दुष्परिणाम भुगतना पडे तब ।

—भूल किसी से हो और सजा किसी को मिले ।

—किसी के बदले म क्षति उठाना ।

पाठा आख्या रौ काजळ पूदा नै भारी ।

आख्या रौ तारौ । ६०३

आखो का तारा ।

—अत्यत प्रिय वस्तु के लिए सबोधन ।

—जिस पर जीवन की एक मात्र आशा केन्द्रित हो ।

—आखो की रोशनी के सदृश जो व्यक्ति प्रिय हो ।

आगणा री बैठणी अर दूगा री दूखणी । ६०४

आगन की बैठक और नितबो पर फोडा ।

—विवशता की मार ।

—मजबूरी से बच निकले का कोई विकल्प नही ।

—धर्म सकट की मनस्थिति ।

आंगणै आयौ अर मा जायौ बिरोबर । ६०५

आगन आया और मा का जाया बराबर ।

—अतिथि भाई के समान होता है ।

—अतिथि का आदर करना चाहिए ।

—अतिथि पूज्य होता है ।

आगलडी रै नख जायौ लोग तमासै आयौ । ६०६

अगुली के नख जाया, लोग तमाशे आया ।

—दुनिया तमाशबीन होती है ।

—नगण्य सी बात क लिए अत्यधिक उत्सुकता प्रकट करना ।

आगळिया चरखी मे भिलगी । ६०७

अगुलिया चरखी मे फस गईं ।

—कोई अप्रत्याशित काम गल आ पडे और उसे विवश होकर सपन्न करना पडे ।

—आफत मे फस जाने के बाद उससे छुटकारा आसान नही ।

आगळिया सै नू न्यारा कोनीं होवै । ६०८

अगुलियो से नाखून अलग नहीं होते ।

—रक्त सबध की घनिष्ठता स्वाभाविक है । कुछ समय के लिए मन मुटाव भी हो जाये तो अपना आत्मीय सदा अपना ही रहता है ।

—खून पानी स अधिक गाढा होता है ।

—रिश्तेदारो से दुराव नही रखा जाता ।

आंगळी पकडतौ पकडतौ पूचौ पकडै लागौ । ६०९

अगुली पकडते पकडते पहुचा ही पकडने लगा ।

—यत्किंचित, सहारा , अधिकार या थोडी सी सुविधा पाकर जो व्यक्ति अधिक अधिकार प्राप्त करन की हिमाकत करे ।

—मामूली-सा सहारा मिलते ही गले पड जाना ।

—अधिकारो के दायरे को लाघकर उनसे आग बढने की कुचेष्टा करना ।

—धीरे धीरे अपना मतलब सिद्ध करना ।

आगळी वढ़ै जिणरै लोई आवै । ६१०
अगुली कटे जिसके खून आये ।
–जो दुखी होना है, वही अपनी पीड़ा समझता है ।
–जिस पर आफत पड़ती है, वही उसे जानता है ।
–दूसरों के कष्ट के प्रति उपेक्षा स्वाभाविक है ।

आगळी सूज थामो कोनीं व्है । ६११
अगुली सूज कर थमा नही बन सकती ।
–छोटा आदमी सयोगवश थोडा बढ भी जाय तो वह सम ज के बडे आदमियो का मुकाबला नही कर सकता । उसके बडप्पन की एक निश्चित सीमा निर्धारित है ।
–जीवन के किसी भी क्षेत्र का अभाव आदमी को जकडे रहता है ।
पाठा आगळी सूजनै हाल कितीक व्है ।

आगळिया धरम । ६१२
अगुलिया से धर्म करवाना ।
–दूसरो के द्वारा किसी को क्षति पहुच ना ।
–पराये हाथों से जोखिम का काम करवाना और स्वय उससे दूर रहना ।
–कोई मत्रणा शुरू करके खुद उससे दूर हो जाना ।

आगळिया सूं बेटा नी व्है । ६१३
अगुलियो स बेटे नही होते ।
–किसी मुश्किल काम को आसानी से सपन्न नही किया जा सकता ।
–कार्य के यथायोग्य साधन अनिवार्य हैं ।
–मखौल मखौल मे कोई कार्य पूरा करना चाहे तब ।

आचै चाला नीं आखडां । ६१४
न जल्दी चलें न ठोकर खायें ।
–अपनी स्वाभाविक गति से सीधी राह चलना ।
–ऐसा कोई काम न करना जिसका दुष्परिणाम हो ।
–अपने हिसाब से जीवन व्यतीत करना ।
–जल्दबाजी का परिणाम अच्छा नही होता ।

आट मे आयोडो लो तूटै । ६१५
मराड मे आया हुआ लोहा टूटता है ।
–अहंकारी व्यक्ति का पतन निश्चित है ।
–अवसर का लाभ उठाने से ही सफलता मिलती है ।
–मौका आने पर दुश्मन को धर दबाना चाहिए ।
–आखिर अक्खड टूट कर ही रहती है ।

आटा-टूटा गवा रा रोट । ६१६
टेढी मेढा गेहू की रोटी ।
–कल्याणकारी वस्तु कुरूप भी हो तो कोई बात नही ।
–गरीब व गवार हुआ तो क्या, है तो उच्च कुल का ।
–लाभकारी वस्तु के नुक्स अनजाने ही नजरअदाज हो जाते है ।
पाठा आटी टूटी गवा री रोटी ।

आटा पग पदमा रा । ६१७
टेढे पाव पद्मिनी के ।
–यह तो उस विशेष व्यक्ति की ही कारगुजारी है ।
–यह मत्रणा तो उस अमुक व्यक्ति की ही है ।
पाठा वाका पग बाई पदमा रा ।

आटै आई मरै बिलाई । ६१८
फसी हुई बिल्ली ही मरती है ।
–बचाव का कोई रास्ता ही न हो तब बिल्ली पकड मे आती है ।
–चारा ओर से घिर जाय तो शक्तिशाली योद्धा को भी हार माननी पडती है ।
–फसने पर किसी का भी वश नही चलता ।

आण गाव री बींद'र गाव री छोरौ । ६१९
पराये गाव का दूल्हा और गाव का छोकरा ।
–अपने गाव मे किसी की भी कद्र नही होती ।
–घर छोडने पर ही बाहर प्रतिष्ठा बढती है ।
–घर की मुर्गी दाल बराबर ।

आणदी री नाणदी'र भाणी बाई नाव । ६२०
आनदी की ननदी और भाणी बाई नाम ।
–नानदी=ननद की बेटी । भाणी=भान्जी ।
–बहुत दूर की रिश्तेदारी होते हुए भी आत्मीयता का अधिकार जतलाना ।
–खामखा का सबध स्थापित करना ।

आत भारी तो माथ भारी । ६२१
आतें भारी तो सिर भी भारी ।
–पेट भरा रहने से आलस्य आता है ।
–पट म गडबड हो तो सिर भी दुखने लगता है ।

–पेट भरा रहने से उत्पात सूझता है।

आतरै री सगाई मे धन तौ मिळै पण आणा टाणा कठै।
–दूर की सगाई म धन तो मिलता है पर आन जाने का आनद कहा। ६२२
–दुतरफा लाभ कम ही मिलता है।
–एक ही चीज म कभी कभी लाभ व हानि दोनो सन्निहित रहती हैं।

आता रूप, गाभा सिणगार। ६२३
अतड़ियो से रूप, वस्त्रो स शृगार।
–अच्छा खान पीने से शरीर निखरता है और अच्छे वस्त्रो से शृगार।
–अच्छा खाओ, अच्छा पहिनो।

आ तिला मे तेल कोनीं। ६२४
इन तिलो म तेल नही।
–अपात्र स जाने अनजाने कोई भी प्रत्याशा रखना व्यर्थ है।
–निहायत स्वार्थी व कजूस व्यक्ति से लाख निहोरे करने पर भी कुछ हाथ नही लगता।
पाठा आ तिला मे तेल कठै।

आधा नै आधौ नीं कंणौ। ६२५
अधे को अधा नहीं कहना।
–कटु सत्य नही कहना चाहिए।
–जो सच्ची बात कहने से किसी का भी भला न हो और केवल सुनने वाले का दिल दुख तो उसे न कहना ही श्रेयस्कर है।

आधा नै तौ लाठी चायै। ६२६
अधे को तो लाठी चाहिये।
–असहाय को तो किसी सहारे की ही आकाक्षा रहती है।
–वाछित सहारा मिल जाये तो और क्या चाहिए।

आधा बोळा वाळी सानी है। ६२७
अधे बहरे वाला सकेत है।
–सकेत या तो आख स दिखने वाला या कान से सुनने वाला होता है। अधा देख नही सकता और बहरा सुन नही सकता। तब दोना के बीच एक इशारा होना असभव है।
–सवथा निरथक बात।

आधा आगै ढोल बाजै, आ डमडम क्याकी ? ६२८
अधे के आगे ढोल बजे यह ढमढम कैसी ?
–अधेपन के बहाने सुनने की बात पर भी अनभिज्ञता प्रकट करना।
–जानकर अनजान बनने की चेष्टा करना।

आधा आगै रोवै, नैण गमावै। ६२९
–अध के आगे रोये, अपने दीदे खोये।
–अपात्र से किसी भी प्रकार की याचना करना व्यर्थ है।
–हृदयशून्य व्यक्ति का कलेजा नही पिघल सकता।
–अरसिक के सामने कला का प्रदशन कुछ भी माने नही रखता।
–क्रूर व्यक्ति से सहयोग की आशा रखना व्यर्थ है।
पाठा आधा आगै रोवै, अपणा दीदा खोवै।

आधा भींत रै भींत के भचीड़ौ खाया ठा पडै। ६३०
ए अधे सामने दीवार—कि सिर टकराये तो पता चले।
–*जब कोई नादान किसी अनुभवी का कहा न माने और* नुकसान उठाने के बाद उसे चेत हो।
–अनभिज्ञ व्यक्ति ठोकर खाकर ही कुछ सीखता है।
पाठा आधौ तौ भचीड खाया ईं पतीजै।
आधौ तौ भीत कनै गिया ईं पतीजै।

आधा मे कांणौ ई राव। ६३१
अधो म काना राजा।
–अधो के बीच काना ही श्रेष्ठ है।
–निपट अनपढ़ो के बीच मामूली पढ़ा लिखा व्यक्ति भी विद्वान समझा जाता है।
–नितात अभाव के बीच किसी चीज का यत्किंचित होना भी महत्त्व की बात है।

आधा री गोफण कद ठायै लागै। ६३२
अधे की गोफन का कब निशाना सजे।
–अनभिज्ञ व्यक्ति की सफलता सदिग्ध है।
–किसी काम म अनभिज्ञ व्यक्ति की दखल अधे के निशाने ही की तरह नाकाबिल रहती है।

आधा री माखी राम उडावै। ६३३
अधे की मक्खी ईश्वर उडाता है।
–अनाथ, असहाय व निबल व्यक्ति की सहायता भगवान

करता है।
–निर्बल के बल राम।

आधा रै बोळा जलमै। ६३४
अंधे के बहरे पैदा होते हैं।
–दुर्भाग्य की दुहरी मार।
–मूर्ख का उत्तराधिकारी भी मूर्ख।
–पगले बाप की पगली संतान।

आधा रै तौ दो आख्या जोइजै। ६३५
अंधे को तो दो आखे चाहिए।
–मन वाछित चीज की आकाक्षा।
–जिसे जिस बात का अभाव होता है वह अपने सम्पूर्ण मन से उसी की कामना करता है।
–आकाक्षित वस्तु मिल जाय तो और क्या चाहिए।

आधा रै भावै किंवाड़ ई पापड़। ६३६
अंधे के लिए कपाट ही पापड।
–अनजान व्यक्ति के प्रति व्यग्योक्ति कि वह दो वस्तुओ के भेद की सही पहिचान नही कर सकता।
–अनभिज्ञ व्यक्ति की सारी बातें अप्रामाणिक होती हैं।

आधा रै भावै जैडौ दिन वैडौ रात। ६३७
अंधे के लिए जैसा दिन वैसी रात।
–गवार व्यक्ति के लिए जैसा ज्ञान वैसा अज्ञान।
–अज्ञानी दो वस्तुओ के भेद को पहिचान नही पाता।
–आखें रहते हुए भी अज्ञानी अंधे ही की तरह अक्षम होता है।

आधा रै हाथ बटेर। ६३८
अंधे के हाथ बटेर।
–सुयोग या सौभाग्य से कोई अप्रत्याशित लाभ होना।
–असभाव्य वस्तु की अनायास प्राप्ति होना।
–अयोग्य, अक्षम, अपाहिज या अपात्र व्यक्ति की आकाक्षा पूरी होना।
पाठा। आधा रै पग तळै बटर।

आंधा वाळी सीघ। ६३९
अंधे वाली सीध।
–सीधा चल पाना अंधे के वश की बात नहीं।
–सीधा निशाना तानना अंधे के लिए असभव है।
–बजदाज का काम।

–अनभिज्ञ व्यक्ति का काम प्रामाणिक नही होता।

आधा सुसरा सै क्याकौ घू घटौ। ६४०
अंधे श्वसुर से कैसा घूघट।
–अंधे श्वसुर के लिए तो घूघट का होना और न होना दोनो एक ही बात है।
–नासमझ व्यक्ति के सामने कोई भी प्रदर्शन व्यर्थ है।
–किसी को भी पता न चले तो सामाजिक मान्यताओं का उलघन स्वाभाविक है।
–नैतिक मान्यताओ का सामाजिक डर ही सबसे बडा बधन होता है, उसके मिटने पर हर व्यक्ति स्वच्छद हो जाता है।
पाठा आधा सुसरा सै क्याकी लाज।

आंधी तौ आई कोनीं अर सू साड पेला ई माचग्यो। ६४१
आंधी तो आई भी नही, साय-साय पहिले ही मच गई।
–किसी कार्य विशेष के पहिले ही उसका हल्ला गुल्ला, शोर-गुल शुरू हो जाना।
–बिना किसी आधार के खामखा उसका ढिंढोरा पिट जाना।
–किसी बात की मामूली चर्चा होते ही उसके प्रति अति-रेक उत्साह प्रदर्शित करना।
–कार्य के अभाव मे ही कारण का उद्भव हो जाना।

आंधी आगै बाव ढोळै। ६४२
आंधी के सामने बयार।
–नितात असगत कार्य करना।
–सूरज को दीपक बताने की तरह आंधी के सामने बयार करना भी उतना ही हास्यास्पद है।
–बडे व्यक्ति को नगण्य के द्वारा चुनौती।

आंधी गऊ रौ राम रुखाळौ। ६४३
अंधी गाय का राम रक्षक।
–नितांत निर्बल या असहाय की रक्षा भगवान करता है।
–जिसका दुनिया मे कोई नहीं, उसका सहारा एक मात्र ईश्वर है।

आंधी झिरिया आम। ६४४
–जो वस्तु अकस्मात् हाथ लग जाये।
–सहज प्राप्य वस्तु।
–जो वस्तु अधिक समय तक टिकाऊ न हो।
पाठा . आंधी रा आम। आंधी रा बोर।

आधी थारो भाई आयो के म्हारं खोळा मे आवं जद जाणू । ६४५
अधी तेरा भाई आया—कि मेरी गोद म आये तो मानू ।
—अक्सर यह देखने म आता है कि आत्मीय जन ही दुख के समय आख चुरा लेते हैं। भाई स यह अपेक्षा रहती है कि वह दुख के समय बहिन की सहायता करेगा पर वह भी विमुख होकर कतराने लगता है। तब किस पर भरोसा किया जाय !
—व्यर्थ का प्रदर्शन न करके असहाय की सहायता करने से ही उसे सतोष होता है।
—सहयोग का आश्वासन देन वाले तो बहुतेरे, पर वास्तव मे सहायता कोई नही करता।
पाठा आधी थारो भाई आयो के म्हनैं बतळावै तो जाणू ।

आधी नायण, आरसी सोधं । ६४६
अधी नाईन आरसी खोजे।
—अक्षम व्यक्ति का नितात असगत प्रयास।
—अयोग्य व्यक्ति की व्यर्थ लालसा।
—अकुशल व्यक्ति के प्रति व्यग्योक्ति।

आधी नासेट गियां रो धणी घडा मे ऊट जोवं । ६४७
आधी म भग कर गये ऊट को उसका स्वामी घडे म खोजता है।
—अप्रत्याशित विपत्ति की मार से मनुष्य अपना सहज ज्ञान तक खो बैठता है।
—आकस्मिक सकट से आदमी विक्षिप्त-सा हो जाता है।

आधी पछं मेह आवं । ६४८
आधी के बाद बारिश होती है।
—विघ्न के साथ कल्याण भी जुडा रहता है।
—दुख के झझावात के पश्चात् सुख की वर्षा होती है।
—लडकी के बाद लडका होने की सभावना।
—दुखी मनुष्य को सुख के आश्वासन से भी राहत मिलती है।
पाठा · आधी साथै मेह आवै ।

आधो पूत रो मू डो नोज देखं । ६४९
अधी पुत्र का मुह क्योकर देखे।
—दुर्योग के रहते सुख की आशा तक करना भी व्यर्थ है।
—पुत्र का मुह देखने का सुयोग होता तो आखें ही क्यो छिनती।
—प्राप्य सुख का भी उपयोग करने मे असमर्थ।

आधो पोसं कुत्ता खाय । ६५०
अधी पीस और कुत्ता खाय।
—किसी भी वैयक्तिक, समूहगत तथा राजनैतिक अव्यवस्था को व्यजित करने के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
—अयोग्य व्यक्तियो के जिम्मे काम सौंपने पर अव्यवस्था के साथ सारा श्रम भी व्यर्थ हो जाता है।
—अधी व्यवस्था की अधेरगर्दी।
—अपनी अथक मेहनत से प्राप्त वस्तु का स्वयं उपयोग न करके दूसरे लोग उससे मजे उडाये तब भी इस कहावत का प्रयोग होता है।

आधी भंस बरू मे चरं । ६५१
अधी भैस बरवाडी म चरती है।
—नादान व्यक्ति को अपने हिताहित का ध्यान नही रहता।
—नादान व्यक्ति अपने ही हाथो अनजान ही अपनी हानि कर बैठता है।

आधी राड मेहा री पाली रंवं । ६५२
आधी वर्षा से ही रुकती है।
—आधी का प्राकृतिक प्रकोप वर्षा से शान्त होता है।
—सेर को सवा सेर मिले तभी वह सीधा होता है।
—अपने से समर्थ व्यक्ति से सभी दबते हैं।
पाठा आधी मेहा री पाली ढबै !

आधी मे भभूळिये को के उठाव । ६५३
आधी मे वातचक्र का क्या अस्तित्व।
—किसी बडे व्यक्ति के सामने अकिंचन व्यक्ति की क्या बिसात!
—बडी शक्ति के सम्मुख छोटी शक्ति की क्या हस्ती।
—विषम तुलना उपहासास्पद ही होती है।
—नक्कारखाने मे तूती की आवाज भला कौन सुने।
पाठा . आधी मे वतूळिया री कुण सुणै ।

आधी मे मोर हालं ज्यू कीकर हालं । ६५४
आधी म मोर की तरह कैसे चल रहा है।
—आधी के थपेडो से मोर सीधा नही चल पाता। उसकी

गति एकदम टेढी मेढी हो जाती है ।
–कोई डगमगाता हुआ चले तब यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

आधी रौ जागण । ६५५
अंधी का जागरण ।
–अंधी को रात बीतने का पता ही नही चलता, इस कारण वह जगरण के गीत गाती ही रहती है ।
–जहा नितात अस्त व्यस्त मामला हो ।
–अपनी ही तन्मयता मे खोये रहना ।

आंधो रौ मेह, वैरी री स्नेह । ६५६
आंधी का मेह, वैरी का स्नेह ।
–उपर्युक्त दोना बातें स्थायी नही रहती ।
–जो विश्वसनीय न हो ।

आंधं कुत्तं रं खोळण ई खीर । ६५७
अंधे कुत्ते के लिए झूठन का पानी ही खीर ।
–असहाय को जो मिल जाय वही श्रेष्ठ है ।
–मजबूरी म सभी कुछ सह्य है ।
–विवशता जो न कराये वह थोडा ।

आंधं री गपकी र बहरं री बटकौ राम छुडावं तौ ई छूटं ।
अंधे के हाथ की और बहरे के दात की पकड भगवान छुडाये तब ही छूट सकती है । ६५८
–अनभिज्ञ व्यक्ति आसानी से अपना हठ नही छोडता ।
–गवार व्यक्ति को समझाना मुश्किल है ।
–नासमझ व्यक्ति गलत काम करे तो भी उससे छुडवाया नही जा सकता ।

आंधं री जोय रौ राम रुखाळौ । ६५९
अंधे की पत्नी का ईश्वर ही रक्षक है ।
–अंधे की पत्नी का शील ईश्वर बचाये तो बचे । पत्नी भी चाहे तो धोखा दे सकती है और दूसरे लोग भी उसकी विवशता का नाजायज फायदा उठा सकते हैं ।
–असहाय की हिफाजत ईश्वर के जिम्मे ।
–दुविधा जनक स्थिति म लोग बहुधा सहायता न करके घात ही करते हैं ।

आंधं रौ तदूरौ रामदेवजी बजावं । ६६०
अंधे का तदूरा रामदेवजी बजाते हैं ।
–निसहाय की सहायता भगवान करता है ।
– जिसका कोई सहारा नही, उसको भगवान का सबल ।

आधं वाळी बटबड सधगी । ६६१
अंधे वाली बटेर मिल गई ।
–स्वत ही अप्रत्याशित सयोग घटित होना ।
–अनजान ही आकस्मिक लाभ होना ।

आधौ किण साम्ही आंगळी करनं भाळं । ६६२
अंधा किसकी तरफ अगुली करके निहारे ।
–अंधा किसको कसूरवार स्थापित करके लाछित करे ।
–अंधा किससे सहारे की आशा रखे ।
–चुपचाप अन्याय सहन करने के अलावा असहाय के पास दूसरा कोई चारा नही ।

आंधौ गावं, बोळौ बजावं । ६६३
अंधा गाये, बहरा बजाये ।
–वैयक्तिक, सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक किसी भी प्रकार के असगत मेल पर व्यग ।
–किसी भी प्रकार की अव्यवस्था के प्रति उपहास ।
–दुर्व्यस्थित सगठन ।

आंधौ गरू बोळौ चेलौ, मागं गुळ देवं ढेलौ । ६६४
अंधा गुरु बहरा चेला, मागे गुड दवे ढेला ।
–किसी भी प्रकार की असगति का एसा ही दुष्परिणाम होता है ।
–बेमेल सगठन जिसका समन्वय बैठ सकना नितात असंभव हो ।
–एक एक से आला दो मूर्ख व्यक्तियो का बेमल समझौता ।

आधौ गेडी अेकर ई गमावं । ६६५
अंधा लाठी एक बार ही खोता है ।
–लाठी के अभाव म अंधा सर्वथा निष्क्रिय व पगु हो जाता है । जीवन म एसी भूल की पुनरावृत्ति अत्यत घातक होती है ।
–समझदार व्यक्ति एक बार भूल करने के बाद पूर्ण सतर्क हो जाता है ।

आधौ के जाणं सावण री छटा । ६६६
अंधा क्या जाने सावन की छटा ।
–अनभिज्ञ व्यक्ति दुनिया के बहुत सारे आनद से वचित रह जाता है ।

–सर्वत्र सुख बिखरा हो तो भी अभागा उस मे साझीदार नही बन सकता।
–असहाय का ऐश्वर्य से क्या वास्ता।
–अज्ञानी के लिए प्रकृति व दुनिया का आनंद अदृश्य ही रहता है।

आंधौ जांणै, आंधै री बलाय जांणै। ६६७
अधा जाने अधे की बला जाने।
–जिस पर आफत पड़े वह भोगे।
–जो जैसा करे वह भुगते।
–दूसरो के झंझट से क्या वास्ता।
–हर व्यक्ति अपने सुख-दुख के दायरे मे व्यस्त रहता है।

आंधौ न्यूतै दोय बुलावै, लकड़ी पकड़्या सागै आवै। ६६८
अधा न्योते दो बुलाये, लाठी थामे सग-सग आये।
–नासमझी का काम करने से सदैव नुक्सान रहता है।
–निरर्थक परेशानी मोल लेना।
–नादानी के अनुरूप वैसा ही परिणाम निश्चित है।
पाठा: आधौ नूतै, दोय जिमावै।

आंधौ न्यूतू न दो बुलाऊं। ६६९
न अधे को निमत्रण दू और न दो बुलाऊ।
–गलत काम के बुरे परिणाम के लिए पहिले ही सतर्क रहना अच्छा है।
–अपनी सतर्कता या होशियारी का ध्यान स्वय अपने ही को रखना चाहिए।
–पहिले ऐसा काम ही क्यो किया जाय जिसका दुष्परिणाम स्पष्ट हो।
पाठा: क्यू तो आधौ निंवता अर क्यू दो जीमावा।

आंधौ नै अणखोड़ौ। ६७०
अधा और बदमिजाज।
–दो दो बुराइयो का सम्मिश्रण।
–ऐसे बदमिजाज व्यक्ति से क्योंकर मेल रखा जा सकता है।
–करेला और नीम चढा।

आंधौ बंटै जेवड़ी, गेल्यां बाछो खाय। ६७१
अधा गूथे जेवड़ी, पीछे बछड़े खाय।
जेवडी=रस्सी विशेष।
–वाछित सतर्कता नही बरतने पर कोई भी कार्य बिगड़ सकता है।
–भोले, नादान व अबूझ व्यक्ति का माल मसखरे उड़ा जाते हैं और उसे पता तक नही चलता।
–नासमझ व्यक्ति द्वारा किया हुआ कोई भी कार्य व्यर्थ हो जाता है।
–अयोग्य व्यक्ति की नासमझी के कारण सफल कार्य भी बर्बाद हो जाता है।

आधौ बांटै सीरणी, फिर घिर घरका नै ई दे। ६७२
अधा बाटे सीरनी, घूम फिर कर घरवालो को ही दे।
सीरनी=देवताओ को चढने वाला प्रसाद।
–निपट स्वार्थ का अधापन आत्मीय-स्वजनो के साथ पक्षपात के लिए जाने-अनजाने ही उद्धत हो उठता है।
–पक्षपाती आदमी के हाथो सामाजिक जिम्मेवारी सौपने पर सिवाय पक्षपात के उससे और कुछ भी प्रत्याशा रखना व्यर्थ है।
पाठा: आधौ बाटै रेवडी फिर घिर घरका नै ई दे।

आंधौ बुगलौ कीचड़ खावै। ६७३
अधा बगुला कीचड खाय।
–मजबूरी या दुर्भाग्य जो न कराये वह थोड़ा है।
–अभागे को सर्वदा निकृष्ट वस्तु ही मिलती है।
–जिसके भाग्य मे जो बदा है वही मिलता है।
–विवशता दुष्ट को भी सीधा कर देती है।

आंधौ सवार, काणी घोडी; विधना खूब मिलाई जोड़ी।
अधा सवार, कानी घोड़ी। विधि ने खूब मिलाई जोड़ी। ६७४
–एक से हीन स्वभाव के दपत्ति पर व्यग।
–दो बेढगे मित्रो का मेल।
–मूर्ख शासक व अकर्मण्य कर्मचारियो को लक्ष्य करके भी यह कहावत प्रयुक्त होती है।

आनै नीं मानै नीं, हू लाडै री भूवा। ६७५
मानो चाहे न मानो, मैं दूल्हे की बूआ।
–खामखा किसी काम मे दखल देना।
–अनधिकार पचायती करना।
–मान न मान मैं तेरा मेहमान।

आंब रा आंब गुठली रा दाम। ६७६
आम के आम गुठली के दाम।

–ऐसा काम जिस मे दुहरा लाभ हो।
–जिस काम मे हानि की कोई गुजाइश न हो।

आब खावणा के रूंख गिणणा। ६७७
ग्राम खाने या पेड गिनने।
–अपने मतलब से वास्ता है या उसकी छानबीन से।
–अपनी स्वार्थ-सिद्धि हो जाय तो फिर आगे की पूछताछ करने मे क्या सार।
–अपना मतलब हल हो जाय तो फिर उसकी जानकारी से क्या वास्ता।

आब फळै नीचौ निंवै, अरंड अकासा जाय। ६७८
आम फले नीचा झुके, एरड बढे आकाश।
–सज्जन व्यक्ति उन्नति करे तो वह और भी विनम्र होता है, इसके विपरीत दुर्जन खूब ही दभ प्रकट करता है।
–दुष्ट व्यक्ति के उत्कर्ष से किसी को भी लाभ नही। वह उल्टा और बिगडता है। कुलीन व्यक्ति ज्यो ज्यो समृद्ध होता है त्यो त्यो उसकी विनम्रता या सज्जनता बढती है।
पाठा. आब फळै नीचौ लुळै, इरड फळै इतराय।

आब, नींबू अर वाणियौ, भींच्या ईं रस देत। ६७९
ग्राम, नीबू व बनिया दबाने पर ही रस देते हैं।
–बनिया जाति बिना फसे कुछ भी देने को तैयार नही। आफत पडने पर जितना दबाया जायेगा वह नीबू व आम की तरह रस देता रहेगा।
–जो व्यक्ति फसने पर ही कुछ काम का सिद्ध हो उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
पाठा: आब, नींबू, वाणियौ, कठ मीच्या जाणियौ।

आंबां री कमाई, बोरां में गमाई ६८०
आम की कमाई, बेर मे गवाई।
–किसी व्यर्थ के काम मे फालतू पैसा बर्बाद करने वाले व्यक्ति के लिए।
–मुश्किल से अर्जित किया हुआ धन छोटे काम मे बेकार नष्ट कर देना।

आंमली बूढी व्है जावं पण खटाई नीं तजं। ६८१
इमली बूढी हो जाये फिर भी खटाई नही छोडती।
–जिसका जो स्वभाव है, वह उम्र भर नही छूटता।
–वृद्ध होने पर भी जिस व्यक्ति की रसिकता समाप्त नही होती उसके लिये यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–बुढापे मे भी जो व्यक्ति चचल व रसिक हो।

आ रै उडायोड़ी रूंखा ई नीं वैठै। ६८२
इनकी उडाई हुई चिडिया पेडो पर भी नही बैठती।
–जो व्यक्ति खामखा डीग मारे।
–जिस व्यक्ति की बात का कोई एतबार न हो।
–बेहद गप्पी।

आ रै नाव रा भाटा तिरै ६८३
इनके नाम के पत्थर तरते है।
–जिस व्यक्ति का सितारा खूब बुलन्द हो।
–जिस व्यक्ति का सभी लोहा मानते हों।
–जो व्यक्ति समाज मे खूब प्रतिष्ठित हो।
–जिस व्यक्ति के नाम की दुदुभि बजती हो।
–जिस व्यक्ति का समय अनुकूल हो।
पाठा. आ रै नाव रा सैंतीर तिरै।

आवळ आवं जणा वाड़ मे दाटै। ६८४
आवल आये तब बाड मे गाडनी पडती है।
आवळ=गर्भ की झिल्ली जिस मे बच्चा लिपटा रहता है।
–पुन जन्म की खुशी के साथ जिस चीज को छिपाने की जरूरत है उसे छिपाना भी पडता है।
–गुप्त बात को गुप्त रखना श्रेयस्कर है।

इ, ई

इक लग 'कै', दो लग 'कै'। ६८५
एक लगे तो 'के' दो लगे तो 'कै'।
–अकेला एक ही रहता है, दो होने पर कई हो जाते हैं।
–एकता मे बल है।
पाठा: इक मत 'के, दो मत 'कै'।

इक लख पूत, सवा लख नाती।

उण रावण रै घर, दीया न वाती । ६८६
लाख पुत्र, सवा लाख नाती ।
उस रावण के घर, दीया न वाती ।
–धन, ऐश्वर्य, सत्ता, शान शौकत व सेना का दम कभी नही करना चाहिए । वक्त की मार सब से बडी होती है । पलक झपकते ही सब नष्ट हो जाता है । रावण के अहकार का भी आखिर यही हाल हुआ ।
–समय के पलडे म सब उलट-पुलट हो जाता है । कुछ भी स्थायी नही रहता ।

इग्यारस रै घरै बारस पावणी । ६८७
एकादशी के घर द्वादशी पाहुनी ।
–एकादशी के उपवास पर इतना डट कर खाना कि दूसरे दिन के भोजन की कसर निकल जाये ।
–इधर बचत का कोई उपाय किया जाये और उधर खर्च का कोई नया सीगा जुड जाय ।

इज्जत मरम री अर कमाई करम री । ६८८
इज्जत भ्रम की और कमाई भाग्य की ।
–भ्रान्ति बनी रहती है, तब तक प्रतिष्ठा है और भाग्य जब तक साथ है तब तक कमाई है ।

इज्जत री तो साव ई दूजौ । ६८६
इज्जत का तो मजा ही दूसरा ।
–समाज म प्रतिष्ठा ही सब कुछ है ।
–प्रतिष्ठा क विना सपत्ति व्यर्थ है ।
–प्रतिष्ठा बनी रहे तो आदमी कष्ट भी सहन कर सकता है ।

इण आगळी रै आ आंगळी नैडी । ६६०
इस अगुली स यह अगुली पास है ।
–रिश्ता बडा होता है ।
–अपना सो अपना ही और पराया सो पराया ।
–पानी से खून गाढा होता है ।
–जो जितना ही नजदीक रिश्तेदार है वह उतना ही आत्मीय है ।

इण कवाडिये रौ ओ इज डांडौ । ६६१
इस कुल्हाडी का यही डडा ।
–दोना एक ही मिजाज या स्वभाव के है ।
–एक ही थैली के चट्टे बट्टे ।
–जैसे को तैसा ।
–यथा योग्य व्यवहार ।
पाठा आ कवाडिया रा ऐ इज डाडा ।

इण कान सुणी, उण कान काढी । ६६२
इस कान सुनी, उस कान निकाली ।
–सुन कर भी अनसुना कर देना ।
–किसी बात पर रचमात्र भी ध्यान न देना ।
–किसी बात को उपेक्षा या उदासीनता पूर्वक सुनना ।
पाठा इये कान सुणी, बिये कान काढी ।

इण घर आ इज रीत, दुरगै सफरा दागियौ । ६६३
इस घर की यही रीति, दुरगादास को भी निष्कासित होना पडा ।
–वीर दुर्गादास ने जीवन पर्यंत जोधपुर रियासत की सुरक्षा की और उसे ही बुढापे म निष्कासित होना पडा ।
–किये हुए एहसाना को भुला कर उल्टी नाराजी प्रकट करना ।
–कृतघ्न व्यक्ति पर व्यग ।

इण नै कंवौ भावै कुवै मे राळौ । ६६४
इसे कहो चाह कुए मे डालो ।
–जिस व्यक्ति को कहने मे कुछ भी सार नही ।
–जो व्यक्ति बात सुन कर गुप्त रख ले ।
पाठा इणनै कंवौ भावै भाटै नै कंवौ ।

इण पार के उण पार । ६६५
इस पार या उस पार ।
–जोखम झेल कर काम करने वाले व्यक्ति के लिए । यदि सफलता मिल गई तो कहना ही क्या और यदि डूब गये तो देखा जायेगा ।
–जिस काम को करने मे भारी क्षति या काफी लाभ दोनो होने की गुजाइश हो ।
–आखे बद करक किसी काम मे कूद पडना— परिणाम अच्छा बुरा जो भी हो ।

इण बाई रै घर घणा । ६६६
इस लडकी को घर बहुत ।
–सुन्दर, गुणवती व शालीन लड़की से भला कौन शादी नही करना चाहता ।
–योग्य, कुशल, प्रवीण व्यक्ति की सर्वत्र पूछ होती है ।
–हाथ मे हुनर है तो कही भी कमाई हो सकती है ।

–होशियार व्यक्ति कही भी अपना जुगाड बिठा सकता है।

इण वात लारै धोवा धोवा धूळ । ६९७

इस बात के पीछे धूल फेको ।

–यह बात धूल फेंकने के ही काबिल है ।

–जो बात अहितकारी हो उसका तुरत पीछा छोड देना चाहिए ।

–इस बात को अब यही समाप्त करना उचित है ।

पाठा इण लारै सात धोवा धूळ । इण वात नै धूड धोवा ।

इण मू डै मसूर री दाळ ! ६९८

यह मुह और मसूर की दाल ।

–योग्यता से अधिक आकाक्षा रखना ।

–अकिंचन व्यक्ति की प्रतिष्ठा क्याकर ।

–अयोग्य व्यक्ति पर व्यग ।

पाठा ओ मूडो मसूर री दाळ !

इण मे अर उण मे रात दिन रो वट्टो । ६९९

इस म और उस म रात दिन का फक है ।

–विपम तुलना ।

–जिन दो व्यक्तिया की परस्पर कोई बराबरी ही न हो ।

इण मे काई मीनमेख । ७००

इस म क्या मीनमेख ।

–इस म क्या सदेह ।

–जिस काम की प्रामाणिकता म जाने-अनजाने कोई शका न हा ।

–जिस काम म किसी प्रकार का असमजस न हो ।

इण मे के काकडिया काढ़ै । ७०१

देखिये— क स ७१

इण राम सू मर काय नीं । ७०२

इस राम से नही मरने वाला ।

–इस व्यक्ति से यह काम नही होने वाला ।

–अयोग्य व्यक्ति के लिए ।

–जो व्यक्ति किसी काबिल न हा ।

–अक्षम व्यक्ति पर व्यग ।

इण री मां इणनै ई जायो । ७०३

इसकी मा ने इस जन्म दिया ।

–जिस किसी क्षेत्र म जो व्यक्ति असाधारण या अतुल्य हा ।

–अद्वितीय व्यक्ति ।

–यह कहावत अच्छे बुरे दोनो अर्थों म प्रयुक्त होती है। पर अधिकाशतया अच्छे अथ म ही इसका प्रयोग किया जाता है ।

इण री मा ई सवा सेर सू ठ खाई । ७०४

इस की मा न ही सवा सेर सोठ खाई है ।

–यह क्यो किसी से कम साबित हो ।

–यह भी बेजोड व्यक्ति है ।

–असामान्य व्यक्ति के लिए ।

इणरै पेट मे डाढ़ी । ७०५

इसके पेट म दाढी ।

–छोटी उम्र म भी जो व्यक्ति बेहद समझदार हो ।

–कोई किशोर बुजुर्गाना व्यवहार करे तब ।

इण सावै परणीजणिया घणा । ७०६

इस मुहूत शादी करने वाले बहुतेरे ।

–जिस काम के लिए कई गरजमद हा ।

–जिस काम के करने वाले कई हा ।

–किसी एक व्यक्ति पर जो काम निभर न हो ।

इण सू आगै आको है । ७०७

इस स आगे विनाश है ।

–जिस काम को आगे कायम रखने म खतरा हो ।

–सीमा स पार कोई भी काम घातक है ।

–अहितकर काम जहा कही भी रुक जाय श्रेयस्कर है ।

इण सू आगै काळी भींत है । ७०८

इस स आगे काली दीवार है ।

–जिस से आगे योग्यता, सुदरता समृद्धि की सीमा हो ।

–जिस बात से बढकर दूसरा कोई हो ही नही सकता ।

इण हाथ घोडो नै उण हाथ गधो । ७०९

इस हाथ घोडा और उस हाथ गधा ।

–जो व्यक्ति अपनी धारणा शीघ्र बदलता रहे ।

–जो व्यक्ति जल्दी ही खुश या नाराज हो जाय ।

–जो व्यक्ति खुश होने ही लाभ पहुचाये और नाराज होते ही कसकर हानि ।

इण हाथ लीजै अर उण हाथ दीजै । ७१०

इस हाथ लेना अर उस हाथ देना।
–पूरी सतकता से काम करना।
–किसी बात मे कोई उधार नही।
–हाथोहाथ निपटारा, कोई ढील नही।

इतरा इज घातिया बीस हुवै। ७११
इतने ही डालने से बीस होते है।
–थोडा और जुडते ही कामयाबी।
–मामूली सा सहारा दकर पूरा यश लेना।
–थोडी सी पूर्ति होने से ही जो काम बन जाये।
–अधिकाश काम होने पर थोडा और करने से वह सपूर्ण हो जाता है।

इतरा ऊधडा मत हालौ। ७१२
इतने बेहिसाब मत चलो।
–जो व्यक्ति बइन्तहा अट शट खर्च करता हो।
–जो व्यक्ति अपव्ययी हो।
–हर व्यक्ति को सोच समझ कर खर्च करना चाहिए।

इतरौ मोटौ मत दळौ। ७१३
इतना मोटा मत दलो।
–जल्दी जल्दी म काम मत बिगाडो।
–काम करना हो तो सफाई से करो, वेगार मत निकालो।

इत्ता बरस दिल्ली रह्या अर भाड ई भू जो। ७१४
इतने वर्ष दिल्ली रहे पर भाड ही झाकी।
–सीखने की जगह रह कर भी निपट गवार रह जाना।
–परिस्थिति व वातावरण मे कोई फायदा न उठा कर अपनी अलमस्ती म खो जाने वाले व्यक्ति के लिए।

इत्ती ताळ राजा री गरज करी हुती तौ गाव दे देता। ७१५
इतनी देर राजा की गरज की होती तो गाव दे देता।
–बहुत देर तक आजीजी करने पर भी कोई व्यक्ति न माने तब।
–व्यर्थ ही निर्मम व्यक्ति के निहोरे किये।
–इतनी आजीजी मे तो कोई भी व्यक्ति पसीज सकता है।

इत्ती पोल रावळा मे कठै जको दोय वळा जीम जावै। ७१६
इतनी पोल गढ मे कहा जो कोई दो बार खाले।
–जहा पोल न हो और कोई व्यक्ति वहा कुछ हथियाने चला जाय।
–जहा माल उडाने का मौका न मिले।

इत्तौ हुंस्यार होय ठोकर खायगौ। ७१७
इतना होशियार होकर भी ठोकर खा गया।
–चतुर होकर भी जब कोई ठगा जाये।
–निहायत समझदार होकर भी जो कोई गलती कर बैठे।

इनै पडै तौ कूवौ, उनै पडै तौ खाई। ७१८
इधर पड तो कुआ, उधर पड तो खाई।
देखिये—क स ६१

इन्यायी अर सूरमा जद चालै तद सिद्ध। ७१९
अन्यायी और सूरमा जब चले तब सिद्ध।
–अन्यायी की जब इच्छा हो वह दुष्कर्म करने के लिए तैयार हो जाता है उसे मुहूर्त या शकुन पूछने की आवश्यकता नही, उसी प्रकार शूरवीर जब भी युद्ध के लिए कदम बढाये तब शुभ मुहूर्त ही होता है।
–इस कहावत मे शौर्य की प्रशसा व अन्याय की निन्दा की गई है।

इन्यायी रा अवळा पग। ७२०
अन्यायी के औंधे पाव।
–अन्यायी हमेशा सामाजिक मान्यताओ के विरुद्ध ही काम करता है।
–अन्यायी की उलटी समझ होती है।
–अन्यायी समाज के सामान्य पथ पर नही चलता।

इब पिछताया के बणै जद चिड़ियां चुगगी खेत। ७२१
अब पछताये होत क्या, जब चिडियो ने चुग खेत लिया।
देखिये—क स० १३३

इब ताणी तौ बेटी बाप के ई है। ७२२
अभी तक तो बेटी बाप के यही है।
–अभी तक तो मामला बिगडा नही ठीक ही है।
–अब भी नये सिरे से कुछ भी शुरुआत की जा सकती है।
–सभी लोग चाहे तो अब भी मामला सुधर सकता है।
पाठा हाल ताईं तौ बेटी बाप रै ई है।

इमरत पीता दात अमावै। ७२३
अमृत पीते दात अमायें।
–जो व्यक्ति अच्छा काम करते हिचकिचाये।
–दुष्कर्मों के प्रति मनुष्य का खिचाव स्वाभाविक है और वह

ित्कर्मों से विमुख होना चाहता है।
शुभ के काम म जो व्यक्ति पीछे हटे।

रत्त तो रत्ती ई रूडो अर विस मण ई अकारथ ७२४
मूल तो रती भर भी अच्छा और विष मन भर भी व्यर्थ।
अच्छी चीज हो तो थोडी भी ग्राह्य है पर घातक चीज की बहुलता भी किस काम की।
सुपुत्र तो एक ही अच्छा पर कुपुत्र बीस भी हों तो बेकार।
किसी चीज की अच्छाई बुराई उसके गुण से निश्चित होती है—मात्रा व सख्या से नही।

इया मे तो राड भी जण्या जिका ई चोखा है। ७२५
इन मे तो कुलटा ने नही जने सो ही ठीक हैं।
–जिस परिवार के सभी व्यक्ति दुष्ट हो।
–यह कहावत किसी भी सगठन, समाज, सस्था सभी के लिए प्रयुक्त होती है कि जो सदस्य अब पैदा होगे वे ही ठीक है बाकी मौजूदा तो सभी भ्रष्ट है।

इरडियो काई रूख मे रूख है। ७२६
एरड क्या कोई पेड म पेड़ है?
–जो व्यक्ति किसी योग्य न हो।
–तुच्छ व्यक्ति को थोडी बहुत ख्याति मिल जाय तो यह कहावत प्रयुक्त होती है कि अमुक व्यक्ति भी क्या कोई मनुष्या म मनुष्य है।
पाठा. इरडियो किसो रूख है?

इसक री मारी कुत्ती कादै मे लुटै। ७२७
इश्क की मारी कुतिया कीचड म लोटती है।
–दुराचारी को बुरे भले का भेद नही रहता।
–इश्क मे आदमी सज्ञा विहीन हो जाता है।
–किसी भी व्यसन म लिप्त व्यक्ति की सहज मर्यादा नष्ट हो जाती है।
–अपने प्रेम की खातिर प्रेमी कोई भी हानि उठाने को तैयार रहता है।

इसक रो मारयो फिरै ठिडकारयो। ७२८
इश्क का मारा फिरे बावला।
–प्रेम का मारा पागल की भाति भटक रहा है।
–इश्क म अपनी सुध-बुध खोया हुआ व्यक्ति।
–कामासक्त व्यक्ति की बर्बादी।

इसा चूतिया सिकारपुर मे लाधसी। ७२९
ऐसे मूर्ख शिकारपुर म मिलेंगे।
–यहा तुम्हारी एक नही चलेगी क्योकि यहा शिकारपुर जैसे मूर्ख नही बसते।
–यहा किसी के बनाय उल्लू नही बनेंगे।
–जो व्यक्ति दूसरो को मूर्ख समझकर अपना मतलब हल करना चाहे, उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

इसा ब्यावां रा इसा ई गीत। ७३०
ऐसे विवाह के ऐसे ही गीत।
–जो जैसा है उसके साथ वैसा ही व्यवहार।
–किसी बात के अनुकूल वैसी ही प्रक्रिया।
–जिसकी *जैसी प्रतिष्ठा उसका वैसा ही सत्कार।*
पाठा. जैडी रीता रा जैडा ई गीत।

इसौ काई ब्याव बिगडै। ७३१
–ऐसा क्या विवाह बिगड रहा है।
–ऐसी भी क्या उतावली जैसे कोई विवाह बिगड रहा हो।
–यह कोई विवाह जैसा महत्त्वपूर्ण काम नही, फिर खामखा की जल्दबाजी मे क्या सार।
–ऐसे काम म देरी भी हो जाय तो कोई खास बात नही।
पाठा *इसी काई बात बिगडै।*

इसी खण का इसा ई हीरा, इसी बाई का इसा ई बीरा। ७३२
ऐसी खान के ऐसे ही हीरे, ऐसी बहिन के ऐसे ही भैया।
–जैसा घराना वैसी ही सतान, जैसी खान वैसा ही खनिज।
–खानदान का असर व्यक्ति पर पडता ही है।

इसी राता का इसा ई तडका। ७३३
ऐसी राता के ऐसे ही सवेरे।
–जैसा वातावरण वैसा ही प्रभाव।
–जैसा समाज वैसा ही व्यक्ति।
–जैसा राज्य वैसा अनुशासन।
–जैसा व्यक्ति वैसा ही उसका आचरण।
–जैसा कारण वैसा ही परिणाम।

इसी राडा का इसा ई नाव। ७३४
एसी कुल्टाओं के ऐसे ही नाम।
–फूहड औरत का फूहड ही नाम।
–जैसा आचरण वैसी प्रतिष्ठा।

–चरित्र बुरा तो नाम भी बुरा।
–आचरण के अनुरूप परिचय।

इसो ई थारो खाणो-पीणो, इसो ई थारो काम कराणो।
ऐसा ही तेरा खाना-पीना, ऐसा ही तेरा काम कराना। ७३५
–जिसका निकृष्ट ही रहन-सहन हो, निकृष्ट ही व्यवहार हो तथा निकृष्ट ही काम करवाने का ढग हो।
–जो व्यक्ति सभी दृष्टिकोण से निकृष्ट हो।
–तुच्छ व हीन स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए।

इसो ई हरि गुण गायो, इसो ई संख बजायो। ७३६
ऐसा ही हरि गुण गाया, ऐसा ही शख बजाया।
–अधम व्यक्ति से और क्या बन पड़ेगा।
–विवेकहीन व्यक्ति से अच्छे काम की उम्मीद ही नहीं रखनी चाहिए।
–जिसकी जैसी समझ होती है वैसा ही वह लोगो के साथ व्यवहार करता है।
–जैसा स्वभाव वैसा आचरण।
–निहायत घटिया काम करने वाले व्यक्ति के लिए।

इसो गुळ गीलो कोनी। ७३७
ऐसा गुड गीला नही है।
–अमुक व्यक्ति इतना भोला व सीधा नही है कि उसे जो चाहे सो ठग ले या बेवकूफ बना ले या किसी का कहना वह तुरत मान ले।
–यहा आसानी से किसी की दाल नही गलने की।
–अमुक व्यक्ति इतना नादान नही कि उसे इच्छानुसार मोडा जा सके।

इसो बाड़ नै कांटो ई ना दिये। ७३८
ऐसा बाड को काटा भी न देना।
–कोई व्यक्ति इतना दुष्ट, अधम व क्रूर हो कि भगवान न करे वैसा किसी बाड को कांटा ही मिले।
– दुश्मन को भी जिस हीन व्यक्ति का श्राप नही दिया जा सकता।
–किसी बाड को भी वैसा काटा मिला तो उस बेचारी को भी वह कष्ट पहुचायेगा।
–सतान, भाई व पति जो निहायत कष्ट पहुचाने वाले हो उन रिश्तेदारो के लिए भगवान से यही कामना है कि वैसा आत्मीय किसी को भी न मिले।

इसो सोनो के काम को जो कान काटे। ७३९
ऐसा सोना क्या काम का जो कान काटे।
–कीमती वस्तु भी जो अमगलकारी हो, उसका परित्याग ही सगत है।
–जो आत्मीय होकर कष्ट पहुचाये वह क्या काम का।

इदर आवै बरसण रै चाव, उत्तर गिणै न दिक्खण बाव। ७४०
इद्र की मशा हो बरसने की तब वह न उत्तर की हवा गिने न दक्षिण की।
–मन मे प्रेम है तो कुछ भी त्याग हो सकता है।
–नीयत के अनुरूप ही व्यवहार होता है।
–भावना के अनुसार ही प्रक्रिया होती है।
–काम करने की इच्छा हो तो कोई भी रास्ता निकल सकता है।

इंदर जंडो गाढ़ो अर धरती जंडी भारी। ७४१
इद्र जैसा गाढा और धरती जैसा भारी।
–जो व्यक्ति बहुत उदार तथा सहनशील हो।
–जिस व्यक्ति की आसानी से थाह न ली जा सकती हो।
–सभी दृष्टिकोण से जो व्यक्ति अद्वितीय हो।
पाठा. इदर उनमान गैरो अर धरती उनमान भारी।

इदर री मा तिसाई। ७४२
इद्र की मा प्यासी।
–बहुलता के बीच भी कोई व्यक्ति पूर्णतया वचित रहे।
–सपन्न होते हुए भी कोई व्यक्ति अभाव से पीडित हो।
–सब कुछ प्राप्त होते हुए भी कोई व्यक्ति किसी चीज का भोग न कर सके।
पाठा: इदर री दासी, पाणी री प्यासी।
इदर री जाई, पाणी री तिसाई।

ईद रो चाद। ७४३
ईद का चाद।
–ईद के चाद की तरह जिस व्यक्ति के दर्शन दुर्लभ हो।
–कोई आत्मीय काफी लबे अर्से तक न मिले तो उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है कि वह ईद के चद्रमा की तरह विरल हो गया है।

ईद पछै रोजा। ७४४
ईद के बाद रोजे।

–पहिले ऐश फिर फाकामस्ती ।
–सभी दिन एक से नहीं रहते ।
–जो व्यक्ति पहिले गुलछर्रे उडाता है वह बाद में दुख उठाता है ।

ईन मीन साढी तीन । ७४५
ईन मीन साढे तीन ।
–जो परिवार बहुत छोटा हो ।
–सख्या के हिसाब से जो भी कुटुब सस्था व सगठन निहायत छोटे हो उनके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

ईनली छींया ऊनै ग्रायां सर । ७४६
इधर की छाया उधर आकर रहती है ।
देखिये— क स ६३

ईनलो घाटो ऊनै गियो । ७४७
इधर का घाटा उधर गया ।
–बाद मे घाटे की पूर्ति हो जाना ।
–एक चीज की पूर्ति किसी दूसरी चीज से पूरी हो जाय ।
–एक बात की कमर किसी दूसरी बात से मिट जाय ।
पाठा अठी रो घाटो उठी पूरचो ।

ईली ऊपर खावै नै नीचै निकाळै । ७४८
इल्ली ऊपर खाये और नीचे निकाले ।
ईली=घुन की तरह से अनाज मे लगने वाला कीटाणु ।
–जिस व्यक्ति की पाचन शक्ति निहायत कमजोर हो ।
–जो व्यक्ति निठल्लेपन के साथ फिजूलखर्ची भी करे ।
–ऐसा निकम्मा व्यक्ति जो खाने और हगने के सिवाय दूसरा कोई काम न करे ।

ईली पीलियां ग्राटो नीसरै नीं । ७४९
इल्ली मसलने से आटा नहीं निकलता ।
–दड स्वरूप इल्ली को मसला भी जाय तो भी उसने जिस अनाज का नाश किया है उसे वापस वसूल नहीं किया जा सकता ।
–गरीब व्यक्ति के द्वारा यदि कुछ बुरा भी हो जाय तो उसे सजा देने मे कोई सार नहीं ।

ईली पिचड्या पाणी नीसरै । ७५०
इल्ली को मसलने से पानी निकलता है ।
–अपराध स्वरूप असहाय को मारने से भी कोई लाभ नहीं ।
–गरीब को सताने से कुछ भी हाथ नहीं लगता ।
–अदने व्यक्ति की अदनी क्षमता ।
पाठा इली पीच्या पिदडको निकळै ।
ईली पीच्या पाणी निसरै ।

ईली रो कांई धापोडो । ७५१
इल्ली को क्या अघाना ।
–इल्ली हरदम खाती ही रहती है उनकी भूख व अघायेपन का कुछ पता नहीं चलता ।
–इल्ली की तरह बच्चा की भी भूख का पता नहीं चलता ।
–जिसके सतोष की सीमा नहीं, उसकी भूख की भी सीमा नहीं ।

ईलोजी घोडा रा पारखू, पूछ ऊचो करनै दात जोवै । ७५२
इलोजी घोडा के पारखी पूछ उठाकर दात देखें ।
इलोजी=बाजार या चौक में स्थापित मिट्टी या पत्थर की मूर्ति जो होली के दिनो मे अश्लीलता के निमित्त काम ली जाती है । यहा मूर्ख या अनभिज्ञ व्यक्ति से तात्पर्य है ।
–अनभिज्ञ व्यक्ति खामखा किसी काम मे दखल दे तब यह कहावत व्यग मे प्रयुक्त होती है ।
–मूर्ख व्यक्ति की हठधर्मी ।
–नासमझ व्यक्ति जो न जानते हुए भी हर काम मे टाग अडाय ।

ईलोजी घोडै चढ़िया नै वैगा इज पड़िया । ७५३
इलोजी घोडे पर चढे और जल्दी ही गिरे ।
–अनभिज्ञ व्यक्ति अपनी हठधर्मी से किसी काम मे हाथ डाले और उसे तुरन्त असफलता मिल जाय तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।
–नासमझ व्यक्ति कोई भी काम करेगा तो वह अवश्य बिगडेगा ।
–किसी भी काय की सफलता के लिए अपेक्षित अभिज्ञता आवश्यक है ।

ईस जिसा पाया, मा जिसा जाया । ७५४
ईस जैसे पाये, मा जैसी सतान ।
ईस=खाट व पलग की लम्बाई वाला हिस्सा ।
–कारण के अनुरूप परिणाम ।
–हीन मा की हीन सतान ।
–जैसी सगति वैसा प्रभाव ।
–दुश्चरित्र व्यक्ति की सतान भी दुश्चरित्र होती है ।

ईंडा सेवै कोई, बिचिया लेवै कोई । ७६७
अडे सेवे कोई, बच्चे ले जाये कोई ।
—परिश्रम किसी और का, हथियाले कोई और ।
—शोषण ।
—मेहनत कोई करे, मौज कोई मनाये ।
—पैदा करे कोई, ऐश करे कोई ।

ईं हाथ दे, ऊ हाथ ले । ७६८
इस हाथ दे, उस हाथ ले ।
देखिये— क स ६१०

उ

उकळता इज चूकै है । ७६९
उबलता हुआ ही खाते हैं ।
—अत्यधिक गर्म खाने से भूख तो नही मिटती सो नही मिटती, उल्टा मुह जल जाता है ।
—शीघ्रता में किया हुआ काम बिगडता है ।
—किसी भी काम के लिए बेहद जल्दबाजी नही करनी चाहिए । करने से दुष्परिणाम ही होता है ।
—जल्दबाजी की हद ।

उकळता मे थोडी ई ऊरीजै । ७७०
उबलने पानी मे थोडा-थोडा ही डाला जाता है ।
ऊरीजै=खीच, दलिया व थूली को उबलते पानी में डालते हैं, पर थोडो थोडा करके, अन्यथा गाठे पड जाती हैं ।
—धैर्य व शाति के साथ काम करना चाहिए ।
—उतावली करने से काम बिगडता है ।

उकळिये मे ऊरसी, राख बंदा विसवास । ७७१
उबलते मे डालेगा रख बदे विश्वास ।
—हडिया के उबलते पानी मे ईश्वर अनाज डालेगा ।
—भाग्य व ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए कि वह किसी को भी भूखा नही रखता ।
—ईश्वर को अपने बच्चो के सुख दुख का पूरा ध्यान है ।

उखरडी धन घणो बधै । ७७२
घूरा जल्दी बढता है ।
—भारतीय समाज मे लडकियों का घूरे जितना ही महत्त्व समझा जाता है ।
—लडकिया जल्दी बडी होती है ।
—समाज म गदगी जल्दी फैलती है ।

उखरडी बधता काईं वार लागै । ७७३
घूरा बढते क्या समय लगता है ।
—बुराई जल्दी फैलती है ।
—घूरे की तरह लडकिया भी जल्दी बढती हैं, अर्थात् वे जल्दी जवान होती है ।
—मानवीय समाज मे अच्छाई की अपेक्षा गदगी शीघ्र पनपती है ।

उखरडी मायं किसो आंबो को हुवै नीं । ७७४
घूरे पर कौन-सा आम नही फलता ।
—गरीब के घर भी कोई महान व्यक्ति पैदा हो सकता है ।
—हीन कुल मे कौन सा सज्जन पैदा नही होता ।

उखरडी मायं बगदो खटै । ७७५
घूरे पर कचरा चलता है ।
—गदी जगह पर गदगी बढती है ।
—बुराइयो के साथ बुराई जुडती रहती है ।
—जो पहिले से ही कलकित है, उसको बढती बदनामी की क्या परवाह ।
—कलक के साथ एक और कलक सही ।

उखरडी मायं मेह बरसै अर मेंला मायं ई बरसै । ७७६
घूरे पर भी बारिश होती है और महलो पर भी ।
—ईश्वर की दृष्टि मे कोई छोटा-बडा नहीं, उसकी अनुकपा सभी के लिए समान है ।
—सज्जन व्यक्ति भेद-भाव नही रखता, उसकी दृष्टि मे सभी एक से हैं ।
—सौभाग्य की वर्षा किसी पर भी हो सकती है ।

उखरडी मायं सूवै अर मेंला रा सपना जोवै । ७७७
घूर पर सोये और महलो के सपने देखे ।
—साधन व क्षमता के बिना महत्त्वाकाक्षी होना ।

–असभव वात की कामना करना।
–शेखचिल्ली की तरह खामखा लालसाए बढाना।

उखरडी मे ई रतन जलमे। ७७८
घूरे मे भी रत्न पैदा होता है।
–गरीब परिवार मे पैदा होकर भी कोई व्यक्ति बहुत बडा आदमी बन जाय तो यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–नीच खानदान मे भी कोई नेक व्यक्ति पैदा हो सकता है।

उखरडी रौ हस। ७७९
घूरे का हस।
–नीच कुल म पैदा होकर भी सज्जन।
–गरीबी म पल कर बडा हुग्रा व्यक्ति।

उगता नै सै निवै। ७८०
उगते सूर्य को सभी नमन करते हैं।
–शक्ति के सामने सभी झुकते हैं।
–तेज का प्रभाव सभी मानते हैं।
–नई सत्ता के उदय का सभी ग्रभिनदन करते है।
–बडे व्यक्ति की सभी खुशामद करते हैं।

उघाडै मास तौ माखी इज बैठसी। ७८१
उघडे मास पर तो मक्खी ही बैठेगी।
–कुलटा के घर तो कामुक व्यक्ति पहुचेंगे ही।
–अपनी लाज ग्रपने हाथ।
–बुराई का मौका मिलने पर ग्रादमी बुराई की ओर प्रेरित होता ही है।

उघाडै बारणै धाड नीं, उजाड़ गाव मे राड नीं। ७८२
खुले दरवाजे डाका नही, उजड गाव मे झगडा नही।
–गरीब को लुटने का डर नही रहता।
–ग्रपना दिल साफ है तो किसी की भी परवाह नही।

उघाडौ खाधौ है काई ? ७८३
उघडा हुग्रा खाया है क्या ?
–उघडा हुग्रा खाने से हानि होती है।
–उघडी मर्यादा वाली कुलटा के घर जाने से बदनामी होती है, अत वहा नही जाना चाहिए।

उछळनै खोडौ भाग्यौ। ७८४
उछल कर खोडा तोडा।
खोडा=अपराधी के पांव को जकडने के लिए लकडी का एक उपकरण।
–अपने हाथो आफत मोल लेनी।

उछळ पाती आपरी। ७८५
अधिक हिस्सा आपका।
–जैसा आप चाहे बटवारा कर लीजिए।
–दूसरे की भावना का अधिक खयाल रखना चाहिए।

उजडियं बिगडियं रै सांधौ नीं लागै। ७८६
उजडी बिगडी को सवारा नही जा सकता।
–बिगडी बात को सुधारा नही जा सकता।
–बात बिगडने से पहिले सतर्क रहना चाहिए, फिर सतर्कता बरतना माने नही रखती।

उभळचा समदर ना डटै। ७८७
ज्वार ग्राने पर समुद्र को कोई रोक नही सकता।
–मर्यादा का उलघन करने पर किसी भी व्यक्ति को नियत्रित नहीं किया जा सकता।
–बडे व्यक्ति ही जब अपनी लीक छोड दें तो वे किसके रोके रुकें।
–समाज मे उथल पुथल या क्राति का दौर शुरू हो जाये तो उसे दबाया नही जा सकता।

उठै रा मुडदा उठै अर अठै रा मुडदा अठै बळै। ७८८
वहा के मुर्दे वहा और यहा के मुर्दे यहा जलते हैं।
–सवत्र एक ही नियम कायदा नही चलता।
–मौके पर जो चीज होती है, वही काम देती है।
–सभी स्थानो की ग्रपनी ग्रपनी उपयोगिता व अपना अपना महत्त्व होता है।

उठै काई परसाद बटै। ७८९
वहा क्या प्रसाद बट रहा है।
–वहा कोई मुफ्त का माल तो नही बट रहा है।
–मन वाछित सहूलियत कही नहीं मिलती।
–परिश्रम किये बिना आसानी से गुजर बसर नही हो सकती।

उडतौ पछी मापै है। ७९०
उडता पछी मापता है।
–निहायत होशियार व चालाक व्यक्ति।

—जो व्यक्ति निर्विलम्ब किसी बात को ताड ले।
—जो व्यक्ति शीघ्र किसी बात में सही नतीजे पर पहुच जाय।

उडियोड़ी आबरू पाछी नीं आवै। ७९१
उडी हुई आबरू वापस नही आती।
—एक वार किसी व्यक्ति की इज्जत बिगड जाय तो उसे वापस सुधारा नही जा सकता।
—समाज मे प्रतिष्ठा बनाये रखना काफी दुश्वार है, एक वार भी धब्बा लग जाय तो उसे मिटाया नही जा सकता।

उडियो ग्राटो बडेरां रै नाव। ७९२
उडा हुआ आटा पुरखा के नाम।
—या ही अपनी गफलत से आटा उड जाय तो यह समझ कर सतोष कर लेना चाहिए कि वह पुरखा के श्राद्ध मे ही काम आया।
—*किसी भी हानि को दूसरों के निमित समझ कर मन मे* आत्म-तुष्टि कर लेना।
—आत्म-तुष्टि का मिथ्या बहाना।

उडी'र फरर। ७९३
उडी और फुर्र।
—नितात तथ्यहीन बात।
—जिस व्यक्ति की जबान का कोई एतबार न हो तब उसका परिहास करते हुए इस कहावत का प्रयोग होता है।
—खामखा गप्प हाकना।

उडीक्या को आवै नीं। ७९४
प्रतीक्षा करने से कोई नहीं आता।
—राजस्थान में ऐसा लोक विश्वास है कि जिसकी प्रतीक्षा की जाती है वह नही आता।
—प्रतीक्षा करने से मशा पूर्ण नही होती।
—चाहना या इच्छा से ही कोई काम नही बनता।
—जरूरत पर कोई चीज हाथ न लगे तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

उडै नै आख्यां मे पडै। ७९५
उडे और आखों म पडे।
—जिस निरर्थक बात को फैलाने म कोई सार न हो। उडी हुई मिट्टी की तरह वह आखो में ही पडती है।
—बदनामी फैलाने से वह पुन अपना ही नुक्सान करती है।

उडो ग्रे चिडिया, सावण ग्रायो। ७९६
उडो ए चिडियो सावन आया।
—बहार आई है, आनद उठा लो।
—मन वाछित अवसर आया हर्ष मनाओ।
—वक्त पर मौज कर लेनी ही चाहिए।
—खुशी के समय स्वत ही मन फडक उठता है।

उणरी जूती नै उणरो ई माथो। ७९७
उसकी जूती और उसी का ही सिर।
—उसकी चीज से उसी को नुक्सान पहुचाना।
—अपनी बुराइया आखिर अपने ही को कष्ट पहुचाती हैं।
—जो व्यक्ति अपने ही दाव पेच से स्वय क्षति उठाये।
पाठा उणरो माथो नै उणरी ई खाहडो।
इणरो माथो नै इणरी ई जूती।

उणरो तो माथो इज भवग्यो। ७९८
उसका तो सिर ही फिर गया।
—जिस व्यक्ति की बुद्धि एकदम सठिया गई हो।
—जिस व्यक्ति का मगज खराब हो गया है—अर्थात् अक्ल मारी गई हो।

उणरो तो रांम ई निसरग्यो। ७९९
उसका तो राम ही निकल गया।
—*जिस व्यक्ति की बुद्धि ही मर गई हो।*
—जिस व्यक्ति की नीयत एकदम बिगड गई हो।
—जिस व्यक्ति को भले-बुरे का कुछ होश ही न हो।

उणियारा सू देस भरयो। ८००
ऐसे चेहरे मोहरा से देश भरा है।
—किसी में ऐसी क्या खासियत जो अन्यत्र दुर्लभ हो।
—हर व्यक्ति अपने-आप में महत्त्वपूर्ण है।
—हर व्यक्ति म कुछ न कुछ विशेषता होती है, वह कुछ व्यक्तियों मे ही सीमित नही रहती।
पाठा उणियारै उणियारै देस भरयो।

उतर भीखा म्हारी बारी। ८०१
उतर भैय्या मेरी वारी।
—अब मेरा समय आया है, मैं अपनी मनमानी करूगा।
—एक वार सभी का वक्त आता है।
—किसी एक व्यक्ति की ही ठेकेदारी नही रहती।
—अपना अपना दाव है।

उतरा पांव पसारज्यो जितरी लांबी सोड । ८०२
उतने पाव पसारिये जितनी लबी सौर ।
–साधनो के अनुसार काम करना चाहिए ।
–अपनी परिस्थितियो को ध्यान मे रखकर ही कदम उठाना चाहिए ।
–सामर्थ्य के अनुरूप कार्य करना ही उचित है ।

उतरियोड़ी घाणी बळीतं जोग । ८०३
उतरा कोल्हू ईंधन समान ।
–जिस वस्तु की उपयोगिता समाप्त हो गई फिर उसका कोई महत्त्व नही रहता ।
–जो चीज नजर से उतर गई वह कौडी की ।
–शान उतर जाये तो आदमी किसी काम का नही रहता ।
–बूढी औरत मिट्टी के समान ।

उतरियोड़ो हाक्म गडक बिरोबर । ८०४
उतरा हुआ हाकिम कुत्ते समान ।
–*पद मुक्त अधिकारी का कोई आदर नही ।*
–सम्मान पद का होता है व्यक्ति का नही ।
–हाथ मे सत्ता है, तभी तक पूछ है ।
–पद का अहकार नही होना चाहिए ।
पाठा उतरचो हाकम भगी रै भाव ।
उतरचो हाकम भगी बिरोबर ।

उतरियो गाव डूमा नै दीजै । ८०५
उतरा गाव चाहे डूमो को दो ।
डूम=ढोली व दमामियो की तरह गाने वाली एक याचक जाति ।
–गाव छिन जाने के बाद उस गाव का क्या महत्त्व, अपनी बला से वह याचको को मिल जाय ।
–*अपने से छिनी हुई चीज चाहे किसी को मिले ।*
–जो चीज अपने अधिकार मे है, तब तक ही उसका मूल्य है ।

उतरेड़ हाक्म को यर उतरेडं माडे को के मोल पडचो है ।
उतरे हुए हाकिम और उतरे हुए घडे का कोई मोल नही ।
–पद से हटे हुए अधिकारी की कोई कीमत नही रहती ।
–पद का दभ नही करना चाहिए ।

उतरियो घाटी अर व्हियो माटी । ८०७
उतरा घाटी और हुआ माटी ।
–गले से नीचे उतरने के बाद अन्न मिट्टी के समान हो जाता है ।
–मुर्दा जीवन की घाटी लाघ जाय तो वह मिट्टी के समान ही है ।
–यौवन की घाटी ढल जाने के बाद जीवन भी व्यर्थ है ।

उतार दीवी लोई, काई करैला कोई । ८०८
उतार फेंकी लोई तो क्या करेगा कोई ।
लोई=ऊनी ओढनी ।
–लाज की ओढनी उतार फेंकने के बाद कोई क्या करेगा ।
–मर्यादा की ओढनी सिर पर है, तभी तक समाज का डर बना रहता है ।
–*निर्लज्ज व्यक्ति को किसका भय ।*

उतारिया बोझ ऊतरै । ८०९
उतारने से ही बोझ उतरता है ।
–काम का बोझ तो करने से ही हलका होता है ।
–काम तो आखिर करने से ही सपन्न होता है ।

उतावळा री देवळियां थरपै, वीरा रा बसै गाव । ८१०
उतावला मारा जाता है, वीरो के गाव बसते हैं ।
–जल्दबाजी घातक है ।
–किसी भी काम मे जल्दबाजी अनुचित है ।

उतावळी कुम्हारी नखा सू माटी खोदै । ८११
उतावली कुम्हारिन नाखूनो से मिट्टी खोदती है ।
–*उतावली करने से कोई काम सपन्न थोडे ही होता है ।*
–जल्दबाज को काम करने का होश तक नही रहता ।
पाठा उतावळो कुम्हार गोचा सू माटी खोदै ।

उतावळो दो बार फिरै । ८१२
उतावली दो बार फिरती है ।
–उतावली मे उल्टा ज्यादा समय नष्ट होता है ।
–जल्दबाजी करने से काम और लम्बा हो जाता है ।
पाठा उतावळो सौ बार पाछो आवै ।

उतावळी नायण पेरवा वाढ़ै । ८१३
उतावली नाईन पोर काटे ।
–उतावली नाईन नाखून काटते समय अगुली ही काट बैठती है ।
–जल्दबाजी से अनिष्ट होता है ।

—जल्दबाजी अनर्थ का मूल।
पाठा : उतावळी नायण आगळी वाढै।

उतावळो कुम्हार काचा ई वेचै। ८१४
उतावला कुम्हार कच्चे ही वेचता है।
—उतावला कुम्हार मिट्टी के वर्तन बिना पके ही वेच डालता है।
—जल्दबाजी से काम नही सुधरता।
—उतावला व्यक्ति हतप्रभ हो जाता है।

उतावळो सो बावळो। ८१५
उतावला सो बावला।
—उतावला व्यक्ति अपनी सुध-बुध बिसर जाता है।
—जल्दबाजी मे काम करने की सतर्कता नही रहती।
—उतावले व्यक्ति की समझ खो जाती है।
पाठा : उतावळो सो बावळो, धीरा सो गभीर।

उतर-पातर, हूं मिया थूं चाकर। ८१६
उतर-पातर, मैं मिया तू चाकर।
—अपना-अपना समय है, उसके फेर मे जो स्वामी था वह चाकर हो जाता है और जो चाकर था वह स्वामी हो जाता है।
—कर्ज उतरने के वाद कर्जदार अपने को इतना मुक्त अनुभव करता है कि वह स्वय को साहूकार से भी अधिक श्रेष्ठ समझने लगता है।

उधार घर री हार। ८१७
उधार घर की हार।
—उधार लेने से घर की हानि होती है।
—उधार लेने से घर डूबता है।
—मनुष्य को कर्ज नही लेना चाहिए।

उधार जोखावणियो काण रो चेतो नीं राखै। ८१८
उधार तुलवाने वाला तराजू की खोट का ध्यान नही रखता।
—उधार लेने वाले की विवशता है कि वह कम तोलने वाले बनिये को मुह खोलकर कुछ भी कह नही सकता।
—उधार लेने वाले का का मन मर जाता है।

उधार तोलां नीं कोई मागण नै जावां। ८१९
न उधार तोलें और न मागने जाये।
—घर का खोकर फिर चक्कर मारने से दुहरी हानि।
—न गलत काम करें और न चक्कर काटें।
—सतर्कता व समझदारी से काम करना।

उधार दियो'र गिराक गमायो। ८२०
उधार दिया और ग्राहक खोया।
—उधार लिया हुआ व्यक्ति सकोच के मारे उस दुकान पर नही जाता। उधार के साथ नई बिक्री भी मारी जाती अतएव उधार देने से दुगुना नुकसान होता है।
—किसी के साथ भलाई की और मुरौवत खोई।

उधार दीजै, दुस्मी कीजै। ८२१
उधार दिया और दुश्मन किया।
—उधार दिया हुआ वापस मागने पर हुज्जत होती है। झगडा वढता है।
—घर का खोया सो अलग तथा मित्र को दुश्मन बनाया सो अलग।
पाठा : उधार देवणो अर लडाई मोल लेवणो।

उधार-पुधार, घरै सिधार। ८२२
उधार मागे तो अपने घर जा।
—उधार लेना है तो यहा आने की क्या जरूरत नही, सीधे अपने घर जाओ।
—उधार देना उचित नही।

उधार री मां थोडी ई मरी है। ८२३
उधार की मा थोड़े ही मरी है।
—एक उधार नही देगा तो दूसरा देगा। उधार देने वाले तो पैदा होते ही रहेंगे। और बदा किसी न किसी से उधार ले ही लेगा।
—सभी बोहरे तो एक साथ खत्म नही हो सकते।
—उधार मिल जाय तो क्यों मेहनत करनी।

उधार रो खाणो अर फूस रो तापणो। ८२४
उधार का खाना और फूस का तापना।
—फूस की आच के समान उधार खाये हुए भोजन की गर्मी भी नगण्य होती है।
—उधार खाये हुए भोजन से आदमी का शरीर पुष्ट नही होता।

उधारो खाडो समंदर सू ऊडो। ८२५
उधार का गड्डा सागर से गहरा।

–उधार लिया हुआ व्यक्ति विपत्तियों के गर्त में डूबता ही रहता है।
–उधार के गड्ढे को जीवन भर नही भरा जा सकता।
–एक बार ऋण ले लिया तो वापस उऋण होना आसान नहीं।

उधाळ जाणं तो कुण परणं ? ८२६
कुलटा जाने तो कौन ब्याहे।
–पहिले पता हो तो कौन धोखा खाये।
–अनजान मे ही विश्वासघात होता है।
–पहिले किसी बात की आशंका हो तो हर व्यक्ति सतर्क हो सकता है।

उन्नीस-बीस तो व्हिया ई करै। ८२७
उन्नीस-बीस तो होते ही रहते हैं।
–मामूली सा फर्क तो चलता है।
–बिल्कुल एक समान तो दो चीजें होती ही नही है।
–अधी सख्ती हर काम म नही बरतनी चाहिए, थोड़ा ऊंच-नीच तो स्वाभाविक है।

उपाड़िया कुत्ता कद सिकार रमै ? ८२८
उठाये हुए कुत्ते क्या शिकार करेंगे ?
–काम करने का मन हो तो काम किया जा सकता है।
–यदि काम करने की इच्छा ही न हो, तब फिर कोई कितना ही उकसाये तो क्या हो।
–निकम्मे व्यक्ति से काम की क्या उम्मीद की जाय।
पाठा उचाया कुत्ता किसाक सिकार करै।
उठाया कुत्ता किमीक सिकार रमै।

उपासरै मे काघसियो जोवं। ८२९
उपाश्रय मे कंघा खोजना।
–जैन यतियों क सिर पर बाल नही होते, इसलिए उनके निवास स्थान पर कघे का क्या उपयोग।
–जिस चीज का जहा वास्ता ही न हो, उसे वहा खोजना व्यर्थ है।
–जिस चीज की आवश्यकता व उपयोगिता होती है, वही चीज मनुष्य अपने पास रखता है।
पाठा : उपासरै मे काघसिया रो काई काम।

उपासरै मे चौकनी। ८३०
उपाश्रय मे चौकनी।
चौकनी=खेती के काम मे लिया जाने वाला एक उपकरण।
–जैन यति तो घर-घर गोचरी करके अपना पेट भरते हैं फिर कृषि के उपकरण उनके निवास-स्थान पर क्योंकर मिल सकते है।
–आवश्यकता और उपयोग होने पर ही कोई चीज रखी जाती है।
–माग कर खाने वालो का मेहनत के उपकरणो से क्या सरोकार।

उगाियोडी तो भगी ई नीं रातं। ८३१
वार किया हुआ तो भगी भी नही छोडता।
–वार करने के लिए उठाई हुई लाठी को तो भगी भी नही रोकता।
–अपना दाव आने पर कोई छोटे-बड़े का खयाल नही रखता।
–तैश आने पर छोटा व्यक्ति भी सयम नही रख सकता।
पाठा उगरामियोडी तो माबी ई नी राखै।

उरळो खुदा है। ८३२
खुदा से कुछ ही कम है।
–जो व्यक्ति अपने आप को बहुत समझे उसके लिए परिहास मे यह कहावत प्रयुक्त होती है कि वह स्वय को खुदा के बराबर ही मानता है।
–जो व्यक्ति बहुत करामाती हो।

उळभणो सोरो, सुळभणो दोरो। ८३३
उलझना आसान, सुलझना दुश्वार।
–किसी काम म फसना आसान पर उससे वापस छुटकारा मुश्किल है।
–विवाह के झमेले मे उलझना तो सरल है, पर बाद मे *गृहस्थी को समालना काफी कठिन है।*

उळझ्या ई सुळझै। ८३४
उलझने से ही सुलझना होता है।
–आवारा अविवाहित व्यक्ति विवाह करके गृहस्थी मे फसता है तो वह सुधर जाता है। सीधा हो जाता है।
–गृहस्थी की उलझन मे फसने से ही कई बाते सुलझती है।

उल्टा राम-रांम गळै पड्या। ८३५
उलटे राम राम गले पड़े।
–अभिवादन के साथ ही बेगार गले पड गई।

–चलते रास्ते आफत बध गई।
पाठा साम्ही राम राम गळै पड्या।

उलटी गगा बवै। ८३६
उलटी गगा वहती है।
–उलटा काम करना।
–परपरागत मर्यादा के खिलाफ काम करना।

उलटो चोर कोटवाळ नै डडै। ८३७
उलटा चोर कोटवाल को दड दे।
–चोरी और सीनाजोरी।
–ऐसा जमाना बिगड जाय कि अपराधी निरपराधियो को दड देने लगे।
–स्वय गलती करके दूसरे पर थोपने की चेष्टा करना।
पाठा साम्ही चोर साहूकार नै डडै।

उलटो दिन बूझनै कोनीं आवै। ८३८
उलटा दिन पूछ कर नही आता।
–बुरे दिन काई पूर्व सूचना देकर नहीं आते।
–दिनमान अकस्मात् ही बदल जाते है।

उलटो पाणी चीला चढै। ८३९
उलटे रास्ते पानी चढने लगा।
–कोई अनहोनी बात घटित हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–कोई नया व अनोखा काम हो तब।

उलळतै पालडै रो कोई सीरो कोनीं। ८४०
ऊपर उठते पलडे का कोई साथी नही होता।
–समाज म जिस व्यक्ति का पलडा भारी होता है, सभी लोग उसका ही साथ देते हैं। हलके पलडे वाले गरीब का कोई साथ नही देता।
–सुख के साथी बहुतेरे, पर दुख का साथ देने वाला कोई नहीं।

उलळिये गाडै किसा विनायक! ८४१
उलटने वाली गाडी के कैसे गणेश!
–जब ऐसे सकट पर ही गणेश रक्षा नही कर सकता तो उसका क्या सुमिरन
–जो देवता दुख मे सहायता नही कर सकते उनकी कैसी पूजा।
–दुख मे साथ न दे वह कैसा बडा आदमी।
पाठा उलळिये गाडै विनायक रो किसो काम।

उतावळ किया ऊमर नीं पाकै। ८४२
उतावली करने से उम्र नही पकती।
–हर काम के लिए वाछित समय अनिवार्य है।
–समय के साथ ही हर चीज पनपती है।
–समय को लाघना किसी के वश की बात नही।

ऊ

ऊखळ मे माथो दियो तो धमका सू काई डरणो। ८४३
ओखली मे सिर दिया तो चोट से क्या डरना।
–जब किसी कठिन काम को आरम कर दिया तो फिर उसके परिणाम से क्या भय।
–जब स्वेच्छा से कोई आफत मजूर की है तो फिर उसकी मार से क्या विचलित होना।
–जान बूझ कर कोई झमेला अगीकार करना।

ऊगता धान री पनोळ ई छानीं को रैवै नीं। ८४४
उगते अनाज का अकुर ही छिपा नही रहता।
–काम की शुरुआत से ही आगे का सारा अनुमान हो जाना।
–होनहार बिरवान के होत चीकने पात।
–बचपन म ही बडप्पन का आभास हो जाना।

ऊगतै रा गीत, ढळतै बिकै न सींत। ८४५
उगते सूर्य का अभिनदन, ढलते की कानी कौडी भी कद्र नही।
–उदित होती हुई शक्ति की सभी पूजा करते हैं, ढलती की कोई परवाह नही करता।
–नई तेजस्विता के सामने सभी सिर झुकाते हैं।

ऊगतो ई नीं तपियो सो आथमतो काई तपसी। ८४६
उगता ही नही तपा वह अस्त होते हुए क्या तपेगा।
–जो सूरज उदित होते हुए नही तपा तो वह अस्त होते हुए

क्या खाक तपेगा ।
–जिस काम का श्रीगणेश ही ठीक नही हुआ, उसका अत क्योकर ठीक हो सकता है ।
–जो व्यक्ति वहवूदी के समय किसी की सहायता नही कर सका तो वह गरीबी मे किसकी क्या मदद कर सकता है ।

ऊगतो सूरज तपै । ८४७
उगते सूरज मे तप-तेज होता है ।
–नई क्राति हमेशा प्रकाशवान व मगलकारी होती है ।
–परिवर्तन के नये सूर्य मे ऊष्णता होती है ।

ऊग्या आथमिया रो वेरो नीं । ८४८
उदय व अस्त का ध्यान नही ।
–परिस्थितियो से नितात उदासीन ।
–ऐश्वर्य व अहकार की मदहोशी ।
–सुख मे वेखबर व्यक्ति की मन स्थिति ।

ऊगा सूर भागा सूर, कुण खोदै म्हाली धूळ । ८४९
सूरज के उगने से सर्दी मिट गई तब भला कौन गीली मिट्टी खोदे ।
सदर्भ-कथा = एक सियार सियारनी का जोडा था । दोनो आलसी थे । सर्दियो के दिनो मे रात को ठड पडती तो वे ठिठुरते हुए हमेशा यह निश्चय करते कि सवेरे अवश्य रहने के लिए गुफा खोद लेंगे । पर सूरज उगने पर सर्दी कम हो जाती तो वे रात की ठिठुरन को भूल जाते । इस तरह वे नित्य रात को योजना बनाते और सवेरे उसको मुल्तवी कर देते ।
–ढुलमुल व्यक्तित्व के प्रति व्यग ।
–अकर्मण्य व्यक्ति की वहानेवाजी ।

ऊगै अठीनै, आथै उठीनै । ८५०
उगे इधर, ढले उधर ।
–सूरज अपना तप तेज कही से ग्रहण करता है और अस्त कही दूसरी ओर होता है ।
–एक ओर मनुष्य के भाग्य का उदय होता है, दूसरी ओर उसका पराभव होता है ।

ऊगै सो आथमै, जलमै सो मर जाय । ८५१
जो उदय होगा वह अस्त होगा, जो पैदा होगा वह मरेगा ।
–यह ससार नश्वर व परिवर्तन शील है ।
–कोई भी जीवधारी अमर नही है ।
–सत्ता, राज्य, संपत्ति आदि कुछ भी अमिट नही ।

ऊजळा राम-राम है । ८५२
उजले राम-राम हैं ।
–ऊपरी मुरौवत ।
–औपचारिक सबध ।

ऊजड गाव मे इरड ई रूंख । ८५३
उज्जड गाव मे एरड ही पेड ।
देखिये—क्र. स. १०२

ऊजळो-ऊजळो ई दूध कोनीं व्है । ८५४
उजला उजला सभी दूध नही होता ।
–दूध की तरह सफेद व निर्मल दिखने वाली चीजें सभी दूध नही होती, वे सस्ती व घातक भी हो सकती है ।
–व्यक्ति का वाह्य रूप देखकर ही उसके आतरिक स्वरूप का अनुमान नही लगाया जा सकता ।
–स्वच्छ वेश-भूषा से ही कोई व्यक्ति आचरण मे भी स्वच्छ हो, यह जरूरी नही ।

ऊठण री तौ आसग ई नीं अर नाव सतावरांम । ८५५
उठने की तो शक्ति ही नही और नाम बहादुर ।
–नाम के विपरीत वास्तविकता ।
–स्थापित सामाजिक प्रशस्ति के विपरीत जिस व्यक्ति का आचरण हो ।
–अपनी क्षमता से परे आकाक्षा रखने वाले व्यक्ति पर व्यग ।

ऊठती माळण'र बैठतौ वाणियो सस्तौ बेचै । ८५६
उठती मालिन और बैठता वनिया सस्ता वेचता है ।
–शाम के वक्त रवाना होती हुई मालिन वची हुई सब्जी सस्ती वेच डालती है, क्योकि हरी सब्जी दूसरे दिन तक टिकती नही । वनिया सवेरे दुकान पर वैठते समय अच्छी बोहनी की आशा से सस्ता सौदा देता है ।
–सर्वत्र एक-सा नियम लागू नही होता, परिस्थिति व समयानुसार नियम बदलते रहते हैं ।
–हर व्यक्ति अपनी सुविधा व अपने स्वार्थ को ध्यान मे रख ही निर्णय लेता है ।

ऊठ बींद फेरा ले, हाय राम मौत दे । ८५७
उठ दूल्हे भावरें फिर, हाय राम मौत दे ।
–विवाह की सम्पूर्ण व्यवस्था के वाद दूल्हे को केवल भावरें

फिरने के लिए कहा जाय तो भी वह अपनी जगह से उठने को तैयार नही। मामूली हाथ पाव हिलाने की अपेक्षा वह मौत की कामना करता है।
-निहायत आल्सी, अकर्मण्य व अहदी व्यक्ति के लिए।
-जो व्यक्ति खुद कुछ भी काम न करके पूर्णतया दूसरो पर निर्भर करता हो।

ऊठ बे बदर, बैठ बे बदर। ८५८
उठजा बदर, बैठजा बदर।
-पाल्तू बदर की तरह किसी भी आदेश की अवज्ञा नही करना।
-जो व्यक्ति कहते ही किसी का कहना मान लेता हो।
-अधिकाशतया यह कहावत पत्नी की गुलामी म रहने वाले व्यक्ति के लिए परिहास मे प्रयुक्त होती है।

ऊठो सासूजी सास रावो, म्हैं कातू थे पीस लावो। ८५९
उठो सास आराम करो, मैं कातू तुम पीस लाओ।
-मुह से कहने का तो सास से आराम करने की बात कही गई, पर पीसने का काम चरखा कातने से कही ज्यादा मुश्किल है।
-दिखावटी सम्मान व शिष्टाचार प्रदर्शित करना।
-कृत्रिम आत्मीयता प्रकट करना।

ऊत गया री चीठी आई, बाचै जिणनै राम दुहाई। ८६०
निपूते की चिट्ठी आई, बाचे उसको राम दुहाई।
चीठी=मृत्यु भोज की खबर या निमत्रण।
-निपूते का मृत्यु भोज खाने की बात तो दूर उसके निमत्रण को बाचना भी अपकर्म है।
-निपूते का जीवन इतना हेय है कि मृत्यु के बाद भी उसका प्रायश्चित नही हो सकता।
-निपूते के घर का पानी पीना भी पाप है।

ऊत गियो दक्खण, उठा रो लायो लक्खण। ८६१
कपूत गया दक्खन, वहा के लाया लच्छन।
-कपूत को कहीं भी भेजा जाय, वह सुधर नही सकता।
-कपूत अच्छी जगह भी जाये तो वहा से बुराई सीख कर आता है।

ऊत गांव मे ऊंट आयो, लोग जाणं परमेसर आयो। ८६२
उज्जड गाव म ऊट आया, लोग समझे परमेश्वर आया।
-अनभिज्ञ व्यक्ति के लिए हर चीज विचित्र व विस्मयकारी होती है।
-मूर्ख व अनभिज्ञ व्यक्ति दो चीजो के पारस्परिक विभेद को समझ नही पाता।
-गवार व्यक्ति की जिज्ञासा सामान्य बात से भी जागृत हो सकती है।

ऊता रै किसा सींग हुवै। ८६३
कपूतों के सिर पर कौन से सीग होते हैं।
-कपूत या मूर्ख की कोई शारीरिक विशेषता नही होती, जिसे देखते ही पता चल जाय कि यह कपूत या मूर्ख है।
-मूर्खता के काम से ही मूर्ख की पहिचान होती है।
पाठा मूरखा रै किसा सींगडा व्है।

ऊधळती लुगाई बळींडे साप बतावै। ८६४
भागने वाली औरत बल्ली मे साप बताती है।
ऊधळती लुगाई =पति का घर छोडकर जाने वाली छिनाल औरत।
बळींड=लकडी का मोटा लट्ठा जो कच्चे मकानो की छाजन म लम्बा लगा रहता है।
-छिनाल औरत साप का भय बनाकर भागने का बहाना खोजती है।
-सरासर झूठे बहाने से किसी बात का औचित्य सिद्ध करने का निरर्थक प्रयास करना।

ऊधळ्या नैं दायजा दियोडा कोनीं देख्या। ८६५
भगने वाली को दहेज देते नही देखा।
-जो औरत अपनी इच्छा से घर छोड कर भगे उसे भला दहेज कौन दे।
-अपने को क्षति पहुचाने वाले को लाभ कौन पहुचाये।
-तिरस्कार करने वाले का आदर कौन करे।

ऊधळिया हिरणा लारै। ८६६
लम्बे गये हरिनो के पीछे।
-दौडने से हरिन कब पकडाने वाले, तब उनका पीछा करना एकदम व्यर्थ है।
-खामखा किसी बात के लिए भटकना।
-सारा परिश्रम फिजूल जाना।
पाठा फगत हिरणा लारै दौड्या।

ऊधळी लारै दायजो! ८६७
भागने वाली के पीछे दहेज!

–नुक्सान के साथ थोडी क्षति और सही ।
–जो नुक्सान होना था सो हो गया, उसके साथ थोडा खतरा और हो जाय तो कोई परवाह नही ।

ऊधौजी बण आया री बात । ८६८
ऊधो बन आये की बात ।
प्रसग — उद्धव श्री कृष्ण के मित्र थे । कृष्ण के कहने पर उनके विरह मे व्याकुल गोपियो को समझाने के लिए मथुरा से गोकुल गये थे । कृष्ण के प्रति गोपियो की सगुण भक्ति के बदले निर्गुण भक्ति का महात्म्य बतलाने के लिए । पर गोपियो ने उद्धव के निर्गुण ज्ञान को अगीकार नही किया । उलटा उद्धव का मखौल उडाया । ऊधो से सबधित कहावतें शायद इसी प्रसग से निसृत मालूम होती हैं । पर उद्धव-गोपी सवाद से सबधित होने पर भी ये कहावतें गावो मे सामान्य व्यक्ति को ही लक्षित करके कही जाती हैं ।
–बात बन जाती है तो सभी समर्थन करते हैं और बिगडने पर हर कोई किनारा करने लगता है ।
–मनुष्य जीवन मे सफलता ही सर्वस्व है ।

ऊधौजी मन मान्या री बात । ८६६
ऊधो मन माने की बात ।
–उपदेश और समझाने से क्या हो, आखिर मन के मानने से ही बात बनती है ।
–अपना मन न माने तो सारी समझाइश व्यर्थ है ।

ऊधो रौ लेणौ नीं माधौ रौ देणौ । ८७०
उधो का लेना न माधो का देना ।
–न किसी का लेना और न किसी का देना ।
–पूर्ण स्वच्छद व स्वतत्र व्यक्ति ।
–जो व्यक्ति दूसरे का मोहताज न हो ।

ऊनै आंगळी घाल्या तौ बळै इज । ८७१
गरम चीज मे अगुली डालने से तो जलेगी ही ।
–नुक्सानदेह बात करने से नुक्सान होता ही है ।
–कार्य के अनुसार परिणाम अवश्यभावी है ।
–कोई भी कार्य सोच समझ कर करना चाहिए ।

ऊनौ खाया तौ मूडौ बळै । ८७२
गरम खाने से तो मुह जलता है ।
–आराम की खातिर थोडा कष्ट तो उठाना पडता है ।
–सुख के लिए मामूली दुख तो झेलना ही पडता है ।
–जल्दबाजी से नुक्सान होता है ।
–कारण के अनुरूप परिणाम ।

ऊपर तौ लहरियौ, पण नीचै के पहरियौ । ८७३
ऊपर तो लहरिया, पर नीचे क्या पहिना ।
–ऊपरी टीमटाम या ऊपरी दिखावा ।
–जो व्यक्ति घर की अपेक्षा बाहर का ज्यादा ध्यान रखे ।
–व्यर्थ का आडबर प्रदर्शित करना ।

ऊपर वागा, हेटै नागा । ८७४
ऊपर ठाटबाट, नीचे सपाट ।
–नितात खोखला व्यक्ति ।
–कृत्रिम प्रदर्शन ।
–झूठी फौन्नियत बघारना ।
पाठा ऊपर वागा, घर म नागा ।

ऊपर माळा, माय कुदाळा । ८७५
ऊपर माला, नीचे कुदाला ।
–परस्पर अर्तावरोधी व्यक्तित्व ।
–कृत्रिम सज्जनता प्रकट करना ।
–जो व्यक्ति दिखने मे महात्मा जैसा हो, पर जिसम कुटिलता कूट कूट कर भरी हो ।

ऊपर राम खड़्यौ देखै । ८७६
ऊपर से राम देख रहा है ।
–हर व्यक्ति के काम पर राम की नजर है ।
–किसी भी व्यक्ति का अच्छा बुरा काम ईश्वर से छिपा नही रहता ।
–मनुष्य को सदैव सत्कर्म ही करना चाहिए ।

ऊपरलौ जाणै । ८७७
ऊपर वाला जाने ।
सदर्भ-कथा चार चोर चोरी करने के लिए जा रहे थे । रास्ते मे शेखचिल्ली मिला । उसने भी साथ चलने के लिए कहा तो वे मान गये । अपनी मूर्खताओ का प्रदर्शन करता हुआ शेखचिल्ली आखिर उनके साथ एक मकान म चोरी करने के लिए घुसा । चोर तो अधेरे घर म प्रवेश करते ही अपने हुनर म लग गये । पर शेखचिल्ली तो शेखचिल्ली ही था । एक जच्चा अगाढ नीद मे सो रही थी । सयोगवश शेखचिल्ली को घी, खाड व आटे का पता लग गया ।

उसने तो तुरत हलुवा बनाना शुरू कर दिया। जच्चा के पास बैठकर वह हलुवा खाने लगा। इस बीच नींद में उस औरत ने अपना हाथ फैलाया। शेखचिल्ली ने सोचा कि बेचारी भूख के मारे हाथ पसार रही है। इसी के घर का सारा माल है, इसे ही न दें तो ठीक नहीं। उसने गरम-गरम हलुवा जच्चा की हथेली पर रख दिया। हथेली जलते ही वह चौंक कर उठी। जोर से चिल्लाई। चोर और शेखचिल्ली सभी हड़बड़ाकर जहां जगह मिली वहीं दुबक गये। शेखचिल्ली छींके की रस्सी पकड़ कर ऊपर चढ़ गया। घर वाले दौड़कर जच्चा के पास आये। उन्होंने चिल्लाने का कारण पूछा तो उसने हथेली पर रखा गरम गरम हलुवा उनके सामने कर दिया। उन्होंने फिर पूछा कि हलुवा कहां से आया, किसने दिया ? तब वह अपनी अनभिज्ञता प्रकट करती हुई कहने लगी कि मैं कुछ नहीं जानती, ऊपर वाला [भगवान] जाने कि यह सब क्या हुआ। शेखचिल्ली ने समझा कि यह तो सारी जोखम उसी के गले पड़ रही है। तब वह अधीर-सा होकर बोला : वाह, मैं अकेला ही क्या जानूं, मेरे चार खास साथी तो नीचे ही कहीं दुबके हुए हैं। उनका भी पता लगाओ। साथी शेखचिल्ली की मूर्खता समझते ही वहां से भगे। इस तरह शेखचिल्ली हर बार ऐसी ही बेढब मूर्खताएं करता ही रहता है।

—अपनी नासमझी से दूसरों को आफत में फंसा देना।
—नादान साथी दुश्मन से भी बदतर होता है।

ऊपर सूं ईं ऊजळ धोळचा दीसं। ८७८
ऊपरी सजावट ही दिख रही है।
—मिथ्या आडंबर।
—सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए दिखावटी प्रदर्शन।
—ऊपरी टीमटाम।

ऊभा पगा री सगाई। ८७९
खड़े पांवों की सगाई।
—सतर्कता और सामर्थ्य से ही सफलता मिलती है।
—जो शक्तिशाली है उसी की विजय होती है।
—प्रत्येक काम में होशियारी वाञ्छनीय है।
पाठा : ऊभा पगा री चाकरी।

ऊभी आई आडी जाऊं। ८८०
खड़ी आई और लेटी जाऊंगी।
—ससुराल में दुलहिन अपने पांवों चलकर खड़ी प्रवेश करती है और मरने पर अर्थी पर लेटी हुई बाहर निकलती है।
—अपने अधिकार का दावा जतलाना।
—औरत का घर पर पूर्ण स्वामित्व रहता है, उसे इस अधिकार से वंचित रखना संगत नहीं।

ऊभी खेती अर ग्याबण गाय रौ काई भरोसौ। ८८१
खड़ी फसल और ग्याभिन गाय का क्या भरोसा।
—खड़ी फसल न जाने कब नष्ट हो जाय। ग्याभिन गाय न न मालूम कब खराब हो जाय। पूर्णतया सुधरने के बाद ही उनके लाभ की आशा करनी चाहिए।
—जो बात पूर्णतया विश्वसनीय न हो।

ऊभै खेजड़ै बेज कोनीं पड़ै। ८८२
खड़ी खेजड़ी छेद नहीं पड़ता।
—केवल जल्दबाजी करने से ही कोई काम सम्पन्न नहीं होता।
—हर काम के लिए वाञ्छित समय अपेक्षित है।
—धैर्य व शांति से ही काम संपूर्ण होता है।
पाठा : ऊभै लकड़ै वेज कोनी पड़ै।

ऊभौ मूतै सूत्यौ खाय, ऊकौ दाळद कदे न जाय। ८८३
खड़ा मूते, लेटा खाय, उसका दारिद्रय कभी न जाय।
—उपरोक्त दोनों बातें आलस्य की निशानी है। स्पष्ट है कि आलसी व्यक्ति का दारिद्रय मिट नहीं सकता।
—सामाजिक प्रचलन के विरुद्ध काम करने वाला व्यक्ति सपन्न व सुखी नहीं हो सकता।
पाठा . उभौ मूतै सूतौ खाय, जिणरौ दाळद कदै न जाय।

ऊभौ रूंख सूखै ज्यूं सूखै। ८८४
खड़े पेड़ की तरह सूखे।
—फलते-फूलते विनष्ट होना।
—सुख के साथ साथ अंत में दुखी होना।
—किसी के श्राप से पीड़ित होना।

ऊमर रा दिन ओछा करै। ८८५
उम्र के दिन कम कर रहा है।
—जैसे-तैसे गुजर-बसर करना।
—दुख के दिन व्यतीत करना।

-किसी तरह जीवित रहने का जुगाड़ बिठाना।

ऊमर गैंत अकल आवै। ८८६

उम्र के साथ अक्ल आती है।

-जन्म से ही कोई मूर्ख या बुद्धिमान नही होता। बुद्धि समय के साथ उम्र बढने से स्वतः ही आती है।

-समय को ताक पर रख एक दिन मे ही सब कुछ सिखाया नही जा सकता।

-बुद्धि अनुभव के साथ साथ जुडती रहती है।

ऊरण वाळो ऊरसी, राख बंदा विसवास। ८८७

अनाज देने वाला अनाज देगा, हे बंदे विश्वास रख।

देखिये— क स ७७१

ऊ ई कुहाडं, ऊ ई बांसं। ८८८

वही कुल्हाडी, वही बांस।

देखिये— क. स ६६१

ऊंघ नै बिछावण नीं, भूख नैं लगावण नीं। ८८९

नींद को बिछौना नही भूख को लगावन नही।

लगावण = रोटी के साथ खाने के लिए सब्जी, आचार, चटनी, दही या दूध इत्यादि चीजें।

-नींद आती हो तो बिस्तर की कोई दरकार नहीं, पत्थर पर भी आ जाती है। भूख लगी हो तो रूखी-सूखी कैसी भी रोटी मीठी लगती है। बस रोटी भर होनी चाहिए।

-आवश्यकता कोई भी अवरोध नही मानती।

-मजबूरी के आगे झुकना पडता है।

ऊंघियोडा नैं जगावणो सोरौ पण जागता नैं जगावणौ दोरौ। ८९०

सोते को जगाना आसान पर जगे हुए को जगाना मुश्किल।

-जो व्यक्ति जान कर अनजान बने तो उसे क्योंकर समझाया जाय।

-भूले हुए को रास्ता बताना आसान पर कोई रास्ता जानना ही नही चाहे तो उसे क्योंकर बताया जाय।

-अनभिज्ञ को समझाना सहज है, पर जो अनभिज्ञ होते हुए भी अभिज्ञता की डींग मारे उसे समझाना दुश्वार है।

ऊंघता नैं बिछावणो लाधो। ८९१

सोते हुए को बिस्तर मिला।

-सुयोग घटित होना।

-इच्छित वस्तु की पूर्ति होना।

-आवश्यकता के अनुसार प्राप्ति होना।

पाठा: ऊंघता नैं माचो लाधो।

ऊंघाया नैं बिछावणो लाधो।

ऊंघै थी'र बिछाई लाधगी।

ऊचलै पावड़ियै पग दीनो। ८९२

ऊपर की सीढी पर पांव धरा।

-कुछ न कुछ उन्नति ही की।

-अधिकांशतया यह कहावत व्यंग या परिहास मे काम आती है जब कोई व्यक्ति दिन ब दिन ज्यादा बिगडे या ज्यादा बदनाम हो।

ऊंचा चढ़नै देखो, घर घर ओ ई लेखो। ८९३

ऊपर चढकर देखिये घर घर यही हिसाब।

-हर घर का यही चलन है।

-सभी घरो मे कुछ न कुछ बुराई, गडबड व पोल इत्यादि तो रहती ही है।

-कोई भी घर किसी न किसी कमजोरी से अछूता नहीं रहता।

ऊंची दुकान, फीका पकवान। ८९४

ऊंची दुकान, फीके पक्वान।

-दुकान की सजावट तो शानदार पर मिष्ठान फीके व हलके।

-नाम बड़ा आचरण बुरा।

-शौहरत के अनुरूप व्यवहार न होना।

ऊंचै गढा रा ऊंचा कांगरा। ८९५

ऊंचे गढो के ऊंचे ही कगूरे।

-बडे आदमियो की बडी बातें।

-श्रीमतो की प्रतिष्ठा के अनुरूप ही उनके ठाट-बाट होते हैं।

-बडप्पन को बनाये रखने के लिए वैसा ही खर्च-खाता रखना पडता है।

ऊंचौ गढ गिरनार, नीचौ आबू ई कोनीं। ८९६

ऊंचा गढ गिरनार, नीचा आबू भी नहीं।

-पारस्परिक तुलना मे कोई दो बातें, दो व्यक्ति या दो शक्तियां बराबर हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

-गुण, अवगुण दोनो मे कोई एक दूसरे से बढकर हो तब भी इस कहावत का प्रयोग होता है।

ऊंट ऊंट री सूघनै रहसी । ८९७

ऊट ऊट की सूघता रहेगा ।

–ऊट एक दूसरे के चूतड सूघते रहते हैं ।

–जब दो हीन व्यक्तियो का एक-सा हीन आचरण हो ।

–हीन स्वभाव वाला व्यक्ति हीन हरकत करके ही रहता है ।

ऊट किसी कड बैसं । ८९८

ऊट किस करवट बैठता है ।

सदर्भ कथा : किसी कुजडे और कुम्हार ने एक ऊट किराये पर किया । बोरे की एक बाजू कुम्हार ने मिट्टी के बर्तन भरे व दूसरी बाजू कुजडे ने शाक सब्जी भरी । रास्ते चलते समय ऊट रह रहकर कुजडे की सब्जी मे मुह मारने लगा । तब कुम्हार ने अपने धधे की डीग मारते हुए कहा—मेरा धधा कितना अच्छा है, कैसा भी भूखा जानवर मिट्टी के बर्तनो मे मुह नही मारता । तुमने यह कैसा पेशा अख्तियार किया, जिसकी सभाल रखना भी सभव नही । तब कुजडे ने जवाब दिया — सभी व्यक्ति एक धधा तो कर नही सकते । हर धधे की अपनी-अपनी अच्छाई बुराई है । तुम्हें शेखी बघारना शोभा नही देता । देखें, ऊट किस करवट बैठता है । तब बाद मे सोच समझकर अपनी राय देना । शहर की हाट के सामने ऊट को बिठाया गया तो वह मिट्टी के बर्तन की तरफ लेट कर पसर गया । सारे बर्तन चूर चूर हो गये । शाक-सब्जी का कुछ नही बिगडा ।

–अत मे क्या घटित होकर रहता है इसका पहिले पता नही लगता ।

–परिणाम को अच्छी तरह जाने बिना निर्णय करना सगत नही ।

ऊट तो कूदै ई कोनीं अर बोरा पैली कूदण लागै । ८९९

ऊट तो कूदता ही नही और बोरे पहिले कूदने लगते हैं ।

–किसी पचायती मे खामखा असबधित या अनधिकृत व्यक्तियो की टाग अडाना ।

–दूसरो के बल पर जोर जतलाना ।

–बेकार उछल-कूद करके अपनी अहमियत प्रकट करना ।

ऊट नीं कूदिया बोरा कूदिया, ९००
बोरा मायला छाणा कूदिया ।

ऊट नही उछला बोरे उछले,
बोरो मे भरे कडे उछले ।

–किसी तीसरे के जोर पर ही उछलना ।

–खामखा अहकार प्रदर्शित करना ।

–जो व्यक्ति हमेशा दूसरो की शक्ति का जोश बघारता हो तथा उसका अपना स्वय कोई महत्त्व न हो ।

ऊंट तो अरडावता ई लदै । ९०१

ऊट तो चिल्लाते हुए लादे जाते हैं ।

–एक बार जिस काम मे हाथ डाल दिया, फिर निरतर प्रतिरोध होने पर भी पीछे नही हटना चाहिए ।

–जिनका काम प्रतिरोध करना है, वे तो प्रतिरोध करते ही रहते है और काम करने वाले व्यक्ति प्रतिरोध के बावजूद अपनी धुन मे लगे रहते हैं ।

पाठा ऊट तो अरडावता पिताणीजै ।

मिलाइये—क स. १५३

ऊट खुडावै, गधो डामीजै । ९०२

ऊट लगडाये और गधे को दागा जाय ।

–अपराध कोई करे और सजा किसी को मिले ।

–किसी दूसरे के पाप का दड भोगना ।

मिलाइये—क. स १५४.

ऊट गम जावै तो कावळियो खोस लेजो । ९०३

ऊट खो जाये तो कबल छीन लेना ।

सदर्भ-कथा : किसी एक व्यक्ति के पास ऊट था । जगल मे चराने की समस्या थी । यदि कोई जिम्मेवार चरवाहा मिल जाय तो वह निश्चित हो जाय । एक दिन उसकी चिंता निवारण करने के लिए एक चरवाहा उसके पास आया । ऊट के मालिक ने पूछा — क्या तुम बडी सावधानी से जगल मे ऊट चरा ला सकते हो । चरवाहे ने कहा कि वह इस काम मे प्रवीण है । अच्छी तरह जगल मे ऊट चरा कर शाम को घर ले आयेगा । तब ऊट के मालिक ने आखिरी शका की — यदि ऊट खो गया त ९१ क्या हर्जाना देगा । इस पर चरवाहे ने तुरत जवाब दिया पहली बात तो ऊट खोयेगा ही नही, यदि किसी सयोग वश खो जाय तो मेरी कबल छीन लेना ।

–बडी चीज के बदले छोटा एवजाना देना ।

–मामूली-सा हर्जाना देकर अपनी भारी गलती से मुक्त होने की चेष्टा करना ।

–अपनी नगण्य चीज का भी बहुत अधिक मोल आकना

तथा इसके विपरीत दूसरे की मूल्यवान वस्तु का अकिंचन महत्त्व समझना।
–यह कहावत बेहद नादान व अत्यधिक होशियार व्यक्ति दोनों के लिए प्रयुक्त होती है।
पाठा. ऊट खो जाय तो मेरी टोपली उतार लिए।

ऊंट गम जावै तो म्हनै फोट कै दीजै। ९०४
ऊट खो जाय तो मुझ पर लानत भेज देना।
संदर्भ-कथा: किसी के घर रात को एक अतिथि ऊट पर चढ कर आया। मेजवान ने बड़े आदर पूर्वक उसे अपने घर ठहराया। अतिथि ने खाना खाने के पश्चात् सोने के पूर्व ऊट को अपने पास ही बाध रखना चाहा, ताकि रात को कही खो न जाय या कोई चोर उचक्का उसे खोलकर न ले जाय। तब मेजवान ने कहा कि ऊट की खातिर कतई चिंता करने की जरूरत नही। बाहर सामने वाले पेड से ही बधा रहने दो। इस पर भी अतिथि ने शका की—यदि ऊट खो गया तो। मेजवान ने जोर देकर कहा: ऊट खो जाये तो मुझे फोट [लानत] कह देना। अतिथि शिष्टाचार के नाते सो गया। मेजवान ने उसके साथ जाल-साजी की। उसने ही जानकर ऊट को पार करवा दिया। फिर आधी रात को वह अतिथि के पास आया। उसे जगाकर कहने लगा—सचमुच, तुम्हारा ऊट तो कोई ले गया। अब तुम्हें फोट-वोट कहना हो स ोकह डालो। ऊट खो जाने पर यही बात तय हुई थी।
–भारी गलती करके बहुत थोड़े ही मे छुटकारा पाने की चेष्टा करना।
–खामखा की तथ्यहीन जिम्मेवारी बरतना।
–विश्वास दिलाकर धूर्तता से किसी के साथ विश्वासघात करना।

ऊट घी देतां ई अरड़ावै अर फिटकड़ी देतां ई अरड़ावै। ९०५
ऊट घी दे तो भी चिल्लाये और फिटकडी दे तो भी चिल्लाये
–जिस व्यक्ति को अपने भले-बुरे का रच-मात्र भी बोध न हो।
–मूर्ख व्यक्ति की भलाई की जाय तो भी वह बुराई ही मानता है।
–जिसकी जो आदत होती है, वह भले-बुरे का ध्यान किये बगैर वैसा ही व्यवहार करता है।
पाठा. ऊट तौ फिटकड़ी दिया ई अरड़ावै अर गुळ दिया ई अरड़ावै।

ऊंट चढ़ियौ भीख मांगै। ९०६
ऊट चढा भीख माग रहा है।
–कोई हैसियत वाला व्यक्ति मागने का काम करे तब।
–मर्यादा के विपरीत कोई अशोभनीय काम करना।
–खामखा गरीब बनने का प्रदर्शन करना।
–बड़े व्यक्ति द्वारा कोई हलका काम करना।

ऊट चढ़ै नै कुत्तौ खाय, अणहोणी रौ के उपाय। ९०७
ऊट चढे को कुत्ता खाय, अनहोनी का क्या उपाय।
–भाग्य विपरीत होने पर असभव दुर्घटना भी सभव हो जाती है।
–पूरी सतर्कता व सावधानी बरतने पर भी कोई अप्रत्याशित विपत्ति सिर पर आ पड़े।
पाठा ऊट चढया नै कुत्तौ खायौ।

ऊट चढ्या नै दो दीसै। ९०८
ऊट चढे को दो दिखते हैं।
–बड़ा होने पर दृष्टि दोष हो जाता है।
–बड पद के साथ मदाधता अवश्यभावी है।

ऊट चढ्यौ गुळ खावै। ९०९
ऊट चढा गुड खाये।
–जरूरत से ज्यादा किसी बात का प्रदर्शन करना।
–ऊट की सवारी और गुड का मिठास। दुहरा सुख या लाभ।
–अतिरेक प्रदर्शन भी शोभनीय नही होता।

ऊट चढ्या रौ अर डोकरी रौ कांई साढौ। ९१०
ऊट पर चढे का और बुढिया का क्या साथ।
–साधन सपन्न व गरीब का क्या मेल।
–अनमेल सग-साथियो का निबाह नही हो सकता।

ऊंट चढ्या सै ऊचकै। ९११
ऊट पर चढे सभी कूदते हैं।
–बड़ा पद पाने पर सभी अहकारी हो जाते हैं।
–सपन्नता के साथ अभिमान अवश्यभावी है।
–प्रभुता पाय कहा मद नाही।

ऊंट छोड्यौ आकड़ौ नै बकरी छोड्यौ कांकरौ। ९१२
ऊट ने छोडा आक और बकरी ने छोडा ककर।

ऊट ग्राक के सिवाय सभी कुछ खा जाता है और बकरी ककर के सिवाय सभी कुछ चर जाती है।
ऐसा भ्रष्ट व्यक्ति जो किसी से भी रिश्वत न छोडे या ऐसा दुराचारी व्यक्ति जो अपनी काम तृप्ति के लिए कोई मर्यादा या रक्त सबध का पालन न करे ।
–जो व्यक्ति सभी कुछ स्वाहा कर जाय ।
पाठा : ऊट छोड्यो आक अर बकरी छोड्यो ढाक ।

ऊट डूबै जठै गाडर री काई थाग ! ६१३
ऊट डूबे वहा भेड की क्या बिसात !
–अनुचित दुस्साहस का काम करना ।
–सामर्थ्य से परे व्यर्थ की महत्त्वाकाक्षा रखना ।
–कोई छोटा व्यक्ति बडा काम करने की डीग मारे तब परिहास मे इस कहावत का प्रयोग होता है ।

ऊट नारेळ गिटग्यो । ६१४
ऊट नारियल निगल गया ।
–दुष्ट व्यक्ति कोई चीज हथियाले तो उससे वापस लेना ग्रासान नही । पर साथ मे वह चीज उसके लिए भी कष्टप्रद हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

ऊंट नै ऊठता ई ढांण नीं घातणो । ६१५
ऊट को उठते ही तेज नही चलाना चाहिए ।
–काम की शुरुआत मे ही तेजी नही करनी चाहिए, क्योंकि वह अत तक उसी गति से निभ नही पाती ।
–शनै शनै धैर्य व शान्ति से ही प्रत्येक काम करना चाहिए।

ऊट पूछडा सू माखी नीं उडा सकै । ६१६
ऊट पूछ से मक्खी नही उडा सकता ।
–बडे से बडे व्यक्ति की कुछ न कुछ विवशता तो होती ही है ।
–बडा व्यक्ति जो अपने हाथ से छोटा-सा भी काम न कर सके ।
–हर व्यक्ति की अपनी मजबूरी होती है ।
–समर्थ व्यक्ति भी कही न कही असमर्थ होता है ।

ऊट, बटाऊ, पावणो ज्यू खांचै त्यू जाय । ६१७
ऊट, राहगीर व अतिथि खीचने पर तेज चलते हैं ।
–ऊट की मुहरी खीचने पर वह उलटा तेज चलता है। राहगीर व अतिथि को रुकने की मनुहार करने पर भी वे जाने की उतावली प्रकट करते हैं ।
–कहने के विपरीत काम करने वाले व्यक्ति के लिए ।

ऊंट भार सू गियौ, पण टींटा सूं तौ नीं गियौ । ६१८
ऊट बोझ लादने से गया, पर पादने से तो नही गया ।
–सामाजिक व आर्थिक अधिकार छिन जाने पर भी मनुष्य के प्राकृतिक अधिकार नही छीने जा सकते।
–किसी भी व्यक्ति का समस्त अस्तित्व नही मिटाया जा सकता ।
–किसी को भी सभी प्रकार के अधिकारो से वचित नही किया जा सकता ।
पाठा : ऊट लादण सू गियौ पण पादण सू तौ नी गियौ ।

ऊंट मरया कप्पड सिर बोझ । ६१९
ऊट मरे तो कपडे पर भार ।
सदर्भ-कथा : कपडे का एक व्यापारी ऊट पर ढोकर अपना कपडा गाव-गाव बेचा करता था । एक बार राह मे उसका ऊट मर गया । उसने मरे ऊट की क्षति-पूर्ति कपडे का भाव बढा कर ग्राहकों से वसूल कर ली ।
–एक मद की हानि को दूसरे मद से पूरी कर लेना ।
–अपनी हानि का एवजाना दूसरो से वसूल कर लेना ।

ऊंट मरै जद मारवाड़ साम्ही मूडौ करै । ६२०
ऊट मरता है तब मारवाड की तरफ मुह करता है ।
–मरते समय आत्मीय-जनो की तरफ ध्यान जाता है ।
–मरते समय जन्मभूमि की याद अवश्य आती है ।
–विदेश मे जीवन-यापन भले ही किया जाय पर स्वदेश की याद कभी मिटती नही ।
पाठा ऊट मरै जद आथूण कानी जोवै ।
ऊट मरै जद लकाऊ मूडौ करै ।

ऊंट मरै जद चींचडा ई मरै । ६२१
ऊट मरता है तब चींचडे भी मरते हैं ।
–चीचडे=गाय, बैल, भैंस, ऊट इत्यादि जानवरो की देह पर चिपकने वाले कीडे जो खून चूसते रहते हैं ।
–आश्रयदाता के मरने पर उसके आश्रय मे पलने वाले सभी प्राणियों की हालत बिगड जाती है ।
–जिस व्यक्ति की मृत्यु का प्रभाव ग्रनेक व्यक्तियों पर पडता हो ।

पाठा खोपी मरै जद चीचड़ा ई मरै ।
बळद रै सागै चीचडा ई मरै ।

ऊट बळद रौ काई जोड़ौ ! ६२२
ऊट बैल का क्या जोड़ा !
–असगत तारतम्य के बीच पारस्परिक सामजस्य नही बैठ सकता ।
–बेमेल जोडी के प्रति परिहास ।
–*जिसकी सगति सदिग्ध है उसकी उपयोगिता भी सदिग्ध है।*
पाठा ऊट बाळदै मेळ नी है ।

ऊट बिलाई ले गई, हाजी-हाजी कैणौ । ६२३
ऊट बिल्ली ले गई, हाजी हाजी कहना ।
–बडे आदमियो की सही या गलत हर बात के लिए हा म हा मिलाना ।
–ठकुर सुहाती बात करना ।
–*अपनी इच्छा के विरुद्ध भी एकदम झूठी बात का* समर्थन करना ।
–समर्थ व्यक्तियो का अधा समर्थन निर्बल व्यक्ति की विवशता है ।

ऊट बेच्यौ कितरै के लायौ जितरै । ६२४
ऊट बेचा कितने म कि लाया जितने मे ।
सदर्भ-कथा· एक व्यक्ति कही से चुरा कर ऊट लाया । लोगो द्वारा पूछने पर उसने बताया कि वह ऊट खरीद कर लाया है । बाडे म ऊट बाधकर वह बेखबर अपने घर मे सो गया । भला उसका माल कौन चुरा सकता है ! चोरी करने का अधिकार तो केवल उसी का ही है। वह जरूरत से ज्यादा *आश्वस्त था । सयोग की बात कि उसकी निश्चितता के* बावजूद भी कोई उसका ऊट चुरा कर ले गया । सवेरे ऊट नही दिखने पर लोगो ने उससे पूछा कि ऊट बेच दिया क्या ? उसके मुह से हामी सुनने पर लोगो न जिज्ञासा प्रकट की कि ऊट कितने म बेचा । तब उसने उत्तर दिया कि जितने म खरीदा उतने ही म बेच दिया ।
–किसी भी काम में लाभ न होने पर यह कहावत प्रयुक्त होती है ।
–जैसा किया वैसा ही फल पाया ।
–अत्यधिक दौड धूप के बाद उसका रच मात्र भी फल न मिलना ।

ऊट मे सीधोपणौ कांई दीसै , वौ तौ मूतै ई डोढ़ौ । ६२५
ऊट में सीधापन कैसा, वह तो पेशाब भी टेढा करता है ।
–टेढा व्यक्ति कभी भी अपना टेढापन नही छोडता ।
–*कुटिल स्वभाव वाला व्यक्ति कुटिल ही आचरण करता है।*
–दुष्ट प्रकृति वाले व्यक्ति से सुकर्म की आशा करना व्यर्थ है ।

ऊट मोटौ हुवै ज्यू लारै मूतै । ६२६
ऊट बडा होने पर पीछे की ओर पेशाब करता है ।
–दुष्प्रवृत्ति वाले व्यक्ति की कुटिलता बडा होने पर प्रकट होती है ।
–बढती उम्र के साथ बुरे लक्षण सीखने वाले व्यक्ति के लिए भी *यह कहावत प्रयोग म ली जाती है ।*
–स्वभावगत लक्षण उम्र के साथ चरितार्थ होते हैं ।

ऊट रा गुल्ला स्याळियौ कद खावै ! ६२७
ऊट का ढब्बू सियार कब खाये !
–*सीजा हुआ मस्त ऊट जब बलबलाता है तो उसके मुह से* फूला हुआ ढब्बू निकलता है । पचतत्र म एक सियार इस तरह के ऊट का पीछा करता है—यह सोच कर कि जब फूला हुआ ढब्बू नीचे गिरेगा तो वह चट से उसे खा जायेगा। बहुत दूर तक पीछा करने पर भी वह भ्रामक ढब्बू नीचे नही गिरा तो सियार निराश होकर लौट जाता है ।
–भ्रामक आशाओ का परिणाम निराशा ही होती है ।
–*नासमझी की दौड धूप सदा व्यर्थ जाती है ।*
पाठा ऊट रौ होठ कद पडै अर कद खाऊ ।

ऊट री किसी कळ सीधी ! ६२८
ऊट का कौन सा हिस्सा सीधा !
–*कुटिल व्यक्ति का कोई भी काय सीधा नही होता ।*
–सभी तरह के अवगुणो से सम्पन्न व्यक्ति के लिए ।

ऊट री खोड ऊट ई भुगतै । ६२९
ऊट का ऐब ऊट ही भुगतता है ।
–कुटिल व्यक्ति को *अपने कुकर्मों का दुष्परिणाम भोगना ही* पडता है ।
–दुष्ट व्यक्ति को आखिर अपनी दुष्टता का परिणाम मिल कर रहता है ।

-अतत बुरा व्यक्ति सबसे ज्यादा अपना ही बुरा करता है।
पाठा : ऊट री खोड ऊट नैं वोवै ।

ऊट री खोड ऊट ई पावै , ६३०
चाचियौ ऊट धणी नैं खावै ।
ऊट का ऐब ऊट ही पाये ,
चाचिया ऊट स्वामी को खाये ।
-जिस ऊट का निचला होठ छोटा हो , फलस्वरूप उसके दात बाहर दिखलाई पडते हो , उसे चाचिया ऊट कहते हैं । यह एक अशुभ लक्षण माना जाता है । ऐसी लोक मान्यता है कि इस अशुभ लक्षण से घर के मालिक को खतरा रहता है। ऊट का यह अवगुण मालिक के लिए जोखिम की निशानी है।
-कुटिल व्यक्ति दूसरो के लिए भी खतरनाक होता है ।

ऊट री लाबी गावड काटण सारू थोडी व्है । ६३१
ऊट की लम्बी गर्दन काटने के लिए नही होती ।
-अतिरिक्त धन लुटाने के लिए नही होता ।
-हर चीज का अपना औचित्य है , दूसरो की रुचि अरुचि से उसका कोई सरोकार नही ।

ऊट री लाबी गावड कोई दो बळा नीं वाढीजै । ६३२
ऊट की लम्बी गर्दन कोई दो बार काटने के लिए नही होती।
-एक बार की हुई गलती के लिए दुहरा दड नही मिलना चाहिए।
-मौत की सजा दो बार नही मिलती ।
-व्यक्ति की अपेक्षा अपराध के अनुसार ही मुनासिब सजा मिलनी वाछित है।

ऊट री चोरी अर छानै मानै। ६३३
ऊट की चोरी और चुपके चुपके ।
-किसी भी बडे कार्य को छिपाकर नही किया जा सकता।
-जोखिम के काम मे जोखिम उठानी ही पडती है।
-बुरे काम के बुरे फल से बचा नही जा सकता ।
-काम की गुरुता के अनुसार ही उसका स्वत प्रचार हो जाता है ।

ऊट री जाड मे जीरा रो काई पतौ पडै ! ६३४
ऊट के मुह म जीरे का क्या पता लगे !
-भारी खुराक वाले व्यक्ति का एक निवाले से पेट नही भरता । -बडे भारी रिश्वतखोर को थोडे मे खुश नही किया जा सकता ।
-उपयुक्तता को नजरअन्दाज नही किया जा सकता ।
पाठा . ऊट रै मूडा म जीरौ । ऊट रा पेट मे जीरा रौ बघार। ऊट रा मूडा मे जीरा सू काई व्है !

ऊट री नस बाकी कै पाधरी कठा सू है ? ६३५
ऊट की गर्दन टेढी , कि सीधा कहा से है ?
-कुटिल व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से ही कुटिल होता है ।
-जो व्यक्ति बेइन्तहा दुष्ट, नालायक तथा बदमाश हो उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है ।
पाठा ऊट थारी नस आटी के माहजो सूवौ की है ?

ऊंट री पूठ नीं लदै तौ गळै बधै । ६३६
ऊट की पीठ पर नही लदे तो उसके गले बधे ।
-जिसका जो काम है , सम्पूर्ण रूप से वह उसी को पूरा करना पडता है ।
-बेगारी बगार से बच नही सकता ।
-जिसे भार ढोना है , उसका कही भी निस्तार नही ।

ऊट री पूछ सू ऊट बध्योडौ । ६३७
ऊट की पूछ से ऊट बधा हुआ ।
-एक दूसरे की पूछ व नकेल मे बधी ऊंटो की कतार स्वत चलती रहती है । कोई भी ऊट इधर उधर नही होता ।
-गुलामी स्वय अपने ही बधनो से जकडी रहती है ।
-प्रत्येक की दासता एक दूसरे से प्रतिबधित है ।
-अनुशासन म रहने के लिए यत्किंचित् बधन अनिवार्य है।

ऊंट रै बाल्हौ ऊट सू ई दिरीजै । ६३८
ऊट का चुम्मा ऊट ही ले सकता है ।
-बडो का काम बडो से ही पटता है ।
-हर व्यक्ति हर काम म कुशल नही होता ।
-जिसकी जैसी बिसात होती है वह वैसा ही कार्य कर सकता है ।
-औकात के अनुसार सफलता ।

ऊट रै सागै मिल्नी । ६३९
ऊट के साथ बिल्ली ।
सदर्भ - कथा · किसी एक व्यक्ति का ऊट खो गया । खूब ढूढने पर भी जब ऊट नही मिला तो उसने यह ऐलान किया कि

जो कोई ऊट ढूढ कर लायेगा, उसे वह दो टके मे ऊट बेच देगा। उसे विश्वास था कि अब ऊट तो मिलने से रहा, फिर उस तरह के ऐलान मे क्यो कोताई बरती जाय। सयोग की बात कि वह ऊट किसी व्यक्ति को मिल गया। ऊट वाले व्यक्ति को तुरत एक चालाकी सूझी। ऊट के गले से उसने एक बिल्ली बाधी। बिल्ली की कीमत उसने ऊट से भी ज्यादा रखी। जो व्यक्ति टके मे ऊट खरीदेगा, उसे साथ मे बिल्ली भी खरीदनी होगी। भला यह महगा सौदा कौन करता! ऊट वाले की बात भी रह गई और उसका ऊट भी रह गया।

–कथनी और करनी का बेइन्तहा विरोध।

–धूर्त मनुष्यो का विश्वास करने पर सदैव धोखा ही मिलता है।

ऊट रौ पाद धरती रौ नीं कोई असमान रौ। ९४०

ऊट का पाद न धरती का और न आकाश का।

–जिस वस्तु की कही कोई उपयोगिता न हो।

–त्रिशकु वाली दशा।

–जो व्यक्ति किसी के लिए किसी काम का न हो।

ऊट रौ मतौ साजी साह। ९४१

ऊट की मशा शाहजी पर निर्भर।

–भाडे पर ऊट ले जाने वाला सेठ जहा ऊट ले जायेगा वही ऊट के मालिक को जाना होगा, स्वय उसकी इच्छा अनिच्छा कुछ भी माने नही रखती।

–जो व्यक्ति दूसरो के इशारे पर चले।

–असहाय व्यक्ति अपनी स्वेच्छा के अनुसार काम नही कर सकता।

ऊट री रोग रेबारी जाणं। ९४२

ऊट का रोग रेबारी [गडरिया] जाने।

–अनुभव के साथ योग्यता स्वत हासिल होती है।

–गवार की बात गवार ही समझता है।

–जो व्यक्ति आसानी से पहिचाना नही जा सके।

ऊट लाबौ तौ पूछ छोटी। ९४३

ऊट लम्बा तो पूछ छोटी।

–कोई भी व्यक्ति सभी तरह से पूर्ण नही होता।

– प्रकृति स्वयमेव अपना सामजस्य स्थापित कर लेती है।

– हर सपन्न व्यक्ति मे कुछ न कुछ कमी रह जाती है।

–किसी भी व्यक्ति की सभी इच्छाए पूर्ण नही होती।

ऊट वाळी पकड़। ९४४

ऊट वाली पकड।

–मुह से पकडने के बाद ऊट बडी मुश्किल से छोडता है।

–जिस व्यक्ति की मार बडी घातक हो।

–जिद्द पकडने के बाद भी जो नासमझ व्यक्ति आसानी से अपनी बात नही छोडे।

ऊट होवं तौ झं-झं करां। ९४५

ऊट हो तो झं-झं का सबोधन करें।

–ऊट की सवारी के लिए उसे पहिले बिठाना पडता है। बिठाने के लिए मुहरी के झटके दे-दे कर मुह से झ झं का 'उच्चारण' करना पडता है।

–पास मे कुछ होने पर ही उसका मजा लिया जा सकता है।

–सपन्न व्यक्ति ही गुल्छर्रे उडा सकता है।

ऊटा रं कुण छप्पर छाया? ९४६

ऊटो के किसने छप्पर छाये?

–मूर्ख या गवार व्यक्ति की कोई परवाह नही करता।

–उज्जड व्यक्ति को हिफाजत की जरूरत नही होती।

–जो व्यक्ति हिफाजत के योग्य न हो।

ऊंटा रं गळवाणी सू काई व्हं? ९४७

ऊटो के रबडी से क्या हो?

–अनुपयुक्त खुराक से पेट नही भरता।

–अपर्याप्त सहयोग से बात नही बनती।

–अत्यधिक लालची व्यक्ति थोडे से खुश नही होता।

ऊटा रं ब्याव मे गधेडा गीत गावं। ९४८

ऊटो के विवाह मे गधे गीत गाते है।

–मूर्ख व गवारो की मडली मे गवार ही शोभा देते हैं।

–जो व्यक्ति जिस योग्य होता है उसे वैसा ही आदर एव प्रतिष्ठा मिलती है।

–गवारो के अनुरूप गवार अपने-आप मिल जाते हैं।

ऊंडो बावणियू र घूस को देवणियू हार मे कोनीं रंवं। ९४९

गहरा बोनेवाला और घूस देने वाला हार मे नही रहता।

–रिश्वत देने वाले का सर्वत्र काम बन जाता है।

ऊदर छोटौ अर पूछड मोटौ । ६५०

चूहा छोटा और पूछ बडा ।

–अदो व्यक्ति की कृत्रिम अक्खड ।

–हैसियत मे ज्यादा दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए ।

ऊदर तौ बिल मे मावै नीं, पूछडं छाज बिलगाडै । ६५१

चूहा तो बिल मे समाये नही, पूछ से सूप बाधे ।

–योग्यता से कही ज्यादा जिम्मेवारी ओढने वाले व्यक्ति के लिए ।

–थोथी नेतागिरी बघारने वाले व्यक्ति के लिए ।

–व्यर्थ की अडचन झेलने वाले व्यक्ति के लिए भी इस कहावत का प्रयोग होता है ।

–क्षमता से परे काम की डीग मारने वाला व्यक्ति ।

पाठा ऊदरौ आप तौ बिल म इं नी मावै, लारै मोटौ ढीरौ बाधै ।

ऊदरा ई राजी व्है तौ काम करजौ । ६५२

चूहे भी खुश हो तो काम करना ।

–घर के हर अकिंचन व्यक्ति की रजामदी होने पर ही कोई काय करना चाहिए ।

–ऐसा काम करना जिससे कोई नाखुश न हो ।

ऊदरा थडियां करै । ६५३

चूहे डड पेलते हैं ।

–जिस घर म चूहे भी भूखो मरते हो ।

–घर म फाकामस्ती होते हुए भी जो व्यक्ति बाहर रोब झाडे ।

–भुखमरे व्यक्ति के दिखावे पर व्यग ।

ऊदरां रै बिलां मे ई साप रा बिल लाध्या करै । ६५४

चूहा के बिल म ही साप के बिल मिला करते हैं ।

–साप स्वय अपना बिल नही खोदते, वे चूहो के बिलो पर ही अपना कब्जा कर लेते हैं ।

–छोटी बात स भी खतरा पैदा हो सकता है ।

ऊदरी रा जाया तौ दरडा ई खोदसी । ६५५

चुहिया के बच्चे तो बिल ही खोदेंगे ।

–जन्मजात प्रवृत्ति के अनुसार आचरण ।

–निकृष्ट व्यक्ति निकृष्ट ही काम करता है ।

–बुरे स्वभाव वाले से अच्छी आशा रखना व्यथ है ।

पाठा ऊदरी रै जाये नै खोदण सै काम ।

ऊदरै रौ बिल को जोईजै नीं । ६५६

चूहे का बिल नही देखा जाता ।

–नगण्य या आशका रहित बात की परवाह नही की जाती ।

–अनुपयोगी चीज का कौन पीछा कर ।

ऊधा करमा रौ । ६५७

औधे भाग्य वाला ।

–अभागे व्यक्ति के लिए ।

ऊधा पडया री डडौत । ६५८

औंधे पडे का दडवत ।

–उल्टे मुह गिर पडे तो दडवत ही सही ।

–बिगडे हुए काम को खामखा सुधारने की कुचेष्टा करना ।

–चलते रास्ते उल्लू सीधा करने वाले व्यक्ति के लिए ।

ऊधा माथा रौ । ६५९

औधे सिर वाला ।

–मूर्ख या बुद्धिहीन व्यक्ति के लिए ।

ऊधै माथै नै काना सूदी । ६६०

औंधे सिर स कानो तक ।

सदर्भ किसी एक व्यक्ति के खेत म फसल निहायत छोटी थी । सिर्फ चार-पाच इच । उसके मित्र न फसल के बारे मे जानना चाहा कि वह कितनी बडी है । असलियत को छिपाने के साथ साथ वह झूठ भी नही बोलना चाहता था । इसलिए उसन मित्र को उत्तर दिया कि उसकी फसल सिर की तरफ से काना तक लम्बी है ।

–घुमा फिराकर छोटी बात को बडी बनाने की भ्रामक चेष्टा करना ।

–कहने के लहजे म असलियत का छिपाना ।

ऊधौ पडयौ आकास चाटै । ६६१

औंधा पडा आकाश चाटे ।

–अत्यधिक कुशल व्यक्ति के लिए ।

–बढ़तहा साहसी मनुष्य के लिए ।

–जो व्यक्ति कैसी भी विषम स्थिति म हिम्मत न हारे ।

जो कोई ऊट ढूढ कर लायेगा, उसे वह दो टके मे ऊट बेच देगा। उसे विश्वास था कि अब ऊट तो मिलने से रहा, फिर उस तरह के ऐलान मे क्या कोताई बरती जाय। सयोग की बात कि वह ऊट किसी व्यक्ति को मिल गया। ऊट वाले व्यक्ति को तुरत एक चालाकी सूझी। ऊट के गले से उसने एक बिल्ली बाधी। बिल्ली की कीमत उसने ऊट से भी ज्यादा रखी। जो व्यक्ति टके मे ऊट खरीदेगा, उसे साथ मे बिल्ली भी खरीदनी होगी। भला यह महगा सौदा कौन करता! ऊट वाले की बात भी रह गई और उसका ऊट भी रह गया।
—कथनी और करनी का बेइन्तहा विरोध।
—धूर्त मनुष्यो का विश्वास करने पर सदैव धोखा ही मिलता है।

ऊंट रौ पाद धरती रौ नीं कोई असमान रौ। ६४०
ऊट का पाद न धरती का और न आकाश का।
—जिस वस्तु की कही कोई उपयोगिता न हो।
—त्रिशकु वाली दशा।
—जो व्यक्ति किसी के लिए किसी काम का न हो।

ऊट रौ मतौ साजी साह रौ। ६४१
ऊट की मशा शाहजी पर निर्भर।
—भाडे पर ऊट ले जाने वाला सेठ जहा ऊट ले जायेगा वही ऊट के मालिक को जाना होगा, स्वय उसकी इच्छा अनिच्छा कुछ भी माने नही रखती।
—जो व्यक्ति दूसरो के इशारे पर चले।
—असहाय व्यक्ति अपनी स्वेच्छा के अनुसार काम नही कर सकता।

ऊट रौ रोग रेबारी जांणै। ६४२
ऊट का रोग रेबारी [गडरिया] जाने।
—अनुभव के साथ योग्यता स्वत हासिल होती है।
—गवार की बात गवार ही समझता है।
—जो व्यक्ति आसानी से पहिचाना नही जा सके।

ऊट लाबौ तौ पूछ छोटी। ६४३
ऊट लम्बा तो पूछ छोटी।
—कोई भी व्यक्ति सभी तरह से पूर्ण नही होता।
—प्रकृति स्वयमेव अपना सामजस्य स्थापित कर लेती है।
—हर सपन्न व्यक्ति मे कुछ न कुछ कमी रह जाती है।
—किसी भी व्यक्ति की सभी इच्छाए पूर्ण नही होती।

ऊट वाळी पकड। ६४४
ऊट वाली पकड।
—मुह से पकडने के बाद ऊट बडी मुश्किल से छोडता है।
—जिस व्यक्ति की मार बडी घातक हो।
—जिद् पकडने के बाद भी जो नासमझ व्यक्ति आसानी से अपनी बात नही छोडे।

ऊट होवै तौ झै-झै करां। ६४५
ऊट हो तो झै झै का सबोधन करें।
—ऊट की सवारी के लिए उसे पहिले बिठाना पडता है। बिठाने के लिए मुहरी के झटके दे दे कर मुह से झ झे का 'उच्चारण' करना पडता है।
—पास मे कुछ होने पर ही उसका मजा लिया जा सकता है।
—सपन्न व्यक्ति ही गुल्छर्रे उडा सकता है।

ऊटां रै कुण छप्पर छाया? ६४६
ऊटो के किसने छप्पर छाये?
—मूर्ख या गवार व्यक्ति की कोई परवाह नही करता।
—उज्जड व्यक्ति को हिफाजत की जरूरत नही होती।
—जो व्यक्ति हिफाजत के योग्य न हो।

ऊटा रै गळवाणी सू काई व्है? ६४७
ऊटो के रवडी से क्या हो?
—अनुपयुक्त खुराक से पेट नही भरता।
—अपर्याप्त सहयोग से बात नही बनती।
—अत्यधिक लालची व्यक्ति थोडे से खुश नही होता।

ऊटा रै ब्याव मे गधेडा गीत गावै। ६४८
ऊटो के विवाह मे गधे गीत गाते है।
—मूर्ख व गवारो की मडली मे गवार ही शोभा देते हैं।
—जो व्यक्ति जिस योग्य होता है उसे वैसा ही आदर एव प्रतिष्ठा मिलती है।
—गवारो के अनुरूप गवार अपने-आप मिल जाते है।

ऊडौ बावणियू र घूस को देवणियू हार मे कोनीं रवै। ६४९
गहरा बोनवाला और घूस देने वाला हार मे नही रहता।
—रिश्वत देने वाले का सर्वत्र काम बन जाता है।

ऊदर छोटो अर पूछड मोटो। ६५०

चूहा छोटा और पूछ बडा।

–अदने व्यक्ति की कृत्रिम अक्खड।

–हैसियत से ज्यादा दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए।

ऊन्दर तो बिल मे मावै नीं पूछडै छाज बिलगाडै। ६५१

चूहा तो बिल मे समाय नही पूछ से सूप बाधे।

–योग्यता से कही ज्यादा जिम्मेवारी ओढने वाले व्यक्ति के लिए।

–थोथी नेतागिरी बघारने वाले व्यक्ति के लिए।

–व्यय की अडचन झेलने वाले व्यक्ति के लिए भी इस कहावत का प्रयोग होता है।

–क्षमता से परे काम की डीग मारने वाला व्यक्ति।

पाठा ऊदरो आप तो बिल म ई नी मावै लारै मोटो ढीरो बाधै।

ऊदरा ई राजी व्है तो काम करजो। ६५२

चूहे भी खुश हो तो काम करना।

–घर के हर अकिंचन व्यक्ति की रजामदी होने पर ही कोई काय करना चाहिए।

–ऐसा काम करना जिससे कोई नाखुश न हो।

ऊदरा घडिया करै। ६५३

चूहे डड पल्ते हैं।

–जिस घर म चूहे भी भूखा मरते हो।

–घर म फाकामस्ती होन हुए भी जो व्यक्ति बाहर रोब झाडे।

–भुखमरे व्यक्ति के दिखाव पर व्यग।

ऊदरा रै बिलां मे ई साप रा बिल लाध्या करै। ६५४

चूहो के बिल म ही साप के बिल मिला करते हैं।

–साप स्वय अपना बिल नही खोदते वे चूहो के बिलो पर ही अपना कब्जा कर लेते हैं।

–छोटी बात स भी खतरा पैदा हो सकता है।

ऊदरी रा जाया तो दरडा ई खोदसी। ६५५

चुहिया के बच्चे तो बिल ही खोदेंगे।

–जन्मजात प्रवृत्ति के अनुसार आचरण।

–निकृष्ट व्यक्ति निकृष्ट ही काम करता है।

–बुरे स्वभाव वाले स अच्छी आशा रखना व्यर्थ है।

पाठा ऊदरी रै जायै नै खोदण सै काम।

ऊदरै रो बिल को जोईजै नीं। ६५६

चूहे का बिल नही देखा जाता।

–नगण्य या आशका रहित बात की परवाह नही की जाती।

–अनुपयोगी चीज का कौन पीछा करे।

ऊधा करमा रो। ६५७

औंधे भाग्य वाला।

–अभागे व्यक्ति के लिए।

ऊधा पडया री डडोत। ६५८

औंधे पडे का दडवत।

–उल्टे मुह गिर पडे तो दडवत ही सही।

–बिगडे हुए काम को खामखा सुधारने की कुचेष्टा करना।

–चलते रास्ते उल्लू सीधा करने वाले व्यक्ति के लिए।

ऊधा माथा रो। ६५९

औंधे सिर वाला।

–मूर्ख या बुद्धिहीन व्यक्ति के लिए।

ऊधै माथै नै काना सूदी। ६६०

औंधे सिर से कानो तक।

सदर्भ किसी एक व्यक्ति के खेत म फसल निहायत छोटी थी। सिर्फ चार-पाच इच। उसके मित्र ने फसल के बारे म जानना चाहा कि वह कितनी बडी है। असलियत को छिपाने के साथ-साथ वह झूठ भी नही बोलना चाहता था। इसलिए उसने मित्र को उत्तर दिया कि उसकी फसल सिर की तरफ से कानो तक लम्बी है।

–घुमा फिराकर छोटी बात को बडी बनाने की भ्रामक चेष्टा करना।

–कहने के लहजे म असलियत को छिपाना।

ऊधो पडयो आकास चाटै। ६६१

औंधा पडा आकाश चाटे।

–अत्यधिक कुशाग्र व्यक्ति के लिए।

–बड़ा तहा साहसी मनुष्य के लिए।

–जो व्यक्ति कैसी भी विषम स्थिति म हिम्मत न हारे।

जो कोई ऊट ढूढ कर लायेगा, उसे वह दो टके मे ऊट बेच देगा। उसे विश्वास था कि अब ऊट तो मिलने से रहा, फिर उस तरह के ऐलान मे क्यो कोताई बरती जाय। सयोग की बात कि वह ऊट किसी व्यक्ति को मिल गया। ऊट वाले व्यक्ति को तुरत एक चालाकी सूझी। ऊट के गले से उसने एक बिल्ली बाधी। बिल्ली की कीमत उसने ऊट से भी ज्यादा रखी। जो व्यक्ति टके मे ऊट खरीदेगा, उसे साथ मे बिल्ली भी खरीदनी होगी। भला यह महगा सौदा कौन करता! ऊट वाले की बात भी रह गई और उसका ऊट भी रह गया।

–कथनी और करनी का बेइन्तहा विरोध।
–धूर्त मनुष्यो का विश्वास करने पर सदैव धोखा ही मिलता है।

ऊट रौ पाद धरती रौ नीं कोई असमान रौ। ६४०

ऊट का पाद न धरती का और न आकाश का।
–जिस वस्तु की कही कोई उपयोगिता न हो।
–त्रिशकु वाली दशा।
–जो व्यक्ति किसी के लिए किसी काम का न हो।

ऊट रौ मतौ साजी साह। ६४१

ऊट की मशा शाहजी पर निर्भर।
–भाडे पर ऊट ले जाने वाला सेठ जहा ऊट ले जायेगा वही ऊट के मालिक को जाना होगा, स्वय उसकी इच्छा अनिच्छा कुछ भी माने नही रखती।
–जो व्यक्ति दूसरो के इशारे पर चले।
–असहाय व्यक्ति अपनी स्वेच्छा के अनुसार काम नही कर सकता।

ऊट रौ रोग रेबारी जाणै। ६४२

ऊट का रोग रेबारी [गडरिया] जाने।
–अनुभव के साथ योग्यता स्वत हासिल होती है।
–गवार की बात गवार ही समझता है।
–जो व्यक्ति आसानी से पहिचाना नही जा सके।

ऊट लाबौ तौ पूछ छोटी। ६४३

ऊट लम्बा तो पूछ छोटी।
–कोई भी व्यक्ति सभी तरह से पूर्ण नही होता।
– प्रकृति स्वयमेव अपना सामजस्य स्थापित कर लेती है।
– हर सपन्न व्यक्ति मे कुछ न कुछ कमी रह जाती है।
–किसी भी व्यक्ति की सभी इच्छाए पूर्ण नही होती।

ऊट वाळी पकड। ६४४

ऊट वाली पकड।
–मुह से पकडने के बाद ऊट बडी मुश्किल स छोडता है।
–जिस व्यक्ति की मार बडी घातक हो।
–जिद् पकडने के बाद भी जो नासमझ व्यक्ति आसानी से अपनी बात नही छोडे।

ऊट होवै तौ झै-झै करा। ६४५

ऊट हो तो झै-झै का सबोधन करें।
–ऊट की सवारी के लिए उसे पहिले बिठाना पडता है। बिठाने के लिए मुहरी के झटके दे-दे कर मुह मे झ झे का 'उच्चारण' करना पडता है।
–पास मे कुछ होन पर ही उसका मजा लिया जा सकता है।
–सपन्न व्यक्ति ही गुल्छर्रे उडा सकता है।

ऊटा रै कुण छप्पर छाया? ६४६

ऊटो के किसने छप्पर छाये?
–मूर्ख या गवार व्यक्ति की कोई परवाह नही करता।
–उज्जड व्यक्ति को हिफाजत की जरूरत नही होती।
–जो व्यक्ति हिफाजत के योग्य न हो।

ऊटा रै गळवाणी सू काई व्है? ६४७

ऊटो के रवडी से क्या हो?
–अनुपयुक्त खुराक से पेट नही भरता।
–अपर्याप्त सहयोग से बात नही बनती।
–अत्यधिक लालची व्यक्ति थोडे से खुश नही होता।

ऊटा रै ब्याव मे गधेडा गीत गावै। ६४८

ऊटो के विवाह मे गधे गीत गाते हैं।
–मूर्ख व गवारो की मडली मे गवार ही शोभा देते है।
–जो व्यक्ति जिस योग्य होता है उसे वैसा ही आदर एव प्रतिष्ठा मिलती है।
–गवारो के अनुरूप गवार अपने आप मिल जाते हैं।

ऊडौ बावणियू र घूस को देवणियू हार मे कोनीं रवै। ६४६

गहरा बोनेवाला और घूस देने वाला हार मे नही रहता।
–रिश्वत देने वाले का सर्वत्र काम बन जाता है।

ऊदर छोटो अर पूछड़ मोटो । ६५०

चूहा छोटा और पूछ बड़ा ।

–अदने व्यक्ति की कृत्रिम अक्खड ।

–हैसियत से ज्यादा दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए ।

ऊदर तो बिल मे मावै नीं, पूछड़ै छाज बिलगाडै । ६५१

चूहा तो बिल मे समाये नही, पूछ से सूप बाधे ।

–योग्यता से कही ज्यादा जिम्मेवारी ओढने वाले व्यक्ति के लिए ।

–थोथी नेतागिरी बघारने वाले व्यक्ति के लिए ।

–व्यर्थ की अडचन झेलने वाले व्यक्ति के लिए भी इस कहावत का प्रयोग होता है ।

–क्षमता से परे काम की डींग मारने वाला व्यक्ति ।

पाठा ऊदरो आप तो बिल में ईं नी मावै, लारै मोटो ढीरो बाधै ।

ऊदरा ई राजी व्है तो काम करजो । ६५२

चूहे भी खुश हो तो काम करना ।

–घर के हर अकिंचन व्यक्ति की रजामदी होने पर ही कोई कार्य करना चाहिए ।

–ऐसा काम करना जिससे कोई नाखुश न हो ।

ऊदरा थडियां करै । ६५३

चूहे डड पेलते हैं ।

–जिस घर मे चूहे भी भूखो मरते हो ।

–घर म फाकामस्ती होते हुए भी जो व्यक्ति बाहर रोब झाडे ।

–भुखमरे व्यक्ति के दिखावे पर व्यग ।

ऊदरां रै बिला मे ई साप रा बिल लाध्या करै । ६५४

चूहों के बिल मे ही साप के बिल मिला करते हैं ।

–साप स्वय अपना बिल नही खोदते, वे चूहो के बिलो पर ही अपना कब्जा कर लेते हैं ।

–छोटी बात से भी खतरा पैदा हो सकता है ।

ऊदरी रा जाया तो दरड़ा ई खोदसी । ६५५

चुहिया के बच्चे तो बिल ही खोदेंगे ।

–जन्मजात प्रवृत्ति के अनुसार आचरण ।

–निकृष्ट व्यक्ति निकृष्ट ही काम करता है ।

–बुरे स्वभाव वाले से अच्छी आशा रखना व्यर्थ है ।

पाठा ऊदरी रै जाये नै खोदण सै काम ।

ऊदरै रो बिल को जोईजै नीं । ६५६

चूहे का बिल नही देखा जाता ।

–नगण्य या आशका रहित बात की परवाह नही की जाती ।

–अनुपयोगी चीज का कौन पीछा करे ।

ऊधा करमा रो । ६५७

औंधे भाग्य वाला ।

–अभागे व्यक्ति के लिए ।

ऊधा पडया री डडौत । ६५८

औंधे पडे का दडवत ।

–उल्टे मुह गिर पडे तो दडवत ही सही ।

–बिगडे हुए काम को खामखा सुधारने की कुचेष्टा करना ।

–चलते रास्ते उल्लू सीधा करने वाले व्यक्ति के लिए ।

ऊधा माथा रो । ६५९

औंधे सिर वाला ।

–मूर्ख या बुद्धिहीन व्यक्ति के लिए ।

ऊधै माथै नै काना सूदी । ६६०

औंधे सिर से कानो तक ।

सदर्भ . किसी एक व्यक्ति के खेत मे फसल निहायत छोटी थी । सिर्फ चार-पाच इच । उसके मित्र ने फसल के बारे मे जानना चाहा कि वह कितनी बडी है । असलियत को छिपाने के साथ-साथ वह झूठ भी नही बोलना चाहता था । इसलिए उसने मित्र को उत्तर दिया कि उसकी फसल सिर की तरफ से कानो तक लम्बी है ।

–घुमा फिराकर छोटी बात को बडी बनाने की भ्रामक चेष्टा करना ।

–कहने के लहजे मे असलियत को छिपाना ।

ऊधो पडयो आकास चाटै । ६६१

औंधा पडा आकाश चाटे ।

–अत्यधिक कुशल व्यक्ति के लिए ।

–बेइन्तहा साहसी मनुष्य के लिए ।

–जो व्यक्ति कैसी भी विषम स्थिति मे हिम्मत न हारे ।

अक आख मे आख नीं अक पूत मे पूत नीं। ६६२
एक आख म आख नही एक पुत्र म पुत्र नही।
—एक चीज के नष्ट होने की सदैव आशका बनी रहती है। मानव समाज म बहुतायत का ही महत्व है।
पाठा अक आख आग म नी अक पूत पूत म नी।

अक आख को के मींचै अर के खोल ? ६६३
एक आख का क्या मीचना और क्या खोलना ?
—अभावग्रस्त की विडम्बना।
—अभावग्रस्त व्यक्ति सदा असहाय रहता है।
—अकेला व्यक्ति क्या क्या करे।
—एकाकी व्यक्ति की विवशता।

अक आंधो अक खोडो चोखो राम मिळायौ जोडो। ६६४
एक अधा अक लगडा राम ने जोडा मिलाया तगडा।
—अधे पर सवार लगड के द्वारा रास्ता बताने पर दोना ही अपनी मजिल तय कर लेते हैं।
—दो व्यक्तियो के जुडन से पारस्परिक कमी पूरी हो जाती है।

अक आम री दो फाकां। ६६५
एक आम की दो फाक।
—दो एक से सदगुणी व्यक्तिया के लिए।
—दो अभिन्न मित्रो की पारस्परिक घनिष्ठता।
—जिन सगे भाइयो म अटूट प्रेम हो।

अक ई बिल रा ऊदरा। ६६६
एक ही बिल के चूहे।
—समान दुगण वाले व्यक्तियो के लिए।
—दूसरो का नुकसान पहुचाने वाले एक जैसे व्यक्तियों के लिए।

अक ई बेल रा तूमडा। ६६७
एक ही बेल के तुबे।
—तुबे की बेल के सभी तुबे समान रूप मे कडवे होते हैं।
—सगे भाइ जो एक एक से आला दुष्ट हों।
—समान अवगुण वाले व्यक्तिया के लिए।

अक ईलो सौ मण धान बिगाड़ै। ६६८
एक इल्ली सौ मन अनाज बिगाडती है।
—अनाज म लगने वाला एक कीट विशेष जिसे राजस्थानी म ईली कहते हैं। वह ढेरा अनाज को नष्ट कर डालता है।
—विनाश करने पर ही कोई उतारू हो तो एक ही व्यक्ति चाहे जितना विनाश कर सकता है।
—नितात आलसी व्यक्ति जो खाने के अलावा कुछ भी काम नही करता।
—केवल अनाज बिगाडने के अलावा जिस व्यक्ति के अस्तित्व की कोई उपादेयता न हो।

अक ई होळी रा ढ़ढ़ियोडा। ६६९
एक ही होली के ढढ हुए।
सदभ हिरण्यकशिपु के समय असुरा का बोलबाला था। असुरगण छोटे छोटे बच्चा का भक्षण करने के लिए घर घर उपद्रव मचाते रहते थे। जिस घर वाले उनसे हार मान कर उन्ह मन वाछित भेट पूजा अर्पित कर देते थे उन्हे अभय देकर वे रवाना हो जाते थे। तब से बच्चो को अनिष्टकारी शक्तिया से बचाने के लिए यह अनुष्ठान चला आ रहा है। बच्चे के जन्म के उपरात पहली होली पर यह सस्कार सपन्न होता है। इस अवसर पर बच्चे की जाति मोहल्ले व गाव के लोग गीत गाते हुए उसके घर जाते हैं। बच्चे का कोई रिश्तदार पाट पर बच्चे को गोद म लेकर बैठ जाता है। दो व्यक्ति बच्चे की सुरक्षा के आशय से दो लाठिया टेढी तान कर उसके सिर पर मजबूती से थाम लेते हैं। शेष व्यक्ति उन लाठियो पर डडो से प्रहार करते हैं। थमी हुई लाठिया पर तडातड की आवाज होती रहती हैं। एक व्यक्ति अगुवानी करता हुआ बच्चे के कुल की प्रशसा व बच्चे के आशीर्वाद सबधी कुछ लयात्मक पक्तिया बोलता रहता है। तत्पश्चात घर का मुखिया अपनी हैसियत के अनुसार उन व्यक्तियों को भेंट स्वरूप खाजे गुड पैसे शराब या अन्य कोई मिठाई देता है। तब वे लोग हारथा हारथा हारचा दो इण घर पूत घणरा दो कह कर खुशिया मनाते हुए चल देते हैं। आशय यह है कि बच्चे के घर वालो ने हार मानली है इसलिए आशीर्वाद

देकर दूसरे घर चलना चाहिए।
–इस पौराणिक सदर्भ मे जो व्यक्ति एक ही उम्र, एक ही स्वभाव व एक ही आचरण के होते हैं उनके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।
–एक ही थैली के चट्टे-बट्टे।

अेक अेक छांट सू समंदर भरीजै। ६७०
एक एक बूद से समुद्र भरता है।
–थोडे थोडे से ही बेशुमार सचय होता है।
–अपव्ययी व्यक्ति को सचय का महत्त्व समझाने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

अेक अेक सू आगला, पन्ना भुवा रा पूत। ६७१
एक एक से आला पन्ना बूआ के पूत।
–जिस परिवार के व्यक्ति छटे हुए चालाक, होशियार, धूर्त व बदमाश हो उन्हे लक्षित करके यह कहावत कही जाती है।

अेक कागलो मरै तो सौ गाया री सिंगाडी हालै। ६७२
एक कौवा मरे तो सौ गायो के सीग हिलते हैं।
–कौवा पशुओं को सताने वाला हिंसक पक्षी है। उसके मरने पर पशुओ म स्वत खुशी उमड पडती है।
–एक आततायी व दुष्ट के मरने पर हजारो व्यक्ति खुश होते हैं।

अेक काचर रो बीज मणाबंध दूध बिगाडै। ६७३
एक काचर [निहायत छोटी व खट्टी ककडी] का बीज मनो दूध को बिगाड देता है।
–एक दुष्ट व्यक्ति सारे समाज के लिए घातक होता है।
–विनाश के लिए एक कुटिल व्यक्ति ही पर्याप्त है।
–एक मछली सारे तालाब को गदा करती है।
पाठा अेक काजी री टोपी दूध रा कडाव नै बिगाड दे।

अेक कांन सुणो अर दूजै कांन काढो। ६७४
एक कान सुनो और दूसरे कान निकालो।
–किसी बात को ध्यान पूर्वक न सुनने वाले व्यक्ति के लिए।
–उपेक्षा करता वाले व्यक्ति के लिए।
–किंचित् भी परवाह न करना।

अेक कूकडी सौ ठौड हलाल नीं व्है। ६७५
एक मुर्गी सौ जगह हलाल नही होती।
–एक व्यक्ति सर्वत्र काम नही सभाल सकता।
–एक ही व्यक्ति को हर बार त्याग के लिए मजबूर नही किया जा सकता।
–एक व्यक्ति हर मौके पर शहीद नही हो सकता।

अेक कैवो अर दोय सुणो। ६७६
एक कहो और दो सुनो।
–जो अपशब्द कहेगा वह अपशब्द सुनेगा।
–दुर्व्यवहार करने वाले को दुर्व्यवहार ही मिलता है।
पाठा अेक कैर दोय कैवाडणी।

अेक कोडी गाठी, चूडो पैरू के माठी। ६७७
एक कौडी मेरी गाठ, चूडा पहनू कि माठ।
–बहुत ही कम पूजी से अधिक काम करने की आकाक्षा रखना।
–ओछी पूजी से क्या क्या खरीदा जाय?
–साधन हीन व्यक्ति की इच्छाए पार नही पडती।
पाठा अेक टको मेरी गाठी, मगद खाऊ कै माठी।
अेक टको मेरी गाठी, लाडू खाऊ कै माठी।

अेक गाव मागै तो सेर बेकरडी अर सौ गांव मागै तो सेर बेकरडी। ६७८
एक गाव मागे तो सेर अनाज और सौ गाव मागे तो सेर अनाज।
–प्राप्त होना या न होना सब कुछ भाग्य पर निर्भर है।
–अभागे व्यक्ति की विडम्बना।
–चाहे जितना ही अथक परिश्रम या दौड-धूप की जाय भाग्य के विपरीत कुछ भी हाथ नही लगता।

अेक गोती सौ जाती। ६७९
एक गोत्र वाला सौ जाति वालो के समान।
–एक गोत्र वाले को खिलाने मे सौ जातिवालो को खिलाने जितना पुण्य होता है।
–वक्त बेवक्त सगा सबधी जितना काम आता है उतना दूसरा काम नही आता।
–खून पानी से गाढा होता है अर्थात् खून का रिश्ता गहरा होता है।

अेक घर तौ डाकण ई टाळै । ६८०

एक घर तो डायन भी छोडती है ।

–डायन के हृदय म भी कही न कही ममता का थोडा बहुत तो अश होता ही है ।

–जो व्यक्ति डायन से भी ज्यादा हृदय हीन हो उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है कि उसे कम से कम ऐसी कुटिलता तो नही करनी चाहिए थी ।

–जो व्यक्ति डायन से भी अधिक गया गुजरा हो ।

अेक घर मे सात मत्ता, कुशल कठा सू होय ! ६८१

एक घर म सात मत, कुशल कहा से होय !

–एक घर मे सभी सदस्यो की मनमानी से घर नष्ट हो जाता है ।

–एक घर मे एक व्यक्ति के मत से ही परिवार म बहबूदी होती है ।

पाठा अक घर मे बहुमता, जडामूळ सू जाय ।

अेक घडी नगटाई, सैंस घडी आराम । ६८२

एक घडी नकटाई, सहस्र घडी आराम ।

–थोडी देर की निलज्जता से काफी आराम मिल सकता है ।

–एक बार की धूर्तता से उम्र भर का सुख मिल सकता है ।

पाठा अेक घडी री नगटाई, आखै दिन री पतसाही ।

अेक घर होळी अर अेक दीवाळी । ६८३

एक घर होली और एक घर दीवाली ।

–एक घर मे रोना और एक घर म हसना ।

–कोई दुखी तो कोई सुखी ।

–विषमता की स्थिति ।

–पारस्परिक विरोध की स्थिति ।

–अराजकता की व्यवस्था पर व्यग ।

अेक घाव नै दोय टूक । ६८४

एक घाव और दोय टूक ।

–एक ही वार मे दो टुकडे ।

–एक निशाने म दो शिकार ।

–बुद्धिमानी के एक काम से बहुत ज्यादा लाभ होता हो तब ।

अेक चिणौ दो दाळ । ६८५

–एक छिलके मे रहने वाले चने मे तो वापस उगने व बढने की क्षमता रहती है । फटने पर दो दाल होते ही उस मे उगने की क्षमता नष्ट हो जाती है ।

–एकता होने पर एक और मनमुटाव होने पर दो ।

–एकता मे ही विकास की सभावना है

अेक चदरमा नव लख तारा, अेक सती नै नगर सारा । ६८६

एक चाद नव लख तारा, एक सती और शहर सारा ।

–जिस तरह नौ लाख तारो से भी ज्यादा चद्रमा का उजियारा जगमगाता है, उसी प्रकार सारे नगर मे सती की पवित्रता जगमगाती है ।

–सती की महिमा चद्रमा के समान है ।

अेक चुप्प सौ लपरां नै हरावै । ६८७

एक चुप्पी सौ बातूनिया को हराती है ।

–आखिर बातूनिया की जिव्हा थक कर रहती है ।

अेक जणा री हलाई डोर हालै । ६८८

एक व्यक्ति के चलाने से डोर चलती है ।

–दो व्यक्तियो के द्वारा डोर हिलाने से पतग ठीक तरह से नही उड सकती । इसलिए डोर एक ही व्यक्ति के हाथ म रहनी चाहिए ।

–जिस व्यक्ति के हाथ में गाव, समाज व देश की बागडोर हो ।

–एक ही व्यक्ति की नेतागिरी ही श्रेयस्कर होती है ।

अेक जाड खाय अर अेक जाड तरसै । ६८६

एक अघाया तो एक भूखा ।

–समाज मे वैषम्य की स्थिति ।

–एक व्यक्ति दुखी तो एक गुलछर्रे उडाये ।

अेक भूठ सौ भूठ केवदै । ६६०

एक भूठ सौ भूठ बुलवाता है ।

–भूठ बोलने से बात बिगडती ही रहती है ।

–एक भूठ को सवारने के लिए बार-बार भूठ बोलना पडता है ।

अेक तिल हौ'र तालरै वाय दियौ । ६६१

एक तिल था और उसे मैदान मे बो दिया ।

– इकलौता बेटा जब बिगड जाये तो यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

–रही-सही पूजी को भी नष्ट कर दिया ।

–जीवन मे एक मौका मिला वह भी गवा दिया ।

अेक तवा री रोटी, काई छोटी अर काई मोटी। ९९२

एक तवे की रोटी, क्या छोटी और क्या मोटी।

–एक तवे की सारी रोटियां करीब करीब बराबर-सी होती हैं। खाने वालों को छोटी बडी की शका नही रखनी चाहिए।

–छोटी मोटी बातों के लिए शिक्वा-शिकायत करना उचित नही।

अेक दात रोटी तूटै। ९९३

एक दात रोटी टूटे।

–अत्यधिक घनिष्ठ प्रेम वाले मित्रों के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

–अभिन्न मैत्री।

अेक दिन खाया मातौ थोडौ ई हुवै। ९९४

एक दिन खाने से मोटा नही होता।

–एक दिन के निमत्रण में अच्छा भोजन खाने से शरीर थोडे ही बनता है।

–नित्य प्रति दिन की अच्छी खुराक से ही शरीर पुष्ट होता है।

अेक दिन पढ्या पिडत को हुवै नीं। ९९५

एक दिन पढने से पडित नही होता।

–वर्षों के अध्ययन की पूर्ति एक दिन में नही हो सकती।

–अभिज्ञता हासिल करने के लिए अभ्यास अनिवार्य है।

–एक दिन की नागा से कोई भारी नुकसान नही होता।

अेक दिन पीवौ'र अेक दिन तिसौ, ब्याव रौ दिन किसौ ?

एक दिन पीया और एक दिन प्यासा, विवाह का दिन कैसा ?

–निठल्ले व्यक्ति के प्रति व्यग।

–जिसे पानी पीने का शऊर नही, उसके जीवन में कभी विवाह जैसी खुशी का दिन नही आ सकता।

अेक दिन में किसौ भाखर तोडनै भेळौ करै। ९९७

एक दिन में कौन सा पहाड तोड कर शामिल कर लेगा।

–कोई भी बडा काम वाछित समय बिना पूरा नही होता।

–जरूरत से ज्यादा जल्दबाज के प्रति व्यग।

अेक दिन रौ पावणौ, दूजै दिन अळखावणौ। ९९८

एक दिन तो पाहुन, दूसरे दिन घिनावन।

–किसी के घर ज्यादा ठहरने से प्रतिष्ठा घटती है।

–कम मिलने जुलने से ही आदर भाव बना रहता है।

पाठा अेक दिन रौ पावणौ दूजै दिन रौ पई।
तीजै दिन रवै उणरी अक्ल कठै गई।

अेक थाल री रोटी बळै। ९९९

एक करवट की रोटी जलती है।

–पूर्ण सतर्कता के अभाव में काम बिगड जाता है।

–हर कार्य के लिए अच्छी तरह देखभाल अनिवार्य है।

–निष्क्रिय व्यक्ति की दुर्दशा अवश्यम्भावी है।

अेक देख्यौ राजा ढोर, डडै साह छोडै चोर। १०००

एक देखा राजा ढोर, पकडे शाह छोडे चोर।

–महामूर्ख सत्ताधारी के प्रति व्यग।

–अक्षम शासक का उपहास।

अेक धणी नीं व्हिया, सैंस धणी व्है जावै। १००१

एक पति नही होने पर, सहस्र पति हो जाते हैं।

–अविवाहिता स्त्रियों की विडम्बना।

–एक रक्षक के अभाव में दर दर गुलामी करनी पडती है।

–समर्थ शासक के बिना स्वतन्त्रता निभ नही सकती।

अेक नन्नौ सौ लफडा टाळै। १००२

एक इन्कार सौ झझट मिटाय।

–किसी काम की स्वीकृति से आफत गले पडती है। इन्कार करने से सब झझट मिट जाते हैं।

–मना करने से बढ कर अन्य कोई युक्ति नही।

पाठा अेक नकारौ सौ दुख हरै। अेक नन्नौ सौ रोग टाळै।
अेक नन्नू सौ दुख हरै, हाकारौ आकड में पडै।

अेक नारी बिरमचारी। १००३

एक नारी ब्रह्मचारी।

–एक पत्नीव्रत ब्रह्मचर्य के सदृश ही है।

–एक पत्नीव्रत का महात्म्य।

अेक नारू सौ दारू! १००४

एक नारू और सौ दवा दारू।

–नारू = एक भयकर रोग विशेष। लम्बी तात सा कीडा जो शरीर से बाहर निकलते समय बहुत कष्ट पहुचाता है। जिस जगह वह मह निकालता है—वहा मवाद भरने लगती है। बीच में यदि तात टूट जाय तो फिर दर्द की कोई सीमा नही रहती। दर्द की विकटता के कारण मरीज

को जो भी दवाई बताई जाती है वह तुरत उसे मान लेता है।
–गर्जमद व्यक्ति हर किसी की बात मान लेता है।
–एक ही बीमारी के विभिन्न इलाज होते हैं।
–बीमार होना आसान है पर बीमारी से मुक्त होना कठिन हैं।

अेक पग उठावै पण दूजा री आस कठै ? १००५
एक पाव उठाये पर दूसरे की आस कहा ?
–*अगले कदम ही का भरोसा नही कि मौत कब आ जाये ?*
–इस क्षणभगुर जीवन का कोई विश्वास नही।

अेक पग उपाडिनै दूजा री ठौड कीजै। १००६
एक पाव उठा कर दूसरे की ठौर करनी चाहिए।
–हर काम को पूरी सतर्कता से करना चाहिए।
–कदम कदम पर सावधानी बरतनी चाहिए।
–हर कदम देख भाल कर उठाना चाहिए।

अेक पहिए गाडी नीं चालै। १००७
एक पहिये स गाडी नही चलती।
–*मानव समाज म गृहस्थ - रूपी गाडी के दो पहिये हैं। एक* पुरुष और दूसरा स्त्री। इन दोनो के सहारे ही यह गाडी *सुचारु रूप से चल सकती है, अन्यथा नही।*
–समाज म स्त्री पुरुष दोनो का समान महत्त्व है।
पाठा अेक पैडै रथ नी चालै।

अेक पथ दो काज। १००८
एक पथ दो काज।
–एक काम के बहाने जहा दो काम बनें।
–दुहरा लाभ।
पूरा दोहा इस प्रकार है

चाल सखी उण देसडै जठै मिळै ब्रजराज,
गोरस वेच्या हरि मिळै अेक पथ दो काज।

अेक पथ दो धूळ - घर जावण रौ मूळ। १००९
एक पथ दो नादान, घर डूबेगा निश्चय जान।
–एक रास्ते पर दो महामूर्ख व्यक्तियो का सग हो जाय तो अमगल निश्चित है।
–मूर्ख गुरु सारे समाज को ले डूबते हैं।

अेक प्राण दो पींजरा। १०१०
एक प्राण दो पिंजर।
–घनिष्ठ आत्मीयता।
–अभिन्न प्रेम।

अेक पीसा री पैदा नीं, छिन-घडी री मोकळ नीं। १०११
एक पैसे की आय नही, पल-घडी की फुरसत नही।
–निरर्थक काम मे हरदम फसे रहने वाले व्यक्ति के लिए।
–खामखा के अनुपयोगी कामो म हरदम उलझे रहने वाले व्यक्ति पर व्यग।

अेक पैंड चाली कोन्या'र बाबा तिसाई। १०१२
एक कदम तो चली नही और बापू प्यासी।
–काम की शुरुआत म ही ढिलाई बरतना।
–*काम मे हाथ डालते ही बहाने खोजना।*
पाठा कोस तौ चाली ई कोनी अर काका तिसाई।

अेक फूल चढै अर अेक उतरै। १०१३
एक फूल चढे और एक उतरे।
–दिनमान बदलते रहते हैं। कभी उत्कर्ष तो कभी गिरावट।
–परिवर्तन अवश्यम्भावी है।

अेक फूल सू माळा नीं गूथीजै। १०१४
एक फूल से माला नही बनती।
–समाज मे सभी के पारस्परिक सहयोग से काम बनता है।
–एक व्यक्ति चाहे कितना ही समर्थ क्यो न हो उससे सारे समाज की पूर्ति नही हो सकती।

अेक वार कथा सुणी, ग्यान आयौ सरड। १०१५
घडी घडी कथा सुणै, कान है के दरड़।
एक वार कथा सुनी, ज्ञान आया झटपट।
बार बार कथा सुने, कान है कि खटपट।
–ज्ञान की मार तो एक बार ही कलेजे मे पैठ जाती है। बार बार सुनने से कुछ भी हासिल नही होता।
–ज्ञान कोई कानो की राह भीतर नही पहुचता, उसका तो हृदय स सीधा सपर्क है।

अेक वार जोगी, दो बार भोगी अर तीन बार रोगी।
एक बार योगी, दो बार भोगी और तीन बार रोगी।
–योगी दिन मे एक बार और भोगी दो बार शौच जाता है। दो मे अधिक बार जाये तो वह रोगी है।

अेक बादरी रै रूठ्या किसी अजोध्या खाली हो जासी ।
एक बदरिया के रूठने पर अयोध्या कौन सी खाली हो जायेगी । १०१७
–एक साधारण व्यक्ति की उपेक्षा से समाज म कुछ भी बनता बिगडता नही ।

अेक बुरै बुराई कोनीं होवै । १०१८
एक बुरे से बुराई नही होती।
–अकेला बुरा व्यक्ति कुछ नही कर सकता । उसके साथ बुरे व्यक्तियो का जत्था जुडने से ही बुराई फैलती है ।
–दो बुरे व्यक्तियों की भिडत से ही झगडा बढता है ।

अेक भेड कुवै मे पडै तो सै जा पडै । १०१९
एक भेड कुए मे गिरे तो सभी जा गिरती हैं ।
–मूर्ख व्यक्तियो का अधानुकरण ।
–भेड चाल वाले नासमझ व्यक्तियो पर व्यग ।
पाठा : अेक लरडी बेरा म पडै तो सगळी लारै पडै ।

अेक मछळी आखौ समद गिधावै । १०२०
एक मछली सारे समुद्र को गदा करती है ।
–एक बुरा व्यक्ति सारे समाज को बदनाम कर डालता है।
–एक बुरे व्यक्ति से सारे समाज मे बुराई फैल जाती है ।

अेक मण अकल, सौ मण इलम । १०२१
एक मन अक्ल, सौ मन इल्म ।
–विद्या से अक्ल सौ गुना बडी है ।
–अध्ययन या विद्या से बुद्धि का कही ज्यादा महत्व है ।

अेक मिसखरी, सौ गाळ । १०२२
एक मसखरी, सौ गाली ।
–गालियो मे कही अधिक तीखी, व गहरी मसखरी की मार होती है ।
–गालिया सहन हो सकती हैं पर मखौल नही ।

अेक म्यान मे दो तरवारा नीं खटै । १०२३
एक म्यान म दो तलवारें नही रह सकती ।
–किसी भी विधा मे दो बराबरी वाले व्यक्तियो म परस्पर नही बनती ।
–दो समान योग्यता वाले व्यक्तिया मे ईर्ष्या स्वाभाविक है ।
–दो समान स्वभाव वाले व्यक्ति परस्पर मिल जुल कर नही रह सकते ।
–कपट और मैत्री दोनो साथ नही निभ सकती ।
पाठा अेक म्यान मे दो खाडा नी समावै ।
अेक म्यान मे दो तरवारा नी मावै ।
अेक म्यान, दो तरवार ।

अेक मढी दो बारणा, पडौ ले पडी रा बारणा । १०२४
एक मठ के दो बारणे, पडा ले पडी के बारणे ।
–बारणे = दरवाजे । बारणा = बलैया ।
सदर्भ कथा मठ के दो दरवाजे होने के कारण किसी एक कुलटा पुजारिन को अपने यारो से मिलने जुलने मे सुविधा रहती थी । पुजारी उसे ऐसा न करने के लिए हरदम आजीजी करता था । पर पुजारिन अपनी आदत से बाज नही आई ।
–भय के बिना प्रीत नही होती ।
–निहोरे करने से बुराई नही छूटती । कुछ न कुछ सख्ती अनिवार्य है ।
–बुराई का मौका मिलने पर बुराई अपनी राह स्वय खोज लेती है ।
–पुरुषार्थ हीन ढुलमुल व्यक्तिया के प्रति व्यग ।

अेक मूग री दो फाडा । १०२५
एक मूग के दो टुकडे ।
–समान लक्षण वाले व्यक्ति ।
–घनिष्ठ आत्मीयता वाले व्यक्ति ।

अेक मेह, अेक मेह करता तौ बडेरा ई मरग्या । १०२६
एक मेह, एक मेह करते हुए तो पुरखे ही मर गय ।
–एक मेह की आशा करते करते पुरखे मर गये, क्योकि पश्चिमी राजस्थान मे हमेशा एक वर्षा की कमी के कारण फसलें सूख जाती है ।
–अभाव तथा आशा के बीच लटके रहना ।
–दुख देवना के बीच भी आशा समाप्त नही होती ।
–आशा करते रहने मात्र से आशा पूरी नही होती ।

अेक मौत रौ औखद नीं । १०२७
एक मौत की दवा नही ।
–रोग की दवा तो है पर मौत का कोई इलाज नही ।
–मौत टल नही सकती ।

अेकर ठगायां सेंस बुध आवै। १०२८
एक बार ठगाये जाने से सहस्र गुना अक्ल आती है।
--एक बार नुक्सान उठाने के बाद कोई भी व्यक्ति अतिरिक्त सतर्कता बरतता है।
--बुरे-भले सभी तरह के अनुभवों से आदमी बनता है।
--ठोकर खाकर ही आदमी सीखता है।
--मनुष्य के जीवन में बुरे अनुभवों का भी अपना महत्त्व है।
पाठा अेक ठोकर खावै, सैंस बुध आवै।
अक बार ठगीजिया, सेम बुध आवै।

अेक रत्ती बिन पाव रत्ती रौ । १०२९
- एक रत्ती का अर्थ है आभा, प्रतिष्ठा व शोभा।
दूसरी रत्ती का अर्थ है एक छोटे से छोटा तोल।
- मामाजिक प्रतिष्ठा के बिना किसी भी मनुष्य का कोई मूल्य नही।
--प्रतिष्ठा रहित व्यक्ति नगण्य है।

अेक रा गरू दोय नै दोय रा गरू चार। १०३०
एक का गुरु दो और दो का गुरु चार।
- एक से अधिक ताकत दो में और दो से अधिक ताकत चार में।
--दुगुनी शक्ति से मुकाबला नही किया जा सकता।
--सख्या म शक्ति है।
--सेर को सवा सेर।

अेक रै पाप सू नाव डूबै। १०३१
एक के पाप से नाव डूबती है।
--परिवार के एक सदस्य की दुष्टता का सभी को फल मिलता है।
--एक व्यक्ति के कुकर्म से सारे समाज व देश को हानि हो सकती है।

अेक रोटी अर दो टूक। १०३२
एक रोटी और दो टुकडे।
--बराबर बटवारा।
--एक रूप म बनी रहने पर रोटी कहलाती है और वही रोटी तोडने पर टुकडे कहलाती है।
--एकता की महिमा अक्षुण्ण है।

अेक रौ दारू दो। १०३३
एक की दवा दो।
--अधिक सख्या वालो की जीत होती है।
--सख्या से निर्बलता की कमी पूरी हो जाती है।

अेक रौ धन अर रौ अेक ईमान। १०३४
एक का धन और एक का ईमान।
- ईमान खोकर धन प्राप्त नही करना चाहिए।
--धन से ईमान बढकर होता है।
--ईमान खोकर धन हथियाने वाला घाटे मे ही रहता है।

अेकल वाणियौ करै मन जाणियौ। १०३५
अकेला बनिया मनम नी करता है।
- अकेला बनिया मन चाहे भाव लगाता है।
-इजारेदारी मे समाज को नुकसान होता है।

अेक लरडी तूयगी तौ काई व्है ? १०३६
एक भेड के गर्भपात से क्या होता है ?
--रेवड मे भेडो की बहुतायत के बीच एक भेड के गर्भपात से क्या बनता बिगडता है।
- सपन्न व्यक्ति अकिंचन हानि की परवाह नहीं करता।

अेक लिख्या अर सौ मख्या। १०३७
एक लिखा और सौ बका।
--मौखिक बात से लिखी बात अधिक प्रामाणिक होती है।
--सौ बार कही हुई बात मे भूल पड सकती है पर लिखी हुई बात म कभी भूल नही पडती।

अेकलिये री सेडै चरै। १०३८
अकेले व्यक्ति के ढोर खेत के किनारे ही चरते हैं।
--अकेला व्यक्ति नितात असहाय होता है।
--अकेला व्यक्ति चाहने पर भी कुछ नही कर सकता।
--अधिक व्यक्ति मनमानी कर सकते हैं।

अेकली कुत्ती भुसै के ओगनावै। १०३९
अकेली कुत्ती भौंके या चौकसी रहे।
--अकेला व्यक्ति क्या क्या करे ?
--अकेला व्य क्त द काम नही कर सकता।
--अकेले व्यक्ति की विवशता पर व्यग।

अेकल लकडी ना बळै अर ना उजाळा होय। १०४०
अकेली लकडी ना जले और ना उजियारा होय।

–अकेले व्यक्ति से कुछ भी करते - धरते नही बनता ।
–अधिक व्यक्ति त्याग करें तो प्रकाश जगमगा सकता है।
–अकेला व्यक्ति सर्वथा शक्ति हीन होता है ।

अेकलौ चिणौ भाड़ कद फोड़ै । १०४१
अकेला चना भाड नही फोड सकता ।
–पारस्परिक सहयोग से जो बात बनती है वह अकेले व्यक्ति से नही ।
–अकेले व्यक्ति की उछलकूद से कुछ नही होता ।
–अकेला व्यक्ति सर्वथा निसहाय होता है ।

अेकलौ मियौ रोवै के घोर खोदै । १०४२
अकेला मिया रोये या कब्र खोदे ।
–एक व्यक्ति एक साथ दो काम नही कर सकता ।
–अकेला व्यक्ति क्या करे और क्या न करे ।

अेक बिरती सदा वैर । १०४३
एक व्यवसायी सदा वैरी ।
–एक व्यवसाय वालो के बीच ईर्ष्या व द्वेष स्वाभाविक है ।
पाठा : अेक बिरती महा वैर ।

अेक सांड सू पींडारी को लागै नीं । १०४४
एक साड से पिंडारा [उपलो का ढेर] नही लगता ।
–एक व्यक्ति साड की तरह चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यो न हो वह अनेक व्यक्तियो की पूर्ति नही कर सकता ।
–ज्यादा आदमियो की बात ज्यादा व्यक्तियो से ही बनती है ।

अेक सू अेक अनेक । १०४५
एक से एक अनेक ।
–एक और एक जुडने से अनेक होते है ।
–एक से एक बढकर ।

अेक सू अेक इजापै व्है । १०४६
एक से एक इजाफा होता है ।
–एक से एक लाभकारी ।
–जिस व्यक्ति के हर काम मे जहा मुनाफा ही मुनाफा हो ।
–हर कार्य मे सफलता ।

अेक सू अेक परलै पार । १०४७
एक से एक उस किनारे ।
--एक से एक होशियार ।
--एक से एक चट ।
–एक से एक प्रवीण ।

अेक सूठ रै गाठिये पसारी को हुवै नीं । १०४८
एक सोठ के टुकडे से कोई पसारी नही होता ।
--छोटी बात से कोई व्यक्ति जरूरत से ज्यादा दिखावा करे तब ।
--मामूली गुण से कोई बडा आदमी नही बन सकता ।

अेक सू दो सदा ई भला । १०४९
एक से दो सदा ही भले ।
--मानव-समाज मे आपसी सहयोग की महिमा असदिग्ध है ।
--दो का जुडना सदैव बढकर होता है ।
--दो के योगदान से सभी काम सुविधाजनक हो जाते है ।

अेक सेर री सौळा पोई , सवा सेर री अेक । १०५०
बौ निगोड़ौ सौळा खाई , म्हैं लजवती अेक ।
एक सेर की सोलह पोई , सवा सेर की एक ।
उस निगोड़े ने सोलह खाई , मैं लजवंती एक ।
–स्वय अधिक गुनहगार होते हुए भी दूसरो को लाछित करने की कुचेष्टा करना ।
–अपने को बेदाग साबित करने के लिए भूठी सफाई देना ।

अेक सौ अेक अर दो सौ दो । १०५१
एक सो एक और दो सो दो ।
–एक तो एक ही है और दो तो दो ही हैं ।
–दो की महिमा अपार है ।

अेक हाथ गधौ अर अेक हाथ घोडौ । १०५२
अेक हाथ मे गधा और एक हाथ मे घोडा ।
देखिये—क . सं . ७०६

अेक हाथ सू ताळी नीं बाजै । १०५३
एक हाथ से ताली नही बजती ।
–झगडा अकेले से नही होता । दोनो ओर से ही होता है ।
–दोनो ओर से चाहने पर ही कोई बात सभव हो पाती है ।
–किसी भी बात के लिए दोनो पक्ष की समान जिम्मेवारी हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

अेक हाथ खोल मे अर अेक हाथ कटया मे । १०५४

एक हाथ नील मे और एक हाथ अफीम म ।
–नील का रग अपशकुन का द्योतक है और अफीम उत्सव व खुशी का प्रतीक है ।
–गृहस्थ जीवन म किसी दिन दुख तो किसी दिन सुख ।
–मनुष्य की जिंदगी म सुख दुख का जोडा है ।

अेक ही राम नै अेक ही रावणियौ , १०५५
वौ लेग्यौ उणरी लुगाइडी नै वौ बाळगौ उणरौ गावडियौ ।
एक था राम और एक था रावण सा नाम । वह ले गया उसकी औरत और उसने जला दिया उसका गाव ।
–किसी भी बडी बात को कहन के लहजे मे उडाया जा सकता है ।
–बडी बात को निहायत छोटी करके मानना ।

अेकी म्हारी , बेकी ल्यू । १०५६
एकी मरी दोकी लूगा ।
–दुतरफा लाभ उठाने की मनणा ।
–सभी तरह के लाभ म हिस्से का अधिकार जमाना ।
–प्रत्यधिक चालाक व्यक्ति के प्रति व्यग ।

अेकै अकै इग्यारा । १०५७
एक पर एक ग्यारह ।
–एक व्यक्ति के जुडने से केवल दुगनी ही नही , ग्यारह गुना ताकत बढती है ।
–सहयोग तथा सघ म असीम शक्ति है ।
–सहयोग स सफलता निश्चित है ।

अेकै कूडै पावणा । १०५८
एक तगारी के पाहुन ।
–अच्छे-बुरे का भेद समझे बिना असमाजिक काम म जुडने वाले व्यक्ति ।
–समान कुलच्छन वाले व्यक्ति ।

अेकै डोरै पोयोडा । १०५९
एक धागे म पिरोये हुए ।
–एक म साचे म ढले हुए ।
–समान स्वभाव वाले मित्र या भाई । यह कहावत अच्छे अर्थ म प्रयुक्त होती है ।

अेकै साधै सै सधै, सै साधै सै जाय । १०६०
एके साधे सब सधे , सब साधे सब जात ।
–एक उद्देश्य के पीछे लगे रहने से सब बाते पूर्ण हो सकती हैं और इसके विपरीत हर बात के लिए चारो ओर हाथ पाव पछाडने से कोई बात नही बनती ।
–जीवन म एक लक्ष्य की महिमा ।

अेडी रगडी और बहू बिगडी । १०६१
एडी रगडी और बहू बिगडी ।
–शरीर की अतिरिक्त सफाई का जरूरत से ज्यादा ध्यान रखने वाली बहू के मन म अवश्य कोई विकार होना चाहिए ।

अेडी री चोटी भाळ उठै । १०६२
एडी स चोटी तक आग आग उठती है ।
–क्रोध के मारे सारी देह सुलग उठना ।
–बेहद गुस्सा भभक उठा ।

अडी री ठौड अगूठौ नी धरै । १०६३
एडी की जगह अगूठा नही धरता ।
–युद्ध म सामना करते समय एडी के जोर पर आगे बढा जाता है और हार कर भागते समय अगूठ व पजे के बल पर भागा जाता है ।
किसी भी काम में डटे रहना पीछे नही हटना ।
–निरतर आगे बढते रहना ।

अेथ बैठा ओथ मारै । १०६४
यहा बैठे वहा मार कर ।
अत्यत धूर्त व चालाक व्यक्ति जो अप्रत्याशित घात करने मे भी नही चूके ।

अे मा माखी ! के बेटा उडाय दे ! मा मा दो है ।
ए मा मक्खी ! कि बेटा उडादे ! मा मा दो है । १०६५
निहायत आलसी व अकर्मण्य व्यक्ति के लिए ।
- एक दम शक्तिहीन व्यक्ति के लिए जो मुह की मक्खी तक नही उडा सकता । एक हो तो बेचारा उडा भी दे । दो को उडाने की उसम शक्ति ही कहा !

अेवड मे कुण जासी के बाबौ , बाबौ तो नाहर सू ई भूडौ ।
रेवड म कौन जायेगा कि बापू ! बापू तो नाहर से भी बुरा ।
किसी बुरे आदमी को काम की जिम्मेवारी सौपने से ज्यादा नुकसान होता है ।
–घातक व्यक्ति पर विश्वास नही करना चाहिए ।

अेवड री रुखाळी अर नाहरी र सै ! १०६७

रेवड की चरागाह और नाहर की माद ।
–नाहर की माद के पास भेडा का चरना सभव नही। चरने पर मौत निश्चित है।
–दुष्ट व्यक्ति के बीच सरल व्यक्तियो का निर्वाह नही हो सकता।

अेवज भाई सगराम। १०६८
एवज भाई सग्राम।
–अपने नुकसान की पूर्ति दूसरे की कीमत पर करना।
–अपनी हानि का एवजाना दूसरो से वसूल करना।

अेवाडा तौ पाड्या नीं जावै। १०६९
रेवड मे तो घुसा नही जा सकता।
–इच्छा होते हुए जिस काम के लिए हिम्मत या शक्ति न हो।
–जो काम अपने बूते से बाहर हो।

अेवाळिया वाळौ हेलौ। १०७०
गडरिये वाली आवाज।
–सर्वथा अर्थहीन व अप्रासगिक वात।
–जिस वात मे कोई तुक न हो।
पाठा अेवाळिया वाळी गूज।

अेंठवाडी बात। १०७१
उच्छिष्ट [झूठी] बात।
–गदी या हलकी वात।
–सुनी सुनाई अफवाह।
–गलत या झूठी वात।

अेंठै हाथ गिंडकडौ ई नीं मारै। १०७२
झूठे हाथ से कुत्ता भी नही मारता।
–जो व्यक्ति अनजाने भी कोई गलत काम न करे।
–निहायत नेक व शरीफ आदमी के लिए।

अेंठौ खावै जिणनै मीठौ मिळै। १०७३
जूठन खायेगा उसे मीठा मिलेगा।
–जो व्यक्ति कैसा भी गदा काम करने मे न हिचकिचाये उसे तात्कालिक लाभ होता है।
–मर्यादा और नैतिकता छोडने वाले व्यक्ति को भौतिक सुख मिलता है।
–कुलटा औरतें मौज करती हैं।

अै

अै घोडा अर अै मैदान। १०७४
ये घोडे और ये मैदान।
–खुले मैदान मे दौडने से ही घाडे की परख होती है।
–ललकार भरी चुनौती।
–परस्पर शक्ति की अजमाइश।

अैडा काई जेठजी पड्या नै पाळै ? १०७५
ऐसा क्या जेठ जो बैठे हुओ को खिलाता है ?
–मुफ्त म कोई किसी को नही खिलाता।
–जो व्यक्ति जरूरत से ज्यादा एहसान बघारे उसे ताने के रूप मे यह कहावत सुनाई जाती है।
–सभी अपनी मेहनत का खाते हैं।

अैडा काई सैदेवजी हौ ! १०७६
ऐसे क्या सहदेवजी हो।
–ऐसे क्या दूरदर्शी हो।
–जो व्यक्ति खामखा की दूरदर्शिता हाके उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

अैडा गैला चादारूण मे देखजो। १०७७
ऐसे पागल चादारूण मे देखना।
- चादारूण = एक स्थान विशेष का नाम।
–कोई व्यक्ति किसी को शीशी मे उतारना चाहे तब उसे सबोधित करके यह कहावन प्रयुक्त होती है कि उसकी वात पार नही पडेगी।
–मैं ऐसा गाफिल नही हू।

अैडा सैंतीरसिंघजी नै देख्या कोनीं ! १०७८
ऐसे शहनीरसिंघजी को देखा नही !
- ऐसा भीम सा ताकतवर देखा नही !
–जो व्यक्ति अपने बूते से अधिक डीग मारे उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–खामखा की शेखी बघारने वाला व्यक्ति।

अैडौ काई पीहर सू धामीणी लाई ! १०७९

ऐसी क्या मायके से दहेज म गाय लाई !
–जो बहू जरूरत से ज्यादा होशियारी करे या धौंस जताये उसे ताने के रूप मे यह कहावत कही जाती है।
–मामला का रोब झाडने वाली औरत के लिए।

अंडो देखो कोनीं इदर री अपछरा नैं ! १०८०
ऐसी देखी नही इद्र की अप्सरा को !
–साधारण रूप वाली औरत जरूरत से ज्यादा अपने रूप का गुमान करे तब यह कहावत ताने के रूप म कही जाती है।

अंडो देखी कोनीं सीता सतवती नैं ! १०८१
ऐसी देखी नही सीता सतवती को !
–कोई कुलटा अपने सतीत्व की थोथी हेकडी जतलाये तो ताने के रूप मे इस कहावत का प्रयोग होता है।

अंडो व्है ई के कुत्ता ई खीर नीं खावै। १०८२
ऐसी होगी कि कुत्ते ही खीर नही खायेंगे।
–अत्यधिक हठी व्यक्ति को लक्ष्य करके यह कहावत प्रयुक्त होती है कि उसके हठ का नतीजा ऐसा बुरा होगा कि लाख कोशिश करने पर भी बात सुधरेगी नही।
–जरूरत से ज्यादा कोई बात बिगड जाय तब।

अंडो काई इदर रो अखाडो है ! १०८३
ऐसा क्या इद्र का अखाडा है !
–साधारण आर्थिक स्थिति म भी जो व्यक्ति इद्र के ऐश्वय सा दिखावा करे।

अंडो काई गढ़ जीतनैं आया ! १०८४
ऐसा क्या गढ जीतकर आये !
–जो व्यक्ति छोटी सी सफलता पर अत्यधिक खुशी मनाये।

अडो काई मायरो लाया हो ! १०८५
ऐसा क्या मायरा लाये हो !
–भाजा भाजी की शादी के अवसर पर बहिन के लिए सामर्थ्य अनुसार जो दहेज भाई ले जाता हैं उसे मायरा कहते हैं।
–व्यर्थ का एहसान थोपने वाले व्यक्ति के प्रति परिहास।
–बार बार महमान बन कर आने वाले व्यक्ति पर व्यग।

अंडो काई सोनो जको कान फाडै ! १०८६
ऐसा क्या सोना जो कान फाड !
–बेश कीमती नुकसानदेह चीज भी त्याज्य है।
–प्रिय वस्तु या घनिष्ठ व्यक्ति के द्वारा किसी तरह की क्षति हो तब यह कहावत व्यग स्वरूप काम म ली जाती है।

अंडो किसो आपरो चोटी वढयो हू ! १०८७
ऐसा कौन सा आपका चोटी कटा हू !
–चोटी कटा दास बनाने की एक सामती प्रथा थी। चोटी कटे दास की चोटी काट कर राजा या ठाकुर की मजूषा म रखी जाती थी। उस समय दोनो पक्षो की ओर से एक अनुष्ठान भी होता था। दास पर मालिक का पूरा अधिकार होता था। आपसी इकरार नामा भी होता था।
–कोई व्यक्ति किसी पर जरूरत से ज्यादा धौंस जमाये उसे काम करने के लिए बार बार तग करे तो मुहफट आदमी उसे कहता है कि वह उसका कोई चोटी कटा दास नही है।
–आपसी मुरौवत स तो परस्पर एक दूसरे से वक्त जरूरत काम लिया जा सकता है पर धौस या अकुश से नही।

अडो किसो भोमियो है ! १०८८
ऐसा कौनसा भोमिया है !
–इस कहावत के प्रसग म दूसरो के दुख की खातिर प्राण गवाने वाले का भोमिया के अथ म प्रयोग हुआ है।
–जो व्यक्ति प्राणो की बाजी लगा कर परोपकार करने का दिखावा करे उसके परिहास स्वरूप यह कहावत प्रयुक्त होती है।

अंडो किसो रूख जिणनैं बायरो नीं लागै। १०८९
ऐसा कोई वक्ष नही जिसे हवा नही लगती।
–ऐसा कोइ व्यक्ति नही जिसे वक्त की हवा न लगे।
–ऐसा कोई आदमी नही जिस म कोइ अवगुण न हो।
– हर व्यक्ति म कुछ न कुछ बुराई होती है।

अंडो भगानियो भोळो कोनीं, भूरी ई भैंस्यां मे जावै।
ऐसा भगानिया भोला नही भूरा भसें चराने जाय। १०९०
–देखिये–क स १८६

अं चाट जठ रू गतो ई नां आवै। १०९१
य चाटें जहा बाल भी नही रहता।
–ऐसा धूत व्यक्ति जो घात करा पर किसी का म याना न ही करदे।

अं तो कोरा भूवा रा बाच्या है। १०९२
ये तो बूआ के निरथक चुबन हैं।
–वाछित सहयोग के बदले जो व्यक्ति केवल मीठी बातो से

ही जरूरत मद को सतुष्ट करना चाहे।
–सहयोग का कृत्रिम दिखावा करना।

अं तो कोरा मूग है। १०६३
ये तो साबूत मूग हैं।
–बिगडन स पहिले किसी काम के प्रति सावचेती बरतना।
–जिस बात या व्यक्ति के सुधरने की पूरी गुजाइश हो।

अं तो बोसी भरतारा है। १०६४
यह तो वक्त की देन है।
–जिस व्यक्ति के अच्छे दिनमान हो।
–जिस व्यक्ति का पूरा दबदबा हो।

अंदी अपसूण नं उडीकं। १०६५
अहदी अपशकुन का इतजार करता है।
–आलसी व्यक्ति अपशकुन का बहाना करके किसी काम की शुरुआत ही नही करना चाहता।
–अपशकुन का भय केवल आलसी व्यक्तियो के लिए ही होता है।

अं दोनू कठं मिळं सोनो अर सुगध। १०६६
य दोनो कहा मिले सोना और सुगध।
–सोने के साथ सुगध का मेल दुर्लभ है।
–दो बजोड गुण एक साथ मिलना सभव नही।

अं पूत तो पोतडा परवारियोडा। १०६७
ये पूत तो जन्म से ही बिगडे हुए हैं।
–जिस व्यक्ति के अवगुणो की सीमा ही न हो।
–जो व्यक्ति बेइतहा बुरा या बदनाम हो।

अं वाता भाटा सू भागो। १०६८
ये बातें पत्थर से तोडो।
–यहा दाल नही गलने की।
–यहा फुसलाहट का असर नही होने वाला।

अं मुरदं का पीळा पाव, गैल्या लाग्यो तू ईं आव। १०६६
इस मुर्दे के पीले पाव, पीछे लगा तू भी आव।
सदर्भ कथा: कुछ चोर सोने के पुतले को अर्थी म ढापे राह चल रहे थे। सयोग से पुतले के पांव कुछ कुछ नगे रह ।एक दूसरे राहगीर ने जिज्ञासा पूर्वक पूछा कि यह कैसा मुर्दा है? इस तरह के पीले पाव का मुर्दा तो आज दिन तक देखा नही। चोरो को शक हुआ कि उसे शायद चोरी का पता चल गया। उन्होने इशारे म समझाते हुए कहा कि हा इस मुर्दे के पीले ही पाव है। तुम भी हमारे साथ हो लो। तुम्ह भी मुनासिब हिस्सा मिल जायेगा।
–अपनी काली करतूतो को छिपाने के लिए कुछ देना भी पड जाय तो उचित है।
–पकडे जाने पर पकडने वाले को कुछ ले दे कर राजी कर लेना चाहिए।

अंया ईं राडां रोबो करसी अर अंया ईं पावणा जीमबो करसी। ११००
औरतें इसी तरह रोती रहगी और महमान इसी तरह खाते रहगे।
–विरोध करने वाले चिल्लाते रहेंगे और अधिकृत व्यक्ति अपनी मनमानी करते ही रहेंगे।
–साधन सपन्न, शक्तिशाली व सत्ताधारी हमेशा विरोध करने वालो को उपेक्षा की दृष्टि से देखते है।
–जो काम होने का है वह कैसी ही बुरी-भली विपरीत स्थितियो मे भी सपन्न होकर रहेगा।
पाठा. राडा यू ईं रोवती जासी अर पावणा यू ईं जीमता जासी।

थं विधना रा अक, राई घटं न तिल बधं। ११०१
ये विधना के लेख, राई घटे न तिल बढे।
–भाग्य का लिखा मिट नही सकता।
–भाग्य की लिखावट के अक्षर अमिट हैं।

अंस ईं माथो मूडायो नं अंस ईं गिडा पडचा। ११०२
इस वर्ष ही सिर मुडाया और इस वर्ष ही ओले गिरे।
–देखिये—क. स. ३०१

ओ

ओसरायली गाय ओखर करचा ईं धीजै । ११०३

मैला खाने वाली गाय मैला खाकर ही तुष्ट होती है ।

–दुराचारी व्यक्ति को दुराचार किये बिना शांति नही मिलती ।

–बुरी लत आसानी से नही छूटती ।

–लपट व्यक्ति किसी के समझाने से नही मानता ।

ओघड बेटो क्या सू मोटो, लावो गिणे न तोगे । ११०४

ओघड बेटा क्योकर मोटा नफा गिने न टोटा ।

–जो व्यक्ति लाभ हानि की चिन्ता नही करता वह अवश्य बडा है ।

–वीतराग व्यक्ति के लिए ।

–असाधारण व्यक्ति ही लाभ हानि से ऊपर उठ पाता है ।
जिस व्यक्ति को लाभ हानि का कोई ध्यान न हो ।

ओछा बोल ठाकुरजी नै ई नीं सोहै । ११०५

अपशब्द ठाकुरजी को भी नही सुहाते ।

–हलकी या भद्दी बात जब देवताओं को भी नही सुहाती, तब मनुष्य को बुरा लगना तो स्वाभाविक है ।

–अभद्र बात हर व्यक्ति को खटकती है ।

ओछा री प्रीत कटारी रो मरणो । ११०६

ओछे की प्रीत कटारी का मरना ।

–ओछे व्यक्ति की मैत्री अपने ही हाथ से कटारी खाने के समान है ।

–ओछे मनुष्य की प्रीत प्राणघाती होती है ।

ओछा री प्रीत, बाळू री भींत । ११०७

ओछे की मैत्री , बालू की दीवार ।

–बालू की दीवार गिरते देर नही लगती, उसी प्रकार अधम व्यक्ति की मित्रता भी टूटते देरी नही लगती ।

–निकृष्ट व्यक्ति का प्रेम स्थायी नही रहता ।

ओछा री ओजरी मे धांन नीं खटै । ११०८

छोटे पेट मे अनाज नही समाता ।

–जिस व्यक्ति के पेट म बात नही समाये ।

–जो व्यक्ति बात जब्त करके नही रख सकता ।

–अविश्वसनीय व्यक्ति ।

ओछी ओजरी है । ११०९

छोटा उदर है ।

–सकीर्ण व्यक्ति के लिए ।

–जो व्यक्ति सहनशील न हो ।

ओछी पूजी खसम नै खाय । १११०

ओछी पूजी खसम को खाये ।

–अपर्याप्त पूजी मालिक का ही सफाया कर डालती है ।

–किसी भी कार्य की सफलता के लिए उपयुक्त साधन अनिवार्य है ।

ओछी पोटी मे मोटी बात नीं खटै । ११११

छोटे पेट मे बडी बात नही खटती ।

–छोटा व्यक्ति बडी बात छिपा कर नही रख सकता ।

–हीन व्यक्ति गोपनीय बात नही पचा सकता ।

–अधम व्यक्ति थोडा बडा बनते ही बौरा जाता है ।

ओछी राड उधारो गिणावै । १११२

ओछी औरत उधार जताये ।

–निकृष्ट औरत हर घडी उधार दी हुई चीज का जिक्र करती है ।

–अधम व्यक्ति का एहसान बहुत कष्टप्रद होता है ।

–छोटे व्यक्ति के एहसान से बचना चाहिए ।

पाठा ओछी बाळी उधारो ।
ओछी राड उधार जणावै ।

ओछी लिलाडी अर माय भवरो । १११३

छोटा ललाट और उस म भी चक्र ।

–दुर्भाग्य के साथ कुछ और भी सकट ।

–अभाव के साथ एक और अभाव ।

ओछी थीप नै लाबा हेला । १११४

छोटे कदम और पुरजोर आवाज ।

–गीदड भभकी ।

–कृत्रिम प्रदर्शन । प्रेम का अत्यधिक दिखावा और व्यवहार म उदसीनता का गहरा पुट ।
–आडबर युक्त व्यवहार ।
पाठा ओछी बीख अर लावा हाका ।

ओछी हाडी मे घणी ऊरिया फाटै इज । ११११५
छोटी हडिया मे अधिक डालने से वह फट जाती है ।
–अधम व्यक्ति को बडा पद मिलने से वह वेइतहा अहकारी हो जाता है ।
–निकृष्ट व्यक्ति को अकस्मात् ज्यादा धन मिल जाय तो वह अपना आपा खो बैठता है ।

ओछी हाती दोय घर लजावै । १११६
छोटी हाती दो घर लजाती है ।
–हाती=किसी के घर भेट स्वरूप आत्मीयता से भेजी जाने वाली भोज्य-सामग्री ।
–नगण्य भेंट दोनो पक्षो को लज्जित करती है ।
–यथा योग्य सत्कार या आदर न होने से उलटा भद्दा लगता है ।

ओछै ठाकर नै मुजरा री अपरती । १११७
ओछे ठाकुर को मुजरे की भूख ।
–छिछला व्यक्ति अकिंचन सम्मान से फूल उठता है ।
–हीन व्यक्ति हरदम मामूली सत्कार की ही आकाक्षा करता रहता है ।

ओछै पाणी री माछळी । १११८
ओछे पानी की मछली ।
–कम पानी मे मछली छटपटाहट ही करती है ।
–कम साधनो से हमेशा कठिनाइया ही बनी रहती हैं ।
–काम करने की तमन्ना के अनुरूप पर्याप्त साधन न होना ।

ओछै री हेंदवाळी, घरटी रै पुडिया तणो वास । १११९
ओछे की चाकरी, चक्की के पाटो का निवास ।
–अधम व्यक्ति की दासता दुहरी कष्टप्रद होती है ।
–हीन व्यक्ति की अधीनता से बढकर कोई दुख नही ।

ओछो बोहरो, खोळा रो छोरो, बिना मोहरी री साड अर नातै री रांड कदै ई न्याल नीं करै । ११२०
ओछा बोहरा, गोद का छोरा, बिना मुहरी की साड [ऊंटनी] और पुनर्विवाहित पत्नी कभी निहाल नही करती ।
–ओछा बोहरा अपनी इच्छा हो तो दे और न दे, गोद का लडका सेवा करे और न करे, बिना मुहरी की साड वापस लौटे और न लौटे और पुनर्विवाहित औरत जमकर रहे न रहे—ये चारो बातें हमेशा सदिग्ध बनी रहती हैं ।
पाठा · नाता री राड, खोळा रो छोरो, वेळू री भीत अर बादळियो बोहरो कदै ई न्याल नी करै ।

ओजू किसा मिया मरग्या के रोजा घटग्या । ११२१
अभी कौन से मिया मर गये या रोजे घट गये ।
–कुछ करने-धरने का हौसला हो तो अभी वक्त गुजरा नही ।
–बेकार डीग हाकने की अपेक्षा कुछ काम करके दिखाना बेहतर है ।
पाठा हाल किसा मिया मरग्या के रोजा घटग्या ।

ओट तो तिणका री ई आछी । ११२२
ओट तो तिनके की भी बेहतर है ।
–नगण्यतम सहारा भी श्रेयस्कर होता है ।
–अकिंचन सरक्षण से भी आदमी का हौसला बुलद रहता है ।
–वक्त पर न्यूनतम सहारे से भी असहाय व्यक्ति अपने पावो पर खडा हो सकता है ।
पाठा आड तो तिणकला री भली ।

ओठियै नै पोठिया भोळावै । ११२३
ऊट वाले को सामान से लदा बेल सौंप देना ।
–किसी काम की आगे से आगे जिम्मेवारी उतार देना ।
–आगे से आगे जिम्मेवारी सुपुर्द करने वाला काम कभी सपन्न नही होता ।
पाठा : ओठिये रा पोठिया काई भोळावै ?

ओठा आथणिया ना मिळै । ११२४
ऊटनी का दूध कभी नही जमता ।
–जो व्यक्ति कभी किसी के काम नही आये ।
–निपट स्वार्थी व्यक्ति के लिए जो अपने स्वार्थ से परे कभी कुछ सोच ही नही सकता ।
पाठा : ओठा ई कद जावण पडै ।
ओठा आथणिया ना पडै ।
ओठो कदै ई आथणी मिळै ?

ओठो हो अर ओखर हिलग्यो । ११२५

ऊट था और विष्ठा खाने लग गया।
–ऊट सब कुछ खा जाता है, केवल विष्ठा खाने का आदी नही था सो अब वह भी खाना शुरू कर दिया।
–किसी व्यक्ति का आशातीत पतन हो तब।
–गिरे हुए व्यक्ति की निरतर गिरावट।

ओड खधेडा हेटै कद आवै ? ११२६
ओड कब खदान के नीचे आये ?
–ओड = मिट्टी खोदने वाली एक जाति विशेष।
–अत्यन्त होशियार व्यक्ति किसी के चगुल मे नही फसता।
–निपुण व्यक्ति के हाथो कभी गफलत नही होती।
पाठा ओड खधेडा हेटै नी दबै।

ओद बिकै। ११२७
नस्ल बिकती है।
–नस्ल का मूल्य है।
–कुलीनता का महात्म्य।

ओदां घोडा पारखीजै। ११२८
नस्ल से ही घोडो की परख होती है।
–नस्ल का मूल्य अक्षुण्ण है।
–नस्ल की पूर्ति और किसी बात से नही हो सकती।

ओनामासी धम, बाप पढ्या न हम। ११२६
ओनामासी धम, बाप पढे न हम।
–ओनामासी धम = 'ॐ नमः सिद्ध' का बिगडा हुआ रूप।
–जिस व्यक्ति के लिये काला अक्षर भैंस बराबर हो, उसके लिये परिहास मे यह उक्ति काम मे ली जाती है।
–जिस व्यक्ति का पूरा खानदान ही निरक्षर हो।

ओरू गगा न्हाया। ११३०
फिर गगा नहा आये।
–फिर किसी मुसीबत से जैसे तैसे छुटकारा मिल जाना।
–फिर किसी काम मे घाटा या हानि लग जाना।
–नुकसान के साथ और नुकसान सही।

ओरूं रूंख चढसी सो सोरणी बोलसी। ११३१
अब जो वृक्ष पर चढेगा वह मानता बोलेगा।
सदर्भ कथा : कोई व्यक्ति किसी सघन, लम्बे व टेढे वृक्ष पर जैसे तैसे चढ तो गया पर वापस उतरना नही हो सका। उसने भैरूजी को मानता बोली कि यदि सकुशल वृक्ष से उतर गया तो पाच सेर गुड व पाच नारियल चढायेगा। मानता के विश्वास पर उसने उतरने की हिम्मत की और वह सकुशल उतर गया। उतरने के बाद उसकी नीयत बदल गई। घर आकर उसने अपनी पत्नी को सारी बात बताई। पत्नी ने समझाया कि इस तरह देवताओं को धोखा देना ठीक नही। मानता बोली है तो चढानी ही चाहिए। तब पति ने कहा कि वह तो सकुशल उतर गया। अब कभी भूल से भी वृक्ष पर चढेगा नही। अब जो चढेगा वह मानता बोलेगा।
–मतलब निकल जाने के बाद मुह मोड लेना।
–जिसे अपनी स्वार्थ सिद्धि करनी है वह अपने-आप गर्ज करेगा।
–आफत मे फसने पर स्वयमेव उपाय खोजना पडता है।
–गर्जमद की मजबूरी।

ओस चाट्या तिरस कद छीजै। ११३२
ओस चाटने से प्यास कब बुझती है।
–आवश्यकताओं के अनुरूप पर्याप्त साधन होने से ही कोई काम सपन्न होता है।
–निरर्थक प्रयास से सफलता नही मिलती।
–निराधार आशा कभी फलीभूत नही होती।
पाठा ओस चाट्या किसो पेट भरै।

ओसर चूक्या नै मोसर नीं मिळै। ११३३
अवसर चूकने वाले को फिर मौका नही मिलता।
–अवसर का लाभ गवा देने पर फिर वैसा मौका नही मिलता।
–अवसर किसी का इतजार नही करता।

ओसर चूकी डूमणी, गावै थाळ-पताळ। ११३४
अवसर चूकी डोमन गाये ताल बेताल।
–लय चूकने पर बेसुरा होना पडता है।
–मौका बीत जाने पर विचलित होना स्वाभाविक है।

ओस रो पाणी। ११३५
ओस का पानी।
–जीवन की क्षण-भगुरता ओस के समान है।
–व्यर्थ की आशाएं ओस की तरह शीघ्र ही मिट जाती है।
–निहायत अपर्याप्त मात्रा से पूर्ति नही होती।

ओसा घड़ियो नीं भरीजै । ११३६
ओस की बूंदो स घडा नही भरता ।
—अकिंचन साधन से बडा काम सपन नही हो सकता ।
—व्यर्थ क प्रयास स सिद्धि नही मिल सकती ।
—निराधार लालसाए फलीभूत नही होती ।

ओसियाळी मिनी ऊदरा सू घरवास । ११३७
दबी हुई बिल्ली चहा का सहवास ।
—मजबूरी आदमी से क्या नही करा सकती !
—मजबूरी से बढकर कोई हार नही ।
—वक्त का फेर ।
पाठा ओसियाळी मिनी ऊदरा सू कान कटावै ।

ओसियाळी रो घरवा । ११०८
दबी हुई औरत का सहवास ।
—आश्रित औरत को सब कुछ करने क लिए मजबूर होना पडता है ।
—मजबूरी की निपट दयनीयता ।
—मजबूरी म सब कुछ सहन करना पडता है ।

ओसियाळी सात घर बसावै । ११३९
आश्रित औरत सात घर बसाती है ।
—मजबूरी जो न कराय वह थोडा है ।
—आश्रित व्यक्ति की विडम्बना ।
—फसा हुआ व्यक्ति कोई भी हीनतम समझौता करने का मजबूर हो जाता है ।

ओसियाळी नै ओळबो अर दूखता नै ठै । ११४०
आश्रित को उलहना और घाव पर ठेस ।
—घाव पर ठेस की तरह आश्रित व्यक्ति को उलहना वैसा ही असहनीय होता है ।
—कष्ट प्रद स्थिति का और भी विकटतर होना ।

औ

औ अजमा रो खोज क्यू गमायो ? ११४१
यह अजवाइन का नाश क्या किया ?
—जब कोई सतान बुरी तरह बिगड जाय तब उसकी मा को सबोधित करके कहा जाता है कि उसने प्रसव के बाद की अजवाइन व्यर्थ ही खाई ।
—ऐसी निकम्मी सतान पैदा करने मे क्या लाभ ?

औ ई काळ रो पडणो अर औ ई बाप रो मरणो । ११४२
यही अकाल का पडना और यही बाप का मरना ।
—विपत्तिया आती हैं तो एक साथ ही आती हैं ।
—दुहरे दुखो की मार ।

औ ई पूत पटेला मे, औ ई गोबर भारा मे । ११४३
यही पुत्र पचो म और यही गोबर के कामो मे ।
—बड स बडा और छोटे से छोटा काम जब एक व्यक्ति के जिम्मे हो ।
—सभी तरह के काम निपटाने की जिम्मेवारी ।

औ बयारो टाबर, खाय बरावर । ११४४
यह कैसा बच्चा, खाये बच्चा ।
—कहने को बच्चा और खाये भरपूर ।
—नाम मात्र का छोटा पर लक्षण म बडा ।
पाठा वाजै टाबर, खाय बरावर ।

औदसा आवै जरा भूजिया तीतर उड जावै । ११४५
बुरी दशा आने पर तले हुए तीतर भी उड जाते है ।
—खराब वक्त से बढकर कोई बडा दुश्मन नही ।
—दिनमान बिगडने पर जो न घटित हो जाय वह थोडा है ।

औ बेरो सींची उणनै रावळा घोडा पावणा पडसी । ११४६
यह कुआ सींचेगा उसे ठाकुर के घोडे पिलाने पडेगे ।
—एक वचन स्वीकार करने पर दूसरे वचन स बचा नही जा सकता ।
—आर्थिक परवशता के बीच स्वतत्रता रख पाना मुश्किल है

-मातहत व्यक्ति की अपनी इच्छा कोई माने नही रखती।

औ तौ पितळियौ देव है। ११४७
यह तो ढुलमुल देवता है।
-जो व्यक्ति आसानी मे हर किसी के बहकावे मे आ जाय।
-जिस व्यक्ति का अपना कोई मत न हो।

औ तौ रेलौ अठी इज आयौ। ११४८
यह बहाव तो इधर ही आया।
-अकस्मात् कोई लाभ की बात हो जाय तब।
-अप्रत्याशित रूप से भाग्योदय हो तब।

औ देवर रौ काई हासौ जकौ भाभी री कांचळी मे हाथ घालै। ११४९
यह भी देवर की क्या मजाक जो भाभी की कन्चुकी मे हाथ डाले।
-मजाक का भी अपना स्तर व अपनी सीमा होती है।
-किसी भी आत्मीय को अशोभनीय मजाक करने का अधिकार नही होता।
-बेहूदा मजाक के प्रति परिहास।

औ भौ मीठौ तौ आगलौ कुण दीठौ। ११५०
यह भव मीठा तो अगला किसने देखा ?
-इस जन्म मे जो भी सुख उठाया जाय वह अपना है, अगले जन्म का क्या पता।
-यही जन्म अन्तिम है, पुनर्जन्म का कोई भरोसा नही।
-जहा कही से जो भी सुख मिले उसे झपट लेना चाहिए।

औरत नै मिठाई, मरद नै खटाई सदा बुरी। ११५१
औरत को मीठा और मर्द को खट्टा अहितकर है।
-यह एक सामान्य धारणा है कि औरत को जहा तक बन पडे मीठा नही खाना चाहिए और पुरुष को खट्टी वस्तु नही खानी चाहिए।

ओर तौ नाहर पड़्यौ, पण काम मे डबकौ। ११५२
वैसे तो सिंह से कम नही पर है एकदम निकम्मा।
-जो व्यक्ति बातें तो बडी बघारे किन्तु हो एकदम अकर्मण्य।
-बातो मे शेर और काम मे ढीला।

ओर बात खोटी, सिरै दाळ-रोटी ११५३
और बात खोटी, श्रेष्ठ दाल रोटी।
-पेट भरने के अलावा बाकी बातें सब गौण हैं।
-उदरपूर्ति ही मनुष्य का मुख्य ध्येय है।

औ राठौ यू ई घाठौ। ११५४
यह धमाल वैसी ही कमाल।
-यह बिगडी हुई बात तो यो ही बिगडेगी।
-यह तो ऐसा ही चक्कर है।

औसांण आवै जकौ ई हथियार। ११५५
अवसर पर जो हाथ लग जाये वही हथियार।
-वक्त पर जो भी चीज हाथ मे आ जाय वही उस समय हथियार का काम देती है।
-मौके की नगण्य चीज भी श्रेष्ठ है।
-वक्त का मूल्य होता है, चीज का नही।

क

कक्का री टाग ऊची है के नीची। ११५६
ककहरे की टाग ऊची या नीची।
-जो व्यक्ति निरक्षर भट्टाचार्य हो उसे परिहास मे इस तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं।
-जिस अनपढ व्यक्ति को यह भी ज्ञान न हो कि 'क' किस तरह लिखा जाता है।

कक्का रौ पूण ई नीं जांणै अर नांव विद्याधर। ११५७
ककहरे का पौन भी नही जानता अर नाम विद्याधर
-नितान्त अनपढ व्यक्ति जिसका नाम के विपरीत गुण हो।
-जो व्यक्ति बातें ऊची बघारे और जाने कुछ भी नही।
पाठा : कक्का री लगमात ई नी जाणै अर नाम ग्यानचद।
कक्का रौ फूटो आंक ई को आवै नी अर नाव विद्याधर।

कड़का काढै । ११५८

कडकी निकालता है ।

–जिस व्यक्ति की आर्थिक हालत तो निहायत खराब हो पर वह ऊपर से ठाट बाट का दिखावा करे ।

–भीतरी दैन्यता के बावजूद ऊपरी टीमटाम का जो व्यक्ति झूठा प्रदर्शन करे ।

कडाकड बाजे पोथा बांस । ११५९

खोखले बास अधिक आवाज करते हैं ।

–अक्षम व्यक्ति ज्यादा डींग मारता है ।

–छिछला व्यक्ति बडबोला होता है ।

–खोखला व्यक्ति बढ-बढ कर बातें करता है ।

कडियां कटारी अर चोर नैं ढोका बाहैं । ११६०

कमर पर कटारी और चोर को घूसों से मारे ।

–वक्त पडने पर जो व्यक्ति अपनी सूझ से काम न ले ।

–जो व्यक्ति साधनो का सही उपयोग न करे ।

–साहस प्रदर्शन के अवसर पर जो व्यक्ति साहस से काम न ले ।

पाठा कडिया कटारी नैं मूकिया सू मारे ।

कडिया सूदो कळगो । ११६१

कमर तक कीचड मे सन गया ।

–जो व्यक्ति दुख-दैन्यता के दल दल मे इतना धस जाये कि फिर बाहर निकलना सभव न हो ।

–जिस व्यक्ति पर कर्ज का भार बहुत अधिक हो ।

–जो व्यक्ति आफत विपदाओ से पूरा घिरा हो ।

कचर सू कचरो बधं । ११६२

कूडे से कूडा बढता है ।

–गदगी से गदगी बढती है ।

–बुराई से बुराई बढती है ।

–खराब आदत से निरतर खराबी पनपती है ।

कटक मे न हुवें सो माफी । ११६३

सेना मे न हो सो माफी ।

–लडाई से दूर रह कर भी जो शूरवीर कहलाये ।

–क्षमता से अधिक जो व्यक्ति ख्याति पाना चाहे ।

–जब अयोग्य व्यक्ति को यश मिल जाय ।

कटै तो काऊ का, सीखे तो नाऊ का । ११६४

कटे किसी भाई का, सीखे बेटा नाई का ।

–किसी दूसरे की कीमत पर अपना उल्लू सीधा करना ।

–दूसरो के अनुभव से लाभ उठाने वाले व्यक्ति ।

–दूसरो की बुराई से सबक सीखना चाहिए ।

कठा री ईंट कठा रै रोडं,माणमतो कड़बो जोडं । ११६५

कही की ईंट कही का रोडा, भानमती ने कुनबा जोडा ।

–इधर-उधर से अपना इल्म पूरा करना ।

–जैसे तैसे अपना मतलब सिद्ध करना ।

–बेमेल वस्तुओ का सग्रह ।

–बिना सिर-पैर का प्रयास ।

कठा री तेलण कठा रो पळो । ११६६

कही की तेलिन कही का झमट ।

–बिना चाहे किसी की पचायती मे टाग अडाना ।

–व्यर्थ की उछल कूद करने वाले व्यक्ति के लिए ।

–खामखा का झझट मोल लेने वाला व्यक्ति ।

पाठा . कठा री घाचण कठा रो पळो ।

कठै अकबर पातसा , कठै अकबरियो तेलो । ११६७

कहा अकबर बादशाह कहा अकबरिया तेली ।

–नाम की समानता से व्यक्तित्व समान नही होता ।

–केवल नाम की सादृश्यता के बहाने कोई छोटा व्यक्ति उसी नाम के प्रसिद्ध व्यक्ति की बराबरी करे तब परिहास के रूप मे यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

कठै ई कठै ई तोटा मे ई फायदो है । ११६८

कही कही घाटे मे ही लाभ है ।

–कभी कभी हानि की जोखिम उठाने से आगे चलकर लाभ हो सकता है ।

–कही-कही हानि के साथ लाभ भी सलग्न रहता है ।

कठै ई चोर सूना तो कठै ई ढोर सूना । ११६९

कही चोर सूने तो कही ढोर सूने ।

–चोरो को सभी जगह की सही जानकारी हो जाय तो चोरी की कोई सीमा ही न रहे ।

–दुष्टो की अनभिज्ञता के कारण ही बहुत कुछ विनाश स्वय-मेव बच जाता है ।

कठै ई जावो कागला तो काळा इज होवं । ११७०

कही जाओ कौए तो सर्वत्र काले ही होते है ।

–दुष्ट व्यक्तियों की दुष्टता सर्वत्र एक जैसी ही घातक होती है।
–बुरे व्यक्ति सभी जगह होते है।
–बुरा तो बुरा ही होता है।

कठै ई जावौ पईसा री खीर है। ११७१
कहीं जाओ सर्वत्र पैसो के बदले खीर है।
–पैसा के अभाव मे कुछ भी नही किया जा सकता।
–पैसा ही सब-कुछ है।
–मनुष्य की सभी छोटी और बडी जरूरतें केवल पैसो से ही पूरी होती है।

कठै ई राई रै भरोसै मिरचा मत खाजै। ११७२
कही राई के भरोसे मिर्ची मत खा लेना।
–सर्वत्र एक से बर्ताव से बात बिगड जाती है।
–हर व्यक्ति के अनुरूप ही उसके साथ व्यवहार करना चाहिए।
–ठीक से सही स्थिति की पहिचान न होने पर धोखा हो सकता है।

कठै ई बावै कठै ई ऊगै। ११७३
कही बोये और कही उगे।
–एक जगह से दूसरी जगह हरदम भटकते रहने वाले व्यक्ति के लिए जिसका आसानी से अता पता नही लगाया जा सकता।
–जो व्यक्ति आसानी से पहिचाना नही जा सके।
–जिस व्यक्ति की किसी भी बात पर एतबार नहीं किया जा सके।

कठै कळ सू अर कठै बळ सू। ११७४
कही कल से तो कही बल से।
–कही बुद्धि से तो कही बल से काम बनता है।
–अब जैसा मौका वो साम, दाम दण्ड और भेद से काम कर लेना चाहिए।
–बुद्धि और बल का अपना अपना महात्म्य है।

कठै राजा भोज, कठै गागो तेली। ११७५
कहा राजा भोज और कहा गगुवा तेली।
–भोज जैसा पराक्रमी राजा और गरीब गगु तेली का क्या मुकाबला।
–दो विषम व्यक्तित्व की परस्पर क्या तुलना।
–जब एक की तुलना मे दूसरा बहुत ही हलका हो तब परिहास के रूप मे यह कहावत प्रयुक्त होती है।

कठै राम-राम अर कठै ट्या-ट्या। ११७६
कहा राम राम और कहा टे टे।
–किसी श्रेष्ठ वस्तु की निकृष्ट वस्तु से क्या समानता।
–असली सो असली, नकली सो नकली।

कठै राजा री रेवाडी अर कठै कुमार री थेचाफूटो। ११७७
कहा राजा की पालकी और कहा कुम्हार का ढाचा।
–कहा राजा का ऐश्वर्य और कहा कुम्हार की दैन्यता।
–बड और अकिंचन व्यक्ति की क्या तुलना।
–किसी निहायत छोटे व्यक्ति को जब बहुत बडे व्यक्ति के सदृश मानने की कोशिश की जाय, तब परिहास मे यह कहावत प्रयुक्त होती है।
पाठा कठै राजा री रेवाडी नै कठै नाई री थेचाफूटो।

कढ़ी मे कोयला। ११७८
कढी मे कोयल।
–अच्छी वस्तु के साथ बुरी का मेल।
–एक अच्छे और बुरे व्यक्ति की संगति।
–किसी अच्छी बात के बिगडने पर।

कनक कटोरा दूध पीवै। ११७९
–कनक कटोरी से दूध पीता है।
–बेहद सम्पन्न व्यक्ति के लिए।
–बेहद भाग्यशाली व्यक्ति के लिए।
–ऐश्वर्य के बीच पैदा हुए व्यक्ति के लिए।

कण कण जोडचा मण जुडै। ११८०
कन-कन जोड़ मन जुड।
–थोडा सचय करने से ही सग्रह होता है
–सग्रह करना कोई आसान नही, उसके लिए निरतर श्रम करना पडता है।
पाठा कण कण मिळचा मण हुवै।
कण कण कोठी भरीजै।

कण कीडी अर मण मेगळा। ११८१
कन चिउटी और मन हाथी।

–अपनी-अपनी जरूरत के अनुसार सबको मिलता है।
–छोटे की जरूरत छोटी और बड़े की जरूरत बड़ी।
–ईश्वर सब की पूर्ति करता है।

कण थोडा नै कांकरा घणा। ११८२
दाना कम और कंकर बहुतेरे।
–जिस व्यक्ति की बात मे झूठ बहुत ज्यादा और सत्य निहायत कम हो।
–तथ्य की बात कम और निरर्थक बात ज्यादा।

कण देखियां मण री ठा पडै। ११८३
दाने देखने पर मन का अदाज हो जाता है।
–मुट्ठी बानगी से अनाज की ढेरी का पता लग जाता है।
–नमूने मात्र मे सम्पूर्ण की सही जानकारी हो सकती है।

कण रौ चोर सौ मण रौ चोर। ११८४
दाने का चोर सो मन का चोर।
–चाहे नगण्य चोरी करो चाहे बडी, चोर तो चोर ही है।
–छोटी छोटी चोरी से ही बडी चोरी सीखी जाती है।
–अपराध की गुरुता मशा से ही निश्चित होती है, परिमाण से नही।

कणाक चोर आवै, कणाक धणी जागै। ११८५
कब चोर आये और कब मालिक जगे।
–चोर के आने का और स्वामी के जगने का सयोग बडी मुश्किल से बैठता है, तभी चोर को चोरी करने मे सफलता मिल पाती है।
–किसी भी दुर्घटना का पहिले अनुमान नही हो सकता।
–पूर्व योजना से बहुत बार अनहोनी को नही टाला जा सकता।

कणूका री जोरावरी। ११८६
दानों की ताकत।
–अनाज की अकगड।
–सग्रह की अपनी शक्ति होती है।
–आदमी की अपनी कोई ताकत नही होती, सचय से स्वयमेव ताकत आ जाती है।

कणूकै कणूकै राह अर टोपै-टोपै छाह। ११८७
दाने-दाने से मोटी ढेरी, बूद बूद मे छाछ घनेरी।
–यह कहावत दुहरे अर्थ मे प्रयुक्त होती है कि एक-एक दाने से बडा ढेर बनता है और बूद बूद मे छाछ का घडा भरता है। दूसरा अर्थ यह है कि कैसा भी बडा ढेर एक-एक दाना खर्च करने पर समाप्त हो जाता है और छाछ का घडा एक एक बूद से नि शेष हो जाता है।
–जोडने से कोई भी चीज जुडती है और खर्च करने से कोई चीज खर्च होती है।

कतरणी काटै ई काटै, सूई सांधै ई सांधै। ११८८
कैंची काटती ही काटती है, सूई सीती ही सीती है।
–दुष्ट दुष्टता करता है और भला भलाई करता है।
–जिसकी जो प्रवृत्ति होती है वह हमेशा वैसा ही काम करता है।
–हर चीज का अपना अपना उपयोग होता है।

कतारिया नै किसौ सवाद, अणबिलोयो उरो घात।
बनजारे का कैसा स्वाद, अनमथा ही आने दे। ११८९
सदर्भ : एक बनजारा किसी घर म छाछ मागने के लिए गया। घर की मालकिन न बिलोने का मथन शुरू ही किया था। छाछ का तकाजा करन पर उस ने बनजारे से कहा—भैया कुछ देर ठहरो। अभी तो बिलौना शुरू ही किया है। तब बनजारे ने कहा—हम गवार बनजारो का कैसा स्वाद ? अन बिलोया ही डाल दे। कहने को तो स्वाद के लिए उसने कोई उत्सुकता नही दिखलाई, पर अन-मथा दही ज्यादा पौष्टिक व स्वादिष्ट होता है।
–महज जीवन का केवल दिखावा भर करने वाले व्यक्ति के लिए।

कथनी सू करणी दौरी। ११९०
कहने से करना मुश्किल है।
–कहने मे कुछ भी जोर नही पडता, पर किसी काम को करने मे बडा जोर पडता है।
–उपदेश बघारना आसान पर आचरण मे ढालना बहुत कठिन है।
पाठा : कथनी सू करणी बडी।

कथीर सो कथीर, रूपौ सो रूपौ। ११९१
कथीर सो कथीर, चादी सो चादी।
–कथीर व चादी की परस्पर तुलना हो तो अच्छे बुरे की आपस मे तुलना हो।

-बुरा सो बुरा और अच्छा सो अच्छा।
-कुलीनता के अनुरूप ही व्यक्ति का महत्त्व होता है।

कद ऊट री होठ खिरै अर कद खाईजै ? ११९२
कब ऊट का होठ खिरे और कब खाय ?
देखिये—क स ६२७

कद तौ मरघा नै कद सुरग गिया ? ११९३
कब तो मरे और कब स्वर्ग गये ?
-मरने के बाद स्वर्ग जाने या न जाने का कहीं भी हिसाब नहीं होता।
-वश के परे की बात को कब कौन जान सकता है ?
-अनहोनी का किसे ध्यान रहता है ?

कद नटणी वास चढ़ै, कद भोजन पावै। ११९४
कब नटिनी बास चढे और कब भोजन पाये।
-जी तोड़ शारीरिक श्रम करने वालों की विडम्बना।
-अनहोनी शर्त पर इस कहावत का प्रयोग होता है।
-कब कठिन शर्त पूरी हो और कब मन वांछित फल प्राप्ति हो।

कद मरी सासू अर कद आया आसू। ११९५
कब मरी सासू और कब आये आसू।
-कृत्रिम ममता या दुख का झूठा प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति के लिए।
-मर्मान्तक दुख आसुओं की प्रतीक्षा नहीं करता।
-ऊपरी हमदर्दी।

कद मरैला सासू' र कद आवैला आसू ? ११९६
कब मरेगी सासू और कब आयेंगे आसू ?
-किसी शर्त के भरोसे काम को आगे टाला नहीं जा सकता।
-झूठ आश्वासनों से बरगलाने वाले व्यक्ति के लिए।

कद बाझ ब्यावै अर कद तूर बाजै। ११९७
कब बाझ ब्याय और कब तुरही बजे।
-न अनहोनी बात बने और न आशाए फलीभूत हो।
-झूठी आशाओं के भरोसे जी बहलाने वाले व्यक्ति के प्रति व्यंग।

कद राजा आवै कद दाळ दळू। ११९८
कब राजा आये और कब दाल दलू।
-जिसके वादों का कोई एतबार न हो।
-न तो कभी राजा आयेगा और न मन की साध पूरी होगी।
-नितांत अविश्वसनीय व्यक्ति के लिये।

कदास डाळी निव ज्याय। ११९९
शायद डाली झुक जाय।
-कदाचित सफलता मिल जाय।
-शायद भाग्य साथ दे जाय।
-संभव है इच्छा पूरी हो जाय।
-संभव है मेहरबानी हो जाय।

कदै ई जलमिया हुता तौ कदै ई मर जाता। १२००
कभी जन्म होते तो कभी मर जाते।
-पहिले जन्मे होते तो पहिले मर जाते।
-पहिले मर जाने से अभी दुख उठाने की नौबत नहीं आती।
-अभावग्रस्त व्यक्ति की अंतर्वेदना।

कदै ई सपनौ साचौ करणौ के नीं ? १२०१
कभी सपना सच करना या नहीं ?
-बार-बार कहने पर भी जो व्यक्ति कहा न माने तब उस व्यक्ति को संबोधित करके यह कहावत प्रयुक्त होती है।
-कभी न कभी तो आत्मीय जन मन की साध पूरी करेंगे।
-जीवन में एक बार भी कहा मान ले उस व्यक्ति के लिए।

कदै ई हाथ सू दोय भुगड़ा ई बाट्या ? १२०२
कभी हाथ से दो चने भी बाटे ?
-जो व्यक्ति बांटने के नाम पर दो चने भी नहीं बाट सकता।
-कभी अपने हाथ से किसी का अकिंचन भला भी किया ?
-जो व्यक्ति निहायत कंजूस हो।

कदै गधौ गूण माथै, कदै गूण गधा माथै। १२०३
कभी गधा गोनी [बोरा] पर कभी गोनी गधे पर।
-जरूरत का तकाजा बड़ा होता है।
-वक्त का फेर।
-मौके मौके की बात।
-हर एक का अपना समय आता है।

कदै गाडी चीला तौ कदै खरबूजा मे ई सही। १२०४
कभी गाडी रास्ते पर तो कभी खरबूजों में ही सही।
-हर वक्त सीधी सपाट राह पर नहीं चला जाता कभी राह भटकनी भी पड़ती है।
-कभी कभी परपरागत पथ से विचलित होना ही पड़ता है।

—लाभ की बजाय कभी कभी नुकसान ही सही।

कदै गाडी नाव मायं तौ कदै नाव गाडी मायं। १२०५
कभी गाडी नाव पर तो कभी नाव गाडी पर।
—हमेशा स्थिर कुछ भी नही रहता, उलट-पलट होता ही रहता है।
—दिनमान बदलते रहते हैं।
—वक्त के सहयोग मे परिवर्तन होता ही रहता है।
—ऐसा कोई व्यक्ति नही जिसे कभी किसी के सहयोग की आवश्यकता न हो।

कदै ई घी घणा तौ कदै ई मूठी चिणा। १२०६
कभी घी बहुतेरा तो कभी मुट्ठी भर चने।
—कभी ऐश्वर्य तो कभी अभाव।
—परिस्थितियो का खेल।
—सभी दिन एक से नही रहते।
—परिस्थितियो के साथ समझौता करना ही पडता है।

कदै ई दिन मोटा तौ कदै ई रात मोटी। १२०७
कभी दिन बडे तो कभी रात बडी।
—प्रकृति की तरह समाज व व्यक्ति के जीवन मे भी परिवर्तन अवश्यम्भावी है।
—किसी का भाग्य हमेशा एक-सा नही रहता।
—कभी किसी का दाव तो कभी किसी का दाव।
—न किसी व्यक्ति को अपने वैभव का गुमान करना चाहिए और न किसी व्यक्ति को अपनी दीनता पर रोना चाहिए क्योकि स्थायी कुछ भी नही रहता।

कदै न कायर रण चढ्या कदै न मानी मीड। १२०८
कभी न कायर रण चढे कभी न मिटाई पीर।
—कायर कब लडाई मे जाता है और कजूस कब किसी की सहायता करता है।
—जो व्यक्ति वक्त पर सहयोग न दे उसके प्रति व्यग।
—समय पर वाछित सहयोग देना हर एक के वश की बात नही।
पाठा : कदै न गाडू रण चढ्या, कदै न मानी मीड।

कदै सेर नै ई सवा सेर मिळ ज्याय। १२०९
कभी सेर को भी सवा सेर मिल जाता है।
—कभी धूर्त को भी महाधूर्त मिल जाता है।
—अपने से बडा बदमाश मिलने पर ही कोई दबता है।
—किसी की सर्वत्र मनमानी नही चल सकती।

कनफड़ा दोनू दीन बिगाड्या। १२१०
कनफटो ने दोनो दीन बिगाडे।
—कनफटे साधु न गृहस्थी मे और न सन्यास मे।
—जो व्यक्ति न घर का रहे और न घाट का।
—जो व्यक्ति दोनो ओर से विश्वास खो दे।

कनसळाव रै अेक पग टूट्या पागळौ थोडौ ई व्है। १२११
कनखजूरे का एक पाव टूटने पर पगु नही होता।
—बडे आदमी का थोडा-बहुत नुक्सान हो भी जाय तो कोई विशेष फर्क नही पडता।
—सपन्न व्यक्ति मामूली हानि सहज ही बर्दाश्त कर लेता है।

कनै कोडी कोनीं, नाव किरोड़ीमल। १२१२
पास मे कौडी नही और नाम करोडीमल।
—नाम के सर्वथा विपरीत गुण।
—समाज मे जिस व्यक्ति की प्रसिद्धि तो खूब हो पर वास्तव मे वह उसके योग्य न हो।
—प्रतिष्ठा के विपरीत आचरण।
—मिथ्याडबर के प्रति व्यग या परिहास।

कनै बैठौ कूड बोलै, भाखर चढ्यौ भाटा वावै १२१३
पास बैठा झूठ बोले, पहाड चढा पत्थर फेंके।
—ऐसा व्यक्ति जो पास रह कर भी धोखा दे और दूर जाकर नुकसान पहुचाये।
—जो व्यक्ति किसी भी समय अपनी कुटिलता न छोडे।
—जो व्यक्ति सब तरह से घातक हो।

कपासिया जठै जावसी तठै चरखी रै मूडै। १२१४
बिनौला जहा भी जायेगा वहा चर्खी के मुह पर।
—अभागा जहा भी जाये वहा दुख तैयार।
—गरीब की सर्वत्र आफत ही आफत।
—जो व्यक्ति खुद चल कर कष्टो को निमत्रण दे।
—भले व्यक्ति को सर्वत्र दुख ही दुख उठाना पडता है।
—जो व्यक्ति हरदम दूसरो की सेवा के लिए तैयार रहे।

कपूत कलाळ रै जावै अर सपूत सोनार रै। १२१५
कुपुत्र कलाल के यहा और सुपुत्र सुनार के यहा जाता है।
—कुपुत्र शराब पीने के लिए कलाल के घर और सुपुत्र

आभूषण बनवाने के लिए सुनार के घर जाता है।
–कुपुत्र धन का दुरुपयोग करता है और सुपुत्र उसका सदुपयोग।
–व्यक्ति का अच्छा बुरा गुण उसके आचरण से चरितार्थ होता है।

कपूत जायौ भलौ न आयौ। १२१६
कुपुत्र न जाया भला और न आया।
–इस कहावत के दो अर्थ हैं— एक तो यह कि कुपुत्र न घर मे जन्मा भला और न गोद आया। दूसरा अर्थ यह है कि न घर मे जन्मा कुपुत्र अच्छा और न घर मे आने वाला खराब दामाद अच्छा।
–खराब व्यक्ति सर्वत्र निरादर ही के योग्य है।
पाठा कुपातर जायौ भलौ न आयौ।

कपूत बेटौ खाध मे आडौ आवै। १२१७
कुपुत्र लडका अर्थी उठाने के काम आता है।
–कुपुत्र किसी भी कमाई के योग्य न होने से वह घर पर निठल्ला ही बैठा रहता है। बाहर जाकर कमाने के लिए उस म क्षमता नही होती। इस कारण परिवार म किसी की मृत्यु होन पर वह कधा दन के काम तो आता ही है।
–खराब से खराब वस्तु का कुछ न कुछ उपयोग तो होता ही है।
–बुरे स बुरे व्यक्ति की भी कुछ न कुछ उपादेयता होती ही है।
पाठा . कुमाणस बेटौ खाध म आडौ आवै।

कपूत बेटौ दूजा नै कमाय घालै। १२१८
कुपुत्र दूसरो को कमाकर देता है।
–जो व्यक्ति घरवालो को हानि पहुचाये और दूसरा के काम आये यह कुपुत्र की निशानी है।
–कुपुत्र को फुसलाकर दूसरे लोग अपना मतलब सिद्ध कर लेते हैं।

कपूत स् तौ निपूती भलौ। १२१९
कुपुत्र से तो निसतान भली।
–कुपुत्र स मा की कोख भी लज्जित होती है।
–कुपुत्र मा की ममता भी खो देता है।

कप्पूआळा पोत दिखाय दिया। १२२०
कप्पूवाले लक्षण दिखा दिये।
अपनी नीचता प्रकट कर दी।
–आखिर अपनी असलियत पर आ गया।
–हीन व्यक्ति से कुछ भी आशा करना व्यर्थ है।

कबर दीख्यां सबर आवै। १२२१
कब्र दिखने पर सब्र आती है।
–मनुष्य मरने पर ही सतोष करता है, अन्यथा जीवन पर्यन्त आठों पहर दौड भाग करता रहता है।
–जिस व्यक्ति की लालसाए अनन्त हो।

कबूतर तौ खुड्डे मे गुटकेला। १२२२
कबूतर तो दडबे मे ही गुटरगू करेगा।
–हर व्यक्ति अपनी परिचित जगह पर ही आश्वस्त होता है।
–अपना घर सभी को प्रिय होता है।
–रोज मर्रा के आश्रय म ही शाति व सुख मिलता है।

कबूतर नै कूवौ ई सूझै। १२२३
कबूतर को कुआ ही दिखता है।
–अपनी सुरक्षा के लिए कबूतर के पास कुए के अलावा दूसरी विश्वस्त ठौर नही होती।
–असहाय व्यक्ति और कौन सा सहारा ढूढे।
–दूसरो के दुख म सहयोग देन वाले व्यक्ति क पास सभी आश लेकर जाते हैं।
–जिस व्यक्ति का एक से अधिक कही ठिकाना न हो।
पाठा कबूतर आळौ कूवौ।
कबूतर नै कूवौ।
कबूतर नै कूवौ ई दीसै।

कबूतर नै अर लुगाई नै कूवौ ई दीसै। १२२४
कबूतर व औरत को कुआ ही दिखता है।
–कबूतर क लिए कुआ सुरक्षा की जगह है पर हताश औरत के लिए आत्महत्या का सरल उपाय। जिस औरत के लिए समाज म कही ठौर नही वह आखिर कुए की शरण जाती है।

कम खाय लेणौ पण कम कायदै नीं रैवणौ। १२२५
कम खा लेना पर कम कायदे से नही रहना।
–अपमानित होकर पेट भरना अशोभनीय है।
–किसी भी कीमत पर स्वाभिमान नही छोडना चाहिए।

कमजोर नै गुस्सौ भारी, मार खावण री धारी। १२२६

खाने की बिचारी ।
ही मार खाता है ।
यक्ति को क्रोध ज्यादा आता

मी ।   १२२७
ी ।
ाक करते हैं, क्योंकि उसका
। ।
ल हैं ।
ते हैं ।
ारी गाठता है ।
री भोजाई ।

१२२९
' ।
आखिर मुह की खानी पडती

के कारण अपने साथ हिमा-

ल कोनी ।   १२२६
तुल्य नही ।
त्वार शोभा देती है ।
पादेयता है ।
ोज भी वडी बन जाती है ।

म री ।   १२३०
म की ।
तष्ठा श्रम के अनुरूप सवृद्ध

है तब तक ही प्रतिष्ठा है ।
खुलने की सभावना अधिक

१२३१

ा और कमाई कम तो खर्च

नि यह भी है कि कमाई

करते वाले व्यक्ति के साथ ही कमाई समाप्त हो गई ।
—कमाई करने वाले ही कमाई करते है । कमाई करना हर व्यक्ति के वश की बात नही ।

कमाई सगळा जाणे, मायलौ दुख कुण जाणे ।   १२३२
कमाई तो सभी जानते हैं, भीतर का दुख कोई नही जानता ।
—लोगो की आखें तो बाहरी ठाट बाट देखती है, भीतर की घुटन का उन्हे कोई अदाज नही होता ।
—केवल कमाई करना ही सुख का एक मात्र आधार नही है । कमाई के बावजूद भी दुख की छाया भीतर ही भीतर मडराया करती है ।

कमाउडै नै घी, खाऊडै नै दुर छी ।   १२३३
कमाने वाले को घी, खाने वाले को छी छी ।
—कमाने वाले का आदर-सत्कार व निठल्ले का तिरस्कार ।
—कमाने वाले का सर्वत्र सम्मान होता है उडाने वाले निठल्ले का सभी निरादर करते हैं ।

कमाऊ आवै डरतौ, निखट्टू आवै लडतौ ।   १२३४
कमाऊ आये डरता, निखट्टू आये लडता ।
—घर की प्रतिष्ठा बढाने के प्रयास मे कमाऊ बेहद विनम्र व सुशील होता है । वह समाज से डरता है । पर निठल्ला व्यक्ति हरदम झगडा करने पर ही उतारू रहता है ।
—कमाने वाले को बीसियो बातो का ध्यान रखना पडता है । पर निकम्मा व्यक्ति अपनी थोथी हेकडी मे हर किसी से लडता रहता है ।
पाठा   कमाऊ पूत आवै डरतौ, अणकमाऊ आवै लडतौ ।

कमायौ खाधौ पडयौ लाधौ ।   १२३५
कमाया हुआ खाया, पडा पाया ।
—अपने परिश्रम से कमाकर खाना, अकस्मात् मिले धन के समान आनदप्रद व सतोषप्रद होता है ।
—अपने परिश्रम से कमाकर जीवन-यापन करना श्रेयस्कर है ।
—अपने परिश्रम से गुजर बसर करने का महात्म्य ।

कमावण खावै भांटी री, गीत गावै वीरै रा ।   १२३६
कमाई खाये खसम की, गीत गायें भैया के ।
—आसरा किसी और का, यश किसी और का ।
—मुहताज किसी का और एहसान किसी का ।
देखिए—क. सं. १२४

कमावणो पूत कडूबं बाल्हौ । १२३७
कमाई करने वाला पुत्र परिवार का प्यारा ।
–कमाई करने वाले को सभी आत्मीय जन चाहते हैं ।
–खून के रिश्ते से कमाई का रिश्ता अधिक गाढ़ा होता है ।

कमावै तौ वर नींतर आगडौ मर । १२३८
कमाये तो वर नहीं तो दूर मर ।
–निठल्ले पति की एक कानी कौडी भी इज्जत नही होती ।
–कमाई के अनुरूप ही पति की प्रतिष्ठा होती है ।
–रिश्तो की घनिष्ठता कमाई के पीछे ही निर्धारित होती है ।
पाठा *कमावै तौ वर, नींतर माटी रौ ई ढळ ।*

कमावै थोडौ खरचै घणो, वंलौ मूरख उणनै गिणो । १२३९
कमाये कम खर्चे ज्यादा, बेजोड मूर्ख का यही लबादा ।
–कमाई से *अधिक खर्च करने वाला अव्वल दर्जे का* मूर्ख होता है ।
–आय से अधिक खर्च करने वाला कभी सुखी नही हो सकता ।

कमावै धोती वाळा , खावै टोपी वाळा । १२४०
कमायें धोती वाले , खायें टोपी वाले ।
–पसीना कोई बहाये , सुख से और नहाये ।
–कमाई किसी की और मौज कोई करे ।
–अपनी कमाई जब अपने ही काम न आये ।
–इस कहावत का संकेत अंग्रेजों की शोषण व्यवस्था के प्रति भी है । सीधे सादे हिन्दुस्तानियों की कमाई अंग्रेज निगल जाते थे ।

कमेडी बाज नें कोनीं जीतै । १२४१
फाखता बाज से नही जीत सकती ।
–निर्बल व्यक्ति सबल का सामना नही कर सकता ।
–असहाय व्यक्ति शक्तिशाली से टक्कर नही ले सकता ।

कमोद कादै रा अेकण भाव । १२४२
कुमुद व कीचड का एक ही भाव ।
–अराजक व्यवस्था के प्रति व्यंग ।
–जिस व्यक्ति को भले-बुरे की रचमात्र भी पहिचान न हो ।

कर अे मूथो मालपुवा , बोहरा लेसी हुवा हुवा । १२४३
कर ए मेहती मालपुए , बोहरा लेगा हुए हुए ।
–बोहरा तो पास मे होगा तभी लेगा फिर मौज उडाने मे क्यों कसर रखी जाय ।
–ऋण लेकर गुलछर्रे उडाने वाले व्यक्ति का परिहास ।
पाठा कर रे मोती मालपुवा , बोहरौ लेसी हुवा हुवा ।

करक मंदा रौ के भाव के चोट जाणिये । १२४४
जडी बूटी का क्या भाव—जि चोट के अनुरूप ।
–चोट लगने पर मैंदा-लकडी को घिसकर लेप किया जाता है । उसकी कीमत चोट की गहराई के अनुरूप वसूल करने पर यह कहावत प्रयुक्त होती है ।
–किसी की मजबूरी का लाभ उठाना ।
–*गर्ज मन्द की विवशता ।*
पाठा : मैंदा लकडी रौ काई भाव के पीड परवाण ।

करण मतं होवै जिणरै सारा सैंज है । १२४५
करने की इच्छा होने पर सभी सहज है ।
–काम करने की आतुरता हो तो सभी काम सफल हो जाते हैं ।
–काम करने की निष्ठा ही सब कुछ है ।

करणी आपी आपरी , कुण बेटा कुण बाप । १२४६
करनी अपनी अपनी , कौन तो बेटा और कौन बाप ।
–सभी अपने कर्मानुसार जन्म लेते है , तब कौन तो पिता और कौन पुत्र ?
–अपने अपने कर्मों के फल मे न बाप हिस्सा बटा सकता है और न बेटा ।
–जो जैसा करेगा वह वैसा फल भोगेगा ।
–अपना कर्म अपने साथ बाकी सब व्यर्थ ।
पाठा करणी जासी आपरी , कुण बेटा कुण बाप ।

करणी जिसी भरणी । १२४७
करनी जैसी भरनी ।
–जैसा करेगा वैसा भरेगा ।
–कर्म के अनुसार फल ।
–अच्छे कर्मो का अच्छा फल और बुरे कर्मों का बुरा फल ।

करणी पार उतरणी । १२४८
करनी पार उतरनी ।
मरने के बाद वैतरणी नदी से कर्मों के अनुसार ही पार उतरना होता है ।
–कर्मो के अनुसार ही गति ।

करणो मरण सू दोरो । १२४९

करना मरने से बदतर ।

–हुक्म चलाना आसान पर काम को करना मुश्किल ।

–कहे हुए काम को पूरा करना बडा कठिन है ।

–जो व्यक्ति निहायत आलसी हो उसे संबोधित करके इस कहावत का प्रयोग होता है कि वह काम को मौत से भी बढकर कष्टप्रद मानता है ।

पाठा करणो मरणो बिरोबर ।

करणो राम रो अर बीणती श्रपारो । १२५०

करना राम का और विनती अपनी ।

–ईश्वर से प्रार्थना करना तो अपने वश की बात है पर उसे फलीभूत करना तो उसी के हाथ है ।

–जो ईश्वर चाहे वही होता है ।

करत री विद्या है । १२५१

करने की विद्या है ।

–किसी काम का करना ही एक मात्र विद्या है ।

–निरंतर अभ्यास से ही विद्या अर्जित होती है ।

करता गरू श्रर नीं करता चेला । १२५२

कर्ता गुरु और नहीं करने वाला चेला ।

–हाथ से काम करना ही सब से बडा गुरु है ।

–काम नही करने वाला कभी प्रवीण नही हो सकता ।

–काम की महिमा ।

करता सू करतार हारै । १२५३

कर्ता से कर्तार हारता है ।

कर्मठ व्यक्ति के सामने ईश्वर भी हार मानता है ।

–कर्मठ व्यक्ति का महत्त्व सर्वोपरि है ।

करता सू टळै जिण रो गरू खोटो । १२५४

कर्ता से चूके जिसका गुरु खोटा ।

–बुरे के साथ बुरा न करने वाले का शिक्षक ही बुरा ।

–दुष्ट को हर सूरत मे सजा मिलनी चाहिए ।

–अपराधी को माफ करना भी अपराध है ।

करता सू नीं करै जको बावळो अर नीं करता सू करै जको बावळो । १२५५

कर्ता से न करे वह बावरा और न कर्ता से करे वह बावरा ।

–बुरा करने वाले के साथ बुरा न करने वाला पागल और बुरा न करने वाले के साथ बुरा करने वाला पागल ।

–जो जैसा व्यक्ति है उसके साथ वैसा ही वर्त्ताव होना चाहिए ।

करंता सो भोगता, खिणता सो पडता । १२५६

करेगा सो भोगेगा, खोदेगा सो पडेगा ।

–जो जैसा करेगा वह वैसा ही भोगेगा । जो गड्ढा खोदेगा वही उस मे गिरेगा ।

–बुरे का सदैव बुरा ही फल मिलता है ।

कर भला तो हो भला । १२५७

कर भला तो हो भला ।

–भलाई का फल सदैव ही अच्छा होता है ।

–दूसरो का भला करने वाले का हमेशा भला ही होता है ।

करम कमाई रै मेळ कोनीं । १२५८

कर्म व कमाई का परस्पर मेल नही है ।

–जिस व्यक्ति का भाग्य विमुख हो ।

–काम करने पर भी जिस व्यक्ति को सफलता न मिले ।

करम कमाई रो मेळ । १२५९

कर्म व कमाई का परस्पर मेल है ।

–केवल काम करने से ही कुछ नहीं होता, भाग्य अनुरूप होना भी अनिवार्य है । साथ ही साथ केवल भाग्य के भरोसे बैठे रहने से कुछ नही होता, कार्य करना भी आवश्यक है ।

करम कमावै, सूतो खावै । १२६०

कर्म कमाये, सोता खाये ।

–भाग्यशाली व्यक्ति कुछ काम न करने पर भी मौज उडाता है ।

–जिसका भाग्य कमाने वाला हो तो वह हाथ पर हाथ धरे भी बैठा रह सकता है ।

–भाग्य की महिमा ।

करम कमेडी सो श्रर मन राजा सो । १२६१

भाग्य फाख्ता सा और मन राजा सा ।

–गरीब होने पर भी जो व्यक्ति दिल का फैयाज हो ।

–उस हतभागे व्यक्ति के लिए जिसकी आकाक्षाए बडी हों ।

करम कारी नीं लागण दे जद काई व्है ? १२६२

भाग्य साथ न दे तब क्या किया जाय ?

–हर काम मे असफल रहने वाले व्यक्ति के लिए।
–भाग्य के अलावा कुछ भी नही फलता।

करम छिपै न भभूत रमायां। १२६३
भाग्य छिपे न भस्म रमाय।
–सन्यासी शरीर व ललाट पर भस्म लगाते है। पर इस से भाग्य को छिपाया नही जा सकता। जो भाग्य मे है वह घटित होकर ही रहता है।
–साधु भी भाग्य से बच नहीं सकता।

करम फूटा नैं हौया-फूटौ मिळै। १२६४
कर्म फूटे को अक्ल फूटा मिल ही जाता है।
–भाग्यहीन व्यक्ति को मूर्ख व्यक्ति मिल जाता है।
–दुनिया मे एक एक से बढकर अभागे व मूर्ख होते हैं।
पाठा : करम-फूट्या नैं भाग फूट्यौ ई मिळै।
करम फूट्योडै नैं भाग फूट्योडो सो कोसा अवळाई खा'र मिळै।

करम मे कमेडी ब्याई। १२६५
भाग्य में फाखता ब्यायी।
–नितात अभागे व्यक्ति के लिए।
–वक्त पर अपनी नासमझी व जिद्द के कारण उलटा काम करना जिसमे लाभ की बजाय हानि हो।
–अपने हाथों जानकर अपना नुकसान करने वाले व्यक्ति के लिए।

करम री सगळै वाजै। १२६६
भाग्य की सर्वत्र दुदुभि बजती है।
–भाग्यशाली व्यक्ति की हर जगह जय-जयकार होती है।
–भाग्यशाली व्यक्ति सदैव मौज मनाता है।

करम नै छांवळी तो सायै री सायै। १२६७
भाग्य और छाया कभी साथ नही छोडती।
–छाया की तरह भाग्य भी हमेशा आदमी के साथ रहता है।
–भाग्य के अनुसार ही सब-कुछ घटित होना है।
पाठा : बदी म्हारै रातौरात, करम छांवळी साथौसाथ।

करमन री गत कुण जांणै? १२६८
भाग्य की गति कौन जानता है?
–भाग्य मे जो लिखा है उसे पहिले कौन जान सकता है?
–अदृष्ट भाग्य का किसे भी पता नही लगता।

करम फूटणा व्है जद घर री थोबली सूं ई फूट जावै। १२६९
भाग्य फूटना हो तो घर के थंभे से भी फूट जाता है।
–दुर्दिन आने पर घर के आदमियो से ही क्षति हो जाती है।
–खराब वक्त आने पर आत्मीय-जन भी पराये हो जाते हैं।
–दिनमान का चक्कर बडा विकट होता है।
देखिये—क स ५७८

करम फूट नैं कांकरा निकळिया। १२७०
भाग्य फूट कर कंकर निकले हैं।
–जिस व्यक्ति की औलाद निहायत बिगड जाय तब इस कहावत का प्रयोग होता है।
–कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति घृणित काम करे तब यह कहावत परिहास या व्यग में प्रयुक्त होती है।

करम फूटनै चौढाळ व्हियौ। १२७१
भाग्य फूटकर चारा ढाल बह गया।
–भाग्य इस कदर विमुख हुआ कि कही से भी बचन का उपाय नही।
–किसी व्यक्ति की अत्यत शोचनीय अवस्था हो तब।

करम फूटा रै कारी नीं लागै। १२७२
फूटे भाग्य का कोई उपचार नही।
–फूटे नसीब का कोई मरहम नही।
–अभागे व्यक्ति की कोई सहायता नही कर सकता।
पाठा करम रै कारी नी लागै।

करम फूटा रै कारी लागै, पण घर फूटा रै कारी नीं लागै। १२७३
फूटे नसीब का इलाज हो सकता है पर घर फूट का कोई निस्तार नही।
–घर की फूट दुर्भाग्य से भी अधिक विनाशकारी होती है।

करम मे कांकरा लिख्योडा नैं हीरां री हर करै। १२७४
भाग्य मे तो कंकर लिखे और हीरो की चाह करे।
–भाग्य के विपरीत आकाक्षा कोई माने नही रखती।
–हतभागे के स्वप्न कभी साकार नहीं होते।

करम मे खाज हालै? १२७५
भाग्य में खुजली चल रही है क्या?

–नुक्सान का काम करने वाले व्यक्ति को आगाह करने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।
–कोई व्यक्ति नासमझी मे अपने हाथो घाटे का कोई काम करे तब।

करम मे घोडी लिखी, खोल कुण ले जाय ? १२७६
भाग्य मे घोडी लिखी, खोल कर कौन ले जाये ?
सदर्भ-कथा : एक चोर रात के अधियारे मे किसी के यहा से घोडी चुरा कर ले गया। भटकते भटकते आखिर दिशा-भ्रमित होकर वह सूर्योदय के समय उसी घर पर पुन आ पहुचा जहा से घोडी खोल कर ले गया था। घर के मालिक स रास्ते की जानकारी चाही। परिचित जगह और मालिक को देखते ही घोडी हिनहिनाई। मालिक ने तुरत अपनी घोडी पहिचान ली। फिर चोर को जो सजा मिलनी चाहिए वही उस चोर को सजा मिली।
–भाग्य के विपरीत कोई भी नुक्सान नही पहुचा सकता।
–भाग्य मे सुख लिखा है तो कोई भी उसे कष्ट नही पहुचा सकता।

करम में कागला री पजी। १२७७
भाग्य म कौए का पजा।
–जो एकदम हतभागा हो।
–जिस अभागे व्यक्ति की कोई कुछ भी सहायता नही कर सकता।

करम मे लिख्या ककर तो के करै सिव सकर। १२७८
भाग्य मे लिखे ककर तो क्या करे शिव शकर।
–भाग्यहीन व्यक्ति की देवता भी सहायता नही कर सकते।
–अभागे व्यक्ति का ईश्वर के पास भी कोई उपाय नही।
पाठा · करम मे ककर के करै सकर।

करम रा कोढ़ कठै जाय ? १२७९
दुष्कर्म का कोढ कहा जाये ?
–कोढ जैसे काम किये तो कोढ निकलेगा ही।
–बुरे कर्मो का फल मिल कर ही रहता है।
–बुरे कामो का फल तो भोगना ही पडता है।

करम रेख कद मिटै, करै कोई लाख चतराई १२८०
भाग्य रेख कब मिटे, करे कोई लाख चतुराई।
–भाग्य मे लिखा अमिट है, उसे लाख यत्न करने पर भी मिटाया नही जा सकता।
–बुद्धि व चातुर्य भाग्य के सामने गौण हैं।

करमहीण नै कद मिळै, भली वसत रौ भोग। १२८१
भाग्यहीन को कब मिले भली वस्तु का भोग।
–ससार मे सब कुछ उपलब्ध है पर भाग्यहीन कुछ भी प्राप्त नही कर सकता।
–ससार की कोई भी वस्तु भाग्यहीन के लिए सर्वथा अप्राप्य है।
पूरा दोहा करम हीण नै कद मिळै भली वसत रौ भोग।
दाख पकै जद काग रै होत कठ मे रोग॥

करमहीण खेती करै, हळ भागै के बळद मरै। १२८२
भाग्यहीन खेती करे, हल टूटे या बैल मरे।
– भाग्यहीन के हर काम मे कदम कदम पर विघ्न खडे हो जाते हैं।
–अभागे का कोई भी कार्य बिना अडचन के शुरू ही नही होता।
पाठा : करमहीण खेती करै, बळद मरै के काळ पडै।

करमहीण घणा बरसा जीवै। १२८३
हतभागा अधिक वर्षो तक जीता है।
–जीवन पर्यन्त दुख भोगने के लिए भाग्यहीन व्यक्ति दीर्घायु होता है।
–अभागे व्यक्ति को दुखो से छुटकारा जल्दी कैसे मिल सकता है ?

करमां रा फळ भोगै। १२८४
कर्मों के फल भोगता है।
–दुष्कर्मों का बुरा फल भोगने वाले व्यक्ति के लिए।
–बुरे कर्मों के बुरे फल से बचा नहीं जा सकता।

करसी सो भरसी। १२८५
करेगा सो भरेगा।
–जो जैसा अपराध करेगा वैसा दड भरेगा।
–अपने-अपने कर्मों का फल अलग।

करसै नै काती रै महीनै अकल आवै। १२८६
किसान को कार्तिक के महीने मे अक्ल आती है।
–वर्षा ऋतु की फसल कार्तिक के महीने मे कटती है, तब

किसान की हुई गलतियों का निदान खोजने की कोशिश करता है कि ऐसा करने से अच्छा रहता। किन्तु खेती में कभी एक तरह के निदान से बात नहीं बनती। मौसम व हवा के कारण सोचा हुआ निर्णय बदल जाता है।
–काम बिगड़ जाने के बाद समझदारी कोई माने नहीं रखती।
–गलतियों से ही आदमी होशियार होता है।
पाठा करसो कातो मे समझणो व्है

करसौ हाथां कमावै, पण बाणिये रै बेटा सारू। १२८७
किसान हाथ से कमाता है, पर बनिये की औलाद के लिए।
–किसान की सारी कमाई बनिये के पास चली जाती है, पर जिसे बनिया भी काम न लेकर अपने पुत्र के लिए छोड़ जाता है।
–बोहरा प्रथा के शोषण की ओर संकेत।
–कमाये कोई और, संचित करे कोई और।

करसौ घणौ ई कमावै पण बाणिया तालकै। १२८८
किसान खूब ही कमाता है पर बनिये की खातिर।
–किसान दिन रात मेहनत तो बेशुमार ही करता है पर नासमझी से उसकी सारी कमाई बनिये की तिजोरी में चली जाती है
–महाजन प्रथा के शोषण का घिनौना चित्र।

करचा जाजो नै कमाई पाजो। १२८९
करते रहना और कमाई पाते रहना।
–जो काम करेगा उसे कमाई हाथ लगेगी।
–श्रम का महात्म्य।

करचा बणै के दीया बणै। १२९०
करने से बात बनती है या देने से।
–अपने हाथों काम करने से कार्य सपन्न होता है या पैसे खर्च करने से।
–केवल बातो से काम पूरा नहीं होता।

करचौ सौ काम अर भज्यौ सौ राम। १२९१
किया सो काम और भजा सो राम।
–काम और भजन कर लिया सो कर लिया, अन्यथा क्षण-भगुर जीवन का कोई भरोसा नहीं।
–काम और भजन जितना जल्दी सपन्न कर लिया जाय वह अच्छा है।
–काम और भजन में क्षण भर की भी ढील नहीं करनी चाहिए। क्या पता अगले क्षण में क्या हो?

करचौ सौ काम, बींध्यौ सौ मोती। १२९२
किया सो काम और बिंध गया सो मोती।
–काम का महात्म्य उसे सपन्न करने में ही है और बिंध जाने के बाद ही मोती का मूल्य है।
–किसी भी काम को निर्विलम्ब शुरू कर देना चाहिए।

करी नेकी, पाणी मे फेंकी। १२९३
करी नेकी, पानी में फेंकी।
–किसी का उपकार करके तत्क्षण भूल जाना चाहिए।
–भलाई करने का व्यर्थ भार ढाने से कोई फायदा नहीं।
पाठा : नेकी कर दरिया म फेंक।

करैला टहल तौ पावैला महल। १२९४
करेगा टहल तो पायेगा महल।
–किसी की टहल का लाभ निश्चित है।
–किसी की सेवा बदगी का फल अच्छा ही रहता है।

करेलौ अर नींब चढ्यौ। १२९५
करेला और नीम चढा।
–करेला स्वय कड़ुवा होता है, उस पर नीम की सगत के बाद तो कहना ही क्या?
–किसी दुष्ट व्यक्ति को ऊँचा पद मिल जाय तब।
–बुरे व्यक्ति को किसी ऊँचे व्यक्ति की शह मिल जाय तब।

करै कोई, भरै कोई। १२९६
करे कोई, भरे कोई।
–अपराध करे कोई, दड भरे कोई।
–किसी के साथ अनुचित न्याय हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–दूसरे के दुष्कर्मों का फल किसी और को मिले तब।

करै ज्यानै छाजै। १२९७
जिसका जो काम है, वह उसी को शोभा देता है।
–दूसरा की देखादेखी करने का नतीजा बुरा ही होता है।
–अपनी अपनी प्रवीणता का अपना दायरा होता है।

करै जिसा भुगतै। १२९८
करे जैसा भोगे।

-जो जैसा कर्म करेगा वह वैसा ही फल पायेगा।
-बुरे काम का परिणाम सदा बुरा होता है।
-यह कहावत अधिकांशतया दुष्ट आदमी को बुरा फल मिलने पर ही प्रयुक्त होती है।

करै तौ डर नीं करै तौ कैडो डर ? १२९९
करे तो डर, नही करे तो कैसा डर ?
-दुष्कर्म करने वाले के मन मे सदा डर बना रहता है। और जो दुष्कर्म से मुक्त है उसे डरने की क्या जरूरत।
-निरपराधी के मन मे डर क्यो हो ?
पाठा करै सो डरै।

करै तौ डर, नीं करै तौ डर। १३००
करे तो डर, नही करे तो डर।
-बुरा काम करे तो डर और अच्छा काम न करे तो डर।
-सशंकित व्यक्ति को अपराध करने का डर तो लगता ही है, पर साथ ही साथ अपराध न करने पर भी डर लगता है। क्योंकि कई बार निरपराध को भी दड मिल जाता है और दुनिया व्यर्थ बदनाम करने पर उतारू हो जाती है।

करै विणियांणी रौ नै मरै रजपूताणी रौ। १३०१
करे सेठानी का और मरे रजपूतानी का।
-बनिया की शादी मे डकैतो के डर से उनके साथ पुराने जमाने मे सरक्षक के रूप मे राजपूत चलते थे। शादी करने तो जाये बनिये का पुत्र और डाकुओ से सामना करने पर काम आये रजपूतानी का पुत्र।
-गाँव म व्यापार के द्वारा धन सचय तो बनिया करता है पर उसके घर डाका पडने पर शासक वर्ग का प्रतिनिधि होने पर राजपूत को डाकुओ से मुकाबला करना पडता है।
-किसी दूसरे के द्वारा किये काम का किसी और को दड भोगना पडे तब।

करै सेवा, पावै मेवा। १३०२
करे सेवा, पाये मेवा।
-सेवा करने का फल सदा अच्छा मिलता है।
-सेवा कभी निष्फल नही जाती।

करै सो भरै। १३०३
करेगा सो भरेगा।
-अपराध करेगा सो दड पायेगा।
-बुरा करने वाला आखिर दडित होता ही है।
देखिये —क्र. स. १२८४

करोड दिवाळिया राज करौ। १३०४
करोड दिवालियो तक राज्य करें।
-बहुत सालो तक ठाट से जीयो और खूब सुखी रहो।
-लबी उम्र व सुख के लिए आशीर्वाद।

करौ पाप खावौ धाप, करौ धर्म फोडौ करम। १३०५
करो पाप, खाओ अघाय, करो धर्म फोडो कर्म।
-पाप किये जाओ और छक कर खाओ। धर्म करने से हमेशा तकलीफ ही रहती है।
-पाप और अधर्म करने वाला सुखी रहता है तथा नैतिक-मान्यताओ का पालन करने वाला दुखी।
-बधी धारणाओ से मुक्त व्यक्ति ही धन कमा सकता है।

करौ बेटा फाटका, बेचौ घर रा बाटका। १३०६
करो बेटे फाटके, बेचो घर के बाटके।
-बाटके=थाली-कटोरी इत्यादि घर के सभी बर्तन।
-सट्टे- बाजी या जूए बाजी से घर का सत्यानाश अवश्य-म्भावी है।
-फाटका या सट्टा घोर निंदनीय है।

करौला बदगी तौ पावौला चदगी। १३०७
करोगे बन्दगी तो पाओगे चन्दगी।
-बन्दगी करने से धन हाथ लगता है।
-बन्दगी का फल सदैव शुभ होता है।

करौला सौ पावौला। १३०८
करोगे वैसा पाओगे।
-जो व्यक्ति जैसा काम करेगा वैसा ही फल पायेगा।
-अच्छे कार्य का अच्छा फल और बुरे कार्य का बुरा फल।

कळकत्तै रौ धारौ, बाप सू बेटौ न्यारौ। १३०९
कलकत्ते का कायदा, बाप से बेटा अलहदा।
-बडे शहरो म सम्मिलित परिवार सभव नही।
-बडे शहरो में पारिवारिक मुरौवत नही रह सकती।

कळिजुग नीं कर जुग है। १३१०
कलियुग नही कर युग है।
-कलियुग म इस हाथ दे और उस हाथ से वाली मर्यादा का महत्व है।

–अपने हाथों से जो व्यक्ति जैसा काम करेगा वैसा ही उसे कलियुग में निविलम्ब फल मिल जाता है।
पूरा दोहा इस प्रकार है
कळजुग नी कर जुग जाणो, इण हाथ दे उण हाथ लै।
नगदा नगदी री सोदो, दिन रा दै अर रात रा लै।।

कळ सू कळ दबै। १३११
कल से कल दबती है।
–ऊपरी दबाव पड़ने से ही कोई काम सम्पन्न होता है।
–पारस्परिक दबाव की अहमियत।

कळ सू होवै सो बळ सू नीं होवै। १३१२
कल से होने वाली बात बल से नहीं होती।
–जो काम युक्ति से हो सकता है वह बल से नहीं होता।
–बल की तुलना में अटकल या बुद्धि कौशल का महत्त्व अधिक है।

कलाळी रै घरै दूध पीवै तो ई दुनिया दारू जाणै। १३१३
कलाली के घर दूध पीये तो भी दुनिया शराब मानती है।
–संगति के आधार पर ही मनुष्य की परख होती है।
–संगति के अनुसार ही लोग चरित्र की पहिचान करते हैं।

कळै रळासै परिंडै रो पाणी खूटै। १३१४
कलह झगड़े से परिंडे का पानी भी समाप्त हो जाता है।
–परिंडा=पीने के लिये पानी के बरतनों का स्थान।
–घर की कलह से परिंडे का पानी भर कर कौन लाये यह समस्या खड़ी हो जाती है इस कारण बरतन खाली पड़े रहते हैं। कलह के फलस्वरूप पानी जैसी सहज उपलब्ध वस्तु भी दुर्लभ हो जाती है।
–गृह-कलह से विनाश अवश्यम्भावी है।
पाठा० कळै सू कळसा रो पाणी जाय परो।

कळै रो मूळ। १३१५
कलह का मूल।
–जो व्यक्ति झगड़े की जड़ हो।
–हरदम कलह करना ही जिस व्यक्ति का स्वभाव हो।

कळै रो मूळ हासी अर रोग रो मूळ खासी। १३१६
कलह का मूल हासी और रोग का मूल खासी।
–मजाक मजाक में झगड़ा उसी तरह बढ़ जाता है, जिस तरह मामूली खासी से रोग।
–हरदम किसी का मखौल उड़ाना ठीक नहीं।

कळक रो टीको। १३१७
कलक का टीका।
–लांछन की कालिख।
–जो सन्तान अत्यधिक पथभ्रष्ट हो।
–जिस सन्तान के कारण घर की बदनामी हो।

कवियां रुदो कतार के हळ खडणो सीखो हमे। १३१८
कवियो रुदो कतार या हल खडना सीखो अभी।
–अब कविता जैसी कला की कोई कद्र नहीं। कवियों को चाहिए या तो वे कतार के पीछे चलें या हल चलाना सीखें। अन्यथा जीवन बसर करना मुश्किल है।
–अब कविता की कद्रदानी का जमाना नहीं रहा।

कसाई रा दाणा नै बापड़ी बकरी कद खावै ? १३१९
कसाई के अनाज को बेचारी बकरी कब खाये ?
–आततायी का नुकसान करने का हौसला गरीब में कहां ?
–असहाय व्यक्ति शक्तिशाली को स्वप्न में भी हानि नहीं पहुंचा सकता।

कसाई नै गाय बेचै। १३२०
कसाई को गाय बेचना है।
–किसी आततायी के हाथों सज्जन व्यक्ति को सौंपना।
–बेढंगे दुष्ट व्यक्ति के साथ गाय जैसी निरीह औरत का विवाह करे तब व्यंग में यह कहावत प्रयुक्त होती है।

कसाई रोवै मास नै बकरी रोवै जीव नै। १३२१
कसाई रोये मास को बकरा रोये प्राण को।
–अपने स्वार्थ के वशीभूत जो अंधा व्यक्ति दूसरों के प्राणों तक की परवाह न करे।
–हर व्यक्ति को अपने स्वार्थ का ही ध्यान रहता है।
–अपने स्वार्थ में अंधे व्यक्तियों को दूसरों की हानि का रंच मात्र भी खयाल नहीं रहता।

कसाया रै घरै तो मास इज हाथ आवै। १३२२
कसाइयों के घर में तो मास ही हाथ लगता है।
–गंदे व्यक्ति के मकान में स्वच्छता का क्या काम ?
–दुष्ट व्यक्ति से अच्छी बात की आशा करना व्यर्थ है।
–बदचलन व्यक्ति तो दुराचार करेगा ही।

कहणी सोरी करणी दोरी । १३२३

कहना आसान पर करना मुश्किल ।

—कोई बात कहने मे जोर नही लगता पर उसे पूरा करना बड़ा कठिन होता है ।

—बातें बघारना सहज पर काम करना निहायत कठिन ।

कहतां हू धीवडली नैं सुणै है बवडली । १३२४

बेटी को कह रही हूं पर बहू सुनना तुम्हें है ।

—परोक्ष रूप से किसी को बात समझाना ।

—किसी को सीधे न कह कर दूसरे के माध्यम से उलहना देना ।

कह'र धूड मे नाखणी । १३२५

कह कर धूल मे डालना ।

—जिस व्यक्ति पर सीख का कोई असर न हो ।

—जिस व्यक्ति को कुछ भी समझाना व्यर्थ हो ।

—जो व्यक्ति बार-बार कहने व याद दिलाने पर भी कोई काम न करे ।

कह बात, कटै रात । १३२६

कह बात, कटे रात ।

—लोक-कथाओं में चरवा तथा चकवी के माध्यम से बात-चीत शुरू करने का एक अभिप्राय ।

—दुःख की अवियानी रात किसी तरह बहलाने से पूरी हो ।

—दुःख से बोझिल मन को बहलाने के लिए कुछ तो रंजन अपेक्षित है ।

कह्यां किसै कूवै मे पड जासी । १३२७

कहने से कौन-सा कुए मे गिर जायेगा ।

—जो आदतन व्यक्ति दूसरों के बरगलाने में आसानी में आ जाता हो ।

—जो व्यक्ति दूसरों की अंगुलियों पर नाचता हो ।

—कोई व्यक्ति कुछ भी सिखाये, अपना भला-बुरा तो पहिले सोचना चाहिए ।

कह्यां किसै कूवै मे पडीजै । १३२८

कहने से कौनसा कुए मे गिरा जाता है

—दूसरे लोग कितना ही क्यों न बरगलायें अपना हानि-लाभ का निर्णय तो सभी जानते हैं ।

—एक सीमा तक ही कोई आदमी किसी का कहना मानता है, उससे ज्यादा नही ।

कहावतां रो काकौ । १३२९

कहावतों का आका ।

—जो व्यक्ति कहावतों का खजाना हो ।

—जो व्यक्ति बात-बात मे कहावतों का प्रयोग करता हो ।

कह्या कुमार गधै कोनीं चढ़ै । १३३०

कहने से कुम्हार गधे पर नही चढता ।

—जो मन-मौजी व्यक्ति किसी का कहा नही माने ।

—जो व्यक्ति बार-बार कहने पर भी अपने भले की बात न सुने ।

—कदीम से करते आये काम को किसी के कहने पर भी न करना ।

—नासमझ हठी व्यक्ति के लिए ।

कह्यो नीं मानै जिणरो काळो मूंडो । १३३१

कहा न माने उसका मुह काला ।

—जिद्दी आदमी के प्रति वितृष्णा ।

—जरूरत से ज्यादा हठी व्यक्ति को हमेशा दूर ही रखना चाहिए ।

कयां का गीत गावै, नींद री मां-रांड नैं रोवै । १३३२

काहे के गीत गाये, नीद की अम्मा को रोये ।

—कर्कश व बेसुरा गाने वाले व्यक्ति का परिहास ।

—जो व्यक्ति बेकार की बकवास करे ।

—जो व्यक्ति खामखा मगज चाटे ।

कयां ताता दूध बिलाई करै है ? १३३३

क्यो बिल्ली की तरह गर्म-दूध को तक रहा है ?

—जो व्यक्ति व्यर्थ की आकांक्षाएं रखे ।

—हवाई किले बनाने वाले व्यक्ति के प्रति व्यंग ।

कयां री कुपाळी है ? १३३४

किसकी खोपड़ी है ?

—जो व्यक्ति अत्यधिक बातूनी हो ।

—जो व्यक्ति दिन भर बकवास करने पर भी चुप न हो ।

कयू आंधा न्यूतै अर कयू दो जीमावै । १३३५

क्यों अंधे न्यौते और क्यों दो को जिमाये ।

—अंधे आदमी को निमन्त्रण देने पर उसके साथ राह बताता हुआ एक आदमी और आता है । तब मजबूरी में दूसरे को

भी खिलाना पडता है।
—अपने हाथ से की हुई भूल के लिए पश्चाताप।
—अनजान भूल हो गई सो हो गई।

क्यू काटा मे ठिरडो ? १३३६
क्यो काटा म घसीट रहे हो ?
—काटा मे घसीटना एक मुहावरा है। जिसकी व्यजना है कि आप जितनी मेरी तारीफ कर रहे हैं मैं उस काबिल नही हू। इस कारण मेरी जरूरत से ज्यादा तारीफ करना मानो मुझे काटा मे घसीटना है।
—मुझे क्या खामखा लज्जित कर रहे हो ?
—क्यो फालतू बोझा मेरे सिर पर डाल रहे हो ?

क्यू कैवा क्यू कैवाडा ? १३३७
क्या कहे और क्यो सुनें ?
—क्यो किसी को अपशब्द कहे और क्या वापस अपशब्द सुनें।
—क्यो किसी को कडुवा ताना सुनायें और क्यो वापस ताना सुनें।

क्यू टाटिया रै छाता मे हाथ घालै ? १३३८
क्यो भौरा के छत्त मे हाथ डालता है ?
—बहुतेरे व्यक्तिया की पचायती म हाथ डाल कर आफत मोल लेना।
—किसी उलझे हुए काम को चलते रास्ते छेडकर उसे सुलझाना बहुत मुश्किल है।
—*नासमझी से बड खतरे को मामूली समझकर उस म हाथ* डालना।

क्यू तो गुळ खाऊ अर क्यू कान बिंधाऊ ? १३३९
क्यो तो गुड खाऊ और क्यो कान बिंधाऊ ?
—गुड के लालच म कान बिंधाने की पीड झेलना।
—*अकिंचन प्रलोभन मे फसकर ज्यादा कष्ट मोल लेना।*
—मामूली लालच के कारण अधिक खतरा उठाना।
पाठा नी तो गुळ खाणो अर नी कान बिंधावणा।

क्यू बळनी मे पूळो रगसावे ? १३४०
क्यो जलती आग म घास डाल रहा है ?
—जो व्यक्ति लडाई को बुझाने की बनिस्पत उसे बढाने की कुचेष्टा करे।
—जले को और अधिक जलाने का प्रयास करना।

क्यू भूडा करै भाणेज, ज्यांरा मामा मतवाळा ? १३४१
क्यो कर बुरे हो भानजे, जिनके मामा हो मतवाले ?
—जिस व्यक्ति के घरवाले सभी चट हो, वह सीधा क्यो कर हो सकता है।
—जो व्यक्ति जरूरत से ज्यादा होशियार, चालाक अथवा धूर्त हो उसके व्यक्तित्व के प्रति व्यग।
—जो व्यक्ति हरफन मौला हो उसके लिए यह उक्ति प्रयुक्त होती है।

क्यू राम री मा नै लाता ऊ मारै ? १३४२
क्या राम की मा को लातों से मार रहे हो ?
—जरूरत से ज्यादा डीग मारने वाले व्यक्ति के लिए।
—अक्षम होते हुए भी जो व्यक्ति बढ बढ कर बातें बघारे।
—जा व्यक्ति क्षमता न होते हुए भी खामखां बडा बनने का दिखावा कर।

क्यू राबडी मे राख घोळै ? १३४३
क्यो राब म राख घोल रहे हो ?
—खामखा काम बिगाडने वाले व्यक्ति के लिए।
—चलते रास्ते किसी काम म रोडा अटकाने वाले व्यक्ति के लिए।

क्यू राबडी मे हाथ घालै ? १३४४
क्यो राब मे हाथ डाल रहे हो ?
—राबडी=बाजरी के आटे को पानी में उबाल कर बनाई हुई मामूली सी गाढी भोज्य सामग्री जो गरीब तबके की खातिर हलके स्तर की मानी जाती है।
—राब मे हाथ डालने से हाथ गदा ही होता है, उस से पेट नही भरा *जाता।*
—खामखा ऐसे काम म क्या हाथ डालना जिस से मामूली सी भी स्वार्थ सिद्धि न हो।

क्यू राड कैय निपूती सुणणी। १३४५
क्यो राड कह कर निसतान कहलाना।
—*गाली देकर गाली सुनना।*
—जैसा कहना वैसा सुनना।
—अपनी प्रतिष्ठा अपने हाथ।

क्यू राड नै बतळावू अर क्यू घर री घरकूडियो करू ?

क्यो तो वदजात से बात करू और क्यो घर का सत्यानाश हो ? १३४६

संदर्भ-कथा : किसी एक जिज्ञासु औरत ने एक वाचाल औरत से पूछा कि 'लारवाड' का क्या मतलब होता है ? तब उस औरत ने गभीरता पूर्वक उसे समझाते हुए कहा. 'तुम्हारे पति के मरने पर जब तुम अपने छोटे बच्चे को लेकर किसी से दूसरा विवाह करोगी तो तुम्हारे साथ चलने वाला छोटा बच्चा 'लारवाड' कह लायेगा ।' क्यो तो वह उस औरत से प्रश्न पूछे और क्यो उसके घर का सत्यानाश हो ।

–चलते रास्ते की मामूली सी भूल के कारण कोई भारी क्षति उठाना ।

–छोटी-सी गल्ती करके भारी जोखिम नही उठाना चाहिए ।

क्यू सादडी में वास भरं ? १३४७

क्यो सादडी को बास भर रहे हो ?

–जहा बास बहुत पैदा होते हो वहा व्यापार के लिए बास भेजना ।

–मूर्खता की चरम निशानी।

–नासमझी से बिलकुल उलटा काम करना ।

कंई आपरी आंगळी किचरीजी ? १३४८

क्या आपकी अगुली दबी ?

–ऐसा कोई आपको कष्ट तो हुआ नही ।

–जो व्यक्ति खामखा का एहसान जतलाये ।

कंई खाटो मोळो व्हे ? १३४९

क्या खट्टा-फीका हो रहा है ?

–ऐसा भी क्या अनर्थ हुआ जा रहा है ?

–ऐसी भी क्या देरी हो रही है ?

–अत्यधिक उतावले व्यक्ति को धैर्य के लिए समझाते हुए यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

कंई घोडा रो घटसी तो कंई सवार री ई घटसी । १३५०

कुछ घोडे का घटेगा तो कुछ सवार का भी घटेगा ।

यदि घुड-दौड मे घोडा पीछे रह जाय तो घोडे की प्रतिष्ठा के साथ सवार की भी प्रतिष्ठा घटती है ।

–दोनो ओर कुछ हानि हो तब ।

–जो व्यक्ति दूसरो को क्षति पहुचा कर स्वय बिलकुल बचना चाहे तो उसे सतर्क करते हुए इस उक्ति का प्रयोग होता है कि उसे भी थोडा-बहुत तो नुकसान होगा ही ।

–दूसरे की इज्जत गवाने से कुछ अपनी भी इज्जत घटती है ।

कंई तो धव चीकणा अर कंई क्वाडिया भोटा । १३५१

कुछ तो धव चिकना और कुछ कुल्हाडी बोथरी ।

–परस्पर प्रयुक्त या व्यवहृत होने वाले दो पदार्थों या प्राणियो मे कार्यानुसार श्रेष्ठ गुणो की कमी ।

–दोनो तरफ कुछ न कुछ कसर ।

–काम न करने का उपयुक्त बहाना ।

कंई पीळां री पोट लेयनै आयो ? १३५२

क्या पीली ओढनियो की गाठ बाध कर लाया ?

–इतना एहसान जतलाने की क्या जरूरत, कोई मेरी खातिर पीली ओढनियो की गाठ बाधकर तो लाये नही ।

–खामखा एहसान जतलाने वाले व्यक्ति के प्रति व्यग ।

कंई बाळ खांका कर लेसी ? १३५३

क्या बाल बाका कर लेगा ?

–कोई कुछ भी नही बिगाड सकता ।

–कोई रच-मात्र भी हानि नही पहुचा सकता ।

कंई बांवळिया खांगा कर लेसी ? १३५४

क्या बबूल टेढे कर लेगा ?

–ऐसा भी क्या तीसमारखा है जो बबूल टेढा कर लेगा ।

–कुछ भी जोखिम नही पहुचा सकता ।

कंई माखर रा भारा लावै ? १३५५

क्या पहाड का बोझा उठा कर ला रहा है ?

–ऐसी भी क्या अनहोनी बात कर रहा है ?

–ऐसी भी क्या बेजोड करिश्मा दिखा रहा है ?

कंई हिंदवांणी री तुरकांणी कर देसी ? १३५६

क्या हिंदू औरत को मुसलमानिन बना देगा ?

–ऐसा भी क्या खतरा पहुचा देगा ?

–जो हिम्मत हो वह कर लेना !

–कुछ भी अनहोनी बात होने वाली नही ।

कंगाल छैल गांव नै भारो । १३५७

निर्धन छैला गांव के लिए बोझ ।

–निर्धन व्यक्ति अपने बूते पर तो ऐश कर नही सकता तब

और पूरा करने के लिए उसे या तो चोरी, उधार या ठगी करनी पड़ती है। फलस्वरूप उसके खेलाम का बोझ गाव पर ही पडता है।
–निठल्ला शौकीन समाज के लिए भार स्वरूप होता है।
–जो व्यक्ति दूसरा की कीमत पर मौज उडाये।

कगाल रो काळजो पोलो। १३५८
कगाल का कलजा कमजोर।
–गरीब व्यक्ति का हौसला नही होता।
–गरीब व्यक्ति दब्बू होता है।
पाठा कगाल रो काळजो काचो।

कगाली मे आटो गीलो। १३५९
कगाली मे आटा गीला।
–अभाव दर अभाव।
–निरतर कष्ट।
–असहाय व्यक्ति पर अचानक और कोई विपदा आ पडे तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

कचन रै काट नीं लाग। १३६०
कचन पर जग नही लगता।
–सज्जन व्यक्ति पर कोई लाछन नही लगा सकता।
–आदर्श व्यक्तित्व पर धब्बा नही लगता।
पाठा कचन रै काट कद लागै ?

कदोया री गोठ मे सीरा री पोखाळो। १३६१
हलवाइया की गोठ मे हलुवे की बर्बादी।
–ज्यादा हलवाइया की पचायती स हलुवा बिगडने की सभावना रहती है।
–समान प्रवीणता वाले अधिक व्यक्ति इकट्ठे होकर काम सुधारने के बजाय बिगाड देते हैं।
–प्रति दिन हलुवा बनाने से हलवाइयो को उस से अरुचि हो जाती है, फलस्वरूप उनकी खातिर बना हुआ हलुआ काम नही आता।
–पूर्णतया सोच विचार कर काम नही करने मे क्षति ही होती है।

कदोयां रो मोगड मिन्नी। १३६२
हलवाइयो का बिलाव।
–हलवाई के बिलाव की तरह मुफ्त का माल खा कर दिन व दिन पुष्ट होने वाला व्यक्ति।
–अत्यधिक मोटा ताजा व्यक्ति।

कदोरी रै पाण धोती को रैवै नीं, कडियां रै पाण रहसी।
कदोरी के बूते पर धोती नही रहती, वह तो कमर के जोर पर रहती है। १३६३
–कदोरी = कमर पर बधा मोटा धागा।
–आखिर अपना बूता ही काम आता है।
–अपने बाहुबल पर ही कोई आदमी खडा हो सकता है, दूसरा के सहारे से बात नही बनती।

कयो अेक दिसावर घणा। १३६४
कत अकेला और दिसावर बहुतेरे।
–अकेला व्यक्ति क्या क्या करे ?
–दुनिया भर की रकम ई एक व्यक्ति एकत्रित नही कर सकता।
–अपना जितना बूता हो उतना ही काम करना चाहिए।

कवरजी रा दसखत डागळै सूखै। १३६५
कुवर साहब के दस्तखत छत पर सूख रहे हैं।
सदर्भ-कथा एक सेठ के लडके की सगाई के लिए कुछ व्यक्ति आये। लडके की पढाई लिखाई के बारे म उन्होने जानकारी चाही तो सेठ ने गोलमाल सा उत्तर दिया कि उसके लडके की पढाई लिखाई के बारे मे क्या कहना—उसके दस्तखत तो छत पर सूख रहे हैं। सेठ के उत्तर से वे व्यक्ति पूर्णतया सतुष्ट हो गये। उन्होने सोचा कि उसके हाथ की लिखी कई पुस्तक ऊपर पडी है। पर वास्तव मे बात कुछ दूसरी ही थी। वह लडका निरक्षर भट्टाचार्य ही था। उसके हाथो थपे हुए कडे छत पर सूख रहे थे। सेठ के गोलमाल उत्तर से बात सुधर गई।
–जो व्यक्ति गोबर थापने जैसा ही गवार हो।
–जो व्यक्ति ऊपरी टीम-टाम से पढा लिखा दिखे पर बिलकुल अनपढ हो।

कवळै काळ खड्यो। १३६६
दरवाजे पर ही काल खडा है।
–मनुष्य की मौत का कोई भरोसा नही कि वह कब आ जाय।
–सुनिश्चित मौत का भय जानकर मनुष्य को सुकर्म ही

करने चाहिए।
–अहकारी व्यक्ति के प्रति व्यग।

कवारां रा न्यारा गाव थोडा ई बसै ! १३६७
कुआरो के कोई अलग गाव बसे हुए नही होते।
–भले-बुरे, दुष्ट व सज्जन इत्यादि सभी किस्म के व्यक्ति समाज के बीच ही रहते है, किसी को अलग एक गाव म नही बसाया जाता।
–सभी तरह के व्यक्ति समाज म रहत हैं

कवारी काठा कोनीं चढै। १३६८
कुआरी कन्या सती नही हो सकती।
–कुआरी लडकी को सती होने का सुयोग नही मिलता।
–निरपराधी को दडित नही किया जा सकता।

कवारी धीवडी रै छत्तीस वर। १३६९
कुआरी वेटी के छत्तीस वर।
–निर्बंध या मुक्त व्यक्ति के लिए कई रास्ते खुले हैं।
–किसी बात को तय करने के पूर्व खूब सोच विचार कर लेना चाहिए।
–जिस काम के लिए कई तरह की सभावनाए हो।

का

काकडियां रो चोर। १३७०
ककडियो का चोर।
–अकिंचन चोर।
–जो चोर निहायत मामूली चोरी करके ही सतुष्ट हो जाता हो।

काकड़ी कटसी, चक्कू रो कांई कटै ! १३७१
ककडी कटेगी, चाकू का क्या कटे !
–भला आदमी ही किसी के लिए क्षति उठा सकता है, धूर्त व्यक्ति कभी किसी के काम नही आता।
–शोषण तो असहाय ही का होता है, शोषक कभी दाव नही देता।
–गरीब ही कटता है, शैतान का कुछ नही बिगडता।

काकडी फाटै ज्यू फाटै। १३७२
ककडी की तरह फट रहा है।
–एकदम हृष्ट पुष्ट व्यक्ति के लिए।
–जिस गठीले व्यक्ति का तगडा स्वास्थ्य हो।
–जिसकी जवानी फट रही हो।

काकडी फाटै ज्यू मत फाटो। १३७३
ककडी की तरह मत फटो।
–ककडी की तरह मद म फटना उचित नही।
–ज्यादा अहकार मत करो।
–अभिमानी व्यक्ति के लिए।

काकडी माथै चक्कू पडौ, भलाई चक्कू माथै काकडी पडौ, काकडी रौ नास। १३७४
ककडी चाकू पर गिरे या चाकू पर ककडी, हर सूरत मे ककडी का ही नाश होता है।
–दुष्ट या धूर्त व्यक्ति कभी गरीब को दाव नही लेने देता।
–कैसी भी युक्ति बिठाई जाय, क्षति पहुचने वाले को तो क्षति पहुचकर ही रहेगी।
–किसी भी सूरत म गरीब का शोषण टल नही सकता।
–शोषण केवल अपना रूप बदलता है, उसका अत नही हो सकता।

काकडी रा चोर नै लाकडी। १३७५
ककडी के चोर पर लाठी।
–छोटे अपराध की बडी सजा।
–अकिंचन चोर को अकिंचन ही सजा मिलनी चाहिए। भारी सजा देना न्याय संगत नही।

काकडी रा चोर रै थाप ई घणी। १३७६
ककडी के चोर के लिए थप्पड ही काफी।
–छोटे चोर के लिए मामूली सजा ही काफी।
–अपराध के अनुरूप ही सजा मिलनी चाहिए।
–अकिंचन चोर के लिए डाट फटकार ही काफी।
पाठा काकडी रै चोर नै मूकी री मार।

पाठा : काकडी रै चोर नैं दूठ ई भली।

काकरिया कंवळा होवैं तो स्याळिया कद छोडैं ? १३७७

कक्कर नरम हो तो सियार कब छोड़ें ?

–कोई चीज काम की न होने पर ही धूर्त व्यक्ति उसको छोडता है अन्यथा सबसे पहिले वही उसे काम मे ले लेता।

–हथियाने वाली उपयोगी वस्तु कोई नही छोडता।

–लाभ न होने पर ही उस ओर किसी की नजर नही जाती।

पाठा . काकरिया कवळा हुवैं तो जदै ई स्याळिया खा जाय।

काका खोखो पायो के काका रै साथै तो यूं ईं घूपटा उडावैला। १३७८

चाचा खोखा पाया—कि चाचा के साथ तो ऐसी ही मौज मनायेगी।

–खोखो=खेजडी [शमी] के वृक्ष पर लगने वाली लम्बी लम्बी सूखी फलिया, जो निहायत अकिंचन फल मानी जाती है।

–सगति के अनुसार ही फल मिलते है।

–कुसगति का अच्छा फल नही होता।

काका थारी कांण राखूं के बेरा री। १३७९

चाचा तुम्हारी मर्यादा रखू या कुए की।

सदर्भ-कथा किसी एक रहट वाले कुए पर दो रहट चलने की व्यवस्था थी। पिता व पुत्र दोनो एक एक रहट चला रहे थे। पिता रहट धीरे-धीरे व ढिलाई से चला रहा था। इससे पानी निकालने मे गडबड हो रही थी। तब पुत्र ने झुंझलाकर पिता से पूछा कि वह पिता की इज्जत रखे या कुए की। तब पिता ने कहा कि उस इज्जत तो कुए की ही रखनी है, अन्यथा पेट भरना मुश्किल होगा। पिता का यह जवाब सुनकर पुत्र ने लिहाज तोडकर पिता को जल्दी-जल्दी बैल चलाने के लिए कहा।

–काम के सामने रिश्ते की मर्यादा नही रखनी चाहिए।

–काम की प्रतिष्ठा रिश्ते की तुलना मे अधिक है।

काका रै हाथां केरडा नीं वळावणा। १३८०

चाचा के हाथो से बछडे नही घिरवाने चाहिए।

–बुजुर्गों से छोटा काम नही करवाना चाहिए।

–जिसे जो शोभनीय हो उससे वैसा ही काम लेना चाहिए।

काकी कह्यां काकड़ी कुण देसी ? १३८१

चाची कहने से ही ककड़ी कौन देगा ?

–केवल विनम्रता से ही कोई चीज प्राप्त नही की जा सकती।

–आजाजी से हक नही मिलता।

–हक प्राप्त करने के लिए थोड़ी-बहुत शक्ति चाहिए।

काकी कहो भावैं पितरांणी। १३८२

चाची कहो च हे पितरानी।

–पितरानी=पितर का स्त्रीलिंग। जो मृत औरत प्रेतत्व से मुक्त हो। *दूसरा अर्थ है दासी, गोली या बादी।*

–सम्मिलित परिवार मे चाची का कोई विशेष महत्त्व नही होता। पर घनिष्ठ आत्मीयता के नाते वह रौब खूब जतलाती है। परिवार मे हरदम पचायती का अधिकार वह नही छोडना चाहती।

–शब्दो के सबोधन से कुछ भी फर्क नही पडता, व्यक्तित्व ता है जैसा ही है।

–बडे सबोधन या विशेषण से कोई आदमी बडा नही बन जाता।

–छोटे आदमी को बड़े सबोधन से पुकारने पर भी वह तो *छोटा ही रहता है।*

पाठा काकी कहो भावैं विदराणी

काकी रा जाया मिळ्या कोनीं। १३८३

चाची के जाये मिले नही।

–कोई सेर को सवा सेर मिला नही।

–दुष्ट व्यक्ति को सीधा करने वाला मिला नही।

–कभी न कभी तो कोई सबक सिखाने वाला मिलेगा।

काकींडा वाळो रग। १३८४

गिरगिट वाला रग।

–गिरगिट की तरह रग बदलना।

–मौके के अनुसार तुरत नये रग मे रग जाना।

का केई नै कर लेणो का केई रो हो रैणो। १३८५

या किसी का कर लेना या किसी का हो रहना।

–या तो किसी को अपना लेना चाहिए या किसी का बन *जाना चाहिए।*

–अकेलेपन से दुनिया मे काम नही चलता। या स्वय अपना

गुट बना लेना चाहिए या किसी गुट मे शामिल हो जाना चाहिए।

काकै रा जायोड़ा मिळै जद ई काम देवै। १३८६
चाचा के पैदा हुए मिलें तभी काम देते हैं।
–चचाजात भाइ मिलें तभी काम बनता है।
–इस कहावत के दो अर्थ हैं। एक तो यह कि निकट आत्मीय ही वक्त पर काम आते है दूसरा यह कि बराबर का मिलन पर ही बात बनती है।
–बराबर की टक्कर होने से ही बात जमती है।

काकै री धी नै पूछणो ई की ? १३८७
चाचे की लडकी को पूछना ही क्या ?
–इस्लाम मे चाचा मामा व मौसी की लडकियो के साथ विवाह सामाजिक रूप मे मान्य है। सगी बहिन को छोड कर बाकी सभी नजदीक रिश्तो मे आसानी से शादी हो जाती है।
–चाचा की बेटी से विवाह करने के लिए क्या पूछना ?
–जो काम सहज मान्य हो उसके लिए असमजस की कोई आवश्यकता नही।

काकै री धी तो खाड मे घी। १३८८
चाचा की बेटी खाड मे घी की तरह।
–मुसलमानो मे चाचा की लडकी से विवाह करने मे दुहरा लाभ मानते हैं।
–मुसलमानो मे चचेरी बहिन से शादी करना निहायत सुख मय मानते हैं।
पाठा काकै री धी तो खीचडी मे घी।

काकै री पीयोड़ी भतीजै नै ऊगै। १३८९
चाचा की पी हुई भतीजे को चढती है।
–चाचा भग पीये और नशा भतीजे को आये।
–भगडिया के नशे का परिहास।
–दूसरो के बूते पर रौब गाठना।
–दूसरो की ताकत पर ऐंठना।

काको कनै तो रोकणियो कुण यनै ? १३९०
चाचा अपने पास तो रोकने वाला कौन ?
–पैसे वाला कुछ भी कर सकता है।
–धनवान का कही भी हाथ नही अटकता।
–पैसे की शक्ति का मुकाबला नही।

काको करै मतीज नै गाड फाटतो गोठ। १३९१
चाचा दे भतीजे को गाड फटने पर गोठ।
–डर के मारे आदमी कुछ भी करने को विवश हो जाता है।
–भय जो न कराये वह थोडा है।
–डर की मजबूरी से बडी कोई दूसरी मजबूरी नही होती।

काको खावै 'र भतीजा नै स्वाद ग्रावै। १३९२
चाचा खाय और भतीजे को स्वाद आय।
–बेहद स्वादिष्ट वस्तु की प्रशसा के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–दूसरो के ऐश्वर्य पर अहकार करने वाले व्यक्ति के लिए।
–दो अभिन्न मित्रो की घनिष्ठता प्रदर्शित करने के लिए।

काकोजी कूमट खावो ! १३९३
चाचाजी कुम्मट खाइये !
–कूमट=पश्चिमी राजस्थान मे पैदा होनेवाला कटीला पेड। दो ढाई इच फली मे गोल गोल बीज निकलते हैं—उन्हे कुम्मट कहते है। कुम्मट तोडना काफी कठिन काम है। इसके नुकीले काटे बडे तीक्ष्ण व घातक होते है और फल नगण्य।
–किसी काम मे हाथ डालते ही कष्ट उठाने वाले व्यक्ति को परिहास मे कहावत कही जाती है।
–सहज सफलता के भरोसे किसी काम मे उलझकर फस जाने वाले व्यक्ति के लिए।

कागद थोडो अर नेह घणो। १३९४
कागज छोटा और स्नेह बहुतेरा।
–सीमित कागज के टुकडे मे असीम प्रेम का व्यक्त नही किया जा सकता। प्रेम या स्नेह तो बिना पढे ही समझने वाला मर्म है।
–उम्र कम और प्रपच बेहद।
–साधन सीमित और आकाक्षाए बेशुमार।

कागद रा कडाव को वणै नी। १३९५
कागज की कडाही नही बनती।
–नगण्य व अकिचन चीज से बडा काम सपन्न नही हो सकता।
–काम के उपयुक्त साधन अनिवार्य है।

–सहज कल्पनाओं से कोई काम सफल नही होता।
पाठा . कागद रा वडाव को चढ़ै नी।

कागद री नाव कितीक माय चालै। १३९६
कागज की नैया कितनी दूर चले।
–साधनों के अभाव में किसी काम की शुरुआत भी नही हो सकती।
–बेबुनियाद या मिथ्या बात टिक नही सकती।
–आडंबर अधिक स्थाई नही रह सकता।

कागद व्है तौ बाचलै, करम न बाच्यौ जाय। १३९७
कागज हो तो बाचले, भाग्य न बाचा जाय।
–भाग्य की लिखावट कागज की लिखावट के समान स्पष्ट नही होती, जिसे कोई भी पढ कर उसका पता लगाले।
–भाग्य के लिखे को कोई नही जान सकता।

काग नै सोना रै पींजरै मोती चुगाया राजहंस को होवै नीं। १३९८
कौए को सोने के पिंजरे मे मोती चुगाने से वह राजहंस नही हो सकता।
–हीन व्यक्ति बडा पद पाने पर हीन ही रहता है।
–निकृष्ट व्यक्ति के सुधरने की कोई गुंजाइश नही होती।
–वंशगत कुलीनता का दावा।

काग पडै, कुत्ता लडै। १३९९
कौए मंडरा रहे हैं, कुत्ते लड रहे हैं।
–किसी काम का अंत बिगड जाने पर।
–जहा कुछ भी आ न जाने को न हो।
–जहा निराशा के अलावा कुछ भी हाथ न आये।
पाठा काग पडै, कुत्ता भुसै।

काग रै जोडै हंस बधियौ। १४००
कौए के साथ हंस बधा।
–बुरे व्यक्ति के साथ अच्छे व्यक्ति की संगति।
–दुष्ट के साथ सज्जन का मेल।

काग लखणौ। १४०१
कौए-सा स्वभाव।
–कौए की तरह हीन व धूर्त व्यक्ति।
–बेइन्तहा चालाक व्यक्ति।

कागला तौ सगळै ई काळा। १४०२
कौए तो सर्वत्र ही काले।
देखिए—क. सं. ११७०

कागला री मीट तौ मैला माथै। १४०३
कौए की नजर तो विष्ठे पर ही।
–नीच व्यक्ति की दृष्टि हमेशा नीच काम पर ही रहती है।
–दुष्ट व्यक्ति दुष्टता के सिवाय कुछ नही सोच सकता।
पाठा कागला री नीत तौ सूगली ठौड।
कागला री निजर तौ भिस्टा मे इज।

कागला सू तौ बींट ई सज आवै। १४०४
कौए से तो बीट ही संभव है।
–बुरा व्यक्ति बुराई के अलावा और कर ही क्या सकता है?
–दुष्ट व्यक्ति को दुष्टता किये बगैर चैन नही।

कागला रा ई कठै हंस होवै? १४०५
कौए क्या कभी हंस हो सकते हैं?
–जातिगत स्वभाव नही बदल सकता।
–दुर्जन व्यक्ति सज्जन नही बन सकता।
–जन्मजात संस्कार वातावरण व शिक्षा से नही बदलते।

कागला री जांन मे डोढ़ौ ई वड जांनी। १४०६
कौवो की बरात म बडा कौवा ई श्रेष्ठ बराती।
–मूर्खो की जमात म थोडा पढा लिखा भी विद्वान।
–अधा के बीच काना राव।

कागलां रै काछडा व्है तौ उडता रै को दीखता नीं! १४०७
कौवो के कच्छे हो तो उडते हुए नही दिखते क्या!
–जो निर्धन व्यक्ति ऐश्वर्य की खामख्वा डींग मारे उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–धन या माया छिपी हुई नही रहती।

कागला रै सराप ऊंट थोडा ई मरै। १४०८
कौवो के शाप मे ऊंट थोडे ही मरते है।
–किसी दुष्ट व्यक्ति के बुरा चाहने से ही किसी का बुरा नही होता।
–हीन व्यक्ति की आकाक्षा मात्र से समाज का सर्वनाश नही होता।
पाठा कागला री दुरासीस सू ऊंट नी मरै।
कागला रै सराप सू ढोर नी मरै।

कागली हाळी सीख। १४०९

कोवी वाली शिक्षा ।

–बुरी नसीहत ।

–कलह पैदा करने वाली शिक्षा ।

कागलो ई दाखा नै मूडो धोवै । १४१०

कौवा भी दाख के लिए मुह धोता है ।

–लोक-विश्वास के अनुसार दाख पकने के समय कौए के गले म गाठ जैसा एक रोग पैदा हो जाता है, जिसके फलस्वरूप वह चाहने पर भी दाख खा नही सकता ।

–हीन व्यक्ति अच्छी बात की आकाक्षा करे तब ।

–अभागा व्यक्ति सुख व ऐश की कामना करे तब ।

कागलो छ मईना सू बोलै पण काव काव इज बोलै । १४११

कौवा छ महीने से बोले फिर भी काव काव ही बोलता है ।

–जिसकी जैसी ग्रादत होती है वह सुधरती नही ।

–जन्म-जात लक्षण स्थाई रहते हैं ।

कागलो जीव सू गियो पण ठाकरा रो भरोसो ई आयो ।

कौवा प्राणों से गया पर ठाकुर का भरोसा ही आया ।

सदर्भ-कथा : एक कौवा किसी ठाकुर के घर मे नीम पर बैठा निरतर काव काव कर रहा था । ठाकुर को उसकी कर्कश बोली से बडी चिढ थी । बार बार कक्र फेंकने पर वह कौवा एक डाली से उडकर दूसरी पर बैठ जाता । ठाकुर के सिरहाने तीर-कमान पडा था । कौआ तना हुआ तीर देखते ही उड जाता है । कौए को वरगलाने के लिए ठाकुर ने अपन चाकर से कहा कि वह दौड कर तल्वार लाये । कौए ने सोचा कि तलवार से उस पर वार नही हो सकता । वह मजे म काव-काव करने लगा । ठाकुर ने सतर्कता पूर्वक धीरे से तीर-कमान उठाया और सीधा कौए को निशाना बना कर तीर छोड दिया । कौआ तीर से बिंध गया । यह तो ठाकुर न जबरदस्त धोखा किया । तल्वार का आदेश देकर चुपचाप तीर चला दिया । तब मरते कौए ने दुखी होकर कहा कि वह तो प्राणो से गया सो तो गया ही, पर ठाकुर की परख हो हो गई ।

–नुक्सान उठाकर भी किसी की सही पहिचान हो जाये तो भी बुरा नही ।

–कोई भला आदमी किसी के साथ घात करे तब ।

कागलो तीर सू डरै ज्यू डरै, विना धाई कुण मरै ! १४१३

कौवा तीर से डरे ज्यों डरे, मौत बगैर कौन मरे !

–जो व्यक्ति बात बात मे डरे उसके लिए ।

–जो व्यक्ति भूल चूक से भी डर के मारे कोई बुरा काम न करे ।

–जो व्यक्ति चलते रास्ते न तो बुरा काम करे और न किसी उलझन मे फसे ।

कागलो नाक लेग्यो । १४१४

कौवा नाक ले गया ।

–उस निर्लज्ज व्यक्ति के लिए जो बुरा काम करके भी लज्जित हो न की बजाय उसके औचित्य का बहाना खोजे ।

–अप्रत्याशित रूप से किसी की अकस्मात् इज्जत खराब हो जाय तब ।

कागलो हस री चाल सीखण नै गियो अर आपरी भूलग्यो ।

कौवा हस की चाल सीखने गया और अपनी भूल गया ।

–जो अदना व्यक्ति बडे आदमियो की नकल करना चाहे पर कर नही सके और बदले म अपनी विशिष्टता भी भूल जाये ।

–अपनी परपरागत सस्कृति भुला कर जो राष्ट्र विदेशी सस्कृति की नकल करना चाहे तो उसकी दुर्गति अवश्यम्भावी है ।

काग हुवा परधान । १४१६

कौवा बना प्रधान ।

सदर्भ - कथा : पचतत्र की एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार जब एक हस सिह का सलाहकार था तो सिह अपना हिंस्र स्वभाव छोडकर भलाई करता था । पर जब हस के बदले कौवा प्रधान बन गया तो फिर वापस वे ही हत्याए और वह हिंसा !

–भली-बुरी सगति से ही कोई व्यक्ति भला-बुरा होता है ।

–कुटिल व्यक्तियो के सिखाने से कोई बडा व्यक्ति आचरण करे तब ।

कागा कुत्ता कुमाणस जद कद करै विणास । १४१७

कौए, कुत्ते व कुटिल व्यक्ति जब-तब विनाश ही करते हैं ।

–हीन व्यक्तियों से भले काम की ग्राशा करना व्यर्थ है

–हीन व्यक्ति कभी किसी का भला नही कर सकता ।

कागा हस न गधा जती । १४१८

कौआ हस न गधा यती ।

–कौवा हंस नहीं हो सकता और न गधा यती हो सकता है।
–जातिगत स्वभाव अपरिवर्तनीय है।
–शिक्षा दीक्षा से जन्मजात प्रवृत्तियां नहीं बदल सकती।

कागा रै बागा व्है तो उडता रै घेर पडै। १४१९
कौवों के पोशाक हो तो उड़ते हुए लहराने लगे।
देखिये—क. स. १४०५

कागै रो कोढियौ बैठे ज्यूं काई बैठो है ? १४२०
काग के कोढी की तरह क्या बैठा है ?
–कागा=जोधपुर का एक श्मशान विशेष। पर यहां श्मशान के रूप मे ही प्रयुक्त हुआ है।
–श्मशान के कोढी की तरह क्या निरीह होकर बैठा है!

कागो मोती देवै नीं, चिडी रोती रैवै नीं। १४२१
कौवा मोती दे नहीं, चिड़िया रोती रहे नहीं।
–राजस्थानी लोक कथा के संदर्भ मे एक धूर्त कौवा एक चिड़िया का मोती छीन लेता है। निरीह चिड़िया उसकी खूब आजीजी करती है पर कौवा नहीं मानता सो नहीं मानता। बेचारी चिड़िया कइयों के पास मोती दिलवाने का रोना रोती है।
–किसी शक्तिशाली के हाथों फसने पर यही दुर्दशा होती है।
–किसी शक्तिशाली को चीज देना आसान पर वापस लेना निहायत मुश्किल।
–दुष्ट के हाथों निरीह व्यक्तियों का कभी भला नहीं होता।

काच मे दीसै ज्यूं दीसै। १४२२
काच की तरह स्पष्ट दिख रहा है।
–अनुभवी तथा दूर दर्शी व्यक्ति सारी बातें स्पष्टतया जानता है।
–बुरे काम का बुरा परिणाम दर्पण की तरह बिलकुल स्पष्ट होता है पर जो नासमझ व्यक्ति न समझे वह घाटा खा सकता है।

काचर रो बीज। १४२३
काचर का बीज।
–निहायत छोटी ककड़ी को काचर कहते हैं। इसका बीज खट्टा व कड़ुवा होता है। ढेर सारा दूध केवल एक बीज से फट जाता है।
–निहायत दुष्ट व्यक्ति के लिए सम्बोधन।

काचर रो बीज अेक ई घणो। १४२४
काचर का बीज तो एक ही काफी।
–परिवार का सत्यानाश करने के लिए एक ही कुपुत्र काफी होता है।
–कुटिल व्यक्ति तो एक ही पर्याप्त है।

काचरा रो बीज मणां-बंध दूध बिगाडै। १४२५
काचरी का बीज मनों दूध को बिगाड़ देता है।
देखिये—क. स. ६७३

काचरियां बिना किसा ब्याव अटकै। १४२६
काचरियों के बिना कौनसा विवाह रुकता है।
–अकिंचन चीज से बड़ा काम नहीं रुकता।
–अदने आदमी का कहीं भी महत्त्व नहीं होता।
–नगण्य व्यक्ति का अभाव कतई नहीं अखरता।

काच री भट्टी ज्यूं मांय रो मांय धवै। १४२७
काच की भट्टी के समान अंदर ही अंदर जलता है।
–जो व्यक्ति अपना दुख बाहर प्रकट न करके भीतर ही भीतर जलता हो।
–ऐसा संताप या आघात जिसे बाहर प्रकट करना संभव न हो।

काची कळी कणेर री तोडत ई कुमळाय। १४२८
कच्ची कली कनेर की तोड़त ही कुम्हलाय।
–निहायत नाजुक व सुकुमार व्यक्ति के लिए।
–जो व्यक्ति रंचमात्र भी कष्ट सहन नहीं कर सकता हो।

काची काया रो काई गारबो ? १४२९
कच्ची काया का कैसा गर्व ?
–क्षणभंगुर जीवन का अहंकार व्यर्थ है।
–मनुष्य को नश्वर काया का अभिमान नहीं करना चाहिए।

काची मत खाजै। १४३०
कच्ची मत खाना।
–सामने वाले व्यक्ति को चुनौती कि वह बुरा करने के लिए कुछ भी कसर नहीं छोडे।
–जो भी सामर्थ्य हो वह कर दिखाना।

काचै घडै ई कांठो लागै। १४३१

कच्चे घडे को ही इच्छानुसार बनाया जा सकता है।
-छोटी अवस्था मे ही बच्चे को सुधारा जा सकता है।
-किसी काम के आरभ पर ही सब-कुछ निर्भर करता है।

काचै घडै पाणी नीं भरीजै। १४३२
कच्चे घडे मे पानी नही भरा जा सकता।
-हर चीज की एक अवस्था होती है।
-अवस्था के पूर्व कोई भी काम करना सगत नही।
पाठा काचौ घडौ नी भरीजै।

काचौ दूध खटाई फाडै, तातौ दूध जमावै। १४३३
कच्चा दूध जामन से फटता है और गर्म दूध जामन देने से जमता है।
-हर काम की सफलता के लिए उपयुक्त अवसर वाछित है।
-अवस्था के अनुसार ही सौंपे हुए काम का महत्त्व है।

काजळ घालता आख फूटी। १४३४
काजल डालते आख फूटी।
-भलाई करते बुराई हाथ लगी।
-भला करते अमगल हो जाना।

काज बिगाडू पर कौ, औ तौ काम घर कौ। १४३५
काम बिगाडू पर का, यह तो काम घर का।
-दूसरो का काम बिगाडने से जिस व्यक्ति को चैन मिलता हो उसके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।
-जो दुष्ट व्यक्ति हरदम दूसरो का ही काम बिगाडने के लिए तुला हो।

काजळ काढ्या रूप को आवै नीं। १४३६
काजल निकालने से रूप नही आता।
-जो व्यक्ति छोटा काम करके बडा बनना चाहे।
-बडी सफलता के अनुरूप बडे ही साधन अनिवार्य हैं।

काजळ सगळी ई काढै पण टमरका न्यारा-न्यारा। १४३७
काजल सभी निकालती हैं पर चितवन अलग अलग।
-हर व्यक्ति की अपनी अपनी अदा होती है।
एक ही चीज के प्रभाव अलग अलग होते हैं।

काजळ सू आख भारी कोनीं हुवै। १४३८
काजल से आख भारी नही होती।
-आत्मीयजन के पोषण का बोझ नही होता बल्कि शोभा बढती है।
-येनकेनप्रकारेण नजाकत के प्रति व्यग।
पाठा काजळ काढ्या किसी आख भारी व्है।

काज सरचौ गुण बीसरिया बैरी हुयग्या वेद। १४३९
काम पटा भूले एहसान, बैरी हो गये वैद्य।
-बीमारी से ठीक होने पर पिछले सारे एहसान भूल गये। अब तो सभी वैद्य बैरी के समान बुरे लगते हैं।
-जीवनदान देने वाले वैद्य का एहसान भूल कर जो व्यक्ति उनके साथ वैरियो सा व्यवहार करे उससे बडा कृतघ्न और दूसरा कौन हो सकता है?
-जो व्यक्ति एकदम एहसान फरामोश हो।

काजी कजियौ चुकावता, पडचौ कजिया माय। १४४०
दूसरो के झगडे निपटाने वाला काजी स्वय झगडो मे फस गया।
-वक्त का फेर।
-दिनमान बदलने पर सारी बातें बदल जाती हैं।

काजी करै सो न्याव, पासौ पडै सो डाव। १४४१
काजी करे सो न्याय, पासा पडे सो दाव।
-काजी के हाथ से जो भी उलटा-सीधा फैसला हो जाय वही न्याय है। पासा जैसा ही पड जाय वही दाव है। इन दोनो के आगे किसी का वश नही चलता।
-सत्ता और भाग्य के सामने किसी का कोई जोर नही चलता।

काजीजी दूबळा क्यू? के सैर रौ अदेसौ। १४४२
काजीजी दुबले क्यो? कि शहर का अदेशा।
-जो व्यक्ति व्यर्थ की परेशानियो से हरदम चितित रहे।
-खामखा दूसरो की चिता मे निमग्न रहने वाला व्यक्ति।

काजीजी री कुत्ती कठै जावती ब्यावै? १४४३
काजीजी की कुतिया कहा जाकर ब्याय?
-जिस व्यक्ति का कोई ठिकाना न हो।
-निरतर भटकने वाले व्यक्ति के लिए।

काजीजी री कुत्ती मरी जद सगळा बैठण नै आया पण काजीजी मरचा जद कुत्तौ ई नीं आयौ। १४४४
काजीजी की कुतिया मरी जब सभी शोक मनाने आये पर

कीचड़ को छेड़ने से छींटे ही उछलते हैं ।
–अधम व्यक्ति को छेड़ने से बदनामी ही हाथ लगती है ।
–हीन व्यक्ति को छेड़ना उचित नही ।

कादा मे कळिया पछे काई साधो लागे । १४७१
कीचड मे फसने पर क्या उपाय हो ।
–कर्ज के कीचड मे फसने के बाद कोई निस्तार नही ।
–विपत्तियो से घिरने के पश्चात् मनुष्य का कुछ भी वश नही चलता ।

कापडो देय टापरो खायग्यो । १४७२
कपडा देकर घर खा गया ।
–कोई नजदीक का रिश्तेदार भेंट स्वरूप मामूली कचुकी या ओढनी देकर किसी का घर खा जाय तब ।
–थोडा भला करके अधिक हानि पहुचाने वाले व्यक्ति के लिए ।

काबर रा कुण सुगन पूछे ! १४७३
काबर पक्षी के कौन शकुन पूछे !
–साधारण व्यक्ति की कौन परवाह करे ।
–आम आदमी का कही कुछ भी महत्त्व नही होता ।

काबर री काई जामनी ! १४७४
काबर पक्षी की क्या जमानत !
–निहायत साधारण व्यक्ति की क्या साक्षी ।
–सामान्य व्यक्ति की प्रतिष्ठा नहीं होती ।

काबरियो मूवो तो अेंठ सू छूटा । १४७५
कबरा कुत्ता मरा तो भूठन से मुक्ति ।
–अधम या दुष्ट व्यक्ति के मरने पर यह कहावत प्रयुक्त होती है ।
पाठा . काबरियो मरग्यो नै अेंठ सू लारो छूटो ।

काबल मे किसा गधा नीं व्है ! १४७६
काबुल मे कौन से गधे नही होते !
–मूर्ख कहा नहीं मिलते ।
–हर समाज मे मूर्ख होते हैं ।

काबल मे मेवो अर बिरज मे केर । १४७७
काबुल मे मेवा और ब्रज मे करील ।
–उपयुक्त स्थान पर उपयुक्त वस्तुओ का अभाव भगवान की मद बुद्धि का परिचायक है ।
–प्रकृतिगत अन्याय ।
–अपात्र के हाथो अच्छी चीज सौंपना और सुपात्र को वचित रखना सगत नही ।
पाठा काबल मे मेवो करयो, बिरज मे करयो केर ।

का बात नै का स्वाद नै । १४७८
या तो बात के लिए या स्वाद के लिए ।
–मनुष्य की जुबान या तो बात रखने के लिए होती है या किसी वस्तु का स्वाद लेने के लिए ।
–मनुष्य या तो बात रखने के लिए दुख उठाता है या अच्छा भोजन पाने के लिए ।
पाठा के तो बात नै के स्वाद नै ।

काया रो पेट भर ज्याय पण माया रो पेट कदे ई नीं भरीजै । १४७९
काया का पेट भर जाता है पर माया का पेट कभी नहीं भरता ।
–मनुष्य की आवश्यकताए सीमित है पर उसके लोभ का कोई अत नही ।
–मनुष्य की जरूरतें पूरी होने पर भी उसकी लालसाए कभी पूरी नही होती ।

काया नै जोखो कोनीं माया नै है । १४८०
काया को जोखिम नही माया को है ।
–मनुष्य धन व सपत्ति के कारण ही परस्पर लडते हैं, एक दूसरे पर आघात करते हैं, फलस्वरूप काया को जोखिम बनी रहती है ।
–सपत्ति ही आपसी झगडे की जड है ।

काया माया रो काई पतियारो ? १४८१
काया माया का कोई विश्वास नही ।
–न मनुष्य की क्षण-भगुर देह का भरोसा है और न अचिर चचल माया का ।
–मनुष्य को न माया का अहकार करना चाहिए और न काया का ।
पाठा : काया माया रो के भरोसो ?

काया मोटो तीरथ । १४८२
काया सबसे बडा तीर्थ है ।

–मनुष्य की देह से पवित्र अन्य कुछ भी नही।
–मनुष्य की देह को आघात पहुचाना पाप है।

काया राखै धरम। १४८३
काया रखे धर्म।
–शरीर का अस्तित्व बना रहे तभी धर्म की रक्षा होती है।
–समस्त पवित्र धार्मिक व शुभ काम शरीर के माध्यम से ही सपन्न होते है। शरीर के न रहने पर कुछ भी नही किया जा सकता। इन कारण मानवीय देह से सर्वश्रेष्ठ दुनिया म अन्य कुछ भी नही।
–शरीरमाद्य खलु धर्म्म साधनम्।

कार नै कार सिखावै। १४८४
कार्य को काय सिखाता है।
–काम करने स ही कुशलता प्राप्त होती है।
–अभ्यास ही प्रवीणता की पहली शर्त है।

कारबदी रै बारबदी कोनीं रैवै। १४८५
बधन स ही मर्यादा नही रहती।
–नियत्रण या अकुश से मर्यादा की रक्षा नही होती।
–आत्मा व मन से मानना ही मर्यादा का प्रमुख आधार है।

कार लोप्यां बिखो ई पडै। १४८६
मर्यादा की रेखा लाघने से दुख पडता है।
–सीता की भाति लक्ष्मण रेखा लाघने से जीवन पर्यन्त दुख उठाना पडता है।
–मर्यादा म रहने से सुख मिलता है।
–जरूरत से ज्यादा खच करने वाले या सामाजिक मान्यताओ को तोडन वाले व्यक्ति की खातिर इस कहावत का प्रयोग होता है

कारी करमा सारी। १४८७
भाग्य के अनुसार ही उपाय होता है।
–बीमारी का इलाज या किसी काम का समाधान भाग्य साथ दे तभी होता है।
–मनुष्य के सुख-दुख का प्रमुख आधार भाग्य ही है।

कारो करमा सारो। १४८८
कलह भाग्य के अधीन।
–झगडा फसाद भाग्य के अनुसार ही घटित होता है।
–भाग्य म कलह लिखी है तो वह मिट नही सकती।

काळ अर बासदी आगै कुण ई नी बचै। १४८९
काल और अग्नि के सामने कोई नही बचता।
–काल और अग्नि से न राजा बचता है और न रक।
–काल सर्व शक्तिमान है।

काळ आ जाय पण कळक नीं आणो १४९०
मौत आ जाय पर कलक नही आये।
–मनुष्य के लिए कलक मौत से भी बदतर है।
–कुकर्म से बचने के लिए नसीहत।

काळ आया जाळ मिटै। १४९१
मौत आन पर ही सब प्रपच मिटत है।
–मौत आने पर ही सब मोह-जाल मिटता है।
–दुखी व निराश व्यक्ति की कामना।

काल किण देखी है? १४९२
कल किसने देखा है?
–कल का कोई भरोसा नही न मालूम क्या घटित हो।
–भविष्य का किसे भी पता नही चलता।

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब,
पल मे परळै होयगी, फेर करेगो कब्ब। १४९३
काल करे सो आज कर आज करे सो अब,
पल म प्रलय हो जायेगा फिर करेगा कब।
–आने वाले एक क्षण का भी भरोसा नही न जाने क्या अनहोनी घटित हो, इस कारण जो काम है वह निर्विलम्ब सपन्न कर लेना चाहिए।

काळ चिडी मरवाणी के सुगन लेवणा। १४९४
काल चिडिया मरवानी या शकुन लेन हैं।
–काल चिडी = काले रग की चिडिया विशेष जो शकुन के लिए प्रामाणिक मानी जाती है।
–खराब शकुन देने पर यदि काल चिडिया को मरवा भी दिया जाय तो उससे शकुन म कोई फर्क नही पडता।
–काम से काम रखना चाहिए, दूसरे झझट मे सिर खपाना व्यथ है।

काळ जाय पण कळक नीं जावै। १४९५
काल बीत जाने पर भी कलक नही मिटता।
–शताब्दियां गुजर जाने के बाद भी इतिहास के दामन पर कलक का दाग रह जाता है।

कीचड को छेड़ने से छींटे ही उछलते है।
–अधम व्यक्ति को छेड़ने से बदमानी ही हाथ लगती है।
–हीन व्यक्ति को छेड़ना उचित नही।

कादा मे कळिया पछै काई साधो लागै। १४७१
कीचड मे फसने पर क्या उपाय हो।
–कर्ज के कीचड मे फसने के बाद कोई निस्तार नही।
–विपत्तियो से घिरने के पश्चात् मनुष्य का कुछ भी वश नही चलता।

कापड़ो देय टापरो खायग्यो। १४७२
कपड़ा देकर घर खा गया।
–कोई नजदीक का रिश्तेदार भेंट स्वरूप मामूली कचुकी या ओढनी देकर किसी का घर खा जाय तब।
–थोड़ा भला करके अधिक हानि पहुचाने वाले व्यक्ति के लिए।

कावर रा कुण सुगन पूछै ! १४७३
कावर पक्षी के कौन शकुन पूछे !
–साधारण व्यक्ति की कौन परवाह करे।
–आम आदमी का कही कुछ भी महत्त्व नही होता।

काबर री काई जामनी ! १४७४
काबर पक्षी की क्या जमानत !
–निहायत साधारण व्यक्ति की क्या साक्षी।
–सामान्य व्यक्ति की प्रतिष्ठा नही होती।

काबरियो मूवो तो अॅठ सू छूटा। १४७५
कबरा कुत्ता मरा तो झूठन स मुक्ति।
–अधम या दुष्ट व्यक्ति के मरने पर यह कहावत प्रयुक्त होती है।
पाठा : काबरियो मरघो नै अॅठ सू लारो छूटो।

काबल मे किसा गधा नीं व्है ! १४७६
काबुल मे कौन से गधे नही होते !
–मूर्ख कहा नही मिलते।
–हर समाज मे मूर्ख होते है।

काबल मे मेवो अर बिरज मे केर। १४७७
काबुल मे मेवा और ब्रज मे करील।
–उपयुक्त स्थान पर उपयुक्त वस्तुओ का अभाव भगवान की मद बुद्धि का परिचायक है।
–प्रकृतिगत अन्याय।
–अपात्र के हाथो अच्छी चीज सौंपना और सुपात्र को वचित रखना सगत नही।
पाठा काबल मे मेवो करघो, बिरज मे करघो केर।

का बात नै का स्वाद नै। १४७८
या तो बात के लिए या स्वाद के लिए।
–मनुष्य की जुबान या तो बात रखने के लिए होती है या किसी वस्तु का स्वाद लेने के लिए।
–मनुष्य या तो बात रखने के लिए दुख उठाता है या अच्छा भोजन पाने के लिए।
पाठा : के तो बात नै के स्वाद नै।

काया रो पेट भर ज्याय पण माया रो पेट कदं ई नीं भरीजै। १४७९
काया का पेट भर जाता है पर माया का पेट कभी नही भरता।
–मनुष्य की आवश्यकताए सीमित है पर उसके लोभ का कोई अत नही।
–मनुष्य की जरूरतें पूरी होने पर भी उसकी लालसाए कभी पूरी नही होती।

काया नै जोखो कोनीं माया नै है। १४८०
काया को जोखिम नही माया को है।
–मनुष्य धन व सपत्ति के कारण ही परस्पर लड़ते है, एक दूसरे पर आघात करते हैं, फलस्वरूप काया को जोखिम बनी रहती है।
–सपत्ति ही आपसी झगड़े की जड़ है।

काया माया रो काई पतियारो ? १४८१
काया माया का कोई विश्वास नही।
–न मनुष्य की क्षण-भगुर देह का भरोसा है और न अचिर चचल माया का।
–मनुष्य को न माया का अहकार करना चाहिए और न काया का।
पाठा : काया माया रो के भरोसो ?

काया मोटो तीरथ। १४८२
काया सबसे बड़ा तीर्थ है।

–मनुष्य की देह से पवित्र अन्य कुछ भी नही ।
–मनुष्य की देह को आघात पहुचाना पाप है ।

काया राखै धरम । १४८३
काया रखे धर्म ।
–शरीर का अस्तित्व बना रहे तभी धर्म की रक्षा होती है ।
–समस्त पवित्र धार्मिक व शुभ काम शरीर के माध्यम से ही सम्पन्न होते है । शरीर के न रहने पर कुछ भी नही किया जा सकता । इस कारण मानवीय देह से सर्वश्रेष्ठ दुनिया मे अन्य कुछ भी नही ।
–शरीरमाद्य खलु धर्म्म साधनम् ।

कार नै कार सिखावै । १४८४
कार्य को कार्य सिखाता है ।
–काम करने से ही कुशलता प्राप्त होती है ।
–अभ्यास ही प्रवीणता की पहली शर्त है ।

कारबदी रै बारबदी कोनीं रैवै । १४८५
बधन से ही मर्यादा नही रहती ।
–नियत्रण या अकुश से मर्यादा की रक्षा नही होती ।
–आत्मा व मन से मानना ही मर्यादा का प्रमुख आधार है ।

कार लोप्या विखौ ई पडै । १४८६
मर्यादा की रेखा लाघने से दुख पडता है ।
–सीता की भाति लक्ष्मण रेखा लाघने से जीवन पर्यन्त दुख उठाना पडता है ।
–मर्यादा मे रहने से सुख मिलता है ।
–जरूरत से ज्यादा खर्च करने वाले या सामाजिक मान्यताओं को तोडने वाले व्यक्ति की खातिर इस कहावत का प्रयोग होता है

कारी करमा सारी । १४८७
भाग्य के अनुसार ही उपाय होता है ।
–बीमारी का इलाज या किसी काम का समाधान भाग्य साथ दे तभी होता है ।
–मनुष्य के सुख-दुख का प्रमुख आधार भाग्य ही है ।

कारो करमा सारो । १४८८
कलह भाग्य के अधीन ।
–झगडा फसाद भाग्य के अनुसार ही घटित होता है ।
–भाग्य मे कलह लिखी है तो वह मिट नही सकती ।

काळ अर बासदी आगै कुण ई नी बचै । १४८९
काल और अग्नि के सामने कोई नही बचता ।
–काल और अग्नि से न राजा बचता है और न रक ।
–काल सर्व शक्तिमान है ।

काळ आ जाय पण कळक नीं आणौ १४९०
मौत आ जाय पर कलक नही आये ।
–मनुष्य के लिए कलक मौत से भी बदतर है ।
–कुकर्म से बचने के लिए नसीहत ।

काळ आया जाळ मिटै । १४९१
मौत आने पर ही सब प्रपच मिटते है ।
–मौत आने पर ही सब मोह जाल मिटता है ।
–दुखी व निराश व्यक्ति की कामना ।

काल किण देखी है ? १४९२
कल किसने देखा है ?
–कल का कोई भरोसा नही, न मालूम क्या घटित हो ।
–भविष्य का किसे भी पता नही चलता ।

काल करै सौ आज कर, आज करै सौ अब्ब,
पल मे परळै होयगी, फेर करेगौ कब्ब । १४९३
काल करे सो आज कर, आज करे सो अब,
पल मे प्रलय हो जायेगा फिर करेगा कब ।
–आने वाले एक क्षण का भी भरोसा नही, न जाने क्या अनहोनी घटित हो, इस कारण जो काम है वह निर्विलम्ब सपन्न कर लेना चाहिए ।

काळ चिडी मरवाणी के सुगन लेवणा । १४९४
काल चिडिया मरवानी या शकुन लेने हैं ।
–काल चिडी = काले रग की चिडिया विशेष जो शकुन के लिए प्रामाणिक मानी जाती है ।
–खराब शकुन देने पर यदि काल चिडिया को मरवा भी दिया जाय तो उससे शकुन मे कोई फर्क नही पडता ।
–काम से काम रखना चाहिए , दूसरे झझट मे सिर खपाना व्यर्थ है ।

काळ जाय पण कळक नीं जावै । १४९५
काल बीत जाने पर भी कलक नही मिटता ।
–शताब्दियां गुजर जाने के बाद भी इतिहास के दामन पर कलक का दाग रह जाता है ।

–जबरदस्त सदमा।

काळजौ काढ कुण देख्यौ ? १४९६
कलेजा निकाल कर किसने देखा ?
–मनुष्य के दिल की बात का किसी को भी पता नही चलता।
–मन की असलियत का पता लगाना असमव है।

काळजौ मोरा लारै सू काढ लेणौ। १४९७
कलेजा पीठ पीछे से निकाल लेना।
–जबरदस्त आघात पहुचाना।
–बडी से बडी धमकी।

काळ टळै पण कलाळ नी टळै। १४९८
मौत टल जाय पर कलाल नही टलता।
–मौत भूल कर जाय पर कलाल शराब म मिलावट न करने की कभी गलती नही करता।
–मौत भले ही क्रूरता छोड दे पर दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता नही छोडता।
पाठा काळ चूकै पण कलाळ नी चूकै।

काळ पडै जणा पीहर नै सासरै साथै पडै। १४९९
अकाल पडता है तो मायके व ससुराल म साथ पडता है।
–भाग्य विमुख होता है तब सब ओर से दुख घिर आते हैं।
–विपदा अकेली नही आती।
–दिनमान रूठन पर सबका सहारा टूट जाता है।

काळ पूगौ आय, करै बाप-बाप। १५००
काल पहुचा आय, करे हाय हाय।
–लो यह मौत आ गई, अब हाय तोबा मचाने मे कोई सार नही।
–वक्त गुजरन के बाद रोने से कोई लाभ नही।
–जीवन की बाजी हारन पर पश्चाताप करना व्यर्थ है।

काळ बडौ बलवान। १५०१
काल बडा बलवान।
–काल से शक्तिमान और कोई नही।
–बडे से बड पराक्रमी का भी काल के सामने वश नही चलता।

काळ बडौ सिकारी। १५०२
काल बडा शिकारी।
–काल का निशाना अचूक है। उससे न राजा बचता है और न रंक। न धनवान और न गरीब।
–काल से कोई नहीं बचता।

काळ भूलीजै पण बात नीं भूलीजै। १५०३
समय गुजर जाता है पर बात रह जाती है।
–समय बीत जाने पर भी इतिहास शेष रहता है।
–दुख भुला दिया जाता है पर एहसान नही भुलाया जाता।
–वक्त पर दिया हुआ सहयोग हमेशा याद रहता है।

काल मरी सासू आज आया आसू। १५०४
कल मरी सासू और आज आय आसू।
देखिये—क स ११६६

काळमी भली दौडै छै के माडां ई लिया जाय छै। १५०५
काली घोडी खूब दौड रही है— कि जबरन ही लिए जा रही है।
–इच्छा के विपरीत जबरदस्ती कोई काम करना पडे तब।
–क्षमता व सामथ्य से परे सफलता मिल जाय तब।

काळ मे इदक मासौ। १५०६
अकाल म अधिक मास।
–इदक मासौ=विक्रम सवत् की गणना मे कभी कभी कोई वष तेरह महीनो का होता है। उस बढे हुए महीने को इदक मास कहते हैं।
–अकाल म तेरह महीना का वर्ष।
–दुख पर दुख।
–दुहरे दुखा की मार।
पाठा काळ म इदक मास।

काळ मे पाळी अर छाळी आडी आवै। १५०७
अकाल म मेड और बकरी काम आती है।
–मेड के कारण मामूली वर्षा से ही खेत म पानी भर जाता है, इस कारण अकाल म भी फसल हाथ लग सकती है। बकरी इधर-उधर कुछ भी खाकर अकाल मे दूध देती रहती है।
–अकाल मे मामूली साधन से ही सब्र कर लेना चाहिए।
–दुख के समय छोटा सहारा भी काफी होता है।

काल रा गिणोडा नं पूगै। १५०८

कल के गये को पकडता है ।
–अत्यधिक हाशियार व्यक्ति के लिए ।
–वेइन्तहा बुद्धिमान व्यक्ति ।

काळ रा जाळ सू कुण ई नीं बच्यौ । १५०६
काल के जाल से कोई भी नही बचा ।
–मनुष्य-मात्र नश्वर है ।
–मृत्यु के सामने कैसे भी महाबली का वश नही चलता ।

काळ रा बाळ किण सू ईं नीं खुसै । १५१०
काल के बाल किसी स भी नही तोडे जा सकते ।
–मौत के सामने सभी असहाय है ।
–मृत्यु को कोई भी रोक नहीं सकता ।
–मृत्यु का कोई कुछ भी विगाड नही सकता ।

काल री काल अर आज री आज । १५११
कल की कल और आज की आज ।
–कल की कल देखी जायेगी । आज जो सामने है उसे ही सपन्न करने की चिंता करनी चाहिए ।
–कल की बात कल पर छोड देनी चाहिए ।
–आज अपना है कल का कोई भरोसा नही ।
–वर्तमान ही सर्वस्व है ।

काल री कुण जाणै ? १५१२
कल री कौन जानता है ?
–कल क्या होने वाला है किसे भी उसका पता नही चलता ।
–भविष्य को कोई जान नही सकता ।
पाठा . कालै री किण नै ठा ?

काल री कुत्ती राड, चोवटै वणी भाड । १५१३
कल की कुतिया राड, चौक मे बनी भाड ।
–कल का छोकरा बढ चढ कर बातें बनाये तब ।
–छोटे मुह बडी बात करने वाले व्यक्ति के लिए ।

काळ री चरखी सू कुण छूटै ? १५१४
काल की चर्खी से कौन छूट सकता है ?
–काल या मौत की लपेट से कोई बच नही सकता ।
–देर सवेर हर प्राणी की मृत्यु अवश्यम्भावी है ।

काल री जोगण नै पूठां सूदी जटा । १५१५
कल की जोगिन और कमर तक लम्बी जटा ।
–कल का छोकरा बडप्पन की बातें बघारने लगे तब ।
–छोटी उम्र म जो व्यक्ति अत्यधिक दिखावा करे ।
–यह कहावत पहेली के रूप म भी प्रयुक्त होती है । जिसका अर्थ है—भुट्टा ।
पाठा काल री जोगण वडिया तणी जटा ।

काल री जोगण पत्तर मे फूक दे । १५१६
कल की जोगिन पात्र म फूक दे ।
–छोटे मुह बडी बात बघारना ।
–समय के पहिले आडबर करने वाला व्यक्ति ।

काल री लूकडी अर परार सी घणौ पडयौ । १५१७
कल की लोमडी और पिछले वर्ष सर्दी ज्यादा पडी ।
–थोथे ज्ञान का प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति के लिए ।
–अभिज्ञता और अनुभव के बिना कोई व्यक्ति व्यर्थ बकवास करे तब ।

काळ रै आगै किण री सिद्धाई चालै ? १५१८
काल के सामने किस की होशियारी चलती है ?
–काल के सामने किसी की भी विद्वता, चमत्कार या शक्ति का वश नही चलता ।
–मौत से कोई जीत नही सकता ।

काळ रै आगै सै लाचार । १५१९
काल के सामने सभी लाचार हैं ।
–मौत के सामने सभी मजबूर हैं ।
–मृत्यु हर मनुष्य की सबसे बडी लाचारी है ।

काळ रै हाथ कबाण, बूढौ वचै न जवान । १५२०
काल के हाथ कमान, बूढा बचे न जवान ।
–काल रूपी शिकारी के तीर स कोई बच नही पाता ।
–काल का निशाना अचूक है ।
–मृत्यु किसी पर भी दया नही दिखाती ।

काळ रो आइगो कर लेणो पण बाळ रो आइगो नीं करणो ।
काल पर विश्वास कर लेना पर बच्चे पर विश्वास नही करना चाहिए । १५२१
–नादान बच्चा मौत से भी अधिक हानि पहुचा सकता है, इसलिए उस पर विश्वास करना मौत स भी अधिक घातक है ।

काळ रो भरोसो कोनीं। १५२२
काल का कोई भरोसा नही।
–मौत किसी को क्षण आ सकती है।
–आततायी के लिए नसीहत।

काळ रो मूडो काळो, टळै जित्तं ई टाळो। १५२३
काल का मुह काला, टले जितना ही टालो।
–जहा तक बने जोखिम या आफत का कोई काम नही करना चाहिए।
–पूर्ण सतर्कता से जीवन व्यतीत करना चाहिए।

काळ रो माथो भागो जको ई चोखो। १५२४
अकाल का सिर फूटा जितना ही अच्छा।
–मामूली बरसात से भी अकाल मे सहारा मिले वही अच्छा।
–दुख के दिन जैसे तैसे बीते यही श्रेयस्कर है।

काळ बागड सू ऊपजै बुरो बामण सू होय। १५२५
अकाल मरुभूमि से पैदा होता है और बुराइयां ब्राह्मण से।
–अकाल का जन्म-स्थान रेगिस्तान और बुराइयो का स्रोत ब्राह्मण।
–हिंदू समाज मे घातक रूढियो की समस्त जिम्मेदारी ब्राह्मणो के शास्त्रो मे ही है।

काळ बिगोवै कोनीं, बाळ बिगोवै। १५२६
अकाल लाछित नही करता बच्चे लाछित करते हैं।
–बच्चो के कारण अकाल का सामना करना मुश्किल हो जाता है।
–*बच्चो की ममता के कारण अकाल मे भीख तक मागने के* लिए मजबूर होना पडता है। फलस्वरूप बदनामी फैलती है

काळ सूं आळ कुण करै ? १५२७
काल से छेडखानी कौन करे ?
–जान बूझ कर मरने के लिए कोई तैयार नही होता।
–मौत से मखौल करके मरना कोई नही चाहता।

काळ सू नीं डरै जित्ता बाळ सू डरै। १५२८
काल से डर नही लगता उतना बच्चे से डर लगता है।
–बच्चा नादानी मे मौत से भी अधिक नुकसान पहुचा सकता है।
–कभी कभी अबोध बालक अनजाने मे मौत से भी अधिक घातक सिद्ध हो जाता है।

काळा कनै धोळचो बैठे रंग नीं लै पण लखण तो लै। १५२९
काले के पास सफेद बैठता है तो रंग न लेकर गुण तो सीखता ही है।
–बुरी संगति का बुरा फल अवश्यम्भावी है।
–संगति के अनुसार संस्कार पडते हैं।
पाठा: काळा रै पासै धोळो बधै वरण नी लेवै पण लखण तो लेवै।
काळा रै जोडै गोरियो बधै रंग नी लेवै पण लखण तो लेवै।

काळा कनै बैठचा काट लागै। १५३०
काले के पास बैठने से जंग लगता है।
–दुर्जन का साथ करने से कालिख लगती है।
–बुरे का संग करने से बदनामी होती है।

काळा करम रा धोळा धरम रा। १५३१
काले कर्म के व सफेद धर्म के।
–जवानी मे जब तक काले बाल हो तब तक काम करना चाहिए। पर बुढापे मे सफेद बाल होने पर धर्म की तरफ ध्यान लगाना चाहिए।
–अशुभ भाग्य का और शुभ धर्म का।
–दुख दारिद्रय भाग्य का व सुख शांति धर्म की।

काळा-काळा किसनजी रा साळा! १५३२
काले काले सभी कृष्ण के साले।
–यह कहावत दुहरे अर्थ मे प्रयुक्त होती है। एक तो यह *कि सभी काले व्यक्ति कृष्ण के साले नही होते।* दूसरा अर्थ यह है कि काला रंग खराब नही होता, वह तो कृष्ण भगवान का रंग था। फलस्वरूप जितने भी काले हैं वे *किसी भी सूरत मे कम नहीं।*
–बडे आदमियो मे सभी लोग परोक्ष अपरोक्ष रूप से संबंध स्थापित करना चाहते हैं।

काळा-काळा सै ई बाप रा साळा। १५३३
काले काले सभी बाप के साले।
–जो व्यक्ति खामखा अपना बहुमत सिद्ध करना चाहे।
–व्यर्थ की डींग मारने वाले व्यक्ति के लिए।

काळा तिल खाधा। १५३४
काले तिल खाये।

–खामखा किसी के लिए अप्रत्याशित रूप से कष्ट उठाना पड़े तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–किसी पुराने अज्ञात एहसान का कष्टपूर्ण बदला चुकाना पड़े तब।

काळा माथै दूजौ रंग को चढ़ै नीं। १५३५
काले पर दूसरा रंग नहीं चढ़ता।
–कुटिल व्यक्ति को सहज ही नहीं समझाया जा सकता।
–पूर्वाग्रही व्यक्ति आसानी से किसी की बात नहीं मानता।
–कट्टर व्यक्ति हर किसी के समझाने से अपना मत नहीं बदलता।

काळा री कड़ियां ई भेळमभेळ आवण दो। १५३६
काले साप का मंत्र भी साथ साथ आने दो।
संदर्भ-कथा : एक व्यक्ति को जहरीला जन्तु काट खाया। बहुत संभव वह काला साप ही था। वह एक ओझा के पास गया। ओझा बिच्छू के मंत्र का एक रुपया व काले साप के पांच रुपये लेता था। उसने लोभ के वशीभूत एक रुपया देकर बिच्छू उतारने के लिए ही कहा। पर बिच्छू के मंत्र से साप का जहर कैसे उतरेगा— यह आशंका भी उसके मन में थी। जब ओझा बिच्छू का मंत्र पढ़ने लगा तो उस व्यक्ति ने धीरे से कहा—साथ साथ काले साप का मंत्र भी चलने दो।
–जो व्यक्ति थोड़े में ही अधिक लाभ उठाना चाहे।
–रहस्य छिपा कर अपनी स्वार्थ सिद्धि करने वाले व्यक्ति के लिए।

काळा रै आगै दीवौ नीं भुपै। १५३७
काले के सामने दीया नहीं जलता।
–यह एक लोक विश्वास है कि काले साप के आगे दीपक नहीं जलता। या तो काला साप फूत्कार से दीया बुझा देता है या डर के मारे दीया जलाया ही नहीं जा सकता।
–कुटिल व्यक्ति को नेक सलाह देना व्यर्थ है।
–दुर्जन व्यक्ति पर शिक्षा का कोई असर नहीं पड़ता।
–संकट के समय आदमी हतप्रभ हो जाता है।

काला रै काला ई जलमै। १५३८
पागल के पागल ही पैदा होते हैं।
–वंशगत प्रभाव अवश्यम्भावी है।
–जैसा बाप वैसा ही नासमझ या मूर्ख बेटा।
–बिगड़ी हुई संतान के लिए।

काला रै काला थोड़ा ई जलमै। १५३९
पागल के पागल थोड़े ही पैदा होते हैं।
–बाप की तुलना में जब संतान ज्यादा समझदार व होशियार हो।
–कभी कभी वंशगत प्रभाव नहीं भी होता।

काळा रै डस्या नीं मंतर नीं झाड़ौ। १५४०
काले साप के डसन का न मंत्र और न झाड़ा।
–काला साप मौत का प्रतीक है। मौत से बचने का कोई मंत्र नहीं।
–मौत की कोई औषधि या उपचार नहीं।
–कुटिल व्यक्ति का आघात प्राण घाती होता है।
–निहायत दुष्ट व्यक्ति के लिए यह उक्ति प्रयुक्त होती है कि उसके काटे का कोई इलाज नहीं।

काळा रै थू मलमल न्हाय, थारौ काळस कदै न जाय।
रे काले तू कितना ही मलमल कर स्नान कर, तेरा काला रंग नहीं मिटेगा। १५४१
–दुष्ट व्यक्ति पर उपदेशों का कोई असर नहीं होता।
–मूर्ख व्यक्ति शिक्षा से समझदार नहीं हो सकता।
–जन्मजात क्षुद्रताओं में परिवर्तन नहीं हो सकता।
–जो व्यक्ति जैसा है वैसा ही रहेगा।

काळा री काई काळौ व्है ? १५४२
काले का क्या काला होगा ?
–सर्वत्र बदनाम व्यक्ति की और क्या बदनामी होगी।
–बेइन्तहा बिगड़े हुए व्यक्ति के प्रति व्यंग।

काला री गमाई डाया सू बावड़ै नीं। १५४३
बावले की खोई हुई होशियार लौटा नहीं सकता।
–मूर्ख, नासमझ व नादान व्यक्ति के हाथों किये हुए नुकसान की पूर्ति समझदार से भी नहीं हो सकती।
–नादान व्यक्ति के द्वारा बिगाड़ी हुई बात को वापस समझदार नहीं सुधार सकता।
ाठा काला री गमा ्या सू बळै नी।

काळि नै उठावता गोरियौ पड जावै। १५४४

पाठा काईं गोडियौ फैवै ग्रर काई पूगी कैवै ।

काईं गोडौ मुरडीनै ? १५६८
क्या घुटना मुड रहा है ?
—नजदीक का सबध या रिश्ता न होने पर भी जो व्यक्ति सामला की पचायती करे उसे सबोधित करते यह कहा वत प्रयुक्त होती है कि ऐसा तेरा क्या घुटना मुड रहा है।

काईं दूबळे घर ब्याव है ? १५६६
क्या दुबले घर विवाह है ।
—गुलछर्रे उडने ही दो , कोई गरीब के यहा तो शादी नही हो रही है ।
—किसी धनवान के यहा शादी या अन्य उत्सव होने पर मुफ्तखोर मौज उडाने के लिए यह उक्ति काम मे लेते हैं।

काईं दूबळं घोडं असवार है ? १५७०
क्या दुबले घोडे पर सवार है ?
—धनवान के कर्मचारी को मितव्ययता न करने के लिए लोग उसे इस उक्ति द्वारा उकसाते हैं कि वह मालिक के लिए बेकार क्या किफायत कर रहा है वह तो अटूट सपत्ति का स्वामी है ।

काइ पूछं दसा जोसी नं , आप आपरी सं जाणं । १५७१
क्या पूछे ग्रह दशा जोशी को अपनी अपनी सभी जानते है ।
—अपनी आप बीती तो सभी जानते है फिर ज्योतिषी को दिनमान पूछने से क्या मतलब !
—अपनी हिम्मत व अपनी निष्ठा मे ही भविष्य निर्मित होता है फिर ज्योतिषी से क्या पूछ ताछ करनी ।

काईं माखी छींक दियौ ? १५७२
क्या मक्खी ने छीक दिया ?
—जब कोई आदमी अकस्मात काम करता करता रुक जाय तब यह उक्ति काम मे ली जाती है कि ऐसी भी क्या अन होनी बात हो गई ।
—ऐसा भी क्या गजब हो गया ?

काईं माहेरौ लायौ ? १५७३
क्या माहेरा लाये ?
—माहेरा = भाजी या भाजे की शादी मे भाई अपनी बहिन के लिए जेवर व कपडे लाता है उसे माहेरा कहते हैं।
—इतना भी एहसान जतलाने की क्या जरूरत , ऐसा कोई माहेरा तो लाये नही ।

काईं लेग्या राव अर काईं लेग्या अमराव । १५७४
क्या ले गये राव और क्या ले गये उमराव ।
—कोई भी मनुष्य मरते समय कुछ भी साथ नही ले जाता, सब यही का यही धरा रह जाता है ।
—मनुष्य के लिए लोभ या सचय करना व्यर्थ है ।

काईं सिध सूनी व्है ? १५७५
क्या सिंध खाली हो जायेगी ?
—किसी एक व्यक्ति की अनुपस्थिति से शहर सूना नहीं होता।
—सामान्य व्यक्ति द्वारा हठ पूर्वक जाने का आग्रह करने पर व्यग ।
पाठा कांईं सिंध खाली हुय जासी ?
काईं साभर खाली व्है जासी ?

कांकड आय लुटग्या ! १५७६
सरहद पर आकर लुट गये !
—आखिरी वक्त काम बिगड जाना ।
—सफलता के बीच कई अदृश्य बाधाए होती हैं ।

काकड काकड फारगती , गाव मे ज्यू रा ज्यू । १५७७
जगल जगल फारखती गाव मे ज्यों का त्यों ।
सदर्भ-कथा लेन देन का काम करने वाला एक बनिया पास के गाव मे वसूली के लिए जा रहा था । एक ठाकुर ने बढिया मौका देख कर उसका पीछा किया । ठाकुर भी बनिये का कर्जदार था । उसने तलवार का डर दिखा कर बनिये से कर्ज की फारखती लिखवा ली । बनिया चालाक था । ठाकुर की निरक्षरता का फायदा उठा कर उसने डरते हुए उपरोक्त फारखती लिख डाली । ठाकुर ने खुश होकर फारखती का पुर्जा अपने पास रख लिया । कुछ दिनो पश्चात महाजन द्वारा तकाजा करने पर ठाकुर ने फार खती पचो को बताई तो उसकी सारी पोल खुल गई । मज बूरन उसे माफी माग कर रुपये चुकाने पडे ।
—अपना अपना दाव ।

—वक्त पर की गई होशियारी ही काम देती है ।

काकड नीपजे सो वाडा आवे । १५७८
खेतो की पैदावार ही बाडो मे आती है ।
—खेती मे जितना पैदा होता है उतना ही बाडो मे आता है ।
—यदि खेतो मे ही पैदावार नही होगी तो बाडो मे कहा से आयेगी ?
—कमाई के अनुरूप ही बटवारा ।
—आय के अनुरूप ही व्यय की सीमा निर्धारित होनी चाहिए ।

काकड मे कूटे घरे च्यार भाई बैठा । १५७९
जगल मे पीट पर घर मे चार भाई बैठे हैं ।
—मार खाकर भी झूठा रुआब गाठना ।
—वक्त पर साथ व सहयोग न मिले वह किस काम का ?
—बहुतायत के बावजूद जरूरत पर यदि उस चीज की पूर्ति न हो तो वह व्यर्थ है ।

काकड मे गम्यौ, गाव मे लाध्यौ । १५८०
जगल मे खोया, गाव म मिला ।
—कठिनता से प्राप्त होने वाला व्यक्ति या कोई चीज सहज ही अकस्मात् मिल जाय तब इस उक्ति का प्रयोग होता है ।
—जिस व्यक्ति की फिराक मे निकलने पर वह सामने ही मिले तब खुशी मे यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

काकड मे गमे, खूटे आय लाधे । १५८१
जगल मे खोये, खूटे के पास मिले ।
—जगल म खोया पशु घर के खूटे के पास ही मिल जाय ।
—कठिन बात स्वयमेव सहज बन जाय तब ।

काकड री कूख फाटी । १५८२
जगल की कोख फटी ।
—खूब बढिया फसल, वनस्पति, घास व हरियाली पैदा हुई ।
—धरती का कण कण लहरा उठा ।

काकड रो मुड्डो व्हे ज्या । १५८३
सरहद पर गडे पत्थर की तरह ।
—जिस व्यक्ति की बात रचमात्र भी कोई न टाले ।
—जिसकी जबान अटल हो ।
—जो व्यक्ति अपने सिद्धात व आदर्श से तनिक भी नही डिगे ।

काकरा कवळा हुवे तो स्याळिया कद छोडे । १५८४
ककर सुकोमल होते तो सियार कब छोडते ।
देखिये—क स. १३७६

काकरा फिरोळता हीरो लाधौ । १५८५
ककर बीनते हीरा मिला ।
—अत्यधिक भाग्यशाली व्यक्ति के लिए ।
—भाग्य की अनुकूलता होने पर कुछ भी अप्रत्याशित लाभ हो सकता है ।

काकरे री देसी जको पसेरी री खासी । १५८६
ककर की देगा वह पसेरी की खायेगा ।
—किसी का छोटा अपकार करने वाले को बडे अपकार के लिए तैयार रहना चाहिए ।
—दूसरो को हानि पहुचाने वाला स्वय एक दिन भारी हानि उठाता है ।

काख उठाया काळजो दीसे । १५८७
बगल उठाने पर कलेजा दिखे ।
—अत्यधिक निर्धन व्यक्ति के लिए ।
—गरीबी छिपाये नही छिपती ।

काचळी मे हाथ घाल दियौ । १५८८
कचुकी मे हाथ डाल दिया ।
—मर्मान्तक जगह पर ठेस लगा दी ।
—घातक प्रहार कर दिया ।
—मर्मस्थल का स्पर्श करना ।

काजर री कुत्ती कठै जावती ब्यावे ? १५८९
कजर की कुतिया कहा जाकर व्याये ?
—घुमक्कड व्यक्ति का क्या ठिकाना, न जाने वह कहा मिले ?
—जिस व्यक्ति का अता-पता न हो ।
—कुलटा औरत का क्या भरोसा ?

काट कटीली भाडकी लागे मीठा बोर । १५९०
काट कटीली झड बेरी, भूम मीठे बेर ।
—काटो के बीच ही मीठे फल लगते हैं ।
—मीठे बेर चाहेगा उसे काटो से भी बिधना पडेगा ।
—जो व्यक्ति जबान से कटु व दिल का उदार हो ।

काटा रो मुमाड चुभण रो ई व्हे । १५९१

पाठा काईं गोडियो कँवै अर काईं पूगी कँवै ।

काईं गोडो मुरडीजं ? १५६८
क्या घुटना मुड रहा है ?
–नजदीक का सबंध या रिश्ता न होने पर भी जो व्यक्ति खामखा की पचायती करे उसे सबोधित करके यह कहा वत प्रयुक्त होती है कि ऐसा तेरा क्या घुटना मुड रहा है।

काईं दूबळै घर ब्याव है ? १५६९
क्या दुबले घर विवाह है ।
–गुल्छर्रे उडने ही दो , कोई गरीब के यहा तो शादी नही हो रही है ।
–किसी धनवान के यहा शादी या अन्य उत्सव होने पर मुफ्तखोर मौज उडाने के लिए यह उक्ति काम म लेते हैं।

काईं दूबळै घोडे असवार है ? १५७०
क्या दुबले घोडे पर सवार है ?
–धनवान के कर्मचारी को मितव्ययता न करने के लिए लोग उसे इस उक्ति द्वारा उकसाते हैं कि वह मालिक के लिए बेकार क्या किफायत कर रहा है वह तो अटूट सपत्ति का स्वामी है ।

काईं पूछै दसा डाकोत नै , आप आपरी सै जाणं । १५७१
क्या पूछे ग्रह दशा जोशी को अपनी अपनी सभी जानते है ।
–अपनी आप बीती तो सभी जानते हैं फिर ज्योतिषी को दिनमान पूछने से क्या मतलब !
–अपनी हिम्मत व अपनी निष्ठा से ही भविष्य निर्मित होता है फिर ज्योतिषी से क्या पूछ ताछ करनी ।

काईं माखी छींक दियो ? १५७२
क्या मक्खी ने छींक दिया ?
–जब कोई आदमी अकस्मात काम करता करता रुक जाये तब यह उक्ति काम मे ली जाती है कि ऐसी भी क्या अन होनी बात हो गई ।
–ऐसा भी क्या गजब हो गया ?

काईं माहेरो लायो ? १५७३
क्या माहेरा लाये ?
–माहेरा = भाजी या भाञ्जे की शादी मे भाई अपनी बहिन के लिए जेवर व कपडे लाता है उसे माहेरा कहते हैं ।
–इतना भी एहसान जतलाने की क्या जरूरत , ऐसा कोई माहेरा तो लाये नही ।

काईं लेग्या राव अर काईं लेग्या अमराव । १५७४
क्या ले गये राव और क्या ले गये उमराव ।
–कोई भी मनुष्य मरते समय कुछ भी साथ नही ले जाता, सब यहीं का यहां धरा रह जाता है ।
–मनुष्य के लिए लोभ या सचय करना व्यर्थ है ।

काईं सिघ सूनी व्हे ? १५७५
क्या सिंध खाली हो जायेगी ?
–किसी एक व्यक्ति की अनुपस्थिति मे शहर सूना नही होता ।
–सामान्य व्यक्ति द्वारा हठ पूर्वक जाने का आग्रह करने पर व्यग ।
पाठा काईं सिंघ खाली हुय जासी ?
काईं साभर खाली व्हे जासी ?

काकड आय लुटग्या ! १५७६
सरहद पर आकर लुट गये !
–आखिरी वक्त काम बिगड जाना ।
–सफलता के बीच कई अदृष्ट बाधाए होती हैं ।

काकड काकड फारगती , गाव म ज्यू रा ज्यू । १५७७
जगल जगल फारखती गाव म ज्यों का त्यों ।
सदर्भ - कथा लेन देन का काम करने वाला एक बनिया पास के गाव मे वसूली के लिए जा रहा था । एक ठाकुर ने बढिया मौका देख कर उसका पीछा किया । ठाकुर भी बनिये का कर्जदार था । उसने तलवार का डर दिखा कर बनिये से कर्ज की फारखती लिखवा ली । बनिया चालाक था । ठाकुर की निरक्षरता का फायदा उठाकर उसने डरते हुए उपरोक्त फारखती लिख डाली । ठाकुर ने खुश होकर फारखती का पुर्जा अपने पास रख लिया । कुछ दिना पश्चात महाजन द्वारा तकाजा करने पर ठाकुर ने फार खती पचो को बताई तो उसकी सारी पोल खुल गई । मज बूरन उसे माफी माग कर रुपये चुकाने पडे ।
–अपना अपना दाव ।

–वक्त पर की गई होशियारी ही काम देती है।

काकड नीपजै सो वाडा आवै। १५७८
खेतों की पैदावार ही बाडो मे आती है।
–खेतो मे जितना पैदा होना है उतना ही बाडो मे आता है।
–यदि खेतो म ही पैदावार नही होगी तो बाडो मे कहा से आयेगी ?
–कमाई के अनुरूप ही बटवारा।
–आय के अनुरूप ही व्यय की सीमा निर्धारित होनी चाहिए।

काकड मे कूटै घरै च्यार भाई बैठा। १५७९
जगल मे पीटे पर घर मे चार भाई बैठे हैं।
–मार खाकर भी झूठा रुआब गाठना।
–वक्त पर साथ व सहयोग न मिले वह किस काम का ?
–बहुतायत के बावजूद जरूरत पर यदि उस चीज की पूर्ति न हो तो वह व्यर्थ है।

काकड मे गम्यौ, गाव मे लाध्यौ। १५८०
जगल मे खोया, गाव म मिला।
–कठिनता से प्राप्त होने वाला व्यक्ति या कोई चीज सहज ही अकस्मात् मिल जाय तब इस उक्ति का प्रयोग होता है।
–जिस व्यक्ति की फिराक मे निकलने पर वह सामने ही मिले तब खुशी मे यह कहावत प्रयुक्त हाती है।

काकड मे गमै, खटे आय लाधै। १५८१
जगल मे खोये, खूटे के पास मिले।
–जगल म खोया पशु घर के खूटे के पास ही मिल जाय।
–कठिन बात स्वयमेव सहज बन जाय तब।

काकड री कूख फाटी। १५८२
जगल की कोख फटी।
–खूब बढिया फसल, वनस्पति, घास व हरियाली पैदा हुई।
–धरती का कण कण लहरा उठा।

काकड रौ मुड्डौ व्हे ज्या। १५८३
सरहद पर गडे पत्थर की तरह।
–जिस व्यक्ति की बात रचमात्र भी कोई न टाले।
–जिसकी जवान अटल हो।
–जो व्यक्ति अपने सिद्धात व आदर्श से तनिक भी नही डिगे।

काकरा कवळा हुवै तो स्याळिया कद छोडै ! १५८४
ककर सुकोमल होते तो सियार कब छोडते !
देखिये—क स. १३७६

काकरा फिरोळता हीरौ लाधौ। १५८५
ककर बीनते हीरा मिला।
–अत्यधिक भाग्यशाली व्यक्ति के लिए।
–भाग्य की अनुकपा होने पर कुछ भी अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

कांकरै री देसी जकौ पसेरी री खासी। १५८६
ककर की देगा वह पसेरी की खायेगा।
–किसी का छोटा अपकार करने वाले को बडे अपकार के लिए तैयार रहना चाहिए।
–दूसरो को हानि पहुचाने वाला स्वय एक दिन भारी हानि उठाता है।

कांख उठाया काळजो दीसै। १५८७
बगल उठाने पर कलेजा दिखे।
–अत्यधिक निर्धन व्यक्ति के लिए।
–गरीबी छिपाये नही छिपती।

काचळी मे हाथ घाल दियौ। १५८८
कचुकी म हाथ डाल दिया।
–मर्मा तक जगह पर ठेस लगा दी।
–घातक प्रहार कर दिया।
–मर्मस्थल का स्पर्श करना।

काजर री कुत्ती कठै जावती ब्यावै ? १५८९
कजर की कुतिया कहा जाकर ब्याये ?
–घुमक्कड व्यक्ति का क्या ठिकाना, न जाने वह कहा मिले ?
–जिस व्यक्ति का अता-पता न हो।
–कुलटा औरत का क्या भरोसा ?

कांट कटीलो भाडको लागै मीठा बोर। १५९०
काट कटीली झड बेरी, झूमे मीठे बेर।
–काटा के बीच ही मीठे फल लगते हैं।
–मीठे बेर चाहेगा उसे काटा से भी बिंधना पडेगा।
–जो व्यक्ति जबान से कटु व दिल का उदार हो।

काटा रौ मुमाव चुभण रौ ई व्हे। १५९१

काटे का स्वभाव चुभना ही है।
—निकृष्ट व्यक्ति के हाथों सदा बुरा काम ही होता है।
—बुरे व्यक्ति को बुराई करने पर ही शांति मिलती है।

काटा सू काटौ नीसरै। १५९२
काटे से ही काटा निकलता है।
—दुष्ट व्यक्ति के साथ दुष्टता करने से वह सीधा होता है।
—नीच व्यक्ति के साथ नीचता करने से ही उसे उचित सबक सिखाया जा सकता है।
पाठा काटौ काटा सू ई नीसरै।

काटा सू काटौ बिंधियौ। १५९३
काटे से काटा बिंधा।
—जैसे को तैसा मिला।
—नीच के साथ नीच उलझा।
—दुष्ट के साथ दुष्ट फसा।

काटी री जोर डोडिया ताईं। १५९४
काटी का जोर डोडिये तक।
—काटी = एक प्रकार की बेल जो जमीन पर चारों तरफ पसर कर फैलती है। ठौर ठौर फल के रूप में केवल काटे ही काटे जुड़े रहते हैं। सूखने पर सारे काटे जमीन पर अलग-अलग होकर बिखर जाते हैं। उसके कांटेदार फल को डोडिया कहते हैं।
—नीच व्यक्ति की क्षमता केवल नीचता तक ही सीमित रहती है।
—दुष्ट व्यक्ति का दुष्टता के आगे क्या जोर!

कांटै-कांटै वाड बचनै-बचनै राड। १५९५
काटे काटे से बाड, वचन वचन से राड।
—काटे काटे से वाड बनती है। वचन वचन से झगड़ा बढ़ता है।
—कटु वचन काटों से अधिक तीक्ष्ण होते हैं।

काटौ भागै जिणरै रडकै। १५९६
काटा चुभता है उसी को खटकता है।
—जिसे दुख होता है उसे ही भुगतना पड़ता है।
—जिसे पीड़ा होती है उसे ही दर्द सहन करना पड़ता है।
—बीतने पर ही अनुभव होता है।

काण करावण नै ई नीं आयौ। १५९७
शोक मनाने ही नहीं आया।
—आशा के अनुरूप हमदर्दी प्रकट करने ही नहीं आया।
—किसी व्यक्ति की कृतघ्नता के प्रति व्यंग।

काण घडा मे वरतीजै। १५९८
तराजू का असंतुलन दूसरी चीज से संतुलित कर दिया जाता है।
—एक दूसरे का पूरक सहयोग।
—आपसी सहयोग से ही समाज में संतुलन रहता है।
पाठा: काण घडा नै खाय।
काण घडा म रैवै।
काण तो घडा म ई निकळै।

काणती छोरी थनै कुण व्यासी के म्हारा भाई नै रमावता कुण पालै? १५९९
कानी छोकरी तुझे कौन ब्याहेगा कि मेरे भाई को खिलाने में किसी को एतराज नहीं?
—चलते रास्ते दूसरों की पंचायती करने वालों पर व्यंग।
—अपनी अपनी मजबूरी का औचित्य।
पाठा काणी छोरी थनै कुण परणीजसी के म्हारा बीरा नै रमावता तो कुण ई नी पालै।

कांणती दादी छा घाल के बोल्यौ तो इसौ के घी को लूदौ घालू। १६००
कानी दादी छाछ डाल कि बोला तो ऐसा कि घी का लौंदा डालूं।
—मांगने के साथ अप्रिय वचन बोलने वाले के प्रति व्यंग
—ओछा बोल कर जो व्यक्ति अच्छे बर्ताव की आशा करे उसके लिए इस उक्ति का प्रयोग होता है।
पाठा काणती भाभी छा घाल क घालस्यू दही थू मीठौ घणौ बोल्यौ।

काणती भेड री चाल ई न्यारी। १६०१
कानी भेड की चाल भी अलहदा।
—हेय व्यक्ति का अपना अलग ही ढंग होता है।
—खंडित व्यक्तित्व के प्रति व्यंग।
पाठा काणती भेड रौ स्याडौ ई न्यारौ।
काणती भेड रौ रैवास ई न्यारौ।

काणा काणा राड कायरी के फूटा डोळा री। १६०२
काने काने झगडा किस बात का कि फूटी आंख का।
–बिना बात का झगडा।
–हीन व्यक्ति निरर्थक बात पर ही झगड पडते है।
पाठा काणा काणा राट काहे री के आख रै डोळा री।

काणा जोगी राम राम के ओ ई लड़ाई री मत्तो। १६०३
कान जोगी राम-राम कि बाबा यह तो लडाई का विचार।
–अभिवादन के बहाने लज्जित करना।
–आदर के साथ निरादर का भाव।
–झूठे दिखावे की अभ्यर्थना।
पाठा काणा जोगी आदस के बावा लडाई री सदेस।

काणा नें काणो नीं कैणो, कैणो भाई सैंण। १६०४
होळैं होळैं पूछणो, थारा कीकर फूट्या नैण।
कान को काना नही कहना, कहना भाई सैण।
धीरे धीरे पूछना, तेरे क्योंकर फूटे नैण॥
–मूर्ख व्यक्ति से मीठा बोलकर काम निकलवाना चाहिए।
–सीधा कटु सत्य कहने की अपेक्षा घुमा फिरा कर मीठी वाणी मे वही बात कही जाय तो ज्यादा कारगार होती है।
–कुटिल या नादान व्यक्ति को फुसलाकर खुश रखना चाहिए।
पाठा काणा नै काणो नी कैणो कैणो बालम सैण।
हल हल नै पूछणो, थारा कीकर फूटा नैण।
काणा नै कांणो नी कैजे, कह बतळाजे सैण।
हळवै हळवै पूछजे, थू कीकर गमाया नैण।

काणा नें केवें अर बाडो लाजें। १६०५
कान को कहने से ऐंचाताना लज्जित होता है।
–बडा अपराध करने वाले को उलहना देने से छोटा अपराधी स्वयमेव लज्जित होने लगता है।
–बड अपराधी को डराने से छोटे अपराधी तो अपने आप डरने लगते हैं।

काणा रै अेक रग वत्ती व्है। १६०६
काने के एक नस अधिक होती है।
–काना व्यक्ति अपेक्षतया अधिक चालाक होता है।
–काना व्यक्ति दूसरो की तुलना मे ज्यादा कुटिल होता है।

काणिया तेली वाळो साता। १६०७
काने तेली वाला सौभाग्य।
–एक राजस्थानी लोक कथा के अनुसार एक काने तेली के लिए सौभाग्य घटित होता रहता है।
–अकस्मात् लाभ की बात हो जाय तब।

काणिया पाव्या राम-राम के देखी थारी क्याम-क्याम।
काने पडे राम राम कि देखी तेरी बक बक। १६०८
–अभद्र अभिवादन पर व्यग।
–अप्रिय अभिवादन हर किसी को खटकता है।
–अभिवादन के बहाने तिरस्कार।

काणिये बादळ वाळी कर दीवी। १६०९
काने बादल वाली कर दी।
–काने व्यक्ति की तरह काने बादल को भी एक तरफ नही दिखता। इस कारण वह कही बरसता है और कही नही बरसता।
–भरोसे रख कर धोखा देना।
–आशा जगा कर निराश करने वाले व्यक्ति के लिए।

काणी आख मे इज काजळ। १६१०
कानी आख मे ही काजल।
–किसी वस्तु के निरर्थक प्रयोग पर यह उक्ति काम मे आती है।
–बदसूरत व्यक्ति के खामखा शृगार पर व्यग।

कांणी आख सूझण नें नीं पण दूखण नें त्यार। १६११
कानी आख दिखने को नही पर खटकने को तैयार।
–सहयोग के बदले तकलीफ देने वाले व्यक्ति के लिए।
–जो आत्मीय व्यक्ति मदद करने की बजाय कष्ट दे।

कांणी छोरी तनें कुण ब्यावेगो के ना सही, म्हैं मेरे भाया नें खिलाऊंगी।
काणी थनें कुण परणीजसी के म्हारा भाई नें रमावता तो कोई बरजें कोनीं। १६१२
देखिये—क० स १५९९

काणी दादी छाछ घाल अे के आरे पोता थनें कही थू।
काणी राड छाछ घाल के मीठी घणी बोल्यो, बेटा दूध घालस्यू। १६१३
देखिये—क स १६००

काणी नैं कुणी सरावै के काणी री मा । १६१४
कानी को कौन सराहे कि कानी की अम्मा ।
—दूसरों की दृष्टि में हेय होने पर भी अपनी चीज सभी को प्यारी होती है ।
—अपनी बुरी चीज की भी लोग प्रशंसा करते हैं ।
पाठा. काणी न सरावै काणी रौ बाप ।
काणी नैं कुण वखाणै के काणी रौ धणी ।

काणी नैं बाल्हौ काणौ तौ राणी नैं वाल्हौ राणौ । १६१५
कानी को प्यारा काना तो रानी को प्यारा राणा ।
—अपनी अपनी वस्तु सभी को प्रिय होती हैं
—जिसके भाग्य में जो बदा है उसी से हर व्यक्ति को सन्तोष करना पड़ता है ।
—हर व्यक्ति की रुचि सन्तुष्टि व पसंद का अपना सीमित दायरा होता है ।

काणी पीठ में पड़ै । १६१६
कानी पीठ में पड़ता है ।
—अनजाने व अपरिचित जगह के लिए ।
—जो स्थान रास्ते से दूर पड़ता हो उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

काणी रै ब्याव में चाद ई आथम जावै १६१७
कानी के विवाह में चाद भी अस्त हो जाता है ।
—अभागे व्यक्ति के लिए अनहोनी अड़चनें भी पैदा हो जाती हैं ।
—आशंका वाले काम में अप्रत्याशित विघ्न पड़ते ही रहते हैं ।

काणी रै ब्याव में फेरां ताईं खोट । १६१८
कानी के विवाह में पाणिग्रहण तक कसर ।
—संदेहजनक काम जब तक पूरा नहीं होता तब तक उसमें बाधाओं की आशंका बनी रहती है ।
—असंगत काम बड़ी मुश्किलों के बाद सफल होता है ।

काणी रै ब्याव में सौ घाटा । १६१९
कानी के विवाह में सौ अड़चन ।
—टेढ़ा या अनुचित काम सहज पूरा नहीं होता ।
—उलझन वाला काम बड़ी कठिनाइयों के बाद सफल होता है ।

पाठा. काणी रै ब्याव में सौ कौतक ।
काणी रै ब्याव में सौ जोखम ।

काणी रौ काजळ ई को सुहायो नीं ? १६२०
कानी का काजल भी नहीं सुहाया ?
—गरीब का मामूली सा ठाट भी क्या अच्छा नहीं लगा ?
—बड़े आदमियों से मुकाबला करना तो दूभर पर क्या अकिंचन व्यक्ति का नगण्यतम लाभ भी लोगों को अच्छा नहीं लगता ?
पाठा. काणी रौ काजळ ई कोनी सुहायो काइ ?

काणी रौ काजळ ई सरायौ । १६२१
कानी का काजल भी सराहा ।
—फुसला कर काम निकालने के लिए झूठी प्रशंसा करना ।
—अकिंचन व्यक्ति को प्रोत्साहित करना ।

काणी रौ लगन, कोडि सैं विघन । १६२२
कानी का लग्न, करोड़ों विघ्न ।
देखिए—क्र. सं. १६१८

काणी ऊंट करकेडा कांनी देखै ज्यूं । १६२३
जैसे काना ऊंट करकेड़ की तरफ देखता है ।
—करकेडा=मध्यम ऊंचाई का एक तीक्ष्ण व लम्बे कांटों वाला पेड़ ।
—मजबूरी की निगाह ।
पाठा. काणौ ऊंट कैर साम्ही देखै ज्यूं देखै ।

काणौ कागलो कद कुण्ड में पड़ै ? १६२४
काना कौवा कब कुण्ड में गिरे ?
—कौवे की तरह चालाक व धूर्त व्यक्ति कभी नुकसान का काम नहीं करता ।
—काना व्यक्ति कौए की तरह चालाक होता है ।

काणौ कुचमादी व्है । १६२५
काना व्यक्ति बदमाश होता है ।
—काना आदमी अतिरिक्त चालाक होता है ।
पाठा. काणौ कुचमादी घणौ व्है ।

कादा नैं जूतिया दोनूं खाय । १६२६
प्याज और जूतियें दोनों खाय ।
संदर्भ-कथा एक व्यक्ति द्वारा अपराध करने पर राजा ने

उसे दड दिया कि या तो वह सौ बडे बडे प्याज खाले या सौ जूते । अपराधी न सोचा कि जूतो से तो प्याज खाना ज्यादा बहतर है। उमने प्याज खाना कबूल किया। परतु पाच मातेक प्याज खाने ही उसका मुह जलने लगा। आखो मे आसू आ गये। उतने लाचार होकर जूते खाने की आज्ञा चाही। पर दसेक जूते खाते ही उसका माथा मन्ना गया। उसने फिर प्याज खान की आज्ञा चाही। इस प्रकार प्याज ग्रौर जूतों की सजा बदलत बदलते वह सारे प्याज भी खा गया और सौ जूतो की सजा भी भुगत ली।

–नासमझी से कोई व्यक्ति दुन्रा नुकसान उठा लेता है।

–कभी कभी समझ भी धाखा दे जाती है।

–मजबूरी की मार के सामने किसी का वश नही चलता।

–जरुरत से ज्यादा समझदारी का मुगालता नासमझी का ही दूमरा रूप है।

–वक्त पर सही निर्णय नही लेन स पछताना पडता है।

कादा मे किसी कुळी निरुळे ? १६२७

प्याज म कौनसा दाना निकलता है ?

–प्याज म छिलकों के अलावा कोई ठोम चीज नही निकलती।

–जिस व्यक्ति का ठोस व्यक्तित्व न हो।

कादा वाळा छिपतू है, छोलै जित्ती ई बो आवै। १६२८

प्याज वाले छिलके हैं, जितना उधेडा जाय उतनी ही बदबू आती है।

–बुराई की तह म जाने पर बुराई के अलावा कुछ भी हाथ नही आता।

–गदगी को कुरेदना ठीक नही।

–गदी बात की ज्यादा छान बीन नही करनी चाहिए।

पाठा कादा वाळा छिलका है, उघेदै जित्ती ई बास आवै।

कादै रा छू तरा उतारै जित्ता ई उतरै। १६२९

प्याज के छिलके उनारे जितन ही उतरते हैं।

–कुटिल व्यक्ति की कुटिलताओ का पार नही होता।

–जिस व्यक्ति मे अनेक बुराइया हा।

–छिपी बात को उघाडने म काई सार नही।

पाठा कादै रा छितू छोलै जित्ता ई निकळै।

कादै रा छू तरा उतारणा चोखा कोनीं। १६३०

प्याज के छिलके उतारना ठीक नही।

–किसी बात को बार बार कुरेदना अच्छा नही

–किसी की बदनामी फैलाते रहना सगत नही।

कांधै राळी भोळी, बांबी गिणै न कोळी। १६३१

कधे पर डाली झोली, चमार गिने न कोली।

–भीख मागना ही शुरू कर दिया तो फिर जाति भेद क्या ?

–मर्यादा छोडने के बाद गिरावट की कोई सीमा नही रहती।

–*भिखारी व कुलटा की कोई मर्यादा नही होती।*

कान अर आख मे च्यार ग्रागळ रो आतरो। १६३२

कान और आख म चार अगुल का अतर।

–सुनी हुई और देखी हुई बात म बहुत फर्क होता है।

–सुनी सुनाई बात पर कभी भरोसा नही करना चाहिए।

–आखा से देखी बात ही प्रामाणिक हाती है।

कांन खुस' र हाथ मे आयग्या। १६३३

कान टूट कर हाथ म आ गये।

–अनहोनी बात सुनन पर यह कहावत प्रयुक्त होती है।

–आश्चर्य जनक बात के लिए प्रतिक्रिया स्वरूप इस कहावत का प्रयोग हाता है।

–जिस लज्जा जनक बात को सुनने के लिए कान तैयार न हा।

कान मे कवौ जावै कांई ? १६३४

क्या कान मे निवाला जा रहा है ?

–ऐसी भी क्या असगत बात हो जायगी ?

–जिस चीज के अभाव से जैसे तैसे काम चल जाय तब उसकी प्रतीक्षा व्यर्थ है।

कान मे ठेठी अर अतर लगास्यू। १६३५

कान मे मैल और इत्र लगाऊगा।

–कम हैसियत और आशाए ऊची।

–हतभागे की महत्त्वकाक्षा के प्रति व्यग।

पाठा कान म कीटो अर कैवै म्हनै ई अतर दै।

कान मे ठेठी घाल्योडी। १६३६

कान मे मैल जमा हुआ।

–जो व्यक्ति गलत काम करके भी उलहने की बात को न सुने तब।

काम निपुणता सिखाता है।
–किसी काम का निरंतर अभ्यास ही कुशलता की पहली शर्त है।
–स्वयं काम करने से बढ़ कर अन्य दूसरा कोई गुरु नहीं।

कांम री मां उरेंसी, पूत री मां परेंसी। १६५९
काम की मा इधर, पुत्र की मा उधर।
–मनुष्य समाज में काम ही सबसे अधिक प्रिय है।
–रिश्ते से अधिक काम का महत्त्व होता है।
–काम ही आत्मीयता की एक मात्र कसौटी है।

कांम री वेळ्यां सोवै, करम नै रोवै। १६६०
काम के समय सोये, भाग्य को रोये।
–निठल्ले व्यक्ति का भाग्य भी साथ नहीं देता।
–कर्मठ व्यक्ति के आगे भाग्य का भी वश नहीं चलता।
–अकर्मण्यता का दोष भाग्य पर नहीं टाला जा सकता।

कांम रौ नांव ई खाणौ है। १६६१
काम का नाम ही खाना है।
–काम करने से ही भोजन मिलता है।
–मेहनत करने से ही भूख लगती है।

कांम जेड़ा दाम। १६६२
काम जैसे दाम।
–काम के अनुसार मजदूरी।
–कार्य की कुशलता के अनुरूप ही मजदूरी निर्धारित होनी चाहिए।

कांम तौ करयां निवड़ै। १६६३
काम तो करने से ही संपन्न होता है।
–काम में जुट पड़ने से ही काम पूरा होता है।
–बातें बघारने से बात नहीं बनती।

काम थोड़ौ हळवळ घणी। १६६४
काम थोड़ा हलचल बहुतेरी।
–वास्तविक काम की अपेक्षा हल्ला-गुल्ला अधिक करने वाले पर कटाक्ष।
–अधिक व्यक्ति मिलकर काम की बजाय उसका शोर ज्यादा करते हैं।

कांम नै काम सिखावै। १६६५
काम को काम सिखाता है।
–काम का उस्ताद काम।
–काम करने से अपने-आप प्रवीणता हासिल हो जाती है।

कांम पड़यां काकोजी, नींतर दारीजी। १६६६
काम पड़ने पर चाची, नहीं तो कुलटा।
–काम पड़ने पर आजीजी, नहीं तो बुराई।
–जो व्यक्ति काम पड़ने पर चाटुकारी करे अन्यथा गाली दे।

कांम पड़यां कूतजै, जो नर जेड़ौ होय। १६६७
काम पड़ने पर आंकिये, जो नर जैसा होय।
–वक्त पड़ने पर ही किसी व्यक्ति की सही पहिचान होती है।
–दुख के समय अच्छे बुरे का पता लगता है।

काम पड़यौ जद सेठजी तिपड़ै चढ़ग्या। १६६८
काम पड़ा जब सेठजी तीसरी मंजिल चढ़ गये।
–जो व्यक्ति काम पड़ने पर दूर हो जाय।
–जो व्यक्ति काम पड़ने पर हाथ खींचले या साथ न दे।

काम भोळायौ जांणै माथै मे सोट री दी। १६६९
काम बताया तो मानों सिर पर लाठी मारी।
–काम चोर व्यक्ति के लिए।
–जिसे काम करना बेहद बुरा लगे।

काम रै नाव सू सीयौ चढ़ै। १६७०
काम के नाम से ही बुखार चढ़े।
–जो व्यक्ति एकदम अकर्मण्य व निठल्ला हो।
–आलसी व्यक्ति को काम के नाम पर मौत आती है।
पाठां काम रै नाव ताव चढ़ै।

कांम रौ नीं काज रौ, कटक नाज रौ। १६७१
काम का न काज का, बैरी अनाज का।
–जो भोजन-भट्ट व्यक्ति किसी काम न हो।
–भोजन का नाश करने वाले अकर्मण्य व्यक्ति के लिए।

कांमळ भीजै ज्यूं मारी व्है। १६७२
कंबल ज्यों ज्यों भीगती है, त्यों त्यों अधिक भारी होती है।
–बात को तानने पर बात अधिक बढ़ती है।

–धन या सपत्ति बढने पर अभिमान भी बढता है।

कांमळ हाळै नै घी घणौ तौ सी ई घणौ। १६७३
भाखलं हाळै नै घी थोडौ तौ सी ई थोडौ।
कबल वाले को घी ज्यादा तो ठडक भी ज्यादा।
गुदडी वाले को घी कम तो ठडक भी कम।
सदर्भ - कथा : एक ठाकुर सर्दियो के दिनों मे किसी के घर गया। साथ मे उनका नौकर भी था। हैसियत के अनुसार उनकी मेहमान नवाजी हुई। ठाकुर को अच्छा भोजन मिला और नौकर को हलका। रात को सोने के समय ठाकुर को बढिया रगीन कबल ओढने को मिली और नौकर को मोटी व भारी गुदडी। सर्दी कडाके की पड रही थी। ठाकुर तो बढिया कबल मे ठिठुरता रहा, पर मोटी गुदडी से नौकर को ठडक महसूस नही हुई।
–मनुष्य को हर बार दुहरा लाभ नही मिलता।

काम वाल्हौ चांम वाल्हौ कोनीं। १६७४
काम प्यारा है चमडी प्यारी नही।
–मेहनत करने वाले शरीर का महत्त्व है सुदरता का नही।
–खूबसूरत व्यक्ति से मेहनती व्यक्ति ज्यादा प्रिय होता है।

काम सरधा दुख बीसरिया बैरी हुयग्या वेद। १६७५
काम पटा दुख बिसराया, वैरी हो गये वैद्य।
–गर्ज मिट जाने के बाद जो व्यक्ति एकदम कृतघ्न हो जाय।
देखिये—क स. १४३८
पाठा काम सरधौ जुग बीसरियौ, कुनबौ बारा बाट।

काम है तौ करम है। १६७६
काम है तो भाग्य है।
–काम करने वाले व्यक्ति का भाग्य अपने आप साथ देता है।
–काम करेगा उसे सफलता मिलकर रहती है।

कांमा जिणरा धामा, करै जिणनै छाजै। १६७७
काम जिसका धाम, करे उसको सोहे।
देखिये—क स. १२६६
पूरा दोहा इस प्रकार है
कामा जिणरा धामा, करै जिणनै छाजै।
अण रहैती गदेडै कीवी, कांना मे लठ बाजै।

कांमी रै जात नीं, लोभी रै साख नीं। १६७८
कामुक के जाति नही, लोभी के रिश्ता नही।
–कामुक व्यक्ति जाति बिरादरी का भी खयाल नही रखता। लोभी व्यक्ति रिश्तेदारी का भी ध्यान नही रखता।
–कामुक और लोभी दोनो ही अधे होते हैं।

कांमी हरामी होवै। १६७९
कामुक व्यक्ति हरामी होता है।
–व्यभिचारी पर विश्वास नही करना चाहिए।
–व्यभिचारी व्यक्ति सगे सबधियो से भी नही टलता।

कांसी माथै बीज पडै। १६८०
कासी पर बिजली गिरती है।
–दुष्ट व्यक्ति का विनाश अवश्यम्भावी है।
–दुष्ट आदमी पर अकस्मात् गाज गिरती है।

कासी रौ रणकारौ कासी मे ई रेवै। १६८१
कासी की झकार कासी मे ही रहती है।
–गरीब की फरियाद कोई नही सुनता।
–घर का गुप्त रहस्य घर म ही रहता है।
–असहाय की छटपटाहट या विरोध का कोई असर नही होता।
–हरदम बकवास करने वाले की कही सुनवाई नही होती।

कासौ देणौ पण वासौ नीं देणौ। १६८२
भोजन खिला देना पर स्थान नही देना।
–किसी अनजान व्यक्ति को भोजन खिला देना चाहिए पर उसे अपने घर मे स्थान नही देना चाहिए।
–अनजान व्यक्ति पर भरोसा करना उचित नही।

कासौ भागौ न भागौ, रणकौ बाज्यौ। १६८३
कासा टूटा या न टूटा पर झकार काफी हुई।
–शोर गुल या धमा-चौकडी तो खूब मची पर असर का पता नही।
–जब कभी हो हल्ला तो खूब मचे पर असलियत का पता न चले।

कि

किण किण रै मूडै आडौ हाथ दा । १६८४
किस किस के मुह पर हाथ रखें ।
–कोई व्यक्ति किसी की बुराई करे तो उसे रोका नही जा सकता ।
–हर व्यक्ति को किसी के बारे म बुरा भला कहने का अधिकार है ।

किण किण री मन रावजै बाट बिचाळै खेत । १६८५
किस किस की लिहाज रखी जाय, बीच रास्ते पर खेत ।
–हर कोई राह चलता राहगीर रास्ते के खेत म हाथ डाल देता है किस किस की लिहाज रखी जाय ।
–रास्ते पर खेत हर दृष्टि स बुरा है ।

किण खेत री मूळी । १६८६
किस खेत की मूली ।
–छोटा व्यक्ति किसी बडे आदमी की बात म टाग अडाये तब उपेक्षा से उसे यह उक्ति कही जाती है ।
–नगण्य व्यक्ति की क्या परवाह की जाय ।

किण घरटी रौ आटौ खावौ ? १६८७
किस चक्की का आटा खाते हो ?
–मोटे व्यक्ति को परिहास म यह बात पूछी जाती है कि वह किस चक्की का आटा खा कर इतना मोटा हो रहा है ।
–मोटे व्यक्ति के प्रति आश्चय जनक जिज्ञासा ।

किण बाडी रौ बथवौ ? १६८८
किस बाडी का बथुआ ?
–किसी व्यक्ति के प्रति उपेक्षित दृष्टि कि उसकी ऐसी बिसात ही क्या है ?
–जो अकिंचन व्यक्ति हेकडी दिखाये उसके प्रति व्यग ।

किणरा जायोडा किण नै दुख दै । १६८९
किसके जन्मे, किसे दुख दें ।
–निपट अपरिचित या अनजान व्यक्ति किसी को सताये तब यह कहावत प्रयुक्त होती है ।
–शोषण करने वाले विदेशी या अवाछित तत्व के प्रति तिरस्कार भरी भावना ।
–न मालूम कब किस व्यक्ति के द्वारा किसी को कब दुख मिल जाय ।

किण री खिण्योडी नै कुण पड्यौ ? १६९०
किस की खुदी हुई और कौन पडा ?
–दूसरो को धोखा देन वाला खुद धोखे म पड जाय तब ।
–दुष्ट स्वय अपन हाथो खोदे हुए गड्ढे म गिरता है ।

किणरी छाती माथै रू आळी ? १६९१
किसके सीने पर इतन बाल हैं ?
–किस म इतना साहस कि वह सामना करे ?
–प्राय चुनौती के रूप म यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

किण री मा अजमौ खायौ ? १६९२
किस की मा ने अजवाइन खाया ?
–किस की इतनी हिम्मत जो मुझसे भिडे ?
–चुनौती भरी ललकार ।

किणरी मा सेर सूठ खाई ? १६९३
किसकी मा ने सेर साठ खाई ?
–ऐसा कौन हिम्मतवर जो किसी कठिन कार्य को पूरा करन का बीडा उठाये ।
–किसी दूभर काम के लिए उकसाने के निमित्त इस कहावत का प्रयोग होता है ।
–सेर साठ खाने वाली वीर जननी का वीर पुत्र ही मुश्किल काम को पूरा करने का बीडा उठा सकता है ।

किण रूख रै हवा नीं लागै ? १६९४
किस वृक्ष के हवा नही लगती ।
–वक्त की हवा का असर किस पर नही होता ।
–बुराइयो स कोई भी व्यक्ति अछूता नही रह सकता ।
–हर व्यक्ति म एक न एक बुराई तो होती ही है ।
–सगति का प्रभाव अवश्यम्भावी है ।

देखिये—क स १०८६

किण रै आगै जाय रोवा ? १६६५

किसके सामने जाकर रोयें ?

–अपने दर्द का रोना किसके सामने रोयें।

–कौन किसकी विपदा सुनता है। सभी अपनी अपनी मुसीबतो मे खोये हुए हैं।

–जिस व्यक्ति की फरियाद सुनने वाला कोई न हो वह इस कहावत को प्रयोग मे लाता है।

किण रै घर री सोच करा ? १६६६

किस के घर की चिंता करे ?

–अपनी चिंता के आगे कौन किसकी परवाह करता है।

–दूसरा की परेशानियो के प्रति उपेक्षा रखने वाले व्यक्ति की भावना।

किण री तेलण किण रो पळो, बीच मे मांग्यो खळ रो डळो। १६६७

किसकी तेलिन किसका पला, बीच म मागा खली का डला।

देखिये—क स ११६६

किण रो माथो नै किण आगै फोड़ू ? १६६८

किस का सिर और किस के सामने फोड़ू ?

– किस की बला किस के सिर आ पडी।

–खामखा किसी दूसरे की विपदा अपने सिर आ पडे तब।

किण ही रा चांम घासै, किण ही रा दाम घासै। १६६६

किसी का चमडी घिसे तो किसी के दाम घिसे।

–जिसके पास जो है वही उपयोग मे आता है।

–शरीर वाला शरीर स मेहनत करता है, पैसे वाला उसके बदले मे पैसे देता है।

–कोई व्यक्ति शरीर से सहयोग देता है तो कोई पैसे से ?

किणी नै तवा मे दीनै किणी नै काच मे। १७००

किसी को तवे म दिखता है तो किसी को काच मे।

–अपनी अपनी सूझ बूझ और अपनी अपनी दृष्टि।

–हर व्यक्ति की अपनी नजर होती है।

किणी नै बैंगण बायरा किणी नै बैंगण पच्च। १७०१

किसी को बैंगन बुरे, किसी को बैंगन मुफीद।

–एक ही वस्तु किसी के लिए हानिकारक है तो दूसरे के लिए लाभदायक।

–हर व्यक्ति के शरीर की अपनी माग होती है।

–एक ही बात के प्रति किसी की अरुचि हो सकती है तो दूसरे की रुचि।

पूरा दोहा इस प्रकार है

किणी नै बैंगण बायरा, किणी नै बैंगण पच्च।
किणी नै चढै आफरो तो किणी नै चढै मच्च।

किणी रा ढक्या ढकण उघाडणा आछा कोनीं। १७०२

किसी के ढक ढक्कन उघाडना अच्छा नही।

–किसी की छिपी हुई बात जाहिर नही करनी चाहिए।

–अपने मुह से किसी की बदनामी नही करनी चाहिए।

–किसी का भेद प्रकट नही करना चाहिए।

किणी रा देव नै कुण ई जुहारै। १७०३

किसी के देव और कौन पूजा करे ?

–अपने व्यक्ति से कोई दूसरा लाभ उठाये तब।

–अपने द्वारा पुजाये बडे आदमी से कोई अन्य फायदा उठाये तो परिहास म यह कहावत प्रयुक्त होती है।

किणी री छात चवै तो किणी रो छपरो चवै। १७०४

किसी की छत टपकती है तो किसी का छप्पर।

–हर व्यक्ति किसी न किसी दुख म ग्रस्त है।

–हर हाड मास से बने व्यक्ति मे कुछ न कुछ तो कमजोरी या बुराई होती ही है।

किणी री जीभ चालै तो किणी रा हाथ चालै। १७०५

किसी की जीभ चलती है तो किसी के हाथ चलते हैं।

–गाली गलोज करने वाला पिटकर रहता है।

–गाली गलोज करने पर जब सामने वाला उस पर हाथ छोड बैठता है तो बीच-बचाव करने वाले व्यक्ति गाली देने वाले को इस युक्ति से अक्सर समझाने की कोशिश करते हैं।

–गाली सुन कर पीटने वाला व्यक्ति अपनी सफाई म यह तर्क पेश करता है।

–जो गाली देता है वह मार खाता है।

–अपना-अपना दाव।

पाठा कई री जीभ चालै, केई रा हाथ चालै।
किणी रो मूडो चालै किणी रो हाथ।

किणी री रोजी रै ठोकर नीं देणी। १७०६
किसी की रोजी के ठोकर नही लगानी चाहिए।
–किसी की जीविका पर आघात नही करना चाहिए।
–किसी को भी आर्थिक हानि पहुचाना सगत नही।

किणी रै पेट माथै पग नीं देणो। १७०७
किसी के पेट पर पाव नही धरना चाहिए।
–किसी की जीविका म बाधा खडी नही करनी चाहिए।
–पेट भरने की व्यवस्था मे अडचन नही डालनी चाहिए।

किणी रौ घर बळै कोई तापै। १७०८
किसी का घर जले, कोई तपे।
–किसी की भारी हानि से कोई मजे म फायदा उठाये तब।
–किसी एक का नुक्सान होने पर ही दूसरे को लाभ होता है।
–दूसरो की क्षति के प्रति उपेक्षा स्वाभाविक है।
पाठा किणी रौ घर सिळगै ग्रर ऱ्कगा तापै।

किणी रौ ह्वै जाणौ के कर लेणौ। १७०९
किसी का हो जाना या कर लेना।
देखिये—क स १३८३

कित्ती ई कर छानै, अेक दिन आसी कानै। १७१०
कितना ही छिपाओ, एक दिन तो सामने आकर ही रहेगी।
–कोई भी गुप्त बात अत तक छिप कर नही रह सकती।
–छिपा कर रखने से ही हर बात नही छिप सकती।

कितोक सपनौ अर कितोक रात! १७११
कितना सा सपना ग्रौर कितनी सी रात!
–कितनी सी लालसाए ग्रौर कितना सा जीवन।
–जीवन के साथ आखिर सभी लालसाओ का अत होकर रहता है।
–क्षण भगुर जीवन की कल्पनाओ का क्या अस्तित्व!
–अधीर व्यक्ति को कष्ट सहने की प्रेरणा देने के लिए उक्त कहावत का प्रयोग होता है।
–सुख दुख भरा यह जीवन भी सपने से अधिक कुछ भी नही।
पाठा किलरी रात अर कितरौ सपनौ!

किताब रौ कीडौ। १७१२
किताब का कीडा।
–कीडे की तरह रात दिन किताब से चिपटे रहने वाला।
–जो व्यक्ति या विद्यार्थी हरदम किताब पढता रहे।

कितोक दूध घालू के थाळी री कोरां किण खातर बणी।
कितना दुध ड लू कि थाली के किनारे किस लिए बने!
–अत्यधिक पेटू व्यक्ति के लिए।
–जिस व्यक्ति के स्वार्थ या लोभ का कोई अत न हो।

कियां करै जाणै नातै आयोडी वेडणी करै। १७१४
कैसे कर रहा है मानो पुनर्विवाहित चमारिन कर रही हो?
–जरूरत स ज्यादा नखरे करने वाले व्यक्ति के लिए।
–बात-बात पर हरदम मुस्कराने वाले मनुष्य के लिए।

किया देखै जाणै कागलौ नींबोळी कानी देखै? १७१५
कैसे देख रहा है मानो कौआ नीमोली की तरफ देख रहा है!
–किसी चीज की ओर ललचाई हुई दृष्टि से देखने वाले व्यक्ति के लिए।
–जो व्यक्ति नजर चुरा कर इधर उधर ताक-झाक करे।

किया देखै जाणै गैली बजार कानी देखै? १७१६
कैसे देख रहा है मानो बावली बाजार की तरफ देख रही हो।
–किसी ओर अचरज व अज्ञान भरी दृष्टि से देखने वाले व्यक्ति के लिए।
–जो व्यक्ति हर ओर जिज्ञासा भरी नजर से देखे।

किया नाचै जाणै बदोळी री घोडी नाचै! १७१७
कैसे नाच रहा है मानो विवाह की घोडी नाच रही हो!
–ग्रत्यधिक चचल व्यक्ति के लिए।
–बेहद उत्साह से कूद फाद करने वाले मनुष्य के लिए।

किया फिरै जाणै बिगडचोडै ब्याव मे नाई फिरै। १७१८
कैसे भटक रहा है मानो बिगडे हुए विवाह मे नाई भटक रहा हो।
–इधर उधर बेकार भटकने वाले व्यक्ति के लिए।
–काम की असफलता के कारण घबराहट से व्यर्थ दौड भाग करने वाले व्यक्ति के लिए।

किरगाटिया री गळाई रग बदळै। १७१९
गिरगिट की तरह रग बदलता है।
–स्वार्थ के वशीभूत बात-बात म रग बदलने वाला व्यक्ति।
–ग्रत्यधिक अवसरवादी व्यक्ति पर व्यग।

किरगाटिया री दौड बाटका ताई । १७२०
गिरगिट की दौड झाडी तक ।
–जिस व्यक्ति की जितनी पहुच होती है उसका वहीं तक जोर चलता है ।
–छोटे व्यक्ति की छोटी पहुच ।

किरडे वाळो रग । १७२१
गिरगिट वाला रग ।
देखिये– क स १३८२

किराड जितरा ई विराड । १७२२
जितने बनिये उतने ही साझेदार ।
–गावो म कृषि की उपज खरीदने के लिए जितने बनिये शामिल होते उन सब की समान साझेदारी स्वयमेव हो जाती थी । वैसे मौके पर इस कहावत का प्रयोग होता था ।
–व्यक्तियो के अनुसार ही समान हिस्सेदारी ।

किसन करी तो लीला अर म्हे बाजा रुळियार ! १७२३
कृष्ण ने की तो लीला और हम कहलायें लम्पट ।
–एक से कुकर्म के लिए जब लोग अलग अलग राय बनायें ।
–बडे आदमी मे कोई बुराई नही देखना चाहता ।
–बडे व्यक्ति को कौन दोषी ठहराये ?

किसमत रा खेल । १७२४
किस्मत का खेल ।
–भाग्य की लीला ।
–भाग्य का तमाशा ।
–भाग्य कभी एक सा नही रहता ।
–दो व्यक्तियो के सुख दुख मे जब बेहद वैषम्य हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

किसाक बाजा बाजे, किसाक रग लागे ! १७२५
कैसे बाज बजेंगे और कैसा रग लगेगा !
–देखें आगे क्या गुजरती है ?
–भविष्य म न मालूम क्या होने वाला है !
–भविष्य के ठाट बाट का किसे पता !

किसा करमा रा ताळा खुलग्या ! १७२६
कौन से भाग्य के ताले खुल गये !
–ऐसा कौन सा भाग्य चमक गया ।
–गरीब व्यक्ति के भाग्य मे जडे ताले आसानी से नही खुलते

किसा खाड मे पडा ! १७२७
किस गड्ढे मे गिरें !
–जिस व्यक्ति ने नाको दम कर रखा हो उसकी खातिर कहा जायें ?
–आफत के मारे की अतर्वेदना कि वह कैसे अपना बचाव करे ।

किसा नागा नाचे है ! १७२८
कौन स नगे नाच रहे हैं ।
देखिये—क स ७२

किसा नादान गढ़ मे पेठसी ? १७२९
कौन स नादान गढ म घुसेंगे ?
–नादान व्यक्ति बडा काम कैसे कर सकता है ।
–नादान से बडी उम्मीद रखना बेकार है !

किसा भाग लूयीजे है ! १७३०
कौन से भाग्य पुछ रहे हैं !
–कौन-से भाग्य छिन रहे हैं या नोचे जा रहे हैं ।
–कोई किसी के भाग्य को नही छीन सकता ।
–किसी के हाथ इतने समर्थ नही कि किसी के भाग्य को पोछ सके ।

किसा मूडिया चितारा ! १७३१
कौन से मुडायो को याद करें ।
–किस किस मुडे हुए चेलो की गिनती की जाय ।
–न मालूम कितनो को उल्लू बनाया है किसका ध्यान रखें ।

किसा मिया मरग्या अर रोजा घटग्या । १७३२
कौन से मिया मर गये और रोजे घट गये ।
–ऐसी भी क्या कमी पड गई !
–ऐसी भी क्या बात बिगड गई जो सुधारी नही जा सकती ।
–अब भी देखते हैं क्या किया जा सकता है ।

किसा मुसळमाना रा हिन्दू कर दोला ! १७३३
कौन से मुसलमानो के हिन्दू कर दोगे !
देखिये—क स १३५६

किसारी तो कुळाई मे ई रहसी । १७३४

एक जंतु ।
–चोर तो छिपकर ही रहता है ।
–बदमाश या लम्पट इधर उधर मुह छिपाता रहता है ।
–गरीब का गरीबी के अनुरूप ही निवास होता है ।

किसी चोटी काटी है ? १७३५
–कौन सी चोटी काटी है !
देखिये–क स १०८७

किसी जेठ सारू डीकरी जाई ? १७३६
कौन-सी जेठ की खातिर बेटी जनी ?
–कोई किसी के भरोसे नही रहता ।
–हर व्यक्ति अपने बूते पर काम शुरू करता है ।
–अपना जीवन बसर अपने जिम्मे किसी का मुहताज होने से काम नही चलता ।

किसी तोरण छडी लगावणी है ? १७३७
कौन-सी तोरण पर छडी लगानी है ?
–कोई व्यक्ति बहुत ही जल्दी मचाये तब !
–ऐसा भी कौन सा महत्त्वपूर्ण काम अटक रहा है ।

किसी थारी खीर खाई है ? १७३८
कौन सी तेरी खीर खाई है ?
–जब कोई व्यक्ति व्यर्थ का उपकार या एहसान जताये ।
–ऐसा भी तूने मेरा क्या भला किया जो तुझ से दबू !

किसी सांभर सूनी व्हे ! १७३९
कौन सी सांभर सूनी हो रही है !
देखिये–क स १५७८

किसै दूबळै घर ब्याव है ! १७४०
कौन सा दुबले घर विवाह है !
देखिये–क स १५६६

किसै रूंख रै पीड करू ! १७४१
कौन सा वृक्ष काटू !
–किस व्यक्ति के निहोरे करू !
–किस व्यक्ति का सहारा ढूढू !

किसौ आधण उकळै । १७४२
–जो व्यक्ति बेहद उतावली करे उसके लिए ।

किसौ ऊंरियौ जावै हौ ? १७४३
कौन-सा हडिया म डाला जा रहा था ?
–ऐसी भी क्या हानि हो रही थी ।
–ऐसी भी क्या अनहोनी बात घटित हो रही थी ।

किसौ कान मे कवौ जावै ? १७४४
कौन सा कान म निवाला जा रहा है ?
देखिये–क स १६३२

किसौ काम कुमारां मिळग्यौ ? १७४५
कौन सा काम कुम्हारां म मिल गया ?
–ऐसा भी कौन-सा एकदम काम बिगड गया ।
–जिस काम म सुधार की पूरी गुंजाइश हो ।

किसौ कुलडियै गुळ मोरियौ है ? १७४६
कौन सा कुल्हडी म गुड मसला है ?
–ऐसी कौन-सी छिपकर मत्रणा की है ?
–ऐसी भी डरने की क्या जरूरत कोई गुप्त काम तो किया नही ।

किसौ घाल'र खावै ? १७४७
कौन सा डाल कर खा रहा है ।
–सभी अपने अपने घर का खाते हैं ।
–कोई किसी का दिया नही खाता ।

किसौ चोरी रौ माल है ? १७४८
कौन सा चोरी का माल है ?
–चोरी का माल हो तो डरें ।
–किसी की चोरी नही की तो डर किसका !

किसौ तमासौ है ? १७४९
कौन सा तमाशा है ?
–काम है कोई खिलवाड नही ।
–किसी गभीर काम को मजाक म लेने वाले व्यक्ति के लिए ।

किसौ तिरसौ जाय है ? १७५०
कौन-सा प्यासा जा रहा है ?
–इतनी जल्दबाजी की क्या जरूरत कोई प्यासा तो जा नही

रहा।
–किसी की खातिर खामखा की चिंता करने वाले व्यक्ति के लिए।

किसौ थारै बिना खजांनौ खाली रैवै ? १७५१
कौन सा तेरे बगैर खजाना खाली रहता है ?
–अधिक लोभ करने की आवश्यकता नही, तुम्हारे बिना खजाना खाली नही रहेगा।
–यदि कोई कर्मचारी अपने स्वामी या राज्य का खजाना भरने की जरूरत से ज्यादा चेष्टा करे तब।

किसौ ननिरौ है ? १७५२
कौन सा ननिहाल है ?
देखिये—क स. ७८ •

किसौ निवांण नीं निठै ? १७५३
कौन सा तालाब खाली नही होता ?
–संपति का घमंड नही करना चाहिए, वह कभी भी खाली हो सकती है।
–कैसा भी धनवान क्यों न हो अपव्यय करने से धन समाप्त होकर ही रहता है।

किसौ मूतायां मरै ? १७५४
कौन सा बिना पेशाब किये मर रहा है ?
–ऐसा कौन-सा काम है जिसे थोड़ी देर टाला नही जा सकता।
–जो व्यक्ति किसी काम मे बेहद जल्दबाजी जतलाये तब।

किसौ मा रौ दूध लाजै ? १७५५
कौन सा मा का दूध लज्जित हो रहा है ?
–ऐसा भी क्या जरूरी काम है, जिसे न करने से मा का दूध लज्जित हो।
–ऐसा कौन सा शर्मनाक काम किया जिस से लज्जित होने की नौबत आये।

की

कीकर करूं सिणगार आंध्यां आंधौ भरतार ! १७५६
कैसे करू शृंगार, आखो से अंधा भरतार।
–अंधे पति के सामने बनाव शृंगार करना व्यर्थ है।
–गुण ग्राहक के बिना कला प्रदर्शन कोई मान नही रखता।

कीडी माथै पसेरियां क्यूं बावौ ? १७५७
चीटी पर पसेरियां क्यो मार रहे हो ?
–साधारण या छोटे आदमी की अत्यधिक प्रशंसा करने पर यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–क्या इतने एहसान का बोझा लाद रहे हो ?
–क्या अकिंचन व्यक्ति पर भारी प्रहार कर रहे हो ?

कीडी चाली सासरै, नौ मण सुरमौ सार। १७५८
चीटी चली ससुराल, नौ मन सुरमा डाल।
–अत्यधिक शृंगार करने वाली औरत के प्रति व्यंग।
–कोई बदसूरत नारी बहुत ज्यादा बनाव सिंगार करे तब।

कीडी-नगरै लाय लागी। १७५९
चीटी नगर मे आग लगी।
–निहायत गरीब व्यक्तियो पर कोई कहर ढाये तब।
–असहाय आदमियो पर अचानक कोई भारी आफत आ पडे तब।

कीडी नै कण अर हाथी नै मण। १७६०
चीटी को कण और हाथी को मन।
देखिये—क स ११८१

कीडी नै मूत रौ रेलौ ई भारी। १७६१
चीटी को पेशाब की धार भी काफी।
–गरीब व्यक्ति के लिए मामूली मार ही काफी।
–कमजोर मनुष्य के लिए अकिंचन संकट भी पर्याप्त है।
–निर्धन व्यक्ति की क्या बिसात !

कीडी माथै के कटक ? १७६२
चीटी पर क्या चढाई ?
–गरीब या कमजोर व्यक्ति पर हमला नही करना चाहिए।

—असहाय पर कैसा क्रोध ?
—गरीब तो या ही दुख का मारा होता है !

कीडी री खाल काढ़णी । १७६३
चींटी की खाल निकालना ।
—जरूरत से ज्यादा किसी बात की छान बीन करना ।
—किसी बात की ठेठ गहराई तक पहुचने की चेष्टा करना ।

कीडां री नारगी होवैला । १७६४
कीडो की योनि प्राप्त होगी ।
—अत्याचारी या दुष्ट व्यक्ति के लिए शाप ।
—कुकम का नतीजा बुरा ही होता है । कीडा मकोडा की योनि प्राप्त होती है ।

कीडी सचै तीतर खाय पापी रौ धन परळै जाय । १७,५
चींटी सचय करे और तीतर खाय पापी का धन ऐसे ही बह जाये ।
—पापी का धन बुरे कामो म ही नष्ट होता है ।
—पापी की कमाई किसी के काम मे नही आती ।

कीचड मे माटौ फेंक्या आपरै ई छांटा लागै । १७६६
कीचड मे पत्थर फकने से अपने ही छींटे लगते हैं ।
देखिये—क स १४७०

की डोकरिया काम राज कथा सू राजिया ? १७६७
क्या बुढिया को काम राज कथा मे राजिया ?
—राज प्रशासन व सत्ता से बूढी औरतो को क्या वास्ता ।
—छोटे व्यक्ति को बडी बाता की दिलचस्पी नही रखनी चाहिए ।

कीणी न कपडौ सेंत मेंत रौ भरतार । १७६८
न धान न कपडा फालतू का भतार ।
—निठल्ले पति के प्रति व्यग ।
—जो पति कानी कौडी भी घर पर कमा कर नही लाये ।

कीरत हदा कोट्डा, पाडया नाह पडत । १७६९
कीर्ति के गढ कगुरे कभी नही ढहते ।
—यश व कीर्ति के अलावा सब कुछ नश्वर है ।
—मनुष्य के लिए अच्छा काम करके यश प्राप्त करना ही श्रेयस्कर है ।

पूरा दोहा
नाव रहसी ठाकरा, नाणौ नाह रहंत ।
कीरत हदा कोटडा पाडया नाह पडत ।

कीं आणी नीं की जाणी, धूडधांणी । १७७०
कुछ आना नही जाना नही बेकार का झझट ।
—जिस काम को करने पर रच मात्र भी लाभ न हो ।
—व्यर्थ काम के प्रति उपेक्षा ।

कीं काम नीं काज । १७७१
न कुछ काम और न कुछ काज ।
—निठल्ले व्यक्ति के लिए ।
—जहा किसी प्रकार का कोई काम न हो वहा जाना बेकार है ।

कीं गुळ गीलौ अर कीं बाणियौ ढीलौ । १७७२
कुछ तो गुड गीला और कुछ बनिया ढीला ।
—जहा दोनो तरफ कुछ न कुछ त्रुटि हो ।
—यदि दोनो ओर कुछ न कुछ कमी हो तो फिर किसी एक की गलती निकालना व्यर्थ है ।

कीं तौ घोडा रौ ई घटै, कीं सवार रौ ई घटै । १७७३
कुछ तो घोडे का भी घटता है तो कुछ सवार का भी ।
देखिये—क स १३५०

कीं दाणा कोनीं । १७७४
कुछ दाम नही है ।
—जिस व्यक्ति मे कुछ भी दम न हो ।
—जो व्यक्ति एक दम निकम्मा हो ।

कीं धव चीकणा अर कीं कवाडा मोटा । १७७५
कुछ तो लकडी चिकनी और कुछ कुल्हाड बोथे ।
देखिये—क स १३५१

कु

कुग्रा मे नथ पडती के म्हैं जांणस्यू नणद नै ई दी। १७७६
कुए मे नथ गिर गई, मैं समझूगी कि ननद को ही दी।
–हानि या गफलत का व्यर्थ औचित्य खोजना।
–बिना किये किसी पर खामखा का एहसान लादना।
–अपने मन को गलत तरीके से समझाने की चेष्टा करना।

कुआ रौ डेडरियौ। १७७७
कुए का मढक।
–कुए का मेढक अकल्पनीय गहराई के कारण कभी व हर नही निकल सकता। कुए का सीमित दायरा ही उसके लिए समूचा ब्रह्माड है।
–जिस व्यक्ति ने अपने सीमित दायरे के अलावा न कुछ देखा और न कुछ भी अन्यथा अनुभव किया, उसकी दकियानूसी तथा सकीर्ण मनोवृत्ति के प्रति व्यग स्वरूप यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–परपरागत रूढियो के सीमित दायरे मे ग्रसित व्यक्ति।
पाठा : बेरा रौ मीडकौ।

कुअे ई भाग पडी। १७७८
कुए मे ही भाग पडी हुई है।
–जिस जाति समाज, प्रात व देश के समस्त व्यक्ति बेवकूफ, बावले तथा मतिभ्रष्ट हो उन्ह परिहास मे इस उक्ति द्वारा सबोधित किया जाता है।
–किसी भी रूढि परम्परा या कुरीति का अधानुकरण करने वाले व्यक्तियो के लिए।
पाठा कुअे ई भाग रळी।
पूरा दोहा
दुविध्या है अत अटपटी, घट घट माय घडी।
किण किण नैं समझावस्या, कुअ ई भाग पडी।

कुअे मे पडचा कुण ई सूखौ नीं रवै। १७७९
कुए मे गिरने पर कोई भी सूखा नहीं रहता।
–करणी के अनुरूप फल अवश्यम्भावी है।
–जैसी सगति वैसा ही परिणाम।
पाठा . बेरा मे पडचा कुण ई कोरौ नी वचै।

कुअे मे पाणी तौ घणौ ई, काढलै सौ आपरौ। १७८०
कुए मे पानी तो बहुतेरा, निकाले सो अपना।
–दुनिया म पदार्थ तो अपार हैं, पर अपनी मेहनत से जो उपलब्ध हो जाय वह अपना है।
–असीम ज्ञान को जितना हासिल किया जाय केवल वही अपना है।
पाठा बेरा म पाणी तौ अतूट पण काढलै सौ आपरौ।

कुअे री छींया कुअे मे। १७८१
कुए की छाया कुए मे।
–जिस कजूस व्यक्ति का धन या ज्ञान किसी के काम न आये।
–अत्यधिक मेहनत का अकिंचन फल मिले तब।
–जो रहस्य या वेदना बाहर प्रकट न हो।
–जो व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ ही म नितात खोया हुआ हो।

कुअे री माटी कुअे मे ई लागै। १७८२
कुए की मिट्टी कुए म ही लग जाती है।
–जिस कार्य मे लाभ न हो।
–आय के अनुरूप ही खर्च।
–शारीरिक मेहनत से कमाया हुआ पैसा वापस शारीरिक जरूरतो के निमित्त ही खर्च हो जाता है।

कुअे रौ कबूतरौ। १७८३
कुए का कबूतर।
–जिस व्यक्ति का केवल एक आश्रय के अलावा दूसरा कोई सहारा न हो।
–कदीमी ढर्रे के सिवाय जिस व्यक्ति के लिए दूसरे धधे का कोई विकल्प न हो।
–निहायत सकीर्ण मनोवृत्ति से ग्रसित व्यक्ति।
पाठा . बेरा रौ कबूडौ।

कुऔ ऊडौ ज्या पछीता ऊचो। १७८४
कुआ गहरा जितनी ही दीवारें ऊची।
–जो व्यक्ति एकदम समान लक्षण के हो।

–कोई किसी से कम नही।
पाठा वेरी ऊडी जित्ती ई पछीता ऊची।

कुगाव मे इरडियौ ई रूख। १७८५
ऊपर गाव म एरड भी पेड।
–*जिस स्थान पर विद्वानो का नितात अभाव हो वहा मामूली पढा लिखा व्यक्ति भी विद्वान माना जाता है।*
–अनभिज्ञता का सहज परिणाम।
–अज्ञान की विडम्बना।

कुजात मनायां माथै चढै। १७८६
निकृष्ट व्यक्ति मनाने स सिर चढता है।
–ओछा व्यक्ति खुशामद या आजीजी करने पर ज्यादा ऐंठता है।
–हीन व्यक्ति किसी भी तरह अपनी हीनता नही छोडता।

कुटिया मे काग पडै। १७८७
कुटिया मे कौए पडत हैं।
–नितात निर्जन व सुनसान जगह के लिए।
–निहायत गरीब असहाय तथा निराश व्यक्ति के लिए।
पाठा घर म कागला पडै।
  भूवै काग पडै।

कुठौड पीड अर सुसरौजी वेद। १७८८
कुठौर पीडा और श्वसुर वैद्य।
–शरीर के गुप्तागो के आस पास दर्द हो तथा गाव मे एकमात्र श्वसुर ही वैद्य हो तो लज्जावश श्वसुर को वह जगह उघाड कर नही बताई जा सकती और न दर्द को आसानी से भुलाया जा सकता है।
–असमजस की दुविधा-जनक मन स्थिति।
–कोई आत्मीय जन या घनिष्ठ मित्र धोखा कर जाय तब।
–घर की लज्जा को कैसे उघाडा जाय?
पाठा कुठौड खाई अर सुसरौ वेद।

कुण कह्यो बाई बांवळिये चढणै। १७८९
किसने कहा बहिन बबूल पर चढना।
–अपनी मर्जी से कोई औंधा या उलटा काम करे तब।
–अपने द्वारा किये गलत काम की जिम्मेवारी अपनी ही होती है।
–अपने हाथो किये हुरे काम का परिणाम स्वय ही को भोगना पडता है।

कुण किण रै आवै, अै तौ दाणा पांणी लावै। १७९०
कौन किसके घर आता है, यह तो दाना पानी लाता है।
–अन्नजल का योग ही मुख्य बात है।
–अन्नोदक का योग जुडे बिना कोई किसी क यहा नही जाता।
–आतिथ्य सत्कार के प्रति विनम्र अभिव्यक्ति।
पाठा कुण किणी रै आवै जावै, दाणौ पाणी लोच्या लावै।

कुण जाणै कठै बीजळी पडै। १७९१
कौन जाने कहा बिजली गिरे।
–अकस्मात कब किस पर वज्रपात हो जाय।
–अप्रत्याशित अनर्थ होन पर इस कहावत का प्रयाग होता है।

कुण जाणै रांवण किण दिस गियौ? १७९२
कौन जान रावण किस दिशा म गया।
–*कैसे भी अपूर्व शक्तिशाली आततायी को एक दिन समाप्त होना पडता है।*
–अन्यायी का विनाश अवश्यम्भावी है।
–मरने पर कैसे भी अत्याचारी को हमेशा के लिए विनष्ट होना पडता है।

कुण पीळा चावळ दीन्हा। १७९३
किसन पीले चावल दिये।
–खामखा दखल जमाने वाले व्यक्ति के लिए।
–अपन मर्जी से विकट परिस्थिति म फसने वाले को परिहास मे यह कहावत सुनाई जाती है।

कुण सी बाडी रौ बथवौ। १७९४
कौन सी बगिया का बथवा है।
बथवा=पालक के समान सब्जी विशेष।
देखिये—क स १६८८

कुण हाथी मारै, कुण दांत उपाडै? १७९५
कौन हाथी मारे कौन दात निकाले?
–*बेहद कठिन काम म हाथ डालने का साहस कौन करे?*
–मुश्किल काम की बेकार जोखिम कौन ओढे?

कुतरौ बडो किताब, लाठा ई लटका करै। १७९६
डडा वडा पुराण, बडो वडो का तोडे मान।
-डडा सबसे बडा उपदेश है।
-डडे के जोर का कौन लोहा नहीं मानता।

कुतडौ मोदै के गाडो म्हारै पांण चालै। १७९७
कुत्ते का अभिमान कि गाडी मेरे बूते पर ही चलती है।
-अयोग्य व्यक्ति के व्यर्थ गुमान पर व्यग।
-खामखा के अहकारी पर कटाक्ष।
पाठा॰ कुत्तौ जाणै के गाडो उणरै पाण ई चालै।

कुत्ता आळी पूछ। १७९८
कुत्ते वाली पूछ।
-लाख समझाने पर भी जो व्यक्ति अपनी बुरी आदत न छोडे।
-कुटिल व्यक्ति कभी सीधा नही हो सकता।

कुत्ता ई खीर को खावैला नीं। १७९९
कुत्ते भी खीर नही खायेंगे।
-कोई अदने से अदना आदमी भी नही पूछेगा।
-किसी खास आदमी से भिडने पर भारी क्षति पहुचाने की धमकी।
-बात इस कदर बिगड जायेगी कि फिर उसके सुधारने की कोई गुजाइश ही नही रहेगी।

कुत्तो कूटतो डोलै। १८००
कुत्ते पीटते हुए भटक रहा है।
-एकदम निठल्ले व्यक्ति के लिए।
-जिस व्यक्ति के जिम्मे किसी तरह का कोई काम न हो।

कुत्ता जाणै अर चमडा जाणै। १८०१
कुत्ते जानें और चमडा जाने।
-अपनी जिम्मेवारी दूसरे के गले मे डाल कर यह कहना कि अब वही खीचे और ओढे।
-दूसरो की आफत व चिंता से अपने को दूर रखने की सतर्कता।
-स्वय संकट से बचकर दूसरे को उलझाते समय इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

कुत्ता तौ पींडी इज पकडै। १८०२
कुत्ते तो पिंडली ही पकडते हैं।
-दुष्ट आदमी तो हमेशा हानि ही पहुचाते हैं।
-कुटिल व्यक्ति अपनी कुटिलता नही छोड सकता।

कुत्ता थारी काण नीं, थारा धणी री कांण है। १८०३
कुत्ते तेरा लिहाज नही, तेरे स्वामी का लिहाज है।
-स्वामी की प्रतिष्ठा के कारण ही लोग कुत्ते का भोंकना बर्दाश्त करते हैं।
-जब कोई अदना व्यक्ति अपने स्वामी के बूते पर हेकडी करे तब उसे सबोधित करके यह कहावत प्रयुक्त होती है।
पाठा॰ कुत्ता थारी काण के थारा धणी री काण।

कुत्ता नै टुकडो न्हाक्तां तो क्यू भुसतो? १८०४
कुत्ते को टुकडा डालते तो वह क्यो भोंकता?
-रिश्वत का टुकडा डालने से मुह बद हो जाता है।
-ओछे व्यक्ति को नगण्य स्वार्थ से खुश किया जा सकता है।

कुत्ता नै हाडकी रो ई चाव। १८०५
कुत्ते को हड्डी का ही चाव।
-ओछे व्यक्ति की ओछी ही रुचि।
-अदने आदमी का अदना ही स्वार्थ।
-लम्पट मनुष्य को व्यभिचार ही की लालसा।

कुत्ता फजीतो। १८०६
कुत्ते वाला झगडा।
-खामखा की लडाई।
-बिना स्वार्थ की कलह।

कुत्ता री कपाळी। १८०७
कुत्ते की खोपडी।
-जो व्यक्ति हरदम व्यर्थ की बकवास करे।
-जो मनुष्य बिना बात किसी का सिर चाटता रहे।
-जो आदमी सदैव अपने ही स्वार्थ का रोना रोये।
पाठा॰ कुत्ता रो मगज

कुत्ता री खाल ओढी। १८०८
कुत्ते की खाल ओढ रखी है।
-जो व्यक्ति सामाजिक मर्यादा का कतई खयाल न रखे।

–निहायत बेशर्म व्यक्ति के लिए।

कुत्ता रोळ। १८०९
कुत्तों का रेल।
–निपट छिछोरपन।
–खामख्वा की कलह।

कुत्ता री टोळी में आटा रौ दीयौ। १८१०
कुत्तों के समूह में आटे का दीपक।
–कुत्तों के बीच आटे का दीपक रखा जाय तो वह कितनी देर तक टिकेगा? वे निर्विलम्ब उसे खा जायेंगे।
–कुत्तों की टोली में आटे के दीये की क्या सार्थकता?
–लम्पट व्यक्तियों के बीच पतिव्रता औरत की क्या सुरक्षा?
–स्वार्थ की पूर्ति करने वाली वस्तु को कौन छोड़ता है?

कुत्ता रै पड़ौस मूं किसौ पोहरौ लागै? १८११
कुत्तों के पड़ोस से कौन-सा पहरा लगता है?
–अयोग्य या अक्षम व्यक्ति का भरोसा करना व्यर्थ है।
–विश्वसनीय व्यक्ति पर ही विश्वास करना चाहिए।

कुत्ता रै भूकियां भला कतारियां कद दबै। १८१२
कुत्तों के भौंकने पर भला कारवां कब रुकता है।
–कुत्तों के भौंकने की रचमात्र भी परवाह किये बगैर कारवां तो अपनी धुन में चलता ही रहता है।
–निंदा करने वालों के डर से भला समझदार व्यक्ति अपने आदर्श के पथ पर क्या रुकने लगा?
–बकने वाले बकते रहते हैं और धुन का धनी अपने पथ पर आगे बढ़ता रहता है।

कुत्ता वाळौ चूरमौ। १८१३
कुत्तों वाला चूरमा।
चूरमा=घी तेल, खांड या गुड़ से मसली हुई रोटी का व्यंजन।
–आपसी कलह का दुष्परिणाम।
–वामता के झगड़े से किसी के कुछ भी हाथ नहीं लगता।

कुत्तां रै सम्प व्है तौ गंगाजी न्हाय आवै। १८१४
कुत्तों में मेल हो तो गंगाजी नहा आयें।
–तज मार्ग की क्षमता होने पर भी केवल झगड़ालू वृत्ति के कारण कुत्ते गंगा-स्नान के लिए एक साथ नहीं जा सकते।
–पारस्परिक फूट के कारण कभी किसी का कल्याण नहीं हो सकता।

कुत्ती आळा कूकरिया है। १८१५
कुत्ती वाले पिल्ले हैं।
–अधिक संतान व गरीबी के कारण बच्चों का पालन पोषण दूभर होता है।
–कुत्ती के पिल्ले छोटे होने तक सुहाने लगते हैं और बड़े होने पर बेडौल हो जाते हैं। उसी प्रकार जिस औरत के बच्चे उम्र की बढ़ती के साथ बदसूरत हो जायें।

कुत्ती क्यूं भुसै के टुकडां री खातर। १८१६
कुत्ती क्या भौंकती है कि टुकड़ों की खातिर।
–मनुष्य समाज में सर्वत्र स्वार्थ ही का रोना है।
–पेट की आग के सामने सभी विवश हैं।
–गुजर बसर के लिए हर व्यक्ति को अदने से अदना काम करने की खातिर मजबूर होना पड़ता है।

कुत्ती ई गी नै पटियौ ई लेगी। १८१७
कुत्ती गई और पट्टा भी ले भागी।
–बदचलन औरत घर से भागते समय साथ कुछ धन माल ले जाय तब।
–दुहरा नुकसान।
–जिस व्यक्ति के कारण किसी को दुहरी क्षति हो तब।

कुत्ती जाया कूकरिया अेकं डौरं उतरिया। १८१८
कुतिया के पिल्ले सभी एक समान।
–जिस कुटुम्ब के सभी सदस्य एक एक से बढ़ कर बदचलन या दुर्गुणी हो।
–एक से चरित्रहीन व्यक्तियों के लिए।

कुत्ती वाळा बेत। १८१९
कुत्ती वाली संतान।
देखिये—क स १८१२

कुत्तं आळी जूण पूरी करै। १८२०
कुत्ते वाली योनि पूरी कर रहा है।
–केवल पेट की खातिर गुजर बसर करने वाले व्यक्ति के लिए।

–निहायत बेशर्म की जिंदगी बसर करने वाले व्यक्तियों के लिए।

कुत्ती आळी नींद। १८२१

कुत्ते वाली नींद।

–जो व्यक्ति सोते हुए भी सजग रहे।

–बेहद सतर्क मनुष्य के लिए।

कुत्ते नै अर छोटै टाबर नै धुरकारियोड़ो ई भलो। १८२२

कुत्ते और छोटे बच्चे के लिए दुत्कार ही भली।

–कुत्ते और छोटे बच्चे को मुह लगाना उचित नही।

–छोटा बच्चा और कुत्ता मुह लगाने पर हानि ही पहुचाता है।

कुत्तै नै मूंडै लगावणो आछो कोनीं। १८२३

कुत्ते को मुह लगाना उचित नही।

–मुह लगाने पर कुत्ता मुह चाटता ही है।

–ओछे व्यक्ति से मित्रता करना वाछित नही।

कुत्ते रा कांम गधेड़ा कीना, खाधै मूसळ बाजै। १८२४

कुत्ते का काम गधे ने किया, खूब पडी मूसल की मार।

सदर्भ कथा : किसी एक गूजर के पास एक गधा और कुत्ता था। कुत्ता रात को पहरा देता। चोर आने पर भोंकता। सारे दिन मजे मे सोना, दूध पीता और मौज करता। गधा दिन भर भार ढोता और रात को सूखी घास चरता। गधे को आखिर कुत्ते से ईर्ष्या हो गई। क्या पहरा देने तथा भोंकने की इतनी कीमत ? कुत्ते ने उसे काफी समझाया कि अपना-अपना काम करना ही शोभनीय है। देखादेखी नकल करने का परिणाम अच्छा नही होता। पर गधा तो गधा ही था। उसने जबरन कुत्ते वाली जिम्मेवारी स्वय ही ओढली। दिन भर की थकावट के फलस्वरूप गूजर गहरी नीद मे सोया था। अकस्मात् गधे का रेंगना सुनकर उसकी नीद उचट गई। उसने फिर सोने की कोशिश की किन्तु गधे ने तो रेंगना शुरू किया सो रुका ही नही। आखिर गूजर ने तग आकर मूसल उठाया और गधे पर दनादन प्रहार करने लगा। कुत्ते की जिम्मेवारी ओढने का कैसा दुष्परिणाम हुआ !

–अंधानुकरण हमेशा घातक होता है।

कुत्ते री पूछ दस बरस जमीं में राखो पण निकाळो तो वळै आंटी री आंटी। १८२५

कुत्ते की पूछ दस बरस जमीन मे गाडकर रखी पर जब फिर से निकाली तो टेढी की टेढी।

–जो भ्रष्ट व्यक्ति अपनी बुरी लत कभी न छोड़े।

– दुष्ट व्यक्ति का स्वभाव जीवन पर्यन्त नही बदलता।

कुत्ते री मौत मरसो। १८२६

कुत्ते की मौत मरेगा।

–बुरी तरह बेमौत मरना।

–आखिर दुराचारी घिनौनी मौत मर कर रहता है।

कुत्ते रै मूंडै जांणै कोई खळ पड़ी। १८२७

कुत्ते के मुह मे मानो खली पडी।

–खली के स्वाद मे कुत्ता भोंकना भूल जाता है। इसी प्रकार दुष्ट व्यक्ति भी स्वार्थ पूर्ति होने पर चुप हो जाता है।

–स्वार्थ-पूर्ति होने पर किसी व्यक्ति का विरोधी-स्वर दब जाये तो यह कहावत प्रयुक्त होती है।

कुत्ते रो सिर खल्लै जोग। १८२८

कुत्ते का सिर जूते के योग्य।

–हीन व्यक्ति प्रताडना के योग्य होता है।

–अधम मनुष्य का उसकी अधमता के अनुरूप ही तिरस्कार होता है।

कुत्तो कपास रो कांई करै ? १८२९

कुत्ता कपास का क्या करे ?

–अपात्र को श्रेष्ठ वस्तुओ से क्या सरोकार ?

–जो वस्तु जिसके काम की होती है उसी के लिए उसकी उपादेयता है।

कुत्तो काच देख्यो अर भुस-भुस मूवो। १८३०

कुत्ते ने काच देखा और भोंक-भोंक कर मर गया।

–अनभिज्ञ व्यक्ति के लिए कोई भी वस्तु उपादेय न होकर हानिप्रद ही साबित होती है।

–मूर्ख व्यक्ति स्वय अपने लिए ही घातक सिद्ध होता है।

–अज्ञान का ही दूसरा नाम मृत्यु है।

–अज्ञानी स्वय अपने स्वरूप को भी नही पहिचान पाता।

कुत्तो गाडै री छींया हालै, जांणै म्हारै जोर सू ई चालै।

कुत्ता गाडी के नीचे चलता है, अरे यह तो मेरे बूते पर ही

कुरोज रोवणो । १८५४
बुरा रोना ।
–बिना मतलब का रोना पीटना ।
–खामखा का रोना धोना ।

कुलखणी राड अर मुळकणो मादो । १८५५
कुलटा पत्नी और ढुलमुल पति ।
मुळकणो=हर वक्त बिना मतलब मुस्कराते रहना ।
–कुलटा पत्नी को ढुलमुल पति मिल जाय तो फिर वह किसकी परवाह करे ।
–किसी भी तरह का उल्टा योग जुडने का परिणाम बुरा ही होता है ।

कुलडियो भरयो अर पाधरो पीहर । १८५६
कुल्हड भरा और सीधी मायक ।
–जो औरत ससुराल की अपेक्षा मायके का ज्यादा ध्यान रखे ।
–निपट स्वार्थी व्यक्ति के लिए ।

कुलडी मे कितराक दिन गुळ गाळीजै । १८५७
कुल्हड मे कितने दिन तक गुड गलाया जा सकेगा ।
–ज्यादा दिन तक किसी बडी बात को छिपाया नही जा सकता ।
–प्रकट होने वाली बात आखिर प्रकट होकर ही रहती है ।
पाठा कुलडी म गुळ कोनी गळै ।

कुळ बिना लाज नीं, जू बिना खाज नी । १८५८
कुल बिना लाज नही, जू बिना खाज नही ।
–कुलीन औरत लज्जाशील होती है ।
–जैसा आधार वैसा ही परिणाम ।

कुळ मे सपूत अेक ही घणो । १८५९
कुल म सुपुत्र एक ही काफी ।
–परिवार के सदस्यो की गणना कोई माने नही रखती, चरित्र मान रखता है ।
–सख्या की अपेक्षा गुण का महत्त्व ज्यादा है ।
–सज्जन व्यक्ति कइयो का भला कर सकता है ।

कुळ मे कागियो जलमियो । १८६०
कुल मे कुलागार जन्मा ।
कागियो=अनाज के दानो को विकीर्ण करने वाला रोग विशेष जिससे दाने गलकर काले पड जाते हैं । इस रोग स विकीर्ण दाने न बान के काम आते और न खाने के ।
–जो व्यक्ति कुटुम्ब के लिए घातक हो ।
–दुश्चरित्र व्यक्ति के लिए ।

कुलगिया रो इज काको । १८६१
शैतानो का ही ताऊ ।
–जो व्यक्ति निहायत बदमाश हो ।
–जिस व्यक्ति के मारे नाको दम हो गया हो ।

कुलालची बेमोत मरै । १८६२
कुलालची बेमौत मरता है ।
–लालच का अत सदैव बुरा होता है ।
–लालच बुरी बला ।

कुवाडी सू गाभा धोवै अर करम नै दोसण दे । १८६३
कुल्हाडी से कपडे धोये और भाग्य को दोष दे ।
–गलत काम का परिणाम बुरा ही होता है, उस भाग्य पर नही थोपा जा सकता ।
–नुकसानदेह काम स लाभ की आशा रखना व्यर्थ है ।

कुवारी धीवडी नै सो घर नै सो वर । १८६४
कुवारी लडकी को सो घर और सो वर ।
देखिये—क स १३६९
पाठा कुवारी धीवडी रै सो वर ।

कुवारी राड कद होवै ? १८६५
कुवारी लडकी विधवा कब होती है ?
–राजस्थान म अकाल तो निरतर पडते ही रहत है पर एक भी वर्षा न हो ऐसा कभी नही होता । यहा के निवासी अक्सर इस कहावत का प्रयोग करते हैं कि भगवान एक बरसात तो करेगा ही कुवारी लडकी को वैधव्य सोपना तो स्वय भगवान के भी वश की बात नही ।
–सर्वथा अनहोनी बात क्योकर घटित हो सकती है ।

कवारी रैगी डूमणी, घाल पटा मे तेल । १८६६
कुवारी रह गई डोमिन, डाल बालो म तेल ।
–जिस किसी व्यक्ति की आशा एकदम निराशा म बदल जाय ।

–किसी की उमगा पर पानी फिर जाय तब।

कुसळा आया धाडवी धाडा लारै धूळ। १८६७
लौटे कुशल लुटेरे लूट को लानत हजार।
–डींग मार कर साहस का काम न करने वाला व्यक्ति जब सकुशल घर लौट आये तब परिहास में इस कहावत का प्रयोग होता है।
–जोखिम से बचकर जीवित लौट आना ही गनीमत है।
–जान बची और लाखों पाये घर के बुद्धू घर को आये।

कू

कूआ खिणाया बावडी छोड गिया परदेस। १८६८
कुआ खुदाया बावडी छोड गये परदेश।
–आशाओं का सब्ज बाग दिखाकर कोई जुदा हो जाय तब।
–ठाट फैला कर जो व्यक्ति परदेश चला जाय।
–सब ऐश आराम व ठाट बाट को छोड कर इस दुनिया से जाना ही पडता है।

कूआ स कूओ कोनीं मिळ पण आदमी न आदमी सू मिळणी ई पड। १८६९
कुए से कुआ नही मिलता पर आदमी को आदमी से मिलना ही पडता है।
–कुआ कुए के काम नही आता पर मनुष्य तो मनुष्य के काम आता ही है।
–कुए की भाति कोई भी मनुष्य अपने मे डूबा नही रह सकता।

कूकडा नै कलगी रो गुमान। १८७०
मुर्गे को कलगी का गुमान।
–हीन व्यक्ति को छोटे पद का भी बडा भारी गुमान होता है।

–क्षुद्र व्यक्ति का छिछला अहकार।

कूकडा री लडाई मे कबूडा नै लाभ। १८७१
मुर्गो की लडाई म कबूतरो को फायदा।
–बडे आदमियो की अनबन छोटो के लिए हितकारी।
–किसी का अनर्थ किसी के लिए कल्याणकारी।

कूकडी मादी भैंस उवारणै कीधी। १८७२
मुर्गी बीमार और भैंस का बलिदान।
–छोटी बात पर जो व्यक्ति बहुत बडा आडम्बर करे।
–अकिंचन सकट के लिए भारी परित्याग।

कूकडी रै ताकळी रो डांम ई मारी। १८७३
मुर्गी के लिए तकली का दाग ही काफी।
–गरीब के लिए थोडी मार भी ज्यादा होती है।
–छोटे व्यक्ति के लिए मामूली क्षति भी पर्याप्त है।
–क्षमता के अनुरूप ही दड वहन होता है।

कूकडै नै बिखोरै इज लाभ। १८७४
मुर्गे को कुरेदने म ही फायदा।
–मुर्गा पजों से जमीन कुरेद कुरेद कर कीडे मकोडो के साथ अनाज के दाने व झूठन चोच से खाता रहता है अतएव इसे निरतर कुरेदने म ही लाभ है।
–जिस व्यक्ति को लूट खसोट म ही लाभ हो उसके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।
–दूसरो की फूट या झगडे से जो व्यक्ति नाजायज फायदा उठाना चाहे।

कूकडो नीं व्है तो काइ झांझरको ई नीं व्है ! १८७५
मुर्गा न हो तो क्या सवेरा ही न हो !
–सूर्योदय होने से पूर्व ही मुर्गा बाग देना शुरू कर देता है। इसका यह तात्पर्य तो नही कि मुर्गा बाग देता है तभी सूर्य उदय होता है। इसी प्रकार मुर्गे के सदृश दभी व्यक्ति भी ऐसा ही सोचता है कि उसी के फलस्वरूप दुनिया के सारे कार्य घटित होते हैं।
–अहकारी व्यक्ति की भ्रात धारणा पर कटाक्ष।

कूकर रै सग खर्लै पाडी आज नहीं तो काल हाडी। १८७६
कुत्ते के सग पाडी खेले आज नही तो कल हुई भेंट।
–दुष्ट व्यक्ति की मित्रता का भयानक परिणाम होता है।

–दुष्ट को संतति का दुष्परिणाम अवश्यंभावी है।

कूख री दाझ सहीजै पण पेडू री दाझ नीं सहीजै। १८७७
कोख की दाह सहन हो सकती है पर पडू [उपस्थ] की दाह सहन नहीं हो सकती।
–संतान की मृत्यु सहन हो सकती है पर पति की मृत्यु सहन नहीं हो सकती।
–संतान की मृत्यु बर्दाश्त की जा सकती है पर पेट की ज्वाला बर्दाश्त नहीं की जा सकती।
–प्रसव वेदना सहन हो सकती है पर काम वासना सहन नहीं हो सकती।
पाठा कूख री दाझ सहीजै पण पेट री दाझ नी सहीजै।

कूख सू जायोडो सरप ई मा नै वाल्हो लागै। १८७८
कोख से जन्मा साप भी मा को प्रिय होता है।
–मा की कोख से बदमाश, लफगा, दुष्ट व शैतान ही क्या यदि साप भी जन्मे तो वह उसे प्यार करती है।
–मा की ममता का कोई अन्त नहीं।
–कैसे भी कुटिल अधम, बदसूरत व अस्वस्थ बच्चे को मा उसी ममता से दुलार करती है।

कूड, आटै लूण चालै। १८७९
झूठ आटे मे नमक जितना ही चलता है।
–अनुपात से अधिक झूठ कड़वा होता है।
–जरूरत से ज्यादा झूठ छिपा नहीं रह सकता।

कूड रा पग काचा व्है। १८८०
झूठ के पाव कच्चे होते हैं।
–झूठ बोलने वाले के पाव थर-थर कांपने लगते हैं।
–झूठे व्यक्ति मे साहस की कमी होती है।

कूड रा पग तीन व्है। १८८१
झूठ के पाव तीन होते हैं।
–झूठ तीन कदम से अधिक नहीं चल सकता।
–झूठ तुरत पकड़ म आ जाता है।

कूड री आव थोडी। १८८२
झूठ की आयु कम होती है।
–झूठ ज्यादा दिन तक टिक नहीं सकता।
–झूठ का निर्विलम्ब पता चल जाता है।

कूड-साच म चार आगळ रो आतरो। १८८३
झूठ सच म चार अंगुल की दूरी।
–कान व आख म चार अंगुल का फासला।
–कानो से सुनी हुई बात झूठ और आखो से देखी हुई बात सच होती है।

कूडिये नै तरवार वाळो सोदो। १८८४
कुप्पा और तलवार वाला सोदा।
सदर्भ-कथा . दो बराबर के ठगो की यह लोक कथा राजस्थान म खूब प्रचलित है। एक ठग तलवार को बेचने क लिए घर से निकला। रास्ते म उसे दूसरा ठग मिल गया। जो उसी की तरह घर से घी बेचने के लिए निकला था। दोनो एक दूसरे स अपरिचित थे। तलवार वाले ठग न खुशी खुशी तलवार के बदले म घी से भरा कुप्पा ल लिया। पर घर जाते ही सारा भेद खुल गया। घी वाले कुप्पे म केवल ऊपर ऊपर ही घी था और नीचे सारा गोबर। कुप्पे वाले न खुशी खुशी घर जाकर तलवार खोली तो मूठ के अलावा नीचे केवल करील की लकड़ी थी।
–बराबर की ठगाई।

कूडिये रै खडखडाटै सू डरै वै चिडिया दूजी। १८८५
कुप्पे की खडखडाट से डरें वे चिड़िया दूसरी।
–निर्लज्ज व्यक्ति छोटी मोटी निंदा की परवाह नहीं करता।
–स्वार्थ से बहरे व्यक्ति को विरोध का स्वर सुनाई नहीं देता।
–नकटाई सर्वथा बहरी होती है।

कूतरो काच री पीड मरै, धणी नै सिकार जोईजै। १८८६
कुत्ता गुदा की पीड मरता है और मालिक को शिकार चाहिए।
–निपट स्वार्थी मनुष्य दूसरो के दुख को सर्वथा अनदेखा कर देता है।
–अपने सुख की खातिर जो व्यक्ति दूसरो के कष्ट की तनिक भी परवाह नहीं करे तब।

कूतरो लाय मे ई नीं बळै। १८८७
कुत्ता आग की लपटो म भी नहीं जलता।
–जो चालाक व्यक्ति हर आफत से बच कर निकल जाय।
–धूर्त व्यक्ति किसी भी संकट मे निकल भागता है।

कूदिये न कुअै, खेलियै न जुअै। १८८८

ये न कुए, खेलिये न जुए।
ए के ऊपर से कूदना और जूआ खेलना दोनो ही घातक
।
पीहत की बात।

ी पेड़ खजूर सू, रांम करै सौ होय। १८८९
 पेड खजूर से, राम करे सो होय।
ोखिम का काम कर तो डाला अब जो होगा सो होगा।
ो व्यक्ति शक्ति, क्षमता व साहस के परे जानबूझ कर
ाफत का काम करे।
ोखिम के काम का दुष्परिणाम सोचे बिना जो मूर्ख
यक्ति उस मे कूद पडे।

ा करसा खाय, गेवू जीमै बाणिया। १८९०
ा खाये किसान गेहू खाये वनिया।
ा=एक अपौष्टिक सस्ता अनाज। गरीब किसान उसकी
टया बना कर खाता है।
ार्थिक व्यवस्था की विडम्बना कि अपने पसीने की मेहनत
ा गेहू पैदा करने वाले गरीब किसान को कूरा खाने के
लेए मजबूर होना पडता है। और इसके विपरीत हाट
ार आराम से बैठा वनिया गेहूं की रोटी खाता है।
ऋण से बढकर कोई दूसरी मजबूरी नहीं होती।
ठा: कूरा करसा खाय, गवू अरोगै बाणिया।

कू नै कन्या। १८९१
ुम और कन्या।
जिस गरीब बाप के पास कुकुम व कन्या के अलावा एक
कौडी भी दहेज देने को न हो, वह अपनी विवशता इस
कहावत के द्वारा प्रकट करता है।
बाप की असहाय गरीबी का चित्रण।

कू रा पगल्या। १८९२
कुम के चरण।
खुशामद के बहाने व्यग भरे बोल। जब कोई व्यक्ति बार-
बार मनाने पर भी न माने और वापस जाने को उतावली
प्रकट करे तब उसे लक्षित करके यह कहावत प्रयुक्त होती
है कि यह घूम रास्ता सामने है, कुकुम के चरण अंकित
करते हुए बखुशी पधारिये।

ुजड़ै रो ऊंट मरै अर तेली भद्दर होवै। १८९३
कुंजड़े का ऊट मरे और तेली सिर मुडाये।
–जो व्यक्ति कृत्रिम हमदर्दी प्रकट करे।
–सहानुभूति का झूठा दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए।

कुजड़ो ऊंट रो पेट भूखो नीं रैवण देवै तौ मोर ई कोरा नीं रैवण दे। १८९४
कुजडा ऊट का पेट भूखा नही रहने देता तो उसकी पीठ भी खाली नही रहने देता।
–जो व्यक्ति मजदूरी की एवज मे पूरा काम ले।
–पैसो के वदले पूरी मेहनत कराने वाले व्यक्ति के लिए।

के

केई आया नै केई जाई परा। १८९५
कई आये और कई चले जायेंगे।
–मृत्यु के सामने न पैसे वाले का जोर चलता है और न सत्ताधारी का। बडे बडे राव-उमराव आये और चले गये, फिर अहकार या अन्याय करना निरर्थक है।
–इस नश्वर दुनिया मे कोई शाश्वत रूप से नही टिक सकता।

के कड़ बैठे ऊंट? १८९६
किस करवट बैठे ऊट?
संदर्भ-कथा: एक मालिन और कुम्हारिन ने मिलकर एक ऊंट किराये किया। बोरे की एक बाजू मालिन की हरी सब्जिया भरी थी। तथा दूसरी तरफ मिट्टी के बर्तन। राह मे गर्दन टेढी करके ऊंट मालिन की सब्जिया खाने लगा तो कुम्हारिन होठो ही होठो मे मुस्कराई। और यह सोचकर मन ही मन खुश हुई कि उसका धंधा सर्वथा जोखिम-रहित है। मालिन उसके मन की बात तुरत ताड गई। बोली — इतनी जल्दी खुश होने जैसी कोई बात नही। देखें आगे ऊंट किस करवट बैठता है? सचमुच

थोडी दूर जाने पर मालिन की बात साफ प्रमाणित हो गई। ऊट नीचे बैठते ही जमीन पर लोटने लगा। मिट्टी के सारे वर्तन चकनाचूर हो गये। अब मालिन के हसने की बारी थी। उसकी हसी पर नजर पडते ही कुम्हारिन फूट फूट कर रोने लगी।
–अगले एक क्षण का भी पता नही कि किस पर क्या गुजरने वाली है।
–समय रूपी ऊट न जाने किस करवट बैठे ?
पाठा के बेरौ ऊट के कड बैठे ?

केई दिन सासू रा होवै, स्यू केई दिन बहूडी रा पिण होसी।
कई दिन सास के होते है उसी तरह कई दिन बहू के भी होंगे। १८९७
–सत्ता व शासन का चक्र बदलता ही रहता है।
–सभी दिन एक से नही रहते।

केई बाया रै बिलिया रौ मेल खायोडौ। १८९८
कई औरतो के चूडे का मैल खाया हुआ।
–आटा गोदते समय तथा रोटी बनाते समय चूडियो के माध्यम से औरतो के शरीर का मैल आटे मे घुलता रहता है।
–अत्यधिक अनुभवशील व्यक्ति के लिए।
–घुमक्कड व्यक्ति के लिए।
–इस तरह के अनुभवी व घुमक्कड व्यक्ति को भूल से ठगने की चेष्टा करने पर जवाब मिलता है कि उसने खूब दुनिया देखी है, या आसानी से ठगाया नही जा सकता।

के कहू कह्यौ ना जाय, नौ भैंस अर दो रोटी कुत्ती लिया जाय। १८९९
क्या कहू कहा नही जाय, नौ भैंस और दो रोटी कुत्ती लेकर जाय।
सदर्भ-कथा : एक गूजर अपनी नौ भैसियो को बेचकर उसकी समस्त राशि गमछे मे बाध कर अपने घर लौट रहा था। उस रकम के साथ लोगो को वहम न हो इस कारण दोना ओर दो मोटे मोटे टिक्कड बधे हुए थे। रास्ते मे एक तालाब के किनारे गमछा रखकर वह पानी पीने के लिए कुछ गहरा उतरा। कही पास ही छिपी एक बडी सी कुतिया मौका देखकर वह गमछा उठा ले गई। गूजर को भनक पडते ही उसने पीछे मुडकर देखा। वह घबरा कर हतप्रभ सा कुतिया के पीछे भागा। इस पर कुतिया और जोर से दौडने लगी। वह विक्षिप्त सा बावले की नाई चिल्लाने लगा। लोगो के पूछने पर उसने लडखडाती वाणी मे उपरोक्त कहावत के रूप मे जवाब दिया। लोग सुनकर उलटे उसका मखौल उडाने लगे।

के कुत्ती के पाण ई गाडी चालै है ? १९००
क्या कुतिया के बूते पर ही गाडी चलती है ?
देखिये—क स. १८९७, १९३१

के गाभा धोय फाटै के निचोय फाटै। १९०१
या तो वस्त्र धोने से फटते हैं या निचोडने से।
–किसी न किसी बहाने हर वस्तु का विनाश अनिवार्य है।
–कैसे भी हो एक दिन हर चीज का अत आकर रहता है।

के गीतडा के भींतडा। १९०२
या तो गीतो से या इमारतो से।
–मनुष्य की कीर्ति या तो यश के छदो मे या भव्य स्मारको मे अक्षुण्ण बनी रहती है।
–मनुष्य की प्रसिद्धि के मुख्यतया दो माध्यम हैं या तो प्रशस्ति के छद या कलात्मक सुदर भवन।

के गूजर रौ दायजौ के बकरी के भेड। १९०३
क्या गूजर का दहेज या तो बकरी या भेड।
–गवार के पास गवारू ही चीजे होती हैं।
–जिस व्यक्ति का जैसा सामाजिक स्तर होता है, उसके पास वैसी ही सामग्री होती है।

के जागै जिणरै घर साप के जागै बेटी रौ बाप। १९०४
या तो जागे जिसके घर साप, या जागे लडकी का बाप।
–घर मे साप होने से सब घर वाले सतर्क हो कर जगे रहते रहते हैं। और कुवारी लडकी के विवाह की चिंता मे बाप करवटें बदलता रहता है।
–चिन्तातुर व्यक्ति ही रात को जगा रहता है।
–चिंता के सर्प व पारिवारिक दुख हमेशा नीद मे बाधा उपस्थित करते हैं।

के जागै जोगी के जागै भोगी। १९०५
या तो जागे जोगी या जागे भोगी।

–योगी अपनी योग साधना के कारण रात को जगा रहता है और भोगी काम वासना के कारण।
–जगने की क्रिया एक सी होने पर भी उसका मर्म एक सा नही है। दोनो के जगने रहने म बेहद अन्तर है।

के जाणै भेड सुपारी सार ? १६०६
क्या जाने भेड सुपारी का स्वाद ?
–अनभिज्ञ व्यक्ति कई पदार्थों के आनद से सर्वथा वचित रह जाता है।
–अज्ञानी मनुष्य को कई बातो की जानकारी नही होती।
–छोटा व्यक्ति बडी बातो मे क्या समझे।
–मूर्ख व्यक्ति ज्ञान का मर्म क्या जाने।

के जोधा के खोदा दिन बावडै। १६०७
या तो सुपुत्र लडको के बूते पर या बैलो के सहारे अच्छे दिन लौटते हैं।
–सफलता के लिए दो ही तथ्य अनिवार्य हैं — या तो मेहनती औलाद या उत्पादन के उचित साधन।
–मनुष्य की आशा दो ही बातों पर टिकी रहती है—योग्य सतान पर और पर्याप्त साधनों पर।
पाठा के घर रा जोधा के घर रा खोदा।

के ठगावै रोगी के ठगावै भोगी। १६०८
या तो ठगाये रोगी या ठगाये भोगी।
–कोई भी व्यक्ति किसी रोगी को कैसा ही इलाज बताये तो वह उस पर विश्वास कर लेता है। दूसरा कामुक या भोगी अपनी काम वासना की तृप्ति के लिए कुछ भी लुटाने को तैयार रहता है।
–गर्जमन्द सहज ही ठगाया जा सकता है।

के डूबै रोळा के डूबै बोळा। १६०९
या तो झगडे म घर डूब जाता है या अत्यधिक परिवार बढन से।
–झगडे मे मनुष्यो के साथ धन की भी क्षति होती है। तथा अत्यधिक कुटुम्ब बढने से जमीन व सपत्ति का बटवारा हो जाता है।

के तो कायो मरै के धायो मरै। १६१०
या तो निराश व्यक्ति मरता है या सपन्न।
–परिस्थितियो से तग व हैरान होकर कोई व्यक्ति मरने पर उतारू हो जाता है और सपन्न व्यक्ति अभिमान म उलटे-सीधे काम करके मरने जैसा सयोग बना लेता है।
–कभी कभी निराशा व सपन्नता का एक सा दुष्परिणाम होता है।

के तो गैली पैरै ई कोनीं अर जे पैरै तो खोलै ई कोनीं।
या तो बावली पहिनगी ही नही और यदि पहिनगी तो खोलेगी ही नही। १६११
–बावला व्यक्ति अपनी ही धुन म खोया रहता है, वह दूसरो के कहन-सुनन पर कतई ध्यान नही देता।
–बावले व्यक्ति के सारे कार्य निराले ही होन है।
–बावले मनुष्य के सभी काम उसकी सनक पर निर्भर करते है।

के तो गैली राड सासरै जावै ई कोनीं अर जाय तो पाछी आवै ई कोनीं। १६१२
या तो बावली औरत ससुराल जाये ही नही और यदि जाये तो वापस आये ही नही।
देखिये– उपरोक्त
पाठा के तो गैली सासरै जावै नी अर जावै तो आवै नी।

के तो घर रो नास करू के कात्यो कूत्यो कपास करू।
या तो घर का नाश करू या काता-कूता कपास करू।
–जिन दो कार्यों के चयन मे बर्बादी के सिवाय कुछ नही हो।
–जिद्दी या सनकी आदमी घर की बर्बादी के अलावा और कर ही क्या सकता है।

के तो घोडो घोडिया मे नींतर चोरा मे। १६१४
या तो घोडा घोडियों मे नही तो चोरो के पास।
–किसी का घोडा खो गया। पूछने पर उसने गोलमोल सा उत्तर दिया कि या तो वह वासना से प्रेरित होकर घोडिया के बीच चला गया है या कोई चोर अस्तबल से खोल कर ले गया है।
–या तो कोई स्वय बदमाशी करने गया है या वह खुद बदमाशो के बीच फस गया है।
–कोई घर का आत्मीय चोरी या कपट कर जाय तो इस कहावत का प्रयोग होता है।
–थोडी-बहुत जोखिम उठाये बिना कोई काम सफल नही

होता।
–किसी भी बात के दो पहलू होते हैं—लाभ या हानि।

के तौ जागै चोर के मोर के ढोर। १६१५
या तो जगे चोर या मोर या ढोर।
–चोर चिंता या अधीरता के कारण रात को सो नही पाता। मोर या ढोर स्वभाव से ही हरदम सतर्क रहते हैं।
–अभागे व्यक्तियो के प्रति हमदर्दी का भाव।

के तौ जीभ संभाळ के खोपड़ी संभाळ। १६१६
या तो जीभ सभाल या सिर सभाल।
–या तो अपशब्द या गाली-गलोज बन्द कर या फिर सिर फुडवाने व पिटने के लिए तैयार होजा।
–*गाली-गलोज करने वाला कभी न कभी पिटकर ही रहता है।*

के तौ धन धणी खाय के धन धणी नैं खाय। १६१७
या तो स्वामी धन को खाता है या धन स्वामी को खा जाता है।
–धन का यथोचित उपयोग करने मे ही उसकी सार्थकता है अन्यथा सग्रह करने पर उसकी चिंता उलटे स्वामी को क्षति पहुचाती है।
–धन सचय की वृत्ति पर कटाक्ष।

के तौ प्राहूणी भेळौ सुवाद्यं के खीर में मूतरवाद्यं। १६१८
या तो पाहुनी के साथ सोने दे या खीर मे मूतने दे।
–धर्म सकेट मे फसे व्यक्ति की मजबूरी।
–दुविधा-जनक असमजस की मन स्थिति।
–दोनों मे से एक अपकर्म के चयन की विवशता।
पाठा : के तौ पावणी भेळौ सूवू नीतर खाटा री हाडी में मूतू।

के तौ पंल बळद हालै ई कोनीं, जे हालै तौ सौ गांवां री सींव फोडे। १६१९
या तो ढीला बैल चले ही नही, यदि चले तो सौ गाव की सीमा लाघे।
पैंल=मद गति मे चलने वाला मन-मौजी बैल। जो चलने पर रुकने का नाम नहीं लेता।
–असतुलित चित्त वाले व्यक्ति की मन स्थिति का चित्रण।
–मन-मौजी आदमी की मानसिक अवस्था का कोई अनुमान नही लगा सकता।
–भोले या नादान मनुष्य की चारित्रिक विशेषता।

के तौ फूहड़ चालै ई कोनीं, जे चालै तौ नौ गाव री सींव फोड़ै। १६२०
या तो फूहड चलती ही नही, यदि चले तो नौ गावो की सीमा लाघे।
देखिये—उपरोक्त

के तौ बाप बतावौ के मौसर करौ। १६२१
या तो बाप बताओ या मृत्यु-भोज करो।
संदर्भ-कथा किसी एक व्यक्ति का पिता भारी अपराध या चोरी करके भाग गया। लोगों के द्वारा उसके पुत्रो को बार-बार तग किया गया कि वे अपने पिता को कही से भी खोज कर लायें। यदि नही लाते हैं तो उसे मरा मान मृत्यु भोज करना पडेगा। दो बातो के अलावा तीसरा कोई विकल्प नही।
–जिस व्यक्ति को किसी तरह बच निकलने का कोई बहाना न मिले।
–सकटमय दुविधा-जनक स्थिति मे बहाने बाजी से हल निकलना सभव नही।
पाठ : के तौ बाप बतावौ के सराध करौ।

के तौ बावळौ गांव जावै कोनीं अर जावै तौ बावड़ै कोनीं।
या तो बावला गाव जाता ही नही और जाये तो लौटता ही नही।
देखिये—क. स. १६०७

के तौ बीगड़ै कुपथ अर के बीगड़ै कुपथ्य। १६२३
या तो बिगड़े है पथभ्रष्ट होने से या बिगडे बदपरहेजी करने से।
–*पथभ्रष्ट होने से प्रतिष्ठा व पूजी का विनाश होता है* और बदपरहेजी करने से स्वास्थ्य व शरीर का।
–बर्बादी की राह न चलने की नसीहत।

के तौ बीगड़ै बोलां के बीगड़ै मौलां। १६२४
या तो बिगडे बोलो से या बिगडे निकम्मों से।
मौला=जो व्यक्ति अहदी, आलसी, अकर्मण्य, नासमझ तथा

चित्तभ्रमित हो।
–अपशब्द या गाली-गलौज से राड बढती है। राड बढने से क्षति पहुचती है। और उधर अकर्मण्य व नासमझ व्यक्ति पूर्वजो की सपत्ति या बर्बाद कर डालता है।

के तो बाध्यौ के राध्यौ। १६२५
या तो बधा हुआ या रधा हुआ।
–बकरा या तो बधा हुआ अचचल रहता है या हडिया म पका हुआ। अन्यथा हरदम हैरान करता रहता है।
–अत्यधिक उद्दत या चचल व्यक्ति के लिए।

के तो भैंसो भेस्या मे के कसाई रै खूटै। १६२६
या तो भैंसा भेंसियो म या कसाई के खूटे पर।
–बदचलन, व्यसनी या दुर्गुणी मनुष्यो के स्थान सुनिश्चित होते हैं। उनका पता ठिकाना पूछने पर व्यग-स्वरूप इस कहावत का प्रयोग होता है।
–जिस व्यक्ति के लिए दो के अलावा तीसरी कहीं जगह न हो।
पाठा के तौ बकरौ छाळचा म के खटीक रै खूटै।
मिलाइये—क स १६०८

के तौ भोजाई रौ सुभाव मुळकणौ के गाव रौ लोग कुलखणौ। १६२७
या तो भावज का स्वभाव ठिठोली का या गाव के लोग दुराचारी।
–किसी घर म बस्ती क लोगो की आमद रफ्त ज्यादा होने पर छोटे भाई से किसी व्यक्ति न इस बाबत पूछताछ की तो देवर ने प्रत्युत्तर दिया कि या तो मेरी भावज का स्व भाव हसी ठिठोली करने का है या गाव के लोग बदचलन हैं।
–किसी बात के रहस्य का भेद खुलासा करने के लिए।

के तौ भोजाई री जीभ कामणगारी अर के नैणा काजळ रेख सारी। १६२८
या तो भावज की जीभ म जादू है या आखो म काजल निकाला है यानी आकर्षक शृगार किया है।
–घर म लोगो क जमघट की वजह या तो भावज की मीठी वाणी या उसका सुहाना शृगार।

के तौ भोजाई पीहर माल्ही के गोठियौ घर मे। १६२६
या तो भावज मायके पहुची या उसका प्रेमी घर म।
–घर म चहल-पहल या खटपट के बदले शाति की केवल ये दो वजह हो सकती हैं।
–दाल मे कुछ न कुछ काला अवश्य है।

के तौ मरघा के करघा। १६३०
या तो मरने से या करने से।
–या तो काम पूरा करने से शाति मिलती है या मरने से।
–चिंता या तो कर्म की सपूर्णता से मिटती है या मरने के पश्चात्।

के तौ मा भार भेलै के जमीं। १६३१
या तो मा भार वहन करती है या जमीन।
–दुनिया म मा और पृथ्वी से बढकर सहनशील कोई दूसरा नही होता।
–पृथ्वी की सहनशीलता की तरह मा की ममता का भी कोई पार नही। वह अपने पुत्र के लिए चाहे जितना दुख उठा सकती है।
पाठा • के तौ भावज नीद भेळी के बीद भेळी।

के तौ राखै राम अर के राखै डाम। १६३२
या तो रखे राम या रखे डाम।
डाम=उपचार स्वरूप जलाने की एक प्रक्रिया।
–या तो रोगी की रक्षा राम करेगा या दाग लगने पर ही उसका बचना सभव है।
–उपचार के लिये दाग की विधि का महत्त्व।

के तौ राणी जायौ के बिराणी जायौ। १६३३
या तो रानी से जन्मा या बनियाइन से जन्मा।
–समाज का सचालन या तो रानी की कोख से जन्मा राजकुवर करता है या सठानी की कोख से जन्मा बेटा।
–राजकुवर सत्ता का प्रतीक है और बनिये का बेटा धन या पूजी का।
–दुनिया में सुखी दो ही हैं। एक तो राजकुवर और दूसरा बनिया।

के तौ लडै गिंडक अर के लडै गिंवार। १६३४
या तो लडे कूकर या लडे गवार।
–अकारण या नासमझी से या तो कुत्ते आपस मे लडते हैं या गवार व्यक्ति।

–बिना बात लड़ने वाला गवार कुत्ते के ही समान है।
पाठा क तो ल्डै कूकर कै लडै कमीण।

क तो लडै सूरमा क लड गिवार। १६३५
या तो लड़े शूरवीर या लड़े गवार।
–शूरवीर लड़ता है देश की सुरक्षा के लिए और गवार लड़ता है अपने स्वार्थ के लिए। किंतु दोनों की लड़ाई में आकाश पाताल का अंतर है।
–स्वयं अपने आप में लड़ाई का कोई महत्त्व नहीं। कारण या उद्देश्य बड़ी बात है।

कै तो सरब सुहागण क फरडक राड। १६३६
या तो सब सुहाग या निपट वैधव्य।
–इस पार या उस पार।
–जोखिम के काम में लाभ भी बेशुमार और क्षति भी बेइंतहा।

कै तो सपाड दाई माई कै सपाड सगा भाई। १६३७
या तो नहलाये धाय मैया या नहलाये सगे भय्या।
–निहायत गंदे व गलीज आदमी के लिए जो स्नान करने से कतराता हो। उसके लिए परिहास में इस कहावत का प्रयोग होता है कि या तो उस जन्म के समय दाई ने पहली बार उसे हाथों नहलाया था या फिर मरने पर घनिष्ठ आत्मीय उसे अंतिम बार नहलायेंगे अपने हाथों से स्नान करने की तो कसम ही खा रखी है।
–जो व्यक्ति अपने हाथों दूसरा कठिन काम तो क्या नहाने जैसा सुख का काम भी न करे उसके लिए।

क तो बींद छोटी क घोडा घूबली। १६३८
या तो दूल्हा छोटा या घोड़ी झुकी हुई।
–किसी एक में तो कमी है ही।
–दो में से एक की कसर तो स्वयं सिद्ध है।

क तो सौ ओढण को नी क गाव री बठक करडी। १६३९
या तो घर में बिछौने नहीं है या गाव की बैठक सख्त है।
सदभ कथा किसी एक गाव में अलाव के चारों ओर लोगों का जमघट लगता हुआ आधी रात ढलने के बाद भी मजे में गपशप करता रहा। बाहर से आया एक अतिथि भी उन सबके बीच बैठा था। नींद के मारे बुरा हाल होते हुए भी अकेले उठ कर चल जाने की इच्छा नहीं हुई। अंत में हिम्मत करके उसने पूछ ही लिया—या तो तुम्हारे घरों में ओढने को पर्याप्त बिस्तर नहीं है या फिर तुम्हारी बैठक बेहद मजबूत है। अतिथि की बात सुनकर गाव के सारे लोग ठहाका मारते हुए बिखर गये।
जिस बात के लिए दो के अतिरिक्त तीसरा कोई विकल्प न हो।

क तो सेवळी चरण गी क बिल मे। १६४०
या तो सवली चरने के लिए गई या बिल में होगी।
सवला—बतख से मिलता जुलता लम्बा मुंह से अलग एक जंतु विशेष जिसका बिल बहुत गहरा होता है इसका मांस अत्यंत पौष्टिक माना जाता है।
सदभ कथा किसी व्यक्ति के मन में सवली का मांस खाने की इच्छा जागृत हुई। जगल में उसने रात दिन भटक कर कई बिल तलाश किये। पर उसे कहीं भी सवली का पता नहीं चला। उसकी निराशा के प्रति सहानुभूति प्रकट करता हुआ एक साथी सेवली का पता करने के लिए उसके साथ रवाना हुआ। उसका दावा था कि पावों के निशानों से वह सेवली का पता कर लेगा पर वास्तव में सच्ची बात यह थी कि उसे पावों के निशानों की कोई जानकारी नहीं थी। बहुत देर बेकार तलाश करने पर भी सेवली का पता नहीं लगा आखिर एक बिल के पास खड़े होकर साथी ने खुशी प्रकट करते हुए बताया—यह रहा सवली का बिल उसने इधर उधर छान बीन की। बिल में नजर गड़ाता हुआ वह काफी देर खड़ा रहा। मित्र के पूछने पर उसने फिर डींग मारी कि हां सेवली का निश्चित पता लग गया। मित्र ने पूछा कि सवली आखिर है कहां। तब उसने बेझिझक उत्तर दिया कि या तो वह कहीं जगल में चरने गई है या बिल के भीतर दुबकी पड़ी है। भला इन दो के अलावा तीसरा विकल्प भी क्या हो सकता था?
–अपनी प्रवीणता का झूठ मूठ दावा करने वाले व्यक्ति का इस कहावत के द्वारा मखौल उड़ाया जाता है।

कै हगलो कै मूतलो। १६४१
या तो हगलो या पेशाब करलो।
–हगने पर पूर्णतया निर्भर होते हुए भी पेशाब की छूट नहीं मिल सकती। कहने के लिए नाम मात्र की स्वतत्रता

जिसका कोई अर्थ ही नहीं।
–एकतन्त्रवाद या स्वामी के क्रूर स्वभाव पर व्यंग।

के तो हंसो मोती ई चुगै के लंघण ई करै। १६४२
या तो हंस मोती ही चुगता है या फिर भूखा ही रहता है।
–अपनी मान्यताओं पर दृढ़ रहने वाले व्यक्ति के लिए।
–जिस व्यक्ति की रुचि या समझ किसी प्रकार का समझौता नहीं करे।
–जो व्यक्ति अवसरवादिता का लाभ उठाने के लिए किसी भी कीमत पर तैयार नहीं हो।

केदार रौ कागण। १६४३
केदार का कंगन।
संदर्भ कथा : केइ बड़ा धूर्त बिल्ली की एक लोक कथा। एक बार दही की हंडिया में मुंह फंसा कर वह चुपचाप दही चाट रही थी। मालिक के पांवों की आहट सुनकर वह भागी। हंडिया का पेंदा फूट गया और आगे का गोल हिस्सा उसकी गर्दन में अटका रह गया। उस धूर्त बिल्ली ने इस दुर्घटना का भी फायदा उठाकर चूहों को समझाया कि अब उसने अपनी हिंसा वृत्ति का सर्वथा परित्याग कर दिया है। केदारनाथ का पवित्र कंगन गले में पहिनने के बाद उसका हृदय समूल रूप से परिवर्तित हो गया है। चूहों को मारने की बात तो दूर उनकी तरफ क्रुद्ध दृष्टि से देखना भी पाप है। बेचारे भोले चूहे उसके झांसे में आ गये। वह अलग से एक एक चूहे को पवित्रता का पाठ सिखाने के बहाने खाती रही और हर बार केदार के कंगन की दुहाई देती रही।
–आडंबर की ओट में विश्वासघात करना।
–झूठे दिखावे का प्रदर्शन।

के घापै सोटा सूं के धापै रोटा सूं। १६४४
या तो अघाये सोटों से या अघाये रोटों से।
–अमानुष, जंगली व गंवार व्यक्ति या तो पिटाई से तृप्त होता है या रोटियों से।
–गंवार व्यक्ति से खिलाकर पीछा छुड़ाया जा सकता है या डंडे मार कर।

के पिद्दी अर के पिद्दी रौ सोरवौ। १६४५
क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा।
–पिद्दी=बया जाति का एक छोटा पक्षी।
–तुच्छ या उपेक्षणीय व्यक्ति द्वारा हेकड़ी दिखाने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।
–निर्धन या असहाय व्यक्ति की बिसात ही कितनी।

के पैली धर आपणी के आपांणी पर हत्थ। १६४६
या तो उस पार की सीमा अपनी या अपनी सीमा दूसरों के हाथ।
–युद्ध में जीतने पर दुश्मन की धरती पर अपना अधिकार हो जायेगा या हारने पर दुश्मन अपनी धरती हथिया लेगा।
–मनुष्य को चाहिए कि वह किसी भी कीमत पर साहस नहीं छोड़े।

के फूंक सूं परबत उडै है ? १६४७
फूंक देने से पहाड़ क्या उड़ता है ?
–नगण्य परिश्रम से बड़ा काम नहीं किया जा सकता।
–काम के यथायोग्य ही श्रम व शक्ति अनिवार्य है।

के बसै हजारी के बसै कबाड़ी। १६४८
या तो बसे हजारी या बसे कबाड़ी।
–बड़े शहर में या तो धनी ही रह सकता है या कबाड़ी।
–बड़े शहरों में बसने के लिए या तो धनपति या कबाड़ी लालायित रहते हैं।

के बाड़ मार्थ सोनौ सूखै है ? १६४९
क्या बाड़ पर सोना सूख रहा है ?
–दुनिया में ऐसा कौन मायापति जिसका सोना बाड़ों पर सूखता हो।
–बेकार नष्ट करने के लिए किसी के पास भी सम्पत्ति नहीं होती।

के मारै बादळ रौ घाम के मारै वैरी रौ जाम। १६५०
या मारे बादल की धूप या मारे वैरी का पूत।
–किसान को अकाल और दुश्मन के अलावा और किसी का डर नहीं रहता।
–अकाल की मार के अतिरिक्त किसान भगवान की भी परवाह नहीं करता।

के मारै सीरी रौ साझ के मारै अवळौ राज। १६५१

या तो मारे आपसी साझा या मारे अन्यायी राजा।
–साझे का घरा और अन्यायी राजा दोनो विनाशकारी होते है।
–साझेदारी व अराजकता की भर्त्सना।

के मियां मरग्या के रोजा घटग्या। १६५२
कौनसे मिया मर गये कौनसे रोजे घट गये।
देखिये—क स १७२६

के मोड्यो बांधे पागड़ी के रहै उघाड़ो टाट। १६५३
या बाबाजी पगडी बाधे या रहे उघाडी टाट।
–मन मौजी व्यक्ति अपनी जो इच्छा होती है वही काम करता है।
–असन्तुलित व्यक्तित्व पर कटाक्ष।

केरड़ी खूटा रा जोर माथै ऊछळै। १६५४
बछिया खूटे के जोर पर उछलती है।
–मातहत व्यक्ति अपने स्वामी के जोर पर कूद फाद करता है।
–निर्बल व्यक्ति कभी जोर दिखाता भी है तो केवल अपने हिमायतियों के बल पर।

के रोऊं अे जणी, थू आगो दी न तणी। १६५५
क्या रोवू मैय्या, तून न कचुकी दी न थैय्या।
–मा के मरने पर बेटी कहती है कि वह उसके लिए क्या रोये ? उसने न तो दहेज म कचुकी दी और न खलने के लिए ककर।
–लेन देन का सबध ही सबसे बडा रिश्ता है।
–जिसने जाने अनजाने कुछ भी सहयोग नही दिया उसकी मृत्यु पर कैसा शोक ?

के लड़ै लड़ायतो के लड़ै अणजाण। १६५६
या तो लडे लडाकू या लड अनजान।
–सिद्धहस्त व्यक्ति म साहस या आत्मबल होता है या निपट अनभिज्ञ व्यक्ति म।
–अज्ञानी का आत्मविश्वास भी ज्ञानी से कम नही होता।
पाठा के लड़ै लडाकडो के लड़ै अणभोठ।

केळ कांटां री कैडी प्रीत ? १६५७
केलि और काटो की कैसी प्रीत ?
केठ=सुकोमल व सुहाना पौधा विशेष।
–दुष्ट व सज्जन का कैसा मेल।
–शोषक और शोषित के बीच कैसा समझौता !
–कुल्टा व पतिव्रता म कैसी मित्रता !

केळू री कांब, होळी री झळ। १६५८
केलि की छडी, होली की ज्वाल।
–जो नायिका अत्यधिक नाजुक व बेहद सुदर हो।
–नायिका के सौंदर्य को चित्रित करने वाली उपमाए।

केस खोस्यां मुड्दा हळका नीं व्हे। १६५९
बाल काटने से मुर्दे हलके नही होत।
–मामूली रेत झाडने से शहतीर का वजन कम नही होता।
–अपर्याप्त योजना स काम सपन्न नही होता।
–अकिंचन दिखावा करने से कोई भी कार्य पूरा नही होता।
–यथायोग्य सहयोग विना सफलता नही मिलती।

केसरिया किण माथै कीना ? १६६०
केसरिया का किसके भरोसे पहिना ?
–युद्ध म मृत्यु के लिए उत्साही राजस्थानी शूरवीर केसरिया वस्त्र पहिनते थ। मातृभूमि की रक्षा के लिए उन्ह परिवार के भरण पोषण की कुछ भी परवाह नही होती थी। ऐसे देशभक्त उत्साही लोगो से एक अहम प्रश्न है कि वे किस विश्वास के बल पर मरने को लालायित हो रहे है ? पीछे बाल बच्चो की गुजर बसर का कौन ध्यान रखेगा। देश के लिए मरने वालो के परिवार की खातिर जीवित देशवासियो को चिंता करनी चाहिए।
–किसके विश्वास पर प्राणो का उत्सर्ग कर रहे हो, कुछ सोचा भी है ?

केसरिया वागा कीना। १६६१
केसरिया वेश पहिना।
–मातृभूमि के लिए प्राणो की बाजी लगाने वाले शूरवीरो ने केसरिया वेश पहिन रखा है।
–मौत का वरण करने के लिए देश भक्त दूल्हे लालायित हो रहे हैं।

के सहरा के डहरा। १६६२
या शहर या भूमि उर्वर।

–भरपूर मजदूरी के लिए या तो कोई व्यक्ति शहर का आश्रय खोजता है या उपजाऊ उर्वर धरती का।
–गुजर-बसर के लिए दो ही आश्रय प्रर्याप्त है या तो शहर या उपजाऊ खेत।

के सोवै बबी रो साप के सोवै जिणरै माय'र बाप। १६६३
या तो सोये बाबी का साप या सोये जिसके मा और बाप।
–रात भर अपना चुग्गा पूरा करके सारे दिन बाबी के भीतर साप बेखबर होकर सोता रहता है। बाबी के भीतर उस खतरे की कोई आशका नही रहती। जिसके मा-बाप जीवित है उसे कमाने खाने की क्या चिंता। वह दिन को भी टाग पर टाग धरे आराम से सो सकता है।
–जिन्हे गुजर बसर की कोई चिन्ता नही रहती वे निश्चित होकर सोते है।

के सोवै राजा रो पूत, के सोवै जोगी अवधूत। १६६४
या तो सोये राजा का पूत या सोये जोगी अवधूत।
–मानवीय दुनिया म किसी न किसी कमी या दुख के कारण राजा महाराजा या अवधूत जोगी के सिवाय सभी को कुछ न कुछ चिंता बनी ही रहती है। और चिन्तातुर मनुष्य आसानी से सो नही सकता।
–जो व्यक्ति सासारिक व भौतिक चिन्ताओ से मुक्त होता है वही अगाढ नीद म सो सकता है।

केहर जड्यो कठातरै कहा करै बळवत ? १६६५
नाहर फसा कठघरे म क्या करे तकवान ?
–एक बार बधन म फसने के बाद कैसे भी शक्तिशाली का वश नही चलता।
–नाहर जैसा हिंसक व खूखार प्राणी भी पीजरे म बद हो जाय तो भी कुछ नही कर सकता।
–जगल का राजा भी पराधीन होने के बाद भेड के समान निरीह हो जाता है।

के है भोळी बाता मे, जूत्या ले ल्यो हाथा मे। १६६६
क्या धरा है भोली बाता म, जूते ले लो हाथा मे।
–व्यर्थ की अनर्गल बातो म कुछ नही धरा जूते हाथ म लेकर काम म जुट पडने से ही निस्तार होगा।
–नादान बातें सुनने का मोह छोड हाथो म जूते लेकर भागने म ही खैरियत है।

कै

कंडीक है राड भोजा खपावणी ? १६६७
कैसी है कुल्टा वीरो का विनाश करन वाली ?
–जिस कुल्टा औरत की वजह से प्राण व धन की बर्बादी हो।
–जिस औरत के कारण मनुष्य आपस मे लड मरते हो।

कंडो आयो जाणै तोरण मायं बींद। १६६८
कैसा आया भटपट मानो तोरण पर दूल्हा।
–जो व्यक्ति अचानक अप्रत्याशित लाभ की जगह पहुच जाय।
–याद करते ही जो व्यक्ति तत्क्षण वही आ धमके।

कंडोक हेडाबू है ? १६६९
कैसा बहादुर या प्रवीण है ?
–किसी भी काम मे अत्यधिक दक्षता व अथक परिश्रम से घर म तो लाभ ही लाभ है, पर साथ ही सारे इलाके म उसकी कीर्ति भी बढती है।
–आदर्श व्यक्ति की प्रशस्ति।

कंडो है बुडियो तीतर व्है ज्यू। १६७०
कैसा है लावा तीतर की तरह।
–लावा तीतर छोटा होते हुए अत्यत चालाक व फुर्तिला होता है।
–जो व्यक्ति दिखने मे छोटा हो किन्तु लावा तीतर की तरह चचल व चालाक हो।

कंडो है सळकणियो साप व्हे ज्यू। १६७१
कैसा है तेज भागने वाले साप की तरह।
–जो व्यक्ति काम के समय निर्विलम्ब वहा से अदृष्ट हो जाता हो।
–कामचोर व्यक्ति के लिए।

कै छोरी ठाकर के हू तो कै देस्यू पण गाव रा नीं कवै।
कह छोकरी ठाकुर कि मैं तो कह दूगी पर गाव वाले नहीं

बढ़ गए।
–केवल धमकी व दबाव के बल पर प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले व्यक्ति के लिए।
–लोक प्रियता स्वयमेव बढ़ती है, डाट फटकार से नहीं।

कै ढोली घोडा रौ मोल कै रातै रावळो विकग्यो। १६७३
बता ढाली घोडे का मोल कि रात को आपका बिका ही था।
सदर्भ कथा : एक ठाकुर ने ढोली के बिकाऊ घोडे का मोल पूछा। ढोली की क्षमता के अनुसार उसका घोडा भी मरियल व सामान्य था। ढोली सोचने लगा कि वह घोडे की क्या कीमत बताये ? कि अकस्मात् उसे ठाकुर के घोडे का ध्यान आया। जो कल रात ही काफी ऊंचे मूल्य पर बिका था। ठाकुर का घोडा लम्बा व अत्यंत हृष्ट-पुष्ट था। ढोली ने नम्रता पूर्वक जवाब दिया कि वह अपने मुह से अपने घोडे का क्या भाव नाव करे ? कल रात ही उनका घोडा जिस मूल्य मे बिका उससे कम तो इसके भी क्या दाम होंगे ! ढोली का मूर्ख, नादान व भोला जवाब सुनकर ठाकुर मुस्कराता हुआ चल दिया।
–जो व्यक्ति देखादेख अपनी हलकी चीज को भी दूसरों की कीमती चीज के बराबर समझे।
–जो छोटा व्यक्ति बडों की नकल करना चाहे।

कैण सुणण री बात कोनीं। १६७४
कहने सुनने की बात नही।
–कुछ ऐसी बात जिसे दूसरों को बताने मे झिझक हो।
–जिस बात को व्यक्त करना शोभनीय न हो।

कैणै मायं नीं डहकणो करणी देखणो। १६७५
कथनी से मत बहक, करणी परख।
–उपदेशों के भुलावे में न आकर आचरण पर नजर रखनी चाहिए।
–कहने की अपेक्षा करना अधिक महत्त्व पूर्ण है।

कैता नीं के बींद बूढो है। १६७६
कह नहीं रहे थे कि दूल्हा बूढा है।
सदर्भ-कथा : एक व्यक्ति ने ढलती उम्र मे शादी की। पाणिग्रहण के समय वह अकलड के साथ वेदी पर बैठा था। किशोरी दुलहन एक दम करीब उससे सटी हुई थी। अचानक उसके मन मे यह खयाल कौंधा कि चारों ओर खडी औरतें कहीं दुलहन की तुलना मे उसे अधिक बूढा न समझें। कडाके की इस सर्दी मे वह अपनी जवानी का क्या प्रमाण दे सकता है ? अगले ही क्षण उसने एक बढ़िया युक्ति सोचली। उसने एक औरत को ठंडे पानी का लोटा लाने के लिए कहा। पर बडे आश्चर्य की बात कि दूल्हे ने तो गटागट पूरा लोटा ही खाली कर डाला। उस कडाके की सर्दी मे लोगों के लिए तो गले का थूक निगलना तक कठिन था। एक सहेली ने फुसफुसाते हुए शका की—कौन कह रहा था कि दूल्हा बूढा है ?

बूढ़े दूल्हे की चौकसी का करिश्मा कि उसने फुसफुसाहट के वे बोल साफ सुन लिए। उसे और जोश चढा। खाली लोटा सामने करते हुए उसने दूसरी औरत से कहा. एक लोटा और !

पास खडी सभी औरतों की आखें ऊंची कपाल मे चढ गईं। दो तीन बार मना करने पर भी वह दूसरा लोटा भी उसी तरह एक ही सास मे निगल गया। चारों ओर चकचक मची—दूल्हा तो कतई बूढा नहीं। कोई मर्द बदा इस तरह एक घूट भी पानी पीकर बताये !

दूल्हे की नस नस मे ठडक सिहर उठी थी पर औरतों के ये जवां बोल सुनकर उसके रोम रोम मे सनसनी मचली। फिर खाली लोटा आगे करता हुआ बोला—एक लोटा और !

पर तीसरे लोटे का परिणाम कुछ ठीक नही हुआ। आधा लोटा खाली करते ही दूल्हा जमीन पर लुढक पडा। औरतों की चकचक मे दूल्हे का अस्फुट प्रलाप किसी को भी सुनाई नही पडा।
–दूसरों के बहकावे मे आकर फूला नहीं समाने का नतीजा बुरा ही होता है।
–अपनी क्षमता से परे जोश दिखाना हमेशा घातक होता है।

कैयनै कैवाडणो। १६७७
कहकर कहलवाना।
–जो अपशब्द कहेगा वह अपशब्द सुनेगा।
–जैसा कहना वैसा सुनना।
पाठा : ऊ कैयनै ग्रू कैवाडणो।

कैय'र खाय जकी डाकण नीं बाजै। १६७८

–कोई व्यक्ति किसी में खुश तो कोई किसी में खुश।

कोई गावै होळी रा कोई गावै दीवाळी रा। १९८८
कोई गाये होली के गीत और कोई गाये दीवाली के गान।
–कोई कुछ कहे और कोई कुछ सुने।
–असबद्ध बातचीत पर कटाक्ष।
–अपनी-अपनी ढफली अपना-अपना राग।
–पूछे खेत की बताये खलिहान की।

कोई चालै चाकरी, ताज्यौ तुरक तैयार। १९८९
कोई चढ़ चाकरी, ताजिया तुर्क तैयार।
हर किसी बात मे तामसा का उत्साह दिखलाने वाले व्यक्ति के लिए।
–निठल्ला व्यक्ति हर किसी काम मे बेकार ही जुड जाता है।

कोई निरखै काच कांघसी, कोई निरख मिणियारी। १९९०
कोई निरखे काच कांघसी, कोई निरखे मनियारी।
–कोई व्यक्ति कांच कंघे की ताक मे है तो कोई व्यक्ति मनियारी के सौंदर्य की ताक मे।
–हर व्यक्ति अपनी नीयत मे अनुप्रेरित होता है।

कोई नीं देखै पण राम तौ देखै। १९९१
कोई नही देखता पर राम तो देखता है।
सदर्भ - कथा . एक औघड गुरु के पास दो युवक बार बार चेला बनने के लिए चक्कर काटते थे। गुरु ने काफी दिन तक कोई जवाब ही नही दिया। एक दिन उन्होंने ज्यादा ही आग्रह किया तो तो गुरु ने उनकी परीक्षा लेनी चाही। दोनो युवको को दो बकरे सोपे और कहा—जहा कोई भी न देखे वही अलग-अलग दिशा मे जाकर इनका सिर काट कर मेरे पास ले आओ। फिर चेला बनने की विधि का प्रारभ होगा।

एक व्यक्ति अत्यधिक बुद्धिमान व होशियार था। गुरु के कहते ही झटपट एकात जगह के लिए रवाना हो गया। यह तो बिलकुल ही आसान काम है। कुछ दूर जाने के बाद उसे झाडियो से घिरा एक नाला नजर आया। बकरे को उसके बीच छिपाकर उसने एक ही झटके मे उसका सिर काट डाला। खुशी खुशी हाथ मे बकरे का सिर लटकाये वह गुरु के पास आ गया। गुरु ने पूछा कि किसी ने देखा तो नही। उसने तुरत जवाब दिया कि किसी ने भी नही देखा। भला वैसी जगह मे बकरे का सिर क्यो काटता? गुरु ने उसकी पीठ थपथपाई और छाया मे बैठने का इशारा किया।

दूसरा युवक काफी नादान व भोले स्वभाव का था। वह बकरे को लेकर खूब दूर दूर तक भटका, पर उसे कोई वैसा स्थान न मिला जहा कोई नही देखता हो। कही पत्ते देख रहे थे। कही झाड-झखाडो की टहनिया देख रही थी। कही हवा देख रही थी तो कही धूप। कही आकाश देख रहा था तो कही धरती।

आखिर वह निराश होकर जिन्दा बकरे को लेकर वापस लौट आया। सिर हिलाता हुआ हताश स्वर मे बोला — दुनिया मे ऐसी जगह तो कही नही हो सकती, जहा कोई न देखे। भगवान तो सर्वत्र मौजूद है। वह तो सब कुछ देखता है। फिर इस बकरे की आखो और मेरी आत्मा से भी कैसे छुटकारा पाऊ?

तब गुरु ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—तुम्हे छुटकारा पाने की कुछ भी जरूरत नही। तुम्हे किसी का शिष्य नही बनना। तुम तो जन्म से ही सभी के गुरु हो।

तत्पश्चात् उस औघड गुरु ने पहिले वाले युवक को दुत्कार कर भगा दिया कि उसमे किसी का चेला तक बनने की काबलियत नही है।
–कोई भी *अपकर्म अपनी आत्मा और* ईश्वर से छिपाकर नही हो सकता।
–ईश्वर से बडा साक्षी कोई दूसरा नही।

कोई फिरै डाळ-डाळ, हू फिरू पांन पांन। १९९२
कोई फिरे डाल डाल, मैं फिरू पान पान।
–यदि कोई डाल-डाल दौडकर छिपने की कोशिश करेगा तो मैं पत्ते-पत्ते पर पीछा करके उसे खोज निकालूगा।
–दुनिया मे हर कोई व्यक्ति अपने आप को सबसे बडा बुद्धिमान समझता है।

कोई मरै कोई मल्हार गावै। १९९३
कोई मरे कोई मल्हार गाये।
–कोई दुख से छटपटा रहा है तो कोई मस्ती से गीत गा रहा है।
–कही मृत्यु का शोक मनाया जा रहा है तो कही नये जन्म

की खुशियाँ मनाई जा रही हैं।
—संसार में कोई दुखी तो कोई सुखी।
—मनुष्य की स्वार्थ परायणता पर व्यंग।

कोई मांनै नीं जांनै नीं, हूं लाडै री भूवा। १९९४
कोई माने नहीं जाने नहीं, मैं दूल्हे की बूआ।
—जबरन किसी काम में अनधिकार दखल देने वाले व्यक्ति के लिए।
—सामना अपनी महत्ता जताने वाले व्यक्ति के लिए।

कोई मरै कोई सीड़ी गूंथै। १९९५
कोई मरे कोई अर्थी गूंथे।
—इस संसार की विचित्र गति है। मरने वालों ने भी किसी की अर्थी गूंथी थी। और ये अर्थी गूंथने वाले भी किसी दिन मरेंगे। अबाध गति से जीवन मरण का यह चक्र चलता ही रहता है।
—हर व्यक्ति जीवन के अगले क्षणों से बेखबर रहता है।
—यह संसार भी एक अजीब खेल तमाशा है।

कोई म्हनै नीं मारै तौ म्हैं किणी नै नीं छोडूं। १९९६
कोई मुझे नहीं मारे तो मैं किसी को नहीं छोडूं।
—अपनी हानि के भय से ही दुनिया में काफी कुछ शांति बनी रहती है, अन्यथा कुहराम मच जाता।
—स्वयं को वापस कोई खतरा न हो तो मनुष्य किसकी परवाह करे।
पाठा कोई म्हनै नीं मारै तौ म्हैं आखी दुनिया नै नीं धारूं।

कोई मा रा पेट मे सीख'र नीं आवै। १९९७
कोई मां के पेट में सीख कर नहीं आता।
—अभ्यास, निष्ठा व मेहनत से सब कुछ सीखा जा सकता है।
—जन्म से ही कोई व्यक्ति प्रवीण होकर नहीं आता।
—चाहने पर हर व्यक्ति किसी भी काम में सफलता हासिल कर सकता है।

कोई मोलां भारी तो कोई तोलां भारी। १९९८
कोई मोल में भारी तो कोई तोल में भारी।
—हर वस्तु की अपनी अपनी उपादेयता और अपना-अपना मोल है।
—कोई व्यक्ति ज्ञान में श्रेष्ठ तो कोई आचरण में।
—कोई व्यक्ति माया में भारी तो कोई आदर्श में।

कोई ग्यांन गैलौ, कोई ध्यांन गैलौ १९९९
कोई मांन गैलौ, कोई तांन गैलौ।
कोई ज्ञान बावरा, कोई ध्यान बावरा।
कोई मान बावरा, कोई तान बावरा।
—हर व्यक्ति अपने हाल में मस्त है।
—हर व्यक्ति की अपनी अलग ही दुनिया है। कोई किसी में व्यस्त तो कोई किसी में व्यस्त।

कोगत-फोगत गत बिगड़ी। २०००
मजाक मजाक में जीवन की गति ही बिगड़ गई।
—मनुष्य जीवन के हर क्षण का गम्भीरतापूर्वक उपयोग होना चाहिए।
—खेल-तमाशों में ही जीवन अपनी मंजिल तक पहुंच गया। सारी यात्रा ही विफल हो गई।

कोट नै पेट रा धा ज्यांरा। २००१
गढ़ और पेट रूपे जिसके।
—जो गढ़ को चारों ओर से घेर लेता है उस पर उसका ही अधिकार हो जाता है। और गर्भ में जिसके भ्रूण का संयोग घटित होता है, वही उसका हकदार हो जाता है।
—कब्जा सच्चा, बाकी सब कच्चा।

कोट री बात कांगरा बतावै। [illegible]
किले की बात कंगूरे बताते हैं।
—किन्ही दूसरी बातों से असलियत का पता [illegible] है।
—परिस्थितियों को छिपाया नहीं जा सकता।

कोट रै लारै अर ठाकरद्वारा रै आगै। [illegible]
गढ़ के पीछे और ठाकुरद्वारा के आगे।
—ठाकुर के गढ़ के पीछे और [illegible] में फायदा है। गढ़ के पीछे [illegible] से पीछा छूट जाता है। [illegible] चलन से भगवान के [illegible]
—परिस्थितियों के अनुरूप [illegible] है
पाठा कोट रै लारै [illegible]

कोटै बीज पड़ै [illegible] [illegible]
कोटे बिजली [illegible]
—कोटा और [illegible]

स्थित हैं। मीलो-मीलो दूर। इतनी दूर से चमकी बिजली से गधे की देह को आच महसूस होती है।
–मूर्ख व्यक्ति बेकार की निराधार आशकाओ से पीडित रहते है।
–जो व्यक्ति काल्पनिक विपत्तियो से त्रस्त रहता हो।

कोठा मे होवे जद खेळी मे आवै। २००५
हौज मे हो तो कुड मे आये।
–आमद होने पर ही खर्चे का जुगाड होता है।
–तिजोरी मे हो तो जेब म आये।
–खजाने म हो तो प्रशासन मे काम आये।
–हौज खाली तो कुड भी खाली।

कोठी-कोठला मे हाथ मत घालजे, बाकी सै घर-बार थारो। २००६
कोठी-कुठले मे हाथ मत डालना, बाकी सब घर-बार तुम्हारा।
–बिना किसी ठोस आधार के थोथे अधिकारो का जिम्मा सौंपना।
–खामखा के अधिकारो पर कटाक्ष।

कोठी धोया कादो नीसरै। २००७
कुठला धोने से कीचड ही निकलता है।
–निखालिस मिट्टी से बना कुठला धोने से उखड उखड कर मिट्टी ही बार-बार बाहर निकलती है।
–सीख व उपदेश की बातो से कुटिल व्यक्ति का मन निर्मल नही हो सकता, उलटे उसकी कुटिलता और अधिक उभरती है।
–समझान से मूर्ख व्यक्ति की मूर्खता नही मिटती।

कोठी मे कण घालै जित्ता ई नीसरै। २००८
कुठले मे दाने जितने डलें उतने ही निकलते हैं।
–जिसे जितना ज्ञान मिलता है, उसी के अनुरूप उसे अभिज्ञता प्राप्त होती है।
–जैसी सीख वैसा आचरण।
–जैसा अभ्यास वैसी सफलता।
–जैसी मेहनत वैसा परिणाम।

कोठी मे घाल्यां ई को जीवै नीं। २००९
कुठले मे डालने पर भी नही जीयेगा।
–मौत पर कैसी भी सुरक्षा का अकुश नही चलता।
–उपचार व औषधि से बीमारी दुरस्त हो सकती है पर मौत का कोई इलाज नही।

कोठी मे दाणा है जितै कोई डर कोनीं। २०१०
कुठले मे दाने है तब तक कोई डर नही।
–घर मे खाने के लिए अनाज है तब किस बात की चिता।
–आर्थिक स्थिति ठीक हो तो किसी का भय नही।
–आर्थिक स्वतत्रता ही वास्तविक स्वतत्रता है।
–पिंजर मे सास है तब तक कोई कुछ नही बिगाड सकता।

कोठं री बात होठं आयां सरै। २०११
पेट की बात ओठो पर आकर ही रहती है।
–मन की बात कभी न कभी व्यक्त होकर ही रहती है।
–हृदय की बात छिपाये नही छिपती।

कोठं सो ई होठं। २०१२
जो पेट मे वही अधरो पर।
–प्रेम, ईर्ष्या, घृणा अथवा क्रोध यदि मन मे है तो वह प्रकट होकर ही रहता है।
–झूठ, उपदेश या भाषण तो केवल ओठो पर ही होते है, मन से इनका कोई वास्ता नही, पर अनजाने भी मानस की बात व्यक्त हुए बिना नही रहती।

कोडां मरया नै कुत्ता ई घींस्या। २०१३
उत्साह से मरे और कुत्तो ने घसीटा।
–कोई व्यक्ति प्राणो की जोखम उठाकर गाव, समाज व देश के लिए मरे किन्तु मरने के बाद लाश की यथोचित दाह क्रिया भी न हो तब इस कहावत का प्रयोग होता है।
–जिसके लिए मरे और वही उसकी परवाह न करे।
–कृतघ्न व्यक्ति की खातिर मरने से मृत्यु भी लाछित होती है।

कोडी कुटावै मोडी। २०१४
कौडी कुटाये सिर।
–धन या माया ही सब झगडे की जड है।
–अधिकांशतया सपति की खातिर ही लूट खसोट, छीना-झपटी, चोरी तथा डकैती हुआ करती है। और इन सबका

परिणाम घातक ही होता है।

कोडी-कोडी करतां ई लक लागै। २०१५
कौडी कौडी करते ही सब समाप्त हो जाता है।
–थोड़ा-थोड़ा करते ही धन या सब वस्तुएं खर्च हो जाती हैं।
–किफायत बरतने के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

कोडी-कोडी कजूस, रिपियां रौ खोगाळ। २०१६
कौडी-कौडी किफायत, रुपयो का विनाशी।
–जो व्यक्ति नगण्य बातो के लिए तो जरूरत से ज्यादा चिंतित हो तथा बडी बातो की तरफ ध्यान ही न दे।
–दमडी के लिए खीचतान और मोहर का अपव्यय।
–जिस व्यक्ति की कजूसी मे कोई सतुलन न हो।

कोडी-कोडी जोडतां, गिया सींठा तोडता। २०१७
कौडी-कौडी जोडते, गये बाल तोडते।
–मरने के बाद एक बाल भी साथ नही चलता।
–जीवन पर्यन्त कौडी-कौडी का सचय करके भी मरते समय खाली हाथ जाना पडता है।
–प्राण निकलने पर सब कुछ यही धरा रह जाता है।
–सब टाट पडा रह जायगा जब लाद चलेगा बनजारा।

कोडी कोडी धन जुडै। २०१८
कौडी कौडी धन जुडता है।
–थोडा थोडा बचाने से ही सचय होता है।
–सचय की लक्ष्य पूर्ति के लिए कौडी का भी महत्त्व है।

कोडी बिना कोडी रौ। २०१९
कौडी बिना कौडी का।
–जिस व्यक्ति के पास कौडी नही, स्वय उसकी कीमत भी कौडी से ज्यादा नही।
–मनुष्य के गुणो का कुछ भी महत्त्व नही केवल अधिकृत सपत्ति ही का महत्त्व है।

कोडी रा तीन। २०२०
कौडी के तीन।
–निहायत सस्ती चीज के लिए।
–जो व्यक्ति एक दम निकम्मा हो उसके लिए।

कोडी रौ पाजी। २०२१
कौडी का पाजी।
–छिछोरे व्यक्ति के लिए।
–निकम्मे व्यक्ति के लिए।
–जो व्यक्ति पैसो की खातिर कुछ भी अपकर्म करने को तैयार हो।

कोडी व्हैं तौ फूल चाढू। २०२२
कौडी हो तो फूल चढाऊ।
–कौडी के बिना तो भगवान की पूजा भी नही हो सकती।
–बेइन्तहा गरीब व्यक्ति के लिए।

कोडी साटै हाथी जावै। २०२३
कौडी के बदले हाथी जा रहा है।
सदर्भ - कथा : नदी के फलस्वरूप कर्ज व धाधली के कारण एक ठाकुर की विकट दुर्दशा हो गई थी। यहा तक कि खाने के भी लाले पडने लगे। ठिकाने के कर्मचारी व सहयोगियो ने हाथ खीच लिया। ठकुराइन के सारे गहने बिक गये। पर ठकुराइन थी बहुत समझदार। फिर भी सिर के बदले किसी दूसरे का सिर तो काट कर नही चिपकाया जा सकता। लाख समझाने पर भी ठाकुर अपनी बुरी आदतो से बाज नही आया। तब ठकुराइन ने एक नई युक्ति सोची। अपने धनाढ्य मायके वालो से विचार विमर्श करके उसने एक हाथी मगवाया। खरीदने की कीमत केवल एक कौडी। गढ के सामने से हाथी निकला तो सबसे छोटे कुवर ने उसे खरीदने का हठ किया। रोता हुआ पिता के पास पहुचा। कौडी मे हाथी मिलने की खुश-खबरी सुनाई। यह तो चढने के लिए हाथी लेकर ही मानेगा। इतना सस्ता तो मिट्टी का हाथी भी नही मिलता। पर ठाकुर के लिए उस खुश-खबरी के बहाने वह बेहद कष्ट पहुचाने वाली बात थी। उसने विगलित स्वर मे पुत्र को समझाया कि आज तो कौडी पास न होने पर यह हाथी कौडी मे भी महगा है। वह हठ न करे। कभी वक्त आने पर वह लाख रुपयो मे भी सस्ता होगा। और न एक कौडी देकर वह हाथी की कीमत भी घटाना चाहता है। उस दिन से ठाकुर के जीवन का मोड ही बदल गया। वर्ष बीतते बीतते ही उसने लाख रुपये की कीमत मुह से मागने के बावजूद भी सवा लाख रुपये देकर हाथी खरीदा। कुवर द्वारा शका करने पर उसने दुलार करते हुए कहा

बेटा आज तो यह हाथी सवा लाख मे भी सस्ता है और उस दिन एक कौडी म भी महगा था। मेरी स्थिति से गुजरे बिना यह बात आसानी से तेरी समझ म नही आयेगी।
–किसी वस्तु का सस्तापन अपने आप मे कोई माने नही रखता, खरीदने वाली की क्षमता ही सब कुछ है।
–कौडी पास मे न हो तो कौडी के मूल्य का हाथी भी नही खरीदा जा सकता।
–वक्त वक्त का फेर
पाठा कोडी साटै हाथी पण कोडी व्है तौ हाथी वपराईजै।

कोढ़ अर वळै खाज। २०२४
कोढ और उस पर खुजली।
–दुहरा सकट या दुहरी क्षति।
–दुख पर दुख का कहर ढहे तब इस कहावत का प्रयोग होता है।
–दुहरी मार।
पाठा कोढ अर वळै पाय।

कोढ़ जावै पण चाठौ नीं जावै। २०२५
कोढ मिटने पर भी दाग नही मिटता।
–बुरे कामो की बदनामी उम्र भर नही मिटती।
–मरने पर भी यश अपयश पीछे रह जाता है।
–दुष्कर्मों का कलक नही मिटता।
–समय बीत जाने पर भी बात रह जाती है।

कोढ़िया रौ टकौ किसौ ठाकरद्वारै नीं चढै। २०२६
कोढी का टका कौन सा ठाकुरद्वारे नही चढता।
–समदृष्टि ईश्वर के लिए सभी बराबर हैं।
–पैसा अपने-आप मे अपवित्र नही होता।
–रिश्वत खोर के लिए हर किसी का पैसा जायज है।
–अधर्मी, अधम व गरीब के पैसे की भी सर्वत्र एक सी कीमत होती है।

कोढिया रौ टकौ ठाकरद्वारै नीं चढ़ै। २०२७
कोढी का टका ठाकुरद्वारे नही चढता।
–दुष्ट व्यक्ति का पैसा सुकर्म म नही लगता।
–अत्यधिक कजूस की कमाई किसी के भी काम नही आती।

कोढ़िया रौ मन सवासणी माथै विटळै। २०२८
कोढी का मन रिश्ते की लडकियो पर ही मचलता है।
–घिन व घृणा के कारण दूसरे लोग तो कोढी की छाया के पास तक नही फटकना चाहते। तब काम वासना की जलन शात करने के लिए उसके पास दूसरा विकल्प ही क्या रह जाता है।
–मजबूरी के लिए कोई भी नैतिक मान्यता मान्य नही।
–कलकित व्यक्ति को भले बुरे का कोई खयाल नही रहता।
–जो व्यक्ति दुष्ट होते हुए भी कायर या डरपोक हो वह केवल घरवालो को ही क्षति पहुचाता है।
पाठा कोढिये रौ मन सवासणी माथै चालै।
कोढिये रौ काड सवासणी माथै ऊठै।

कोढियो विसरदौ व्है। २०२९
कोढी विस्पदा होता है।
–कोढी का पाद अत्यत दुर्गन्धमय होता है।
–दुर्गुण के साथ दूसरे दुर्गुण अपने आप जुड जाते हैं।
–भगवान भी जिस किसी पर कोप करता है, पूरा करता है।

कोढ़िया सू तौ जूवा ई कानौ लेवै। २०३०
कोढी से तो जूए भी कतराती हैं।
–ऐसा लोक विश्वास है कि कोढी व्यक्ति के जूए नही पडती।
–घिनौनी जूए भी कोढी से घिन करती है।
–स्वय गदगी भी कोढी के पास जाते हुए कतराती है।
–असहाय व्यक्ति से सभी दूर रहना चाहते हैं।

कोथली मे गुळ मागै। २०३१
थैले मे गुड तोडना।
देखिये—क स १८५७

कोथळी मे नाणा तौ बींद परणीजै काणा। २०३२
थैले मे हो पैसा, तो दूल्हा ब्याहे जैसा तैसा।
–पैसे स क्या कुछ नही हो सकता!
–पैसे वाले के लिए सब कुछ सभव है।

कोथळी मे टक्का तौ सांम्हो आवै मक्का। २०३३
थैले मे हो नकदी का जोर, तो मक्का आये पावो दौड।
देखिये—उपरोक

कोथळी मे टक्का निमड़ग्या। २०३४

थैले मे पैसे समाप्त हो गये।
—आर्थिक स्थिति बिगड गई।
—पास मे जो कुछ भी था वह खतम हो गया।

कोपीन राइ ई पोसाक मे गिणीजै ? २०३५
कौपीन बेचारी भी पोशाक मे शुमार होती है ?
—जब कोई अदना आदमी बडप्पन की बातें करे तब।
—छोटे मुह बडी बात करने वाले व्यक्ति के लिए।

कोयल कागा इक रग, बोल्या परखीजै। २०३६
कोयल कौए का रग इक सार, बोली सुने तो करें विचार।
—रूप रग की अपेक्षा गुण व हुनर का विशेष महत्त्व है।
—वाणी का मिठास सभी को अपना प्रिय बना लेता है।
पाठा कोयल कागा इक रगा, बोल्या जाच पड़ै।

कोयला खासी ज्यारो काळो मूडो होसी। २०३७
कोयले खायेगा उसका काला मुह होगा।
—जो दुष्कर्म करेगा उसका दुष्परिणाम उसी को भोगना होगा।
—जो जैसा करेगा वैसा भोगेगा।

कोयला री दलाली मे काळा हाथ। २०३८
कोयला की दलाली म काले हाथ।
—बुरे काम मे साथ देन वालो की भी बदनामी होती है।
—कुटिल व्यक्ति की सगति से भी कलक लगता है।

कोरा कागद मायं मन करै ज्यू लिखो। २०३९
कोरे कागज पर इच्छा हो सो लिखो।
—छोटे बच्चे को चाहे जिस साचे म ढाला जा सकता है।
—अविवाहित कन्या की जिस किसी से इच्छानुसार शादी *की जा सकती है।*
—खाली जमीन पर चाहे जैसा मकान बनाया जा सकता है।

कोरा सुळिया दळै। २०४०
केवल घुन लगे अनाज को दल रहा है।
—घुन लगे अनाज को दलना व्यर्थ है।
—जो व्यक्ति खामखा की बकवास करे।
—जो व्यक्ति हरदम ऊटपटाग बातें करे।

कोरी लूण री पोवं। २०४१
शुद्ध नमक की रोटी बना रहा है।
—जो व्यक्ति निखालिस झूठ बोले।
—हलाहल झूठ बोलने वाले व्यक्ति के लिए।

कोरी बाता सू काम नीं सरे। २०४२
थोथी बातो से काम नही चलेगा।
—केवल बातें बघारने से कोई काम सपन्न नही होता।
—वाछित सहयोग न देकर जो व्यक्ति केवल मौखिक हमदर्दी प्रकट करे।

कोरै आभै बीजळी पडी। २०४३
खुले आकाश बिजली गिरी।
—असभाव्य वज्रपात होने पर।
—अप्रत्याशित सकट आ पडे तब।
—कोई अनहोनी बात होने पर।

कोरै काळजै बाघ कद बोलाईजै। २०४४
खाली पेट बाघ कब बुलवाये जाय।
—भूखा आदमी कठिन काम नही कर सकता।
—भूखे पेट कुछ नही हो सकता।
—कुछ भी हाथ न आये तो कौन जोखिम ले।

कोस तो चाली ई कोनीं अर काका तिसाई। २०४५
कोस तो चली ही नही और बाबा प्यास लगी।
—काम की शुरुआत मे ही बहाने बाजी करने वाले व्यक्ति के लिए।
—काम आरभ करने के पहिले ही जो व्यक्ति खमियाजा मागे।
पाठा : कोस तो चाली ई कोन्या अर बाबा पाणी।
कोस तो चाली ई कोनी अर बाबा हारगी।

कौ रावण किण दिस गियो ? २०४६
कहो रावण किस दिशा मे गया ?
—यमराज के सामने किसी राजा-महाराजा का भी वश नही चलता।
—काल की चपेट से कौन आसनायी बचा है ?

कौल मायं लखपती रा ई नीं टूकं। २०४७
वादे पर लखपति का भी गुजारा नही होता।
—वादा पूरा करने के बीच न जाने कितनी अनजानी कठिनाइया आ खडी होती हैं।

–लखपति ही जब अपना वादा पूरा नहीं कर सकता तब गरीब की तो बिसात ही क्या ?

कौंठ रा फळ बायरं सू पडणहार नीं । २०४८

कटहल के फल हवा से गिरने वाले नहीं ।

–ऐसी व्यर्थ की आशा जो कभी पूरी न हो ।

–जो व्यक्ति बडी से बडी ताकत के सामने भी हार न माने ।

–जो शूरवीर आसानी से न मरे ।

–जो व्यक्ति कई बार खतरे मे पड कर भी साफ निकल आये ।

ख

खग जाणं खग री वाणी । २०४९

खग जाने खग ही की भाषा ।

–चालाक चालाक ही की बात समझता है ।

–बुद्धिमान बुद्धिमान की तथा मूर्ख मूर्ख ही की बात समझता है ।

खड खावौ, पाणी पीवौ अर बैठा मौज करौ ।' २०५०

घास खाओ, पानी पीओ और बैठे मौज करो ।

–आलसी व अकर्मण्य व्यक्ति के लिए ।

–जो व्यक्ति पशुवत जीवन व्यतीत करते हो ।

खडचौ बाणियौ पडचा समान । २०५१

पडचौ बाणियौ मरचा समान ।

खडा बनिया पडे समान, पडा बनिया मरे समान ।

–अति विनम्र व्यक्ति के लिए ।

–जो व्यक्ति बेहद सहनशील हो ।

खडं खेजडां बेज कोनीं पडं । २०५२

खडे खेजडो मे छेद नही पडता ।

देखिये—क स. ८८२

खडं ज्यांरा खेत चढं ज्यांरा घोडा । २०५३

जोते जिनके खेत चढे जिनके घोडे ।

–श्रम करने वाला ही संपत्ति का अधिकारी होता है ।

–मेहनत ही सभी अधिकारो की सर्वोच्च कसौटी है ।

खटीक रोवं खाल नं, छाळी रोवं जीव नं । २०५४

खटिक रोये खाल को, बकरी रोये प्राण को ।

देखिये—क स. १३२१

पाठा खटीक रोवं मास नं, बकरी रोवं जीव नं ।

खतरौ दो आगळ, डर सौ आगळ । २०५५

खतरा दो अगुल, डर सौ अगुल ।

–खतरा कम होने पर भी डर बहुत ज्यादा होता है ।

–मामूली जोखिम से भी मनुष्य बेहद घबराने लगता है ।

खबोचिया रौ मींडकौ । २०५६

गड्ढे का मेढक ।

देखिये—क स १७७७

खरगोसिया वाळौ अधारौ । २०५७

खरगोश वाला अधियारा ।

–शिकारी या किसी अन्य खतरे की आशका समझते ही खरगोश तुरत आखें बद कर लेता है । आखें बद करते ही खरगोश यह समझ लेता है कि खतरा ओझल हो गया । पर वास्तव मे खतरा ओझल न होकर उसे दबोच लेना है ।

–जो व्यक्ति जान बूझ कर विपत्तियो को अनदेखा करे ।

खर घोघू मूरख पसू सदा सुखी प्रिथिराज । २०५८

मूर्ख, गधा, पशु और उल्लू सदा सुखी रहते हैं ।

–मूर्ख व्यक्ति पशुओ के समान सभी चिंताओं से मुक्त रहता है ।

–मूर्ख व्यक्ति को आगे-पीछे का कुछ भी ध्यान नही रहता ।

खरच रं भाग रौ भगवान देवं । २०५९

खर्च के भाग्य का भगवान देता है ।

–खर्च के अनुरूप आय स्वयमेव होती रहती है ।

–खर्च करने वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है ।

पाठा · खरच रा भाग मोटा ।

खरच सू ठरको राखीजै । २०६०
खर्च करने से ठाट रहता है ।
–ठाट या रुआब कजूसी से नही रहता, उसके लिए खूब पैसा खर्च करना पडता है ।
–खर्च का ही दूसरा नाम रुतबा है ।

खरचा सू ठाकर बणै । २०६१
खर्च से ही ठाकर बनता है ।
–खर्च करने वाला व्यक्ति लोक प्रिय होता है ।
–खर्च करने से समाज म प्रतिष्ठा बढती है ।

खरची अट री नै विद्या कठ री । २०६२
खर्ची अट की और विद्या कठ की ।
–पास मे पैसा हो वही काम आता है और विद्या कठ म बसी हो वही काम आती है ।
–घर मे लाखो की माया सचित हो और यदि हाथ मे या जेब मे नकद रुपया न हो तो वह माया किस काम की। पुस्तको म ज्ञान की सीमा नही किन्तु वह याद न हो तो वह ज्ञान किस काम का ।

खरची खूटी यारी तूटी । २०६३
खर्ची खूटी यारी टूटी ।
–मित्रो पर जब तक पैसा खर्च हो तभी तक अपने होते हैं, अन्यथा सभी मुह मोड लेते है ।
–खिलाने पिलाने का ही दूसरा नाम मित्रता है ।

खरचो री कसालो, भूखा मरै रसालो । २०६४
खर्ची का कसाला, भूखो मरे रिसाला ।
–खजाने मे खर्च करने की क्षमता न हो तो फौज भी भूखो मर जाती है ।
–अर्थाभाव मे देश की सुरक्षा करने वाली सेना को भूखो मरने के लिए विवश होना पडता है ।

खरचो व्है तो खाय मिळो, सेधो व्है तो जाय मिळो । २०६५
खर्ची हो तो खाकर मिलो, परिचित हो तो जाकर मिलो ।
–आय की सार्थकता व्यय मे और परिचय की सार्थकता निरतर सपर्क मे ।
–खर्च करने की क्षमता हो तो खूब खर्च करके परस्पर मिलना चाहिए । परिचय की घनिष्ठता को बढाने के लिए रोजमर्रा का सम्मिलन बहुत लाजिमी है ।

खरबूजा मार्थ छुरी पडै तो खरबूजा री हांण । २०६६
छुरी माथै खरबूजो पडै तो खरबूजा नै हाण ।
खरबूजे पर छुरी पडे तो खरबूजे की हानि, छुरी पर खरबूजा पडे तो खरबूजे की हानि ।
–दूसरो के लिए कष्ट तो उठाने वाला ही उठाता है, प्रत्येक के वश की यह बात भी नही है ।
–क्षति तो जिसकी होगी उसी की होगी ।
–गरीब व्यक्ति के बचाव की कोई राह नहीं ।

खरबूजै नै देख खरबूजो रग बदळै । २०६७
खरबूजे को देखकर खरबूजा रग बदलता है ।
–किसी के देखादेख वही काम करने के लिए प्रेरित होना ।
–किसी के अनुरूप आचरण करने वाले व्यक्ति के लिए ।

खर लखणा खाहरडा पडै । २०६८
गधे के लच्छन वाला जूते खाता है ।
–गधे की तरह मूर्ख व्यक्ति हमेशा नुकसान उठाता है ।
–गधे की नाई कामुक व्यक्ति जूते खाता है ।

खरा माल रा सौ गाहक । २०६९
खरे माल के सौ ग्राहक ।
–विशुद्ध माल तुरत बिकता है ।
–खरा माल चाहे जहा बेचा जा सकता है ।

खरी मजूरी चोखा दाम । २०७०
खरी मजदूरी अच्छे दाम ।
–जो व्यक्ति पूरी मजदूरी करता है उसे पूरे दाम मिलते हैं।
–मेहनत के अनुरूप पारिश्रमिक का निर्णय होता है ।

खरी रा खावणिया जोबरडा लाधै । २०७१
खरी के खाने वाले विरले ही मिलते हैं ।
–दुनिया म सच्चाई के बल पर कमाने वाले व्यक्ति बहुत ही कम हैं ।
–मनुष्य समाज मे सर्वत्र हरामखोरो की बहुतायत है ।

खरै खातै नै उघाडै माथै । २०७२
खरा व्यवहार और नंगे सिर ।
–जो व्यक्ति व्यवहार मे नेक है उसे क्या डर ?

—सच्चरित्र व्यक्ति को कौन दंडित कर सकता है ?

खरै नै बरगत । २०७३
खरे की बरकत ।
—सच्चाई की सर्वत्र बरकत होती है ।
—सच्चे व्यक्ति की सफलता सुनिश्चित है ।

खरौ कमायौ नैं खोटौ खायौ । २०७४
खरा कमाया और खोटा खाया ।
—खरी कमाई की और खराब खाया ।
—सच्चाई से सामान्य ही कमाई संभव है, फलस्वरूप रहन सहन का भी निहायत सामान्य स्तर होता है ।

खरौ खाधौ नैं पडियौ लाधौ । २०७५
खरा खाया और पडा पाया ।
—खरी कमाई पडा हुआ मिलने के ही समान है ।
—सच्चाई से गुजर-बसर करने का कोई मुकाबला ही नहीं ।
पाठा खरौ खावौ नैं पडी उठावौ ।

खरौ खोटौ राम जाणैं । २०७६
खरे खोटे की राम जाने ।
—अच्छे बुरे की पहचान भगवान के अलावा कौन कर सकता है ?
—बुरे भले की परख केवल राम ही कर सकता है ।
पाठा खोटा खरा री राम जाणैं ।

खलक गाल भरावै, पेट नीं भरावै । २०७७
दुनिया गाल भरती है, पेट नहीं भरती ।
—दुनिया मुह देखी बातें करती है, पर गुजर बसर के साधन जुटाने में कोई सहयोग नहीं देती ।
—सीख व नसीहत देने वाले बहुतेरे, पर आर्थिक मदद देने वाला कोई नहीं ।

खलक रा हलक कुण ढाबै । २०७८
दुनिया की जबान कौन बंद कर सकता है ?
—कोई कुछ भी कहे उसे कौन रोक सकता है ?
—दुनिया की बातों पर कतई ध्यान न देकर अपने काम में जुटे रहना चाहिये ।

खलका री दलाली मे कीं हाथ नीं लागै । २०७९
दूसरो की दलाली मे कुछ भी हाथ नही लगता ।
—खामखा दूसरे व्यक्तियों की चर्चा करने से कुछ भी लाभ नहीं होता ।
—व्यर्थ की पचापती से कोई फायदा नहीं ।

खळखळिया नैं विघन टळिया । २०८०
दूर हुए और विघ्न टला ।
—झगडे का स्थल छोड कर दूर होने से कलह स्वयमेव शांत हो जाती है ।
—काम छोड कर दूर हुए और आफत मिटी ।
—परिस्थिति से किनारा करने वाले व्यक्ति के लिए ।

खळ-गुळ अेकण भाव । २०८१
गुड व खली एक ही भाव ।
—अंधेर गर्दी का राज्य जहा महगी सस्ती चीजें एक ही भाव मिलती हैं ।
—जहा अच्छे बुरे की कोई पहिचान न हो ।
—जहा का राज्य प्रशासन निहायत खराब हो ।

खवाडणा रौ नाव नीं व्है, रुवाडणा रौ व्है जावै । २०८२
खिलाने का नाम नहीं होता, रुलाने का हो जाता है ।
—भलाई को कोई याद रखता नहीं, बुराई को कोई भूलता नहीं ।
—किसी का अच्छा करने से यश हो न हो, पर बुरा करने की बदनामी तो तुरत हो जाती है ।

खसम कमावै बैठी खावै । २०८३
खसम कमाये बैठी खाये ।
—पति की कमाई पर मौज करने वाली औरत के लिए ।
—जो पत्नी पति की कमाई पर गुलछर्रे उडाये और काम कुछ भी न करे ।

खसम खपावणी राड । २०८४
खसम को मरवाने वाली कुलटा ।
—जो कुलटा पत्नी अपने पति को हरदम दुख पहुचाये ।
—घर मे निरंतर कलह व अशांति रखने वाली औरत ।
—जो पत्नी पति के जीवन की भी परवाह न करे ।

खसम बायरी रांड । २०८५
पति द्वारा परित्यक्त पत्नी ।
—जो कुलटा पति का रच-मात्र भी कहना न माने ।

–जो पत्नी अपने स्वामी की कतई परवाह न करे।

खसम मरयां रांड कमावै। २०८६
खसम मरने पर औरत कमाने लगती है।
–दुख पडने पर ही नसीहत मिलती है।
–क्षति व नुकसान से ही सबक मिलता है।
–जो व्यक्ति खूब हानि उठाने के बाद समझदारी बरते तब।

खसम मरया रौ धोखौ कोनीं, सपनौ साचौ व्हैणौ चाहीजै।
खसम मरे का धोखा नहीं, सपना सच होना चाहिए।
–अपने नगण्य अहं की तुष्टि की खातिर भारी क्षति उठाने वाले व्यक्ति के लिए।
–बेइन्तहा हठी व्यक्ति के लिए जो किसी भी कीमत पर अपना हठ छोडने को तैयार नहीं।

खसम री काच दबावण नैं गी, छोरा री निरळगी। २०८८
खसम की काच दबवाने गई, छोकरे की बाहर आ पडी।
–एक तकलीफ को मिटाने की चेष्टा मे दूसरी तकलीफ और आ पडे तब।
–उलटी और गले में आफत आ पडे तब।

खसम री काण नैं रामजी री आंण। २०८९
खसम का मान व राम की कसम।
–औरत के लिए पति की मर्यादा और राम की सौगंध से बढकर और किसी बात का महात्म्य नहीं होता।
–जिस औरत के लिए किसी की मर्यादा का बंधन न हो।
–जो औरत न लोक लज्जा से डरे और न ईश्वर से।

ख्याल खिलारा रा अर घोडा असवारा रा। २०९०
खेल खिलाडियों के और घोडे सवारों के।
–अपनी-अपनी प्रवीणता के अनुरूप ही हर बात शोभा देती है।
–जो व्यक्ति जिस काम में कुशल या सिद्धहस्त हो उसे वही काम करना चाहिए।

खा

खाई खुदगी रे भाया! २०९१
खाई खुद गई रे भाई!
–फिर आफत आ गई।
–झूठा इलजाम आ पडा।
–जिस संकट की संभावना थी वह सिर पर आ पडा।

खाई खोई नैं माहीनै रोयी। २०९२
खा-पीकर भीतर ही भीतर रोया।
–गुलछर्रे उडाकर बाद में सिर पीटना।
–बिना सोचे-समझे अंधाधुंध अपव्यय करने से बाद में पछताना पडता है।

खाई री काई खावै! २०९३
खाई हुई का क्या खाना।
–भोगी हुई का फिर क्या भोग करना।
–किसी की झूठन क्या खाना।
पाठा० खायोडी नैं काईं खावै।

खाई वाल्ही, मा'ई वाल्ही नीं। २०९४
खाई प्यारी, मा प्यारी नहीं।
–खिलाने-पिलाने वाला व्यक्ति मां की अपेक्षा अधिक प्रिय होता है।
–पालन-पोषण करने वाला मां से ज्यादा अपना होता है।
–जिससे स्वार्थ की पूर्ति हो वही आत्मीय है।

खाऊं तो खाडो पडै, नीं खाऊं तो रोडो बडै। २०९५
खाऊं तो गड्ढा पडे न खाऊं तो विनाश होता है।
–उपयोग में ली जाने वाली वस्तु का तो उपयोग करना ही श्रेयस्कर है।
–संग्रह की अपेक्षा उपयोग सर्वथा लाभकारी होता है।

खा ऐ बदी खीर अर खाड,
रोसी बोहरौ अर बोहरा री राड। २०९६
खा ए बदी खीर व खाड,
रोयेगा बोहरा व बोहरे की राड।

–उधार लेकर खूब गुलछर्रे उडाओ, रोयेगा तो बोहरा और उसकी घरवाली।
देखिये—क स. १२४३

खाक उघाडिया काळजौ दीसै। २०९७
बगल उघाडने से कलेजा दिखता है।
–निहायत गरीब व्यक्ति के लिए।
–घर का भेद बताने से घर की ही बदनामी होती है।

खाक जळ सो जळ, बांह बळ सो बळ। २०९८
बगल का जल सो ही जल, भुजा का बल सो ही बल।
–बगल मे लटका पानी और अपना बाहुबल ही समय पर काम देता है।
–जरूरत पडने पर जो चीज काम मे आये उसी का महत्त्व है।

खाक मे कटारी, चोर नै घोदा मारै। २०९९
बगल मे कटारी, चोर को मुक्के मारे।
–जो व्यक्ति वक्त पर किसी चीज का सही उपयोग नही कर सके।
–समय पर जिस व्यक्ति के दिमाग मे सही बात न उपजे।
–जो व्यक्ति वक्त पर यथोचित निर्णय न ले सके।

खाक मे छुरी मूडै राम। २१००
बगल मे छुरी, मुह में राम।
–कपटी या ढोंगी व्यक्ति के लिए।
–जो व्यक्ति जबान से मीठा और आचरण मे घिनौना हो।

खाकां माय सू हसी निकळै। २१०१
बगल से हसी फूटना।
–नितात वाहियात और निराधार बात के लिए।
–खामखा की ऊलजलूल बात करने वाले व्यक्ति के लिए।

खाखला रा बीज व्है जद तीज करीजै। २१०२
भूसे का बीज हो तब तीज की जाती है।
–राजस्थानी औरतो के लिए सावन-भादो की तीज का त्योहार बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। पर भूसे का बीज यानी गेहू होने पर उसे मनाया जा सकता है अन्यथा नही।
–आर्थिक स्थिति ठीक होने पर ही त्योहारो की सार्थकता है।
–अर्थाभाव मे खुशी के प्रतीक त्योहारो का भी कोई महत्त्व नही।

खा गुळ—सतरै सेर। २१०३
खा गुड—सत्रह सेर।
–मौके बमौके हर वक्त अनुचित लाभ उठाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।
–जब-तब अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए तत्पर व्यक्ति की बात पार न पडने पर।

खाज चालसी सो भेळी सोसी। २१०४
खुजली चलेगी वह साथ सोयेगी।
–गर्ज जो न कराये वह थोडा है।
–जिसे गर्ज होगी वह पहल करेगा।
–गर्जमन्द की मजबूरी।

खाज तो खिणिया मागै। २१०५
खुजली तो खुजलाने से ही मिटती है।
–काम तो करने से ही सम्पन्न होता है।
–पूर्ति होने पर ही सतुष्टि होती है।

खाज माथै श्रागळी सीधी जावै। २१०६
खुजली पर अगुली सीधी जाती है।
–मतलब की बात अनजाने ही हर किसी को दिख जाती है।
–अपनी कमजोरी पर सबसे पहिले नजर जाती है।
–अधे व्यक्ति को भी अपना स्वार्थ खूब दिखता है।

खा जावै नै खाडा कूट जावै। २१०७
खा जाये और खड्डा खोद जाये।
–उस कृतघ्न व्यक्ति पर कटाक्ष जो पर-स्त्री के साथ सभोग करके उसका धन भी बरगला कर ले जाय।
–दुहरा लाभ उठाने वाले मुफ्तखोरो के प्रति व्यग।

खाजू, बीजू रौ भाव कोनीं, मिळै जिण भाव लेणो पडै।
खाद्य व बीज का कोई भाव नही, मिले उस भाव ही लेना पडता है। २१०८
–वक्त पर खाना व बीज तो अनिवार्य है, उन्हे टाला नही

जा सकता। इसके लिए माप-तौल नहीं देखा जाता।
—जीवन तथा उत्पादन से बढ़कर दूसरी कोई मूल्यवान वस्तु नहीं।

खाजो मं खपजो। २१०९
खाओ और मरो।
—कमजोर व्यक्ति को किसी समर्थ के द्वारा सताये जाने पर इस प्रकार मार के द्वारा कोसा जाना।
—विवश व्यक्ति की हाय किसी अत्याचारी के लिए।

खाटी छाछ उतरई टोळै। २११०
खट्टी छाछ घूरे पर गिराने काबिल।
—जो व्यक्ति जिस योग्य होता है, उसके साथ वैसा ही व्यवहार संगत है।
—प्रतिष्ठा के अनुसार आदर।
—अयोग्य व्यक्ति को अधिक मुंह लगाना उचित नहीं।

खाटै सूं मन फाटो, देख जंवाई न्हाटो। २१११
खट्टी से मन फटा और दामाद रवाना।
—निरादृत व्यक्ति को आखिर हैरान होकर जाना ही पड़ता है।
—वांछित आराम न मिलने का सहज परिणाम यही होता है कि संबंधित व्यक्ति का मन उचट जाय।

खाटो सुधरनै काई खीर बणै ! २११२
खट्टी सुधर कर क्या खीर बन सकती है !
—योग्यता के अनुसार ही विकास संभव होता है।
—हीन व्यक्ति के सुधरने की एक सीमा होती है।
—जिसका जैसा स्वभाव होता है वह बदलता नहीं।

खाड खिणै जिणरै कूवो त्यार। २११३
गड्ढा खोदे उसके लिए कुआ तैयार।
—दूसरों को क्षति पहुंचाने वाले के लिए उससे भी बड़ी क्षति अवश्यम्भावी है।
—दूसरों की बुराई करने वाला दुष्परिणाम से बच नहीं सकता।

¹ पाठा : खाड खणै जो अवर को, ताको कूप तैयार।

खाड सूं काढ्यो तो खाडा में पटक्यो। २११४
गड्ढे से निकाला तो नाले में गिरा।
—मामूली हानि से बचाव हुआ तो अधिक हानि सिर पर तैयार।
—आफत पर आफत।
पाठा : खाड सूं निकळनै खेरा में पड्यो।

खातां खाण न पीतां पाणी। २११५
न खाने बन पड़े न पीने बन पड़े।
व्यस्तता की हालत का सहज परिणाम।
—जिस व्यक्ति को काम की मार के आगे खाने-पीने का भी समय न मिले।
—अत्यधिक व्यस्त व्यक्ति के लिए।

पूरा दोहा अेक गोह अर जणा पचास,
सगळा करै गोहण री आस।
सांझ पड्यां री सीका ताणी,
खाता खाण न पीना पाणी।

खातां-खातां बचग्यो सो बीज। २११६
खाते-खाते बच गया सो बीज।
—भोग में जो बच जाय वही सार्थक।
—बिना सोचे हुए जो काम बन जाय।
—समय पर जो चीज हाथ लग जाय वही उत्तम है।
पाठा : खाता-खाता बचग्यो सो बीच, मरता मरता बचग्या सो बडेरा।

खातां-पीतां ई मूंडो दूखै। २११७
खाने-पीने से मुंह दुखता है।
—ऐश-आराम के बीच भी तकलीफ का बहाना करने वाले व्यक्ति के लिए।
—कामचोर की बहानेबाजी करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

खातां-पीतां ना मरै, ऊंघतां मर जाय। २११८
खाने-पीने से ना मरे, सोते-सोते मर जाय।
—खाने पहिनने की बजाय आलस्य से अधिक हानि पहुंचती है।
—आलस्य की प्रताड़ना।

खाता पीता हर मिळै तौ म्हांनै कंजो। २११६
खाते-पीते हरि मिले तो हम कहना।
–बडे काम का फल सहज प्राप्त नहीं होता।
–अथक परिश्रम व तपस्या किये बिना बड़ी चीज हाथ नहीं लगती।
–आरामतलबी से बडी आकांक्षा फलीभूत नहीं होती।

खाती जाय, पीती जाय, घर रा डाडा गिणती जाय।
खाती जाय पीती जाय, घर के डण्डे गिनती जाय। २१२०
–जो व्यक्ति अपने घर का भला बुरा सोचे बिना अधिक खर्च करे उसके लिए।
–बेहिसाबी व्यक्ति के लिए।

खातौ जाय अर खप्पर फोडतौ जाय। २१२१
खाता जाय और खप्पर फोडता जाय।
–कृतघ्न व्यक्ति के प्रति कटाक्ष।
–जो अहसान फरामोश व्यक्ति भला करने वाले को ही क्षति पहुचाय तब।

खाध करै उपाध। २१२२
तृप्त व्यक्ति उपद्रव करता है।
–जिस व्यक्ति के पास जरूरत से अधिक होता है, उसे शैतानी सूझती है।
–अच्छा खाने से शक्ति बढती है।
पाठा खाई करै उपाई। खाय करै उपाय।

खाधा नै के खावै, पीधा नै के पीवै? २१२३
खाये को क्या खाना, पीये को क्या पीना?
–एक बार जिस चीज को खा-पी लिया उसे दुबारा खाया पीया नहीं जा सकता।
–जिस बात का एक बार अनुभव कर लिया उसका बार बार क्या अनुभव करना?
–किसी की झूठन का क्या खाना?

खाधां मार्ग भूख, दीठां भूख न जाय। २१२४
खाने से भूख मिटती है, देखने से नहीं।
–पूर्ति होने पर ही तृप्ति होती है। देखने से कुछ नहीं बनता।
–सम्पन्न करने से ही काम की सार्थकता है, बातें बनाने से काम पूरा नहीं होता।

खाधौ रे परडोटियौ के काळिंदर कठा सू लावू। २१२५
डस गया रे सांप का बच्चा कि बडा नाग कहां से लाऊ।
–हुई तो सामान्य घटना परन्तु उसे विशाल घटना का रूप कैसे दिया जाय?
–बात का बतंगड क्यों कर बनाया जाय!

खा बाणिया गुळ थारौ ईं है। २१२६
खा बनिये गुड तेरा ही है।
सदर्भ एक बनिये के घर से गुड चोरी करके चोर उसी के यहां कुछ दिन बाद वही गुड बेचने के लिए आया। चालाक बनिया चखने के बहाने बार बार गुड खाने लगा। तब चोर ने कहा—मजे से खाओ गुड तुम्हारा ही है।
–जो व्यक्ति अनजाने मे स्वय को हानि पहुचाये तब।

खावौ खीर को अर बावौ तीर को। २१२७
खाना खीर का और चलाना तीर का।
–खाने मे खीर अच्छी और चलाने मे तीर अच्छा।
–निहायत सहज व सरल चीज के लिए

खावौ सीरा को अर मिलबौ वीरा को। २१२८
खाना हलुवे का और मिलना भाई का।
–खाने मे हलुआ आनंद-दायक और भाई का सम्मिलन आनंद दायक।
–भोजन मे हलुए का महत्त्व है और रिश्ते मे भाई का।

खाय खपीडा तौ उठै भपीडा। २१२९
उलटा काम करने वाले के जूते पडते हैं।
–बुरे काम का बुरा ही परिणाम।
–व्यर्थ भटकने वाला सदैव दुख पाता है।

खाय पूय पूसडा मारै। २१३०
खा-पीकर जूते मारे।
–कृतघ्न व्यक्ति के लिए।
–अहसान न मान कर जो व्यक्ति उलटी हानि पहुचाये।

खायगा अर खारडा मारग्या। २१३१

खा गये ग्रौर जूते मार गये ।
–दुहरी ठगाई करने वाले व्यक्ति के लिए ।
–बेवकूफ बना गये ।
–कृतघ्न व्यक्ति के लिए ।

खाय जांणै सौ पचाय जांणै । २१३२
जो खाना जानता है वह पचाना भी जानता है ।
–सोच-समझ कर चलने वाले व्यक्ति के लिए ।
–रिश्वत लेने वाला व्यक्ति उसे हजम करना भी जानता है ।
–हिम्मतवर व्यक्ति के लिए ।
–अत्यधिक होशियार व्यक्ति के लिए ।

खाय पचै सौ गुणकारी । २१३३
खाकर पचे वही गुणकारी ।
–केवल खाने से कुछ नही होता, पचना ज्यादा जरूरी है ।
–क्षमता के अनुसार काम करना ही श्रेयस्कर होता है ।

खाय पीयनै खप्पर नीं फोडणौ । २१३४
खा पीकर खप्पर नही फोड़ना चाहिए ।
–स्वार्थ सिद्ध होते ही मुह नही मोडना चाहिए ।
–किसी के घर खाना खाकर उसकी बुराई नही करनी चाहिए ।

खाय पीयनै मार्थ पाणी फेर दियौ । २१३५
खा-पीकर ऊपर पानी फिरा दिया ।
–सब मजा किरकिरा कर दिया ।
–रग मे भग कर देने वाले व्यक्ति के लिए ।

खाय-पीयनै सौ ज्यांणू, मार कूटनै भग ज्यांणू । २१३६
खा-पीकर सो जाना चाहिए और मार कर भाग जाना चाहिए ।
–परिस्थिति के अनुकूल आचरण करना ही लाभदायक होता है ।
–मौके मौके का दाव ।

खाय-पीयर लारै पड़णौ । २१३७
खा-पीकर पीछे पडना ।
–जो व्यक्ति किसी का बुरा करने पर उतारु हो ।
–हरदम बुरा चाहने वाले व्यक्ति के लिए ।

खाय पीयर हुवा सुखी, अेंठो मांजता बहू दुखी । २१३८
खा-पीकर हुए सुखी, जूठन माजते बहू दुखी ।
–बाकी घर वाले तो खा-पीकर सुखी हो जाते हैं और सारा काम बहू के गले पड जाता है ।
–आराम सभी चाहते हैं पर काम करना कोई नही चाहता ।

खायर नुगरौ व्हैगौ । २१३९
खाकर कृतघ्न हो गया ।
–की हुई भलाई का रचमात्र भी खयाल न करके कृतघ्नता प्रकट करने वाला व्यक्ति ।
–कृतज्ञता को निर्विलम्ब भुलाने वाला व्यक्ति ।

खाय हगाया कदै न धाया । २१४०
खाते ही हगने वाला कभी तृप्त नही होता ।
–बार-बार पाखाना जाने वाले व्यक्ति की भूख कभी नही मिटती ।
–बदहजमी से ग्रस्त बीमार के प्रति व्यग ।

खाया गटका, आवै भटका । २१४१
खाये गटके, आयें भटके ।
–कभी किसी समय गुलछर्रे उडाने वाला व्यक्ति अर्थाभाव मे पुरानी यादों को विसुरता रहे तब ।
–ऐयाश व्यक्ति के जब दुर्दिन आते हैं तो गुजरा हुआ सुख और भी अधिक कष्ट पहुचाता है ।

खाया जका नै मगरौ खाया, मगरा नै कुण खावै ? २१४२
खाया जिसे 'मगरे' ने खाया, 'मगरे' को कौन खाये ?
मगरा = अरावली पर्वत से सटा हुआ इलाका । यहा के वासिंदे मीणे तथा रावत-मेरावत खूब चोरिया व डाकाजनी करते थे । किसी को लूटा या नुकसान पहुचाया तो उन्होंने पहुंचाया, भला उन्हे क्षति पहुचाने वाला कौन ? अर्थात् कोई नही ।
–जो व्यक्ति हमेशा किसी का नुकसान करना रहे और स्वयं का कुछ भी न बिगडने दे ।

खाया जिसा धाया कोनीं । २१४३

खाया जितना चबाया नही।
–कम चबाया हुआ भोजन कुछ मुश्किल से पचता है।
–खाने की अपेक्षा चबाना कठिन होता है।
–सब तरफ चौकसी न रखने वाले व्यक्ति के लिए।

खाया सौ ई उबरिया दीना सौ ई सत्य। २१४४
खाया वही बचा और दिया वही साथ चला।
–जो धन खर्च किया व दान दिया केवल उसी की उपा-त है। संचित धन की कोई सार्थकता नही।
–मनुष्य को चाहिए कि वह तबियत से खर्च करे। दूसरो को दान दे।
–कजूसी किसी भी दृष्टिकोण से व्यर्थ है।
पाठा : खाया सौ ई खरचिया, दीया सौ ई सत्थ।
खाया सौ खूटग्या, खवाडिया सौ सत्थ।

खायां किसा खाडा पड़े। २१४५
खाने से कौन से गड्ढे पडते हैं।
–खाने से कुछ भी कमी नही पडती।
–खाने के लिए कजूसी करना कुछ भी माने नही रखता।

खाया खाईजं, मरया मरीजं। २१४६
खाने से खाया जाता है, मरने से मरा जाता है।
–खर्च करने से खर्च होता है, सचय करने से एकत्रित होता है।
–जैसा काम वैसा ही परिणाम।

खाया खूटे, खींच्यां तूटे। २१४७
खाने से खूटता है, खीचने से टूटता है।
–कोई भी चीज निरतर उपयोग से कम होती है और अधिक तानने से कोई भी बात आखिर टूट कर रहती है।
–खर्च के साथ साथ आमदनी का भी ध्यान रखना चाहिए।

खायां बिना रै जाय, पण कह्यां बिना नीं रहीजै। २१४८
खाये बगैर रह जाय, पर कहे बिना नही रहा जाता।
–बहुधा औरतो के लिए इस उक्ति का प्रयोग होता है कि वे बिना खाये रह सकती हैं, मगर बिना कहे नही रह सकतीं।
–औरतो के पेट म बात नही ठहरती।
–सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य आपसी सपर्क व बातचीत किये बिना नही रह सकता। खाने की अनिवायता से भी कही बडी है बोलने की मजबूरी।

खायां भाखर निठै। २१४९
खाने से पहाड तक खत्म हो जाते हैं।
–बिना कुछ कमाई किये बैठे बैठे खाने से कैसा भी खजाना आखिर खत्म होकर रहता है।
–निठल्ले व्यक्ति के लिए सीख।

खायौ ई को खूटै नीं। २१५०
खाने से भी नही खूटेगा।
–उल्टे-सीधे काम करने वाले के लिए व्यग मे इस उक्ति का प्रयोग होता है कि कभी न कभी उस मे ऐसी बीतेगी, जिससे छुटकारा पाना मुश्किल हो जायेगा।
–अनर्थ करने वाले को चुनौती।
पाठा खायौ ई को खाईजै नी।

खायौ-पीयौ अेक नाव, मारचौ कूट्यौ अेक नांव। २१५१
खाया-पीया एक नाम, मारा पीटा एक नाम।
–खिलाने पिलाने व मारने मे कोई जोड बाकी नही होती। दोनो की अलग-अलग प्रतिक्रिया होनी है।
–भलाई की जगह भलाई और नुक्सान की जगह नुक्सान याद रहता है।
पाठा खायौ पीयौ अेक नाव, मारचौ कूट्यौ अेक नाव।

खार उगटै जठै साख ई को ऊगै नीं। २१५२
क्षार पैदा होने वाली जमीन पर फसल भी नही उगती।
साख=फसल, रिश्ता।
–कडुवापन सदैव घातक होता है।
–द्वेष पैदा होने पर रिश्ते का भी ध्यान नही रहता।

खार बिना काम रौ नीं। २१५३
क्षार बिना काम का नही।
–कोई भी व्यक्ति क्रोध व जोश के बिना व्यर्थ है।
–उचित जगह पर ईर्ष्या, डाह, क्रोध व घृणा इत्यादि करना जरूरी है।

खारा खावै जकौ मीठा ई खासी। २१५४

कड़ुवा खाने वाला मीठा भी खायेगा।
–दुख के बाद सुख भी आता है।
–जी तोड़ मेहनत करने वाला बाद में सुख भी पाता है।

खारा बोली मावडी नै मीठा बोला लोग। २१५५
कड़ुवे वैन मा के और मीठे बोल जहान।
–भला-बुरा काम करने पर मा डाटती है, नाराज होती है किन्तु तमाशबीन लोग सराहना करते है।
–आत्मीय स्वजन बुरा काम करने पर बुरा भला सुनाते हैं पर दूसरे लोग क्यों कड़ुवे बनें।

खारा समद मे मीठी वैरी। २१५६
कड़वे समदर मे मीठी कुई।
–किसी दुष्ट परिवार म भली सतान हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–कुटिल कुनब मे कोई सज्जन व्यक्ति पैदा हो तब।

खारी बेल री तूमडी उण सू ई खारी। २१५७
कडवी बेल की तुम्बी उससे भी कडवी।
–दुष्ट पिता की सतान जब उससे भी अधिक कुटिल हो तब।
–वशानुगत प्रभाव अवश्यम्भावी होता है।

खारी रै चौकी लागै साकर सूनी जाय। २१५८
नमक के चौकी लगे शक्कर सूनी जाय।
–छोटी बात की चौकसी और बडी बात के लिए जिस व्यक्ति को कोई परवाह ही न हो।
–अव्यवस्था के प्रति व्यग ?
–कुटिल व्यक्ति पर तो निगरानी रखनी पडती है, पर सज्जन व्यक्तियो के लिए कैसा पहरा !

खालडा तौ खटीक नै ई सोहै। २१५९
चमडा तो खटीक जाति को ही सुहाता है।
–बुरी चीज बुरे व्यक्ति को ही सुहाती है।
–बुरा व्यक्ति बुरी चीज के लिए ही तरसता है।
–योग्यता के अनुरूप कार्य।

खालडा री देवी नै खारडा री पूजा। २१६०
चमडे की देवी को जूते की पूजा।
–जैसे को तैसा।
–जो व्यक्ति जिस योग्य हो उसके साथ वैसा ही बर्ताव होना चाहिए।
–दुष्ट व्यक्ति के साथ सद्व्यवहार उचित नहीं।

खाल पराई लाकडो जाणै भूस मे जाय। २१६१
दूसरो की खाल म लकडी भूसे की तरह घुसती है।
–अपनी छोटी सी पीडा भी मनुष्य को बहुत अधिक महसूस होती है, तथा इसके विपरीत दूसरो का बेइन्तहा दर्द भी मखौल सा लगता है।
–मनुष्य को दूसरा का दुख-दर्द कतई प्रभावित नही करता।

खाल मे खुसाल है। २१६२
अपनी अपनी योनि म सभी खुश हैं।
–अपनी योनि के अलावा किसी प्राणी को दूसरी अनुभूति कहा होती है ! इस कारण वह अपने ही हाल म खोया रहता है।
–जो व्यक्ति अपनी ही धुन मे मस्त हो।

खाल रा खुलिया कराव तौ ई थोडा है। २१६३
चमडी के जूते कराऊ तो भी कम है।
–दुख के समय अत्यधिक मदद करने वाले व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने पर इस उक्ति का प्रयोग होता है।
–कृतज्ञता प्रकट करने की एक अभिव्यक्ति विशेष।

खाली आवै, खाली सिधावै। २१६४
खाली हाथ आना और खाली हाथ जाना।
–जन्म के समय न मनुष्य कुछ भी साथ लाता है और न मृत्यु के समय कुछ भी साथ लेकर जाता है।
–मानवीय प्रपच की असारता कि व मरते समय कुछ भी साथ नही ले जा सकता।

खाली ऊखळ चोट दोरी बाजै। २१६५
खाली ओखली मे चोट मुश्किल से बजती है।
–व्यर्थ का परिश्रम कोई भी नही करना चाहता।
–झूठी शान अधिक नही चलती।

–गरीबी मे उछल-कूद का न समय न क्षमता।

खाली बासण खड़बड़ै। २१६६

खाली बरतन झनझनाते है।

–निठल्ला व्यक्ति खामखा बतियाता है।

–शामिल रखे खाली बरतन टकराते है।

–निठल्ले व्यक्ति आपस मे कलह करते हैं।

खाली बैठां उतपात सूझै। २१६७

खाली बैठने पर उत्पात सूझता है।

–निठल्लापन कलह का मूल।

–परिश्रम का महात्म्य सर्वोपरि है।

खाली मालण सू ई लड़ै कीणा साम्हो देख। २१६८

केवल मालिन से ही झगडता है, अपने धान की ओर भी देख।

कीणा=सब्जी के बदले दिये जाने वाला अनाज।

–अपने सड़े गले तथा मिलावटी अनाज का कुछ भी खयाल न करके केवल मालिन से सब्जी के लिए झगडने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

–दूसरो से कलह करने के पूर्व अपनी कमजोरियो का भी ध्यान रखना चाहिए।

–अपनी बुराई को अनदेखा करके दूसरों से झगडना उचित नही।

खाली लल्लो ई सीख्यो, दद्दो कोनीं सीख्यो। २१६९

केवल ल अक्षर ही सीखा है द नहीं।

–केवल लेना ही लेना सीखा है देना नही।

–जो व्यक्ति लेन के सिवाय किसी को देना जानता ही नही, उसके प्रति कटाक्ष।

खाली सुळिया दळै। २१७०

केवल सुला हुआ अनाज दलता है।

–खामखा की बकवास करने वाले व्यक्ति के लिए।

–निरर्थक बतियाने वाला नासमझ व्यक्ति।

खाली हाथ मूडा साम्हो नीं जावै। २१७१

खाली हाथ मुह की तरफ नही जाता।

–स्वार्थ के बिना कोई किसी का काम नही करता।

–स्वार्थ की यथोचित पूर्ति होने पर ही मन व बुद्धि मे स्फूर्ति का सचार होता है।

–स्वार्थ ही सब क्रिया-कलापो का सचालन करता है।

खाळी खटीक सू धीजै। २१७२

बकरी खटीक से ही बहलती है।

खटीक = कसाई की तरह एक जाति जो मास व चमडे का धधा करती है।

–कुटिल व्यक्ति हर किसी को सहज ही बरगला लेता है।

–बकरी की तरह नादान व्यक्ति की नादानी पर व्यग।

खावण नै खेलरो ई कोनीं अर ठकराई फोरै। २१७३

खाने के लिए तो खेलरा ही नही और ठकुराही का गुमान।

खेलरो = बरसाती ककडी काटकर सुखाये हुए टुकडे जिसको गरीब किसान अक्सर सब्जी बनाकर खाते हैं।

–खामखा बडप्पन का दिखावा करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

–जो व्यक्ति थोथी हेकडी दिखाये।

खावण नै खोखा अर पैरण नै चोखा। २१७४

खाने को कवल खोखे और पहिनने को वस्त्र चोखे।

–खाने के लाले पडने वाला व्यक्ति उजले वस्त्र पहिने तब परिहास मे इस कहावत का प्रयोग होता है।

–सामाजिक दिखावा करने वाले व्यक्ति के प्रति व्यग।

खावण नै खोखा ई कोनीं अर पीढ़ा माथै पुरसो। २१७५

खाने के लिए खोखे ही नही और पाटे पर परसो।

–हैसियत के अलावा झूठा अधिकार जतलाने वाले व्यक्ति के लिए।

–अपनी हैसियत को भूल कर जो व्यक्ति थोथा रुतबा गाठे।

खावण पीवण नै खेमली, नाचण नै नगराज। २१७६

खाने पीने को खेमली और नाचने को नगराज।

खेमली=किसी चरित्र हीन स्त्री का नाम। नगराज=किसी व्यक्ति विशेष का नाम।

–मौज करे कोई और अथक मेहनत करे कोई।

–किसी के जी तोड परिश्रम का लाभ दूसरा उठाये तब।

–जरूरत के समय काम पड़ने पर जो व्यक्ति काम आये उसे सुख के दिनों में भूलने पर परिहास में इस कहावत का प्रयोग होता है।

खावण पीवण नैं दीयाळी फूटीजण नैं छाज। २१७७
खाने पीने को दीवाली और पिटने के लिए सूप।
देखिये—उपरोक्त।

खावण में आगै, काम सूं भाग। २१७८
खाने में आगे काम से भागे।
–जो व्यक्ति खाने पीने के लिए आतुर हो पर काम के लिए पूरा जी चुराये।
–कामचोर पेटू आदमी के लिए।

खावण में चटणी सेजां में नटणी। २१७९
खाने में चटनी सेज पर नटनी।
नटणी = वेश्यावृत्ति से कमाई करने वाली जाति विशेष की स्त्री।
–जिस प्रकार खाने में चटनी की लज्जत ही अलग होती है उसी प्रकार शैय्या पर नटनी के साथ काम क्रीडा का आनंद ही निराला होता है।
–चटनी और नटनी के स्वाद की महिमा।
पाठा. *भोजन में चटणी सेजा में नटणी।*

खावण रा सांसा पावणा रा वासा। २१८०
खान-पीन की तंगी पाहुनों की रंगारंगी।
–जो व्यक्ति खाने पीने की कमी के बावजूद भी मेहमान नवाजी में अगुवाई करे उसके प्रति व्यंग।
–अव्यवहारिक व्यक्ति के प्रति कटाक्ष।

खावणो नीं तो ढुळाय देणो। २१८१
खाना नहीं तो गिरा देना।
–स्वयं का लाभ न होता देख दूसरों को भी उस लाभ से वंचित रखने वाले व्यक्ति के लिए।
–खुद का फायदा न हो तो दूसरों का क्योंकर सहा जाय?

खावता पीवतां पेट दूखै। २१८२
खाते पीते पेट दुखता है।
–जो व्यक्ति स्वयं अपने हाथों अपना अहित करे।
–आराम से बैठा व्यक्ति आगे चल कर दुख को आमंत्रित करे तब।

खायती रा गाल अर सापडती रा बाळ छाना नीं रैवै।
खाती हुई के गाल और नहाती हुई के बाल छिपे नहीं रहते।
–जो व्यक्ति व्यर्थ किसी बात को गुप्त रखने की चेष्टा करे उसके लिए।
–जिस बात को छिपा कर नहीं रखा जा सकता उसके लिए छिपाने की चेष्टा करना बेकार है।

खावतो पीवतो ढेढां री हांडियां जाय। २१८४
खाता-पीता चमारों की हंडिया के लिए ललचाये।
–चटोर व्यक्ति के लिए।
–जो व्यक्ति घर के अच्छे भोजन से संतुष्ट न होकर दूसरों के घर खाने के लिए भटकता फिरे।

खावतो-पीवतो मरै जिणरो कोई कांई करै? २१८५
खाता-पीता मरे उसका कोई क्या करे?
–साधन होते हुए भी जो व्यक्ति कष्ट उठाये उसका कोई क्या कर सकता है?
–सतर्कता बरतते हुए भी कोई काम बिगड़ जाय तो उसका क्या उपाय?

खाव आवा तो हुय जावै लांवा। २१८६
खाये आम तो हुए जाय काम।
–जो व्यक्ति अपनी हैसियत से अधिक खर्च करे उसकी दुर्दशा निश्चित है।
–अपव्ययी व्यक्ति को बाद में कष्ट उठाने पड़ते हैं।

खाव खरच सो आपरो। २१८७
खाये खर्चे सो अपना।
–खाने खरचने का सुख अपना है बाकी कुछ भी साथ नहीं चलता।
–जीवन में सुख भोगना है जितना भोग लो मरने पर सब संचित माया यहीं धरी रह जाती है।
पाठा. खावै पीवै सो आपरो।

खावै गधौ अर डडीजै कुम्हार। २१८८
खाये गधा और दडित हो कुम्हार।
—एक के कसूर की सजा दूसरे को मिले तब।
—अपराध करे कोई और दड पाये कोई।
—जो जिम्मेवार होता है, उसी को खमियाजा भुगतना पडता है।

खावै जकी थाळी मे हिगै। २१८९
खाये उसी थाली में हगता है।
—उपकारी पर ही लाछन लगाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।
—कृतघ्न व्यक्ति का स्वाभाविक घिनौनापन।

खावै जठै ई फोडै। २१९०
खाय वही फोडता है।
—जो व्यक्ति भला करने वाले ही को हानि पहुचाये।
—कृतघ्न व्यक्ति के प्रति कटाक्ष।
पाठा खावै जिणरी ई फोडै।
खावै जकी हाडी मे ई छेदका करै।

खावै जिणरी गावै। २१९१
खाये जिसका गाये।
—पालन पोपण करने वाले का यशगान करना पडता है।
—आश्रय दाता का बखान लाजिमी है।
पाठा खावै जका रो गावै।
खावै जका रो बजावै।
खाये जेंको गाये।

खावै जित्ती ई भूख , सोवै जित्ती ई नींद। २१९२
खाये जितनी ही भूख, और सोये जितनी ही नींद।
—किसी काम की सीमा मनुष्य की तृष्णा या लालसा पर निर्भर करती है।
—सतोष ही किसी आकाक्षा की सीमा निर्धारित करता है।

खावै तो ई डाकण, नीं खावै तो ई डाकण। २१९३
खाये तो भी डायन, न खाये तो भी डायन।
—एक बार बदनामी होन पर डायन न खाये तो भी उसका लांछन मिट नही सकता।
—बुरा व्यक्ति बुराई न करने पर भी बुरा समझा जाता है।
—सामाजिक प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठा के अनुरूप ही समाज मे प्रचार होता है।

खावै पीवै उणनै भगवान देवै २१९४
खाये पीये उसे भगवान देता है।
—खुले हाथ खर्च करने वाले को भगवान भी दिल खोल कर देता है।
—खर्च के अनुरूप आमदनी का जुगाड हो ही जाता है।
—कजूसी की ताडना।

खावै पूण जीवै दूण। २१९५
खाये पौन तो जीये दून।
—कम खाने से स्वास्थ्य बेहतर रहता है।
—अधिक खाना अस्वास्थ्यकर होता है।

खावै पूत, लडै भतीजा। २१९६
खाय पूत, लडे भतीजे।
—उत्तराधिकार के लिए तो पुत्र और लडने के लिए भतीजे।
—अनुचित पक्षपात।
—स्वार्थ-परक झूठी आत्मीयता।

खावै मादी रौ अर गीत गावै वीरै रा। २१९७
खाय खसम का और गीत गाये भाई के।
—खाये किसी का और गुणगान करे किसी का।
—जो नासमझ व्यक्ति गलत कृतज्ञता प्रकट करे।
पाठा खावै पीवै खसम रो, गीत गावै वीरै रा।
खावै धणी रो, गीत गावै वणी रो।

खावै मडा नै कूटीजै ढढा। २१९८
खाये मुह और पिटे ढूह।
—जानवर किसी दूसरे के खेत म मुह डालते हैं तो कमर या पुट्ठे पर मार पडती है।
—कसूर करे कोई और मार खाये कोई।

खावै मूडौ पचावै पेट, बिगडै बहू अर लाजै जेठ। २१९९
खाये मुह पचाये पेट, बिगडे बहू, लजाये जेठ।
—किसी एक की जिम्मेवारी दूसरे पर आ पडे तब।

-अपनी-अपनी सुविधा या अपनी अपनी युक्ति।

खावै मूडो लाजै आख। २२००

खाये मुह और लजाये आख।

-किसी के यहा खाना खाने पर मुह के बदले आखो को अह-सान के भार से झुकना पडता है।

-जिसकी जैसी समझ होती है वह वैसी ही जिम्मेवारी महसूस करता है।

-समझदार को भार उठाना पडता है।

खावै सूर कुटीजै पाडा। २२०१

खाये सूअर और पिटें पाडे [भैंसा]।

-किसी एक के अपराध की सजा दूसरे को मिले तब।

-किसी शक्तिशाली का कसूर गरीव के मत्थे पडे तब।

-दुष्कर्म करे कोई सजा पाये कोई।

खावो तिवार, चालो ववार। २२०२

खाओ त्योहार, चलो व्यवहार।

-अच्छा खाना तो भले ही त्योहार पर खाया जाय पर अच्छा व्यवहार तो हरदम हर किसी के साथ रखना चाहिए।

-सद्व्यवहार की महिमा।

खावो बेटा घी अर खाड, रोसी बोहरो अर बोहरा री राड।

खाओ बेटे घी और खाड, रोयेगा बोहरा व उसकी राड।

-कर्जा करो और मौज मनाओ, बोहरा बोहरी खूब आसू बहाओ।

-ऋण लेकर गुलछर्रे उडाने वाले पर कटाक्ष।

खावो मुडै बारै-वारै। २२०४

खाओ मुडे वाहर-वाहर।

-दूसरों के बल-बूते पर मौज करने वाला व्यक्ति।

-अपना घर बचाकर दूसरों के यहा ऐश करने वाले के लिए।

खासी जको तो बेटो बणनै खासी बाप बणनै को खासी नीं।

खायेगा तो कोई बेटा बनकर, बाप बनकर नही खा सकता।

-पुत्र ही पिता की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होता है। इस कारण कोई व्यक्ति पुत्र बनकर तो किसी से फायदा उठा सकता है पर धौंस जमाकर नही।

-विनम्रता से स्वार्थ-सिद्धि हो सकती है, हेकडी से नही।

-चोरी और सीनाजोरी दोनो साथ नही चल सकती।

खासो भरम हो। २२०६

काफी भ्रम था।

-जिस बडे व्यक्ति की कलई खुल जाय तब।

-अनुमान और वास्तविकता का मेल न बैठे तब।

खासो भरोसो हो। २२०७

काफी भरोसा था।

-अप्रत्याशित रूप से विश्वास टूट जाय तब।

-विश्वसनीय व्यक्ति मुह फिरा ले तब।

खाहडै कना सू पग कुण वढावै ? २२०८

जूते से पाव कौन कटाये ?

-निकृष्ट व्यक्ति के द्वारा नुक्सान कौन उठाये ?

-अधम व्यक्ति को दूर रखना ही बेहतर है।

-हीन व्यक्ति को मुह लगाने से क्षति होती है।

खाहडै सू बढचोडा रो ओखद खाहडा रो मलम। २२०९

जूते से कटे हुए का इलाज जूते का मरहम।

-जैसे को तैसा।

-नीच व्यक्ति उपदेश से नही सुधरता, बल्कि माकूल दड मिलने पर ही सीधा होता है।

खाच खाच—बाडो लाजै। २२१०

खीच खीच—बाडे की मर्यादा रख।

सदर्भ-कथा एक जाट को अपने बैलो से बेइन्तहा प्यार था। अपने प्राणो से भी बढकर हिफाजत करता था। बैल निहायत सुन्दर, हृष्ट पुष्ट व गुणो की खान थे। चौधरी को अपने बैलो पर इतना गुमान था कि वह कई बार ठाकुर के सामने उनकी बेहद प्रशसा करता। कहता कि ठिकाने के घोडे व ऊटो को उसके बैल होड मे पीछे छोड सकते हैं। ठाकुर की जब भी इच्छा हो होड करके देख लें। एक बार सयोग की बात ऐसी हुई कि रात को चोर गाडियो सहित उसके बैलो की दो जोडिया लेकर चम्पत हो गये। चौधरी को पता लगा तो वह ठाकुर के पास

गिड़गिड़ाता हुआ पहुचा। हाथ जोड कर कहने लगा : मालिक घोड़े दौड़ाकर चोरो को पकड़ना होगा मेरे घर की इज्जत के साथ ठिकाने की भी इज्जत जायेगी। ठाकुर ने कहा—पर घोडे घोडियो से तेज दौडने वाले बैलो को आखिर पकडा कैसे जा सकता है ? अब तो पश्चाताप करने के अलावा कोई चारा नही।

ज्यादा आरजू मिन्नते करने पर आखिर ठाकुर को रवाना होना पडा। गाडियो के निशान निशान दौडते घोडो ने आखिर चोरो को देख ही लिया। कुछ ही देर बाद अब तो सभी पकड जायेगे। यह सोच ठाकुर ने चौधरी से मजाक करते हुए कहा—तेरे बैलो की परख हो हो गई। अब आगे कभी डीग मत मारना

चौधरी के दिल मे तीर सा चुभा। सोचने लगा कि या तो अब घर की मर्यादा रहेगी या बाडे की। चोर पकडे जाते हैं तो बाडे की मर्यादा नष्ट होती है, नही पकडे जाते है तो घर की मर्यादा नष्ट होती है। घर की मर्यादा नष्ट हो तो हो उसे तो बाडे की मर्यादा बचानी है। अपने घोडे को एडी लगा कर वह ठाकुर से आगे निकला। चोरो के पास जाकर बोला—मेरे बैलो को हाकने की तरकीब नही जानते ? पकडे गये तो मारे जाओगे और मेरे बाडे की मर्यादा नष्ट होगी। रास खीचकर टिचकारी दो। हवा की नाई उडने लगेगे।

उस उपाय के बाद चोरो को और क्या चाहिए था। चौधरी ने ठाकुर को चुनौती दी कि वह अब बैलो को पकड ले। पर सब व्यर्थ। चोर तो देखते देखते आखो से ओझल हो गये। ठाकुर के घोडे पीछा करते रहे और फासला निरतर बढता ही गया। ठाकुर ने कहा—बावले ठेठ आकर तूने यह क्या खिलवाड किया ?

तब चौधरी ने मुस्कराते हुए कहा— जिन्दा रहा तो बैल और खरीद लूगा, पर मेरे मालिक बाडे की खोई हुई मर्यादा तो नष्ट हो ही जाती। अब पीछा करने की मन मे मत रखना।

ठाकुर ने एक गहरा निश्वास भरते हुए कहा—अब तो मन मे रह ही गई। बेकार घोडो को थकाने से कोई फायदा नही। नादान दोस्त दुश्मन से भी बदतर होता है। आज तूने उस कहावत का पूरा खुलासा कर दिया।

—कभी-कभार भौतिक हानि से अभौतिक मर्यादा का मोल कही हजार गुना ज्यादा होता है।

—सारी बातें हानि-लाभ की तुला पर ही नही तोली जाती।

खांट गाय आपरौ दूध कोनीं देवै, दूजो रौ ढोळाय दे।

बदमाश गाय अपना दूध तो देती नही, दूसरी का गिरा देती है।

—दुष्ट व्यक्ति खुद तो किसी काम का नही होता, पर वह दूसरो को भी लाभ पहुचाने मे रोडे अटकाता है।

—क्या मजाल कि दुष्ट या बड व्यक्ति अपने वश रहते किसी का लाभ होने दे।

पाठा खाट आप तौ न चै, बीजी रौ ई ढुळावै।

खांड खाया गाड गळै। २२१२

खाड खाने से गाड गलती है।

—अधिक मीठा खाना हानिकर होता है।

—अपव्यय से आर्थिक स्थिति बिगडती है।

खाड गळै जद सगळा आवै, गाड गळै तद कुण ई नीं आवै।

खाड गलने पर सब आते हैं, गाड गलने पर कोई नही आता।

—मौज व सुख के सब सगाती है, दुख मे कोई पास नही फटकता।

—ऐश आराम के समय अनचाही भीड हो जाती है पर दुख मे चाहने पर भी कोई नही आता।

पाठा खाड गळी रा सै सीरी, रोग गळी रौ कुण काई।

खाडै खाडै पिंडत। २२१४

खडे खडे पडितम्।

—खडित-खडित अक्षर सीखने से ही कोई व्यक्ति पडित हो जाता है।

—टूटे फूटे अक्षरो को नित्य प्रति जोडने से ही पारगत होना सभव है।

खाड मे खायौ जाय नीं गुळ मे खायौ जाय। २२१५

खाड मे खाय जाया न गुड मे खाया जाय।

—जो विनम्र स्वार्थी जैसे-जैसे अपना काम बना लेता हो उसके लिए इस उक्ति का प्रयोग होता है।

-जो चापलूस व्यक्ति मतलब के समय पात्र पकड़कर सामने वाले को असमंजस में डाल दे तब उसको सबोधित करके यह कहावत काम में लाई जाती है।

खाँडै री धार। २२१६
तलवार की धार।
-सचाई की राह तलवार पर चलने के समान ही दुश्वार है।
-सत्य का पालन करना बड़ा मुश्किल है।

खाचौ अर ओढ़ौ। २२१७
खींचो और तानो।
-अपने काम की जिम्मेवारी आप ही संभालना।
-दूसरों के झंझट में न पड़ने पर इस कहावत का प्रयोग होता है कि अब वह स्वयं खींचे और ताने।

खाण व्है जैड़ा नीपजै। २२१८
खान हो जैसी उपज।
-जैसे मा-बाप वैसी सन्तानें।
-बुरों के बुरे ही पैदा होते हैं।

खाणो खलका रो पण पेट तो आपरो है। २२१९
खाना तो दूसरों का पर पेट तो अपना है।
-जिस स्वार्थ से स्वयं का नुकसान हो ऐसा काम नही करना चाहिए।
-लोभ वश ऐसा काम नही करना चाहिए, जिससे खुद को परेशानी हो।

खाणो नीं तो ढोळाय देणो। २२२०
खाना नहीं तो गिरा देना।
-स्वयं का लाभ न हो तो दूसरों को भी उससे वंचित रख देना।
-कोई दूसरा भी लाभ क्या उठा ले ?

खाणो प्रेम रो हो भलाई जैर ई। २२२१
खाना प्रेम का हो भले जहर ही।
-प्रेम विहीन पक्वान्न भी फीके पर प्रेम का साधारण खाना भी श्रेष्ठ होता है।
-प्रेम का महात्म्य।

खाणो मन भातो, पैरणो जग भातो। २२२२
खाना मन सुहाना, पहिनना जग सुहाता।
-जैसा रुचे व पचे वैसा खाना चाहिए और जैसा दूसरों को सुहाये वैसा पहिनना चाहिए।
-प्रत्येक कार्य का अपना अलग ही औचित्य होता है।
पाठा: खाणो पेट सुहातो, पैरणो जग सुहातो।

खाधा माथै घाघरो नै घूंघटो काढै। २२२३
कंधे पर लंहगा और घूंघटा निकाले।
-झूठी लज्जा का व्यर्थ दिखावा।
-नासमझी का भोलापन।

खाधिया किणी रै भाडै नीं आवै। २२२४
कंधा देने वाले किराये पर नहीं आते।
-मृत्यु पर लोग अपने आप इकट्ठे हो जाते हैं।
-हर बात पैसे के जोर पर नही होती।
-कैसे भी बड़े आदमी का वक्त पर किसी साधारण आदमी से काम पड़ता ही है।

खाधिया खांध दे भेळा नीं बळै। २२२५
कंधा देने वाले कंधा देते हैं, साथ नहीं जलते।
-एक सीमा तक वांछित सहयोग दिया जा सकता है, उसके आगे तो खुद की पीड़ा खुद ही को भोगनी पड़ती है।
-हर सहयोग की एक सीमा होती है।
पाठा: खाधिया थोड़ा ई बळै।
खाधिया कोनीं बळै।

खांधै कस्सी तो उधार किसी ? २२२६
कंधे कस्सी तो उधार कैसी ?
कस्सी = निराई करने व जमीन की हल्की खुदाई करने के लिए लम्बे डंडे एक औजार विशेष।
-जो रोकड़ पैसे देगा उसी के काम पर मजदूर जावेगा।
-मजदूरी करके पेट भरने वाले के लिए उधार कैसी!
-नकद पैसा और नकद मजदूरी।

खांधै खांपण। २२२७
कंधे पर कफन।
-जिस व्यक्ति को मरने की कतई चिंता न हो।

-सिर पर कफन बांध कर चलने वाला निडर व्यक्ति।

खांधै दीवा बळदा मैं भार। २२२८
जुआ धरने पर बैलों को भार।
-एक बार गाडी में जुतने पर सारा भार बैलों ही को ढोना पडता है।
-जिम्मेवारी सौंपने पर उसका भार वहन करना तो अवश्यम्भावी है।

खाधो देय वाधो करचौ। २२२६
कंधा देकर झंझट किया।
-थोडा उकसा कर संकट में डाल दिया।
-अधूरा सहयोग देकर छोडने वाले व्यक्ति के लिए।

खांधै छोरौ गांव ढिंढोरौ। २२३०
कंधे पर लडका, गांव में ढिंढोरा।
-पास रखी हुई चीज को अन्यत्र खोजना।
-खामखा की परेशानी उठाने वाले व्यक्ति के लिए।
पाठा : खाक म छोरौ, गांव में हेरौ।

खानजादा खेती करै तेली चढै तुरंग। २२३१
खानजादे खेती करें, तेली चढे तुरंग।
-योग्य व्यक्ति व्यर्थ का कष्ट उठाये और अयोग्य व्यक्ति मौज करें तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।
-दिनमान का टेढा चक्कर।

खान-बवाडी माथै जोवौ। २२३२
खान-बावडी पर देखो।
-ऐसे बेवकूफ और कहीं तलाश करना।
-ऐसे गंवार शिकारपुर में देखना।
-जो व्यक्ति हर किसी को बेवकूफ बनाना चाहे तब परिहास में इस उक्ति का प्रयोग होता है कि ऐसे नादान और कहीं ढूंढना।

खामचण रौ बुगच्यौ व्है ज्यूं। २२३३
कारीगरिन के बुगचे की तरह।
बुगचौ = पहिले कपडे रखने के लिए पेटी या मंजूस की जगह कपडे का त्रिकोण थैला सा काम में लाया जाता था। कलावंत औरतें बडी मेहनत से उस बुगचे पर सुरंगा काम करती थी।
-जो व्यक्ति हरदम साफ-सुथरा व बना ठना रहता हो।

खांम दिया खीच सीझै। २२३४
खाम देने पर ही खीच पकता है।
खाम = किसी बर्तन को चारों ओर से इस तरह बंद कर देना ताकि उसकी भाप रंचमात्र भी बाहर न निकले। आधुनिक कुकर के पहिले इस तरह खाम देने से इसकी पूर्ति हो जाती थी।
-पूरी युक्ति करने से ही कोई चीज काबू हो पाती है।
-मजबूरी की घुटन अन्दर ही अन्दर सारे शरीर को क्षीण कर देती है।

खामोडी भेळो ई गियौ। २२३५
कुआ सींचने वाला साथ ही गया।
खामोडौ = रहट के अलावा कुएं से पानी निकालने की एक क्रिया विशेष में बैल हांकने वाला। जो बैलों के पीछे लम्बी लाव पर बैठा हुआ बैलों को हांकता है। कभी-कभी दुर्घटना में हाथ से लाव छूटने पर हांकने वाला लपेट में कुए के भीतर जा गिरता है।
-हिमायती व सहयोगियों सहित सभी की एक साथ बर्बादी होना।

खा साब बळीतौ फाडौ के श्रो कांम काफर रौ। २२३६
खा साब खीचडी खावौ के बिसमिल्ला।
खान साहब लकडियां फाडो कि यह काम काफिर का।
खान साहब खिचडी खाइये कि बिसमिल्लाह।
-मेहनत या कठिन काम के लिए बहाने बनाना और लाभ के काम की खातिर तुरत तैयार हो जाना।

खि-खी

खिजूर खाय सो झाड चढै । २२३७
खजूर खाये सो पेड चढे ।
–ऊचाई से खजूर तोडना काफी कठिन होता है , पर जिसे खाने की लालसा हो तो उसे वह जोखिम उठानी ही पडती है ।
–जिसे लोभ हो वह खतरा मोल ले ।

खिणता-खिणता जलम गमायो बाबोजी उखरडो लगायो ।
खनते खनते जनम गमाया, बाबाजी न घूरा लगाया ।
–जो व्यक्ति सारी उम्र व्यर्थ प्रयास करे उसके लिए ।
–जिस काम का कोई परिणाम न निकले ।
–व्यर्थ जीवन गवाने वाले के लिए ।

खिणसी सो पडसी । २२३९
खोदेगा वही गिरेगा ।
–जो दूसरो के लिए गड्ढा खोदेगा वही उस मे गिरेगा ।
–दुष्कर्म का बुरा फल मिलकर ही रहता है ।
–जो जैसा करेगा , वैसा फल पायेगा ।
पाठा : खिणै जको पडै ।

खिणयो डूगर निकळयो ऊदर । २२४०
खोदा पहाड निकली चुहिया ।
–बहुत बडे परिश्रम का अकिंचन फल ।
–लम्बा-चौडा आयोजन एक दम व्यर्थ हो जाय तब ।
पाठा : खोदयो डूगर काढयो ऊदर ।

खिरी काकडी कानो खावै , मोर फुटावण मुकनो जावै ।
पकी हुई ककडी कन्हैया खाय , मार खान मुकना जाय ।
–चोरी करके लाभ कोई उठाय और बदले म सजा कोई पाये ।
–बच्चो की गलती का खमियाजा बुजुर्गों को भोगना पडता है ।

खिडियोड़ा दाणा चुग्यां सूं सारो लागै नीं । २२४२
बिखरे हुए दानो बीनने से कुछ गर्ज नही सरती ।
–फसल बर्बाद होने पर जमीन मे बिखरे दानो को बीनने से पूर्ति नही हो सकती ।
–यथायोग्य परिश्रम मे ही वाछित फल मिलता है ।
–व्यर्थ की मेहनत से बात नही बनती ।

खीच लारै लाटो इज आवै । २२४३
खीच के पीछे कड्छी ही आती है ।
–गाली देने पर वापस गाली ही सुनी आती है ।
–जैसे का तैसा ।
पाठा : खीच माथै लाटो । खीच ऊपर लाटो इज व्है ।

खीचड खायो पेट कुटायो थारा राज मे काई सुख पायो ?
खीच खाया , पेट कुटाया, तेरे राज म क्या सुख पाया ?
–किसी हतभागिन दुखी स्त्री का अपन पति का उलहना ।
–पीडित प्रजा की अपन राजा के लिए अतर्वेदना ।

खीचडी खावतां ई पुणचो उतरै । २२४५
खिचडी खान पर भी पहुचा उतर जाता है
–अत्यधिक निर्बल व्यक्ति के लिए ।
–बेहद नजाकत वाले व्यक्ति के लिए ।
–सहयोग व आराम देन पर भी जो व्यक्ति उल्टा अहसान जतलाये ।

खीचडी खूटगी तौ ई कडाव रौ पैदो है । २२४६
खिचडी खतम हो गई तो भी कडाव का पैदा है ।
–किसी बडे आदमी की आर्थिक स्थिति गिर जाने पर भी साधारण व्यक्ति से तो वह हर हालत म तडक्क होता है ।
–बडे आदमियो के पास सब कुछ समाप्त होन पर काफी कुछ शेष रह जाता है ।

खीमत खावै सो बडो व्है । २२४७
क्षमा करने वाला सदा ही बडा होता है ।
–गम खान वाला व्यक्ति श्रेष्ठ होता है ।
–क्षमा की महिमा ।

खीर खीचडी मदी आंच । २२४८
खीर व खिचडी मदी आच स ही अच्छी बनती है ।

–बहुत से कार्य धैर्य से ही सुधरते हैं।
–जल्दबाजी से अच्छी बात भी बिगड जाती है।

खीर बिगड्यो तौ ई खाटा मू माडी कोनीं। २२४९
खीर बिगड जाय तो भी खट्टी से बुरी नही।
–कुलीन व्यक्ति बिगड भी जाय तो सामान्य व्यक्ति स बडा ही होता है।
–गुणवान व्यक्ति आखिर तक अपने गुण नही छोडता।

खीर मे मूसळ। २२५०
खीर म मूसल।
मूसळ=ओखली म अनाज कूटने वाला एक उपकरण।
–खामखा का व्यर्थ काम।
–निरर्थक उपक्रम।

खीरां उतरी खीचडी, टीलो आयो टप्प। २२५१
खिचडी पकी और हुजूर आला हाजिर।
–जो व्यक्ति काम के समय दूर तथा लाभ उठाने के लिए सबसे आगे रहे।
–बन्दर के समान चालाक व्यक्ति जो अपना स्वाथ पूरा करने म कभी न चूके और काम के समय मुह तक न दिखाये।

खीरा म्हारी, तवै थारी। २२५२
अगारा पर मेरी, तवे पर तेरी।
–तवे से पहिले अगारो पर रखी रोटी सिकती है। अतएव जो व्यक्ति सबसे पहिले स्वार्थ सिद्धि का उपाय करे उसके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।
–स्वार्थी मनुष्य की प्रवृत्ति।

खीरा मायं खेती। २२५३
अगारो पर खेती।
–अगारो पर धरी रोटी जल्दी उठाले तो कच्ची रह जाय और ज्यादा रखे तो जल जाय।
–ऐसा कठिन कार्य जो ध्यान चूकते ही बिगड जाय।
–अत्यत सतर्कता बरते जाने वाला काम।

खीसा तर तौ भावै ज्यू कर। २२५४
जेब तर तो इच्छा हो सो कर।
–पास मे पैसा हो तो कोई काम दूभर नही।
–रुपया ही सब इच्छाओ की पूर्ति का एक मात्र साधन है।

खीसै मे काणो तौ सै बजार थाको।
कणै कोनीं फाको तौ टकटक झाको। २२५५
जेब मे जोर तो रात का ही भोर।
जेब खाली तो करो हमाली।
–पैसा ही सब कुछ है।
–रुपये की महिमा को भला कौन चुनौती दे सकता है ?

खीसै मे नीं टक्का तौ बाप खाय धक्का। २२५६
जेब म नही टक्का तो बाप खाये धक्का।
–पैसे के अभाव म किसी की प्रतिष्ठा नही रहती। बडे-बुजुर्गों को भी दर दर भटकना पडता है।
–पैसे के बगैर कोई आदर नही।

खींचो मत कबान, छोड़ो मत जबान। २२५७
खीचिये न कबान, छोडिये न जबान।
–कबान से छूटा तीर व जीभ स निकला बोल वापस लौटाया नही जा सकता। इसलिए कोई भी काम बहुत सोच-विचार कर करना चाहिए।
–जल्दबाजी घातक होती है।

खींपडा रा तौ नोडिया ई नीरसी। २२५८
खीप का तो रस्सा ही बनेगा।
खीपडो = बिना पत्ता की एक जगली झाडी, जिसके पत्ते नही होते। मोटे धागे की तरह निहायत पतली पतली टहनिया होती हैं। उसे तोड कर मोटा रस्सा भी बनाया जाता है।
–गरीब व्यक्ति को सभी कसकर दबाते हैं।
–जो व्यक्ति जिस योग्य हो उसे वही काम सौंपना चाहिए।
–जो वस्तु किसी खास उपयोग मे न आये।

खींपडा रै तौ खींपोडिया ई लागसी। २२५९
खीप के तो खीपोड ही लगेंगे।
–गरीब के घर तो गरीब ही पैदा होता है।
–गरीब के घर जन्मा तो दुख ही उठायेगा।
–नकम्मे बाप की निकम्मी औलाद।

खु-खू

खुड़को हियो अर चोर भरणाटं । २२६०
आहट हुई और चोर घात ।
–चोर या अपराधी का मन बहुत ही कमजोर होता है ।
–अपराधी के मन में प्रतिक्षण आशंका बनी रहती है ।

खुणा री भाटो पीजणियां मांगं । २२६१
कोन का पत्थर गाड़ी को तोड़ना है ।
–जो व्यक्ति हर काम में विघ्न डाले उसके लिए ।
–दुष्ट व्यक्ति सदा नुकसान ही पहुंचाता है ।

खुणी रो गुळ । २२६२
कोहनी लगा गुड़ ।
–कोहनी पर लगा हुआ गुड़ नजर तो आता है पर खाया नहीं जाता ।
–दिखती हुई आशा जो कभी पूरी नहीं होती ।
–पूरी न होने पर भी जो आशा कभी समाप्त न हो ।

खुद ई नाचं, खुद ई वारणा लं । २२६३
खुद ही नाचे, खुद ही बलैया ले ।
– अपने काम की अपने ही मुंह से प्रशंसा करना ।
–अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना ।
–जो व्यक्ति खुद ही अपनी तारीफ करे ।

खुद री फजीत, दूसरां नसीत । २२६४
खुद की फजीहत, दूसरों को नसीहत ।
–अपनी बदनामी दूसरों के लिए नसीहत का काम करती है ।
–जो बदनाम व्यक्ति दूसरों को नसीहत झाड़े ।

खुद रं तो तिणकला री ई तबोड़ो अर दूजां रं मूठ रा मूळ पजावं । २२६५
खुद के लिए तो तिनके की चुभन और दूसरों के लट्ठ घुमाये ।
–जिस व्यक्ति के लिए अपना अकिंचन दर्द भी असह्य हो और जो दूसरों को बेइन्तहा कष्ट पहुंचाये ।

खुदा जेहड़ा फरेस्ता । २२६६
खुदा जैसे फरिश्ते ।
–जैसा राजा वैसे दरबारी ।
–कोई किसी काम का नहीं ।
–जैसे मालिक वैसे चाकर ।

खुदा थारी खुदाई, मारं ही गधो अर मरगी गाई । २२६७
खुदा तेरी खुदाई, मरनी थी गधी और मर गई गाय ।
संदर्भ कथा : एक हकीम के पास कुम्हार का घर था । हकीम दिन-भर दवा दारु करके रात को घर लौटता तो कुम्हार की गधी जब-तब चीभो करती रहती । थके हुए हकीम की नींद उचट जाती । आखिर उसने हैरान होकर खुदा से फरियाद की कि कुम्हार की गधी को मार डाले । पर हुआ उल्टा । दूसरे दिन हकीम की गाय मर गई । तब हकीम खुदा के प्रति उलाहना प्रकट करता हुआ बड़बड़ाने लगा—वाह रे खुदा, जैसा तू वैसी तेरी खुदाई । गधी को मारने की फरियाद की और तूने मेरी गाय मार डाली ।
–जब कोई बड़ा आदमी आशा के विपरीत काम करे तब ।
–लाभ के बजाय जब कोई बड़ा आदमी हानि पहुंचा दे तब ।

खुदा देसी तो छप्पर फाड़नं देसी । २२६८
खुदा देगा तो छप्पर फाड़ कर देगा ।
–खुदा मदद करना चाहे तो किसी भी तरह कर सकता है, उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं ।
–भाग्य पर अटल विश्वास ।
–मेहनत की बजाय तकदीर व खुदा पर अधिक आस्था रखना ।

खुदा री महर तो लीला लहर । २२६९
खुदा की मेहर तो सरसब्ज लहर ।
–खुदा की मेहरबानी हो तो सब ठाट ही ठाट है ।
–सिर पर भगवान का वरद हस्त होने पर कुछ भी कमी नहीं रहती ।

खुर ताती, खर माती । २२७०
खुर ताता, खर माता ।
–गधा एक ठौर नहीं चरता, वह चलता फिरता ठौर ठौर

घास चरता है।
–खुर तेज हो तो गधा मोटा हो जाता है।
–परिश्रम करने वाला व्यक्ति जैसे-तैसे अपना पेट भर लेता है।

खुरचण ई को छोडी नीं। २२७१
खुरचन भी नही छोडी।
खुरचन = पकाते समय पेंदे से चिपकी हुई भोज्य सामग्री।
–जो अकर्मण्य व्यक्ति बैठा बैठा सब चट कर जाय।
–खाने के बाद कुछ भी पीछे नही बचे तब।

खुरसांण चढाया ई धार आवै। २२७२
खुरसान चढाने पर ही धार लगती है।
खुरसाण = धार लगाने का औजार।
–किसी व्यक्ति को सिरली चढाकर उकसाना।
–रगड खाने से ही आदमी तेज होता है।
–अनुभव के घर्षण से ही कोई व्यक्ति तीक्ष्ण होता है।

खुल्ला खाता। २२७३
खुले खाते।
–जहा निसकोच ग्राना-जाना हो।
–रचमात्र भी लाग-लपेट न होना।
–जो बात सर्व विदित हो।

खुल्लै किंवाड़ां पोल घसै। २२७४
खुले दरवाजो से पोल घुसती है।
–जहा देखरेख नही होती वहा घोटाला होना है।
–माकूल व्यवस्था के बिना सब गडबड हो जाती है।

खुसामद किणनै खारी लागै। २२७५
खुशामद किसे कडुवी लगती है।
–खुशामद मे एक ऐसा मिठास है कि वह सब को मीठी लगती है।
–हर व्यक्ति खुशामद पसद होना है।

खुसामद खरो रुजगार। २२७६
खुशामद खरा रोजगार।
–खुशामद से सब काम हल होने हैं।
–खुशामद करने वाले व्यक्ति को हर क्षेत्र मे सफलता मिलती है।

खूट्योड़ा री कमाई खलका खाए। २२७७
गये-गुजरे की कमाई दूसरो के लिए।
–पुरुषार्थहीन व्यक्ति को लोग लूट-खसोट कर खा जाते हैं।
–मूर्खो का माल मसखरे उडाते हैं।

खूट्योड़ो किराड चोपड़ा बाचै। २२७८
दिवालिया सेठ बही-खाते बाचता है।
–हारा हुआ व्यक्ति जैसे-तैसे अपना मन बहलाता है।
–कोई भी अन्यत्र चारा न रहने की मजबूरी।

खूट्यो बांण्यो जूना खत जोवै। २२७९
दिवालिया सेठ पुराने बही-खाते टटोलता है।
देखिये—उपरोक्त

खूटी री बूटी नीं। २२८०
आयु बीतने पर कोई औषधि नही।
–मौत का कोई उपचार नही।
–दुर्भाग्य टल नही सकता।

खूटै खानजादा तो लूटै पीरजादा। २२८१
खूटें खानजादे तो लूटें पीरजादे।
–राज्य सत्ता कमजोर होने पर धर्म के मुस्तडों की बन आती है।
–राजा की कमजोरी का लाभ दरबारी उठाते हैं।

खून रै बदळै फांसी। २२८२
खून के बदले फांसी।
–यथायोग्य प्रतिकार।
–जैसा अपराध वैसी सजा।

खूटा री पेठ बिकै। २२८३
खूटे की साख बिकती है।
–कुलीनता का मोल है।
–प्रतिष्ठा छिपी नही रहती।

खूटा रै बळ बाछड़ो कूदै। २२८४

खूटे के बल बछिया नाचे ।
–दूसरे के जोर पर हेकडी दिखाना।
–जो व्यक्ति दूसरो की ताकत पर उछल-फाद करता हो।
–पीछे जोर हो तो कोई व्यक्ति मनमानी कर सकता है।

खूटी सारू मेल पाड़णो । २२८५
खूटी के लिए महल गिराना।
–अकिंचन स्वार्थ की पूर्ति के लिए बडा नुकसान करना।
–अपने अदने से मतलब के लिए किसी को घातक हानि पहुचाना।

खूटी हार गळे, बीजो हूं करै ? २२८६
खूटी हार निगल जाय तो दूसरा क्या करे ?
–दुर्भाग्य का कोई उपाय नहीं।
–रक्षक ही भक्षक हो जाये तो दूसरा कौन बचा सकता है ?
–आश्रयदाता ही जब क्षति पहुचाये तो फिर निस्तार ही क्या ?

खूटो अर खावो । २२८७
चूटो और खाओ।
–गिरी हुई आर्थिक स्थिति को ध्यान मे रखते हुए उसके अनुसार अपना काम चलाना।
–जैसे-तैसे गुजारा करना।
–अपने हाथो कमाई करो और अपना गुजर-बसर चलाओ।

खूटो कोरड़ो किणरै हाथ है ? २२८८
खूटा व चाबुक किसके हाथ है ?
–अधिकार व सत्ता एक हाथ से दूसरे हाथ म बदलती रहती है।
–प्रभुत्व परिवर्तशील है।
–समय के साथ मिलकियत के अधिकारो मे बदलाव अवश्यम्भावी होता है।

खूटो चोखो चाहीजे । २२८९
खूटा अच्छा चाहिए।
–सहारा मजबूत चाहिए।
–नियत्रण अच्छा होना चाहिए।

खूसड़ा कना सू पग नीं वढावणो । २२९०
फटे जूते से पाव कौन कटाये ?
देखिये—क स. २२०८

खेड़ा री लूकी बाघ नै डरावै । २२९१
बस्ती की लोमडी बाघ को डराती है।
–परिचितो के बीच कमजोर भी बहादुरी दिखाता है।
–अपने गाव मे कायर भी शूरवीर का सामना करने को तैयार हो जाता है।
मिलाइये—क. सं. ४४५

खेड़ा व्है जठै चेडा व्है । २२९२
बस्ती के बीच प्रेत भी होते हैं।
–बस्ती मे अच्छे बुरे सभी आदमी बसते हैं।
–प्रत्येक गाव मे कोई न कोई दुष्ट व्यक्ति तो होता ही है।

खेड़ा व्है जठै झगड़ा सदा ई व्है । २२९३
गाव होता है वहा झगडे भी होते हैं।
–जहा आबादी होगी, वहा फसाद भी होगा।
–शामिल बसने पर कुछ न कुछ रजिश होकर रहती है।

खेजड़ पीपळ अेकण थाणे, औ हथळेवो बडै ठिकाणै । २२९४
खेजडी व पीपल एक ही घेरे मे, यह पाणिग्रहण बडे ठिकाने मे।
–बडे आदमियो की बुराइया नही देखी जाती।
–बड़े आदमियो पर कैसा अकुश, वे कैसा भी अनहोना काम कर सकते हैं।
–बडे आदमी के सहवास पर कैसा नियत्रण ?

खेजडा पडी नै ठै । २२९५
खेजडी से गिरी और बस !
–ऊपर से गिरने के बाद कोई बचाव नही, सीधा नीचे।
–पतन की राह कैसी रुकावट !

खेत अर माथा वदै ई सळिया को व्है नीं । २२९६

खेत व सिर कभी साफ नही हो सकते। एक बार साफ करने पर कभी न कभी अनचाही चीज वहा मिल ही जाती है।
–जिन्दगी मे कुछ न कुछ उलझन बनी ही रहती है।
–जीवन के झझट कभी नही मिटते।

खेत खावौ कमेडा पाचा रोटां काम। २२९७
खेत खाये चिडिया, पाच रोटी से काम।
–अपनी बला से मालिक का नुकसान हो तो हो, नौकरो को तो पेट भरने से मतलब है।
–जो व्यक्ति अपने स्वार्थ की खातिर गैर जिम्मेवारी बरते।

खेत नै खावै गेली अर मोडै नै खावै चेली। २२९८
खेत को खाये गेली और साधु को खाये चेली।
गेली=खेत के बीच होकर जाने वाली राह।
–कमजोरी की तो राह ही बुरी, नुकसान होकर ही रहता है।
–कमजोरी मौका मिलते ही प्रकट होती है।

खेत बडौ अर घर सांकडौ। २२९९
खेत बडा और घर सकडे ही अच्छे।
–खेत बडा हो तो उपज ज्यादा होती है और घर सकडा हो तो सफाई व देख रेख ठीक होती है।
–खेत दूर दूर तक फैला हुआ हो तो अच्छा और आत्मीय-जन नजदीक-नजदीक बसे हो तो अच्छा।
–अपने अपने काम की अपनी अपनी अलग ही उपयोगिता होती है।

खेत बिगडै तौ खाद सू सुधरै, पण बिगडियोडी औलाद कीकर सुधरै! २३००
खेत बिगडने पर खाद से सुधार हो सकता है, किन्तु बिगडी हुई औलाद क्योकर सुधरे!
–औलाद के बिगड जाने पर उसके सुधार का कोई रास्ता नही।
–मनुष्य को चाहिए कि वह सतान की खातिर प्रति क्षण सतर्क रहे।

खेत मे वाळौ घर घर मे साळौ खोटौ व्है। २३०१
खेत मे नाली और घर म साली बुरी होती है।
देखिये—क स. २२९८

खेत मे व्है सौ खळै आवै। २३०२
खेत मे हो सो खलिहान मे आये।
–आमद होने पर ही खर्च का जुगाड होता है।
–घर मे हो तो जेब मे आये।
–खजाने मे धन हो तो प्रशासन मे काम आये।
मिलाइये—क स २००५

खेत राखै बाड नै, बाड राखै खेत नै। २३०३
खेत रखे बाड को, बाड रखे खेत को।
–जिन का स्वार्थ एक दूसरे पर निर्भर करता हो उन्हें परस्पर एक दूसरे के स्वार्थ की रक्षा करनी चाहिए।
–दूसरो के स्वार्थ की रक्षा करने से अपने स्वार्थ की स्वय-मेव रक्षा हो जाती है।

खेत रै अडवा री गळाई। २३०४
खेत के अडवे की तरह।
अडवौ = खेत की रखवाली के लिए लकडियो के ढाचे पर कपडे पहिना कर आदमी का भ्रम पैदा करने वाली आकृति।
–जो व्यक्ति न स्वय लाभ उठाये और न दूसरो को उठाने दे।
–बेडौल व्यक्ति के लिए।

खेतार री खेळी मे मूडौ धोयौ। २३०५
खेतार के कुड म मुह धोया।
खेतार = रेगिस्तान म बसा एक गाव विशेष जहा पानी की भीषण कमी है। इसलिए वहा के कुड मे मुह धोने का प्रश्न ही नही उठता।
–जो अयोग्य व्यक्ति बडा काम करने की ललक दिखाये तब परिहास मे यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–खामखा का जोश दिखाने वाले व्यक्ति के लिए।

खेती करै न विणज नै जाय विद्या रै बळ बैठौ खाय।
खेती करे न दिसावर जाय, विद्या के बल बैठा खाय।
–पढा लिखा व्यक्ति मजे मे अपनी गुजर बसर करता है। उसे न खेती की जरूरत और न व्यापार की।
–विद्या का महात्म्य खेती व व्यापार दोनो से बढकर है।

खेती जंड़ा दांणा । २३०७

खेती जैसे दाने ।

–जैसी मेहनत वैसा फल ।

–मेहनत के अनुरूप परिणाम ।

खेती सूख्यां बिरखा काई कार री ? २३०८

खेती सूखने पर वर्षा किस काम की ?

–समय पर किया हुआ सहयोग ही फलदायक होता है ।

–समय बीत जाने पर किया हुआ सहयोग निरर्थक है ।

खेती हारचा कोई जमारो थोड़ी ई हारचा । २३०९

खेती हारे कोई जिंदगी तो नही हारे ।

–एक बार की हार से निराश नही होना चाहिए, जिंदगी बहुत लम्बी है ।

–मनुष्य को किसी भी परिस्थिति मे निराश नही होना चाहिए ।

–निराश व्यक्ति को ढाढस बधाने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

खेबली सासू अर अेबली बहू राम रूसै तो मिळै । २३१०

भ्रष्ट सास और बदमाश बहू राम रूठे तो मिले ।

–दुहरा दुर्योग बडा घातक होता है ।

–दुर्भाग्य से ही उपरोक्त सयोग घटित होता है ।

खेम-खुसळ कैंडी, जठै वाड खेत नै खाय । २३११

क्षेम कुशलता कैसी, जहा बाड खेत को खाये ।

–जब रक्षा करने वाला ही विनाश करने लगे तो फिर कैसी कुशलता ?

–रक्षक ही भक्षक हो जाये तो शाति कैसी ।

खेमली खिलकां री भूखी । २३१२

खेमली तमाशो की भूखी ।

खेमली = खिलवाड करने वाली किसी स्त्री का नाम विशेष ।

–जो व्यक्ति दूसरो के झगडे को तमाशबीन की तरह देखे ।

–जो व्यक्ति खिलवाड-खिलवाड मे दूसरो के लिए कलह पैदा करे ।

पाठा : खेमलो खिलका री भूखो ।

खेमला खीर मीठी के खावै सो जांणै । २३१३

खेमला, खीर मीठी कि खाये सो जाने ।

खेमलो = एक नाम विशेष ।

–जो व्यक्ति जिस चीज से वचित हो वह उसका स्वाद क्या जाने !

–किसी गरीब व्यक्ति से सुख तथा ऐश्वर्य की पूछताछ करने पर वह परिहास मे इस उक्ति का प्रयोग करता है ।

खेरणी मे दूवै अर भाग नै भांडै । २३१४

चलनी में दुहना और भाग्य को कोसना ।

–स्वय अपने हाथ से बेहूदा काम करने के बाद फिर परिणाम के लिए भाग्य पर दोष मढना ।

–गलत काम करके भाग्य की दुहाई देने वाले व्यक्ति के लिए ।

पाठा खेरणी मे दूवै अर करमा नै दोसण देवै ।

खेल खतम पीसा हजम । २३१५

खेल खतम पैसा हजम ।

–खेल-खेल मे उल्लू सीधा करना ।

–बातों ही बातो से अपना काम बनाना ।

खेल खेलारा रा, घोड़ा असवारां रा । २३१६

खेल खिलाड़ियो के और घोडे घुडसवारो के ।

–किसी भी काम मे प्रवीण होने पर ही सफलता मिलती है ।

–साहसी व अनुभवी व्यक्ति के लिए सफलता सुनिश्चित है ।

खेल मती जुवा, कूद मती कुवा । २३१७

खेलिये न जुआ, डाकिये न कुआ ।

–उपरोक्त दोनों ही बातें त्याज्य हैं ।

–बुरे *काम से बचना ही श्रेयस्कर* है ।

खेळी कोठा मे पांणी कूवा सू ई आवै । २३१८

हौज-कुड मे पानी कुए से ही आता है ।

–आमदनी के एक स्रोत से ही खर्च की सारी पूर्ति होती हो ।

–आमदनी का केन्द्र एक और खर्च के मद अनेक ।

खेळी धोयां ई कादो निकळै । २३१९

कुड धोने पर भी कीचड निकलता है ।

–सभी चीजों को स्वच्छ रखने वाले पानी मे भी धीरे-धीरे गदगी का शुमार होने लगता है।
–समय गुजरने के साथ अच्छी चीज मे भी बुराई पैदा हो जाती है।

खेरणी सूई नें हसै। २३२०
चलनी सूई पर हसती है।
–सहस्र छेदों वाली चलनी एक छेद वाली सूई पर लाछन लगाती है।
–आकठ बुराइयो मे डूबा मनुष्य जब मामूली सी गलती करने वाले व्यक्ति का मखौल उडाये तब।

खे देख'र घोडा मत वाळो। २३२१
खेह देख कर ही घोड मत लौटाओ।
–सामने केवल गर्द उडती देख कर ही अपने घोडो को वापस मत मोडो। बहुत सभव है वह केवल वातचक्र ही हो।
–केवल आशका मात्र से भयभीत नही होना चाहिए।

खेर रो खूटो। २३२२
खेर का खूटा।
खेर = एक प्रकार का वृक्ष विशेष, जिसकी लकडी बेइन्तहा मजबूत होती है। उसमे न दीमक लगती है और न वह सडती है। इसी के उबले टुकडो के रस से कत्था बनता है।
–अत्यधिक दृढ निश्चय वाले व्यक्ति के लिए।

खैरात बटै जठै मगता आपै ई पूगै। २३२३
खैरात बटती है वहा भिखारी स्वयमेव पहुच जाते हैं।
–भिखारियो को निमत्रण देने की आवश्यकता नही होती।
–अपने स्वार्थ की बू हर व्यक्ति को दूर से ही आ जाती है।

खो

खोई नथ खदेड़ा में, नणद रै नांव। २३२४
खोई नथ खदेड मे ननद के खाते।
–बिना दिये ही व्यर्थ किसी पर उपकार थोपना।
–मजबूरन मन बहलाने की चेष्टा करना।

खोखर बडौ खुराकी, खायौ हापा सरीखौ डाकी। २३२५
'खोखर' बडा खुराकी, खा गया 'हापा' जैसा डाकी।
खोखर = राठौड राव छाडोजी का पुत्र खोखर एक महाबली योद्धा हुआ था। जिसने 'हापा' जैसे पराक्रमी राजा को मार गिराया।
–इस दुनिया मे एक एक से बढकर व्यक्ति होते हैं।
–सेर को सवा सेर मिल ही जाता है।

खोखा खा, पाणी पी, काली डोकरी रोवै क्यौ? २३२६
खोखे खाओ, पानी पीओ, पगली बुढिया मत रोओ।
–पगली बुढिया बेकार क्यो रोती हो। शमी की फलिया खाकर ऊपर से पानी पीकर मौज मनाओ।
–मनुष्य को जो कुछ भी मिले, उसी से सतोष करना चाहिए।

खोखा खाय'र दिन काढै, पचायती मे जाय'र ताढै। २३२७
खोखे खाकर दिन तोडे, पचायती मे खूब दहाडे।
–अपनी हैसियत से परे काम करने वाला व्यक्ति।
–जो व्यक्ति व्यर्थ के कामो मे अपना समय बर्बाद करे।
–जिस व्यक्ति को घर से अधिक दूसरों की चिता सताये।

खोखा खाया तौ बाव ई सुरै। २३२८
खोखे खाने से तो अपान वायु ही निकलती है।
–खाने के अनुरूप ही चरित्र ढलता है।
–जैसा खाना वैसी समझ।
–नीच व्यक्ति की सगति का परिणाम बुरा ही होता है।
–गदे आदमी की सगति से गदगी ही बढती है।

खोखाळ मे तौ घू घू ई व्यावै। २३२९
खोखल मे तो उल्लू ही पैदा होते हैं।
–समाज से कटी हुई एकात ठौर पर तो मूर्ख ही मिलते हैं।
–सूने मस्तिष्क मे तो मूर्खता ही सूझती है।

खोखा व्हैतौ खावां, गीत व्है तौ गावां। २३३०
पास न हो तो कुछ भी खालें, सुख हो तो कुछ भी गालें।
–मजबूरी की चरम सीमा।
–असहाय व्यक्ति की अतर्वेदना।

खोड़ली खाट खोड़ला पाया, खोड़ली रांड खोड़ला ई जाया।
जैसी खटिया वैसे पाये, कुटिल रांड न कुटिल ही जाये।
–दुष्ट के दुष्ट ही पैदा होते हैं।
–जैसा खानदान वैसी सन्तान।

खोड़ी बाई फूस बुहारी के नव जणा टांग उचावी। २३३१
लगडी बाई फूस बुहारे कि नौ जने पाव उठाओ।
–अयोग्य व्यक्ति को काम सौंपने से वह अपने साथ दूसरो का समय भी नष्ट करता है।
–*अकर्मण्य व्यक्ति की बहानेबाजी पर कटाक्ष।*

खोज जावै पण खरणौ कठै जावै? २३३२
निर्वंश होने पर भी सारा गोत्र कहा मिटता है?
–एक व्यक्ति का वश नष्ट होने से सारा कुल तो समाप्त नही होता।
–एक सदस्य के बिगडने से सारा परिवार तो नही बिगडता।

खोटाई री खाटली। २३३३
कुटिलता की खटिया।
–जिस व्यक्ति के मन मे कुटिलताओं का व्यापक ताना-बाना हो।
–कपट-जाल से गुथे हुए व्यक्ति के लिए।

खोटा कांम टेट सू की-हा, घर खाती नें मांग्या दीन्हा।
खोटा काम किया हाथ से, घर खाती को दिया हाथ से।
–खाती को आधा घर सौंपने से नित्यप्रति खटाखट चलती रहती है तथा काम कराने वालों की भीड व बैठक हमेशा जमी रहती है। खाना-पीना और सोना तक पडोसियों का हराम हो जाता है।
–बिना सोचे-समझे काम करने के बाद मे पश्चाताप करना पड़ता है।

खोटा खत मे मरयोड़ा री साख। २३३५
खोटे खाते में मरे हुए की साक्षी।
–गलत काम मे उलझनें बढती ही रहती हैं।
–ऐसी स्थिति जिसका कोई निर्णय नहीं हो सकता।
–जब झूठी बात सच्ची सिद्ध हो जाय तब।

खोटा-खरा री रांम जाणै। २३३६
खोटे-खरे की राम जाने।
–जिस बात की असलियत का पता न चले तब इस उक्ति का प्रयोग होता है।
–भगवान के सिवाय सही बात का किसे पता चलता है?
पाठा: खोटा खरा रौ राम साखी।

खोटा रा खुरचणा मसाणा मे निकळै। २३३७
खोटे व्यक्ति को भला बुरा मसान मे कहा जाता है।
–बुरे व्यक्ति की बुराई मरन पर की जाती है।
–बुरे व्यक्ति की अपकीर्ति मरन के बाद होती है।

खोटा रा परवाडा खोटा व्है। २३३८
खोटे का परिणाम खोटा होता है।
–*बुरे का नतीजा बुरा ही होता है।*
–सत्कार्य के लिए प्रेरणा।

खोटी करां नीं हाथ जोडां। २३३९
न गल्ती करें न हाथ जोड़ें।
–*सीधे रास्ते पर चलने वाले को क्या डर!*
–सज्जन व्यक्ति को किसी से दबने की जरूरत नही।

खोटी-खरी वगत माथै काम आवै। २३४०
खोटी-खरी समय पर काम आती है।
–*भली-बुरी का परिणाम समय पर होकर रहता है।*
–भले का परिणाम भला और बुरे का परिणाम बुरा समय पर होकर रहता है।

खोटी बातां मे हुंकारौ ई पाप। २३४१
खोटी बातें सुनना ही पाप।
–बुरी बात का समर्थन करना भी पाप है।
–जो व्यक्ति बुरी बातें कान से भी न सुने।

खोटी मिन्नी कांई अपसूणा सू ई गी। २३४२
खोटी बिल्ली क्या अपशकुनो से ही गई।
–बिल्ली कैसी ही दुर्बल हो, राह काटने पर अपशकुन तो कर ही डालती है।
–बुरा व्यक्ति राह चलते बुराई कर देता है।

खोटी संगत रा फळ ई खोटा । २३४३
खोटी सगति के फल ही खोटे ।
–बुरी सगति का फल भी बुरा होता है ।
–सगति का प्रभाव अवश्यम्भावी है ।

खोटी सतान, रूस्यौ भगवान । २३४४
खोटी सतान, रूठा भगवान ।
–भगवान के विमुख होने पर ही बुरी सतान पैदा होती है ।
–बुरी सतान से बढकर अन्य कोई दुर्भाग्य नही ।

खोटै खता साख कुण घालै ? २३४५
खोटे खाते का साक्षी कौन बने ?
–जानबूझ कर बुरे काम मे कौन हाथ डाले ?
–बुरे काम म सहयोग देना भी बुरा है ।
पाठा खोटा खत मे साख घालै जंडा है ।

खोटौ-खरौ तौ ई गाठ रौ, भूडौ-भलौ तौ ई पेट रौ ।
खोटा खरा फिर भी गाठ का, बुरा भला फिर भी पेट का ।
–अपना व्यक्ति ही समय पर काम आता है चाहे वह कैसा ही अक्षम क्यो न हो ।
–अपना सो अपना ही ।

खोटौ खावणौ अर खरौ कमावणौ । २३४७
रूखा-सूखा खाना और खरा कमाना ।
–कमाई के अभाव म रूखे-सूखे से ही सतोष कर लेना चाहिए पर किसी भी सूरत मे बुरी कमाई नही करनी चाहिए ।
–रहन-सहन का स्तर भले ही गिर जाय पर आचरण नही गिरना चाहिए ।

खोटौ खोटा री कमाई जावौ । २३४८
खोटा खोटे की कमाई जाय ।
–जो दुष्कर्म करेगा वह उसका दुष्परिणाम भोगेगा, यह सोचकर जब कोई क्षमाशील किसी व्यक्ति को क्षमा करे तब इस उक्ति का प्रयोग होता है ।
–बुरा करने वाला स्वय कभी न कभी उसकी सजा पाकर रहता है ।

खोटौ टकौ व्हे ज्यू । २३४९
खोटा टका हो जैसा ।
–जो व्यक्ति किसी काम का न हो ।
–जो व्यक्ति निरर्थक भटके ।

खोटौ दिन आवै जद पूछ'र कोनीं आवै । २३५०
खोटे दिन आते हैं तो पूछकर नही आते ।
–बुरे दिनो की पूर्व सूचना नही मिलती ।
–दुर्दिन अकस्मात् आ धमकते हैं ।
पाठा · खोटौ दिन बूझ'र कोनी आवै ।

खोटौ नारेळ होळी , देवरं । २३५१
खोटा नारियल होली या देवता के लिए ।
–सडा गला नारियल खाने की गर्ज से कोई नही खरीदता, पर होली म जलाने के लिए या देवताओ को चढाने के लिए कौन खराब बताये ! वहा सब चलता है ।
–बडे आदमियो के यहा बुरे भले सब पलते हैं ।
–जहा पोल होती है वहा गडबड की गुजाइश रहती है ।
–बडे घरा मे किसी की ठीक परख नही होती ।
–बडे राजकीय कामो म अच्छी तरह नियत्रण या अनुशासन नही हो पाता ।

खोटौ बळद धणी नै गाळ कढावै । २३५२
खोटा बैल मालिक को गाली दिलवाता है ।
–बुरा या दुष्ट व्यक्ति सारे परिवार को लाछित करता है ।
–कुटिल व्यक्ति की कुटिलता केवल उस तक ही सीमित नही रहती वह सारे परिवार को प्रभावित करती है ।

खोटौ बळद बुचकारा रै हेवा । २३५३
खोटा बैल टिचकारने का आदी ।
–आलसी व्यक्ति को आलस्य का केवल बहाना भर चाहिए ।
–कामचोर व्यक्ति हरदम किसी न किसी बहाने की ताक मे रहता है ।

खोटौ बेटौ'र खोटौ पीसौ अडी भिडी मे काम आवै । २३५४
खोटा बेटा और खोटा पैसा वक्त बेवक्त काम आता है ।
–जिस प्रकार निठल्ला लडका हरदम घर पर ही रहता है उसी प्रकार खोटा सिक्का बाजार मे नही चलने की वजह

से घर मे रखा जाता है। वक्त वेवक्त जो सामने या हाजिर होता है वही काम देता है ।
–हर भली बुरी चीज की कुछ न कुछ उपयोगिता तो होती ही है ।

खोटौ सिक्कौ चालै कोनीं । २३५५
खोटा सिक्का चलता नही ।
–अकर्मण्य या अहदी किसी काम का नही ।
–कामचोर व्यक्ति मे फुर्ती नही होती ।

खोदत पाणी नै घोखत विद्या । २३५६
खुदाई से पानी और रटने से विद्या ।
–निरन्तर खोदने से आखिर पानी निकल कर ही रहता है और हरदम पढने या रटने से विद्या हासिल होती ही है ।
–मेहनत व अभ्यास से आखिर सफलता मिलती ही है ।

खोदसी सौ पडसी । २,५७
खोदेगा वही गिरेगा ।
देखिये—क सं २२३६

खोदयौ डूगर काढ्यौ ऊंदर । २३५८
खोदा पहाड और निकली चुहिया ।
देखिये—क स २२४०

खोदा-खोदा आवडं याटा री खोगाळ । २३५६
साडो की लडाई म झाडियो का विनाश ।
–वडे आदमियो के झगडे मे छोटे व्यक्तियो को हानि उठानी पडती है ।
–राजाओ की लडाई मे गरीबो का कचूमर निकल जाता है।

खोदै ऊंदर नै भोगै साप । २३६०
खोदे चूहा और भोगे साप ।
–दूसरो की सपत्ति को हथियाने वाले व्यक्ति के लिए ।
–गरीब का शोषण शक्तिशाली करता है ।
–शक्तिशाली पर किसी का अकुश नही चलता ।

खोदै सौ पडै, बावै सौ लुणै । २३६१
खोदेगा वही गिरेगा और बोयेगा वही बीनेगा ।
–जैसा काम वैसा ही उसका परिणाम ।
–बुरे का फल बुरा व अच्छे का फल अच्छा ।

खोपडी-खोपडी री मत न्यारी । २३६२
खोपडी खोपडी की भिन्न मति ।
–हर व्यक्ति का स्वभाव भिन्न होता है ।
–किसी भी व्यक्ति की बुद्धि एक जैसी नही होती।
–मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना ।

खोपरौ देय खोपौ लिख्यौ । २३६३
खोपरा [नारियल] देकर खोपा [बैल] लिखा ।
– वर्ण विन्यास मे अकिंचन फर्क होने पर भी दोनो के मोल मे बहुत फर्क है । जो वोहरा किसान को खोपरा उधार देकर खोपा [बैल] लिख कर उसका शोषण करे उसके प्रति कटाक्ष ।
–सरासर धोखा करने वाला व्यक्ति ।
–विश्वासघात करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

खोपरौ फिरयां पछै सावौ तै छै । २३६४
नारियल फिरने पर लग्न तय है ।
–जो बात मौखिक रूप मे भी तय हो गई वह तय है ।
–सच्चे व्यक्ति को बात की पाबन्दी हर सूरत म रखनी चाहिए ।

खोपा खडै डोफा । २३६५
बैल चलाये गवार।
–जो जिस योग्य होता है—वह वैसा ही काम करता है।
–गवार व्यक्ति का गवारूपन उसके काम से ही चरितार्थ हो जाता है।

खो री माटी खो मे रैवै । २३६६
खोह की मिट्टी खोह मे ही रह जाती है ।
–जो कजूस व्यक्ति कभी किसी के काम न आये ।
–जिस मक्खीचूस व्यक्ति की सपत्ति मरने के बाद रत्तमात्र भी किसी के काम न आये तब इस उक्ति का प्रयोग होता है ।
पाठा *खूह री माटी खूह मे जाय।*

खो री माटी खो मे लागै । २३६७

खोह की मिट्टी खोह मे ही लगती है ।

–हराम की कमाई हराम म चली जाय तब ।

–जो व्यक्ति अपने सिवाय किसी दूसरे के स्वार्थ का सपने मे भी खयाल न करे ।

खोळ लेवण आई अर खेत री धणियाप । २३६८

घास के लिए आई और खेत पर हक जमाने लगी ।

–अकिंचन फायदा देने पर जो व्यक्ति अधिक लाभ का हठ करे तब ।

–जो व्यक्ति स्वय तो फायदा उठाने की चेष्टा करे पर किसी दूसरे व्यक्ति को उस जगह से फायदा न उठाने दे ।

खोळा री बेटी नै नातायत री काई भरोसौ । २३६९

गोद के पुत्र व नाते आई औरत का क्या भरोसा ।

नातायत = पति के मरने पर या जीते जी जो औरत दूसरे से शादी करे उसे नातायत कहते हैं ।

–लोभ के वशीभूत जो व्यक्ति आत्मीयता दिखलाये उसका क्या भरोसा ?

खोळी व्है तौ पूर आपै ई घालीजै । २३७०

गुदडी के गिलाफ मे तो चिथडे अपने आप डाले जाते हैं ।

–बीमार की देह बच जाय तो बाद म पुष्टता अपने - आप आ जाती है ।

–कुछ न कुछ आधार होने पर साधन स्वयमेव जुट जाते हैं ।

खोळै मायला नै छोड पेट मायला री आस करै । २३७१

गोद के लडके को छोडकर कर कोख वाले की आशा करे ।

–निश्चित लाभ के बदले जो व्यक्ति अनिश्चित लाभ की कामना करे ।

–सामने का प्रत्यक्ष फायदा छोडकर जो व्यक्ति अदृश्य फायदे की चेष्टा करे ।

ग

गई आबरू पाछी नीं आवै । २३७२

गयी आबरू वापस नही आती ।

–मनुष्य को ऐसा कोई भी काम नही करना चाहिए जिससे इज्जत या आबरू पर बट्टा लगे ।

–बिगडी हुई इज्जत वापस नही सुधरती ।

गई बात री काई कैणी कथीणी । २३७३

गई बात का क्या कहना सुनना ।

–बीती हुई बात की चर्चा करना व्यर्थ है ।

–गुजरी बातो को भुला देना चाहिए ।

पाठा : गई बाता री काई पिछतावौ ।
       गई चीज री के पिछतावौ ।

गई तिथ बामण ई को बाचै नीं । २३७४

गई तिथि ब्राह्मण भी नही देखता ।

–जो समय गुजर गया सो गुजर गया, उसके बारे मे परेशान होना कुछ भी माने नही रखता ।

–बीते हुए समय का कुछ भी महत्त्व नही रहता, भविष्य का ध्यान रखना चाहिए ।

गई तीजै कान अर फैली जहांन । २३७५

गई तीसरे कान और फैली जहान ।

–भेद मुह से प्रकट हुआ और वह सर्वत्र फैला ।

–किसी पर भी रहस्य प्रकट नही करना चाहिए ।

गई बात नै घोडा ई नीं पूगै । २३७६

गई बात को घोडे भी नही पकड सकते ।

–गुजरा वक्त किसी भी तरह वापस लौटाया नही जा सकता ।

–दुनिया की कोई भी ताकत बीते समय को नही पकड सकती ।

–जो वक्त गुजर गया सो गुजर गया ।

–समय अमूल्य है, उसे व्यर्थ नही गवाना चाहिए ।

–बीती बातो को भूलकर आगे के लिए सतर्क रहना चाहिए ।

गई बात नै जांण दे, रही बात नै सीख । २३७७

गई बात को जाने दे, रही बात नो सीख ।
–जो समय व्यतीत हो गया उसकी चिंता छोड और बचे हुए समय का ध्यान कर ।
–गया सो गया, अब नि शेष समय से सबक ले ।

गई भूख नैं हेला पाडै । २३७८
गई भूख को आवाज देकर बुलाये ।
–जो व्यक्ति अपने हाथो साधन का दुरुपयोग करके अभाव को आमत्रण दे ।
–जो व्यक्ति बार बार उलटे-सीधे काम करके नुक्सान की राह आगे बढे ।

गई बहू गियौ काम, आई बहू आयौ काम । २३७९
गई बहू गया काम, आई बहू आया काम ।
देखिये—क स २१५

गई भैंस पाणी मे । २३८०
गई भैंस पानी में ।
–आशा के विपरीत कोई काम बिगड जाना ।
–देखते देखते भारी नुक्सान हो जाना ।

गई साख तौ बेची राख । २३८१
गई साख तो बेची राख ।
–यदि प्रतिष्ठा ही बिगड गई तो सारा जीवन ही व्यर्थ हो गया ।
–बदनाम व्यक्ति जीता नही भख मारता है ।

गई ही छाछ लावण नैं, दोवणी बोळाय आई । २३८२
गई थी छाछ लाने, हडिया ही छोड आई ।
–स्वार्थ की पूर्ति के बदले ज्यादा नुक्सान होना ।
–लेने के देने पड जाना ।

गऊ मारया री पाप लागै । २३८३
गाय मारने का पाप लगे ।
–जो व्यक्ति किसी भी तरह का गलत काम करने पर इस प्रकार की शपथ ले कि ऐसा करने पर उसे गऊ हत्या का पाप लगे ।

गऊ-मुखौ नाहर । २३८४
गौ मुखा नाहर ।
–जो व्यक्ति दिखने मे सीधा व सरल हो किन्तु वास्तव मे मन का निहायत कुटिल व दुष्ट हो ।
–जो दुष्ट व्यक्ति विनम्रता का झूठा दिखावा करे ।

गऊ सतन रै कारणै हर बरसावै मेह । २३८५
गाय व सतो की खातिर प्रभु मेह बरसाता है ।
–सज्जन व्यक्तियो की खातिर ही प्रकृति उदारता दिखलाती है ।
–भोली गायो व महात्माओ के भाग्य से सभी को कुदरत के अच्छे फल प्राप्त होते हैं ।

गऊ तौ गुटली-बायरौ मेवौ है । २३८६
गेहू तो गुटली-रहित मेवा है ।
–जीवन का पोषण करने वाले गेहू से बढकर अन्य कोई दूसरा मेवा नही ।
–गेहू सर्वाधिक पौष्टिक मेवा है ।

गऊ नैं गोयलौ तौ भेळा ई निपजै । २३८७
गेहू और गोयला तो साथ ही पैदा होता है ।
गोयलौ = गेहू के साथ पैदा होने वाली घास या खरपतवार ।
–इस दुनिया म भले बुरे सभी प्रकार के व्यक्ति बसते हैं ।
–ससार मे अच्छाई के साथ बुराई भी जुडी हुई है ।

गड फूटा अर वेदन मिटी । २३८८
फोडा फूटा और वेदना मिटी ।
गड = बैठक पर का फोडा ।
–कलह व झगडे का मूल कारण मिटा और झझट खतम हुआ ।
–दुख देने वाली बुनियाद दूर हुई और जी मे शाति हुई ।

गडर-प्रवाही लोक । २३८९
भेड चाल जनता ।
–एक भेड कुए म गिरती है तो उसके पीछे सारी भेडे गिर पडती हैं ।
–आम जनता की प्रवृत्ति भेडो के समान होती है ।

गडूरड़ा तौ मेलौ इज खासी। २३९०
गडसूअर तो विष्ठा ही खाते हैं।
—हीन स्वभाव वाला व्यक्ति अपनी हीनता नहीं छोड सकता।
—गन्दे आदमी के आचरण से गदगी कभी नहीं मिटती।
पाठा गडूरडा तौ मेलौ इज फिरोळै।

गडू के बळू। २३९१
गड्डू या जलू।
—दुविधा-जनक स्थिति।
—धर्म-सकट की सी मन स्थिति जब कोई व्यक्ति सही निर्णय की ओर अग्रसर न हो सके।

गढ किला तौ बाका ई भला। २३९२
गढ-किले तो बाके ही भले।
—बडे काम तो अपनी शोभा के अनुरूप ही सपन्न होते हैं।
—बडे काम का ठाट ही बडा।

गढ गढा रै पावणा। २३९३
गढ-गढो के पाहुने।
—गढ वालो के गढ वाले ही पाहुने होते हैं।
—बडे आदमियो के मेहमान भी बडे होते हैं।

गढ बाका कोनीं गढ़पति बाका है। २३९४
गढ बाके नही, गढपति बाके है।
—बाकुरे गढपति ही गढ किलो की रक्षा कर सकते है।
—यदि राजा शक्तिशाली है तो किला भी मजबूत है, अन्यथा कैसे भी सुदृढ किले को ढहते क्या देर लगती है।

गढा मढा बट होवै नीं। २३९५
गढ व मठ का बटवारा नही होता।
—समाज की रक्षा का भार राजा पर तथा धर्म की जिम्मेवारी मन्दिरो पर। यदि राज्य व मन्दिरो का बटवारा हो तो वे धीरे धीरे कमजोर पडने लगते है।
—केन्द्रीय सता की सुदृढता अनिवार्य है।

गढा रै गढ ई जाया। २३९६
गढो के गढ ही पैदा होते हैं।
—बडे कुल मे बडे ही व्यक्तियो का जन्म होता है।
—शूरवीर की सतान भी शूरवीर होती है।

गत उलटी गोपाळ री देखौ मुरधर देस। २३९७
गति औंधी गोपाल की देखी मरुधर देश।
—मारवाड की सब बातें उलटी ही उलटी हैं।
—जिस समाज का ढर्रा बेढगा ही बेढगा हो उसके लिए।

गत जैडी मत। २३९८
जैसी गति वैसी मति।
—जैसी जानकारी वैसी समझ।
—जैसा चलन वैसा आचरण।
—तदनुरूप परिणाम

गतराडा ई कदै गाव लूटचा। २३९९
हिजडा ने कब गाव लूटे।
—अक्षम व्यक्ति कभी बडा काम नही कर सकता।
—बडे काम के अनुरूप बडी क्षमता अनिवार्य है।

गत राम तणी देखौ गजब, बाघौ ई पिडत बाजियौ। २४००
राम का यह गजब तमाशा देखिये कि 'बाघा' भी पडित कहलाया।
बाघौ = एक व्यक्ति विशेष का नाम।
—जो सामान्य व्यक्ति प्रतिष्ठा की चोटी पर चढ जाये उसके प्रति कटाक्ष।
—अयोग्य व्यक्ति ऊचे पद पर पहुच जाय उसके लिए।

गधहडै रै ग्यान नै दातरडै रै म्यान। २४०१
गधे म ज्ञान और हसिये के म्यान।
—गधे म ज्ञान नही हाता और हसिये पर म्यान नही होता।
—जिस व्यक्ति मे सद्बुद्धि व गुणा का नितात अभाव हो।
पाठा गधै म ज्ञान नी, मूसळ रै म्यान नी।

गधा क्यू न्हावै गगा, उखरडा ई चगा। २४०२
गधा क्यो नहाये गगा, घूरा ही चगा।
—आकाक्षा रहित व्यक्ति के लिए।
—हर व्यक्ति अपने सीमित दायरे मे ही व्यस्त रहता है।

गधा तौ कूदै ई नीं अर आयरिया पैली कूदै। २४०३

गधे की यारी म लातां की तैयारी।
–मूर्खो की सगत म सदैव खतरा बना रहता है।
–गवार की साहबत हमेशा हानिकारक ही हाती है।

गधा रो भूकणो अर ओछा री प्रीत तर तर घटै। २४१५
गधे का रेंकना और ओछे की प्रीति निरतर घटती रहती है।
–जिस प्रकार गधा रेंकना शुरू करते समय पूरी ताकत स रेंकता है पर धारे धीरे उसकी आवाज धीमी होती रहती है उसी प्रकार ओछे व्यक्ति की मित्रता भी दिन ब दिन कम होती रहती है।
–ओछे व्यक्ति की मित्रता का एतबार नही करना चाहिए।

गधा रो मास कुत्ता रो फूडो घाल्यां ई सीझै। २४१६
गधे का मास कुत्त की टट्टी डालने से ही पकता है।
–नीच व्यक्ति क साथ नीचता ही अपेक्षित है।
–अधम व्यक्ति उपदेशा स नही मानता।
–जैसे लच्छन वैसा सत्कार।
पाठा गधा रो मास फूडा बिना नी सीझै।

गधा रो मूडो कुत्तो चाटै तो किसो अशुद होवै! २४१७
गधे का मुह कुत्ता चाटे तो कैसा अशुद्ध!
–निलज्ज व्यक्ति पर बदनामी का असर नही होता।
–बुरा सो बुरा ही।

गधा हळ जुतै तो बळदा नै कुण बूझै! २४१८
गधे हल जुत तो बैला को कौन पूछे!
–अयोग्य व्यक्ति से काम सर जाये तो योग्य व्यक्तिया की कौन पूछ करे?
–जिसकी जैसी योग्यता हो उसे उसी काम के लिए बरतना चाहिए।

गधा गेवाळ ओळखियो। २४१९
गधा न ग्वाले की पहिचान कर ली।
–मातहतो ने अपन अधिकारी को ठीक स पहिचान लिया।
–स्वामी की कमजोरी पहिचानने के बाद नौकर उद्दड हो जाता है।
–अयोग्य अधिकारी के प्रति कटाक्ष।

गधा रै किसा सींग हुवै। २४२०
गधा क कौन स सीग होते हैं।
–मूर्खों के भाल पर कोई ज म जात निशान नही होता।
–गवार व्यक्ति अपने स्वभाव से पहिचाना जाता है।
–मूर्खों के हुलिये मे कोई अतर नही होता।

गधी वाळा वेम! २४२१
गधी की सी सतान!
–मूर्खों के प्रति कटाक्ष।
–मूख औरत की मूख सतान।
–जो मा अपन बच्चा का ठीक तरह पालन नही कर सके उसक लिए परिहास म इस कहावत का प्रयोग होता है।

गधै री पूछ झिलायी। २४२२
गधे की पूछ पकडाई।
–किसी मूख व्यक्ति को बेकार हठ लगा देना।
–खामखा का जिद करने वाला व्यक्ति।
–जिस हठ से नुक्सान की निश्चित सभावना हो।

गधेडा ई मुलक जीतले तो घोडा नै कुण बूझै? २४२३
गधे ही मुल्क जीत लें तो घोडा को कौन पूछे?
–अयोग्यता स ही काम बन जाय तो योग्यता को कौन पूछे?
–अयोग्य व्यक्ति योग्यता का दावा करे तब।

गधेडा पासती गाय बाधी, तीजै दिन भूकण लागी। २४२४
गधे क पास गाय बधी तीसरे दिन रेंकने लगी।
–कुसगति का बुरा असर अवश्यम्भावी है।
–कुसगति त्याज्य है।

गधेडा माथै अवाडी नीं सोहै। २४२५
गधे पर अवाडी नही सुहाती।
–छोटे व्यक्ति को बडो की नकल शोभा नही देती।
–अयोग्य व्यक्ति का सम्मान शोभनीय नही होता।

गधेडा री गूणती मे नौ मण रो वादो नीं। २४२६
गधे के बारे म नौ मन की भूल नही होती।
–छोट व्यक्ति स छोटी ही भूल सभव है।
–गरीब व्यक्ति से बडी गल्ती नही हो सकती।

–समर्थ व्यक्ति ही भारी क्षति पहुचा सकता है।

गधेड़ा रै पाखर घातिया घोड़ौ नीं व्है। २४२७

गधे पर जीन कसने से घोडा नही होता।

–बडा पद मिलने पर मूर्ख तो मूर्ख ही रहता है।

–मूर्खता को बाहरी आडवर से छिपाया नही जा सकता।

गधेड़ा लारै मदर व्हैगा। २४२८

गधे के पीछे सिर मुडवाया।

–अकिचन व्यक्ति की हिमायती मे अधिक क्षति उठाने पर, इस कहावत का प्रयोग होता है।

–चलते रास्ते खामखा किसी के द्वारा नुकसान उठाने पर।

–कुपात्र को सहयोग नही देना चाहिए।

गधेडी गगाजी न्हाया पवीत थोडी ई व्है। २४२९

गधी गगा स्नान करने मे पवित्र थोडे ही होती है।

–थोथ आडवर मे असलियत नही छिपती।

–अकुलीन व्यक्ति साज-सज्जा से कुलीन नही बन सकता।

गधेडी चावळ ल्यावै तौ धा थोडी ई खाय। २४३०

गधी चावल लाय तो वह थोडे ही खाती है।

–भार.ढोने से ही कोई माल का अधिकारी नही हो जाता।

–मेहनत करने वाला उसके फल को भोगे, यह जरूरी नहीं।

–प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारो का अपना दायरा होता है।

गधेडी नै गजगाव। २४३१

गधी पर गजगाव की सज्जा।

–गधी पर हाथी की झूल शोभा नही देती।

–अयोग्य व्यक्ति का ऊचा सम्मान करने से वह योग्य नही बन सकता।

–योग्यता के अनुरूप ही आदर-सत्कार होना सगत है।

गधेडै नै जेठ मे धूदी चढै। २४३२

गधे को जेठ मे अलमस्ती सूझती है।

–ऐसी धारणा है कि गधा वर्षा ऋतु की हरियाली देखकर मन ही मन सोचता है कि इतनी हरियाली कौन खायेगा, अतएव वह चिता के मारे घटता रहता है। और इसके विपरीत जब वैसाख-जेठ के महीनो मे घास कही नजर नही आता तब वह मोटा हो जाता है। यह सोचकर कि सारे घास को वह चट कर गया।

–मूर्ख व्यक्तियो के सर्वथा औंधे ही काम होते हैं।

–गवार व्यक्ति को अपने सुख-दुख की भी सही पहिचान नही होती।

गधेडै रौ मास तौ खार घाल्या ई सीझै। २४३३

गधे का मास तो क्षार डालने से ही पकता है।

देखिये—क्र स. २४१६

गधेडै पाडयो नै गाव सू रूसणौ। २४३४

गधे ने गिराया और गाव मे रूठना।

–किसी का गुस्सा किसी पर उतारना।

–गलती किसी और की तथा नाराजी किसी और पर।

–असगत व्यवहार वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

गधेडौ अखूरडी देखनै भूकै। २४३५

गधा घूरा देखकर रेंकता है।

–गदा व्यक्ति गदगी से ही खुश होता है।

–अधम व्यक्ति की अधम ही खुशिया होती हैं।

–जिसका जैसा स्वभाव होता है वह उसी मे खोया रहता है।

पाठा. गधेडौ अखूरडी माथै ई रजै।

गधौ अखूरडी माथै ई लुटै।

गधै चढनै अजैपाळ भेटणौ। २४३६

गधे पर चढकर अजयपाल से भेंट।

–हीन सवारी और बडे आदमी से मुलाकात।

–हर काम को करने का अपना तरीका होता है।

–गवार व्यक्ति की उसके लक्षणो से ही तुरत पहिचान हो जाती है।

गधै नै मारया घोडौ को हुवै नीं। २४३७

गधे को मारने से घोडा नही होता।

–मूर्ख व्यक्ति पिटाई से समझदार नही हो सकता।

–लाख चेष्टा करने पर भी गवार को सुधारा नही जा सकता।

–जन्मजात सस्कारो को मिटाना सभव नही।

—जो व्यक्ति सर्वत्र घूम फिर कर वैसा ही गवार रहे।

गया बिचारा रोजला, घणा रह्या दस बीस। २४५९
गये बिचारे रोजे और रहे दस-बीस।
—दुख के दिन अब रहे ही कितने हैं—थोडी हिम्मत रखने से पार लग जायेगी।
—बुरे दिनो मे आदमी को धैर्य व साहस से काम लेना चाहिए।

गया बीता रै किसा सींग व्है। २४६०
गये-गुजरे के कौन-स सींग होते हैं।
देखिये—क्र स. २४२०

गया लारै जावै सो घणा धक्का खावै। २४६१
गये के पीछे जाय तो खूब धक्के खाय।
—किसी का भी अधानुकरण सर्वथा घातक है।
—बिना सोचे समझे बडे आदर्शों की राह चलना सर्वथा अहितकर होता है।

गयी तो ही गळो करावण नैं काच सायै आ पडी। २४६२
गई तो थी गला करवाने काच बाहर आ गई।
—लेने के देने पड गये।
—छोटी आफत के निदान मे कोई बडी आफत आ पडे तब।

गयी भूख नै हेला पाडै। २४६३
गई भूख का आव्हान करे।
—अकर्मण्य व्यक्ति के प्रति कटाक्ष जो अपने अहदीपन से बीते हुए दुखों को फिर बुलाने की चेष्टा करे।
—जिस व्यक्ति को अपने भले बुरे का रच मात्र भी ध्यान न हो।
—जो व्यक्ति जान-बूझ कर नुक्सान उठाने का प्रयास करे।

गयेडै नै भूल ज्याय, आयेडै नै कोनीं भूलै। २४६४
गये हुए को भूल जाय, आये हुए को नही भूला जाता।
—बीता हुआ दुख तो भुला दिया जाता है, पर वर्तमान मे घटित ताजे दुख को नही भुलाया जाता।
—मरे हुए को भुलाया जा सकता है पर नये जन्मे बच्चे को नही भुलाया जा सकता। अर्थात् उसके प्रति हरदम चौकसी रखनी पडती है।

गयोडा कदै ई पाछा आवै ? २४६५
गये हुए कभी वापस आते है ?
—बीती बातो को याद करना व्यर्थ है।
—गुजरे हुए बुजुर्गों की दुहाई से पार नही पडता, स्वय का तात्कालिक पुरुषार्थ ही सब कुछ है।

गयो तो निवाज छोडण नै रोजा री गळा मे आई। २४६६
गया तो नमाज छोडने के लिए, रोजो की गले आ पडी।
—छोटी आफत को मिटाने की चेष्टा मे जब उस से भी बडी आफत आ पड तब।
—छोटे कष्ट के बदले बडे कष्ट का फदा गले म आ पडे तब।
पाठा गयो तो रोजा छोडणनैं, निवाज री गळै भिळगी।

गयो म्हारै बडेरा रो मातो लेयनै। २४६७
गया मेरे पुरखो का पाथेय लेकर।
—अकर्मण्य व लापरवाह आत्मीय के प्रति खीज का प्रदर्शन।
—जो निठल्ला व्यक्ति खामखा इधर उधर भटक कर अपना समय बर्बाद करे तब उसके प्रति गुस्सा व्यक्त करते समय घरवाले इस कहावत का प्रयोग करते है।

गयो वित्त, बोळावो मागै। २४६८
गया वित्त, खमियाजा मागे।
—नुक्सान की पूर्ति के लिए जब फिर कुछ न कुछ नुक्सान उठाना पडे तब।
—क्षति की फरियाद के लिए और खर्च करना पडे तब।
पाठा गयो धन बोळाई मागै।

गयो वैतो रै वाळै। २४६९
गया बहती क नाले।
—बडे भारी नुक्सान का सामना करना पडे तब।
—अप्रत्याशित रूप से प्राणघाती खतरा उठाना पडे तब।

गयो सिंदूर री फळिया नैं। २४७०
गया सिन्दूर की फलिया लाने।
—आवारा भटकने वाले व्यक्ति के प्रति कटाक्ष।
—जो व्यक्ति अनहोने काम की खातिर भटकता फिरे।

गयो हरिदास ज्यू नीचा नैण करनै । २४७१
गया हरिदास ज्यों नीचे नयन करके ।
—अपना-सा मुह लेकर जाने वाले व्यक्ति के प्रति व्यग ।
—अपनी फजीहत से शर्मिन्दा व्यक्ति के लिए ।

गरज गधै नै बाप कुहावै । २४७२
गर्ज गधे को बाप कहलवाती है ।
—स्वार्थ की मजबूरी जो न कराये थोडा ।
—गर्जमद व्यक्ति सर्वथा अपना स्वाभिमान खो देता है ।
—स्वार्थ के वशीभूत होकर गधे के समान मूर्ख व्यक्तियो को भी खुशामद करनी पडती है ।

गरज जित्तै चाकर, गरज मिट्यां ठाकर । २४७३
गर्ज तब तक चाकर, गर्ज मिटने पर ठाकुर ।
—गर्ज मिटने पर गरीब आदमी भी शेर हो जाता है ।
—गर्जमद आदमी की चारित्रिक विशेषता ।

गरज दीवाणी गूजरी, नूत जीमाती खीर । २४७४
गर्ज बावली गूजरी, न्योत खिलाती खीर ।
—गर्ज मे अधे व्यक्ति का धूर्त व्यवहार कि वह गर्ज रहते क्या कुछ नही करने को तैयार, पर गर्ज मिटने पर सीधे मुह बात तक नही करता ।
—गर्जमद व्यक्ति के जघन्यतम स्वार्थ का चित्रण ।
पाठा गरज दीवाणी गूजरी, घर मे मादो पूत ।
सावण छाछ न घालती, भर बैनाव्या दूध ।

गरज पड्या मन दूजो, गरज सरघा मन दूजो । २४७५
गर्ज पडे मन दूसरा व गर्ज सरे मन और ।
—गर्जमद व्यक्ति का दुरगा चरित्र, जिस मे परस्पर कोई साम्य नही जैसे कोई भिन्न ही व्यक्तित्व हो ।
—गर्जमद व्यक्ति गर्ज मिटते ही गिरगिट की तरह दूसरा रग धारण कर लेता है ।

गरज बावळी । २४७६
गर्ज बावरी ।
—गर्जमद व्यक्ति को अपने स्वार्थ के सिवाय कुछ नही सूझता ।
—स्वार्थ मनुष्य को अधा या पागल बना देता है ।

गरजमन्द मारीजै । २४७७
गर्जमद मारा जाता है ।
—गर्जमद सर्वत्र ठगाया जाता है ।
—गर्जमद को कोई नही बख्शता, उसका सभी शोषण करते हैं ।

गरज मिटी गूजरी नटी । २४७८
गर्ज मिटी, गूजरी नटी ।
—गर्ज मिटने के बाद कोई किसी को नही पूछता ।
—आपसी गर्ज या स्वार्थ ही आत्मीयता का सब से बडा अटूट बधन होता है ।
मिलाइये—क स २४७४

गरज मिटी रै गागला, गाव सू आटो माग ला । २४७९
गर्ज मिटी रे 'गागला,' गाव से आटा माग ला ।
सदर्भ-कथा एक बीमार साधु को तीमारदारी करने के लिए चेले की आवश्यकता हुई तो उसने खुशी खुशी चेले को सारा मठ सौंप दिया । चेला स्वय मौज करता और गुरु की सेवा करता । गुरु की बीमारी के दौरान चेले को सभी बातो की पूरी छूट थी । पर ज्यो ही धीरे-धीरे चेले की तीमारदारी से गुरु ठीक हुआ तो उसने साफ तौर पर शिष्य को जतला दिया कि अब बैठे ठाले खाने से काम नही चलेगा । शिष्य को गाव से प्रति दिन आटा माग कर लाना होगा । इस प्रसग मे इस कहावत का अर्थ है ।
—गर्ज मिटते ही मनुष्य का रुख स्वयमेव बदल जाता है ।

गरज मिटी रै गागला, बळद गाया मे जाय । २४८०
गर्ज मिटी रे 'गागला,' बैल गायो मे जाय ।
—जब तक हल या गाडी जोतने के लिए बैलो की गर्ज होती है तो घर पर ही उन्हें चारा बाटा मिलाया जाता है । पर गर्ज मिटते ही उन्हें गायो के साथ जगल मे तगड दिया जाता है ।
—दुनिया मे गर्ज का चक्कर सबसे बडा है ।

गर्ज बडी । २४८१
गर्ज बडी है ।
—मनुष्यो की इस दुनिया में केवल गर्ज के कारण ही छोटे बडे का भेद होता है ।

–जिस व्यक्ति से गर्ज पडती है वह बडा और जिसे गर्ज होती है वह छोटा।

गरजवान री अक्कल जाय, दरदवान री सिक्कल जाय।
गर्जवान की अक्ल जाये, दर्दवान की शक्ल जाये। २४८२
–गर्जवान को भले-बुरे का कुछ भी ध्यान नही रहता। उस की बुद्धि मर जाती है। और दर्दवान की सूरत का रग बदल जाता है।
–गर्जमद तथा दर्दमद दोनो की दुर्दशा होती है।

गरज विहूणो 'गागलो' गरजा गागो साह। २४८३
गर्ज बिना 'गगला' और गरज पडे 'गग शाह'।
–अपना मतलब सिद्ध करने के लिए छोटे आदमी को भी सम्मान के साथ सबोधित किया जाता है अन्यथा उसे दुत्कार के सिवाय कभी कुछ नही मिलता।
–गर्ज ही आदर सत्कार का मूल मत्र है।

गरज सरी अर बंद बैरी। २४८४
गर्ज मिटी और वैद्य वैरी।
–बीमारी के दौरान वैद्य की जितनी खुशामद की जाय थोडी है, पर बीमारी मिटते ही वैद्य वैरी के समान अवाछित व बुरा लगता है।
–मतलब पूरा होने के बाद कोई नही पूछता।

गरजा-दरजा सं भला बेगरजां बेकाम। २४८५
गर्ज के समय सब भले, बिना गर्ज बेकार।
–दुनिया मे गर्ज के सिवाय कोई दूसरा महामत्र नही।
–मनुष्य के लिए केवल गर्ज ही गीता है और गर्ज ही कुरान है। गर्ज ही ईश्वर और गर्ज ही खुदा है।
–स्वार्थ का दर्शन सभी दर्शनो से बडा है।

गरजै सो बरसै नीं। २४८६
गरजे सो बरसे नही।
–गर्जन करने वाले बादल कम बरसते हैं।
–बडी-बडी बातें बनाने वालो से काम नही होता।
–ज्यादा डींग मारने वाले की असलियत दूसरी ही होती है।
पाठा. *गरजै जिको बरसै कोनीं।*
पाठा गरजै सो बरसै नी, बरसै घोर अधार।
गरजणा बादळ बरसणा नी, भुसणा कुत्ता खाणा नी।

गरम थूक थाळा नै राख। २४८७
गर्म थूकने वाले को रख।
–कैसा भी बहाना बना कर बच निकलने की चेष्टा करना।
–बहाने बाजी करने वाला कुछ भी उचित अनुचित नही सोचता।

गरब तो रावण रो ई नीं रह्यो। २४८८
गर्व तो रावण का भी नही रहा।
–बडे से बडे व्यक्ति का भी गर्व नही टिकता।
–गर्व की प्रताडना।
–आखिर गर्व को ध्वस्त होना ही पडता है।

गरबं मत अे गूजरी, देख मट्टरी छाछ। २४८९
गर्व मत कर गूजरी, देख घनेरी छाछ।
–सभी दिन एक से नही रहते, इसलिए गर्व करना व्यर्थ है।
–जो व्यक्ति आज ऐश्वर्यशाली है, वह कल कगाल हो सकता है। और जो व्यक्ति आज कगाल है वह कल ऐश्वर्यशाली हो सकता है। इसलिए वैभव का गर्व करना व्यर्थ है।

गरीब तो मैल व्है। २४९०
गरीब तो मैल होता है।
–मैल को कोई नही रखना चाहता, सभी उसे दूर करना चाहते है। इसलिए मैल के समान गरीब मनुष्य को कोई पास नही फटकने देता।
–जिससे कोई दूर रहना चाहे वह गरीब।
–मैल व गरीब से सभी दूर रहना चाहते हैं।

गरीबदास री तो हवा ई हवा है। २४९१
गरीबदास की तो हवा ही हवा है।
–गरीबदास का तो नाम ही नाम है, धन तो दूसरो का खर्च हो रहा है।
–दूसरो का धन उडाकर नाम कमाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

गरीब नै नरक मे ई जगा कोनीं। २४९२

गरीब को नरक मे भी जगह नही।
–गरीब व्यक्ति को नरक मे भी पूछ नही होती।
–गरीब व्यक्ति का सर्वत्र निरादर होता है।

गरीब माथै गूणती वत्तो न्हाकै। २४६३
गरीब पर एक और बोरी का भार।
–जो बैल या गधा ज्यादा सीधा होता है उस पर वजन ज्यादा डाला जाता है।
–जो विरोध नही करता उसका अधिक शोषण होता है।

गरीब री खाय, जड़ा मूळ सू जाय। २४६४
गरीब की खाये जड़-समेत जाये।
–गरीब को सताने से सर्वनाश होता है।
–गरीब को नोचने वाले का विनाश अवश्यम्भावी है।

गरीब री लुगाई, जगत री भौजाई। २४६५
गरीब की जोरू, सब की भावज।
–भावज के बहाने गरीब की औरत से सभी मसखरी व छेड़खानी करते हैं।
–गरीब का सर्वत्र मखौल ही होता है।
–गरीब का कोई हिमायती नहीं होता।

गरीब री हाय, सरबस खाय। २४६६
गरीब की हाय सर्वस्व खाय।
देखिये—क. सं. २४६४
पाठा : गरीब री हाय खोटी।

गरीब रै गाड मे दांत व्हे। २४६७
गरीब के गाड मे दात होते हैं।
–गरीब व्यक्ति बेहद कुटिल होता है।
–गरीब दुहरा नीच होता है।
–गरीब के कमीनेपन का कोई मुकाबला नही।

गरीबां रै तो टाबर-टूबर ई धन है। २४६८
गरीब के लिए तो सतान ही धन है।
–शरीर से मेहनत मजदूरी करने वाले अलहाय के लिए तो सतान ही बड़ा सहारा है।
–गरीब के घर मे जितने शरीर उतनी ही मजदूरी।

गरीब री बेलो राम। २४६६
गरीब का हितैषी राम।
–राम व भाग्य के सहारे ही गरीब दुख के दिन काटता है।
–भगवान और अदृष्ट के विश्वास पर ही गरीब दुख का सामना करता है।
पाठा : गरीब रो बिळू राम।

गरीबी मे आटो गीलो। २५००
गरीबी मे आटा गीला।
–गरीब का तो भाग्य भी साथ नहीं देता।
–गरीबी के लिए हर कदम पर खतरा बना रहता है।
–गरीबी मे हर कहीं से मार पड़ जाती है।

गरीबी सू बडो भाई-चारो कोनीं। २५०१
गरीबी से बढ़कर भाई चारा नहीं।
–विनम्रता से बढ़कर कोई दूसरा भाई-चारा नहीं।
–सहनशील व्यक्ति का कोई दुश्मन नहीं होता।

गरु कनै तो ग्यांन इज लाधै। २५०२
गुरु के पास तो ज्ञान ही मिलता है।
–धन, सत्ता या माया के भरोसे किसी को गुरु करना निरर्थक है। गुरु के पास ज्ञान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होता।

गरु कीजै जांण पाणी पीजै छाण। २५०३
गुरु कीजे जान कर, पानी पीजे छानकर।
–सौ बार सोचकर किसी को गुरु बनाना चाहिए। तथा पानी को अच्छी तरह छानकर पीना चाहिए।
–किसी भी काम को सतर्कता पूर्वक करने से आगे कठिनाई नहीं होती।

गरु कैवै ज्यू करणो, गरु करै ज्यू नीं करणो। २५०४
गुरु कहे ज्यों करना, गुरु करे ज्यों नहीं करना।
–गुरु के बुरे आचरण का अनुकरण नहीं करके उसके सद्-उपदेशों का ही पालन करना चाहिए।
–बुरे कर्मों को सीखने की बजाय अच्छी बातों को जीवन मे ढालने की कोशिश करनी चाहिए।

गरु-गरु विद्या, सिर-सिर बुद्धि। २५०५

गुरु गुरु विद्या, सिर-सिर बुद्धि ।
—हर गुरु के पास अपनी अलग विद्या होती है और हर शिष्य के पास अपनी अलग-अलग समझ ।

गरू गुळ अर चेला चीणी । २५०६
गुरु गुड और चेला चीनी ।
—जो शिष्य गुरु से भी आगे बढ जाय ।
—गुरु की सार्थकता यही है कि वह शिष्य को अपने से बढ कर बनाये ।

गरूजी चेला घणा के भूखा मरघां मतै ई टुर जासी ।
गुरुजी चेले बहुत कि भूखों मरने पर अपने-आप खिसक जायेंगे ।
—स्वार्थ-सिद्धि न होने पर या आच लगने पर कैसा ही संगठन तितर-बितर हो जाता है ।
—खरे आदर्शों पर केवल आकर्षण मात्र से टिका नही रहा जा सकता, तपस्या व त्याग आवश्यक है ।

गरूजी राती भाजी खावौ के बेटा अेवाडा किण रा फाडा ?
गुरुजी लाल भाजी खाइये कि बेटे बाडे किसके तोडें ?
लाल भाजी = गोश्त ।
—गहरी इच्छा होने पर भी जो चीज प्राप्त न हो सके तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।
—सामर्थ्य के बिना इच्छा नितात पगु होती है ।
—मजबूरी से किसी आदर्श का पालन करने वाले के प्रति व्यग ।

गरूजी बेल बधज्यौ के म्हारै ताईं । २५०९
गरूजी बेल बधे कि मुझ तक ही ।
—जो व्यक्ति घर की बर्बादी का मूल कारण हो उसके लिए ।
—जिस व्यक्ति के कारण उन्नति और विकास के सारे रास्ते अवरुद्ध हो गये हो ।

गरू बिन मिळै न ग्यान । २५१०
गुरु बिन मिले न ज्ञान ।
—ज्ञान के लिए पोथियों की सुलभता ही पर्याप्त नही होती, गुरु के माध्यम से ही उन मे निहित ज्ञान को प्राप्त किया जा सकता है ।
—भारतीय चितन परम्परा मे गुरु का दर्जा ईश्वर के समकक्ष ही माना जाता है .

गुरु गोविंद दोनो खडे, काकै लागू पाव ।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविंद दियो बताय ।

गरू मारै धमधम, विद्या आवै घम-घम । २५११
गुरु मारे धमाधम, विद्या आये घमाधम ।
—गुरु की मार से ही मगलदायिनी विद्या प्राप्त होती है ।
—कष्ट उठाये बिना ज्ञान प्राप्ति नही हो सकती ।
पाठा गरू मारै धम धम, विद्या आवै छमछम ।

गरू री करणी गरू नै अर चेला री करणी चेला नै । २५१२
गुरु की करनी गुरु को और चेले की करनी चेले को ।
—जो जैसा करे वैसा फल पाये ।
— अपने अपने काम की अपनी-अपनी जिम्मेवारी ।

गरू री चोट विद्या री पोट । २५१३
गुरु की चोट विद्या की पोट ।
पोट=गाठ ।
—गुरु के पीटने का कभी बुरा नही मानना चाहिए ।
—गुरु के डण्डे मे ही ज्ञान का सार छिपा हुआ है ।

गरू री विद्या गरू नै फळी । २५१४
गुरु की विद्या गुरु को फली ।
—जो बुरा सिखाता है वह एक दिन उसी बुराई के फदे मे फसता है ।
—बुराई से प्रारभिक लाभ भले ही हो, पर अत मे उसका बुरा नतीजा अवश्यम्भावी है ।
पाठा गरू री विद्या गरू नै पुगी ।

गरू रौ फरमांण, अकल परवाण । २५१५
गुरु का फरमान, बुद्धि के अनुसार ।
—बडे आदमियो का उपदेश तो सभी के लिए एक सा होता है पर उसे ग्रहण करने वालो की भिन्न समझ के कारण उसे अनेक तरह से ग्रहण किया जाता है ।
—समझने वालो की बुद्धि किसी भी बात को अपने हिसाब से ही अगीकार करती है ।

गरू सू चेलौ सवायौ । २५१६
गुरु से चेला सवाया ।
–जो चेला गुरु से बढकर निकल जाय ।
मिलाइये—क. स २५०६

गळ बधिया घू-घू मरै । २५१७
गले बधे हुए उल्लू मरते हैं ।
–किसी बुरे काम का अत तक पीछा करन मे आखिर क्षति होकर ही रहती है ।
–अत्यत गाढी प्रीति का परिणाम घातक ही होता है ।
–पूर्णतया आश्रित व्यक्ति को आखिर मरना पडता है ।

गळवाणी सू गरज नीं सरै । २५१८
गुडवाणी से गरज नही सरती ।
गळवाणी = घी मे सिके हुए आटे व गुड से बना तरल पेय ।
–पूरे सहयोग के बिना बात सफल नही होती ।
–अपर्याप्त साधनों से कामयाबी नही मिलती ।

गळा मे आयगी । २५१९
गले म आ गई ।
–उल्टी आफत गले मे आ पडे तब ।
–किसी दूसरे के निपटारे में अनचीती कठिनाई सिर पर आ पडे तब ।

गळा मे डाळौ आयग्यौ । २५२०
गले मे फदा आ फसा ।
–चलते रास्ते किसी काम का बोझा मत्थे आ पडे तब ।
–अप्रत्याशित कठिनाई आ पडे तब ।

गळियारा तो वैता ई भला । २५२१
गलियारे तो चलते ही भले ।
–मार्ग तो हरदम चलते रहने से ही कायम रहते हैं ।
–निरतर चहल-पहल ही राह की शोभा बढाती है ।
–परपरा के कदीमी पथ तो चालू रहने से ही स्थायी बने रहते हैं ।
–रीति रिवाजो का ढर्रा टूटना नही चाहिए ।

गळियारै रौ घर राम - राम मे जासी । २५२२
गलियारे का घर राम राम मे जायेगा ।
–राह पर बसे घर का समय अभिवादन - अभिवादन मे ही बीत जाता है ।
–छोटे-मोटे अकिंचन खर्चों से छुटकारा न मिले तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।
–जो व्यक्ति ऊपरी दिखावे की खातिर प्रदर्शन करे उसके प्रति कटाक्ष ।

गळी रा गिंडक ई को बूझै नीं । २५२३
गली के कुत्ते भी नही पूछते ।
–जो व्यक्ति खामखा अपनी डीग मारे पर वास्तव मे उसकी अपने मुहल्ले मे भी कोई कद्र न हो ।
–जिसकी कोई-भी परवाह न करे ।

गळी साकडी अर बळद मारणौ । २५२४
गली सकडी और मारने वाला बैल ।
–जिस आफत से बचने का कही कोई उपाय न हो ।
–किसी भी तरह न टलने वाली विपदा से सामना हो जाये तब ।

गळै आया चोर नै खाधै करनै काढणौ । २५२५
गले पडे चोर को कधा देकर निकालना ।
–कभी कभार ऐसी स्थिति भी आ खडी होती है जब नुक्सान पहुचाने वाले व्यक्ति को भी उलटा सहयोग देने के लिए मजबूर होना पडता है ।
–परिस्थिति की अनिवार्यता के अनुसार पेचीदी समस्या के अनुरूप ही काम करना उचित है ।
पाठा : कळियौ चोर खाधै करि काढीजै ।

गळै आयो बजावणौ पडै । २५२६
गले आई बजानी पडती है ।
–इच्छा के विपरीत मजबूरी मे कोई काम करना पडे तब ।
–मन के प्रतिकूल कोई काम करने की विवशता ।

गळै आयोडी घूट ही । २५२७
गले आयी हुई चुस्की थी ।
–जो काम सपन्न होते होते बिगड जाय ।
–सफलता के करीब आकर कोई काम नष्ट हो जाय तब ।

–किसी काम मे लाभ होते होते हानि हो जाय तब ।

गळै ताळवै ई को लागै नीं । २५२८
गले-तालु मे भी नही लगे ।
–एकदम अपर्याप्त वस्तु के लिए ।
–जिस अकिंचन सहयोग से कुछ भी पूरा न पड़े तब ।

गळै बंध्यौ ढोल तौ बजाया ई सरै । २५२९
गले बधा हुआ ढोल तो बजाना ही पड़ता है ।
–इच्छा के विपरीत किसी काम को पूरा करने की लाचारी ।
–सिर पर आ पड़े काम को जब पूरा करने के अलावा कोई चारा न हो ।
–जैसे तैसे आश्रित प्राणियो का पालन-पोषण तो करना ही पड़ता है ।

गळै मे गगा इज बैवै । २५३०
गले म गगा ही बह रही हो ।
–जिस व्यक्ति की वाणी गगा के जल की तरह पवित्र व शीतल हो ।
–कटाक्ष के लिए भी इस कहावत का प्रयोग होता है जब कोई व्यक्ति निहायत कड़वी व गदी बात करे ।

गळै मे हरदम सिगड़ी जगती ई रैवै । २५३१
गले मे हरदम सिगडी जलती ही रहती है ।
–जो व्यक्ति हरदम गुस्से म आग बबूला होता रहे ।
–एक क्षण के लिए भी जिस व्यक्ति के क्रोध की आच ठण्डी न हो ।

गवर रूठी तौ सुहाग लेई भाग तौ लेवण सू री । २५३२
गवर रूठे तो सुहाग लेगी भाग्य तो लेने से रही ।
–अपने अपने सुहाग की मगल-कामना के लिए स्त्रिया चैत्र शुक्ला द्वितीया को गनगौर की पूजा करती हैं । पूजा न करने पर सुहाग ही तो छिनेगा, कोई भाग्य तो छिनने से रहा ।
–जब भाग्य साथ है तो कोई व्यक्ति आखिर कितना नुकसान पहुचा सकता है ?
–स्वाभिमानी व्यक्ति परिस्थितियो से समझौता न करके कोई भी क्षति उठाने को तैयार रहता है ।

पाठा गिणगौर रूसै तौ आपरौ सुहाग राखै ।

गवाड़ै बाळी केरड़ी'र उरण हुवौ गेवाळ । २५३३
बाड़े मे डाली बछिया उऋण हुआ ग्वाल ।
–अपनी-अपनी जिम्मेदारियो को पूर्णतया पूरा करने से ही मनुष्य विमुक्त होता है ।
–किसी की सौंपी हुई अमानत को वापस देने पर ऋण का बोझा समाप्त हो जाता है ।
–किसी भी कर्तव्य की पूर्ति के पश्चात मनुष्य स्वय को पूर्णतया मुक्त महसूस करता है ।

गवाळ बदी नीं रैवै, सीळ बदी रैवै । २५३४
ग्वाल बदी नही रहती, शील बदी रहती है ।
–पहरेदारी से औरतों के शील की रक्षा नही की जा सकती, वे अपने मन से चाहें तो शील रखा जा सकता है ।
–बाहर के बधन स मन का बधन ज्यादा कारगर होता है ।

गवा भेळा घुण पीसीजै । २५३५
गहू के साथ घुन पिसता है ।
–घुन को अनाज खाने से सुख मिलता है तो साथ पिसे जाने पर उसे खतम भी होना पड़ता है ।
–सुख मे साथ रहने पर, दुख म भी पूरा हिस्सा बटाना ।
–पेट भरने के लिए मौत का खतरा भी झेलना पड़ता है ।
–बड़ो की सगति छोटों के लिए घातक होती है ।
–विषम सगति का दुष्परिणाम लाजिमी है ।

गवा री घरटी मे गवार दळ न्हाखियौ । २५३६
गहू की चक्की म गवार दल डाला ।
–अभिजात्य वर्ग के श्रीमन्त लोग अपनी पारिवारिक मर्यादा बिगड़ने पर लाक्षणिक ढग स इस प्रकार क सकेत दिया करते हैं । जैसे किसी शाह साहूकार की औरत के साथ कोई अन्य जाति का व्यक्ति सहवास करे तो वह 'गेहू की चक्की म गवार दलने' की बात के माध्यम से जरूरत पड़ने पर उस छिपे रहस्य को प्रकट करता है ।
–किसी वस्तु का ठीक या सगत उपयोग न होने पर ।

गवा री लोय । २५३७
–अत्यधिक सीधे व सरल व्यक्ति के लिए ।

–जो व्यक्ति हर किसी का कहा मान जाय उसकी सज्जनता को लक्षित करके इस कहावत का प्रयोग होता है।
पाठा : गवा री लोयौ।

गवू खेत में, बेटौ पेट में नं लगन पाचम रौ सीदौ। २५३८
गहू खेत मे, बेटा पेट मे और लग्न पचमी का सौदा।
–अत्यधिक जल्दबाजी करने वाले व्यक्ति के लिए।
–खामखयाली के आधार पर निश्चित योजना बनाना व्यर्थ और उपहासास्पद है।
–थोथे आशावादी पर व्यग।
–निराधार हवाई किले बनाने वाले के प्रति कटाक्ष।

गहण लाग्यौ ई कोन्या, मगता पैला ई फिरग्या। २५३९
ग्रहण लगा ही नही, भिखारी पहिले ही फिर गये।
–किसी आयोजन के पहिले भीड इकट्ठी हो जाय तब।
–किसी आशक्ति विपदा के पहिले ही लोग क्लेश पहचान लगें तब।

गहणा धाया रौ सिणगार नं भूखा रौ आधार। २५४०
गहने सुख का शृगार व दुख का आधार।
–आर्थिक सपन्नता के बीच आभूषण शृगार की शोभा बढाते हैं पर आर्थिक स्थिति बिगडने पर वे ही गहन दुख का सहारा बन जाते हैं।
–परिस्थिति बदल जान पर किसी भी वस्तु की उपयोगिता भी बदल जाती है।

गहणौ चादी रौ, नखरौ बादी रौ। २५४१
गहना चादी का, नखरा बादी का।
–चादी के गहनो की क्वणण ध्वनि और बादी का नखरा हर किसी का ध्यान आकर्षित कर लेता है। इसलिए दोना ही प्रशस्ति तुल्य हैं।

ग्रहण रौ दांन, गगा रौ सिनांन। २५४२
ग्रहण का दान, गगा का स्नान।
–उपरोक्त दोनो बातो का पुण्य सर्वोपरि होता है।
–गगा की पवित्रता का परिकीर्तन।

ग्रह बिना घात नीं, भेद बिना चोरी नीं। २५४३
घर बिना घात नही, भेद बिना चोरी नहीं।
–घर के आदमी के बिना विश्वासघात नही होता और भेद बिना कोई चोरी नही होती।
–घर का वैरी ज्यादा घातक होता है।
–घर की फूट से हमेशा बचन की कोशिश करना ही श्रेयस्कर व लाभप्रद है।

ग्रहियौ जित्त नीं आथमं। २५४४
ग्रहण लगा अस्त नही होता।
–अमूमन यह धारणा है कि सूर्य या चद्र, ग्रहण से मुक्त होने पर ही अस्त होते है।
–एक दुख समाप्त होने से पहिले दूसरा थोडे ही आता है!

ग्याबण गाय अर ऊभी खेती रौ बेरौ नीं पडं। २५४५
गाभिन गाय और खडी खेती का पता नही पडता।
देखिये—क स ८८१

ग्यारस रौ कडदौ बारस नं। २५४६
एकादशी की कसर बारस को।
–इस सबध मे दो धारणाए प्रचलित हैं, एक तो यह कि एकादशी क दान को पाप समझने के कारण न तो कोई दान लेन आता है और न कोई दान देता ही है। इस कारण दूसरे दिन द्वादशी पर उसकी कमी पूरी की जाती है। दूसरी धारणा यह है कि एकादशी के उपवास की कसर दूसरे दिन अधिक खाकर पूरी की जाती है।
–ऐसी बचत की क्या सार्थकता जिसके लिए बाद मे अधिक खर्च करना पडे।
–उधर की कसर इधर निकल जाय तब।

ग्यानी भोगं ग्यान सू मूरख भोगं रोय। २५४७
ज्ञानी भोगे ज्ञान से, मूर्ख भोगे रोय।
–देर सवेर सासारिक कष्ट सभी को भोगने पडते हैं। ज्ञानी उन्हें शातिपूर्वक सहन कर लेते हैं तथा मूर्ख व्यक्ति रो धो कर उसका प्रदर्शन करते हैं।
–अपनी अपनी समझ व धारणा के अनुसार दुख की प्रतीति होती है।

ग्यानी सू ग्यानी मिळै, करं ग्यान री बात।

मूरख सू मूरख मिळै के जूतों के लात । २५४८
ज्ञानी से ज्ञानी मिले, करे ज्ञान की बात ।
मूर्ख से मूर्ख मिले, या जूता या लात ।
—मूर्ख और ज्ञानी व्यक्ति अपने व्यवहार से ही अविलम्ब पहिचाने जा सकते हैं ।
पाठा. ग्यानी सू ग्यानी मिळै, बात बात अर बात ।
गधा सू गधो मिळै, लात, लात अर लात ।

ग्वार दळता बसती न रहे तो मा काई कीज ? २५४६
गवार दलते समय बस्ती न रहे तो मा क्या करे ?
—गवार दलते समय चक्की की आवाज इतनी होती है कि परस्पर बातचीत नही हो सकती ! पर इस दुविधा-जनक सभाव्य स्थिति से नही बचा जाय तो कोई क्या करे !
—कार्य के अनुरूप परिणाम तो होगा ही, उस से बचना सभव नही ।
—*सासारिक खटपट के बीच मन स्थिर रखना चाहिए ।*

गगा कुण खुदाई ? २५५०
गगा किसने खुदाई ।
—जो काम किसी भी व्यक्ति के वश का न हो ।
—जो व्यक्ति अनहोने काम की डींग मारे उसके प्रति कटाक्ष म इस कहावत का प्रयोग होता है ।

गगा न्हाया गधो किसो घोडो व्है ! २५५१
गगा नहाने से गधा, कौनसा घोडा होता है !
देखिये—क स २४०८

गगा गिया गगादास, जमना गिया जमनादास । २५५२
गगा गये गगादास, जमना गये जमनादास ।
—जो व्यक्ति मौका देखकर तुरत अपना रुख या मत बदले ।
—*निपट अवसरवादी व्यक्ति के लिए ।*

गगाजी जावतां कोढ उपडियो । २५५३
गगाजी जाते समय कोढ उघडा ।
—शुभ कार्य के समय जब अकस्मात् कोई अडचन आ खडी हो तब ।
—दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि उपयुक्त समय पर ही आफत आई, जब कि उसके निवारण का उपाय भी सामने है । जिस प्रकार गगाजी जाते समय यदि कोढ भी उघड जाय तो कोई चिंता की बात नही, गगाजल मे स्नान करने से वह दूर हो जायगा ।

गगाजी रो आवणो अर भागीरथ नैं जस । २५५४
गगा का आना और भागीरथ को यश ।
—सयोग का करिश्मा कि निश्चित रूप से घटित होने वाले कार्य का किसी को यो ही यश मिल जाय ।
—*किसी अच्छे कार्य का अवाछित यश किसी को मिल जाय* तब यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

गगाजी सापडिया अर सखिया लाया । २५५५
गगाजी नहाये और सखिये लाये ।
सखिया=शखा के आकार की निहायत छोटी छोटी आकृतियां ।
—निहायत मूर्ख व्यक्ति के प्रति व्यग जो नगण्य काम के *लिए बडा भारी परिश्रम उठाये ।*
—जो व्यक्ति अत्यत महत्त्व की बात का रचमात्र भी लाभ *न उठा सके ।*

गगाजी तिगरा मे कद मावै ? २५५६
गगाजी तिगरे म कब समाये ?
तिगरो=पक्षियो को पानी पिलाने के लिए मिट्टी का छोटा बरतन जो अममून वृक्षो की डालो म टाक दिया जाता है ।
—जो *नासमझ व्यक्ति असभव काम को पूरा करने का निर*-र्थक प्रयास करे ।
—उचित साधनो के बिना बडा काम पूरा नही हो सकता ।
—जो व्यक्ति अकिंचन दान के बदले बहुत बडे पुण्य की आकाक्षा करे तब ।
—जब कोई दुश्चरित्र व्यक्ति किसी पतिव्रता औरत के साथ सहवास करने की आकाक्षा करे तब परिहास म इस कहावत का प्रयोग होता है ।
—निहायत अदना व्यक्ति जब बहुत बडी बात की कामना करे तब ।

गगा न्हाया । २५५७
गगा नहाये ।
—जब कोई व्यक्ति बडे काम की जिम्मेवारी से मुक्त हो जाय

तब सतोष की श्वास लेते हुए वह इस कहावत का प्रयोग करता है।
–किसी बड़ी आफत से छुटकारा पाने पर।

गंगा रौ इज नीर। २५५८
गगा का ही नीर।
–अत्यत निर्मल व निष्कपट व्यक्ति के लिए।
–निहायत सज्जन व्यक्ति के लिए सबोधन।

गंजा रै भाग रा गिडा पड़ै। २५५९
गजे के भाग्य से ओले गिरें।
–अभागे व्यक्ति का दुर्योग।
–असहाय व्यक्ति पर जब कोई अनचीती आफत आ पड़े तब।

गजी माथौ गुथावण चाली। २५६०
गजी सिर गुथवाने चली।
–अक्षम व्यक्ति बडी आकाक्षा करे तब।
–जब कोई व्यक्ति बिना सामर्थ्य के किसी बडे काम मे हाथ डाले तब परिहास मे यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–अयोग्य व्यक्ति की महत्वाकाक्षा के प्रति कटाक्ष।

गंजे नै नाई रौ के धरावणो ? २५६१
गजे को नाई से क्या प्रयोजन ?
–जिस से कोई दूर का ही वास्ता न हो, वह उसकी परवाह क्यो करे ?
–जिस चीज की जरूरत ही न हो तो उसके बारे मे कोई क्यो सोचे ?

गंजे नै रामजी नख को देवै नीं। २५६२
गंजे को भगवान नाखून नही देता।
–किसी दुष्ट व्यक्ति को उसकी हीनता के अनुरूप पर्याप्त साधन न मिले तब।
–यदि बुरा काम करने वाले को पर्याप्त साधन मिल जाय तो वह सारा दुनिया को तबाह कर दे।
–भगवान किसी व्यक्ति पर दुहरी मार नही मारता।

गजौ'र कांकरां मे लुटै। २५६३
गजा और फिर ककरो मे लोटे।
–जो व्यक्ति नासमझी से अपना दुहरा नुकसान करे।
–जिस व्यक्ति को अपने भले-बुरे का रच-मात्र भी ध्यान नही हो।
पाठा गजौ'र काकरा मे गुळाच खावै।

गवां री रोटी रौ कांई पोवणो ? २५६४
गेहू की रोटी का क्या बनाना ?
–जो कार्य निहायत सरल हो उसे कोई भी कर सकता है।
–अत्यधिक सीधा व्यक्ति जो किसी का भी कहा नही टाले।

गा

गागर में सागर। २५६५
गागर मे सागर
–गागर के समान निहायत छोटी बात मे सागर-सा विशाल भाव भर देने पर।
–छोटी-सी उक्ति मे बडे मर्म का महत्त्व दर्शाने के लिए इस कहावत का काव्यात्मक प्रयोग होता है।

गाछ गेल बेल बधै। २५६६
वृक्ष के सहारे ही बेल बढती है।
–बडे आदमी के सहारे छोटे आदमी पन जाते हैं।
–गरीब व्यक्ति को पनपने के लिए किसी बडे आदमी का अकिंचन सहारा भी पर्याप्त होता है।

गाछ माथै चढसी जिकौ सीरणी बोलसी। २५६७
वृक्ष पर चढेगा वही सीरनी बोलेगा।
संदर्भ-कथा : एक चरवाहा गोंद तोडने के लिए बबूल पर चढा। उस जगी बबूल पर काफी ऊचाई तक गोद की डलिया लगी हुई थी। गोद के लालच मे वह ऊपर चढता ही गया। किन्तु गोद समाप्त होने पर वह नीचे उतरने को हुआ तो उसे बडा डर लगा। बबूल की तीखी शूलें उसकी आंखो मे गडने लगी। यदि नीचे गिर पडा तो सारा शरीर शूलो से बिंध जायेगा। सयोग का चमत्कार कि इधर उधर निगाह दौडाने पर उसे नीचे उतरने का सुराग मिल गया। पर ज्यो

ही वह बबूल से नीचे ठोस धरती पर उतरा तो उसे सीरनी की बात अखरी। मन ही मन वह अपने को समझाने लगा कि अब सीरनी चढाने से क्या फायदा। वह तो सकुशल नीचे उतर आया। जो अब इस कटीले पेड पर गोंद खाने की गरज से ऊपर चढेगा वही सीरनी बोलेगा।
–अपना दाव आने पर भला कौन चूकता है ?
–जिसे गर्ज हो वह निहोरे करे।
–स्वार्थ पूरा होते ही रुख बदलने वाले व्यक्ति के लिए।
पाठा इण बावळिये चढसी सो सीरणी बोलसी।
खिजूर माथै चढै सो सीरणी बोलै।

गाजर रा चोर नै सूळी री सजा। २५६८
गाजर के चोर को फासी की सजा।
–छोटे अपराध की बडी भारी सजा।
–सरासर अन्याय की बात हो तब।

गाजर वाळी पुंगी बाजी जित्तै बजाई नींतर तोड खाई।
गाजर वाली पुगी बजी जब तक बजाई, नही तो तोड खाई।
–गाजर की पुगी रहे तो भी उस से कुछ लाभ नही। और यदि वह टूट जाय तो उस से कुछ भी हानि नही।
–जिस वस्तु के रहने से न विशेष लाभ हो और न उसके अभाव मे कुछ हानि हो, उस बात के प्रति लक्ष्य करके इस कहावत का प्रयोग होता है।
–जो वस्तु काम मे आई तब तक ही अच्छा।
–जिस वस्तु या बात के प्रति कुछ खास दिलचस्पी हो।

गाजा जिणरा बाजा। २५७०
गाजे जिसके बाजे।
–जो सता मे है, उसकी दुन्दुभी बजती है।
–जिसका कुछ भी प्रभुत्व है, उसका सभी गुणगान करते हैं।
–जो कुछ भी चलता-पूर्जा है वह सफलता प्राप्त कर लेता है।

गाजा बाजा सै बींद रा बाप माथै। २५७१
गाजे-बाजे सभी दूल्हे के पिता पर।
–जिसके हाथ मे अधिकार होता है, वह जैसा चाहे वैसा काम हो सकता है।
–जिसकी जिम्मेवारी होती है वही उसके भले-बुरे का भागीदार होता है।
–बारातियो की तरह जो व्यक्ति दूसरो के खर्च पर मौज या गुलछर्रे उडायें उनको लक्ष्य करके भी इस कहावत का प्रयोग होता है।

गाजो नीं कोई बाजो, बींदराजा आय बिराजो। २५७२
न गाजा और न बाजे के स्वर, दूल्हेराम बैठो आकर।
–किसी कार्य की गुरुता के अनुरूप आवश्यक पूर्ति न होने पर।
–किसी की योग्यता या बडप्पन के अनुसार वाछित आदर-सत्कार न होने पर।

गाडर आणी ऊन नै बाधी चरै कपास। २५७३
भेड मगाई ऊन को बधी चरे कपास।
–जिस बात, कार्य या वस्तु से लाभ की आशा हो किन्तु उस से लाभ के बदले उलटा नुकसान हो तब।
–लाभदायक चीज उल्टी हानि पहुचाने लगे तब।
–अपेक्षित लाभ के बदले क्षति होने पर।

गाडर गाडर ! थारै ऊन रो आयरो करावस्यू के म्हारो ऊन मत कतरज्यो। २५७४
अरी भेड ! तेरे लिए ऊन का वस्त्र बनाऊगा कि मेरी ऊन मत कतरना।
–जो व्यक्ति भलाई का लोभ देकर बाद मे हानि पहुचाना चाहे उसके लिए।
–कुटिल व्यक्ति के उपकार से सतर्क रहने का निर्देश।

गाडर-चाल। २५७५
भेड चाल।
–बिना सोचे समझे किसी का अनुकरण करना।
–अधानुकरण।
–दूसरे के इशारो पर चलना।

गाडर माथै ऊन कुण छोडै ? २५७६
भेड पर ऊन कौन छोडता है ?
–जिस किसी के हाथ मे सता हो, गरीब का शोषण तो होगा ही।
–किसी भी राज्यसत्ता मे असहाय को शोषण से मुक्ति नही

मिल सकती।
पाठा लरडी मार्थं ऊन कुण छोडै।

गाडर रै पालती सेडौ इज धन व्है। २५७७
भेड के पास सेडा ही धन होता है।
–गरीब के पास जो कुछ भी होता है, वही उसकी माया है।
–फूहड औरत की गदगी पर कटाक्ष।

गाडा टळै पण हाडा नीं टळै। २५७८
गाडी टल जाय पर हाडे नही टलते।
हाडा—बूंदी रियासत के राजपूतो का एक गौत्र विशेष जो अपनी बहादुरी व हठ के लिए राजस्थान मे प्रसिद्ध है।
–लकीरो पर चलती बैलगाडी के सामने यदि कोई पैदल यात्री आता है तो वह टलकर गाडी को राह दे देता है। पर हाडा जाति का राजपूत सामने आये तो गाडी को राह छोड कर टलना पडता है। उनकी बहादुरी व हठ को प्रदर्शित करने के लिए ही इस कहावत का उद्भव हुआ होगा।
–जरूरत से ज्यादा हेकडी व मनमानी करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

गाडी अर लाडी तौ वांगियोडी ई सावळ। २५७९
गाडी और लाडी तो चिकनाई स ही ठीक रहती है।
–बैल गाडी की धुरी मे कपडे के चिथडो को घी म भिगोकर दिया जाता है जिस से वह सुगमतापूर्वक चलती रहती है। इसी प्रकार घरवाली को प्रसव के समय पौष्टिक पदार्थ खिलाने से वह स्वस्थ रहती है।
–ठीक वक्त पर जरूरत पूरी होने से घर की गाडी अच्छी तरह चलती रहती है।

गाडी अर लाडी बधावण जोग। २५८०
गाडी और लाडी वदना के योग्य।
–बैलगाडी खेती व कमाई का साधन तथा दुल्हन घर की लक्ष्मी—दोनो वदना के योग्य है।
–गृहलक्ष्मी व आर्थिक साधन स्तुत्य हैं।
पाठा गाडी अर लाडी नै बधावणी चोखी।

गाडी उलळियां विनायक रो किसौ कांम? २५८१
गाडी उलटने पर विनायक का क्या काम?
–काम बिगड जाने के बाद किसी से फरियाद किस काम की।
–काम बिगड जाने के पश्चात् भगवान भी उसे सुधार नही सकता, फिर उसे सुमरने से क्या लाभ?
मिलाइये—क स. ८४१
पाठा. गाडी उलट्या विनायक मनाया के होय?
गाडै उलळियै विनायक रो किसौ काम।

गाडी कनै बळद आया सरसी। २५८२
गाडी के पास बैलो को आना ही पडगा।
–गाडी औरत का प्रतीक है और बैल पुरुष के प्रतीक। अपने कधो पर गाडी का जुआ रखने के लिए बैल स्वय अपने पावों चलकर उसके पास आते हैं। उसी प्रकार पुरुष या पति को औरत के पास आना ही पडता है।
–जिस से स्वार्थ पूरा होता हो गर्जमन्द को उसके पास जाना ही पडता है।

गाडी गिंडक रै पाण थोडी ई चालै? २५८३
गाडी कुत्ते के सहारे थोडे ही चलती है?
–किसी काम का झूठा श्रेय लेने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।
–राज्य व सत्ता की गाडी किसी एक व्यक्ति के बूते पर नही चलती। जो ऐसा समझता है उस गाडी के नीचे चलने वाले कुत्ते की तरह अपनी योग्यता का झूठा भ्रम है।
मिलाइये—क म. १८३१
पाठा · गाडी हेटै कुत्तौ वैवै जकौ जाणै गाडी म्हारै पाण ई चालै।

गाडी गोरवै भूखां मारै। २५८४
गाडी गाव के पास भूखो मारती है।
–यदि गाव के पास ही बैलगाडी खराब हो जाय तो उस मे भरी जोखिम को छोड कर गाव म आना सभव नही इसलिए सवारी का सुविधा जनक साधन होते हुए भी कठिनाई का सामना करना पडता है।
–सुविधा-जनक वस्तु भी कभी-कभार दुविधा या विपत्ति का कारण बन जाती है।
–राह चलते साधन बिगड जाने से दुख उत्पन्न हो जाता है।
–कमाई व सुख की आशा देने वाली सतान जब बुढापे मे कष्ट पहुचाये तब।

गाडी तौ चीला ई वेवै । २५८५

गाडी तो चहिलो पर ही चलती है ।

–समाज व संस्कृति का ढर्रा परम्परा के पहियो पर ही आगे बढता है ।

–न्याय व सचाई तो आखिर अपनी लीक पर ही सुगमता से चल पाते हैं ।

–सामाजिक नियमो के अनुरूप चलने पर ही कुशलता है ।

गाडी तौ वागी ई चालै । २५८६

गाडी तो धुरी पर घी चुपडने से ही चलती है ।

–मनुष्य का शरीर पौष्टिक पदार्थ खाने से ही स्वस्थ व सक्रिय रहता है ।

–हरदम सभालते रहने व देखरेख करने से ही समाज की गाडी सुचारू रूप से चलती है ।

–रिश्वत देने से ही प्रशासन का काम चलता है ।

गाडी देख लाडी रा पग सूजै । २५८७

गाडी देख कर लाडी के पाव सूजते हैं।

–सुविधा व आराम के लिए हर व्यक्ति के मन मे चाहना रहती है ।

–सुविधा मिलने की आशा हो तो कोई भी कष्ट नही उठाना चाहता ।

–सामने सुख हो तो उसे कौन छोडना चाहता है ?

गाडी धान री मूठी बानगी । २५८८

गाडी भर अनाज की मुट्ठी बानगी ।

–नमूने मात्र से पूरी वस्तु की परख हो सकती है ।

–थोडे से सपर्क से किसी भी आदमी के आचरण का पता लग सकता है ।

गाडी नै छाजळै रौ काई भार ? २५८९

गाडी को सूप का क्या भार ?

–बडी क्षमता वाले व्यक्ति को अकिंचन कार्य का क्या भार ?

–समर्थ व्यक्ति को हलका काम करने मे कुछ भी जोर नही पडता ।

–किसी भी धनाढ्य व्यक्ति के लिए मामूली दान करना नितांत सहज है ।

गाडी भरनै वायां, खीसा भरनै लाया । २५९०

गाडी भरकर वोये, जेब भरकर लाये ।

–अनुभव व कुशलता के बिना कोई काम करने से असफलता ही हाथ लगती है ।

–अयोग्य व अकुशल व्यक्ति के प्रति कटाक्ष ।

गाडी रै धणी नै गोरवै ई रैणौ पडै । २५९१

गाडी के मालिक को गाव के पास ही रुकना पडता है ।

–अकस्मात् गाडी खराब होने से उसके मालिक को गाव के करीब आकर भी अकेले रात गुजारने के लिए मजबूर होना पडता है ।

–साधन सपन्न व्यक्ति को भी कभी-कभार अभाव का कष्ट उठाने के लिए विवश होना पडता है ।

–दुर्योग की अडचन से कोई भी बच नही सकता ।

–दुख या विपदा कब किस रूप म प्रकट हो जाय उसका पता तक नही चलता ।

मिलाइये—क सं. २५८४

गाडी रै पैडा ज्यू लाली हालै । २५९२

गाडी के पहिये की तरह जीभ चलती है ।

–गाडी का पहिया आगे तो घूमता ही है , पर जरूरत पडने पर पीछे भी घूम जाता है , गदी व मैली जगह से भी उसे कोई दुराव नही—वह तो सहज गति से चलता रहता है । उसी प्रकार जिस व्यक्ति की जबान हरदम चलती ही रहती हो , आगे पीछे बदलती रहती हो , अच्छी - बुरी बातो का कोई ध्यान नही रखती हो तब उसकी तुलना गाडी के पहिये से की जाती है ।

गाडी रै पाडो बाधो । २५९३

गाडी के पाडो बधी हुई है ।

सदर्भ - कथा : किसी एक व्यक्ति को बैलगाडी की जरूरत हुई तो वह अपने पडौसी के पास गाडी मागने के लिए पहुचा । पडौसी मलिन स्वभाव का था । गाडी मागने पर उसने सीधा इन्कार न करके बहाने - बाजी करते हुए जवाब दिया कि गाडी के पाडी बधी हुई है । तब उस व्यक्ति ने उसके मन की बात को न समझते हुए समस्या का सहज उपाय बताया और कहा कि वह कहे तो पाडी

को खोलकर कही दूसरी जगह बांध दे। तब पडोसी ने उपहास की हसी हसते हुए तुरत उत्तर दिया—तो क्या मैंने भख मारने के लिए आपका इतना लिहाज रखा। सीधे इन्कार करने मे मुझे शर्म थोडी ही आती थी!

–सीधा इन्कार न करके इधर उधर की बहाने-बाजी करने वाले व्यक्ति के प्रति परिहास मे इस कहावत का प्रयोग होता है।

पाठा : गाडॅ पाडौ बाधौ।

गाडी रौ पेडौ'र मरद री जबान तौ चालती ई चोखी।

गाडी का पहिया व मर्द की जबान तो चलती हुई ही अच्छी।

–व्यर्थ की बकवास करने वाले बातूनी व्यक्ति को किसी के द्वारा टोकने पर वह अपनी पुष्टि की खातिर इस कहावत का सहारा लेता है।

पाठा : गाडी कौ पेडौ अर आदमी की जीभ चालती ई चोखी।

गाडी रौ पाचरौ'र लुगाई रौ टाचरौ कूट्योडौ ई चोखौ।

गाडी का पाचरा व औरत का टाचरा ठोकना ही अच्छा।

पाचरौ = लकडी के पहिये मे चक्राकार पूठियो के घेरे की रोकथाम के लिए लकडी की बडी-बडी कीलें लगी रहती हैं। गाडी के निरतर चलते रहने से वे कभी कभार बाहर निकल जाती हैं तब उन्हे ठोकने से वे अपनी जगह पकड लेती हैं। बाहर निकलने वाली उन कीलो को पाचरा कहते है।

टाचरौ = सिर का पिछला हिस्सा।

–जिस तरह चलती गाडी मे अडचन पैदा करने वाले पाचरे को बार-बार ठोक कर दुरस्त किया जाता है उसी प्रकार औरत के सिर पर जब-तब जूते लगते रहे तब गृहस्थ की गाडी भी सुचारू रूप से चलती रहती है।

गाडॅ लीक सो गाडी लीक। २५९६

गाडा लीक सो गाडी लीक।

गाडॅ=बडी गाडी।

गाडी=अपेक्षतया छोटी गाडी।

–बुजुर्ग जिस राह चलते हैं युवक उसी का अनजाने ही अनुकरण करते हैं।

–जिस राह पर पुरखे आसानी से जीवन पर्यन्त चलते रहे उस पर आने वाली पीढी को चलने मे क्या कठिनाई हो सकती है।

–बडे आदमियो की बताई राह पर चलना ही श्रेयस्कर है।

गाडोल्या लुहार रौ कुण सौ गाव? २५९७

गाडिये लुहार का कौन सा गाव?

गाडोल्या लुहार = एक घुमक्कड जाति, जिसके लिए एक ठौर गाव मे बसकर रहना वर्जित है।

–जिस व्यक्ति का कोई अता पता न हो उसे लक्ष्य करके इस कहावत का प्रयोग होता है।

गाडौ तौ उलळग्यौ के बिनायकजी सहाय करज्यौ। २५९८

गाडी तो उलट गई कि विनायकजी सहाय करना।

–काम बिगड जाने के बाद किसी से फरियाद करना व्यर्थ है।

–काम बिगडने के पहिले सतर्कता अपेक्षित है, बाद मे कुछ नही किया जा सकता।

मिलाइये—क स. ८४१, २५८१

गाढवाळे मे रहसी जकौ राज रा घोडा पासी। २५९९

रजवाडे मे रहेगा सो राज्य के घोडे पायेगा।

–जो व्यक्ति किसी के अधीन या आश्रित रहता है उसको स्वामी की बेगार करनी ही पडती है।

–बडे व्यक्तियो की मनमानी से गरीब व्यक्ति बच नही सकता।

–असहाय व्यक्ति साधन-सपन्न व्यक्ति का हुक्म बजाता है।

–भला सत्ताधारी के आदेश को कौन टाल सकता है?

पाठा. इण ठिकाणॅ रहसी सौ रावळा घोडा पासी।

गाता गातां ई कळावत हुवॅ। २६००

गाते गाते ही कलावत होता है।

–निरतर अभ्यास से ही किसी काम मे पूर्णता हासिल होती है।

–निष्ठा व अभ्यास ही किसी काम की सफलता की सर्वोपरि कसौटी है।

गादड़-पट्टौ। २६०१

सियार वाला पट्टा।

सदर्भ - कथा : कुत्तो के डर से सियार गाव की बस्ती मे आने से डरते हैं। एक बार एक सियार ने अपनी जमात इकट्ठी करके कहा कि वह पास के गाव मे दिन दहाडे चलना चाहता है। इतनी बडी जमात के सामने बेचारे कुत्तो का क्या जोर चलेगा। इस तरह डर कर जीन से तो मरना अच्छा है। एक डरपोक सियार ने बीच ही मे शका की. आप ठीक कह रहे है। लेकिन आप की तरह हिम्मत व निडरता तो आते-आत आयेगी। यदि कुत्तो ने पीछा किया तो...।

नेता बने सियार ने एक पुराने कागज का टुकडा बताते हुए तुरत जवाब दिया— मैंने इस का उपाय सोच लिया है। तभी तुम सभी को इस तरह इकट्ठा करने की तरकीब सोची। मैंने गाव का पुख्ता पट्टा करवा लिया है। बोलो, राजाजी का पट्टा देखते ही कुत्तो का भोकना एकदम बद होगा या नही ?

सियारो की सारी जमात ने नेता का समर्थन किया कि तब तो डर जैसी कोई बात नही। डके की चोट गाव म चलना चाहिए। इस भाति के दबग समर्थन के बाद नेता न एक पल की भी देर नही की। एकला का प्रदर्शन करते हुए सभी सियार बडे रौब से गाव की ओर बढे। नेता सियार सब से आगे था। पर गाव मे घुसते ही कुत्तो को सियारो की एकता का पता चला तो सभी तरफ से अपन-आप ही वे भोकते हुए उस जमात पर टूट पडे। नेता-सियार वापस भागने मे भी सबसे आगे था। साथियो ने उसे पट्टे वाली बात याद दिराई। कहा—इन्हें अपना पट्टा तो बताओ। राजाजी वाला पट्टा तो बताओ। तब उस सियार ने और जोर से भागन की चेष्टा करते हुए जवाब दिया—ये तुम्हारे बाप, बिलकुल अनपढ हैं। पढना नही जानते, केवल तोडना जानते हैं। जान बचाकर भागो, नही तो मारे जावोगे।

–काम बिगड जाने के बाद अगुवाई करने वाले नेता इसी प्रकार की बहानबाजी करते हैं।
–मूर्खो के सामने ज्ञान की बात करना व्यर्थ है।
–गवार लोगो के सामने बौद्धिक तर्क कुछ भी माने नहीं रख रखता।

गादड़ मारी पालथी, मेह धड़ूक्यां हालसी। २६०२

सियार ने मारी पालथी मेह बरसने पर ही हिलेगा।

सदर्भ - कथा : एक बार एक चालाक सियार तालाब के किनारे मिट्टी का चबूतरा बना कर कानो मे ऊट के मीगने लटका कर पूरा वेश बदल कर बडे रौब से उस पर जम गया। जो भी जानवर पानी पीने आता वह उसे डरा कर कहता — मैं इस जगल का राजा हू। यह मेरा सिंहासन है। मेरी स्तुति करने के बाद ही इस तालाब का पानी पी सकते हो।

बडे आश्चर्य की बात कि बडे-बडे खूखार जानवर तक उसके चक्मे मे आ गये। सियार की बताई हुई स्तुति करने के बाद ही वे उस तालाब का पानी पीते। किन्तु एक लोमडी उसकी चालाकी समझ गई। तिलक,त्रिपुड, माला तथा बदले हुए वेश के उपरात भी वह असलियत समझ गई। पानी पीन के पहिले उसने डरते हुए जान कर उसकी स्तुति की — वाह क्या कहना है ! सोने रूपे का यह चमकता हुआ सिंहासन, गले मे मोतियो की बेश कीमती माला। कानो मे गज-कुडल। इद्र-भगवान भी आपके सामने पानी भरते हैं।

सियार ने बखुशी उसे पानी पीने की इजाजत देदी। पर चालाक लोमडी प्यास बुझाने के बाद मन की बात रोक नही सकी। कुछ दूरी पर जाकर वह कहने लगी—अरे, ढोगियो के सरताज, तू किसे चकमा दे रहा है। छि गोबर मिट्टी का यह गदा चबूतरा। बदबू के मारे नाक फटा जा रहा है। गंदे मीगनो की यह माला। तेरे नकली वेश मे सियार का रूप नही छिप सकता।

यह कह कर लोमडी भागने लगी तो सियार क्रोध मे दात किटकिटाते हुए उसके पीछे दौडा। जब सियार बहुत ही करीब आ गया तो जान बचाने के लिए लोमडी झट एक लम्बे पेड पर चढ गयी। सियार मुह लटका कर नीचे ही खडा रहा। पेड पर चढना उसके बूते की बात नही थी। लोमडी ने कहा—सियार मामा, तुम कब तक मेरा इतजार करोगे। मैं तो महीने भर तक नीचे नही उतरने वाली।

तब सियार ने कहा—मुझे इसकी कोई चिंता नही।

मैं तो यहां जम गया सो जम गया । आसन मार कर चार महीने तक बैठा रहूंगा । बरसात के बाद ही उठूंगा।

आसानी से उसके झांसे में आने वाली वह लोमड़ी भी नहीं थी । सामने एकटक झांकती हुई बोली—सियार मामा, वह देखो तो, कुत्तों की फौज जैसा यह किसका झुण्ड आ रहा है ?

कुत्तों का नाम सुनते ही सियार तो पूछ दबाकर वहां से नौ दो ग्यारह हुआ और लोमड़ी हंसती - हंसती पेड़ से नीचे उतर कर अपनी राह लगी ।

–झूठा रुतबा अधिक समय तक नहीं चलता ।
–आखिर पोल तो खुलकर ही रहती है ।

गादड़ै री उतावळ सू बोर थोड़ा ई पाकै । २६०३

सियार की जल्दबाजी से बेर थोड़े ही पकते हैं ।

–किसी काम में वांछित समय तो लगता ही है, तब बेकार जल्दबाजी से क्या फायदा ।
–समय की अवधि को जल्दबाजी से लांघा नहीं जा सकता ।
–काम की अवधि तो अपना वांछित समय लेकर ही रहती है ।

पाठा : गादड़ै री उतावळ सू बोर वैगा कद पाकै ?

गादड़ै री मारयोड़ो सिकार नाहर कद खावै ? २६०४

सियार के मारे हुए शिकार को नाहर कब खाता है ?

–बड़े व्यक्ति को अदने आदमी का एहसान नहीं लेना चाहिए ।
–स्वाभिमानी व्यक्ति स्वार्थ की खातिर समझौता नहीं करता ।
–स्वार्थ के लिए अपने आदर्शों की लीक छोड़ना उचित नहीं ।

गादड़ै री मौत आवै जणा गांव साम्ही भाजै । २६०५

सियार की मौत आती है तो वह गांव की ओर भागता है ।

–कुत्ते सियारों के जन्मजात बैरी होते हैं । देखने पर छोड़ते ही नहीं । इस डर से सियार गांव की तरफ मुंह भी नहीं करते ।
–जिस व्यक्ति की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है — वह अपने से अधिक शक्तिशाली से भिड़ता है ।
–जब दुर्योग होता है तो अनजाने ही अनिष्ट अपनी ओर खींच लेता है ।

गादड़ै रै मूंडै न्याव । २६०६

सियार के मुंह से न्याय ।

संदर्भ - कथा : एक सिंह तीन दिन से पिंजरे में बंद था । भूख के मारे बेहाल । यात्रा पर जाता हुआ एक वृद्ध ब्राह्मण पास से गुजरा तो सिंह ने उसके खूब निहोरे किये । आंखों में आंसू भरकर मुक्त करने की बार-बार अनुनय प्रार्थना की । ब्राह्मण ने हर बार डरते हुए शंका की— यदि बाहर निकलते ही तुम मुझे खा जाओ तो यह उपकार मेरे क्या भाव पड़े । भूखे बच्चों का पेट भरने के लिए रोजी पर निकला हूं । भूख अंधी व बहरी होती है । यदि तुम मुझे खा गये तो मेरे घरवाले तड़फ-तड़फ कर मर जायेंगे ।

सिंह ने हाथ जोड़ते हुए कहा—भला, यह बात कैसे हो सकती है ? आप मेरा उपकार करें और मैं आपको हानि पहुंचाऊं । ऐसी शंका से तो मेरा मर जाना ही बेहतर है । हिंसक जरूर हूं, पर कृतघ्न नहीं हूं । मैं मुक्त होते ही आपको भी हमेशा के लिए दुखों से मुक्त कर दूंगा । मेरे पास मोहरों से भरे सात कलश हैं ।

दया में लोभ बड़ा होता है । ब्राह्मण ने कांपते हाथों से पिंजरा खोल दिया । पर मुक्त होते ही भूखे सिंह को अपना वचन कतई याद नहीं रहा । सचमुच भूख अंधी व बहरी होती है । वह ब्राह्मण को खाने के लिए झपटा तो उसकी घिग्घी बंध गई । फिर भी विगलित स्वर में इतना तो उसके मुंह से निकल ही पड़ा — वचन भूल कर मुझे खाओगे तो तुम सड़-सड़ कर मरोगे । यह मेरा शाप है । भूखे ब्राह्मण का शाप कभी झूठा नहीं होता ।

ब्राह्मण के शाप से सिंह भी तनिक डरा । कहने लगा मैं अपने वचन का तो पालन कर ही रहा हूं । मेरा पंजा पड़ते ही तुझे दुखों से मुक्ति मिल जायेगी ।

ब्राह्मण ने कांपते हुए स्वर में कहा — लेकिन मोहरों से भरे सात कलश...।

'वे तो मेरे पास हैं और मेरे पास ही रहेंगे । मैंने तुम्हें देने के लिए कब कहा था ।'

'यह तो सरासर अन्याय की बात है ।'

'तेरी ऐसी ही इच्छा है तो किसी से न्याय करवा ले ।'

सिंह का इतना कहना हुआ कि उधर से एक सियार गुजरा । वह अब तक छुपा हुआ दोनों का विवाद चुपचाप सुन रहा था । न्याय करने की बात सुनते ही वह

हिम्मत करके सामने आया। बोला—आप दोनो की रजामंदी हो तो इसका न्याय मैं कर दू।

सिंह को तो पूरा विश्वास था कि जगल के राजा की बात टालने का दुस्साहस सियार सपने मे भी नही कर सकता। ब्राह्मण के पास तो दूसरा और चारा भी क्या था। मजबूरन उसे मानना पडा।

सब कुछ जानते हुए भी सियार ने ब्राह्मण के मुह से सारी बात सुनी। फिर कहने लगा—जगल के राजा का न्याय करने की मेरी तो बिसात ही क्या ? पर यह बात मुझे एक दम झूठ लग रही है। मनुष्य से चालाक दुनिया मे दूसरा कोई प्राणी नही। उस तो जिंदा छोडना ही पाप है। मैं कैसे मान लू हमारे महा पराक्रमी राजा इस पिंजरे मे कभी कैद हो सकते हैं ? इनकी छाया भी भीतर पहुचे तो यह पिंजरा टुकडे टुकडे हो जायेगा।

तब भूखे सिंह ने मुस्कराने की चेष्टा करते हुए कहा नही, नही, यह बात बिलकुल सही है। सचमुच मैं इस पिंजरे मे बद था ...।

सियार ने बीच मे टोकते हुए कहा—मै नही मानता। अपनी आखो से प्रत्यक्ष देखे बिना मैं किसी भी बात पर यकीन नही करता।

'तो लो मैं प्रत्यक्ष दिखा कर तुम्हें यकीन दिलाता हू।'

यह कह कर सिंह फिर लपक कर पिंजरे मे घुसा। और सियार ने उससे भी अधिक फुर्ती से पिंजरा बद कर दिया। सियार मुस्कराकर आगे जाने लगा तो सिंह के साथ हतप्रभ ब्राह्मण ने भी पूछा—न्याय किये बिना कैसे जा रहे हो ? मैं तो पहिले से ही जानता था...!

सियार ने ठहाका मारते हुए कहा—क्या खाक जानते थे। मनुष्य होकर इतना भी नही समझे ! न्याय तो हो गया। अपनी राह लगो। लोभ के वशीभूत इस तरह से फिर कभी अपकारी सिंह का पिंजरा खोला तो बेमौत मारे जाओगे। उपकार की बात इतनी जल्दी भूल कर तुम्हे मारने वाले कृतघ्न राजा को तडफ तडफ कर मरने के लिए इस पिंजरे मे ही छोड दो। अब ये चाहे जितने पजे पटकें, बाहर नही निकल सकते। अब तो मौत के सिवाय इनके प्राणो को कोई मुक्ति नही दिला सकता।

जान बचने की खुशी मे ब्राह्मण जाने लगा तो सियार ने कहा—ठहरो, अपने नेक राजा के वचनो का पालन मैं करूगा। चलो मेरे साथ, मोहरो से भरे कलशो की जगह बताता हू। हम जानवरो के लिए उनका कुछ भी उपयोग नही। बिना उपयोग की चीज मे भी सबसे बडा उपयोग तुम मनुष्यो ने खोज निकाला ! धन्य है तुम्हारी बुद्धि !

—उपकार के बदले अपकार करने वाले कृतघ्न व्यक्ति को कभी माफ नही करना चाहिए।

—लोभ के वशीभूत दुष्ट व्यक्ति का भला नही करना चाहिए।

गादडै हाळा भाटा भिडावणा। २६०७

सियार वाले पत्थर भिडाना।

—जो व्यक्ति दूसरो के बीच कलह करवाने की कुचेष्टा करे।

—इधर की बात उधर और उधर की बात इधर करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

गादी नै घाव कुण घालै ? २६०८

गद्दी पर घाव कौन करे ?

—सत्ता का सामना कौन करे ?

—सत्ता का विरोध करने की किस मे हिम्मत है ?

—राजा को क्षति कौन पहुचाये ?

गाभा कैवे थू म्हारी कुरब राख, हू थारी राखस्यू। २६०९

वस्त्र कहते हैं कि तू मेरी प्रतिष्ठा रख, मैं तेरी रखूगा।

—मैले कपडो को धोकर उजले रखने से दोनो की प्रतिष्ठा *निभती है।*

—आपसी रख-रखावल की बात।

गाभा जग सुहाता, खाणो मन सुहातो। २६१०

कपडे जग सुहाते, खाना मन सुहाता।

देखिये—क स. २२२२

गाभा फाटा गरीबी आई, जूती फाटी चाल गमाई। २६११

कपडे फटे गरीबी आई, जूते फटे चाल गवाई।

—फटे कपडो मे गरीबी प्रकट होती है और फटे जूतो से चाल बिगड जाती है।

—फटे कपडो से भी फटे जूते पहिनना ज्यादा भद्दा है।

गाभा फाटोडा मत जो, जात री ईंदी हू। २६१२

फटे कपडे मत देख, जात की इंदी हूं।
–इंदा गौत्र के राजपूत कुलीनता मे वडे माने जाते हैं। पर उस सदर्भ से हट कर भी इस कहावत के प्रयोग का इसी रूप मे प्रचलन है।
–गरीबी के वावजूद भी कुलीनता का अनुभव।
–प्रतिष्ठित जीवन केवल आर्थिक स्थिति पर ही निर्भर नही करता।
–फटीचर हालत म भी कुलीनता या रईसी की बू।
–पहिनावे की वनिस्पत आदमी के गुणो की कद्र की जानी चाहिए।

गाभो, टपरी अर रोटी, दूजी लायपाय खोटी। २६१३
रोटी, कपडा और निवास, वाकी झझट सब वकवास।
–अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति ही प्रमुख समस्या है, वाकी सारी बातें गौण।
–जीवन की आवश्यकताओ को प्राप्त करना ही मनुष्य जीवन का सर्वोपरि सघर्ष है, शेष सारा धर्म, ज्ञान-विज्ञान, पोथी-पन्ने, उपदेश व आदर्श दिखावा मात्र है।

गाभो सपेत अर घोडो कमेत। २६१४
कपडा सफेद और घोडा कमेत।
कमेत = कमेत रग का घोडा शुभ माना जाता है।
–कपडा सफेद अच्छा और घोडा कमेत अच्छा।
–अक्सर सफेद कपडों की प्रशसा के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

गाय अर किया तो देवै जठै ई सिधावै। २६१५
गाय और कन्या तो जहा भेजो विदा हो जाती हैं।
–मा-बाप से परे कन्या की अपनी कोई स्वतत्र इच्छा नही होती, वे जहा भी उसकी शादी करें, वह चुपचाप वहा चली जाती है।
–अक्सर कन्या को लक्ष्य करके इस कहावत का प्रयोग होता है।

गाय किणरी गोलो किणरो? २६१६
गाय किसकी गोला किसका?
–किसी की गाय द्वारा किसी दूसरे के खेत मे नुकसान होने पर जब खेत का मालिक गाय के मालिक को उलहना देता है तो वह विनम्रता पूर्वक कहता है कि गाय किसकी है और यह वदा भी किसका है। यानी गाय भी उनकी है और वह भी उनका ही है। फिर गरीब को उलहना देने की क्या जरूरत है।
–घनिष्ठ आत्मीयता का प्रदर्शन करते हुए जो व्यक्ति रियायत मागना चाहे तब वह इस कहावत का प्रयोग करता है।
पाठा गाय नै गोला किण रा?

गाय खड खावै तो पेट सारू। २६१७
गाय घास खाती है तो अपने पेट की खातिर।
–अपनी स्वार्थ सिद्धि म यदि किसी का भला हो जाय तो बात दूसरी है, अन्यथा सभी अपना मतलब गाठन क लिए ही सारा काम करते हैं।
–इस दुनिया मे स्वार्थ के अलावा कोई भी कार्य नही होता।
पाठा गाय खड खावै सो पेट रै आटै।
गाय चारो आपरा पेट सारू खावै, धणी रा दूध सारू थोडो ई खावै।

गाय गी अर गळवाणो ई लेगी। २६१८
गाय गई और साथ मे रस्सी भी ले गई।
–जाने वाले व्यक्ति के द्वारा दुहरी हानि हो तव।
–अक्सर गहने या कपडे लत्ता को साथ लेकर घर से भाग जाने वाली औरत के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।
मिलाइये—क स. १८१७

गाय घास सू धरमेलो करै तो खावै की? २६१९
गाय घास से दोस्ती करे तो खाय क्या?
–जिस चीज या बात से स्वार्थ सिद्धि होती हो तो उसे छोडा नही जा सकता।
–स्वार्थ व लिहाज दोनो साथ-साथ नही चल सकते।
पाठा: गाय खड सू प्रीत पाळै तो खावै काई?
गाय घास सू भायेला करै तो खावै काई?

गाय जायो के मां जायो! २६२०
गाय से जन्मा या मा से जन्मा।
–गाय से जन्मा बैल और मा के पेट मे जन्मा सगा भाई ये

दो ही वक्त पर साथ देते हैं।
–दुख के दिनो को पार लगाने वाला या तो बैल या भाई।

गाय जैडा बाछडा। २६२१
गाय जैसे वछिये।
–मा जैसी सतान।
–अक्सर बुरी मा की बुरी सतान के लिए ही इसका प्रयोग होता है।

गाय दूध गिंडका नै पावै। २६२२
गाय दूह कर कुत्तो को पिलाना।
–कुटिल या दुष्ट व्यक्तियों को अच्छी चीज देकर उसका अपव्यय करना।
–किसी का ज्यादा हक छीन कर जब कोई व्यक्ति अनधिकृत आदमी का भला करे और वह बाद मे उसे धोखा दे जाय तब।
–अपना समझ कर जिस व्यक्ति का पालन-पोषण किया जाय और वह बाद मे उसी से झगडने लगे तब।
–जो कोई व्यक्ति अपात्र की भलाई करें तब।
पाठा गाय दूध गिडका नै राळै।
गाय रौ दूहि नै कूतरै नै पावै।
गाय दूध'र गधा नै पावै।

गाय दूहो नै लीजै, बळध जोतर नै लीजै। २६२३
–ज्ञानी की परख ज्ञान के द्वारा और कर्मठ व्यक्ति की परीक्षा कर्म के द्वारा होनी चाहिए।
–जिसकी जैसी वाछित उपयोगिता हो उसकी वैसी ही परख अनिवार्य है।

गाय नीं बाछी, नींद आवै आछी। २६२४
न गाय न वच्छी, नीद आये अच्छी।
–जिस व्यक्ति की कोई पारिवारिक या सामाजिक जिम्मेदारी न हो तो वह टाग पसार कर निश्चित सोता है।
–पत्नी और बच्चे न हो तो फिर नीद आने मे क्या कसर!
–जिस व्यक्ति के पास धन माया की कुछ भी जोखिम न हो उसे कोई चिंता नही रहती।
–फक्कड व्यक्ति के लिए।

गाय नै हळ जोत दी
गाय को हल जोत
–किसी सीधे-सादे व्य
–निहायत भोली ..
जाय तब।

गाय न्याणै की, ग्रू -
गाय न्याणे की, बहू
–अच्छी गाय लानी
अच्छी बहू लानी हो
–पूर्णतया देख भाल के

गाय ब्यावै अर ..
गाय ब्याये और साड
–झूठी हमदर्दी दिखला
–किसका दर्द और क

गाय माथै पिलाण।
गाय पर जीन।
–असगत व बेतुका का
–सर्वथा उलटा काम

गाय मारक्णी'र ..
गाय मारने वाली और
देखिये—क स. २५२४

गाय रा भैंस तळै अर
गाय के भैस नीचे और
–गाय के लाभ से भैंस
लाभ से गाय का
–उधर से माग कर इ
उधर चुकाना।
–तगी की हालत मे जो
पाठा गाय रा भैंस हे

गाय रै भैंस के लागै?
गाय के भैंस क्या लगत
–जिन दो व्यक्तियों मे

सबंध में पूछने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

गाय रै मूडा सूं खोसनै सांड रौ मूडौ भरणौ। २६३२
गाय के मुंह से छीनकर सांड का मुंह भरना।
–गरीब का हक छीनकर किसी अमीर को सौंप देना।
–सरासर अन्याय की बात करना।

गाय रौ दूध ताड हेटै पीवै तौ जाणै ताडी पीवै अर गाय रै गोडै ताडी पीवै तौ जाणै दूध पीवै। २६३३
गाय का दूध ताड के नीचे पीये तो लोग समझते हैं कि ताडी पी रहा है और गाय के पास ताडी पीये तो लोग समझते हैं कि दूध पी रहा है।
–अपने-अपने स्थान की अपनी अपनी मर्यादा व अमर्यादा होती है।
–जो व्यक्ति जिस संगति में रहता है लोग उसके बारे में वैसी ही राय बनाते हैं।

गाय सागै केरडौ अर साईं सागै सेलडौ। २६३४
गाय के साथ बछड़ा और साईं के साथ सेल।
–बछड़े वाली गाय अच्छी या कीमती समझी जाती है उसी प्रकार सेल अर्थात् भाले वाला साईं पहुंचा हुआ माना जाता है।
–जिस वस्तु के जुड़ने से एक दूसरे की कीमत बढ़े।

गाय ही नै रतन गिटगी। २६३५
गाय थी और रत्न निगल गई।
–यदि गाय भूल-चूक से रत्न निगल जाय तो न उसका गला काटा जा सकता है और न उसका पेट फोड़ कर रत्न निकाला जा सकता है। नजर-अंदाज करने या माफ करने के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं।
–निहायत सज्जन या शरीफ व्यक्ति से अनजाने कोई गुनाह हो जाय तो परिचित लोग उसे बचाने की खातिर इस कहावत के द्वारा सफाई देते हैं।
–किसी कुलीन घर की लड़की नादानी से पथभ्रष्ट हो जाय तब।

गाया गीत रौ कांई गावणौ, रांध्या धान रौ कांई रांधणौ?
गाये गीत का क्या गाना, सीझे धान को क्या पकाना?
–एक ही बात को बार-बार दोहराना व्यर्थ है।
–एक ही अनुभव को निरंतर दोहराने से कोई मतलब नहीं।
–कोई बात कितनी ही अच्छी हो उसे बार-बार सुनने पर अरुचि हो जाती है।
–नवीनता के महत्त्व की ओर संकेत।

गाया-गाया ब्याव ई निवडै। २६३७
गाये-गाय विवाह भी सपन्न हो जाता है।
–शादी जैसा बड़ा काम भी जब गाने-बजाने में संपूर्ण हो जाता है तो दूसरे कार्यों के बारे में तो कहना ही क्या?
–मन लगाकर उत्साह से काम करने पर कैसा भी दुष्कर काम पूरा हो जाता है।

गाया चारै सो गेवाळियौ। २६३८
गायें चराये सो ही ग्वाला।
–जैसा काम वैसा पद।
–जैसा काम वैसी प्रतिष्ठा।
–अपने काम के अनुसार ही कोई व्यक्ति उसके पद का अधिकारी बनता है।

गायां धूपै गाव री, सोच करै स्यारी। २६३९
धीन धणी रौ ऊपडै, बळपै कोठारी।
स्यारी = एक किस्म की डायन जिसके प्रति ऐसा लोक-विश्वास है कि यह गांव के सारे बिलौवनों से मक्खन उतार कर अपने बिलौवने में इकट्ठा कर लेती है। यदि गायों का दूध बछड़े चूस जायेंगे तो फिर बिलौवना ही कैसे होगा? और बिलौवना न होने पर वह मक्खन कैसे पार करेगी इसलिए उसे गांव की सभी गायों-भैंसियों के चूंघने की चिंता लगी रहती है।
–खामख्वा अनधिकृत चिंता करने वाले व्यक्तियों पर व्यंग।
–दूसरों के द्वारा किसी का भला होने पर जो व्यक्ति मन ही मन जले उसके लिए।

गाया तौ उथरगी नै पोटा लारै छोडगी। २६४०
गायें तो चली गई और पोटे पीछे छोड़ गईं।
–किन्हीं नामजद पुरखों की औलाद एकदम बिगड़ जाये तब उन्हें संबोधित करते हुए इस कहावत का प्रयोग होता है।
–नयी पीढ़ी के प्रति बुढ़े-बडेरों की वितृष्णा भरी धारणा।

गाया तौ धणियां री है, गुवाळिया रै हाथ मे तौ गेडियौ।
गायें तो मालिकों की है, ग्वाले के हाथ मे तो केवल डण्डा।
–बडे आदमियो के नौकर जब उनकी सपत्ति व उनकी शक्ति पर झूठी हेकडी का प्रदर्शन करें तब उनके प्रति कटाक्ष के रूप म यह कहावत प्रयुक्त होती है कि भैय्या यह मिलकियत तो है जिनकी है, तू क्या बेकार रौब गाठ रहा है ? अपनी अकिंचन पगार के अलावा इस सपत्ति म तेरा कोई अधिकार नही, इस बात को भूलने मे काम नही चलेगा।

गाया, भाया, बामणा भाग्या ई परवाण। २६४२
गाय, भाई व ब्राह्मणो से भागना ही श्रेयस्कर है।
–गाय, भाई व ब्राह्मणो का सामना न करके उनसे दूर भागना ही लाभ प्रद है।
–उक्त तीनो से लडना अत्यधिक घातक व लज्जास्पद है।

गाया मे कुण गियौ कै चूवौ तो मार विलावणौ ऊधौ।
गायो म कौन गया कि चौंधा, तब मार विलोवना औंधा।
–अयोग्य व कुटिल व्यक्ति पर काम की जिम्मेवारी सौंपने का परिणाम निश्चित रूप स घातक ही होना है।
मिलाइये—क स. १०६६

गाया रै भाग रौ बरसै। २६४४
गायो के भाग्य से बरसता है।
–असहाय क सरक्षण का भार भगवान पर है।
–छल कपट रहित गूगे जानवरो के लिए ही मेह बरसता है।

गारड बिना विस कोनीं उतरै। २६४५
सपेरे बिना विष नही उतर सकता।
–जो काम अत्यधिक कुशल व्यक्ति के बिना पार न हो।
–मुखिया के बिना झगडा नही मिट सकता।

गार-माटी रा बासण फूट्या सरसी। २६४६
गार मिट्टी के बरतन तो फूटेंगे ही।
–गार मिट्टी के समान क्षण भगुर देह का विनाश अवश्यम्भावी है।
–शरीर नाशवान है, वह एक दिन तो मिटेगा ही।

गारै में पग, गिदरा माथै बैठवा दे। २६४७
कीचड मे पाव, गद्दे पर बैठने दे।
–अपनी औकात से परे बडी आकाक्षा रखने वाले व्यक्ति के लिए।
–अयोग्य व्यक्ति की महत्त्वाकाक्षा पर कटाक्ष।

गाळ अर गाजर तौ खावण री इज व्है। २६४८
गाली व गाजर तो खाने के लिए ही होती है।
–गाली सुन कर क्रोध न करने की सीख।
–गाली सुन कर जिस व्यक्ति को क्रोध न आये तो वह इस उक्ति के द्वारा अपने मन को समझाता है।

गाळ देय गाळ खावणी। २६४९
गाली देकर गाली सुनना।
–जैसा कहना वैसा सुनना।
–अपशब्द कहने वाले को वापस अपशब्द ही सुनने पडते है।
–जो जैसा व्यवहार करेगा, वैसा व्यवहार पायेगा।

गाळ थाप रै काई आतरौ। २६५०
गाल थप्पड के बीच क्या दूरी।
–जिस बात की सचाई का नतीजा निकालना बहुत ही आसान हो।
–जिस तथ्य की असलियत जानना दूर नही हो।
–प्रत्यक्ष बात के प्रमाण की क्या आवश्यकता, अभी सचाई सामने आ जाती है।
पाठा गाल थाप आतरौ कितरौक !

गाल बजाया मोटा कोनीं बाजै। २६५१
गाल बजाने स बडे नही कहलाते।
–फालतू की डींग मारने से कोई बडा नही कहलाता।
–बडी बातें बनाने से कोई बडा नही बन सकता।

गाळ रौ पाणी मगरै नीं चढ़ै। २६५२
तलहटी का पानी पहाड पर नही चढता।
–पहाड से ढली हुई हर वस्तु चाहे पानी हो चाहे जडी बूटी, नीचे की तलहटी उसे हमेशा ग्रहण ही ग्रहण करती है पर बदले मे वापस कुछ दे नही पाती।
–देने वाला हमेशा देता ही है और ग्रहण करने वाला हमेशा

ग्रहण ही करता है ।

—इसी लघुता के भाव-स्वरूप कन्या पक्ष वाले वर पक्ष वालो की कोई चीज ग्रहण नही करते ।

गाल वाळो जीतै, माल वाळो हारै । २६५३

गाल वाला जीते माल वाला हारे ।

—चिल्लाने वाला जीतता है और माल वाला बैठा रहता है ।

—प्रचार के बिना अच्छा माल भी धरा का धरा रह जाता है और प्रचार करने से हलका माल भी तुरत बिक जाता है ।

गालां मे घोडा दौडै । २६५४

गाला मे घोडे दौडते है ।

—अपनी आर्थिक स्थिति का भ्रामक गुमान रखने वाले व्यक्ति के लिए ।

—जिस व्यक्ति को अपनी आमद खर्च का ध्यान न हो ।

गाळिया सू किसा गूमडा व्है ? २६५५

गालियो से कौन से फोडे होते हैं ?

—गाली को चुपचाप सुनने से क्या शारीरिक क्षति होती है ?

—गाली सुनकर किसी प्रकार का प्रतिकार न करने के लिए सीख ।

गावण वाळी जीभ अर नाचण वाळा पग सवळा नीं रवै ।

गाने वाली जीभ व नाचने वाले पाव अचचल नही रहते ।

—अपनी कला का प्रदर्शन किये बिना कलाकार को शाति नही मिलती ।

—जिसका जैसा स्वभाव होता है वह प्रकट होकर ही रहता है । कसमसाता रहता है ।

गावणो अर रोवणो कुण नीं जाणै ? २६५७

गाना और रोना कौन नही जानता ?

—मनुष्य मात्र जो कानों से सुनता हैं और आखो से देखता है वह गाना व रोना भी जानता है ।

पाठा : गावणो को आवै नी, गावणै रो भाई तो आवै ।

गावतां-गावतां ई डूम व्है । २६५८

गाते-गाते ही डोम होता है ।

—गाते-गाते ही गायक होता है ।

—अभ्यास से बढ कर कोई दूसरा गुरु नही ।

गावै तौ सीठणा अर लडै तौ गाळ । २६५९

गाये तो सीठने और लडे तो गाली ।

सीठणा = सगे-समधियो को गीता मे गायी जाने वाली गालिया ।

—जो व्यक्ति अपने मुह से अपशब्द के अलावा कुछ भी नही बोलना जाने ।

—जिस व्यक्ति मे अच्छाई नाम की कोई चीज ही न हो ।

गाहक अर मौत रो काई बेरो ? २६६०

ग्राहक और मौत का क्या पता ?

—ग्राहक और मौत कब आ धमके, इसका कुछ पता नहीं ।

पाठा : गाहक अर मौत रो काई ठिकाणो, कद आ ज्याय ?

गांगडतां ऊट पिलाणीजै । २६६१

चिल्लाते ऊटो पर ही जीन कसी जाती है ।

देखिये—क स १५३

गागी गोळ हालै के मोह री मारी । २६६२

गगा दिसावर चलेगी कि प्रेम की मारी ।

गोळ = अकाल के समय अपना गाव छोडकर मवेशियो की खातिर आस-पास के सरसब्ज इलाके म जाने के लिए गोळ शब्द का प्रयोग होता है ।

—बिना मतलब केवल प्रेम की खातिर साथ निभाने वाले व्यक्ति के लिए ।

पाठा गागी गोळ हालै के वायड तौ कोनी, असकल री खातर हालू ।

गागी गोळ हालै, गी तौ कोनी पण ईमकै री मारी हालू ।

गागली कोई रोवण में रोईजै अर नीं कोई गीतां गाईजै ।

'गागली' न कोई रोने के काम की और न गीतो म गाने के काम की ।

गागली — आषाढ या सावन मास म दक्षिण व पश्चिम के बीच चलने वाली हवा जो वर्षा को रोकती है ।

—उस व्यक्ति के लिए जिसकी न कुछ बदनामी हो और न कुछ प्रतिष्ठा हो ।

-निहायत निकम्मे आदमी के लिए।

गाठ रौ गमावू नीं लोगा साथं जावू। २६६४
न तो गाठ का गवाऊ न दूसरो के साथ जाऊ।
-जिस व्यक्ति की सगति मे हानि उठानी पडे उसका साथ ही क्यो करना।
-जो व्यक्ति तनिक भी खतरे का काम न करे।

गांठ रो जाय अर लोक हसाई। २६६५
गाठ का जाय और जग का खिलवाड।
-घर का पैसा खर्च हो और उलटे लोग हसे— ऐसा काम क्यो करना चाहिए।
-जो व्यक्ति घर का पैसा खर्च करने के बाद भी खिलवाड का लक्ष्य बने उसकी सीख के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

गाठ रौ भरम क्यू गमावणौ? २६६६
गाठ का भ्रम क्यो गवाना?
-जब तक दुनिया मे भ्रम बना रहे, तब तक सब सुचारु रूप से चलता है, किन्तु भ्रम मिटते ही कदम-कदम पर कठिनाइया आनी शुरू हो जाती हैं। इसलिए अपनी गाठ का भ्रम कभी खडित नही होना चाहिए।
-अपनी आर्थिक स्थिति की असलियत कभी किसी को पता न लगे तो अच्छा।

गांठा तौ घुळी पण घुळी। २६६७
गाठें तो खूब ही घुली।
-जो काम अत्यधिक पेचीदा हो जाय तब।
-परस्पर बेहद तनाव उत्पन्न हो जाय तब।

गाड भरें अर सराय मे डेरा। २६६८
गाड झरे और सराय मे डेरा।
-दस्त या मस्से की बहुतायत और सराय मे पडाव की इच्छा।
-सर्वथा नाकाबिल व्यक्ति की महती आकाक्षा पर कटाक्ष।

गाड तपं जद सूत कतं। २६६९
गाड तपने पर ही सूत की कताई होती है।
-अथक मेहनत करने से ही कोई काम सफल होता है।
-जी तोड परिश्रम के बिना कोई भी कार्य सपन्न नही होता।

गाड फाटती गोगो पूर्जं। २६७०
गाड फटने पर नाग पूजा करता है।
-डर के मारे जब कोई व्यक्ति दुष्ट व्यक्ति की खुशामद करे।
-बडे व्यक्तियो की वदना का एक मात्र आधार डर ही होता है, जो 'आदर' का आतरिक स्वरूप है।
-डर न हो तो न लोग भगवान की पूजा करें और सत्ताधारियो की चाटुकारी।
पाठा : गाड फाटै जद सीरणी बाटै।
गाड फाटतौ गोगो धोकै।

गाड फाटता गोठ देवें। २६७१
गाड फटने पर गोठ देता है।
-डर के मारे गोठ देना।
-केवल स्वार्थ सिद्धि के लिए जो व्यक्ति खर्च करे।

गाड बळे के आदत ई अंडी है। २६७२
गाड जल रही है या आदत ही ऐसी है।
-जो व्यक्ति ईर्ष्या की आग म जले उसके प्रति कटाक्ष।
-किसी की भी बढती से जो व्यक्ति खुश होने के बजाय केवल डाह की आच मे जले।

गाड मे कीडो। २६७३
गाड मे कीडा।
-जो चचल व्यक्ति कही एक ठौर टिक कर नही बैठ सकता।
-जो व्यक्ति कुछ न कुछ शरारत करता रहे।

गाड मे तौ गू ई कोनीं अर कागला नैं नियता देवें। २६७४
गाड मे तो गू भी नही और कौवो को न्योता दे।
-जो व्यक्ति अपनी हैसियत के परे कोई काम करना चाहे।
-जो अक्षम व्यक्ति बडे बडे कामो की डीग मारे तब।

गाड रौ गड अर पळसा रौ लेणायत। २६७५
गाड का फोडा और पडोस का बोहरा।
-बैठक का फोडा और पडौसी बोहरा कभी चैन की सास नही लेने देते।

–उपरोक्त इन दोनो बातो से बढ कर कोई दूसरा दुखदाई नही ।

गाडू मिळ्या गुमास्ता अर चोदू मिळ्या सेठ । २६७६
गाडू मिला गुमाश्ता और चुगद मिला सेठ ।
–जब एक एक से बढ कर खराब स्वभाव वाले व्यक्तियो का परस्पर मेल हो ।
–ऐसा दुर्योग घटित होने पर फिर सर्वनाश मे कोई सदेह नही ।

गाधी-गाधी रो बैरी । २६७७
गाधी गाधी का बैरी ।
–समान व्यवसायियो मे ईर्ष्या होना स्वाभाविक है ।
–हम-पेशेवर व्यक्तियो की स्वभावगत डाह ।

गाव करै ज्यू गिंवार करै । २६७८
गाव करे ज्यों गवार करे ।
–समाज के अनुसार ही व्यक्ति को आचरण करने के लिए मजबूर होना पडता है ।
–किसी भी गवार मे इतनी अक्ल तो होती है कि वह दूसरो की देखा-देखी काम करे ।
–गवार व्यक्ति गाव से टलकर आचरण नही कर सकता ।
–कुरीतियो के प्रचलन का औचित्य ।

गाव कसोटी । २६७९
गाव कसौटी है ।
–किसी भी व्यक्ति के आचरण की कसौटी गाव की नजरे ही हुआ करती हैं ।
–किसी भी व्यक्ति के बारे मे जो गाव की राय है — वही सही राय है ।

गांव कोटवाळी मतै ई सिखावै । २६८०
–जिम्मेदारी आन पर अपने-आप काम मे दक्षता हासिल होती रहती है ।
–सामाजिक अनुभव से बडा कोई शास्त्र नही ।
पाठा : काम कोटवाळी आपै ई सिखावै ।
काम ई गर दे है ।

गाव खनै आय खोळा टाकणा । २६८१
गाव के पास आकर पायचे टाकना ।
–औंधा काम करने वाले व्यक्ति के लिए ।
–सिर-फिरे व्यक्ति के प्रति कटाक्ष ।

गाव गयो आवै—सूत्यो जागै ? २६८२
गाव गया आय—सोता जगे ?
–गाव गया हुआ व्यक्ति कब आता है और सोता हुआ कब उठता है, इसका कुछ पता नही चलता ।
–बिना अते पते की बात के लिए ।
पाठा गावतरै गियो कद आवै, सूतो कद जागै ?

गाव गाव खेजडो अर गाव-गाव गोगो । २६८३
गाव-गाव खेजडा और गाव-गाव नागदेव ।
–जो चीज सर्वत्र बहुतायत से मिल जाती हो ।
–बडे व्यक्तियो की भी कमी नही और उन्हे पूजने वालो की भी कमी नही ।
–सिद्ध और साधक के प्रति कटाक्ष ।

गाव गिणै नीं गेलै नै अर गेलो गिणै नीं गाव नै । २६८४
गाव माने नही पगले को और पगला माने नही गाव को ।
–जब कोई दो व्यक्ति एक दूसरे की परवाह न करें ।
–तथाकथित नेता के प्रति व्यग जो न लोगो की परवाह करे और न लोग उसकी परवाह करें ।
–अपनी धुन मे खोया रहने वाले के प्रति ।
–जिस व्यक्ति को समाज अच्छी तरह समझ न सके ।

गाव गेल ढेढवाडो सगळै हुवै । २६८५
गाव होता है वहा चमारवाडा होता ही है ।
–जहा गाव होता है वहा गदगी होती है ।
–हर गाव मे भले-बुरे व्यक्ति बसते हैं ।
पाठा गाव जठै ढेढवाडो ।
गाव हुवै जठै ढेढवाडो ई हुवै ।

गावडिया गांव मे इरडियो ई रूख । २६८६
छोटे गाव मे एरड ही गाछ ।
मिलाइये—क. सं. १७८५

गावड़िया गांव मे ढोलण ई बूजी । २६८७

छोटे गाव में ढोलन ही माई ।

देखिये—क्र स. १७८५

गावडियो गिवार नीं जांणं वार तिवार । २६८८

गाव का गवार न जाने वार त्योहार ।

–बेशऊर व्यक्ति के प्रति कटाक्ष ।

–जिस व्यक्ति में शालीन व सुसस्कृत व्यवहार की एकदम कमी हो ।

–गाव वालो के प्रति शहर वालो की उपेक्षा ।

गाव जेंडी गळिया । २६८९

गाव जैसी गलिया ।

–जैसी क्षमता वैसा प्रदर्शन ।

–जैसी हैसियत वैसा ठाट ।

गाव जेंडी दीवाळी । २६९०

गाव जैसी दिवाली ।

देखिये—उपरोक्त ।

गाव तौ बस्यौ ई कोनीं अर अन्याव पेंली । २६९१

गाव तो बसा ही नही और *अन्याय पहिले ।*

–सत्ता तो हाथ मे आई ही नही और पहिले अत्याचार ।

–जिस बात का प्रारभ ही गलत हो ।

गांव तौ बस्यौ ई कोनीं, मालजादां रा माचा तौ आ घल्या ।

गाव तो बसा ही नही , हरामखोरो के पलग आ धमके ।

–जब किसी अच्छाई के पहिले बुराई का आगमन हो ।

–किसी आयोजन के पहिले जो व्यक्ति उधम मचाना शुरू कर दें तब ।

पाठा : गाव तौ बस्यौ ई कोनी, चोर पैंला ई आयग्या ।
गाव बस्यौ ई कोनीं , मगता पैंली ई आयग्या ।

गांव थारौ , नांव म्हारौ । २६९३

गाव तेरा, नाम मेरा ।

–कुछ भी काम किये बिना उसका श्रेय लेने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

–कोई निठल्ला व्यक्ति काम करने वाले मे प्रमुख स्थान ग्रहण करना चाहे तब ।

गांव धणी री धी परणं , गतराडौ गाती मारं । २६९४

ठाकुर की बेटी ब्याहे, हिजडा अड़गा लगाये ।

–*अनधिकृत व्यक्ति जब व्यर्थ* की पचायती करे तब ।

–जिस किसी काम मे जो व्यक्ति खामखा अपनी टाग अडाये ।

पाठा बाणिया री छोरी परणं , गतराडौ गाती मारं ।

गाव बळधा री सबूरी पण पेट बळचां री सबूरी नीं व्है ।

गाव जलने की सब्र पर पेट जलने की सब्र नही होती ।

–गाव जलने की क्षति झेली जा सकती है पर मरे लडके का सदमा नही झेला जा सकता ।

–देश व समाज की कैसी भी बडी हानि नजरअदाज की जा सकती है पर अपनी वैयक्तिक हानि सहन कहा होती है ?

गांव बळै अर डूम तिवारी मागं । २६९६

गाव जले और डोम त्योहारी मागे ।

–*अपने क्षुद्र वैयक्तिक स्वार्थ के सामने जो व्यक्ति दूसरा के* भारी नुक्सान की कुछ भी परवाह न करे ।

–मुझे तो अपने जी की पडी और तुम अपनी ही गा रहे हो ।

–दूसरो की बर्बादी के बीच जो व्यक्ति अपने स्वार्थ का दावा करे ।

पाठा गाव तौ उछाळै अर डूम तिवारी मागं ।

गाव बसायौ बाणियं पार पड़ै जद जांणियं । २६९७

गाव बसाया बनिये ने, पार पडे तब जाने ।

–पुराने जमाने म लूट खसोट , चोरी व झगडा फसाद की *सारी जिम्मेवारी ठाकुर की होती थी । अस्त्र शस्त्रो स लैस* ठाकुर गाव की रक्षा करता था । इस कारण बनिये के बसाये गाव मे यह सुरक्षा सभव नही थी । पर आजकल पूजीपतियो द्वारा बसाये अनको शहर दूसरे शहरो की बनिस्पत ज्यादा अच्छे व आबाद हैं । शाब्दिक अर्थ मे अब इस कहावत का कोई मान नहीं । पर लाक्षणिक अर्थ म इसका अब भी महत्त्व है ।

–अयोग्य व्यक्ति द्वारा काम की शुरुआत तो जोश-खरोश के साथ हो जाती है पर वह कभी सपन्न नही हाता ।

–जब कोई अक्षम व्यक्ति किसी बडे काम की जिम्मेवारी

लेना चाहे तब ।

गांव बिगाड्यौ गोरी, मरद बिगाड्या छोरी । २६६८

गाव विगाडा ग्वाला ने, मद विगाडे बाला ने ।

–चरवाहे अपने पशुआ क द्वारा गाव की फसल को बिगाडते हैं और लडकिया अपनी ओर आकर्षित करके युवको को बिगाडती हैं । कुछ कहावतें केवल तुक बदी के मिलान की खातिर जोडनी पडती हैं । यह कहावत भी वैसी है ।

पाठा गाव बिगाड्यौ गोरी, ब्याव बिगाड्यौ मेह ।

गांव बिचाळै बेरौ, कोई कंवै ऊंडौ अर कोई कंवै सेवौ ।

गाव के बीच कुआ, कोई बताये ज्यादा गहरा और कोई वताये कम गहरा ।

–एक ही वात पर लोगो के विभिन्न मत हो तब ।

–लोग तो चाहे जैसी अपनी राय बना लेते हैं, उसकी परवाह नही करनी चाहिए ।

–लोगो की खामखयाली का पुख्ता आधार नहीं होता ।

गाव मे गाडा जाय कानां बटौड़ा थाय । २७००

गाव म गाडिया चलें, काना म कर्कश पीडा हो ।

–खामखा की नजाकत के प्रति व्यग ।

–जो व्यक्ति अकारण परेशानिया का व्यर्थ हवाला देता रहे ।

गाव मे घर कोनीं, रोही मे खेत कोनीं, नाव किरोडी मल्ल ।

गाव म घर नही, जगल म खेत नही और नाम करोडी मल्ल ।

–अपनी हैसियत को लेकर जो व्यक्ति खामखा की डींग मारे ।

–नाम के विपरीत लक्षण ।

देखिये—क म ६००

गांव मे पड्यौ मजाडौ, के करेगौ साम्हौ तारौ । २७०२

गाव म महामारी का जोर क्या करेगा तारा और ।

–गुरु या शुक्र नक्षत्र के अस्तकाल से उदयकाल तक का समय अशुभ माना जाता है । इस कहावत म 'साम्हौ तारौ' का यही अर्थ है ।

–जब सारे गाव म महामारी फैल गई तो यह अशुभ तारा और क्या नुकसान करेगा ?

–सकट के समय शुभ अशुभ शकुनो की परवाह न करके उसके निवारण की चिंता करना ही श्रेयस्कर है ।

गाव रा खाड-खधेडा, गाव रौ आधौ ई जाणं । २७०३

गाव के गड्ढे पाखर गाव का अधा भी जानता है ।

–गाव की भली बुरी बातें गाव के नादान व्यक्ति से भी छिपी नही रहती ।

–रात दिन का नियमित सपर्क ही जानकारी का मुख्य आधार होता है—जो एक अधे व्यक्ति को भी सहज प्राप्त हो जाता है ।

गाव रा छाणा ई मारै । २७०४

गाव के कडे भी मारते हैं ।

–माटे या गोबर करने वाले जानवर तो अपने सीगो से किसी को मारे तो इस म कोई आश्चर्य की बात नही । पर उनके सूखे हुए कडे भी वैसा जोर दिखायें तो अवश्य अनहोनी बात है । पर अपने गाव की सीमा म सूखा-कडा भी तैश खाये बिना नही रहता ।

–अपने निवास के जोर पर बिल्ली भी शेर हो जाती है ।

गाव रा छोरा गाव मे ई रमसी । २७०५

गाव के छोकरे गाव म ही खेलेंगे ।

–भला बुरा जैसा भी काम है — गाव के लडके तो गाव म ही करेंगे ।

–कभी किसी गाव के निवासी से जाने-अनजाने कोई भूल हो जाय तो उसके हिमायती सफाई देने के लिए इस कहावत का प्रयोग करते हैं ।

गाव री गत खेडा देवै । २७०६

गाव का ब्यौरा गाव की बसावट देती है ।

–किसी गाव या व्यक्ति की हैसियत का अनुमान उसके वातावरण से हो जाता है ।

–कौन व्यक्ति कैसा है, पहली नजर म ही उसका पता लग जाता है ।

गाव री गधी ई को पूछै नीं । २७०७

गाव की गधी भी नहीं पूछती ।

–गये गुजरे व्यक्ति पर कटाक्ष ।

–अकिंचन व्यक्ति की कौन परवाह करता है ?

गाव री छिब गोरवै अर घर री छिब बारणै । २७०८
गाव की छवि चौक से और घर की छवि बाहर से ।
–गाव की स्थिति का चौक से पता लग जाता है और घर की स्थिति का पता बाहर से ही देखने पर हो जाता है ।

गाव री छोरी, गांव मे ई सोरी । २७०९
गाव की बाला, गाव म राजी ।
–बदला हुआ वातावरण हर किसी को अटपटा लगता है ।
–हर व्यक्ति अपने हाल मे मस्त रहता है ।

गाव रीत सौ ई गवाडी रीत । २७१०
गाव का रिवाज वही घर का रिवाज ।
–समाज के नियम कायदो से ही घर चलता है ।
–घर के रीति-रीवाज समाज से हट कर नही होते ।

गांव री नेपै बाडा बतावै । २७११
गाव की फसल बाडे बता देते है ।
–बाडा मे पडी घास व चरी के ढेरो से गाव की फसल का अदाज सहज ही हो सकता है ।
–गाव की आर्थिक स्थिति का पता बाहर से एक ही नजर मे हो जाता है ।
–जो व्यक्ति अपनी हैसियत का ज्यादा दिखावा करे तब सामने वाला व्यक्ति इस कहावत का प्रयोग करता है ।

गाव री पेठ बाडा देवै । २७१२
गाव की साक्षी बाडे भरते हैं ।
–हर व्यक्ति अपनी मित्र मडली से पहिचाना जाता है ।
–व्यक्ति के आचरण से उसके स्वभाव का पता लगता है ।
पाठा गाव री साख बाडा देवै ।

गाव रै गोरवै गवू पकावै । २७१३
गाव के पास ही गहू पकाना ।
–जो काम आसानी से हो जाय ।
–जो व्यक्ति हर काम को सहज ही बिना कठिनाई के पूरा कर लेता हो उसकी दक्षता को सबोधित करने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

गाव रै दाता नीं चढणौ । २७१४
गाव के दातो पर नही चढना ।
–ऐसा कोई कार्य नही करना जिस मे गाव वालो को निंदा करने का मौका मिले ।
–निंदनीय कार्य न करने के लिए सीख ।

गाव रै मूडै किसो गरणौ लागै । २७१५
गाव के मुह पर कौन-सा गरणा लगता है ।
गरणौ = पानी छानने का कपडा ।
–गरण शब्द का यहा विशेष रूप म प्रयोग हुआ है । गरणे के अभाव म लोग बिना छानी हुई बात करते रहते हैं । अर्थात् बिना सोचे समझे ।
–लोगो की जबान पर नियत्रण नही रखा जा सकता ।

गाव रै सहारै हळ बावै कोई सैं बावता बैर, कोई अकराळ बतावै । २७१६
गाव के सहारे हल जोते, किसी से बोने समय बैर तो काई जुताई को कम गहरी बतायें ।
–लोगो को तो केवल टीका - टिप्पणी करने का मौका या बहाना भर चाहिए ।
–कोई चाह न चाहे लोग तो अपनी राय ठोक ही देते है ।

गाव रौ गोपीचदण ई गमायौ । २७१७
गाव का गोपीचदन भी गवाया ।
–निरर्थक ही सारे गाव का घाटे मे डाला ।
–बेकार गाव की प्रतिष्ठा गवाई ।

गाव रौ छोरौ अर बारलौ बींद । २७१८
गाव का छोकरा और बाहर का दूल्हा ।
–ठेट बचपन स जान-पहिचान होने के कारण गाव के दूल्हे को भी वहा के लोग छोकरा कहकर सबोधित करते हैं । पर बाहर के साधारण व्यक्ति को भी दूल्हे की तरह सम्मान करते हैं ।
–अपने गाव म किसी की प्रतिष्ठा या कद्र नही होती ।

गाव रौ ठाकर केरडी मार दी, पण म्हे क्यू कैवा । २७१९
गाव के ठाकुर ने बछिया मार दी, पर हम क्यो कहे ?
–किसी बात का भेद प्रकट करके भी भेद न प्रकट करने का

प्रदर्शन करना।
–छिपान का दिखावा करते हुए किसी का गुप्त भेद स्पष्ट प्रकट कर देना।
पाठा कुण कैंतौ के बींद नैं मिरगी आवै।

गांव रौ नाव खारौ तौ मीठौ काई ? २७२०
गाव का नाम खारी' तो मीठा क्या ?
खारी = हिन्दी म इसका अर्थ करे तो 'कड़ुवी' होना है। राजस्थान मे खारी व खारिया नाम से कई गाव है।
–जिस गाव के सारे निवासी बदजबान, उद्दंड व दुष्ट हो उसके लिए ?

गाव रौ मूडौ कुण पकडै ? २७२१
गाव का मुह कौन पकडे ?
–लोग किसी के बारे म कुछ भी कहे तो उस रोक कौन सकता है।
–किसी क बारे म कुछ भी मत प्रकट करने के लिए लोग स्वतत्र हैं।

गाव रौ बींद नैं बारलौ टाबर। २७२२
गाव का दूल्हा और बाहर का छोकरा।
–गाव के दूल्हे और बाहर के छोकरे की कद्र एक जैसी होती है।
देखिये—क स २७१=

गाव लार गिडक लाधै। २७२३
गाव होना है वहा कुत्त भी होते हैं।
–हर गाव म बदमाश या लम्पट होत है।
–ऐसा कोई गाव नहीं जहा भले बुरे सभी प्रकार के आदमी न रहत हा।
पाठा गाव लारै गिडक इ हुवै।

गाव वाळा कूटै तौ माईता कनै जावै पण माईत कूटै तौ कठै जावै ? २७२४
गाव वाले पीटें तो मा बाप के पास जाये पर मा बाप पीटे तो कहा जाये ?
–बाहर के दुश्मना का सामना करन के लिए किसी भी व्यक्ति के लिए घर वाला का सहयोग अपेक्षित है पर जब घर वाले ही दुश्मन हो जायें तो वह किस के सहयोग की अपेक्षा करे ?
–जब डाकू लूट खसोट करें तो राज्य के पास फरियाद की जा सकती है पर जब राज्य ही लूट खसोट करने लग जाय तो फिर बचाव का कोई रास्ता नहीं।

गाव व्हे जठै उखरडी ई व्हे। २७२५
गाव होता है वहा घूरा भी होता है।
–गाव म अच्छे बुरे व गदे सुथरे सभी प्रकार के लोग रहते हैं। किसी का आचरण कैसा और किसी का कैसा।
–कोई भी गाव दुराचार स बचा हुआ नही होता।
मिलाइये—क स २६८५

गि - गी

गिणगोर माता गुण गासी अर टाबरिया फळ खासी।
गणगौर माता गुण गायेगी और बच्चे फल खायेंगे।
फळ=गेहू के आटे को गुड के पानी मे भिगोने के बाद छोटे नख के आकार स्वरूप टुकडे पानी म उबाल कर गणगौर माता को चढाया जाता है उन्ह फळ कहते हैं। चढान के उपरात घर के बच्च बड उत्साह से खाते हैं।

गिणगोरघा ई घोडा नीं दौडै तौ कद दौडसी ? २७२७
गणगौर पर ही घाडे नही दौडेंगे ता कब दौडेंगे ?
–वक्त पर कोई चीज काम न आये तो वह किस काम की ?
–वक्त पर अपने आदमी का सहयोग न मिले तो कैसी आत्मीयता।

गिणती रा बोर। २७२८
गिनती के बेर।
–अकिंचन साधन।
–काम चलान लायक आर्थिक स्थिति।

गिण नै गांठ दैणी। २७२९
गिन कर गाठ देनी।
–मन म किसी भी बात के लिए दृढ निश्चय कर लेना।
–अच्छी तरह सोच समझ कर कोई सकल्प करना।

गिणनै पोवौ, ओलै सोवौ । २७३०
गिन कर पोना, ओट मे सोना ।
–मितव्ययता से खर्च करना चाहिए और सतर्कता पूर्वक रहना चाहिए ।
–सुखी जीवन के लिए सीख ।
पाठा गिणनै पोवौ, साम्ही जोवौ ।
गिणनै पावौ सभाळ नै खावौ ।

गिणिया पान चरै गोपाळौ । २७३१
चुनिंदा पान चरे गोपाल ।
–जो व्यक्ति चुन चुन कर जीवन का सुख भोगे ।
–मनचाही मौज करने वाले व्यक्ति के लिए ।

गिणै-गिणावै नव रा नव । २७३२
गिन गिनाये और नौ के नौ ।
संदर्भ-कथा चमारो की एक टोली बुना हुआ कपड़ा बेचने के लिए शहर की हाट जा रही थी । रास्ते में लाल लाल बेरों की झाड़ियाँ आईं तो सभी का मन उन्हें खाने के लिए ललचाया । टोली के मुखिया ने सभी को बड़ी सावधानी बरतने की भोलावन दी । कहीं ऐसा न हो कि गहरी झाड़ियों में कोई खो जाय । सभी व्यक्ति सावधानी बरतते हुए दूर-दूर बिखर कर बेर खाने लगे । काफी देर डट कर बेर खाने के बाद मुखिया ने आवाज दी । एक ठौर मुखिया ने अपनी जिम्मेवारी का पूर्णतया पालन करने के हिसाब से गिनती शुरू की । पर बड़े आश्चर्य की बात कि वैसी सख्त भोलावन के बाद भी एक व्यक्ति खो गया । मुखिया ने फिर दुबारा गिनती की पर वे ही नौ जने । वह स्वयं को गिनना भूल गया था । तत्पश्चात् टोली के हर आदमी ने अलग-अलग गणना की, पर नतीजा तो वही का वही । सचमुच एक व्यक्ति कम था । सभी विकट चिंता में खो गये कि वापस गाँव जाकर क्या जवाब देंगे । खूब माथापच्ची की तो भी पता नहीं चला कि कौन खोया । इतने में एक घुड़-सवार पास से गुजरा तो मुखिया ने हाथ के इशारे से उसे बुलाया । आहें भर भर कर अपना दर्द सुनाया । घुड़सवार ने एक ही नजर में टोली की गणना कर ली । मुस्कराकर कहा—मेरे सामने और गिनो ।

उसके कहने से सभी ने फिर गणना शुरू की । और नतीजा वही का वही । एक आदमी खोया सो खो ही गया । सभी की आँखें छलछला आईं । तब घुड़-सवार ने गंभीर स्वर में कहा — यदि मैं खोये आदमी को खोज निकालूँ तो मुझे क्या इनाम दोगे ?

सभी ने समवेत स्वर में जवाब दिया कि मनुष्य की देह लाख रुपयों से भी ज्यादा कीमती है । इसका एहसान तो वे नहीं चुका सकते पर बुने हुए कपड़ों के सभी थान उन्हें खुशी-खुशी सौंप देंगे ।

घुड़-सवार ने घोड़े पर बैठे-बैठे ही अपने पांव से जूता निकाला और एक एक व्यक्ति के सिर पर जूता फटकार कर गिनती करने लगा । यों जूते फटकारते-फटकारते नौ व्यक्तियों के बाद मुखिया की बारी आई । तब उसने पूरे जोर से जूता फटकारा । सभी ने एक स्वर से हांक लगाई—दस ।

एक बार की गणना से वे संतुष्ट नहीं हुए तो उसने दस बार वही जूते फटकारने का क्रम चलाया । हर क्रम में चमारों के मुँह पर खुशी की लहर दौड़ पड़ती । आखिर हर व्यक्ति को दस दस जूते खाने के बाद पूरा संतोष और विश्वास हुआ । और उन्होंने खुशी खुशी हाथ से बुने कपड़ों के थान घुड़-सवार को सौंप दिये । लाख रुपयों की देह उन्हें वापस जो मिल गई थी ।
–मूर्खों की समझ जूते खाने के बाद ही दुरुस्त होती है ।
–मूर्खों को उन के तरीके से ही समझाया जाता है ।
–इस कहावत का सबसे बड़ा और सूक्ष्म मर्म यह है कि इस दुनिया में हर व्यक्ति अपने को भूलकर दूसरों का लेखा-जोखा करता है ।

गिणै तो देव नींतर भींत रा लेव । २७३३
माने तो देव नहीं तो दीवार के लेप ।
–अपने अपने विश्वास की बात ।
–विश्वास के बल पर ही दवता व भगवान का अस्तित्व है ।

गियां बदरी, काया सुधरी । २७३४
गये बद्री, काया सुधरी ।
–ऐसी धारणा है कि बद्रीनाथ जाने से काया पवित्र, निर्मल व मुक्त हो जाती है ।
–धार्मिक तीर्थों का महत्व ।

गियौ न जोबन बावड़ै, लाख संधीणा खाय। २७३५
गया न यौवन वाहुरे लाख मलीदा खाय।
–गुजरा हुआ वक्त और बीता हुआ यौवन लाख यत्न करने पर भी वापस नहीं लौटता।
–उम्र का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गवाना चाहिए।

गियां हांण नीं मरयां पिछतावौ। २७३६
न गये हानि न मरे पछतावा।
–जिस वस्तु के खो जाने से कोई हानि न हो और जिस व्यक्ति के मर जाने से पश्चाताप न हो वैसे सदर्भ के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।
–निरर्थक अस्तित्व के लिए।

गिरज तौ मौत ई चावै। २७३७
गिद्ध तो मौत ही चाहते हैं।
–जिस व्यक्ति की दूसरो के विनाश से स्वार्थ-सिद्धि हो वह हमेशा विनाश की ही कामना किया करता है।
–लोगो के अमगल से ही दुष्ट व्यक्ति को लाभ होना है।

गिरज तौ व्है जठै ई टंटेर सोधै। २७३८
गिद्ध तो जहा-तहा कगाल ही खोजता है।
–दुष्ट व्यक्ति को अपनी स्वार्थ सिद्धि के अलावा कुछ भी ध्यान नहीं रहता।
–निर्लज्ज व्यक्ति जहा-तहा मुह मारता फिरता है।

गिरजां नै कुण निवता देवै ? २७३९
गिद्ध को कौन निमत्रण देता है ?
–निर्लज्ज व्यक्ति विना निमत्रण के ही जहा-तहा पहुंच जाते हैं। मान न मान मैं तेरा मेहमान।
–लम्पट व्यक्ति को कौन प्रेम-पाती लिखता है ?

गिरस्ती कनै कोडी नीं व्है तौ कोडी री अर साधू कनै कोडी व्है तौ कोडी री। २७४०
गृहस्थी के पास कौडी न हो कौडी का और साधु के पास कौडी हो तो कौडी का।
–विभिन्न जगहो पर एक ही वस्तु का विभिन्न महत्त्व होता है।
–माया की सर्वत्र सार्थकता नहीं होती।

गिरस्ती रौ अेक हाथ लील में अर अेक कसूबै में। २७४१
गृहस्थी का एक हाथ नील मे और एक लाल मे।
–नील रग शोक का प्रतीक है। और लाल रग खुशी का।
–गृहस्थी का एक हाथ दुख मे और एक हाथ सुख मे।
–सुख दुख दोनो पहियो पर ही गृहस्थी की गाडी चलती है।

गिरं जाणं डाकौत जाणं। २७४२
गृह जाने और ज्योतिषी जाने।
–अपनी आफत किसी दूसरे के गले मे डाल कर इस कहावत के द्वारा आत्म-सतोष ग्रहण करना।
–वह जाने और उसकी आफत जाने।
–जो फसेगा वही छुटकारे का उपाय सोचेगा।

गिळगिचिया रौ काई गीलौ व्है ? २७४३
चिकने ककर का क्या गीला हो ?
गिळगिचियौ=पानी के बहाव तथा टक्कर से निर्मित गोल-गोल छोटे बडे चिकने ककर।
–क्रूर व्यक्ति का दिन कब पिघलता है ?
–जिस क्रूर व्यक्ति का कैसी भी मर्मान्तिक वेदना से दिल न पसीजे।
–जिस व्यक्ति पर आसुओं का कोई असर न हो।

गिळगिचियौ चोट हेटै नीं आवै। २७४४
चिकना-ककर चोट के नीचे नहीं आता।
–अनुभव की मार से घिस घिस कर गोल हुआ व्यक्ति किसी के बहकावे मे नहीं आता।
–जो चालाक व्यक्ति कैसी भी सकट की चोट से चिकने पत्थर की तरह फिसल कर बच जाय।
–जो-खुद गर्ज व्यक्ति जाने-अनजाने कभी किसी के काम न आये।

गिलोय अर नींब चढी। २७४५
गिलोय और नीम चढी।
–अपनी प्रवृत्ति से निहायत कडुवी गिलोय की बेल नीम पर चढकर और भी ज्यादा कडुवी हो जाती है।
–बुरा व्यक्ति बुरी सगति पाकर और भी बुरा हो जाता है।
पाठा : करेलो अर नीब चढ्यौ।

गिडक ग्रक्खड दिखावै जणा ढूगा उघडै। २७४६
कुत्ता अक्ड दिखाये तब गाड उघड जाती है।
–बिना हैसियत के जब कोई व्यक्ति दिखावा करता है तो उसकी फजीहत ही होती है।
–व्यर्थ की हेकडी दिखाने से आखिर पोल खुलकर ही रहती है।

गिडक गगाजी चाल्या तो हाडी कुण चाटसी ? २७४७
कुत्ते गगाजी चले तो हडिया कौन चाटेगा ?
–यदि छोटे आदमी बडा काम करने लगे तो उनका अपना काम कौन सभालेगा।
–निकृष्ट व्यक्ति के द्वारा तो निकृष्ट काम ही सभव है।

गिडकडी गी अर गळवाणो ई लेयगी। २७४८
कुतिया गई और पट्टा भी ले गई।
मिलाइये—क स. १८१७ २६१८

गिडकडो तो लूय-लूय मरग्यो, धणी रै मायना ई कोनीं। २७४९
कुत्ता तो भोक भोक कर मरा, मालिक को परवाह ही नही।
–आज्ञाकारी नौकर तो काम के मारे मरा जा रहा है और स्वामी को उसका कुछ ध्यान ही नहीं।
–अधे बहरे स्वामी के आगे जो नौकर जरूरत से ज्यादा काम करे।
मिलाइये—क. स १८३२

गिडक नारेळ रो काई करै ? २७५०
कुत्ता नारियल का क्या करे ?
–गवार अच्छी वस्तु का उपयोग क्या जाने ?
–राई नासमझ व्यक्ति किसी अच्छी चीज का दुरुपयोग करे तब।
मिलाइये—क स १८३४

गिडक नारेळ सार काई जाणै ? २७५१
कुत्ता नारियल का स्वाद क्या जाने ?
–अज्ञानी मनुष्य ज्ञान के तत्व को क्या समझे ?
–अरसिक व्यक्ति कलात्मक मर्म को क्या जाने ?

गिडक नै सुण्या गिडक रोवै। २७५२
कुत्ते को सुनकर कुत्ता रोता है।
–रात के सूने वातावरण मे दूर से ही किसी कुत्ते का रोना सुनकर कुत्ते स्वत ही भोकने लग जाते हैं।
–बिना सोचे समझे दूसरो की देखा-देखी शोर गुल मचाना।
–खामखा के नारेबाजो के प्रति कटाक्ष।
पाठा गिडक नै देख्या गिडक रोवै।

गिडक री मौत आवै जद कुपाळी मे कीडा पडै। २७५३
कुत्ते की मौत आती है तब खोपडी मे कीडे पडते है।
–शरीर के अन्य हिस्स पर कीडे पडें तो कुत्ता अपनी जीभ से चाट-चाट कर उन्हे साफ कर लेता है। उसकी जीभ के रस से घाव स्वत ही भर जाता है। पर खोपडी मे कीडे पडने पर चाटने की युक्ति नही बैठती, अतएव उसे सिर धुन-धुन कर मरना ही पडता है।
–मूर्ख या गवार के दिमाग मे जब औंधी बात का कीडा काटने लगता है तभी उसके विनाश का दुर्योग जुडता है।

गिडक रै काई गाती मारणी, ऊठ्यो अर ऊमनळग्यो ग्रायो। २७५४
कुत्ते को कैसी तैयारी, उठा और सामना किया।
–जो व्यक्ति कहते ही तत्काल किसी काम के लिए तैयार हो जाय।
–जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे तत्क्षण भिड जाय।

गिडक रै पाण गाडी थोडी ई चालै। २७५५
देखिये—क स. १७६७, २५८३

गिडक रो जोर गळी मे। २७५६
कुत्ते का जोर गली मे।
–कुत्ते का जोर अपनी गली तक ही सीमित रहता है, उसके आगे उसकी न तो क्षमता और न साहस।
–जो व्यक्ति अपने सीमित दायरे मे ही कुत्ते की तरह जोर खाता हो।

गिडक वाळो गुमान। २७५७
कुत्ते वाला गुमान।
–बैलगाडी के नीचे उसकी छाया मे चलने वाले कुत्ते को यह भ्रम होता है कि गाडी उसी के बल-बूते पर चल रही है।

–जो व्यक्ति भ्रमित कुत्ते की तरह यह गुमान करे कि उसके बल-बूते पर ही सब काम चल रहे हैं।

गिंडक सू काईं छानी गळियां ? २७५८

कुत्ते से क्या छिपी हुई गलियां ?

–कुत्ते के आचरण सदृश हर लम्पट व्यक्ति गली-गली का पूरा ध्यान रखता है।

–जिस आवारा व्यक्ति का सूनी गलियों में भटकने के अलावा दूसरा कोई काम न हो।

गिंडका रा किसा गांव बसै ? २७५९

कुत्तों के कौन से गांव बसते हैं ?

–परस्पर झगड़ने की प्रवृत्ति के कारण कुत्ते एक जगह बस कर शांति पूर्वक नहीं रह सकते।

–आपसी फूट के कारण जो व्यक्ति हिल-मिल कर साथ नहीं रह सकते उनके लिए।

–आश्रित व्यक्ति स्वतंत्र रूप से अपना गुजर बसर नहीं कर सकते।

गिंडका रै किसा गोहरी व्है ? २७६०

कुत्तों के कौन से ग्वाले होते हैं ?

–जो व्यक्ति सामूहिक अनुशासन का पालन न करे।

–जो व्यक्ति एक जूट होकर काम न करे।

गिंडका रै सप व्हेता तो गंगाजी न्हाय आवता। २७६१

कुत्तों में एकता होती तो वे गंगा-स्नान कर आते।

–पारस्परिक वैमनस्य व फूट के कारण जो व्यक्ति एक जूट हो कर नहीं रह सकते उनके लिए।

–गंगा स्नान के महत्त कार्य की भांति एकता के बिना कोई भी बड़ा कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता।

–ऐसे व्यक्ति जो सामूहिक संगठन में बाधा उपस्थित करें।

मिलाइये—क. स. १८१४

गिंवार खाय मरै के उंचाय मरै। २७६२

गंवार खाकर मरता है या उठा कर मरता है।

–गंवार व्यक्ति या तो जिद्द में अधिक खाकर तकलीफ पाता है या अधिक बोझा उठा कर।

–गंवार व्यक्ति अपने निरर्थक हठ के कारण दुख पाता है।

गिंवार री गाळ, हांसी में टाळ। २७६३

गंवार की गालियें, हंसी में टालिये।

–गंवार की नाराजी कोई माने नहीं रखती।

–गंवार की बातों पर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए।

गिंवार रै किसा सींग व्है ? २७६४

गंवार के कौन-से सींग होते हैं ?

देखिये—क स. २४२०

गीतड़ा के भींतड़ा। २७६५

गीतों में या पत्थरों में।

संदर्भ : गाये जाने वाले गीतों के अलावा राजस्थानी के डिंगल साहित्य में 'गीत' नामक एक विशेष प्रकार का छंद है जिस में अधिकांश-तया वीर रस या भक्ति रस का सांगोपांग वर्णन होता है।

–किसी भी मनुष्य द्वारा किये गये महत्त कार्य की कीर्ति या तो गीतों में सुरक्षित रहती है या पत्थरों में—अर्थात् शिल्प कला के माध्यम से।

गीत में गावण जोगी नीं, रोज में रोवण जोगी नीं। २७६६

गीत में न गाने काबिल न रोये जाने के काबिल।

–जो व्यक्ति न तो जीने जी किसी काम का हो और न मरने पर किसी भी तरह से याद करने काबिल।

–निहायत गये गुजरे व्यक्ति के लिए।

–मन का जो अकथनीय दर्द न खुशी के गीतों द्वारा प्रकट हो और न आंसुओं की वेदना के द्वारा।

गीलै में गोबर नै काठै में भाटो। २७६७

गीले में गोबर और सख्ती में पत्थर।

–जो व्यक्ति गोबर की भांति गीला हो और पत्थर की तरह सख्त।

–जिस व्यक्ति की न सहृदयता काम की और न सख्ती।

गीलै में भाटो न्हाखियां छांटा ई उछळै। २७६८

गीले में पत्थर डालने से छींटे ही उछलते हैं।

–नीच आदमी को छेड़ने पर गंदे बोल ही सुनने पड़ते हैं।

–कुटिल या ओछे आदमी से दूर रहना ही अच्छा है।

मिलाइये—क. सं. १४५०

गींडोळा रा जाया तौ गोबर ई उकराळै । २७६९

केंचुआ के जन्मे तो गोवर ही बिखेरते हैं ।

गीडाळो = गर्मी व वर्षा ऋतु म पैदा होन वाली एक बडी ज्ट जो गावर खाद, मिट्टी व घूरे म गडी रह कर उन्हे हर दम बिखेरती रहती है ।

–किसी कुटिल व अधम बाप के पुत्र बुरा काय करें तब उ हे लक्ष्य करके यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

पाठा गुणा परवाणै पूजा ।

गु - गू

गुडक्ता नै ढाळ । २७७०

लुढक्त हुए ढाल ।

–वहाने याजी के लिए तत्क्षण कोई बढिया मौका मिल जाय तब ।

–मन की इच्छा को चरिताथ करने के लिए सोचते ही कोई अवसर सामने आ जाय तब ।

गुडक जित्तै तौ घट्टी नींतर भाटा री पट्टी । २७७१

चलती रहे तो चाकी नही तो पत्थर का पत्थर ।

–उपयोग म आती रहे तब तक ही उस वस्तु की साथकता है ।

–विना उपयोग सभी वस्तुए एक दम व्यथ हैं ।

गुडतां गुडता ईं गोळ व्है । २७७२

गुडते गुडते ही गोल होता है ।

–अनुभव की ठोकरें खाने स ही मनुष्य होशियार होता है ।

–किसी काम के निरतर अभ्यास से ही उस मे प्रवीणता हासिल हाती है ।

–दुख व विपत्ति का सामना करने से ही अनुभव प्राप्त होता है ।

–दुखा स घबराने वाले व्यक्ति को सान्त्वना देने के लिए भी यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

गुण गैल पूजा । २७७३

गुणा के अनुसार पूजा ।

–जिस व्यक्ति म जैसे गुण होते हैं वैसी ही उसकी प्रतिष्ठा होती है ।

गुण न हिराय गुण ग्राहक हिराय़ू है । २७७४

गुण की कमी नही गुण ग्राहको की कमी है ।

–हर व्यक्ति मे कुछ न कुछ तो गुण होता ही है पर उसकी पहिचान करने वाले बिरले ही होते हैं ।

–प्रतिभाशाली व्यक्तियो की कमी नही होती उनकी परख करन वाला की कमी होती है ।

गुण री पूजा सगळै व्है । २७७५

गुण की पूजा सभी जगह होती है ।

–कुछ न कुछ गुण हान पर लोग उसका आदर करते ही हैं ।

–गुण कही भी छिपा नही रहता ।

गुण रौ भाई औगण । २७७६

गुण का भाई अवगुण ।

–भलाई के बदले बुराई ।

–जब किसी का भला करन पर वापस उसी के हाथो भला करन वाले का बुरा हो ।

पाठा गुण रौ पूत औगण ।

गुणा री इज गाडी । २७७७

गुणो की ही गाडी ।

–जो व्यक्ति गुणा की खान हो ।

–निहायत सज्जन व्यक्ति के लिए ।

पाठा गुणा री जाजम ।

गुणी र गोठ्या घणा अर भगतण र भरतार घणा । २७७८

गुणी के साथी अनेक और वश्या के यार अनेक ।

–गुणी व्यक्ति को साथियो की कमी नही होती और वश्या को कभी यारो की कमी नही होती ।

–गुणी और वश्या का जब कोई व्यक्ति साथ छोडे तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।

गुपतदान महा पुन्न । २७७९

गुप्तदान महा पुण्य ।

–किये हुए दान का किसे भी पता न चले तभी पुण्य है ।

–दान के प्रदशन से दान की मर्यादा घटती है ।

गुमास्ता रौ बेच्यौ साह् विकै । २७८०
गुमाश्ता का बेचा शाह् विकता है ।
–व्यवसायिक पेढी का गुमाश्ता ही सर्वेसर्वा होता है ।
–गुमाश्ते की सेठ से भी अधिक जिम्मेवारी होती है ।

गुरा रा नीं पीरा रा । २७८१
न गुरु के और न पीर के ।
–जो व्यक्ति किसी के प्रति निष्ठावान न हो ।
–जो व्यक्ति किसी का भी न हो ।
–कृतघ्न व्यक्ति के लिए ।

गुरांसा छानै-मानै । २७८२
गुरुजी चुपके-चुपके ।
–समाज के डर से जो व्यक्ति छिप कर कोई काम करे ।
–जो व्यक्ति अपना भेद किसी पर प्रकट न होने दे ।

गुरांसा वदना के चिपियौ तार । २७८३
गुरुजी नमस्कार कि गले आ पडी ।
–केवल संबोधन मात्र से कोई व्यक्ति किसी के गले आ पडे ।
–बात करते ही जो व्यक्ति चिपक जाय ।

गुरासा रौ सुसियौ । २७८४
गुरुजी वाला खरगोश ।
–बिना किसी संदेह के जो व्यक्ति अपना राज प्रकट कर दे ।
–चोर का मन अनजाने ही खुल पडता है ।

गुळ खळ अेकण भाव । २७८५
गुड खली एक ही भाव ।
–जहा अच्छे-बुरे मे कोई भेद न हो ।
–जहा गुणी व गवार की एक सी कद्र हो ।

गुळ खावै अर गुलगुला सू परेज । २७८६
गुड खाय और गुलगुलो से परहेज ।
–मूल वस्तु को तो खाना और उस से बने हुए पक्वान से पर-हेज करना ।
–झूठा दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए ।
–दुहरे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए ।
पाठा : गुळ खावै गळवाणी सू पछ करै ।
पाठा गुळ भोटै अर गुलगुला सू परेज ।

गुलगुला भावै पण तेल क्ठा सू आवै ? २७८७
गुलगुले भाये पर तेल कहा से आये ?
–आकाक्षा के अनुरूप आर्थिक स्थिति न होना ।
–उचित साधनो के बिना चाह पूरी नही होती ।

गुळ खारौ लागै तौ जाणौ ताव रौ जोर । २७८८
गुड कड्वा लगे तो जानो बुखार का जोर ।
–अच्छी चीज बुरी लगे तो समझना चाहिए कि उसके अन्दर ही कुछ खराबी है ।
–जिसका स्वाद ही बिगडा हुआ हो वह ऊंचे मर्म को क्या जाने ।

गुळ खावै सौ कान विधावै । २७८९
गुड खाये सो कान बिधाये ।
–जिसे अच्छी चीज की ललक हो वह कष्ट उठाये ।
–सुख का स्वाद चखने वाले को तकलीफ उठानी पडती है ।

गुळ गीलौ व्हैतौ तौ माखिया कदै ई चाट जाती । २७९०
गुड गीला होता तो मक्खिए कभी चट कर जाती ।
–यदि किसी की इच्छा के अनुरूप सब बातें हो जाय तो कोई कुछ भी कसर न रखे ।
–हीन व्यक्तियों की इच्छा के अनुरूप सारी बातें होती तो यह दुनिया कभी विनष्ट हो जाती ।

गुळ घालसी जिसौ मीठौ होसी । २७९१
गुड डालोगे जितना ही मीठा होगा ।
–जैसा व्यय वैसा ठाट ।
–जैसी मेहनत वैसा फल ।
–किसी भी कार्य की अच्छाई या सफलता उस पर किये गये व्यय पर निर्भर करती है ।
पाठा : गुळ घालसी, जिसौ ई गुळियौ होसी ।
गुळ जित्तौ ई मीठौ ।

गुळ जठै माखो, घी जठै कीडियां । २७९२
गुड वहा मक्खिया, घी वहा चीटिया ।
–अपनी अपनी रुचि ।

–हर वस्तु का अपना-अपना आकर्षण होता है।

गुळ जाणै के कोथळी। २७६३

गुड जान या थैला।

–जो जानता है वही जानता है।

–जब अन्दर ही अन्दर कोई बात दबा दी जाती है।

गुळ डळिया, घी आगळिया। २७६४

गुड डलिया, घी अगुलिया।

–डली डली करते गुड खच हो जाता है और अगुली अगुली चाटते घी समाप्त हो जाता है।

–थोडा थोडा व्यय जुडकर भी बहुत हो जाता है।

–नित्य प्रति क अकिंचन उपयोग से काई भी वस्तु खतम हो जाती है।

–क्षण-क्षण करके ही सारी उम्र बीत जाती है।

गुळ तो अंधारा मे ई मीठो लागै। २७६५

गुड तो अधियारे म भी मीठा लगता है।

–अच्छी चीज कही भी छिपी नही रहती।

–गुणो के गुणा की पहिचान स्वत हा जाती है।

–अच्छी वस्तु कैसी भी परिस्थिति म अपनी अच्छाई नही छोडती।

गुळ दिया ई छोरी व्है जिण रो कोई काई करै। २७६६

गुड बाटने पर भी लडकी हो तो जिसका कोई क्या करे।

–लडकिया का जन्म घर म खुशी की बात नही समझी जाती। लडके की कामना अधिक रहती है।

–लडका होने के अनुमान म गुड बाटने पर भी यदि लडकी हो जाय तो उसका क्या उपाय ?

–आतरिक इच्छा के अनुरूप काय न हो तब।

गुळ दियां मरै उणनै बिस क्यू देणो ? २७६७

गुड देने से मर उसे विष क्या देना ?

–मिठास से काम निकलता हो तो सख्ती क्या बरती जाय ?

–जो व्यक्ति सीधी बात करने म मान जाय तो उसके लिए लम्बा चोडा जाल क्यो रचा जाय ?

–बातचीत से जो बात सुलझती हो उसके लिए झगडा नही करना चाहिए।

गुळ दिया छोरी आज।

गुड देन से ही लडकी

–मामूली लालच से भा

–अकिंचन युक्ति से होन

गुळ दे नींतर छोरी व्है

गुड दे नही तो लडकी

–छोटी छोटी बात पर

लिए।

–हर बात के लिए रूठन

गुळ नीं तो गुळ जैडो ज

गुड नही तो गुड जैसो

–किसी को देने के लिए

बात करने के लिए गु

–जो व्यक्ति न किसी व

अच्छी तरह बात करे

वत का प्रयोग होता है

गुळ नै पाणी सू नीं धो

गुड को पानी से नही ध

–किसी कडुवी चीज

चेष्टा की जाती है प

हो उसे धोकर और

दयकता।

–सहृदय व्यक्ति को पान

ही नही होती।

गुळ बिना कसार नीं,

गुड बिना कसार नही

कसार—गेहू के आटे को

डाल कर गुड व पानी

मून गरीब व्यक्तियो के

–गुड के बिना कसार फी

रहता है।

–औरत की महिमा बत

अनिवार्यता दिखलाई

गुळ बिना किसी चौथ, जैंतल बिना किसौ राती-जोगौ !
गुड बिना कैसी चौथ [चतुर्थी] जेतल बिना कैसा रतजगा !
जैंतल—एक पतिव्रता राजपूत रमणी जिसका आख्यान राजस्थान के अतर्गत रतजगो के गीतो मे अवश्य गाया जाता है।
–कोई भी मागलिक चौथ गुड के बिना नही होती। कोई भी 'रतजगा' जैंतल के गीतो बिना सफल नही होता।
–जिस व्यक्ति की उपस्थिति हर सूरत मे अनिवार्य हो।

गुळ री चोट कोथळी जाणं। २८०४
गुड की चोट थैली जाने।
–किसी कपडे मे या किसी थैली मे रखे हुए गुड को तोडने के लिए उसे ही ऊपर उठा कर सख्त आगन या पत्थर पर पटका जाता है। मीठा होते हुए भी थैली के लिए तो गुड पत्थर की तरह चोट पहुचाने वाला ही होता है।
–जिस पर बीतती है केवल वही अपनी पीडा समझता है।
–मुह से मीठे व्यक्ति की आतरिक क्रूरता के प्रति कटाक्ष।
–आदर्श व्यक्ति की हीनता का वास्तविक रूप भुक्तभोगी ही जानता है।

गुळ लाग्यौ नीं डळी, बहू दडी सी आ पडी। २८०५
गुड लगा न डली, बहू गेंद सी आ पडी।
–बिना किसी व्यय के जो काम अप्रत्याशित सरलता से सपन्न हो जाय।
–कोई बडा आयोजन सहज म पूरा हो जाय तब।

गुळ लारै तम्बाखू बळै। २८०६
गुड के पीछे तमाखू जले।
–औसर-मौसर या विवाह इत्यादि सामूहिक आयोजनो मे बडे खर्चों के साथ कई अन्य छोटे मोटे खर्चे हो जाया करते हैं।
–बडे कार्यों के साथ स्वयमेव छोटे कार्यों का निकल आना।

गुळ बेंट्या बाखाण करै। २८०७
गुड बाटने पर बखान करते हैं।
–कुछ न कुछ खर्च करने से ही कीर्ति होती है।
–अच्छे काम की शोभा तो होती ही है।

गुळ सू मीठी जीभ। २८०८
गुड से मीठी जीभ।
–वाणी जैसा मिठास अन्य किसी मीठी वस्तु मे नही होता।
–कानो को मीठा लगने वाली केवल वाणी ही होती है।

गुलाब रै सागै काटा ई व्है। २८०९
गुलाब के साथ काटे भी होते हैं।
–दुनिया म ऐसा कोई व्यक्ति नही जिस मे गुणो के साथ कुछ न कुछ दोष न हो।
–सर्व गुण सम्पन्न कोई भी नही होता।
–महापुरुषो मे भी कुछ न कुछ दोष तो होता ही है।
–समाज मे गुलाब के साथ काटे भी होते हैं। अच्छे व्यक्तियो के साथ बुरे व्यक्ति भी होते है।

गुवाड कौ जायौ बाबौ किणनै कैवै ? २८१०
मैदान मे जन्मा पिता किसको कहे ?
–नैतिक मान्यताओ की दीवारो मे बाहर जन्मा पुत्र किसे अपना पिता कहे ?
–जिस असहाय व्यक्ति का समाज म कही कोई सहारा न हो।
–सर्वथा अनाथ व्यक्ति के लिए।
–जिस व्यक्ति का कही कोई ठिकाना न हो।

गू ई कैवै म्हनै गोबर री बास आवै। २८११
गू भी कहे मुझे गोबर की बास आये।
–जब कोई बडी गदगी छोटी गदगी से घिन करे तब।
–जब कोई बडा चोर छोटे चोर की बुराई करे।
–जब कोई माना हुआ भ्रष्ट, निकृष्ट या कुटिल व्यक्ति अपेक्षतया अपने से कम बुरे व्यक्ति का खडन करे।

गू खायां काळ कोनीं निकळै। २८१२
गू खाने से अकाल पार नही होता।
–जब कोई व्यक्ति बहुत हीन, अधम व बुरे काम करके खोटी कमाई करना चाहे।
–अत्यधिक लालची, लोभी व कजूस व्यक्ति पर कटाक्ष।

गुगरी रा गोठिया, खाय पीयनै ऊठिया। २८१३
खाने-पीने के यार, खाना खाया और चलने को तैयार।
–केवल स्वार्थ की खातिर झूठी मित्रता का दावा करने वाले

यार-दोस्त ।
–मित्रता के बहाने मौज करने वाले बनावटी मित्र ।

गूजर चावै ऊजड । २८१४
गूजर चाहे ऊजड ।
–गूजर, चरवाहे या गडरिये हरदम अपनी मवेशी की खातर बड़े से बड़े चरागाहों के ही उत्सुक रहते हैं ।
–जो गवार व्यक्ति निर्जन जगल मे ही खुश रहे ।
–अपना-अपना स्वार्थ सभी को प्यारा होता है ।
पाठा : गूजर जठै ऊजड ।

गूजर जठै ई गुजरात । २८१५
गूजर वहीं गुजरात ।
–गूजरों की आबादी के कारण ही गुजरात का नाम - करण हुआ ।
–गूजर बसें वही गूजरधरा ।
–बन्दा बसे वहीं बस्ती ।
–विशिष्ट व्यक्ति के लिए ।

गूजर भगड़ो । २८१६
गूजर भगडा ।
–गूजर लडाकू माने जाते हैं । पर अधिकांश - तया बिना बात अकिंचन कारण ही आपस मे लड पड़ते हैं ।
–बिना बात कोई बहुत बडा भगडा हो जाय तब ।

गूजर सू ऊजड़ भली । २८१७
गूजर से ऊजड भली ।
–जातीय आक्षेप के अलावा यह कहावत अन्य सदर्भ मे भी प्रयुक्त होती है ।
–गवार व्यक्ति से सपर्क न रहे तो अच्छा ।
–अहितकर व्यक्ति दूर रहे तो लाभप्रद ।

गूजरी आपरा दही नै खाटो कद बतावै ? २८१८
गूजरी अपने दही को खट्टा कैसे बताये ?
–अपने मुह से अपनी चीज या अपने व्यक्तियो की बुराई नहीं की जाती ।
–अपनो के प्रति मोह होना स्वाभाविक है ।
–भला कोई व्यवसायी अपनी चीज की बुराई कैसे कर सकता है ?

गूदडी मे किसो लाल को जलमै नीं । २८१९
गुदडी मे कौन सा लाल पैदा नही होता ।
–गरीब के घर मे कौन-सा बडा व्यक्ति पैदा नही हो सकता ।
–केवल बडे घरों मे ही बडे व्यक्ति पैदा हो यह जरूरी नही ।

गूदड़ी मे गरक । २८२०
–दिखने मे गरीब होने पर भी जिस व्यक्ति की आर्थिक हालत काफी अच्छी हो ।
–छिपी हुई समृद्धता ।

गूदडी री लाल । २८२१
गुदडी का लाल ।
–गरीबी के वातावरण मे पला व्यक्ति बहुत बडी उन्नति करे तब ।
–होनहार व्यक्ति के लिए ।

गूदळियो तौ ई गंगजळ । २८२२
गदला है तो भी गगाजल ।
–गगाजल गदला भी हो जाय तो भी उसकी पवित्रता नष्ट नही होती ।
–कुलीन घराने का कोई व्यक्ति जब किसी कुसगति मे पड जाय तो भी वह कइयो से बढकर होता है ।
–धनाढ्य व्यक्ति निर्धन हो जाने पर भी गरीब नहीं होता ।

गूबड़ा वाळी लात गुण आयगी । २८२३
कुबड़े वाली लात लाभ कर गई ।
–किसी एक व्यक्ति ने कुबडे की पीठ पर जोर से लात जमाई तो उसकी कूबड अदर धस कर ठीक हो गई ।
–कोई किसी को क्षति पहुचाना चाहे और उससे ही सामने वाले व्यक्ति का काम सफल हो जाय तब ।
–नुकसान वाले काम से फायदा हो जाय तब ।

गूदड़ी रा जाया तौ चीथड़िया ई होसी । २८२४
गुदडी में जन्मे तो बौने ही होंगे ।
–बेडौल मा-बाप के बेडौल ही बच्चे ।

–बुरे शिक्षक के विद्यार्थी अच्छे थोडे ही हो सकते हैं ?

गूमडो फूट्यौ नैं वेदन मिटी । २८२५
गूमडा फूटा और पीडा समाप्त ।
देखिये—क्र सं. २३८८

गू में माटौ फेंक्या छांटा ई उछळै । २८२६
गू मे पत्थर फेंकने से तो छींटे ही उछलते हैं ।
देखिये—क्र सं. १४७०

गू री ओडी रा ई सुगन मनाईजै । २८२७
गू की टोकरी के भी शकुन मनाये जाते हैं ।
–गदी से गदी चीज की भी कुछ न कुछ सार्थकता होती है ।
–दुनिया मे ऐसा कोई अपदार्थ नही होता जिसकी कुछ भी उपयोगिता न हो ।

गू रौ भाई पाद नैं पाद रौ भाई गू । २८२८
गू का भाई पाद और पाद का भाई गू ।
–जब कोई दो व्यक्ति एक एक से बढ कर बुरे या निकृष्ट हो ।
–दो गदे व्यक्तियो की तुलना करने पर ।

गू सू गू थोडौ ई धुपै । २८२९
गू स गू थोडे ही धुपता है ।
–बुराई बुराई से खतम नही होती ।
–जब कोई भ्रष्ट व्यक्ति भ्रष्टाचार को समाप्त करने की बात करे तब ।

गूगला रौ वासौ गू में । २८३०
गूगले का निवास गू मे ।
गूगलौ=गू का कीडा ।
–गदा व्यक्ति गदगी मे ही मस्त रहता है ।
–नीच व्यक्ति तो नीच काम ही करता है

गूगली ई फुण करै । २८३१
गूगली भी फन करती है ।
गूगली=दुमुहा साप ।
–जब कोई गरीब व्यक्ति हेकडी दिखाये या क्रोध करे ।
–जब कोई अक्षम व्यक्ति जोश खाये ।

गूगलौ गलती करै जणा कांना माथै हाथ धरै । २८३२
गूगा गलती करे तो कानो पर हाथ धरे ।
–नही सुनने के कारण गूगा व्यक्ति गलती भी करे तो उसके कानो का ही कसूर है ।
–अनजाने गलती हो जाने पर ।

गूगा री गत गूगौ जाणै । २८३३
गूगे की गति गूगा जाने ।
–जिसकी जो हालत होती है वही जानता है ।
–मन का रहस्य मन ही जानता है ।
–जो व्यक्ति अपनी उलझन को व्यक्त न कर सके ।
–जिस पर बीतती है केवल वही उसका अनुभव कर सकता है ।

गूगा री सैन के तौ समझै माई अर के समझै लुगाई । २८३४
गूगे की सानी या तो समझे मा या उसकी औरत ।
–जो अपना होता है वह अपना का दर्द बिना कहे ही समझ लेता है ।
–अक्षम व्यक्ति के हितैषी बिरले ही होते हैं ।

गूगा रौ गुड खाटौ नीं कोई मीठौ । २८३५
गूगे का गुड खट्टा न कोई मीठा ।
–स्वाद जानने पर भी जिस व्यक्ति मे स्वाद प्रकट करने की क्षमता न हो ।
–जो व्यक्ति किसी भी चीज की परख करन मे असमर्थ हो ।

गूगा वाळौ गुळ । २८३६
गूगे वाला गुड ।
–जो व्यक्ति अपनी अनुभूतियो को व्यजित न कर सके ।
–मन ही मन किसी आनद का अनुभव करना ।

गूगा वाळौ सपनौ । २८३७
गूगे वाला सपना ।
–जो व्यक्ति अपना रहस्य किसी को बता न सके ।
–अपनी आतरिक स्थिति को व्यक्त न कर सकने की लाचारी ।

गूगी अर गीता गावै । २८३८
गूगी और गीता गाये ।

–अपनी अक्षमता के बावजूद कोई बडा काम करना चाहे।
–जा व्यक्ति जिस चीज स वंचित हो वह उसके बारे म क्या समझे ?

गूगे नै समझावणो, गूगे री गत आण। २८३९
गूगे को समझाना हो तो गूगे का लहजा सीख।
–जिसकी जैसी क्षमता हा उसे समझाने के लिए उसी के अनुरूप ढलना पडता है।
–एक ही ढर्रे से सबको नही समझाया जा सकता।
–हर व्यक्ति के समझने की अपनी अलग अलग क्षमता होती है।

गूगा री सानी में गूगो ई समझै। २८४०
गूगे की सानी म गूगा ही समझता है।
–गरीब के दद का गरीब ही महसूस कर सकता है।
–चालाक व्यक्ति के इशारा को चालाक ही समझता है।
पाठा गूगा री फारसी म गूगो ई समझै।

गूगो गावै अर बोळो सुणै। २८४१
गूगा गाय और बहरा सुन।
–दो अक्षम व्यक्ति एक दूसरे का सहयोग देने का दिखावा करें तब।
–अनहोनी बात के लिए।

गूगो व्है जको बोळो ई व्है। २८४२
गूगा होता है वह बहरा भी होता है।
–एक अक्षमता स दूसरी अक्षमता सहज ही उत्पन्न हो जाती है।
–जो व्यक्ति न तो अपनी पीडा प्रकट कर सके और न दूसरो की पीडा सुन सके।

गे - गै

गेडिया रळग्या। २८४३
लाठी छिन गई।
–किसी के हाथ स सत्ता छिन जाने पर।
–किसी व्यक्ति के अधिकार या रुतबा खतम हो जाने पर।

गेबाऊ गोळी। २८४४
छिपी हुई गोली।
–जो धूर्त व्यक्ति छिपकर विश्वासघात करे।
–घातक व्यक्ति के लिए।

गेबाऊ बात रौ साखी राम। २८४५
गुप्त बात का साक्षी राम।
–गुप्त बात का कोई साक्षी नही होता।
–गुप्त बात प्रकट हो जाय तो फिर वह गुप्त ही क्या ?
–छिपी हुई बात को भगवान जाने।

गेलचोदा रा गांव किसा न्यारा बसै। २८४६
चूतिया के गाव कौन से अलग बसते हैं।
–मूर्खों का कोई अलग से पता ठिकाना थोडे ही होता है।
–सब के साथ बस्ती म ही मूर्ख बसते हैं।
–मनुष्य जैसा दिखने पर भी जिस म मनुष्य की अक्ल नही हो उसके लिए।

गेलै मे हगै अर घुरिया काढै। २८४७
राह म हगे और ठौर जताये।
–जो व्यक्ति गलती करने पर भी व्यर्थ रौब जमाये।
–कसूर वार व्यक्ति सामने आख दिखाये तब।

गेलै बैवता कुण धक्को देवै ? २८४८
राह चलते कौन धक्का देता है।
–सीधे रास्ते चलने पर कोई धक्का नही देता।
–सचाई व न्याय की राह चलने वाले को भला कौन हानि पहुचा सकता है ?
पाठा गलै हालता कुण ई खावणियो कोनी।

गेंडा री खाल बिना ढाल कठै ? २८४९
गेंडे की खाल बिना ढाल कहा ?
–शक्ति के बिना सरक्षण नही हो सकता।
–भारी काम के लिए भारी साधनो की जरूरत होती है।

गेंडा री ढाल है। २८५०

गेंडे की ढाल है।
–जिस व्यक्ति मे कष्टो की मार सहने की अदम्य क्षमता हो।
–दृढ व्यक्ति के लिए।

गेंण मे गिंडकां नें मजौ। २८५१
ग्रहण मे कुत्तो की मौज।
–अधियारे प्रशासन मे भ्रष्ट व लफगे मौज करते हैं।
–दूसरो का कष्ट गुडो के लिए सुमगल।

गेंण मे थोरी फिरें ज्यां। २८५२
ग्रहण मे थोरी की तरह भटकना।
थोरी = एक अछूत जाति।
–जो व्यक्ति पेट भरने के लिए दर दर भटकता फिरे।

गेंण री दान, गगा री स्नान। २८५३
ग्रहण का दान, गगा का स्नान।
देखिये—क स. २५४२

गेंब रौ धन ऐब मे जाय। २८५४
काला धन दुर्व्यसनो मे ही विनष्ट होता है।
–हराम की कमाई हराम मे जाती है।
–मुफ्त का माल बेकार खर्च होता है।

गेंर गडी रें माई गेंर गडी, सासू ल्होडी बहू बडी। २८५५
गडबडी रे भैय्या गडबडी, सास छोटी और बहू बडी।
–परिवार का छोटा व्यक्ति बदनामी म आगे निकल जाय तब।
–वडे भैय्या सो बडे भैय्या, छोटे भैय्या सुभान-अल्लाह।

गेंल-गेंल री घोळ-मथोळ। २८५६
अपनी-अपनी धन-चक्री।
–हर व्यक्ति की अपनी-अपनी उलझन होती है।
–अपना-अपना पागलपन।

गेंला कुत्ता हिरणां लारें दौडें। २८५७
बावरे कुत्ते हिरणो के पीछे भागते हैं।
–असभव काम के लिए बेकार कष्ट उठाना।
–झूठी प्रत्याशा से कुछ भी हाथ नही लगता।

गेंला गाव बाळें मती के मला चितारची। २८५८
पगले गाव मत जलाना कि ठीक याद दिलाई।
–किसी बुरे काम के लिए मना करने पर जो सिर-फिरा व्यक्ति उलटा वही काम करने की जल्द बाजी करे।
–नासमझ व्यक्ति को सीख दन स वह ज्यादा बिगडता है।

गेंला नें किसा घर बारें काढ़ोजें। २८५९
पगलो को कौन सा घर स बाहर निकाला जाता है।
–नासमझ व्यक्ति को भी बर्दाश्त करना पडता है।
–इच्छा के बावजूद भी जैसे-तैसा के साथ मिल-जुलकर रहना पडता है।

गेंला रा किसी न्यारा गाव व्है। २८६०
पगला के गाव कौन से अलग होते हैं।
देखिये—क स २८४१

गेंलां री गमाई समझणां सू नीं बावडें। २८६१
पगलो की खोई समझदारा से नही लौटाई जा सकती।
–मूर्खों के द्वारा कोई काम बिगड जाने पर वैसे भी समझदारो स वापस सुधारा नही जा सकता।
–किसी भी काम का बिगाडना आसान है पर बिगड जाने के बाद उसे सुधारना असभव है।

गेंलां रें किसा घर? २८६२
पगलो के कौन-से घर?
–पागल व्यक्ति को अपने-पराये का ध्यान नही रहता।
–मूर्ख व्यक्ति घर के नफे-नुकसान मे नही समझता।

गेंलां रें माथें किसा सींगडा व्है! २८६३
पगलो के सिर पर कोई सीग थोडे ही होते हैं।
देखिये—क स. २४२०

गेंली अर वळें दीया। २८६४
पगली और उस पर उन्माद।
–दुहरी खराबी साथ जुड जाय तो फिर क्या पूछना!
–जिस व्यक्ति के पागलपन की कोई सीमा न हो।

गेंली रांड रा गेंला ई पूत। २८६५
पगली रांड के पगले ही पूत।

–जिस परिवार के सभी सदस्य सिर फिरे हो।
–बिगडी हुई औलाद पर कटाक्ष।

गैली राड सासरै जावै ई कोनीं अर जे जावै तौ पाछी आवै ई कोनीं। २८६६
बावरी औरत ससुराल जाती ही नही और यदि जाये तो वापस आय ही नही।
–औंधी जिद्द करन वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।
–जो व्यक्ति अपनी सनक म खोया रहे।

गैली सगळा सू पैली। २८६७
पगली सबस पहिले।
–जो नासमझ व्यक्ति किसी भी गलत काम म सबसे आगे रहे।
–मूख व्यक्ति अपनी काबलियत पर विचार किये बिना ही हर किसी काम म कूद पडता है।
पाठा गैली गाव सू पैली।

गैली सासरै गई अर गई। २८६८
पगली ससुराल गई और गई।
–जो पगला व्यक्ति अपने पागलपन को अत तक न छोडना चाहे।
–मूख व्यक्तियो की धुन का कुछ पता नही चलता।

गैले आळी पाखडी। २८६९
पागल व्यक्ति वाले पख।
सदर्भ - कथा पागल व्यक्ति की धुन का क्या ओर छोर! एक बार एक पगले ने मोर की बहुत सारी पाखें इकट्ठी की। जब मोर पखो से उडता है तो मनुष्य क्यो नही उड सकता? पगले की धुन पर कैसा अकुश! वह किसका कहा माने! एक दिन दोनो ओर बहुत सारे मोर पख बाधकर वह कें-कें करता हुआ छत से नीचे कूदा। यह सोचकर कि उडता हुआ धीरे से जमीन पर उतर जायेगा। पर ऐसा हुआ नही। और जो हुआ सो यह कि उसके हाथ पाव टूट गये। उडने की आशा म चलने मे भी गया।
–पागल व्यक्ति की सनक बडी घातक होती है।

गैलो अर वळै दारू! २८७०
पागल और फिर शराब!
–पागलपन के साथ नशा जुड जाय तो फिर क्या कसर।
–दुहरे अवगुण अत्यत घातक होते है।

गैलो पूत पराया नै कमाय घालै। २८७१
पागल पुत्र पराये को कमा कर खिलाता है।
–पागल व्यक्ति की यह निशानी कि वह अपने घरवाला की कीमत पर दूसरा के लिए महनत करता है।
–पागल व्यक्ति को बरगला कर लोग उसका माल चट कर जाते हैं।

गैलो बणनै घर राख्यो। २८७२
पागल बन कर घर रखा।
–अपने निजी स्वाथ को भुलाकर ही घर को बनाना पडता है।
–अपनी सुध बुध बिसारे बिना परिवार को नही चलाया जा सकता।

गैलो बेटो बामोजी कह्यो जित्तो ई आछो। २८७३
पागल बटे ने पिताजी कहा जितना ही अच्छा।
–अयोग्य या नासमझ व्यक्ति क द्वारा लाभ पहुचा उतना ही बहुत है।
–पागल व्यक्ति की तो अकिंचन समझदारी भी काफी होती है।

गो - गौ

गोईडा रै पाप सू पींपळो बळै। २८७४
गोहरे के पाप स पीपल जले।
–ऐसी लोक मान्यता है कि बादलो की बिजली गोहरे पर तेजी से गिरती है। बिजली की भयकर मार म गोहरे के साथ पीपल को भी जलना पडता है।
–दुष्ट व्यक्ति के कारण निरपराध व्यक्ति को भी कष्ट उठाना पडता है।

गोकळ गाव रो पैंडो ई न्यारो। २८७५

गोकुल गांव का तो मार्ग ही अलग है ।

–जिस व्यक्ति का रहन सहन, आचरण या विचार धारा सबसे अलग हो ।

–जिसका मिजाज सबसे ही निराला हो ।

पाठा गोकळ रा तौ गेला ई न्यारा ।

पूरी पंक्ति . 'सुदर' कोउ न जान सकै, यह गोकुल गाव को पैंडौ ई न्यारौ ।

गोकळ मे रहसी जकौ राधै-गोविंद कहसी । २८७६

गोकुल म रहेगा वह राधे-गोविंद कहेगा ।

–आश्रित व्यक्ति को स्वामी की वदना करनी ही पडती है ।

–मातहत मनुष्य की मजबूरी ।

गोकळ सू मथरा न्यारी । २८७७

गोकुल से मथुरा अलग ।

–असामान्य व्यक्ति के लिए ।

–जिस व्यक्ति का स्वभाव तथा उसके विचार किसी से मेल न खाते हो ।

गोगौ गायौ अर गीता रौ छेह आयौ । २८७८

गोगा गाया और गीतो का अत आया ।

–रतजगे के गीतो मे 'गोगा' नामक लोकगीत सबसे अत मे गाया जाता है ।

–छोटे-बडे व्यक्ति के यथायोग्य आदर सत्कार के बाद कोई भी आयोजन समाप्त तो होता ही है ।

–अकिंचन व्यक्ति का भी जब स्वागत हो जाय तो फिर बाकी क्या बचा !

गोगोजी परडा इज रखाळै । २८७९

गोगदेव परडो की रक्षा करते हैं ।

परड=छोटे साप की एक किस्म विशेष ।

–राजस्थान मे गोगा चौहान की पूजा, नागपूजा ही का एक स्वरूप है । इनके नाम की ताती बाधने पर, ऐसी मान्यता है कि साप का जहर उतर जाता है । गोगदेव के अवतार-स्वरूप छोटे बडे सापो को मारना वर्जित समझा जाता है ।

–जो बडा अधिकारी भ्रष्टाचारियो को प्रश्रय दे ।

गोगो नै खेजडी गांव-गांव । २८८०

गोगदेव और खेजडी हर गाव मे ।

देखिये—क स २६८३

गोगौ बडौ क राम — के बडौ तौ है जकौ है पण सांपां सू बैर कुण बसावै ? २८८१

गोगदेव बडा कि राम — बडा तो है सो ही है पर सापो से बैर कौन बसाये ?

–दूसरे को बडा बता कर सापो के देव गोगा से बैर मोल लेना आसान नही । नाराज होकर कही साप कटवा दें तो ! इसलिए साफ-साफ न कहना ही बेहतर है ।

–डर के मारे जिस व्यक्ति के प्रति वास्तविक राय प्रकट न की जा सके ।

गोडा तो पेट साम्हौ ई निवसी । २८८२

घुटन तो पेट की ओर ही झुकते हैं ।

–अपने आदमी का लिहाज तो आता ही है ।

–घरवालो का लाभ करना कौन नही चाहता ?

–अपना आत्मीय सभी को प्रिय होता है ।

गोडा माथै घाट घडियौ है । २८८३

घुटनो पर घाट घडा है ।

–जिस व्यक्ति ने अपने घुटनो के जोर पर सारा काम सफलता पूर्वक किया हो ।

–अत्यधिक अनुभवी व्यक्ति के लिए ।

गोडा सूदौ खोदै जिणरै कडिया सूदौ त्यार । २८८४

घुटनो तक खोदे उसके लिए कमर तक तैयार ।

–किसी दूसरे का थोडा अहित करने पर वापस उससे अधिक अहित के लिए तैयार रहना चाहिए ।

–बुराई के बदले बुराई मिल कर ही रहती है ।

मिलाइये—क स . २११३

गोडा सूदौ राज । २८८५

–किसी बडे व्यक्ति के सहारे का विश्वास, जिसके रहते रच-मात्र भी चिंतित होने कि आवश्यकता नही ।

–पीठ पर किसी बडे व्यक्ति का हाथ होने पर और क्या सबल चाहिए ।

बहै जीभ रा घाव, रती न औखद राजिया ।।

गोलो किणरो, गाय किणरी ? २६१०

गोला किसका गाय किसकी ।

देखिये—क. स. २६१६

गोहर मे इज गवू कोधा । २६११

गाव के पास ही गेहू बोये ।

देखिये—क सं. २७१३

गोह रा जाया खुरदरा इज व्है । २६१२

गोह के जाये खुरदरे ही होते हैं ।

–जैसा वश वैसी सतान ।

–जैसी बुरी मा वैसी ही बुरी सतान ।

मिलाइये—क स. ६५५, २७६६

गोह री मौत आवै जणा, ढेढ रा खालडा खडबडावै । २६१३

गोह की मौत आती है तब चमारो के चमडे बजाती है ।

देखिये—क स. २६०५

गोरी छोड दे पण धणी नीं छोडै । २६१४

ग्वाला छोड सकता है, पर स्वामी नही छोड सकता ।

–लगडी लूली या बीमार गाय को ग्वाला छोड सकता है पर मालिक नही छोड सकता ।

–स्वामी के दिल मे अपनी चीज के प्रति जो दर्द होता है वह नौकर के दिल मे कहा ?

–जो अपना होता है वह आत्मीयता का मोह नही छोड सकता ।

घ - घा

घडा जैडी ठीकरी, मां जैडी डीकरी । २६१५

घडे जैसी ठीकरी, मा जैसी डीकरी ।

डीकरी = बेटी ।

–*मा के सदृश ही भली-बुरी बेटी होती है ।*

–बच्चों के गुण अवगुण उनके मा बाप पर ही निर्भर करते हैं ।

पाठा : घडै सरीसी ठीकरी, मा सरीसी डीकरी ।
घडै गैल ठीकरी, मा गैल डीकरी ।

घडा माथै मटकी नीं चढै । २६१६

घडे पर मटकी नही चढती ।

–घडे का मुह छोटा होता है और मटकी का चौडा, इसलिए घडे पर भरी मटकी धरने से पडने का खतरा है । इसी प्रकार यदि औरत पुरुष पर हावी हो जाये तो वह घर टूटे बिना नही रह सकता ।

घडा सू घडो नीं भरीजै । २६१७

घडे से घडा नही भरा जाता ।

–दो तग-दिल व्यक्ति एक-दूसरे की मदद नही कर सकते ।

–उपयुक्त साधन के बिना कोई काम सपन्न नही हो सकता ।

घडीक मे मासो, घडीक मे तोळो । २६१८

पल मे मासा, पल मे तोला ।

–जो व्यक्ति एक पल म अपने को बडा समझ कर दूसरे ही पल छोटा समझने लगे उसके लिए ।

–जो व्यक्ति निहायत छोटी खुशी पर फूला न समाये और उतने ही छोटे दुख पर एक दम निराश हो जाये ।

–जिस व्यक्ति का चित्त बिलकुल स्थिर न हो ।

घडी-घडी रो रग न्यारो । २६१९

घडी घडी का रग न्यारा ।

–किसी भी घडी का रग कभी एक-सा नही रहता ।

–भगवान व कुदरत की लीला पल पल बदलती रहती है ।

घडी पलक री खबर कठै, करै काल री बात । २६२०

घडी पल की भी खबर कहा और तू आने वाले कल की बात कर रहा है ।

–भावी योजनाओ के दिवास्वप्न एक पल मे ध्वस्त हो जाते हैं । फिर कल तो बहुत दूर है ।

घडी पलका रो मेळो । २६२१

घडी पल का मेला ।

–दुनिया की हाट-बाजार का यह मेला क्षण-भगुर है जो आख मुदते ही लुप्त हो जाता है ।

–सम्मिलन के सुख से आखिर तो एक दिन बिछुड़ना ही है।

घड़ी में घड़ियावळ थोड़ी ई बाजै। २६२२
एक घडी मे सारा दिन थोड़े ही समाप्त हो सकता है।
–जो व्यक्ति अपनी जल्दबाजी मे समय को ही समेट लेना चाहता हो।
–समय तो अपनी रफ्तार से ही व्यतीत होता है, उसके लिए जल्दबाजी करने मे कोई सार नही।
–अत्यधिक जल्दबाज व्यक्ति के लिए।

घड़ी री नगटाई, आखै दिन री पतसाही। २६२३
घडी की नकटाई, सारे दिन की बादशाही।
–मान-मर्यादा को ताक मे रखकर जो व्यक्ति उलटे-सीधे भ्रष्ट कामो के फलस्वरूप मौज उडाये।
–नैतिक मान्यताओ की झिझक से मुक्त कुकर्मो के द्वारा जो व्यक्ति ऐयाशी का जीवन बिताये।

घडी रो ई भरोसो कोनीं अर नांव अमरचद। २६२४
घडी का भी भरोसा नही और नाम अमरचद।
–न मालूम किस क्षण कब मौत आ जाय कुछ पता नहीं, तब अमरचद नाम की इस से बड़ी और क्या विडम्बना हो सकती है।
–नाम के विपरीत लक्षण।
–नश्वरता के बीच मनुष्य के द्वारा स्थायीत्व का प्रयास एक उपहास के सिवाय क्या है— चाहे वह नाम के बहाने हो या यादगारो के बहाने।
पाठा : घडी री ई किणनै ठा ?

घड़ै कुम्हार, बरतै ससार। २६२५
घडे कुम्हार, बरते ससार।
–एक व्यक्ति की मेहनत से जब अगणित मनुष्यो को लाभ हो।
–कलाकृति का सृष्टा तो एक ही होता है पर उसका आनन्द लेने वाले बहुतेरे।
पाठा : घड़ै कुम्हार, भरै ससार।

घड़ै लाख लागी। २६२६
घडे लाख लगी।
लाख = फूटे घड़े पर पानी को रोकने के लिए चपडी की तरह पिघला कर लाख लगाई जाती है। जिस से एक बूद भी पानी नही झरता।
–किसी बिगडी हुई बात को पुन: वापस सुधार लेना।
–किसी सुनिश्चित पुख्ता काम के लिए।

घड़ै सरीखो मोती। २६२७
घडे के सदृश मोती।
–निर्मल पानी व मोती की तरह आबदार व्यक्ति के लिए।
–गभीर व प्रतिष्ठित व्यक्ति की सराहना के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

घड़ै सुनार, पैरै नार। २६२८
घडे सोनार, पहिने नार।
–मेहनत करने वाले को ही उसकी मेहनत का फल मिले यह जरूरी नही।
–अपने-अपने भाग्य के अनुसार ही प्रत्येक व्यक्ति को सुविधा मिलती है। केवल परिश्रम से ही कोई उसका अधिकारी नही हो जाता।

घड़ै हो घिलोड़ी, बणगी घेग। २६२९
घड रहा था घिलोडी बन गया कलश।
घिलोडी = रोजमर्रा के काम की खातिर घी रखने का निहायत छोटा बरतन।
–जब किसी काम की शुरुआत निहायत छोटे काम से हो पर बाद मे धीरे-धीरे वह बहुत बडे काम का रूप धारण कर लें तब।
–काम शुरू करने के बाद उस पर नियत्रण रख पाना सभव नही।

घड़ो फूट्यां गिड़गी ई हाथ आवै। २६३०
घडा फूटने पर मुह की किनार ही हाथ लगती है।
–किसी बडे व्यक्ति का सपर्क टूटने पर छोटे व्यक्ति से मित्रता करनी पडे तब।
–बडी चीज खोने पर उसके बदले नाम-मात्र की वस्तु हाथ लगे तब।

–अधिक सचय म ही विनाश के कीटाणु सन्निहित रहते हैं ।
–मनुष्य का अपनी सचय वृत्ति पर नियत्रण रखना चाहिए ।

घणा मोडा मढी उजाडै । २६५५
अधिक साधु मठ बिगाडते हैं ।
–अधिक कार्यकर्त्ताओ द्वारा कैसी भी बडी सस्था का विनाश अवश्यम्भावी है ।
–अधिक प्रतिनिधि या सदस्य किसी भी आयोजन के लिए घातक हैं ।

घणा रग रे दासी रा जाया ! बाप तौ छट्ठी मे ई नीं देख्यौ ।
शाबास रे दासी के पूत ! बाप तो छठी म भी नही देखा ।
–*कुल्टा की सतान के पिता का कुछ भी पता हो तो वह अपने जन्मदाता का मुह देखे ।*
–कोई अवैध व्यक्ति अपनी कुटिलताओ के प्रति अहकार करे तब ।

घणा हाथ रळियावणा, घणा मूडा बळियावणा । २६५७
अधिक हाथ पूजनीय, अधिक मुह निंदनीय ।
–जो निठल्ला व्यक्ति कुछ भी काम न करके केवल खाने-पीने व मौज करने के लिए जीता है, वह प्रताडना व तिरस्कार के योग्य है ।
–कर्मठ व्यक्तिया से ही दुनिया की शोभा है । निठल्ले व्यक्ति केवल भार स्वरूप है ।

घणा हेत टूटण नै मोटी ग्राख फूटण नै । २६५८
अधिक प्रम टूटन को, बडी आख फूटने को ।
–गाढी प्रीत कभी न कभी अवश्य टूटती है । बडी ग्राख कभी न कभी ग्रवश्य फूटती है ।
–हर अच्छी चीज के साथ कुछ न कुछ दोष जुडा ही रहता है ।

घणां री ऐब, ऐब नीं गिणीजै । २६५९
अधिक व्यक्तिया की ऐब, ऐब नही मानी जाती ।
–एक व्यक्ति कोई बुरा काम करे तो दूसरा की निगाह म वह बुरा समझा जाता है । पर यदि सारा समाज ही किसी बुरे काम म शामिल हो तो वह बुरा नहा माना जाता ।
–एक व्यक्ति हत्या करे तो वह हत्यारा, पर युद्ध म जूझती सेना खून की नदिया बहा दे तो वह प्रशस्ति के योग्य मानी जाती है ।

घणा री चोट हीरो इज झेलै । २६६०
घन की चोट हीरा ही सहता है ।
–शस्त्रो का प्रहार वीर पुरुष ही बर्दाश्त कर सकता है ।
–आदर्श व्यक्ति म कष्ट झेलने की अदम्य क्षमता होनी है ।

घणा रो मूडो धूड सू ई नीं भरीजै । २६६१
अधिक व्यक्तिया का मुह धूल स भी नही भरा जा सकता ।
–एक सतान का पालन पोषण घी शक्कर से भी किया जा सकता है पर अधिक सतान हो तो उस रूखा-सूखा खिलाना भी असभव है ।
–अत्यधिक आबादी का पेट भरना आसान काम नही है ।

घणी ग्रछ्वाई खाबडै पडै । २६६२
अतिरेक स्वच्छदता बरतन वाली [गाय] गड्ढे म गिरती है ।
देखिये—क स ४७
पाठा घणी चतराइ चीकलै पडै ।

घणी खाच्या तूटै । २६६३
अधिक तानन म टूटने का भय ।
–एक सीमा से अधिक किसी भी बात पर अडे रहना घातक है ।
–किसी भी बात के लिए ज्यादा हठ करना उचित नही ।

घणी गई थोडी रही सो ही जावणहार । २६६४
अधिक गई थोडी रही सो भी जावन हार ।
–उम्र जो बीत गई सो ता बीत ही गई और जो शेष है वह भी निसदेह बीत जायगी ।
–बढती उम्र के साथ जीवन के प्रति उदासीनता व निष्क्रियता आने पर इस उक्ति द्वारा आत्म सतुष्टि मिलती है ।
पाठा घणी गई थोडी रही, जा म छिण छिण जाय ।

घणी चतराई चूल्हे मे पडै । २६६५
अधिक चतुराई चूल्हे म गिरती है ।
–जरूरत स ज्यादा चतुराई दिखाने पर रसोई बिगडती है ।
–अपनी कुशलता के प्रति अत्यधिक सतर्क रहने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।
मिलाइये—क स ४७, २६६२

घणी तीन-पांच आछी कोनीं । २९६६
ज्यादा तीन-पाच करना अच्छा नही ।
–अधिक हुज्जत करना उचित नहीं ।
–व्यर्थ हेकड़ी दिखाने वाले व्यक्ति के लिए ।

घणी दायां पेट फोडै । २९६७
अधिक दाइया पेट फोडती हैं ।
–आवश्यकता से अधिक व्यक्तियो से काम बिगड जाने की सभावना रहती है ।
–एक ही पेशे के अधिक व्यक्ति अपनी-अपनी कुशलता के दावे मे नुकसान कर डालते हैं ।
पाठा · घणी दाया जापो बिगाडै ।

घणी नाणै ई सेर धान अर थोडै नाणै ई सेर धान । २९६८
अधिक पूजी भी सेर अनाज और थोडी पूजी भी सेर अनाज ।
–अधिक सचय करके भी मनुष्य को आखिर क्या चाहिए, केवल रोटी व कपडा ।
–मनुष्य की आवश्यकताए तो सीमित हैं फिर अतिरिक्त लालसाओं की क्या सार्थकता !
–कजूस की सचय-वृत्ति के प्रति कटाक्ष ।

घणी बूवा बटाउवा खातर थोडी व्हे । २९६९
अधिक बहुए राहगीरो की खातिर थोडे ही होती है ।
–घर मे कोई चीज अधिक हो तो वह किसी को देन के लिए नही होती ।
–दूसरे की चीज पर अधिकार जतलाने वाले व्यक्ति के लिए ।

घणी मेणत सू गधो व्है जावै । २९७०
अधिक मेहनत से गधा हो जाता है ।
–काम के लिए दिन भर कष्ट उठाने वाला गधा सब की निगाह मे घृणा का पात्र है तो फिर जरूरत से ज्यादा श्रम परिश्रम करने वाले मनुष्य का भी क्यो सम्मान होगा ?
–मनुष्य को मेहनत के साथ आराम भी करना चाहिए ।

घणी समझ धूड चाटै । २९७१
अधिक समझ धूल चाटती है ।
–जरूरत से ज्यादा अक्लमद व्यक्ति अक्सर धोखा खाता है ।
–किसी काम विशेष के सदर्भ मे ही बुद्धि या समझ का महत्त्व है । उससे अलग हटी हुई अतिरिक्त समझ सर्वथा घातक ही होती है ।

घणी सराई खीचडी दाता लागी । २९७२
अधिक सराही खिचडी दातो पर लगी ।
–प्रशसा करने पर जो व्यक्ति गले पड जाय तब ।
–भलाई के बदले बुराई हाथ लगने पर ।

घणी सैणप मे किरकर पडै । २९७३
अधिक सज्जनता मे किरकिर पडती है ।
–जरूरत से ज्यादा भलमनसात मे धूल ही गिरती है ।
–अत्यधिक आदर्श व्यक्ति अत मे दुख ही पाता है ।

घणी कूदै सो घणो पडै । २९७४
अधिक कूदने वाला अधिक गिरता है ।
–ऊचाई से गिरने वाले को वैसी ही गहरी चोट लगती है ।
–हथकण्डे करने वाले व्यक्ति का पतन होता ही है ।

घणी खावू नीं कुवेळा जावू । २९७५
न अधिक खाऊ और न कुवेला बाहर जाऊ ।
सदर्भ-कथा : एक सेठानी हाथ मे लोटा लेकर घडी रात ढले गाव से बाहर निपटने के लिए गई । शरीर पर सोने के काफी आभूषण थे । दुर्भाग्य से एक चोर ने जबरदस्ती उसका गहना छीनना चाहा । समझदार सेठानी ने तुरन्त उपाय सोच लिया । बोली—मैं तो स्वय कई दिनो से इसी दिन की बाट देख रही थी । यदि इन गहनो से ही तेरा मन भर जाय तो अपने हाथो खोल कर दे देती हू पर सेठजी की सारी माया के साथ तू मुझे ले जाने को तैयार है तो मैं तुझसे पहिले तैयार हू । बूढे सेठ के साथ मेरी सोने-सी काया नष्ट हो रही है । अंधे को क्या चाहिए ? दो आखें । चोर तो उसी क्षण मान गया । तब सेठानी ने विस्तार पूर्वक युक्ति बताई कि उसका नाम 'समझी' है । आधी रात के समय वह सारे गहने व हीरे मोती लेकर झरोखे के पास बैठी मिलेगी । चोर के द्वारा 'समझी ए-समझी' का नाम तीन चार मर्तबा पुकारने पर वह चुपचाप सारी सपत्ति के साथ हवेली से बाहर निकल आयेगी । फिर चोर जाने और उसका यौवन जाने ।

चोर की खुशी का कोई पार न रहा। सपनो के किले बनाता हुआ वह निर्धारित स्थान पर पहुचते ही सहमते स्वर म आवाज देने लगा—समभी ए समभी।

'समभी' भी पूर्णतया पूरी तैयार हाकर बैठी थी। झरोखे से बाहर मुह निकाल कर बोली—समभी रे भाई समभी, न तो ज्यादा खाऊ न कुवेला बाहर जाऊ। फिर तेवर बदल कर कर्कश स्वर म चोर को घुड़की पिलाई — चुपचाप चलता बन, नही तो बेभाव की मार पडेगी।

सेठानी की बात समझते ही चोर के स्वप्ना का किला एक क्षण म ध्वस्त हो गया। और दूसरे ही पल वह सेठानी को भागता हुआ नजर आया।

–समय पर सतर्कता बरतन से कोई भी आदमी कैसी भी आफत से छुटकारा पा सकता है।

घणो खाय ज्यू घणो मरै। २९७६

ज्यादा खाये सो ज्यादा मरे।

–ज्यादा खाने वाला और अधिक खाने के लिये मरता है।

–अच्छी आमदनी वाला और वडी आमदनी के लिए तरसता रहता है।

–जिस व्यक्ति के मन मे भौतिक लालसाओ की भूख कभी शात न हो।

घणो खटो है। २९७७

हर चीज की बहुलता बुरी है।

–सचय की सार्थकता तभी है जब वह जरूरतो की सीमा न लाघे।

–सचय की प्रवृत्ति महा घातक है।

घणो गाजै सो बरसै थोडो। २९७८

अधिक गरजे सो थोडा बरसे।

देखिये—क स. २४८६

घणो घी थाबा रै चोपडण सारू नीं व्है। २९७९

अधिक घी थभो पर चुपडने के लिए नही होता।

–कोई भी चीज अधिक हो तो दुरुपयोग के लिए थोडे ही है।

–सचित किया हुआ धन दूसरो को लुटाने के लिए नही होता।

पाठा घणो घी भीता रै लगावण सारू नी व्है।

घणो डायो खपचा मे पडै। २९८०

अत्यधिक धूर्त व्यक्ति मुसीबत मे फसता है।

–चालाकी अपनी सीमा म ही सगत है, सीमा पार करने से हर समय खतरे की गुजाइश है।

–अत्यधिक चट व्यक्ति धोखे मे आकर ही रहता है।

घणो दूध किसो बाड मे ढोळीजै। २९८१

अधिक दूध कौन सा बाड मे गिरान के लिए होता है।

देखिये—क. स २९७९

घणो धन किसो बारै उछाळीजै। २९८२

अधिक धन कौन-सा बाहर उछालने के लिए होता है।

देखिये—क स २९७९

घणो धान ईलो खावै अर पीसै जद पाणी निसरै। २९८३

अधिक अनाज इल्ली खाये और मसलने पर पानी निकले।

–अधिक खाना कोई गौरव की बात नही।

–अधिक खाने वाले पर कटाक्ष।

घणो पड्या असवार हुवै। २९८४

बार बार पडने पर ही सवार होता है।

–अनुभव के धक्के खाया हुआ व्यक्ति ही होशियार होता है।

–पराजय ही विजय की मजिल तक आगे ले जाती है।

–असफलताओ से निराश नही होना चाहिए।

घणो बट दिया गुडो पडै। २९८५

ज्यादा बटने स गाठ पडती है।

–अधिक खीचतान करन मे मन म गाठ पड जाती है।

–आपसी मन मुटाव से मित्रता टूटती है।

घणो भुसै जको खावै कोनीं। २९८६

अधिक भौकन वाला कुत्ता काटता नही।

–ज्यादा बकवास करने वाला व्यक्ति लडने से घबराता है।

–चिल्लान वाला व्यक्ति खामोश व्यक्ति से कम घातक होता है

घणो लडै सो सूरमो नीं बाजै। २९८७

अधिक लडे वह शूरवीर नही कहलाता।
–हरदम किसी से लडते रहना बुराई का लक्षण है।
–जो व्यक्ति उचित स्थान व उचित समय पर लडे वह बहादुर।

घणौ लडायोडौ टाबर इतरै। २६८८
अधिक दुलार की सतान बिगडती है।
–दुलार की जगह दुलार और डाट फटकार की जगह डांट-फटकार करने से ही बच्चों का सम्यक विकास होता है।

घणौ लोभ गळौ वढावै। २६८९
अधिक लोभ गला कटवाता है।
–केवल लोभ की खातिर लोभ करना प्राण घातक है।
–अत्यधिक लोभी मनुष्य का अत बुरा ही होता है।
पाठा: घणौ लोभ पाप रौ मूळ।

घणौ वित्त घणौ लोभ। २६९०
अधिक सपत्ति अधिक लोभ।
–अजीब विडम्बना कि जिसके पास अधिक होता है वही अधिक लोभी होता है।
–सचय करने की मनोवृत्ति का कभी अत नही आता।

घणौ स्याणौ कागलौ दे चादी मे टूच। २६९१
अधिक सीधा कौआ मारे घाव पर चोच।
–जो कौआ घाव देखते ही उस पर चोच मारे उसे सीधा क्यों कर कहा जा सकता है?
–कोई दुर्जन व्यक्ति सज्जन बनने का दिखावा करे तब?

घणौ सूधौ बिसादरौ, चुग-चुग फिड़कला खाय। २६९२
अधिक सीधी बिस्तुइया चुग चुग पतग खाय।
देखिये—उपरोक्त।

घणौ हसौ विणास री भाळ। २६९३
अधिक हसी विनाश की आग।
–अधिकाश-तया सीधे मन से की हुई मजाक भी रग ले आती है।
–जहा तक बने मनुष्य को हसी-मजाक की इस घातक प्रवृत्ति से दूर रहना चाहिए।

घणौ हेत लडाई रौ मूळ। २६९४
अधिक प्रेम लडाई का मूल।
–भली बुरी चीज का परस्पर अटूट जोडा है। तब हमी जैसी निर्मल भावना भी इसका क्योकर अपवाद हो सकती है!
–हसी की बेदाग मित्रता के बीच भी झगडे की कालिमा छिपी रहती है।

घर अळगौ, घरटी भारी। २६९५
घर दूर और चक्की भारी।
–मजिल अभी दूर है और बोझे का भार बशुमार।
–आदमी को जीवन का बोझा तो ढोना ही पडता है, चाहे वह कितनी ही बहाने बाजी करे।
–आलसी व्यक्ति के प्रति परिहास स्वरूप इस कहावत का प्रयोग होता है।

घर आयौ नाग न पूजिये, बांबी पूजण जाय। २६९६
घर आया नाग न पूजिए, बांबी पूजन जाय।
–उचित अवसर का लाभ न उठा कर बाद में व्यर्थ प्रयास करने वाले व्यक्ति के लिए।
–वास्तविकता की कद्र न करके भ्रामक रूढि का पालन करना कहा तक उचित है!

घर आयौ प्रामणौ रोवतडौ मुळकाय। २६९७
घर आया पाहुना आसू पोछकर मुस्करा।
–दुख व विपदाओ को छिपाकर भी मेहमान का उचित सत्कार करना चाहिए।
–घर आया मेहमान भगवान के बराबर होता है। हर सकट मे भी उसका हस कर स्वागत करना शोभनीय है।

घम्मड घम्मड पीसै, जाती रा पग दीसै। २६९८
घम्मड घम्मड पीसे तो समझो रगत जाने की।
–जो औरत घर छोडकर जाना चाहती है वह हर काम मे अत्यधिक जल्दबाजी व बेचैनी प्रकट करती है।
–बाहरी व्यवहार से भीतर के मन का तुरत पता चल जाता है।

घर आयौ बैरी ई पावणौ। २६९९
घर आया बैरी भी मेहमान।

–घर आये वैरी का भी निरादर न करके उसका सम्मान करना चाहिए।
–मन मे आशा लेकर कोई भी व्यक्ति घर आये तो उसे निराश करना उचित नही।

घर आवती लिछमी नै ठोकर नीं मारणी। ३०००
घर आई लक्ष्मी को ठोकर नहीं मारनी चाहिए।
–कैसी भी परस्थिति म यदि अपना लाभ हो तो उसे सहज स्वीकार कर लेना श्रेयस्कर है।
–अपना व अपने घर का स्वार्थ ही सब आदर्शों से बडा है।

घर कैवै म्हनै उधेड़ नै जो, ब्याव कैवै म्हनै माडनै जो।
घर कहे मुझे खोल कर देख, विवाह कहे मुझे रचा कर देख।
–इन दोनो कामो को प्रारभ करने के बाद फिर इनका खर्च हाथ म नही रहता। अनुमान से बहुत ज्यादा खर्च हो जाता है।
–किसी भी काम के खर्च का अनुमान शुरुआत में नही किया जा सकता।

घर खावण नै दौड़ै। ३००२
घर खाने को दौडता है।
–जब घर बडा सूना-सूना लगे।
–किसी व्यक्ति के अभाव मे जब घर सूना सूना लगता है तो इस कहावत का प्रयोग होता है।

घर गमायो माळा अर भींत गमाई आळां। ३००३
घर खोया मालो ने और दीवार खोई आलों ने।
–भाई अपनी बहिन की शह पाकर बहनोई का घर खराब करता है। अच्छा खाना व अच्छा घूमना। इसी प्रकार आलो से दीवार कमजोर पड जाती है।
पाठा घर रोक्यो माळा अर भीत रोकी आळा।

घर गोकळ मे। ३००४
घर गोकुल मे।
–जो व्यक्ति खूब ऐश करता हो।
–रसिक तबियत वाले व्यक्ति के लिए।

घर-घर माटी रा चूल्हा। ३००५
घर-घर मिट्टी के चूल्हे।
–किसी का घर चाहे कितना ही बडा या छोटा हो, खाना पकाने के चूल्हे तो सर्वत्र मिट्टी के ही होते हैं।
–हर व्यक्ति म कमजोरी होती है।
–ऐसी कमजोरी जो प्रत्येक व्यक्ति मे मिलती हो।
–पारिवारिक चिंता हर मनुष्य को लगी रहती है।
पाठा. घर-घर गार रा चूल्हा।

घर - घर चुडलाळी। ३००६
घर - घर चूडे वाली।
–हर घर में सुहागिन औरतें बसती हैं।
–हर व्यक्ति अपने-अपने दायरे मे खुशहाल है।
–जब कोई व्यक्ति अपनी विशेषता बघारे तब इस कहावत का प्रयोग होता है कि भैय्या यह तो कोई खास बडी बात नही, ऐसा तो सभी जगह होना है।

घरै जठै तारत। ३००७
जहा घर वहा पाखाना।
–अच्छी चीज के साथ बुरी चीज भी जुडी रहती है।
–हर परिवार मे अच्छे व्यक्तियो के साथ एक न एक व्यक्ति तो बुरा होता ही है।
–कोई भी व्यक्ति अवगुणो से वचित नही होता।

घर जाणी रा खेल। ३००८
घर जाने का खेल।
–जो व्यक्ति ऐसा काम करे जिसस घर उजड जाना निश्चित लगे।
–बर्बादी की राह।

घर जाय अर भाभर बाजै। ३००९
घर जाये और घुघरू बजें।
–इधर तो घर की बर्बादी हो रही है और उधर घरवाले नाच गान मे मशगूल है।
–जो व्यक्ति पारिवारिक सकट को अनदेखा करके मौज करे।
–जिस व्यक्ति को अपने भले- बुरे का रच - मात्र भी ध्यान नही हो।

पाठा घर जाय नैं धाधळ गवीजै ।

घर जाया रा दात गिणीजै के साख । ३०१०

घर जन्मे के दात गिने या आयु ।

साख = फसल । बैलों की आयु के लिए इस शब्द का राजस्थानी म विशेष अर्थ है । जो बैल जितनी साख यानी फसल की बुवाई करता है वह काम करने की उतनी उम्र बिता चुका ।

–बैल के दात गिनने से उसकी उम्र का पता लग जाता है । पर घर म जन्मे बैल की आयु तो किसी से भी छिपी नही होती अतएव दाता रा प्रमाण विशेष मान नही रखता ।

–अपने घर का रहस्य किसी से भी छिपा नही ।

पाठा घर जाया रा दात गिणू के दिन ।

घर जावै माई सू, माचौ जावै वाई सू । ३०११

घर जाये सौतली मा म , खटिया जाय बीच की रस्सी से ।

वाइ – ताने बाने को खीचने वाली रस्सी के बीच कपडा से लिपटी हुई मोटी रस्सी को वाई कहते हैं । उसके टूट जाने पर सारा ताना बाना व्यर्थ हो जाता है । उसी तरह सौतेली मा के आने स घर की बरबादी हो कर रहती है ।

घर जोग पावणौ के पावणा जोग घर । ३०१२

घर के योग्य मेहमान या मेहमान के योग्य घर ।

–घर की हैसियत के अनुसार महमान का आतिथ्य सत्कार किया जाता है न कि मेहमान की हैसियत के अनुसार । इसके विपरीत मेहमान की हैसियत के अनुसार विशेष सत्कार करने से कष्ट ही उठाना पडता है ।

पाठा घर सारू पावणौ के पावणा सारू घर ।
घर गैल पावणौ के पावणा गैल घर ।

घरटी मे गाळी उरघा ई आटो हाथ आवै । ३०१३

चक्की म अनाज डालने से ही आटा हाथ लगता है ।

–खिलाने पिलाने स ही काम होता है ।

–साधनों के अनुसार ही फल प्राप्ति होती है ।

–जितना दिया जायगा उतना ही हाथ लगेगा ।

घरणी बिना किसौ घर ? ३०१४

घरवाली के बिना कैसा घर ?

–घर की शोभा गृहणी से ही होती है ।

–औरत के बिना घर म किसी प्रकार की व्यवस्था नही हो सकती ।

पाठा घर तौ लुगाई सू सोहै ।
घर तौ लुगाया रा ई कहीजै ।

घर तायौ बन मे गियौ अर बन में लागी लाय । ३०१५

घर का सताया बन म गया और बन म लगी आग ।

–अभागे व्यक्ति के लिए इस ससार म कही ठौर नही ।

–जिस व्यक्ति के दुर्भाग्य का कही कोई अन्त ही न हो ।

घर तौ घोसिया का ई बळसी, पण सुख ऊदरा ई को पासी नीं । ३०१६

घर तो घोसिया के ही जलेंगे पर सुख चूहे भी नही पायेंगे ।

घोसी = मुसलमानो की एक जाति विशेष जो दूध बेचने का काम करती है ।

–स्वय घात करने वाला या नुकसान करने वाला उस क्षति से न बचने पाये तब ।

–जो जिसका अनर्थ करे वह स्वय उस अनर्थ की लपेट मे आ जाय तब ।

पाठा घर तौ घांचिया रा ई बळसी पण सुख ऊदरा ई को पावै नी ।

घर तौ नागर बेल सू छायौ पाडोसी रौ खोसै फूस । ३०१७

घर तो नागर बेल से छाया , पडौसिन का छीने फूस ।

–जो सपन्न व्यक्ति अत्यधिक लालची हो ।

–जो सुखी व्यक्ति अपने सिवाय किसी का सुख देखना न चाहे ।

घर तौ सगळा ई गार सू नीप्योडा व्है । ३०१८

घर तो सारे ही गारे मे लीपे हुए होते है ।

–व्यर्थ खर्च कराने स हर व्यक्ति को समान ही क्षति होती है इसलिए अपने स्वार्थ की तरह दूसरों के स्वार्थ का भी ध्यान रखना चाहिए ।

–अपने घर की सही हालत घर वाला ही जानता है ।

घर दीपै घरवाळी सू । ३०१९

घर मे उजियारा घरवाळी मे ।
–औरत ही घर की चादनी है ।
मिलाइये—क्र स ३०१४

घर देख नै हालणौ, माटी देख नै माल्हणौ । ३०२०
घर के हिसाब से चलना, पति के हिसाब से गरूर करना ।
–अपने घर की जैसी हैसियत हो उसी के अनुसार चलना वाछित है और पति की जैसी शक्ति हो उसी के अनुसार रुतबा दिखाना चाहिए ।

घर धणियाणी भूखी नै देपारा री ढूकी । ३०२१
घर की मालकिन भूखी बैठी, भरी दुपहरिया खाने बैठी ।
–दूसरो को खिलाने की व्यवस्था म घर की मालकिन दोपहर तक खाना नही खा सकी ।
–अधिकृत व्यक्ति कष्ट उठायें तब ।

घर धणी लड मरै नै पाडोसी सताप करै । ३०२२
घर का स्वामी लड मरे और पडौसी सताप करे ।
–कृत्रिम हमदर्दी दिखाने वाले व्यक्ति के लिए ।
–मुह दखी सहानुभूति ।

घर नैडौ अर माथ घणौ । ३०२३
घर समीप और दूरी बहुत ।
–दुख की वह परकाष्ठा जब पाव एक कदम भी आगे बढने को तैयार न हो ।
–अकिंचन दूरी भी जब बहुत अधिक महसूस हो ।
–मजबूरी की चरम सीमा ।

घर फूट्या घर जाय । ३०२४
घर फूटने पर घर जाय ।
–घर की फूट से घर का सर्वनाश होता है ।
–फूट से घर की दीवारें ढह जाती हैं ।
पाठा घर फूट्या करम फूटै ।

घर फूटा नै कारी को लागै नीं । ३०२५
घर फूटे का कोई उपचार नही ।
–कैसी भी विपत्ति का सामना किया जा सकता है पर की फूट का सामना नही किया जा सकता ।
–परिवार के लिए फूट से अधिक घातक दूसरी कोई बात नही ।

घर फूटै—गिवार लूटै । ३०२६
घर की फूट—गवारो की लूट ।
–घर मे फूट हो तो मूर्खो की भी बन आती है और वे उस घर को लूटने मे कोई कसर नही रखते ।
–घर की फूट का दूसरे फायदा उठाते हैं ।

घर बरसौ मेहडला नै घर ई व्हौ सुगाळ । ३०२७
घर मे बरसे मेह और घर मे ही हो खुशहाली ।
–जो व्यक्ति अपने सुख के अलावा और किसी का सुख न देखना चाहे ।
–जो व्यक्ति सब - कुछ हथिया लेना चाहता हो ।

घर ब्याव, भू पींपळां । ३०२८
घर म विवाह और बहू पीपल पूजा मे खोई ।
–जिस व्यक्ति को अपनी जिम्मेवारी का तनिक भी खयाल न हो ।
–लापरवाह व्यक्ति पर कटाक्ष ।
पाठा : घरै ब्याव अर बहू छाणा चुगवा जाय ।

घर बळती कोनीं दीसै, डूगर बळती दीसै । ३०२९
घर जलती नजर न आये, पहाड जलती नजर आये ।
–जो व्यक्ति अपने घर मे जलती आग को अनदेखा करके दूर पहाड पर जलती हुई आग की ओर बार - बार इगित करने की चेष्टा करे ।
–अपनी बुराइयो को नजर-अदाज करके जो व्यक्ति दूसरो की बुराइयो का ध्यान रखे ।
–जो व्यक्ति अपने घर की चिंता के बदले दूसरो की चिंताओ का अधिक खयाल करे ।

घर बार थारा पण ताळा-कूचौ म्हारा । ३०३०
सारा [illegible] पर चाबी-ताला मेरा ।
[illegible] दिखावा
खुश रखे [illegible]

घर जलाये बिना गाव नही जल सकता ।
–जो व्यक्ति स्वय बर्बाद होकर भी दूसरो को बर्बाद करना चाहे ।
–दूसरो का अहित करने मे यदि अपना अहित पहिले हो जाय तो भी कोई बात नही ।

घर बाळ चानणो कुण करै ? ३०३२
घर जला कर उजियारा कौन करे ?
–अपना अहित करके दूसरो की भलाई नही की जा सकती ।
–परोपकार की भी एक सीमा होती है ।
पाठा : घर बाळ तीरथ कुण करै ?

घर बिना घर कोनीं । ३०३३
घर बिना कही धरती नही ।
–जिसका अपना घर नही उसे दुनिया मे कही ठौर नही ।
–केवल अपने-अपने घरो से ही यह दुनिया आबाद है ।

घर बीगडै जूवे, देह बीगडै सूये । ३०३४
घर बिगडे जूए से देह बिगडे सोने से ।
–अधिक सोना शरीर के लिए घातक और जूआ खेलना घर के लिए घातक ।
–अधिक सोना व जूआ खेलन की वर्जना ।

घर बैठा गगा आई । ३०३५
घर बैठे गगा आई ।
–कोई अप्रत्याशित लाभ हो तब ।
–बिना किसी मेहनत व आकाक्षा के कोई अनचीते सुख की बात हो जाय तब ।
–अकस्मात् कोई बडा आदमी घर आये तब उसे संबोधित करके यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

घर बैठां दंण कुण करे ? ३०३६
घर बैठे आफत कौन सहे ?
–नाहक कौन परेशानी उठाये ?

घर भलो के घोर भलो । ३०३७
घर भला या कब्र भली ।
–जो व्यक्ति केवल अपने मे ही खोया रहे ।
–जिस व्यक्ति को अपने स्वार्थ के अलावा कही किसी से वास्ता न हो ।

घर भेदू लका ढावै । ३०३८
घर का भेदी लका ढाये ।
–घर के भेदी विभीषण के माध्यम से ही लका का सर्वनाश हुआ था ।
–घर के भेदी से बडा दुनिया मे दूसरा और कोई शत्रु नही ।
पाठा : घर रो भेदी लका ढावै ।

घर मिळै तो वर नीं, वर मिळै तो घर नीं । ३०३९
घर मिले तो वर नही, वर मिले तो घर नही ।
–सभी बातो का सुयोग जुडना दुश्वार है ।
–मन की आकाक्षा के अनुरूप कहीं कुछ न कुछ तो कमी रह जाती है ।

घर मेलो भाडै, जाय बैसो बाडै । ३०४०
घर किराये देकर , बैठो बाडे मे जाकर ।
–मामूली किराये के लोभ मे दुख उठाना उचित नही ।
–मकान किराये पर न देने की सीख ।

घर मे अधेरो अर तिला री रास । ३०४१
घर मे अधियारा और तिलहन का ढेर ।
–अधियारा भी काला , तिल्हन का रग भी काला, फिर तो कुछ भी दिखने का प्रश्न नही ।
–दुहरे दुर्भाग्य की मार ।
–तिल्हन का ढेर होते हुए भी जिस घर मे दीपक का उजियारा न हो ।
–साधन सपन्न होते हुए भी जो व्यक्ति अभाव का दुख सहे ।

घर मे आई जोय, बांकी पाग सीधी होय । ३०४२
घर मे जब औरत आये, टेढी पगडी सीधी हो जाये ।
–पत्नी के आने पर गृहस्थी का ऐसा चक्कर शुरू होता है कि अच्छे-अच्छे तीस-मारखा सीधे हो जाते हैं ।

घर मे आथण सवार रो ई नीं । ३०४३
घर मे सुबह शाम का भी नहीं ।
–जिस व्यक्ति के घर मे दो जून रोटी का भी जुगाड न हो ।

-निहायत असहाय व्यक्ति के लिए ।

घर मे ऊंदरा इग्यारस करै । ३०४४
घर मे चूहे एकादशी करें ।
-जिस व्यक्ति के घर मे चूहा के खाने तक का भी कुछ सपट न हो ।
-बेइन्तहा गरीब व्यक्ति के लिए ।

घर मे ऊंदरा दण्डियां करै । ३०४५
घर मे चूहे दण्ड पेलें ।
-जिस व्यक्ति की आर्थिक हालत बड़ी गई-गुजरी हो।
-भुखमरे व्यक्ति के प्रति उपहास भरा व्यंग्य ।

घर मे कसालो, ओढ़ै दुसालो । ३०४६
घर मे कसाला, ओढ़े दुशाला ।
-जो व्यक्ति गरीब होते हुए भी अमीरी का ढोंग करे ।

घर मे कीकर बावै, सो पगथळियां सूळ गडावै । ३०४७
घर मे जो बबूल बोये, वह पांवों मे शूल गडाये ।
-जो व्यक्ति जान बूझकर अपने अहित का काम करे ।
-जो बुरा काम करेगा, वह बुरा फल पायेगा ।

घर में गूदड़ो ई कोनीं पर बारै मांचां माथै कड़ियां खोलै ।
घर मे गुदड़ी भी नहीं और बारह खटिया पर कमर खोले।
-जो व्यक्ति गरीब होते हुए भी अमीरी की फोंकियत मारे।
-नामवरी का रौब जताने वाले निर्धन व्यक्ति के लिए ।

घर में घट्टी नै घर मे चूलो, पर घर पीसण जाय ।
पाड़ोसण सूं बातां लागी, सून गिंडकड़ा खाय । ३०४९
घर मे चाकी, घर मे चूल्हा, पर घर पीसने जाय ।
पड़ोसिन से लगी बतियान, आटा कुत्ते खाय ।
-गामगी मटकाने वाली फूहड़ औरत के प्रति कटाक्ष ।
-जो नादान व्यक्ति अकारण अपना अहित करे ।

घर में घर नीं खटै । ३०५०
घर मे घर नहीं चल सकता ।
-दो विभिन्न परिवार एक घर मे नहीं रह सकते ।
-विभिन्न विचारों वाले व्यक्तियों का साथ रहना संभव नहीं ।

घर में घर रांभा रो डर । ३०५१
घर मे घर, झगड़े का डर ।
देखिये—उपरोक्त

घर मे नीं चिणां रो चून, बेटो मांगै मोती चूर । ३०५२
घर मे नही चने का चून, बेटा मांगे मोती चूर ।
-अपनी हैसियत को भूल कर जो व्यक्ति खामखा डींग मारे।
-सामर्थ्य से परे व्यर्थ की आकांक्षा रखने वाला व्यक्ति ।
-झूठी शान बघारना ।
पाठा · घर मे कोनीं चिमटी चूण बेटो मांगै चूरमो ।
घर मे नी तेल तळाई, टाबर मांगै गुलगुला ताईं ।
घर मे नी फूको, पाणी करावण ढूको ।

घर मे तो फाका पड़ै, मोडा न्यूतण जाय । ३०५३
घर मे तो फाके पड़े, चला साधु को न्योता देने ।
देखिये—उपरोक्त

घर में दीवो तो मसीत में दीवो । ३०५४
घर मे चिराग तो मस्जिद मे भी चिराग ।
-पहिले अपना घर संभाल कर फिर बाहर झांकना चाहिए।
-पहिले घर की चिन्ता फिर मजहब की ।
-अपने घर का भला करने वाला दूसरों का भी भला कर सकता है ।

घर मे नाहर नै बारै गादड़ । ३०५५
घर मे शेर, बाहर भेड़ ।
-जो व्यक्ति घरवालों को घुड़की दिखाये और बाहर भीगी-बिल्ली बना रहे ।
-दूसरों के तलवे चाटने वाला व्यक्ति जो घरवालों को आंखें दिखाये ।
पाठा : घर मे बाघ नै बारै बकरी ।

घर में नाणो, बींद परणीजै काणो । ३०५६
घर मे हो नाणे का जोर, काना ब्याहे गोरा छोर।
-रुपये के चमत्कार से सब कुछ संभव है ।
-दुनिया मे ऐसा कोई काम दूभर नहीं जो रुपये से न हो सकता हो ।

घर में नीं अखत रा बीज, बंदो खेलै आखातीज । ३०५७
घर में नहीं अक्षत के बीज, बदा खेले आखातीज ।
आखातीज = अक्षय तृतीया ।
–झूठ मूठ की शेखी बघारना ।
–थोथी शान शौकत की हेकडी दिखाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।
मिलाइये—क. स. ३०५२

घर मे मूवाजी नाचै । ३०५८
घर मे चूहा नाचे ।
–भुखमरे व्यक्ति पर कटाक्ष ।
मिलाइये—क. सं. ३०४३, ३०४४, ३०४५

घर मे भूजी भाग ई कोनीं, सपना खीर रा आवै । ३०५९
घर मे भुनी हुई भाग भी नहीं और सपने खीर के आयें ।
मिलाइये—क. सं. ३०४८
पाठा : घर मे भूजी भाग ई कोनी अर मुलका री डीगा मारै ।

घर मे मतै ई मोत्या को चोक पूर राख्यो है । ३०६०
घर मे खुद-ब खुद ने मोतियो का चौक सजा डाला है ।
–अपने मुह मिया-मिट्ठू बनना ।
–जो व्यक्ति अपने-आप बडा बनने की शेखी बघारे ।

घर मे रामजी रो नाव है । ३०६१
घर मे राम का नाम है ।
–जिस व्यक्ति के पास सिवाय राम नाम के कुछ भी अन्य चीज देने को न हो ।
–टनटन गोपाल ।
पाठा . घर मे रांम-राम ।

घर मे रांम राजी है । ३०६२
घर मे राम राजी है ।
–जिस व्यक्ति के घर मे सब बातो का ठाट हो ।
–सभी प्रकार से संपन्न व्यक्ति के लिए ।

घर मे लागी लाय, हाथ लागै सो सवाय । ३०६३
घर मे भभकी आग, हाथ लगे सो ही भाग ।
–विनष्ट होते-होते बच जाय वही क्या कम है ।
–महामारी के बीच घर का जो प्राणी बच जाय वही सौ से बढकर है ।

घर मे व्है सवार तो भख मारो गिवार । ३०६४
घर मे हो लाभ की बात तो भख मारे गवार का बात ।
–जिस बात मे अपना लाभ, वह काम निश्चित रूप से करना चाहिए, दुनिया चाहे कुछ भी कहे ।

घर मे वेद नै मरघा कीकर ? ३०६५
घर मे वैद्य फिर मरे क्यो कर ?
–वेइन्तहा कुशल व्यक्ति के रहते कोई काम बिगड जाय तब ।
–अपनी कुशलता की डीग मारने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

घर रा ऊंदरा राजी व्है तो काम करज्यो । ३०६६
घरे के चूहे खुश हो तो काम करना ।
–जिस बात स घर का चूहा तक भी नाखुश हो वह काम नही करना चाहिए ।
–घर के छोटे-बडे सभी व्यक्ति सहमत हो वही काम करना सगत है ।

घर रा खीर खावै अर देवता राजी व्है । ३०६७
घर वाले खीर खायें और देवता राजी हो ।
–जिस काम मे दुतरफा लाभ हो ।
–घर के स्वार्थ की पूर्ति के साथ जब दूसरे भी सतुष्ट हो ।
पाठा : घर रा टाबर खीर खावै, देवता भलो मानै ।

घर रा घर मे सलट लिया । ३०६८
घर के घर ही मे सलट लिये ।
सदर्भ-कथा : एक सियार व सियारनी तालाब पर पानी पीने गये तो वहा शेर लौटता हुआ नजर आया । बचने का कोई भी रास्ता नही रहा तो सियारनी ने तुरत एक उपाय सोचा । सिंह के पास आते ही आंखो मे आसू भर कर कहने लगी—आप ही को सवेरे से खोज रही हू । सारा जगल छान मारा । आप हमारे न्यायी राजा हैं, हमारा न्याय कीजिये, नही तो तालाब मे डूब मरूगी ।

सिंह ने सहज भाव से पूछा—किस बात का न्याय ? तब सियारनी कहने लगी—हमारे सात बच्चे हैं । मैंने

कितनी मुश्किल से उन्हे पाल-पोसकर बडा किया। अब यदि अलग होने पर चार बच्चे अपने पास रखू तो इस मे क्या बुरी बात ? पर यह दुष्ट कहता है कि चार वह रखेगा। आपको तकलीफ तो होगी। हमारी माद तक चलकर सच्चा न्याय कीजिए।

सिंह के मुह मे पानी भर आया। पानी पीने की आज्ञा मागकर दोनो सिंह के साथ रवाना हुए। नरम-नरम बच्चो को खाने की कल्पना मे सिंह ऐसा खोया कि साथ चलने सियार व सियारनी को खाने की बात ही भूल गया। सियारनी पति पर नाराजी प्रकट करती हुई माद पर पहुची। सिंह ने बच्चे बाहर लाने के लिए कहा। सियार अन्दर घुसने पर जब काफी देर तक बाहर नही आया तो सियारनी चिंतित हो उठी। कही नालायक सियार धोखा न कर जाय, इस खातिर सिंह की आज्ञा लेकर वह भी अदर घुस गई। जब काफी देर तक दोनो ही बाहर न आये तो व्यर्थ की प्रतीक्षा से हैरान होकर सिंह जोर से बोला,'तुम बच्चो को लेकर बाहर क्यो नही आते ? मेरी पूजा-पाठ का समय टल रहा है। जल्दी आओ तो जल्दी ही न्याय कर दू।'

सियारनी ने माद के पास मुह लाकर कहा—जगल के राजा को बेकार तकलीफ दी। माफ कीजियेगा। यह हरामी चार बच्चे रखे तो रखने दो। मेरे पास तीन ही ही। हमने घर का घर ही मे फैसला कर लिया कि आपस मे लडना उचित नही। आपके सहयोग व कष्ट के लिए एक बार फिर माफी चाहती हू।

सिंह का तो मुह उतर गया। सास रोकता हुआ बोला एक बार बच्चो सहित बाहर तो आओ, उनका मुह तो देख लू।

सियारनी बोली—पर ये नालायक बच्चे आपकी छाया तक से दूर रहना चाहते है—मुह देखना तो दूर की बात। फिर कभी झगडा होगा तो जरूर आपके पास हाजर होऊगी।

सिंह को आखिर वहा से चुपचाप रवाना होना पडा।

—बाहर के खतरे से बचने का एक ही मत्र है—पारस्परिक एकता। चाहे वह पारिवारिक हो चाहे राष्ट्रीय।

घर रा घोड़ा वाट खुदा री। ३०६९

घर के घोडे राह खुदा की।

—जो साधन सपन्न व्यक्ति पूर्णतया स्वतत्र हो वह किस का नियत्रण माने ! अपनी मनमानी गति से आगे बढने के लिए भला उसे कौन रोक सकता है ?

घर रा छाणा बाळ गाव माव नीं करीजै। ३०७०

घर के कडे जला कर पटेलगिरी नही की जाती।

—घर का नुकसान करके गाव की वगार कौन करे ?

—अपनी क्षति उठा कर दूसरो का हित कब तक किया जा सकता है।

घर रा छोरा घरटी चाटै ओझैजी नै आटो। ३०७१

घर के लडके चक्की चाटें, पडितजी को आटा चाहिए।

—जब घर की हालत खस्ता हो तो दूसरो का भला नही किया जा सकता।

—अभाव की स्थिति मे जब कोई व्यक्ति वैसी माग करे तब परिहास मे इस कहावत का प्रयोग होता है।

पाठा घर रा तो घट्टी चाटै अर पावणा रै बटिया भावै।

घर रा टाबर काणा ई सोवणा। ३०७२

घर के बच्चे काने ही सुहाने।

—अपनी बुरी चीज से भी हर मनुष्य को मोह होता है।

—अपने घर वालो मे बुराई नजर नही आती।

घरा रा डोका सू आख फूटी। ३०७३

घर के सरकडे से आख फूटी।

—जब घर का आत्मीय हानि पहुचाये तो मन ही मन सब्र करने के अलावा दूसरा कोई चारा नही।

—अपने हाथो अपनी क्षति हो जाये तब।

घर रा देव घर रा ई पुजारी। ३०७४

घर के देव, घर के ही पुजारी।

—घर के ही खाने वाले और घर के ही खिलाने वाले।

—जो व्यक्ति अपने घर वालो की हरदम प्रशसा करे।

घर रा लूणा चाटै अर पामणा नै पोळी भावै। ३०७५

घर वाले भाडन चाटें और अतिथियो को पुडी की दरकार।

देखिये—क स ३०७१

घर रा धणी नैं लागत लागै नैं पांमणो डोलां छीजै ।
घर के मालिक का खर्चा हो और अतिथि मन ही मन अकुलाये ।
–जब कोई अतिथि जरूरी काम की खातिर जाना चाहे और घर का मालिक उसका सत्कार करने को उत्सुक हो तब वैसी स्थिति मे इस कहावत का प्रयोग होता है ।
–जिस बात से दुतरफा नुक्सान हो वैसी नादानी नही करनी चाहिए ।

घर रा पितरा रै गुळ रौ चूरमौ । ३०७७
घर के पितरो के लिए गुड का मलीदा ।
–घर के आदमियो के प्रति उपेक्षा बरती जाय तब व्यग्य मे इस कहावत का प्रयोग होता है ।
–घर वालो की अपेक्षा बाहर के व्यक्तियो का अधिक सत्कार करने पर ।
पाठा . घर रा देव नैं तेल रौ तेवड ।
घर रा पीरा आगै तेल रौ मलीदौ ।

घर रा पूत कवारा डोलै, पाड़ौसी नैं फेरा भावै । ३०७८
घर के पूत कुवारे डोलें, पडौसी को भावर की उमग ।
देखिये—क. सं. ३०७१

घर रा बळद, किणी गैल पडौ ? ३०७९
घर के बैल, किसी भी राह चलें ?
–घर के बैल किसी भी राह चल पडें तो आखिर घर पहुच ही जाते हैं । इस मे कभी भूल नही होती ।
–घर का विश्वस्त व्यक्ति देर-सबेर काम आता ही है ।

घर रा बडेरा नीं मरता तौ अेक गाव बस जातौ । ३०८०
घर के पुरखे नही मरते तो एक गाव बस जाता ।
–'ऐसा न हो तो वैसा हो जाय'—इस तरह की बात करने वालो के प्रति कटाक्ष ।
–होनहार को टालने की बात करना व्यर्थ है ।
–असभव बात की कल्पना करना भी नितात नादानी है ।

घर रा बेरा मे कोई घेंग देणां सू सौ रह्या । ३०८१
घर के कुए मे कोई धमाका देने से तो रहे ।
–घर की वस्तु होने के नाते ही कोई अहितकर चीज हित कर नही हो जाती ।
–आत्मीयता के नाते ही किसी को नुक्सान करने का अधिकार नही मिल पाता ।
–सोने की कटारी कोई पेट मे खाने के लिये नही होती ।

घर रा रह्या नीं घाट रा । ३०८२
घर के रहे न घाट के ।
–जो व्यक्ति दोनो दीन से जाकर कही का न रहे ।
–असमजस पूर्ण दुविधा-जनक स्थिति ।

घर रा नैं धान मत मिळजो, बळीता सारू मेलैला । ३०८३
घर वालो को अनाज न मिले, नही तो ईंधन के लिए भेज देंगे ।
–ऐसा काम चोर व्यक्ति जो अपने निठल्लेपन की खातिर घर की बडी से बडी हानि सहने को तैयार हो ।
–अपनी सनक की तुष्टि के लिए जो व्यक्ति दूसरो का घातक नुक्सान करने मे भी न हिचके ।

घर रा नैं मारणौ अर चोरा नैं धारणौ । ३०८४
घर वालो को मारना और चोरो को तारना ।
–ऐसा सिर-फिरा व्यक्ति जो घरवालो का तो अहित करे और दुष्ट व्यक्तियो की सहायता करे ।
–नासमझ व्यक्ति के सभी काम उलटे ही होते हैं ।

घर री आधी ई भली । ३०८५
घर की आधी ही भली ।
–परिवार के आत्मीय जनो से दूर रह कर दिसावर की पूरी कमाई के बदले घर की आधी कमाई भी श्रेयस्कर है ।
–दूसरो के यहा आश्रित रह कर कमाने की अपेक्षा आजादी की आधी भूख ज्यादा अच्छी है ।

घर री खाड किरकरी लागै, गुळ चोरी रौ मीठौ । ३०८६
घर की चीनी किरकिरी लगे, गुड चोरी का मीठा ।
–हर व्यक्ति की नजर मे अपने घर की बनिस्पत दूसरो की वस्तुए ज्यादा आकर्षक लगती हैं ।
–अपनी चीजो से विरक्ति स्वाभाविक है ।
–जो लम्पट व्यक्ति अपनी सुन्दर पत्नी को छोडकर परकीया के लिए हरदम तरसता रहे ।

पाठा : घर री खाड किरकरी लागै, हाख्या री गुळ मीठी।

घर री खावै, सदा सुख पावै। ३०८७

घर की खाये, सदा सुख पाये।

–जो व्यक्ति दूसरो का मोहताज न हो—वही सबसे अधिक सुखी है।

–घर की आवश्यकताओं का घेरा अपने घर तक ही सीमित रहे—यानी किसी को भी उस पर ऋण न हो, भला उस से बढकर और कौन सुखी हो सकता है ?

घर री खेती। ३०८८

घर की खेती।

–सहज प्राप्य वस्तु के लिए।

–अनायास हाथ लगने वाली वस्तु।

घर री गाय नै घर रा ई गोधा। ३०८९

घर की गाय और घर के ही साड।

–जो आत्मनिर्भर व्यक्ति किसी भी तरह किसी का आश्रित न हो।

–कोई घनिष्ठ मित्र या आत्मीय परोक्ष-अपरोक्ष रूप से लाभ उठा ले तो मन को समझाने के लिए इस उक्ति का प्रयोग होता है।

घर री गाय रौ घी सौ कोसा ई खाईजै। ३०९०

घर की गाय का घी सौ कोस तक खाया जा सकता है।

–घर पर किसी को घी दूध खिलाओगे तो सौ कोस दूर भी आपको घी दूध ही मिलेगा।

–जो अपने घर पर आदर-सत्कार करता है, वह दूसरो के यहा वैसा ही आदर-सत्कार पाता है। चाहे कितनी ही दूरी क्यो न हो।

घर री छाछ गाव वाळां नै घालै। ३०९१

घर की छाछ गाव वालो को डाले।

–जो व्यक्ति अपने घर की चीज दूसरो के निमित्त बरते।

–घर वालो की अपेक्षा जो व्यक्ति दूसरो का अधिक खयाल करे।

घर री छीज, लोक री हासी। ३०९२

घर की दाह, लोक का खिलवाड।

देखिये—क. स. २६६५

पाठा : घर री हाण जगत मे हासी।

घर री छोड पराया री माखी उडावै। ३०९३

घर की छोडकर दूसरो की मक्खी उडाये।

–जो लापरवाह व्यक्ति अपनी चिंता न करके दूसरो की चिंता करने का दिखावा करे।

–जो व्यक्ति स्वय का भला नही कर सकता, वह दूसरो का भी नही कर सकता।

घर री जूती नै घर रौ ई माथौ। ३०९४

घर की जूती और घर का ही सिर।

–अपने ही हाथो अपना अहित करने वाले के प्रति।

–घरवालो के द्वारा नुक्सान दिये जाने पर।

घर री डाकण घर रा नै ई खाय। ३०९५

घर की डायन घर वालो को ही खाये।

–जिस व्यक्ति के द्वारा घरवालो को ही बार बार नुक्सान पहुचे।

–जो कुटिल व्यक्ति परिवार के सगे सबधियो ही को ठगे।

घर री दाळ रोटी सिरै। ३०९६

घर की दाल-रोटी अच्छी।

–दूसरो के उम्दा पक्वानो की अपेक्षा घर का रूखा उत्तम है।

–दूर विदेश की कमाई का लोभ छोडकर जो व्यक्ति अपनी ठौर ही सतुष्ट हो।

मिलाइये—क स. ३०८५

घर री मा नै डाकण कुण कवै ! ३०९७

अपनी मा को डायन कौन कहे !

–अपनी चीज की बुराई कोई नही करना चाहता।

–अपने आत्मीय जनो व अपने मित्रो के दोष नजर नही आते।

घर री मुरगी दाळ बिरोबर। ३०९८

घर की मुर्गी दाल बराबर।

–अपनी चीज की कद्र नही होती।

–अपनो की अच्छाइया नजर ही नही आती।

घर री रोटी खाय बेगार क्यूं काढणी ? ३०९९

घर की रोटी खाकर बेगार क्यो निकालनी ?

–अपना अहित करके दूसरो का काम नही करना चाहिए ।

मिलाइये—क. स. २०७०

घर री रोटी बारै खावणी । ३१००

घर की रोटी बाहर खाई जाती है ।

–अपने घर पर दूसरो का आदर-सत्कार करने वाला दूसरो के यहा वैसा ही आदर सत्कार पाता है ।

घर रै आगणै बोरडी नीं लगावणी । ३१०१

घर के आगन मे बेर नही लगाना चाहिए ।

–कटीला पेड होने के कारण हर वक्त शूलों की परेशानी ।

–हीन या दुष्ट व्यक्ति को अपने घर मे आश्रय नही देना चाहिये ।

घर रै चोटी बढिये री बेगार ई चोखी । ३१०२

घर क दास की बेगार भी अच्छी ।

–दूसरो की अच्छी नौकरी से घर के आदमी की बेगार भी शोभनीय है ।

–स्वतत्र प्रवृति वाले मनुष्य की भावना ।

घर रै चोर रा खोज कोनीं चालै । ३१०३

घर के चोर के पद चिन्ह नही चलते ।

–चोर को पकडने मे उसके पद चिन्ह सहायक होते हैं । पर घर का चोर तो घर में ही रह जाता है फिर उसके पद-चिन्हों का बाहर कैसे पता चले ।

–घर का व्यक्ति चोरी करे तो उसे पकड पाना मुश्किल है ।

घर रो ई नद बाबो अर घर री जसोदा । ३१०४

घर का ही नद बापू और घर की ही यशोदा ।

–जब घर वालो के ही द्वारा अपने व्यक्ति की पचायती हो ।

–अपने घर वालो से काम कराना मुश्किल नही होता ।

घर रो गमाय गैलो बाजणो । ३१०५

घर का खोकर पागल कहलवाना ।

–घर का अहित करके पागल कहलवाने मे दुहरा नुक्सान होता है ।

–ऐसा कोई काम नही करना चाहिए जिससे घर की क्षति हो ।

घर रो गमाया आख्या उघडै । ३१०६

घर का खोने से ही आखें खुलती हैं ।

–अपने हाथो घर का खोने पर ही सबक मिलता है ।

–घर का नुक्सान किये बिना अनुभव नही हो सकता ।

घर रो गांजो नै घर री चिलम । ३१०७

घर का गाजा और घर की ही चिलम ।

–मौज करने वाले को इससे बढिया और क्या सुयोग चाहिए ।

–बाप की मिलकियत फूकने वाले व्यक्ति के लिए ।

घर रो गोपी चदण ई गमायो । ३१०८

घर का गोपी चदन ही गवाया ।

देखिये—क स. २७१७

घर रो घरकूलियो कर न्हाखियो । ३१०९

घर का घरौंदा कर डाला ।

–घर का सत्यानाश हो जाना ।

–जिस व्यक्ति के हाथो देखते-देखते घर की बर्बादी हो जाय ।

घर रो चानणो । ३११०

घर का उजियारा ।

–होनहार व्यक्ति के लिए ।

–जिस वश मे केवल एक ही व्यक्ति बच्चा हो ।

घर रो जोगी जोगडो आण गांव रो सिद्ध । ३१११

घर का जोगी जोगना आन गाव का सिद्ध ।

–घरवालो की दृष्टि मे जब अपने व्यक्ति का आदर न हो ।

–प्रतिभा की घर मे नही बाहर ही कद्र होती है ।

मिलाइये—क स. २७१८

घर रो धणी हूं नै बारै निकळ थू । ३११२

घर का मालिक मैं और तू बाहर निकल ।

–मनमानी करने वाले व्यक्ति के लिए ।

–वक्त आने पर बाप के घर मे लडको की दगलदाजी हो

जाती है।

घर रौ धणी नै घर मे मत जा। ३११३
घर का मालिक और घर म ही मत जा।
–घर के मालिक की घर म ही पाबदी होने पर।
–अधिकृत व्यक्ति को उसके अधिकारों से वचित कर देन पर।

घर रौ छोरौ अर बारलौ बींद। ३११४
घर का छोकरा और बाहर का दूल्हा।
देखिये—क स २७१८

घर रौ नांणौ खोटौ तौ पारखू के करै ? ३११५
घर का सिक्का ही खोटा तो पारखी क्या करे ?
–बिगडे हुए लडके की लोग बदनामी करें तो इस मे असगत कुछ भी नही।
–जब अपन म ही पानी मरे तो दूसरो के सामने आब नही उठाइ जा सकती।
पाठा घर रौ नाणौ ई खोटौ, पछै सराफ रौ काई दोस ?

घर रौ भेदी चोर। ३११६
घर का भेदिया चोर।
–घर के भेद बगैर चोरी नही हो सकती। इसलिए असली चोर घर का भेदिया ही होता है।
मिलाइये—क स ३०३८

घर व्है जठै कजिया ई व्है। ३११७
घर होने हैं वहां झगडा भी होता है।
–विभिन्न समझ व विभिन्न स्वभाव के कारण परिवार मे विरोध होना स्वाभाविक है।
–घर एक होने पर भी निहित स्वार्थों के बीच टकराव को रोका नही जा सकता।

घर व्है जठै निचारी ई व्है। ३११८
घर होता है वहा निचारा भी होता है।
निचारौ=रसोई के बरतन साफ करने का स्थान।
देखिये—क स ३००७

घर वाळां नै दोरी लागै पारका नै काई पीड ? ३११९
घर वालो को खटकती है पराया को क्या पीडा ?
–अपनो मे भले बुरे का ध्यान केवल घरवालो को ही होता है। परायो को उसकी क्या चिंता ?
–वक्त पर घरवाले ही बुरा भला कहते हैं, पराये तो मन सुहाती बात भर करते हैं।

घर वासै री राड अर खोळा रौ छोरौ के न्याल करै ?
रखैल औरत व गोद का लडका क्या निहाल करते है।
–स्वार्थ की खातिर प्रम का दिखावा करने वालो पर निर्भर नही किया जा सकता।
–निस्वार्थ प्रम के द्वारा ही परित्याग सभव है।

घर सपत खोळायनै दर-दर मागै भीख। ३१२१
घर की सपत्ति खोकर दर दर मागे भीख।
–सोच समझ कर नही चलन से बाद म कष्ट उठाना ही पडता है।
–अपव्ययी को अत म भीख मागने के लिए मजबूर होना पडता है।

घर सासू धुर कुत्ती, ऊबा री धोवण बूजी पगा लागू।
घर की सास को दुत्कार, धोवन माई का सत्कार।
–जो व्यक्ति अपने परिजनो की प्रताडना व दूसरे लोगो का जरूरत से ज्यादा आदर करे।
–घर वालो के प्रति तिरस्कार व दूसरो के प्रति सम्मान रखने वाले व्यक्ति के लिए।

घर सुधरया गांव सुधरै। ३१२३
घर सुधरने से गाव सुधरता है।
–हर व्यक्ति को पहिले अपने घर का ध्यान रखना चाहिए। घर का ध्यान रखने से गाव का ध्यान तो अपने आप ही रह जाता है।

घर सुवावतौ खावणौ नै लोक सुवावतौ पैरणौ। ३१२४
घर सुहाता खाना और लोक सुहाता पहिनना।
देखिये—क स २२२२

घर सू घर कोनीं चालै। ३१२५
घर से घर नही चल सकता।
–कोई भी व्यक्ति अपने पास से दूसरो के घर की सारी आव

श्यकताए पूरी नही कर सकता ।
–अपना घर तो आखिर अपने ही बल बूते पर चलता है ।

घर सूं ढांणी उतरी, जितरी ढाणी सूं घर । ३१२६
घर से झुग्गी उतनी, जितना झुग्गी से घर ।
–परस्पर मन-मुटाव होने पर दो सगे-सबधी या मित्रगण एक दूसरे से समान ही दूरी का अनुभव करते हैं ।
–जब दो कसूरवार किसी भी सूरत मे एक दूसरे से कम न हों ।
पाठा · घर सू बाडो जित्तो वाडै सू घर ।
घर सू वेरो जित्तो वेरा सू घर ।

घर सूं दीधो नीं दांन, देता पग आडो करै । ३१२७
घर मे दिया नही दान, देते हुए अड़गा लगाये ।
–जो व्यक्ति न तो खुद कभी किसी का भला करे और न दूसरो को ही करने दे ।
–जो दुष्ट व्यक्ति दूसरो के द्वारा की गई भलाई को रच मात्र भी बर्दाश्त न कर सके ।

घर सूं बेटी नीसरी, भावै जम त्यौ भर भावै जवाई । ३१२८
घर से बेटी विदा हुई, उसे चाहे यम ले जाये चाहे दामाद ।
–विवाह होने के बाद लडकी मा बाप से दूर हो जाती है । वह दूरी चाहे दामाद के द्वारा हो और चाहे यमराज के द्वारा । घरवालो को उस से कोई सरोकार नही ।
–जो व्यक्ति अपने हीनतम स्वार्थ के आगे किसी से कुछ भी सरोकार न रखे ।
–जो चीज अपने हाथ से गई—वह चाहे निकट सबधी के हाथ लगे चाहे किसी चोर के, इस से कुछ भी फर्क नही पडता ।
–अपनी जिम्मेवारी समाप्त होने पर चाहे कुछ भी क्यो न हो ।

घर हलावै तो घर रो वैरी, गाव हलावै तो गाव रो वैरी ।
घर का अगुवा घर का वैरी, गाव का अगुवा गाव का वैरी ।
–न घर का अगुवा सभी घरवालो को खुश रख सकता है और न गाव का अगुवा सारे गाव को । तब असतुष्टि के वातावरण मे खीज प्रकट होना स्वाभाविक है ।
–जिम्मेवारी का जितना दायरा होता है, उसी के अनुरूप बदनामी का दायरा भी होता है ।

घर हीणो दीजै पण वर-हीणो मत दीजै माय । ३१३०
घर हीन भले ही देना मा वर-हीन मत देना ।
–एक कुवारी कन्या के लिए घर की दरिद्रता सहन हो सकती है पर पति की दरिद्रता सहन नही हो सकती । वह दरिद्रता चाहे उम्र की हो, शिक्षा की हो और चाहे अन्य गुणो की ।
–पति अच्छा मिले तो घर सुधर सकता है ।
–घर की आर्थिक स्थिति के बनिस्पत व्यक्ति के वैयक्तिक गुण कही ज्यादा माने रखते हैं ।
पाठा घर हाण जोय लेणो पण वर हाण नी जोवणो ।
घर माडो मटै पण वर माडो नी मटै ।

घरां कुपातर किसा नीं जलमै ? ३१३१
कुलीन घर मे कुपात्र कौन से पैदा नही होते ?
–कुलीन घर मे दुर्जन पैदा होना अनहोनी बात नही ।
–कुलीनता का दावा हमेशा के लिए सही नही होता ।
–अच्छाई के साथ बुराई अपने-आप पैदा होने लगती है ।

घरै अधारो नै चोबारै दीवो करै । ३१३२
घर म अधियारा और गाव के चौक म दीपक जलाय ।
–जो व्यक्ति अपने घर का ध्यान न करके दूसरो का भला करने मे मशगूल रहे ।
–झूठा प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति के लिए ।

घरै आयो तो गिडक ई आदरीजै । ३१३३
घर आये हुए कुत्ते का भी आदर होता है ।
–घर आये कुत्ते को भी रोटी डाली जाती है, फिर मनुष्य का तो कहना ही क्या !
–घर पर चल कर आये हर अकिंचन व्यक्ति का यथोचित सम्मान होना चाहिए ।

घरै आयो, मां-जायो । ३१३४
घर पर आया, मा का जाया ।
–जो भी व्यक्ति घर पर आये वह सगे भाई के समान ही सत्कार का पात्र है ।
–आतिथ्य-सत्कार के प्रति सीख ।
पाठा : घरै आयो नै मा जायो बिरोबर व्है ।

घरं आयो सो ई पांवणो । ३१३५
घर आया वही मेहमान ।
देखिये—उपरोक्त ।

घरं ई मद नं घरं ई मतवाळ । ३१३६
घर की शराब और घर के ही पीने वाले ।
–जिस घर के सभी व्यक्ति शराबी या मद्यप हों ।
–जिस खानदान के छोटे बडे सभी सदस्य अहंकारी हों ।

घरं कांम, कूवै विसरांम । ३१३७
घर पर काम, कुए पर विश्राम ।
–काम चोर व्यक्ति के लिए जो काम करने के बहाने केवल मुंह दिखाता रहे ।
–जो निठल्ला व्यक्ति हाथ के काम को छोड कर अदृष्ट काम की जिम्मेवारी लेने की उत्सुकता दिखाये ।

घरं खीर तो बारं ई खीर । ३१३८
घर पर खीर तो बाहर भी खीर ।
–अपने घर पर दूसरों को बढ़िया भोजन खिलाने पर बाहर भी बढ़िया भोजन खाने के लिए मिल जाता है ।
–अपने घर जैसा उम्दा भोजन की दूसरों के घर अपेक्षा करना सगत नहीं ।

घरं घट्टी नं घर घर बळवा जाय । ३१३९
घर पर चक्की और दूसरों के घर घर दलने जाय ।
देखिये—क सं. ३०४६

घरं घांणी नं तेली पूखो क्यूं खावै ? ३१४०
घर का कोल्हू और तेली रूखा क्यों खावे ?
–किसी चीज के रहते उसके अभाव की पीड़ा क्यों सही जाय ?
–सामर्थ्य की सीमा में कोई भी चीज हो तो उसका उपयोग करना ही पड़ता है ।

घरं घीणो'र मूखो खाय । ३१४१
घर पर अपनी गायों का घी और रूखा खाये ।
–जो व्यक्ति अपनी इच्छा से कष्ट उठाये ।
–जो अभागा व्यक्ति बहुतायत के बीच तंगी भोगे ।
मिलाइये—क सं. ३०४४

घरं घोड़ो नं पाळो जाय । ३१४२
घर पर घोडा और पैदल जाये ।
–दुर्भाग्य पीछा न छोड़े तो खुद की चीज भी काम नहीं आती ।

घरं छत्तो मोगरी, टाबर कूटाया मरं । ३१४३
घर पर सलामत मोंगरी, बच्चे पिटने को तरसें ।
–जिस घर मे बच्चों पर नियत्रण रखने वाला न हो ।
–अधूरे साधन हो तो मन की मन में रह जाती है । जैसे घर म कपडे धोने की मोंगरी तो हो पर कपडे न हों ।

घरं जाऊं तो घर रा कूटं, बारं कूटं छोरा ।
सेता मे हेलगिया कूटं, लारं कूटं चोरा । ३१४४
घर जाऊ घर वाले पीटें, बाहर पीटें लडके ।
खेतों म मजदूर पीटें, बाहरे पीटें लडके ॥
–जिस व्यक्ति का रोम-रोम ऋण से ग्रस्त हो ।
–सर्वत्र पिटने के लिए ही जो मनुष्य मजबूर हो ।

घरं जाय तो रांड खावै बारं जाऊं तो धाड़वी खावै ।
घर जाऊं तो घरवाली खाय, बाहर जाऊं तो डाकू खायें ।
–दुविधा-जनक स्थिति का चित्रण । ३१४५
–जिस राह बचने की कोई स्थिति न हो ।

घरं फाका नं बारं बाका । ३१४६
घर पर फाके और बाहर बाके ।
–अपनी स्थिति का झूठा दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए ।
मिलाइये—क स ३०४८, ३०४२, ३०५५

घरं बावळा नं बारं स्याणा । ३१४७
घर पर बावला और बाहर सयाना ।
–घर का काम रच मात्र भी न संभालने के बावजूद जो व्यक्ति बाहर दूसरों को प्रिय हो ।
–निठल्ला व्यक्ति दूसरों का अच्छा लगता है ।

घरं बोलै डोकरा नं बारं बोलै छोरटा । ३१४८
घर पर बोलें सयाने, बाहर बोलें नादान ।
–घर पर बड़े-बुजुर्ग जैसी चर्चा करते हैं, बच्चे बाहर उसी को दुहराते हैं ।
–घर के वातावरण के अनुकूल ही बच्चों का व्यवहार

घसमण घाणी, आधो तेल न आधो पाणी। ३१४९
घसर-पसर घानी, आधा तेल व आधा पानी।
घाणी = कोल्हू।
–अस्त व्यस्त काम हो जाने पर।
–जिस व्यक्ति म कार्य करने की रचमात्र भी कुशलता न हो, उस पर कटाक्ष।

घाघरा रा लपर्‌ लीरा नव सौ रिपिया। ३१५०
फटा पुराना जर्जरित लहगा और नौ सौ रुपये।
–अकिंचन वस्तु के दाम अत्यधिक बताने पर।
–जिस वस्तु की वास्तविकता और उसके मूल्य मे कही कैसा भी ताल-मेल न हो।

घाघरिया रौ गनौ। ३१५१
लहगे का रिश्ता।
–ससुराल की तरफ के रिश्ते—जैसे साली, साला इत्यादि।
–लहगे के माध्यम वाले रिश्ते अधिक प्रिय होते हैं।

घाट-घाट रौ पाणी पीधोडौ। ३१५२
घाट-घाट का पानी पीया हुआ।
–दुनिया देखे हुए अनुभवी व्यक्ति के लिए।
–जो व्यक्ति किसी से ठगाया न जा सके।

घाव तौ वैरी रा ई सरावणा। ३१५३
घाव तो बैरी के भी सराहने चाहिए।
–अच्छा काम तो दुश्मन भी करे तो उसकी प्रशसा करनी चाहिए।
–पूर्वाग्रह से हटकर अच्छे बुरे की परख होनी चाहिए।

घालै दाढ मे तौ आवै हाड में। ३१५४
डाले डाढ मे तो आये हाड म।
–अच्छी खुराक खाने मे ही शरीर पुष्ट होता है।
–जैसा पौष्टिक भोजन वैसा स्वास्थ्य।

घायल री गत घायल जाणै। ३१५५
घायल की गति घायल जाने।

घालै जकौ खावणौ, मेलै उठै ई जावणौ। ३१५६
डाले वही खाना, भेजे वही जाना।
–घर के बडे बूढे का आदेश परिवार के हर व्यक्ति को मानना चाहिए।
–एक की आज्ञा के बिना अनुशासन नहीं रह सकता।

घालौ घालौ में काढौ-काढौ री लागी। ३१५७
डालो-डालो मे निकालो निकालो की लगी।
–अकस्मात् किसी काम का एकदम रुख बदल जाने पर।
–जल्दबाजी मे कुछ भी सही निर्णय नही होता।

घाव भर जावै पण सैलाण नीं मिटै। ३१५८
घाव भरने पर भी निशान नही मिटता।
–कडुवे बोलो की चुभन सोते हुए भी नही मिटती।
–अपशब्दों की याद कभी भुलाये नही भूली जाती।
–समय व्यतीत हो जाता है पर स्मृति नही मिटती।

घाव माथै लूण। ३१५९
घाव पर नमक।
–मर्माहत दिल पर फिर चोट पहुचाना।
–दुखी व्यक्ति को छेडकर और दुखी करना।

घाव विचै ओळूबौ मारी। ३१६०
घाव की अपेक्षा टीस गहरी।
–जिस मर्मान्तक चोट से दिल सिहर उठे।
–जिस घाव की पीडा घाव से अधिक मर्माहत करे।
–जिस स्पर्श की सिहरन स्मृति मे हरदम कौंधती रहे।

घास खायां गुजारौ व्है तौ कुण नीं खावै ? ३१६१
घास खाने से गुजारा हो तो कौन नहीं खाये ?
–जिस चीज की आवश्यकता हो, उसी की पूर्ति होने पर तृप्ति होती है।
–हर वस्तु से मनुष्य की हर जरूरत पूरी नही होती।
–हर वस्तु की अपनी अलग ही उपादेयता होती है।

घास-फूस रौ तापणौ। ३१६२

घास फूस का ताप ।
–अकिंचन वस्तु से बडी आवश्यकता पूरी नही होती ।
–क्षणस्थायी वस्तु का कितना सहयोग ।
–मन की आकाक्षाए घास-फूस के ताप की तरह क्षणस्थायी होती हैं ।

घास वाढ़वा जावै नै कसार रौ भातौ । ३१६३
घास काटने जाये और लड्डू का पाथेय ।
–हैसियत से अधिक दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए ।
–काम की आवश्यकता से अधिक व्यय करना उचित नही ।

घांणी आळौ बळद । ३१६४
कोल्हू का बैल ।
–भटकने के साथ जिस व्यक्ति में नया अनुभव नाम मात्र को भी न जुड़े ।
–एक ही बधे दायरे मे घूमने वाला व्यक्ति ।

घांणी रा बळद नै घर ई कोस पचास । ३१६५
कोल्हू के बैल को घर ही कोस पचास ।
–घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए जो व्यक्ति कोल्हू के बैल की तरह रात-दिन भटकता रहे ।
–घर के लिए खटने का चक्कर भी कोई मामूली चक्कर नही होता ।

घांणी रौ बळद है जठै ई फिरै । ३१६६
कोल्हू का बैल वहीं चक्कर काटता है ।
–इधर-उधर व्यर्थ भटकने वाले व्यक्ति के लिए ।
–निरर्थक अनुभवों की पुनरावृत्ति ।

घांणी रा बळद नै बाळदी क्यूं ? ३१६७
कोल्हू के बैल को समूह के सग की क्या जरूरत ?
–कोल्हू के बैल की आखे बद रहती हैं और वह एक ही जगह दिन-भर घूमता रहता है , फिर उसे दूसरे बैलो के साथ की दरकार ही क्या ?
–निसग व्यक्ति के लिए किसी का भी साथ कुछ माने नही रखता ।

घि - घी

घिरत कबीरौ खायगौ, छाछ पीवै संसार । ३१६८
घी-घृत कबीरा खा गया, छाछ पीये ससार ।
–कबीर की तरह ज्ञानी मनुष्य ही जीवन के नवनीत का चरम-स्वाद ग्रहण करते हैं, बाकी बची - खुची छाछ के लिए झगडते रहते हैं ।
–जीवन का वास्तविक सार ज्ञान ही है, भौतिक समृद्धि नही ।

घिरत घिलोड़ी माय, बेटा नै जीमाय ।
दो दिन खाटी छाछ, छोरचा नै पाय । ३१६९
घी मे भरा बासन, मा बेटो को खिलाये ।
दो दिन की खट्टी छाछ, बेटियों को पिलाये ।
–भविष्य मे स्वार्थ की आशा होने पर दूसरों की बात तो अलग मा की ममता म भी सहज रूप से दुराव या पक्षपात पैदा हो जाता है । क्योंकि लडके बडे होने पर परिवार का जिम्मा सभालते हैं और लडकी बडी होने पर दूसरो के घर चली जाती है ।
–ममता, स्नेह तथा प्रेम ये सभी रागात्मक सबध केवल स्वार्थ से संचालित होते हैं ।

घिरत जीमावै सास, दोयतड़ां री आस । ३१७०
घी खिलाये सास, दुहितों की आस ।
–स्वार्थ ही सब आदर-सत्कार का बीज-मत्र है ।
–आत्मीयता के प्रदर्शन की तह मे स्वार्थ छिपा रहता है ।

घिरत बिना नीं सारणा, घर बिना नीं बारणा । ३१७१
घी के बिना भोजन सपाट, घर के बिना नही होते कपाट ।
–घी से ही सारे पक्वान सुधरते हैं ।
–घी की महिमा के लिए ही अगली तुक का प्रयोग हुआ है ।

घिरत सुधारै खीचडी, नांव बहू को होय । ३१७२
घी मे सुधरे खिचडी, नाम बहू का होय ।
–किसी दूसरे व्यक्ति के कारण किसी की झूठी प्रशसा होने पर ।
–झूठी यश प्राप्ति पर कटाक्ष ।

पाठा . घी सवारै सारणा, नाव वहू को होय ।

घिस घिसनै गोळ व्है । ३१७३
घिम घिस कर ही गोल होता है ।
देखिये—क सं. २७७२

घिसिया विना चिळक कठै ? ३१७४
घिसे बिना चमक कहा ?
–अनुभवों की रगड से ही मनुष्य का तेज बढता है ।
–अनुभवा की निरतर ठोकरें खाकर ही मनुष्य अपनी मजिल पर आगे बढता है ।
पाठा घिसिया बिना धार कठै ?

घी अधारै मे ई छानो को रैवै नीं । ३१७५
घी अधेरे म भी छिपा नही रहता ।
–मनुष्य म गुण हो तो वे कही भी छिपे नही रहते ।
पाठा · घी घाल्योडो तो अधेरै मे ई दिखज्या ।
देखिये—क स. २७६५

घी आगळिया नै गुळ डळिया । ३१७६
घी अगुलिया, गुड डलिया ।
देखिये—क सं. २७६४

घी कठै गियौ के खीचडी मे । ३१७७
घी कहा गया कि खिचडी मे ।
–जो चीज जहा खर्च होनी थी—वहा हो गई ।
–जिस चीज की जहा उपयोगिता है, वही काम आनी चाहिए ।
–पारस्परिक मेल वाली चीजें स्वयमेव मिल जाती हैं ।

घी खाणो तो पाग राख नै खावणो । ३१७८
घी खाना तो पगडी रख कर खाना ।
–ऋण लेकर घी खाने से प्रतिष्ठा पर धब्बा लगता है ।
–अपनी इज्जत बचा कर ही किसी मनुष्य को ऐश करना चाहिए ।

घी खाता ई दूगा मे आगळी घालै तो किसी चीकणी व्है ।
घी खाते ही गुदा मे अगुली डाले तो कौन-सी चिकनी होती है ।

–कोई भी कार्य वाछित अवधि के पहिले पूरा नही होता ।
–अत्यधिक जल्दबाजी करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

घी खाया चानणो व्है । ३१८०
घी खाने से उजियारा होता है ।
–घी खाने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा शारीरिक शक्ति बढती है, जिस के फलस्वरूप पारिवारिक सुख समृद्धि का प्रकाश बढता हैं ।
–घी का महात्म्य ।
पाठा घी खाया आख्या री जोत बधै ।

घी खावणो सक्कर सू, दुनिया ठगणी मक्कर सू । ३१८१
घी खाना शक्कर से, दुनिया ठगनी मक्कर से ।
–दुनिया को धोखा देकर मौज करने वालो के लिए ।
–दुनिया म जीने का केवल यही मूल-मत्र है ।

घी, खाड नै आटो, हिलावो नै चाटो । ३१८२
घी, खाड और आटा, हिलाया और चाटा ।
–साधन-सपन्न व्यक्ति अकिचन मेहनत करने पर भी ठाट से रहता है ।
–जीवन के सभी साधन मौजूद हो तो जिंदगी आराम से बसर हो सकती है ।

घी खीचडो री मेळ । ३१८३
घी खिचडी का मेल ।
–सिद्ध साधक का परस्पर मेल होने से ही पूजा होती है ।
–समान स्तर के व्यक्तियो मे ही मेल होता है ।

घी गुळ मीठो के वींदणी । ३१८४
घी गुड मीठा या दुलहन ।
–उचित साधनो से ही सफलता मिलती है, व्यक्ति का परिश्रम कुछ भी माने नही रखता ।
–साधनो का महत्त्व सर्वोपरि है ।

घी घालता कुण ना देवै ? ३१८५
घी डालते कौन मना करता है ?
–किसी के साथ भलाई करो तो कौन इन्कार करता है ।
–सद्व्यवहार या सत्कार से कौन खुश नही होता ।

घी घालै तो आडै हाथां घालै, कह्योडो कुण घालै ?
घी डालेगा तो जबरन डालेगा, कहने से कौन डालता है ?
–कोई किसी का आदर सत्कार करता है तो प्रेम या श्रद्धा के वशीभूत होकर करता है, कहने से नही।
–इस कहावत का दूसरा अर्थ यह भी है कि स्वार्थ या भय के बिना कोई किसी की भलाई करने को तैयार नही होता।
पाठा घी पूरसी तो आडै हाथां पूरसी कह्योडो कुण पुरसै ?

घी घालै तो गोडा हालै। ३१८७
घी डाले तो घुटने चलें।
–पौष्टिक पदार्थ खाने से ही शरीर चलता है।
–वृद्धावस्था मे तो पौष्टिक भोजन के बिना शरीर एकदम जवाब दे जाता है।
मिलाइये—क म ३१५४

घी घालेडो तो मगा मे ई दिखावै। ३१८८
घी डाला हुआ तो मूगा मे भी दिख जाता है।
–अच्छी चीज कही भी छिपी नही रहती।
–गुण तो बुरे आदमी मे भी प्रकट हो कर रहते है।
मिलाइये—क म ३१७५

घी घालै जित्तो ई स्वाद। ३१८९
घी डाले उतना ही स्वाद।
–साधना के अनुरूप ही सफलता का स्वाद मिलता है।
–खर्च के अनुसार ही कोई काम सपन्न होता है।
मिलाइये—क स २०६१

घी घालै तो घाल नींतर खीचडी ठाडी व्है। ३१९०
घी डाले तो डाल, नही तो खिचडी ठण्डी हो रही है।
–एहसान ही करना हो तो फिर पूरा ही करना चाहिए।
–वक्त पर किये सहयोग की ही सार्थकता है।

घी ढुळग्यो के म्हनै लूखो भावै। ३१९१
घी गिर पडा कि मुझे रूखी ही अच्छी लगती है।
–अपनी झेंप मिटाने के लिए कोई व्यक्ति बात बनाये तब।
–अपने हाथा की हुई गलती को सवारने की चेष्टा करना।
–थोथे आदर्श के बहाने जब कोई व्यक्ति अपनी मजबूरी छिपाये तब।

घी ढुळ्यो तो ई मूगा मे। ३१९२
घी गिरा तो भी मूगा मे।
–अपनी क्षति से जब अपने ही लोग लाभान्वित हो तब इस कहावत का प्रयोग होता है कि चिंता जैसी कोई बात नही क्योकि क्षति बराबर हो गई।
–आपसी लेन देन मे कुछ कमी रह जाय तो इस उक्ति के द्वारा सतोष प्रकट किया जाता है।
पाठा घी ढुळग्यो तो ई मूगा मे, राड वळर्ण दयू !

घी ढुळग्यो तो कांई कुलडियो तो साबत है। ३१९३
घी गिर गया तो क्या कुल्हड तो साबूत है।
–जिस भूल चूक का सहज ही निवारण हो सकता हो उसके लिए।
–जिस बात से विवाद का फैसला हो सकता हो तो उसके लिए झगडा सगत नही।
पाठा घी खादो पण कुलडियो तो साबत है।

घी तेल नै आखर अेक। ३१९४
घी तेल आखिर एक।
–चिकनाई की समानता के कारण घी व तेल दोनो एक जैसे ही हैं।
–दो समान चरित्र व स्वभाव वाले व्यक्तियो के लिए।

घी तो घिलोडी मुजब, आटै रो घाटो नीं। ३१९५
घी तो कुल्हड के मुजब पर आटे का घाटा नही।
–घर की जैसी हैसियत होगी घी तो उसी के अनुसार डाला जायगा पर मेहमान के लिए आटे की कोई कमी नही।
–जैसी आर्थिक स्थिति वैसा आतिथ्य सत्कार।
–जो व्यक्ति घर आये मेहमान को अपनी हैसियत मुताबिक रूखी सूखी रोटी खिलाये बिना न जाने दे।

घी तो ढुळ्यो पण कुलडोजी उाचका जबरा खाया। ३१९६
घी तो गिरा पर कुल्हड को तकलीफ काफी हुई।
सदर्भ-कथा एक बनिया पास के गाव मे घी बचने के लिए जा रहा था। मार्ग मे ठोकर खाने से घी का कुल्हड नीचे गिर पडा। कुल्हड का मुह बहुत छोटा था। डब डब की आवाज करते हुए घी को कुल्हड से बाहर निकलते बनिया

एक-टक देखता रहा। वृद्ध व कमजोर होने के कारण वह देरी से उठा तब तक घी सारा धूल मे मिल चुका था। बनिया टसकता-टसकता घर की ओर रवाना हुआ। घरवाली उस से हमेशा झगड़ती रहती थी। इसलिए कोई खुश करने लायक बहाना बनाना आवश्यक था। गिरने की सफाई देने के बाद उसने घरवाली को बताया कि घी तो धीरे-धीरे सारा निकल गया पर कुल्हड़ को भी तकलीफ कम नही हुई। घी निकलने के साथ हर बार डब-डब की आवाज कर रहा था जैसे उसके गले म घी फस गया हो।
–बिगडी हुई बात को खामखा सुधारने की निरर्थक चेष्टा करके मन बहलाने का बहाना करना।

घी निलरच्या लारै छछेड़ू बचै। ३१९७
घी अलग होने पर पीछे मैल बचता है।
छछेड़ू = मक्खन गर्म करने पर जली हुई छाछ का मैला अवशेष।
–किसी मडली या टोली को कोई श्रेष्ठ व्यक्ति छोड दे तब बचे हुए सामान्य व्यक्तियों को लेकर यह कहावत प्रयुक्त होती है।
–जिस चीज या व्यक्ति के अभाव से पीछे कुछ भी विशेष बात न रहे तब।

घी नीं तौ कुप्पा ई बजावौ। ३१९८
घी नही है तो कुप्पे ही बजाओ।
–जो निराश व्यक्ति जैसे-तैसे अपना मन बहलाये।
–किसी काम मे असफल होने पर।

घी बिना चूरमौ नीं बाजै। ३१९९
घी के बिना चूरमा नही कहलाता।
–वाछित खर्च के बिना कोई भी आयोजन सफल नही हो सकता।
–यथा-योग्य गुण व दक्षता के बिना किसी भी व्यक्ति की ख्याति नही हो सकती।

घी बिना लूखौ कसार, टाबर बिना सूनौ संसार। ३२००
घी बिना रूखा कसार, बच्चो बिना सूना ससार।
कसार = गेहूं के आटे को मामूली घी मे सेकने के बाद धनिया डाल कर गुड़ के पानी से कसार के लड्डू बनाये जाते हैं। अमूमन गरीब व्यक्तियों के उपयोग की चीज है।
–एक दूसरे के माध्यम से सतान व कसार की महिमा व्यक्त करने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

घी मे घी सगळा ई घालै, तेल मे घी कुण ई नीं घालै।
घी मे घी सभी डालते है, तल म घी कोई नही डालता।
–सपन्न व समर्थ व्यक्ति का सभी साथ दते हैं पर अभाव ग्रस्त की कोई मदद नही करता।
–सुखी मनुष्य का सभी हाथ बटाते है पर दुखी व्यक्ति की ओर कोई आख उठा कर भी नही देखना चाहता।
–सच्ची बात का सभी समर्थन करते हैं, झूठी बात का कोई साथ नही देता।

घी रौ नै खुदा रौ मूडौ कुण देख्यौ? ३२०२
घी व खुदा का मुह किसने देखा?
–ईश्वर की तरह निर्धन व्यक्ति के लिए अच्छी चीजें सर्वथा अलभ्य होती हैं।
–निर्धन व्यक्ति की लाचारी पर कटाक्ष।

घी रौ चूरमौ भेरू जी सौंठा मारै। ३२०३
घी के चूरमे को भैरव लानत भेजे।
–लोक मान्यता के अनुसार भैरव को तेल का चूरमा ही मान्य समझा जाता है।
–जिस वस्तु से किसी को कभी वास्ता ही नही पडा, वह उसके स्वाद व महत्त्व को क्या समझे?
–अज्ञान वश किसी अच्छी चीज का तिरस्कार करने पर।

घी रौ लाडू तौ वाकौ ई भलौ। ३२०४
घी का लड्डू तो टेढा भी अच्छा।
–जो वस्तु अपनी प्रकृति से ही अच्छी हो तो वह दिखने मे खराब होने पर भी अच्छी ही रहती है।
–गुणी व्यक्ति यदि बदसूरत भी हो तो उसके गुणो मे कुछ कमी नही पडती।

घी लगायनै चमक जोवै। ३२०५
घी लगा कर चमक निहारे।

घी घालै तौ आडै हाथां घालै, कह्योड़ी कुण घालै?
घी डालेगा तो जवरन डालेगा, कहने से कौन डालता है?
–कोई किसी का आदर-सत्कार करता है तो प्रेम या श्रद्धा के वशीभूत होकर करता है, कहने से नहीं।
–इस कहावत का दूसरा अर्थ यह भी है कि स्वार्थ या भय के बिना कोई किसी की भलाई करने को तैयार नहीं होता।
पाठा: घी पूरसी तौ आडै हाथा पूरसी कह्योडी कुण पुरसैं?

घी घालै तौ गोडा हालै। ३१८७
घी डाले तो घुटने चलें।
–पौष्टिक पदार्थ खाने से ही शरीर चलता है।
–वृद्धावस्था मे तो पौष्टिक भोजन के बिना शरीर एकदम जवाब दे जाता है।
मिलाइये—क सं. ३१५४

घी घालेड़ो तौ मूगा मे ई दिख्यावै। ३१८८
घी डाला हुआ तो मूगो मे भी दिख जाता है।
–अच्छी चीज कही भी छिपी नही रहती।
–गुण तो बुरे आदमी मे भी प्रकट हो कर रहते है।
मिलाइये—क. सं. ३१७५

घी घालै जित्तौ ई स्वाद। ३१८९
घी डाले उतना ही स्वाद।
–साधनों के अनुरूप ही सफलता का स्वाद मिलता है।
–खर्च के अनुसार ही कोई काम सपन्न होता है।
मिलाइये—क. सं. २७६१

घी घालै तौ घाल, नींतर खीचड़ी ठाडी व्है। ३१९०
घी डाले तो डाल, नही तो खिचड़ी ठण्डी हो रही है।
–एहसान ही करना हो तो फिर पूरा ही करना चाहिए।
–वक्त पर किये सहयोग की ही सार्थकता है।

घी ढुळग्यौ के म्हनै लूखी भावै। ३१९१
घी गिर पडा कि मुझे रूखी ही अच्छी लगती है।
–अपनी झेंप मिटाने के लिए कोई व्यक्ति बात बनाये तब।
–अपने हाथों की हुई गलती को सवारने की चेष्टा करना।
–थोथे आदर्श के बहाने जब कोई व्यक्ति अपनी मजबूरी छिपाये तब।

घी ढुळयौ तौ ई मूगां में। ३१९२
घी गिरा तो भी मूगों मे।
–अपनी क्षति से जब अपने ही लोग लाभान्वित हो तब इस कहावत का प्रयोग होता है कि चिंता जैसी कोई बात नही क्योंकि क्षति बराबर हो गई।
–आपसी लेन-देन मे कुछ कमी रह जाय तो इस उक्ति के द्वारा सतोष प्रकट किया जाता है।
पाठा: घी ढुळग्यो तौ ई मूगा मे, राड कळपै क्यू!

घी ढुळग्यौ तौ काई कुलड़ियौ तौ सावत है। ३१९३
घी गिर गया तो क्या कुल्हड तो साबुत है।
–जिस भूल चूक का सहज ही निवारण हो सकता हो उसके लिए।
–जिस बात से विवाद का फैसला हो सकता हो तो उसके लिए झगडना सगत नही।
पाठा घी खादो पण कुलडियौ तौ सावत है।

घी तेल नैं आखर अेक। ३१९४
घी तेल आखिर एक।
–चिकनाई की समानता के कारण घी व तेल दोनो एक जैसे ही हैं।
–दो समान चरित्र व स्वभाव वाले व्यक्तियो के लिए।

घी तौ घिलोड़ी मुजब, आटै रौ घाटौ नीं। ३१९५
घी तो कुल्हड के मुजब पर आटे का घाटा नही।
–घर की जैसी हैसियत होगी घी तो उसी के अनुसार डाला जायेगा पर मेहमान के लिए आटे की कोई कमी नही।
–जैसी आर्थिक स्थिति वैसा आतिथ्य-सत्कार।
–जो व्यक्ति घर आये मेहमान को अपनी हैसियत मुजब रूखी सूखी रोटी खिलाये बिना न जाने दे।

घी तौ ढुळ्यौ पण कुलड़ोजी डाचका जबरा खाया। ३१९६
घी तो गिरा पर कुल्हड को तकलीफ काफी हुई।
सदर्भ-कथा: एक बनिया पास के गाव मे घी बेचने के लिए जा रहा था। मार्ग मे ठोकर खाने से घी का कुल्हड नीचे गिर पडा। कुल्हड का मुह बहुत छोटा था। डब डब की आवाज करते हुए घी को कुल्हड से बाहर निकलते बनिया

एक-टक देखता रहा। वृद्ध व कमजोर होने के कारण वह देरी से उठा तब तक घी सारा धूल मे मिल चुका था। बनिया टसक्ता-टसक्ता घर की ओर रवाना हुआ। घरवाली उस से हमेशा झगडती रहती थी। इसलिए कोई खुश करने लायक बहाना बनाना आवश्यक था। गिरने की सफाई देने के बाद उसने घरवाली को बताया कि घी तो धीरे धीरे सारा निकल गया पर कुल्हड को भी तकलीफ कम नही हुई। घी निकलने के साथ हर बार डब-डब की आवाज कर रहा था जैसे उसके गले म घी फस गया हो।

–बिगडी हुई बात को खामखा सुधारने की निरर्थक चेष्टा करके मन बहलाने का बहाना करना।

घी नितरचा लारै छुछेड् बचै। ३१९७

घी अलग होने पर पीछे मैल बचना है।

छुछेडू = मक्खन गर्म करने पर जली हुई छाछ का मैला अवशेष।

–किसी मडली या टोली को कोई श्रेष्ठ व्यक्ति छोड दे तब बचे हुए सामान्य व्यक्तियों को लेकर यह कहावत प्रयुक्त होती है।

–जिस चीज या व्यक्ति के अभाव से पीछे कुछ भी विशेष बात न रहे तब।

घी नीं तो कुप्पा ई बजादो। ३१९८

घी नही है तो कुप्पे ही बजाओ।

–जो निराश व्यक्ति जैसे-तैसे अपना मन बहलाये।

–किसी काम म असफल होने पर।

घी बिना चूरमो नीं बाजै। ३१९९

घी के बिना चूरमा नही कहलाता।

–वाछित खर्च के बिना कोई भी आयोजन सफल नही हो सकता।

–यथा-योग्य गुण व क्षमता के बिना किसी भी व्यक्ति की ख्याति नही हो सकती।

घी बिना लूखो कसार, टाबर बिना सूनो ससार। ३२००

घी बिना रूखा कसार, बच्चों बिना सूना ससार।

कसार = गेहू के आटे को मामूली घी में सेकने के बाद धनिया डाल कर गुड के पानी से कसार के लड्डू बनाये जाते हैं। अमूमन गरीब व्यक्तियों के उपयोग की चीज है।

–एक दूसरे के माध्यम से सतान व कसार की महिमा व्यक्त करने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

घी मे घी सगळा ई घालै, तेल मे घी कुण ई नीं घालै।

घी मे घी सभी डालते हैं, तेल मे घी कोई नही डालता।

–सपन्न व समर्थ व्यक्ति का सभी साथ देते है पर अभाव-ग्रस्त की कोई मदद नही करता।

–सुखी मनुष्य का सभी हाथ बटाते है पर दुखी व्यक्ति की ओर कोई आख उठा कर भी नही देखना चाहता।

–सच्ची बात का सभी समर्थन करते हैं, झूठी बात का कोई साथ नही देता।

घी रो नैं खुदा रो मूडो कुण देख्यो ? ३२०२

घी व खुदा का मुह किसने देखा ?

–ईश्वर की तरह निर्धन व्यक्ति के लिए अच्छी चीजें सर्वथा अलभ्य होती हैं।

–निर्धन व्यक्ति की लाचारी पर कटाक्ष।

घी रो चूरमो भैरूजी सींठा मारै। ३२०३

घी के चूरमे को भैरव लानत भेजे।

–लोक मान्यता के अनुसार भैरव को तेल का चूरमा ही मान्य समझा जाता है।

–जिस वस्तु से किसी को कभी वास्ता ही नही पडा, वह उसके स्वाद व महत्त्व को क्या समझे ?

–अज्ञान वश किसी अच्छी चीज का तिरस्कार करने पर।

घी रो लाडू तो बांको ई भलो। ३२०४

घी का लड्डू तो टेढा भी अच्छा।

–जो वस्तु अपनी प्रकृति से ही अच्छी हो तो वह दिखने म खराब होने पर भी अच्छी ही रहती है।

–गुणी व्यक्ति यदि बदसूरत भी हो तो उसके गुणो मे कुछ कमी नही पडती।

घी लगायनै पसम जोवै। ३२०५

घी लगा कर चमक निहारे।

–घी खाने से ही पुष्टता आती है लगाने से नही।
–जो नासमझ व्यक्ति किसी चीज के गलत उपयोग से मन बहलाना चाहे।

घु - घू

घुड-सवारा घोडा श्रोपै। ३२०६
घुड सवारो से ही घोडो की शोभा है।
–प्रवीण व्यक्ति के हाथो म ही सबधित वस्तु खूबसूरत लगती है।
–परस्पर एक दूसरे पर निर्भर करने वालो के सपर्क से दोनो की शोभा बढती है।

घूघू रै माटै री लागी। ३२०७
उल्लू के पत्थर की लगी।
–उल्लू यो ही बिना छेडे चिल्लाता रहता है, फिर पत्थर की लग जाने के बाद तो कहना ही क्या ?
–जब कोई बातूनी व्यक्ति छेडने पर रुके ही नही तब।

घूमरवाली नै बिछिया चायै। ३२०८
नाचने वाली को घुघरु चाहिए।
–जिस वस्तु की जरूरत होती है उसी की आकाक्षा की जाती है।
–आकाक्षा के अनुरूप चीज मिलने पर खुशी का पार नही रहता।

घुरी मार्थ तौ साळियौ ई घुरका करै। ३२०९
अपनी माद पर तो सियार भी दहाड मारता है।
पाठा: आपरी घुरी म गादडो ई नाहर।
देखिये—क स. ४४५

घूघटा री काण तौ मूछ री ई कांण। ३२१०
घूघट की आबरू तो मूछ की भी आबरू।
–यदि पुरुष पत्नी की मर्यादा का ध्यान रखेगा तो उसकी भी मर्यादा रहेगी। औरत चाहे तो एक पल मे ही पति की मूछ नीची कर सकती है।
–दूसरो की इज्जत रखने से ही अपनी इज्जत रहती है।

घूघटा रौ मरम गिवार काई जाणै! ३२११
घूघट का मर्म गवार क्या जाने!
–गवार व्यक्ति प्रेम की लीला का रहस्य क्या समझे!
–प्रेम के आवरण म छिपी कामासक्ति को गवार ठीक तरह समझ नही पाता।

घूघटा री लाज। ३२१२
घूघट की प्रतिष्ठा।
–अवगुठन म छिपी लज्जा एक बार दूर हुई सो हुई।
–मर्यादा का पर्दा जब तक न हटे तभी तक अच्छा है।

घूघटै सं सती नीं, मुडायै सं जती नीं। ३२१३
घूघट वाली सब सती नही, मुडन वाले सब जती नही।
–बाहरी दिखावे से असलियत को छिपाया नही जा सकता।
–ऊपरी आचरण स मनुष्य की सही परख नही हो सकती।

घूस दियां मौत टळै तौ बाणियौ धरमराज सूं ई नीं चूकै।
रिश्वत देने से मौत टले तो बनिया धर्मराम स भी न चूके।
–मौत के न्यायालय मे रिश्वत चलती तो सभी धनवान अमर हो जाते।
–धनवानो का जोर मौत के सामने नही चलता।
–मौत को न माया का मोह और न सत्ता का डर।

घेटौ रावजी मारचौ है काई ? ३२१५
मेढा रावजी ने मारा है क्या ?
–किसी की झूठी खुशामद करना।
–छोटे कार्य का बडा श्रेय देना।
–बडे व्यक्ति के हाथो छोटा काम भी बडा हो जाता है।

घे-घो

घेर अर बेर रो काईं बिगडै । ३२१६
रहट के घेरे व औरत के शरीर का क्या बिगडता है ?
–जब तक रहट के घेरे से बधी घडलियां पानी लाती है तब तक उन्हे किसी की भी छूत नही लगती । इसी प्रकार यौवन का पानी छलकाती नारी का शरीर भी किसी व्यक्ति की छूत नही मानता ।

घेरो लड़तो कँवै दाव मना लिये । ३२१७
घेरा डसता हुआ कहता है कि मुझ पर गिर मत पडना ।
घेरो=साप की एक किस्म विशेष, जो अत्यधिक जहरीला होता है । ऐसी धारणा है कि डसते ही तत्क्षण मनुष्य या प्राणी को मरना पडता है । पर उस साप को भी खतरा कम नही, यदि मरते हुए मनुष्य की लाश उस पर गिर पडे तो ! इसी कारण उसे अपने दबने की विशेष चिंता है ।
–जो कुटिल व्यक्ति अपने स्वार्थ के आगे पूरा अधा हो ।
–कुटिलता की पराकाष्ठा ।

घेवर कँवै हू मीठो, म्हारै लारै लोपरियो दीठो । ३२१८
मैं कितना मीठा कह घेवर देखा मेरे पीछे खर्चे का तेवर ।
–बडे काम के पीछे बडा ही खर्च होता है ।
–बडा बनने के लिए काफी साधना करनी पडती है ।
पाठा घेवर कँवै हू मीठो के म्हारो लारलो पग दीठो ।

घोखत विद्या, खोदत पाणी । ३२१९
रटने से विद्या और खुदाई से पानी ।
देखिये–क्र स २३५६

घोपड रे ! तू किसै गुण मोटो के लावो गिणू न टोटो ।
रे बिलाव ! तू कौन से गुण मोटा कि ठाट मानू न टोटा ।
–अपनी हैसियत से बेखबर व्यक्ति के लिए ।
–जो व्यक्ति न सुख की परवाह करे न दुख की, उसका स्वास्थ्य दिन ब दिन सुधरता है ।

घोडा अर मिनख रा पग पेट मे । ३२२१
घोडे और मनुष्य के पाव पेट म ।
–पेट मे अच्छा व पर्याप्त खान से ही घोड व मनुष्य के पाव मजबूत रहते हैं—निरतर दौडने व चलने के लिए सक्षम ।
–अच्छा खान से ही शरीर की क्षमता कायम रहती है ।

घोडा ओळखिया असवार । ३२२२
घोडा ने पहिचान लिए सवार ।
–जिस प्रकार घोडो से अच्छा बुरा सवार छिपा नही रहता उसी प्रकार कमचारी भी अपने अधिकारी की तत्क्षण परख कर लते हैं ।
–समझदार व्यक्ति किसी भी आदमी को निर्विलम्ब पहिचान लेता है ।

घोडा इण पार के उण पार । ३२२३
घाडे इस पार या उस पार ।
–परिणाम चाहे कुछ भी हो, जो काम करना है वह तो करना ही पडेगा ।
–असमजस की स्थिति छोडकर अतिम निणय पर दृढ रहना ।

घोड़ा गिणगोरचा ईं नीं दौडसी तो कद दौडसी ?
घोडे गनगौर पर ही नहीं दौडेंगे तो और कब दौडेंगे ?
–समय व्यक्ति समय पर काम न आये तो वह किस काम का ?
–यदि आत्मीय समय पर सहयोग न दे वह कैसा अपनापन ?
पाठा घोडा गिणगोरचा ईं नी दौडै तो पूछ वाढ चोरा नै दो ।
घोडा गिणगोरचा इ नी दौडै तो डूमा नै दा ।

घोडा चढ़ै सो पडै । ३२२५
घोड़े पर चढेगा सो गिरेगा ।
–जो काम करता है उस से गलती होकर रहती है ।
–निठल्ला व्यक्ति न काम करे न उससे गलती हो ।
–खतरा झेलने वाला ही खतरे म पडता है ।

घोडा ज्यारा चढ़ै, रह्या घोडा रा मोर थापलै । ३२२६
जो चढ उनके ही घोडे बचे घोडा की पीठ थपथपालें ।
–जो घोडे की पीठ पर चढ गया घोडा उसी का बाकी घोडो का मुह देखो और उनकी पीठ थपथपाओ ।
–कर लिया जिसका कब्जा, बाकी बातें सब झूठी ।

घोडा जितरा सवार । ३२२७

जितने घोडे उतने सवार।
–जो बात एकदम न्याय सगत हो।
–सीधे हिसाब की बात मे कैसा विवाद ?

घोडा जैडा सवार। ३२२८
जैसा घाडा वैसा सवार।
–अच्छे घोडे का सवार भी अच्छा और रद्दी घोडे का सवार भी रद्दी।
–वातावरण के अनुरूप ही आचरण ढलता है।

घोडा तौ असवारा सूं ई दबै। ३२२९
घोड तो सवारो से ही दबते है।
–घोडे की तरह चचल व्यक्ति हर किसी से नही दबता।
–नियत्रण म रखने वाला ही किसी को नियत्रण मे रख सकता है।

घोडा दौडै तौ हूस सू दौडै। ३२३०
घाडे अपनी उमग मे दौडते हैं।
–किसी के दबाव स नही अपनी इच्छा से ही काम सम्पन्न होता है।
–किसी म जबरदस्ती काम नही करवाया जा सकता।

घोडा बेचनै सूता व्है ज्यू। ३२३१
जैसे घोड बचकर सोये हो।
–सर्वथा निश्चित होकर सोना।
–बेखबर व्यक्ति क लिए।

घोडा माथै, सवार व्है तौ घोडै ओपै। ३२३२
घोडे पर, सवार हो तो घाड पर अच्छा लगे।
–काम की योग्यता होन पर ही कोई व्यक्ति पद पर शोभा देता है।
–योग्यता के अभाव म पद के साथ व्यक्ति की भी शोभा घटती है।

घोडा री पछाडी अर गढ री अगाडी। ३२३३
घाडे के पीछे और गढ के आगे।
–घोडे के पीछे चलने मे दुलत्ती का खतरा और गढ के सामने होकर जाने से ठाकुर की बेगार का खतरा बना रहता है सो इन से सावधान रहने की हिदायत।
–खतरे के काम से सावधानी बरतनी चाहिए।

घोडा घर कितरी मांय ? ३२३४
घोडो से घर कितनी दूर ?
–घोडा की तेज गति के फलस्वरूप दूरी पार करते कुछ देर नही लगती।
–कुशल व्यक्ति के लिए कैसा भी कठिन कार्य सम्पन्न करना कुछ भी दूभर नही।
पाटा घोडा नै घर कित्ती दूर।
घोडा घर काई आतरै ?

घोडां राज अर बळदा खेती। ३२३५
घोडो से राज्य और बैलो से खेती।
–जिस प्रकार घोडो की सेना के बिना राज्य व बैलो के बिना खेती नही सभलती उसी प्रकार उचित साधनो के बिना कोई भी काम नही सुधर सकता।

घोडा रौ दाणौ गधां नै नीं चराईजै। ३२३६
घाडो का दाना गधो को नही खिलाया जा सकता।
–अयोग्य व्यक्ति को अच्छी वस्तु नही सौंपी जा सकती।
–जैसी योग्यता वैसा सत्कार।

घोडा हींस किराडा मारी। ३२३७
घाडा की हिनहिनाहट बनिया को भारी।
–पहिले सामती प्रथा मे घोडा के लिए बनियो को मुफ्त में दाना देना पडता था। घोडो की हिनहिनाहट का मतलब था कि घोडे भूखे हैं उन्हे दाना चाहिए। इसलिए दाने के बढते बोझ स बनिये घबराते थे।
–गाव म डाकुओ के घोडे हिनहिनाते ही बनियो का दिल दहल उठता था। तब घोडो की हीस लूट की सूचक थी।
–जिस खतरा होता है वह थोडा खटका होते ही घबरा उठता है।

घोडी री लाबो होसी तौ आपरी ढकसी। ३२३८
घोडी की पूछ लम्बी होगी तो अपनी लज्जा ढकेगी।
–जिसके पास जो साधन होता है वह पूर्णरूप से उसी के

काम आता है।
–दूसरे के साधना से अपनी गज पूरी नही हो सकती।
पाठा घाडा री पूछ बधसी तौ आपरी माख्या उडावसी।
घोडा रा लाबा है तौ आपरी उडावसी।

घोडा री लगाम असवार रं हाथ। ३२३६
घोडे की लगाम सवार के हाथ म।
–घोडा दौडता तो वहुत तेजी से है पर अपनी इच्छा स नही, घुडसवार की इच्छा से।
–राज्य का नियत्रण राज्य चलाने वाले के हाथ म होता है।
–काम करने वाला की इच्छा पर नही—काम लेन वाले की इच्छा पर मुनस्सर करता है।

घोडा री लात घोडी ई खिव। ३२४०
घोडे की लात घाडा ही सहन करता है।
–वडा की चोट बडे ही झेल सक्ते हैं।
–शक्ति व क्षमता के अनुसार जीवन के सघर्षों की मार सहन होती है।

घोडा रौ रोवणो नीं, घोडा री चाल रौ रोवणो है।
घोडे का रोना नही, घोडे की चाल का रोना है। ३२४१
–चोरी म घोडा चला गया उसकी परवाह नही पर अन भिज्ञ चोर उसकी चाल विगाड देगा बस केवल रोना इसी बात का है।
–मनुष्य के लिए उसका आचरण बिगडने की क्षति ही सबस बडी क्षति है।

घोडा रौ अर मिनख रौ मोल नीं। ३२४२
घोडे का और मनुष्य का मोल नही होता।
–घोडे की तीव्र गति न मालूम कब किस अप्रत्याशित सकट स बचा न कुछ पता नही। मनुष्य का प्रतिभा व उसके गुण उस किस उन्नति के शिखर पर पहुचा दें कुछ पता नही। इसी कारण इनका मूल्य नही आका जा सकता।

घोडा रौ लिलाड सवा हाथ रौ व्है। ३२४३
घोडे का ल्लाट सवा हाथ का होता है।
–बडा ल्लाट सौभाग्य का सूचक है।
–घोडे की तरह बडे लराट वाला जो व्यक्ति अपने भाग्य के सहारे सुखी जीवन व्यतीत करे।

घोडा रौ हठ नै राड रौ हठ बिरोबर। ३२४४
घोडे का हठ व औरत का हठ एक समान।
–घोडा भी एक बार अडने पर अपना हठ नही छोडता, उसी प्रकार औरत भी आसानी स अपना हठ नही छोडती।
–जो औरत अत्यधिक हठी हो उसके लिए।

घोडा वाळी चट्ट। ३२४५
घोडे वाली लत।
–जिद्दी व्यक्ति के लिए।
–एक बार जचने पर जो व्यक्ति किसी का कहा न माने।

घोडी कठै बाधू के जीभ र। ३२४६
घोडी कहा बाधू—कि जीभ से।
सदभ - कथा एक बारहठजी किसी बड ठाकुर के यहा गय हुए थे। साथ म घोडी भी थी। दोनो वक्त उनकी अच्छी आवभगत होती। घोडी को समय पर दाना व घास मिल जाता। सयोग मे पास ही के गाव का एक छोटा ठाकुर भी वहा आया। अपनी आखो से दो-तीन दिन बारहठजी का अच्छा आदर सत्कार देखा तो उसने भी लिहाज म बारहठजी को अपने यहा आने का न्यौता दिया। हालाकि पहिले दरियाफ्त करने पर बारहठजी ने किसी बडे ठिकाने जाने की बात कही थी। ऐसी जानकारी मिलने पर छोटे ठाकुर ने कुछ जोर देकर आने के लिए कहा। बारहठजी हर बार इन्कार करते रहे। किन्तु कुछ दिन बाद बारहठजी सीधे उसी ठाकुर के गाव पहुचे। ठाकुर से अभिवादन करने के बाद पूछा—यह घोडा कहा बाधू?

यदि उस समय ठाकुर की जीभ वश म रहती तो मेहमान-नवाजी की यह नौबत नही आती, पर अब तो जीभ स किये आग्रह का फल तो भोगना ही पडेगा। तुरत जवाब दिया—मेरी जीभ स।
–शोभा की चाहना करने वाले व्यक्ति को खर्च तो करना ही पडता है।
–लिहाज के कारण गले आ पडे तब।
–एक दूसरा अर्थ यह भी है कि मूर्खता भरे बेहूदा प्रश्न का

जितने घोडे उतने सवार।
—जो बात एकदम न्याय सगत हो।
—सीधे हिसाब की बात म कैसा विवाद ?

घोडा जैडा सवार। ३२२८
जैसा घोडा वैसा सवार।
—अच्छे घोडे का सवार भी अच्छा और रद्दी घोडे का सवार भी रद्दी।
—वातावरण के अनुरूप ही आचरण ढलता है।

घोडा तौ असवारा सू ई दबै। ३२२६
घोड तो सवारो से ही दबते हैं।
—घोडे की तरह चचल व्यक्ति हर किसी से नही दबता।
—नियत्रण मे रखने वाला ही किसी को नियत्रण मे रख सकता है।

घोडा दौडै तौ हूस सू दौडै। ३२३०
घोडे अपनी उमग म दौडते हैं।
—किसी के दबाव से नही अपनी इच्छा से ही काम सम्पन्न होता है।
—किसी से जबरदस्ती काम नही करवाया जा सकता।

घोड़ा बेचनै सूता व्है ज्यू। ३२३१
जैसे घोड बेचकर सोये हो।
—*सर्वथा निश्चित होकर सोना।*
—बेखबर व्यक्ति के लिए।

घोडा माथै, सवार व्है तौ घोडै ओपै। ३२३२
घोडे पर, सवार हो तो घाडे पर अच्छा लगे।
—काम की योग्यता होने पर ही कोई व्यक्ति पद पर शोभा देता है।
—योग्यता के अभाव मे पद के साथ व्यक्ति की भी शोभा घटती है।

घोडा री पछाडी अर गढ री अगाडी। ३२३३
घोडे के पीछे और गढ के आगे।
—घोडे के पीछे चलने से दुलत्ती का खतरा और गढ के सामने होकर जाने से ठाकुर की बेगार का खतरा बना रहता है सो इन से सावधान रहने की हिदायत।
—खतरे के काम से सावधानी बरतनी चाहिए।

घोडा घर कितरी मांय ? ३२३४
घोडो से घर कितनी दूर ?
—घोडो की तेज गति के फलस्वरूप दूरी पार करते कुछ देर नही लगती।
—कुशल व्यक्ति के लिए कैसा भी कठिन कार्य सम्पन्न करना कुछ भी दूभर नही।
पाठा : घोडा नै घर कित्ती दूर।
घोडा घर काई आतरै ?

घोडा राज अर बळदा खेती। ३२३५
घोडो से राज्य और बैलो से खेती।
—जिस प्रकार घोडो की सेना के बिना राज्य व बैलो के बिना खेती नही सभलती उसी प्रकार उचित साधनो के बिना कोई भी काम नही सुधर सकता।

घोड़ा री दाणौ गधां नै नीं चराईजै। ३२३६
घोडो का दाना गधो को नही खिलाया जा सकता।
—अयोग्य व्यक्ति को अच्छी वस्तु नही सौंपी जा सकती।
—जैसी योग्यता वैसा सरकार।

घोडा हींस किराडा मारी। ३२३७
घोडो की हिनहिनाहट बनिया को भारी।
—पहिले सामती-प्रथा म घोडो के लिए बनियो को मुफ्त मे दाना देना पडता था। घोडो की हिनहिनाहट का मतलब था कि घोडे भूखे है उन्हे दाना चाहिए। इसलिए दाने के *बढते बाझ स बनिये घबराते थे।*
—गाव म डाकुआ के घोडे हिनहिनाते ही बनियो का दिल दहल उठता था। तब घोडो की हीस लूट की सूचक थी।
—जिस खतरा होता है वह थोडा खटका होते ही घबरा उठता है।

घोडी री लाबी होसी तौ आपरी ढकसी। ३२३८
घोडी की पूछ लम्बी होगी तो अपनी लज्जा ढकेगी।
—जिसके पास जो साधन होता है वह पूर्णरूप से उसी के

काम आता है।
–दूसरे के साधनो से अपनी गर्ज पूरी नही हो सकती।
पाठा : घोडा री पूछ वधसी तौ आपरी माख्या उडावसी। घोडा रा लाबा है तौ आपरी उडावसी।

घोडा री लगाम असवार रै हाथ। ३२३९
घोड़े की लगाम सवार के हाथ मे।
–घोडा दौडता तो वहुत तेजी से है पर अपनी इच्छा से नही, घुडसवार की इच्छा से।
–राज्य का नियत्रण राज्य चलाने वाले के हाथ मे होता है।
–काम, करने वालो की इच्छा पर नही—काम, लेन वाले की इच्छा पर मुनस्सर करता है।

घोड़ा री लात घोडौ ई खिवै। ३२४०
घोडे की लात घोडा ही सहन करता है।
–वडो की चोट वडे ही झेल सकते हैं।
–शक्ति व क्षमता के अनुसार जीवन के सघर्षों की मार सहन होती है।

घोडा री रोवणौ नीं, घोडा री चाल रौ रोवणौ है।
घोडे का रोना नही, घोडे की चाल का रोना है। ३२४१
–चोरी मे घोडा चला गया उसकी परवाह नही, पर अनभिज्ञ चोर उसकी चाल विगाड देगा, बस केवल रोना इसी बात का है।
–मनुष्य के लिए उसका आचरण बिगडने की क्षति ही सबस बडी क्षति है।

घोड़ा रौ अर मिनख रौ मोल नीं। ३२४२
घोडे का और मनुष्य का मोल नही होता।
–घोडे की तीव्र गति न मालूम कब किस अप्रत्याशित सकट से बचा ले कुछ पता नही। मनुष्य की प्रतिभा व उसके गुण उसे किस उन्नति के शिखर पर पहुचा दें कुछ पता नही। इसी कारण इनका मूल्य नही आका जा सकता।

घोड़ा रौ लिलाड सवा हाथ रौ व्है। ३२४३
घोडे का ललाट सवा हाथ का होता है।
–बड़ा ललाट सौभाग्य का सूचक है।
–घोडे की तरह बडे ललाट वाला जो व्यक्ति अपने भाग्य के सहारे सुखी जीवन व्यतीत करे।

घोडा रौ हठ नै राड रौ हठ बिरोबर। ३२४४
घोडे का हठ व औरत का हठ एक समान।
–घोडा भी एक बार अडने पर अपना हठ नही छोडता, उसी प्रकार औरत भी आसानी से अपना हठ नही छोडती।
–जो औरत अत्यधिक हठी हो उसके लिए।

घोड़ा वाळी चट्ट। ३२४५
घोड वाली लत।
–जिद्दी व्यक्ति के लिए।
–एक बार जचने पर जो व्यक्ति किसी का कहा न माने।

घोडी कठै बाघू के जीभ रै। ३२४६
घोडी कहा बाघू—कि जीभ से।
सदर्भ - कथा : एक बारहठजी किसी वडे ठाकुर के यहा गये हुए थे। साथ म घोडी भी थी। दोनो वक्त उनकी अच्छी आवभगत होती। घोडी को समय पर दाना व घास मिल जाता। सयोग म पास ही के गाव का एक छोटा ठाकुर भी वहा आया। अपनी आखो से दो-तीन दिन बारहठजी का अच्छा आदर-सत्कार देखा तो उसने भी लिहाज मे बारहठजी को अपने यहां आने का न्योता दिया। हालाकि पहिले दरियाफ्त करने पर बारहठजी ने किसी वड ठिकाने जाने की बात कही थी। ऐसी जानकारी मिलने पर छोटे ठाकुर ने कुछ जोर देकर आने के लिए कहा। बारहठजी हर बार इन्कार करते रहे। किन्तु कुछ दिन बाद बारहठजी सीधे उसी ठाकुर के गांव पहुचे। ठाकुर से अभिवादन करने के बाद पूछा—यह घोडी कहा बाघू?

यदि उस समय ठाकुर की जीभ वश म रहती तो मह-मान-नवाजी की यह नौबत नहीं आती, पर अब तो जीभ मे किये आग्रह का फल तो भोगना ही पडेगा। तुरन्त जवाब दिया—मेरी जीभ से।
–शोभा की चाहना करने वाले व्यक्ति को खर्च तो करना ही पडता है।
–लिहाज के कारण गले पा पडे तब।
–एक दूसरा अर्थ यह भी है कि मुगंता मरे देखा मन का

घोड़ो नैं फोडो पपोळिया बधै । ३२६७

घोडा व फोडा सहलाने से बढता है ।

–आखिर कमजोरी व पीडा को सहलाने से नही, दूर करने से ही निस्तार होता है ।

घोडो बटको भरै ई कोनीं अर जे भरै तौ छोडै ई कोनीं ।

घोडा या तो काटता ही नही यदि काटे तो फिर छोडता ही नही ।

–ताकतवर आदमी या तो गुस्सा करता ही नही और यदि करे तो फिर कचूमर निकाल कर ही माने ।

–बडा आदमी हठ करता ही नही, यदि करे तो फिर छोडता ही नही ।

घोडो बनोळयां जोईजै के वळतो आजै । ३२६६

घोडा चाहिए निकासी पर कि लौट कर आना ।

–समय पर सहयोग मिले तभी उसकी सार्थकता है ।

–अवसर बीत जाने के बाद दी हुई सहायता निरर्थक हो जाती है ।

पाठा घोडो चाम निकासी नैं के वावडतो सो आये ।

घोडो, मरद, मकोडो, पकडयां पाछै छोडै थोडो । ३२७०

घोडा, मर्द, मकोडा, पकडने के बाद छोडे थोडा ।

–जिस व्यक्ति की पकड घोडे की तरह मजबूत हो ।

–जो व्यक्ति पीछा करने के बाद छोडे ही नही ।

घोडो है पण असवार कोनीं । ३२७१

घोडा है पर सवार नही ।

–साधन होने हुए भी जो व्यक्ति उसका उपयोग करने मे अक्षम हो ।

–जो अयोग्य व्यक्ति अच्छे पद पर काम न कर सके ।

–समय रूपी घोडे पर हर व्यक्ति सवारी नही कर सकता ।

घोर-खोदा रै ब्याव मे गादडा ई गीत गावै । ३२७२

घोर खोदो के विवाह म सियार ही गीत गाते हैं ।

घोर खोदा = सियार के समान ही एक छोटा जानवर जो कब्र खोदने म अत्यत माहिर होता है ।

–दुष्ट व्यक्ति ही दुष्ट की सराहना करता है ।

–कुटिल व्यक्तियो का सगठन स्वत ही बन जाता है ।

[इति श्री राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश प्रथम जिल्द सपूर्ण]

शुद्धि - पत्र

पांडुलिपि की कहावतों पर लगी संख्याएं छपाई के दौरान यदा-कदा बदलती रहीं। कुछ संख्याओं के निर्देशन में गलतियां रह गईं। उदार पाठक इस शुद्धि-पत्र के द्वारा दुरस्त करके पढ़ें।

	अशुद्ध	शुद्ध
कहावत संख्या	देखिये—क. सं.	
७६८	६१०	७१०
१४१६	१४०५	१४०७
१५८४	१३७६	१६७७
१६७५	१४३८	१४३६
१६७७	१२६६	१२६७
१७०६	१३८३	१३८५
१७२१	१३८२	१३८४
१७४४	१६३२	१६३४
१८१६	१८१२	१८१५
१८६४	१३६६	१३६६
१६२२	१६०७	१६१२
१६२६	१६०८	१६१४
१६५२	१७२६	१७३२